ISSN 2229-547X

विदेह सदेह २१

विदेह-सदेह २१, विदेह www.videha.co.in/ पेटार (अंक २५१-२७६) सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोिाक सिाविकार सुरवित अवि। कॉपीराइट (©) िारकक वलवित अनुमवतक विना पोिाक कोनो अंशक िाया पवतएि ररकॉर्डिंग सवहत इलेक्ट्रॉवनक अििा यांवत्रक, कोनो माध्यमसँ, अििा ज्ञानक संग्रहण िा पुनप्रायोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पावदत अििा संचावरत-प्रसावरत नै कएल जा सकैत अवि।

(c) २०००- अद्यतन। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आकाइरक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसाइटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अद्यतन। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आकाइरक/ आकाइरक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आकाइरक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : भा.रु. ३५००/- संस्करण: २०२०, २०२२

Videha Sadeha 21: A Collection of Maithili Prose and Verse (source:Videha e-journal issues 251-276 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-ि ण (पृ १-७७९)

गजेह्र ठाकुर- राक्षरलास साहुजीक दि बेचनी लघुकथा संगह, सम्पादकीय (पृ. २-५)

क्षाक्षसदा- बीहक्ष कथा (क्षयार, जश, दंद) (प्. ६-१२)

पर र झा- दोसर क्षयाह, चनमा, मैक्षली कथामे स्ि, एकटा जह्मेजय कथा (पृ. १३-३५)

मृर ाल आि ुतोष- छुटकी (पृ. ३६-३८)

गीतेि िमा - भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (मूल क्षह्दी लेख केर मैक्षली अनुराद- उमेि मण्डल) (पृ. ३९-४७)

उमेि मण्डल- बीहैन कथा- क्षनसुरका गप-सप्प, सगर राक्ष दीप जरय ९९ म आयोजन), ९८म कथा गोषी सगर राक्ष दीप जरय- क्षसमरा (झंझारपुर) (पृ. ४८-५८)

डॉ. योगेह्र पाठक 'क्षयोगी' - हमर गाम (पृ. ५९-९१)

देरे झा- धृहृदू धराह :एक समीा, मैथ्धली पधिकामे अनुराद साधृत्य, ‘दू-पा’ उपन्यासक धश्लेषरात्मक अध्ययन (पृ. ९२-१०५)

राके पेमचहृ ‘पीसी’- लघुकथा- धकसानके डुबौलक लखन ठेकेदार (प्. १०६-११०)

अरर लाल- बीहधा कथा (कुंभ स्नान, गाहक) (पृ. १११-११७)

मोहनराज "गगन"- बीहधा कथा-१, बीहधा कथा-२ (पृ. ११८-११९)

राम धलास साहु- लघुकथा- घुधा गाम चलु (पृ. १२०-१२७)

नहृद धलास राय- लघुकथा (धयानक माधा दही-चूरा, दहेज पाप छी) (पृ. १२८-१४८)

आीष अनधहृहार- "इश्क को धदल मे दे जगह अकबर" आ जगदी चंर ठाकुर अधल, धंदी धफल्मी गीतमे बहर १-८, आधुनक मैथ्धली गजलक संधिप्त आलोचनात्मक पधचय, नरेहृजीक मैथ्धली आ धंदी गजलक तुलनात्मक धरेचना, बयानक संदभमे मैथ्धली गजल (प्. १४९-२६१)

रबीहृ नारायर धाश- अितस्य कुतः सुखम्, सफलताक रहस्य, मनः पूतं समाचरेत, ई समय ककरो नधह, घमंड, कलनाबला बाबा, डॉ.

सुभर झा (संस्मरर), डॉ. जयकान्त मिश्र (संस्मरर), पं. परमानन्द झा (एक संस्मरर), संपत्ति हस्तातरर, कान्तिदूत : कबीरदास, मकर संक्रान्ति, घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005, गिरफ्तारी ओ जमानत, सूचनाक अधिकार, गया गेल रही, बिरि विआह, उपभोक्ता संरक्षि कानून १९८६, मिथिलाक संस्कृति, लघुकथा- पढू पूत चण्डी, लघुकथा (मुख्यमंत्रीक स्वरूप, यमलोकक दल-बदलू, नकली संसद, जीबी तँ की की ने देखी !, तुषारपात, असगुन, गाम, फसाद, पुनर्मिलन, पंचैती, मुखियाक चुनार, हम बौक छी, फाटू हे धरती !, उपकारक भार, सनकल, कान्ति विसर्जन (पृ. २६२-४७९)

दुर्गानन्द मण्डल- लघुकथा (सीख, बोझ) (पृ. ४८०-४८५)

डॉ. बचेशर झा- मौलाइल गाछक फूल : जगदीश पसाद मण्डल, मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र, मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा ‘यदुरर’क देन, मैथिलीक विकासमे नेपालक योगदान, मैथिली साहित्यक अरदान- मिथिला भाषा रामायर- चन्द्र झा, एकैसम शताब्दीक पारंभ जनसंख्यामे भारत पथम आ चीन दोसर, पुस्तक समीक्षा- साकेतानन्दक ‘गर-नायक’,कन्यादानक भीषर समस्याक कारर, विद्यापतिकालीन मिथिलाक कृषि, विद्यापतिक रचनामे विरह ररम (पृ. ४८६-५४७)

नारायर यादर- लघुकथा (पंचैती, स्राद पद्धरतम्, ध्राफ्ट, भाय-बद्धन, इमानदार चोर, नद्धसहत, पेमक आँसु), गुरमैता-सलैता (जीरनी) (प्. ५४८-६०२)

कैलाि कुमार ध्राश- लघुकथा (पध्राडताइन, बुध्रराज), फकडाक संग याि करैत मैथ्धलानीक मनोदिाक: मानरिासिीय ध्ररेचना (पृ. ६०३-६७६)

जगदीि पसाद मण्डल- पंगु (उपह्यास)- साध्कत्य अकादेमी पुरस्कार (२०२१) सँ सम्माध्नत कृध्त (पृ. ६७७-७७९)

पद-खण्ड (पृ. ७८०-१३३६)

आशीष अनचिन्हार- बाल गजल, किछु गजल (पृ. ७८१-७८८)

राजेन्द्र मोहन झा "गुंजन"- नरदुगा, गाछक गोहारि- (विश्व पर्यावरण दिवस पर), किनकर विकास? (पूंजीवाद कि सर्वहारा) (यात्रीजी "बाबा नागार्जुन" के जन्म दिन पर) (पृ. ७८९-७९२)

प्रीतम कुमार निषाद- यात्रीक स्मृति, अमर शहीदक श्रद्धांजली, सार बिछनोई (हँसुली-चौल), आहत अगस्त, हाय भूकम्प, विकासक दम्भ, हँसनी-खेलनी, किस्सा-बखडा, हम नारी छी..!, हमरा के मारलक गै?, ओ, के छथि?, सुत्थड समाज, सुनबै-गुनबै, बुझराक चाही, करऽ तकै छी?, आदर्श चरित्र, दिरसारत्नाचरण, साधनाचरण, भक्तिचरण, विद्यापति स्मृति, शरद रसन्त, सरस रसन्त, कविवर : ऋतुराज रसन्त और मस्त परन, गीतल साध्वीला, गीतल, गौआँ-गीतल, हाय हौ किरतलग, सीखऽ तँऽ दियऽ, ईर घाट, रीर घाट, खगता-बेगरता, नीक-बेजाय, हम के? और की? केकरो केकरो, जय गंगाजल, दीप प्रज्ज्वलन, अहो अभिनन्दन, सीताचरण (पृ. ७९३-८६८)

उमेश पासवान- ई की होइ छै, बताह रादल, घा, चान्द, सडक, मैथिली, बिसैर जाउ, समस्या, फासी, गलती, रोग, बटोही, हरा, दोख, गुमान, लडकी, आदत, अनजान, लोभ, स्वार्थी, कबिछौन, एकबेर,

साच, यादमे, जमाना, पछताएब, ध्वटीक पना, कध्वता, गामसँ, तरहतथी, डुबैत, तागत, हालत (प्. ८६९-९०८)

जगदीि चह्र ठाकुर 'अश्नल'- गीत, गजल (पृ. ९०९-९११)

रजनी छाबडा (ध्वह्दी कध्वता संगह 'ध्वघलते ध्वमखण्ड' सँ मैध्वली अनुराद- अनुरादक डॉ. धिरकुमार पसाद) - (पृ. ९१२-१०००)

डॉ. धिरकुमार पसाद- ध्वकछु कध्वता (पृ. १००१-१०७१)

राहुल कुमार चौिरी- हेलैत पार (पृ. १०७२-१०७४)

बृषेि चह्र लाल- ठंढाउ, ध्वडला लगाउ! (पृ. १०७५-१०७६)

रामदेर पसाद मण्डल 'झार दार'- ध्वकछु झार (पृ. १०७७-११०२)

कुमोद रंजन चौिरी- उठु मैध्वल चलु मैध्वल (पृ. ११०३-११०५)

पभाष अध्वकंचन- महाकध्व लाल दास (पृ. ११०६-११०७)

राकेि करण सृजन (पृ. ११०८-११०९)

अरर लाल- ६ टा िध्वका आ ६ टा कध्वता (पृ. १११०-११२७)

इह्रकाह्त लाल- कका तोर अंगना (पृ. ११२८-११२८)

सृजन िखर ’अजेय’- ककरा अबाते जादू भऽ जाय रे (पृ. ११२९-११२९)

संतोष कुमार राय ’बटोही’- गहमा- गहमी, सुनर कबाया,गाल पर थप्पड, सािहत्य मे बानबानौज, लोकतंि क पहरी, बहक रहल अिछ फगुआक बयार, दिलत छी हम, अबोि नेना, कनफुस्सी बागाडलक घर, नौकरी, गामक दुगा मंिदर, गाम-घरआ, िकसानी, बान बयाहले रहबा बसया (पृ. ११३०-११४८)

नन्द िवलास राय- हमर होली, दहेज, हमर चार ि म, इिन्दरा आरास, अछैत पुि बापुि (पृ. ११४९-११७०)

डॉ. ि वि रि कुमर "िवदेह"- स्र. अटल िबहारी राजपेयीजी - एकटा मैिथलक सादर, िवनम शि ािजल (पृ. ११७१-११७१)

राम िवलास साहु- िकछु हाइकू/ िह्यूण िकछु टनका, ठेस, आजुक िदन, ि निक खाि्बार, ि रक नचारी, िदनक दोख, हमरा मोन पडैए, अनजनुआँ, ि रतीक बोझ, हरबाहाक िजनगी, माछ, मनक मोिल,तृष्र ा, बेटी, रसंतक गीत, केकरा लेल, ि मष्क उपदेि की भेल, जीबाते जी मरै छी,माघक जाड, िकसानक मजबुरी, बैि ाखिक िवष, बैि ाखिक िवष, कोसीक कहर, केकरापर करब शृंगार, करमक खेल, भीखमंगनी (पृ. ११७२-१२६९)

राहुल झा "आर.जे."- बटगरनी (पृ. १२७०-१२७१)

राकेि पेमचन्द्र 'पीसी'- पी.सी.क पाच हाइकु (पृ. १२७२-१२७२)

आभसदा- स्मृि ि ष (पृ. १२७३-१२७५)

रवि भूषर पाठक- छौडा अजगुत कंप्यूटर छै, महाकवि विदापति (पृ. १२७६-१२७९)

नीलमाि र चौि री- किछु कविता (पृ. १२८०-१३३६)

गद खण्ड

<u>गजेन्द्र ठाकुर</u>

<u>रामविलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह</u>

'गाछि गाछी' लघुकथामे बुधुआक दादा कालेसरक गछकटीसँ दम्मा क' भऽ गेलाक प्रसंग पुरना गेल छलै, नवका पंच सभके बुझले नै, आम्ह क बुझल रहलोपर ओकर हित नै खमितिया क' बुझल रहै। से जखन मुखियाजे ऐ गपक चर्चा कथाक क्लाइमैक्समे करै छथि त सभ हित बुझै छथि जे कोना बोन कलम-गाछी बनल।

'कमिनियाक कातिक' क मुख्य रसा आ कमिनियाक घरके हवेली कहैपर दीना दादीक विरोधपर कमिनिया हवेली शब्दावलीक जनमि ऐ कथाक शीर्षक उन्मुते बनल।

'घुमि गाछि चलू' कथाके कनी आर चुस्त करबाक खगता छल, कथा सोइरी घरस शुरू होइए मुदा अंत कपचा गेल लगैए।

'मापैत' मे मापैतक संग (मापैत छोमि आर के?) नीक बनल अछि।

'झंझैटक जमि मसनुमिया आछि गाछ' मान-मनौजपर लिखल कथा छी।

'जारैन' मे नव चीजक विरोधक संग लेखक ठाढ़ बुझाइ छथि, कारण महिलाके धुआस होइबला कष्ट के ओ वाद-विवादमे नै अनलनि।

'जेहेन पाठ ने पढ़ए पुता अपने मसर मासए' पद्धमे लेखक अंधविश्वासक पर्क ठाढ़ बुझाइ छथि। आइ कालि टी.वी. पर भुतहा आ अंधविश्वास आधारित सीरियलक पर्क यएह सफाइ शुरूहेमे देल जाइत अछि जे ई मात्र मनोरंजन लेल बनल अछि आ एकर उदेश्य अंधविश्वासके बढ़ाबा देब नै अछि। से ईहो कथा मनोरंजने उदेश्यस पढ़ू।

‘कौिुक सुच्चा कर तेल’ हरिा मसाबे ऐ लघुकथा संगहक सवषोष लघुकथा अमछ। कोना लोक अपन कुटीर उदोग पूजीवादक फेरि खति केलक, ई कथा तकरे मवस्तार अमछ आ आशाक संग खति होइए।

‘दूधबेचनी’ ऐ लघुकथा संगहक टाइटल कथा छी। बकलेलस बेटीक मवयाह। पमिक ृत्यु आ पती दारा असगरे बाल-बच्चाके पोसब मजनगीक लक्ष्य। िदा फेर िहभंग आ फेर सािजक लेल मकछु करबाक इच्छा संग कथाक सािमि।

‘गोदानक गाए घुमि घर आएल’ अंधमवशासपर चोट अमछ। से ‘जेहेन पाठ ने पढ़ए पुता अपने मसर मवसए’ क मवपरीत।

‘अमसरवाद’ यता वृताि सन अमछ, आ ‘हि’ शैलीक रचना अमछ। आ कारण आधामरत संयोग आमक भमवष्यवाणी ऐि दू बेर भेल। एक कोसीक नाह आ दोसर घुरती काल बसक दुघष्टना।

‘ई केकर दोख’ ि कथानक आगू बढ़ैए िदा सभ हीस नीकस नै फौदाइए। रपनक कथा आमक कारीक? रपनक कथा भमसयाइत अमछ त कारीक कथा संग नीक जका मिज्झर नै भ’ पबैए।

कथा-संगह िदा जीमि गेल अमछ। कारण अची एकर शब्दावली आ फकिा सभक सफलता। ज एकर अनुवाद कएल जाए त भ’ सकैए जे ‘कौिुक सुच्चा कर तेल’ क अलाबे आन कथा सभ साािन्य बुझा पिए, िदा िूल मैमथलीि ई संगह जीतल अमछ। गाकि सािजक सस्थाक वणषा जे नगक लोकके छोट आ पुरान बुझा सकैए, गाकि लोक लेल पैघ आ सकािलीन अमछ; आ राि मवलास साहुजीक शब्दावली ऐ वणषाक संग न्याय केने अमछ।

सम्पादकीय

साहित्य अकादेमी, दिल्ली मैथिली लेल ऐ बेरका युवा साहित्य पुरस्कार श्री उमेश पासवान जी केँ हुनकर २०१२ मे प्रकाशित पद्य संग्रह 'वर्णित रस' पर देबाक निर्णय

साहित्य अकादेमी, दिल्ली मैथिली लेल ऐ बेरका युवा साहित्य पुरस्कार श्री उमेश पासवान जी केँ हुनकर २०१२ मे प्रकाशित पद्य संग्रह 'वर्णित रस' पर देबाक निर्णय लेलक अछि। निर्णय विलम्बित मुदा स्वागत योग्य अछि।

https://dbb13891-a-96a2f0ab-s-sites.googlegroups.com/a/videha.com/videhapothi/Home/UmeshPaswan.pdf?attachauth=ANoY7coRlGM02SpW8rbrtLhu4Nv4f7F4vtyo56SmjrOoRMDSi9nHhMV9uqV0mwLzGsgdjKR2HKNiVvSkqvqdJUXDR4Q5zlGEZ7PfHHEaiD9LFLEjz2sIC8F7pyCruDc0J4T3NS0zb1RSoLfQnCONbYP7XRoG3Pn1fr8Ol8w2644nsB5Qfz5Edz1dw9DqNLUdQ6XyQM3XUI0i3P31bUMqOlaD_EkRdzQQ%3D%3D&attredirects=0

http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/pdf/Pressrelease_YP-2018.pdf

साहित्य अकादेमीक मैथिलीक नव परामर्शदात्री समिति आ जूरी संकीर्णतावादसँ बाहर एबामे सफल भेल, तइ लेल धन्यवादक पात्र अछि। डॉ. प्रेम मोहन मिश्र नव परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष छथि,

मिथिलीक नै वरन् रसायनशास्त्रक पोफेसर छथि, से मिडियोकर नै छथि।

बी.बी.सी. क हिन्दी विभाग ऐ पुरस्कारक चचा त संगे दलित न्यूज आ ललनटॉप डॉ अरविन्द दास दारा सेहो:
https://www.bbc.com/hindi/india-44635012
http://www.dalitdastak.com/yuva-sahitya-akademi-awardee-2018-maithili-poet-umeshpaswan-latest-news-story-literature/
https://www.thelallantop.com/bherant/dr-arvind-das-writes-about-a-maithili-poetumesh-paswan-who-is-a-watchman-in-madhubani/
मुदा ऐसँ विपरीत मिथिलीक किछु युवा आ अधवयसु साहित्यकारक मटिआणी सोचबापर विवश केलक जे २१म शताब्दीयो मे हिनकर सभक सोच कतेक पाछू छन्हि। मुदा ऐ तरहक लोकक संख्या नगण्य अछि, से खुशीक गप।

मिसिदा [मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा), (मिथिलेश कुमार सिन्हा), अभिवक्ता, मोहल्ला/पोस्ट : लक्ष्मीसागर, जिला : दरभंगा, पिन : 846009]

बीहनि कथा- प्यार

''की गै, की हाल छौ ?''

''रिटायरवा, आई फुरैलौ यै, जखनिया कहलियौ, अपन बाबू के हमर बाबू लग भेजही तखन त' बकोटि लामा गेलौ.....आई, पूछै से केना ?''

''आंय गै, हमर बाबू जेतौ तोहर बाबू लग ? नहि, नहि.... हमि लिका बाला छी, हमि कोना क' बाबू के तोहर बाबू लग भेजियौ ?

अपन बाबू के हमर बाबू लग भेज, हमि बाबू सम्हारि लेबौ !''

''आहि....आहि..... आंय रौ, हमि गेल छलियौ तोरा लग कहै लेल,जे हमि तोरा सं प्यार करैत छियौ ?''

''एह, ई जेना किछुए ने केलकै.... आंय गै, मोजवा केर बियाहमे एतेक मोहारि मोहारि कऽएक देखि के हसैत रहै ?''

''अच्छा.... ओहि दिन ? रौ, ओहि दिन, तोहर पैजामा केर डोरी नीच्चा लटकैत रहौ तै.''

''हे गै, एतेक ने बोन, ओम्हि म्दन तो आि'क बारी ि नै कहने छलै म्कि हि तोरा नीक लागै म्छयौ ?''

''आंय रे, िनसूक्खा, नीक लागै केर ितलब भेलै म्कि हि तोरा सं म्पायार करै लगम्लयौह ?''

''म्एके छै तोरा हिरा सं म्पायार नम्हि छौ, तखन हि जाइत म्छयौ !'' कम्हि राजेश चल'लागल.

''ऐ, राजेश केहिर जाता है , ई म्पायार का खेल खेला के हिको बुिबक बनाता है, बूम्झ लो, हि तोहर पाछा कम्हियो छोिगे....म्पायार ि नाटक करै छै ?'' कम्हि कान' लागल.

''हेह तोरा की बूम्झ पिता है म्कि तोरा हि नम्हि बुझता है, हि तोहर म्बानु रम्हि सकता है..... हि तोरा बहुत म्पायार करता है जी.....? बजैत राजेश ओकर हाथ पकमि लेलक.

बीहनि कथा- जश

पलंग पर मृत्यु-सज्जया पर पड़ल बाबूजी'क गोरथारी मे हुनक पाएर रसे-रसे दाबि रहल छलहु. बाबूजी, कैंसर सं पीड़ित छलाह. डागदर जवाब द' देलकै. इलाज मे कोनो कसरि नहि छूटल. जतेक औकात छल, कएल.

बाबूजी, आंखि मुनि दुर्गासप्तशती'क पाठ क' रहल छथि आओर सभ'क आंखि सं नोर बहि रहल छल.

मा त' जखन हम सभ बच्चे रही, स्वर्गधाम सिधारि गेल छलथिन्ह.

तहिया सं बाबूजी'क संग मनाओल सभटा पावैन चलचित्र'क भांति चलि रहल छल. होली हो वा जुड़शीतल, सरस्वती पूजा हो वा दुर्गा पूजा, दिवाली हो वा छठि, सभटा पावैन-त्योहारि मे बाबूजी मा'क रोल मे आबि, सम्पन्न करैथ.

आई, दिवाली आब' बाला छै.... बाबूजी,बीमार.

राति भ' गेलैए.

"बाबूजी, किछु भोजन क' लिअ ने !" हम पाएर दबौबैत पुछलियैन्ह.

ओ चुपचाप टुकुर-टुकुर हमरा सभ दीस नजरि घुमा क' देख' लगलाह. हमर त' करेज फाट' लागल,मुदा मोन थीर कएल.

"किछु खा लिअ बाबूजी." हम पुनः बजलौह.

"हौ, देखह बती पर फतिंगा सभ कोना क' घुमि रहल छै ?" बाबूजी बजलाह.

"की बती मिझा दौ ?"

"नहि, नहि... देखह ओ फतिंगा सभ के.... ओ सभ अपन परिवार संगे कतेक खुश भ' नाचि रहल छै !" बाबूजी बात कटैत बजलाह," फतिंगा सभ'क परिवार के पता छै, जे कातिक मास'क आदिवस्या

म्दिन तक ओकर सभ'क ृित्यु म्नाम ित छै.... कोनो म्बराद नम्िह, अपन ृित्युक कतेक खुशी सं जश िना रहल छै.... आ तो सभ हिर ृित्यु लगीच देम्ख कान्म रहल छह..... ृित्यु त' सत्य छै ओकर सम िन केनाइ हिर धिषि..."

बाबूजी संगम्िह हिहुं सभ फम्तंगा के बती पर नचैत देख' लगलहु.

बाबूजी सेहो ठोर पर ुिस्काान पसौरने, एके टके फम्तंगा के देखैत ओकर जश ि शामिल भ' गेलाह.

बीहन्नि कथा- दंद

कामि साझ िअपन बेटा-बेटी संग छत पर बैसल छलहुं. बेटा, अन्तारस्नातक क' पमित्तयोमाता आओर बेटी अंगेजी सं स्नातकोतर'क परीक्ष केर तैयारी क' रहल छमिथ.
चचा'क दौरान, हि अपन मिकछु मति आओर संबंधी'क पमिरवार'क चचा क' कहमिलयैन्ह जे,
"देखू, हुनकर बाल-बुच्ची सभ घर-पमिरवार'क नाि पुरे परोपटा ि रोशन क' देलैथ.... हिहुं अपने सभ सं इएह आस लगौने छी....."

लगले बेटा बाजल, "की हई छै, एतेक पढ़ला-मिलखला सं....? एतेक पमिढ़-मिलमिख, आईआईटी आओर अन्य कोनो पढ़ाई केलहु आ नोकरी भेटैछ बारह-तेरह हज़ार सं ...."

"जे मिदन-रामित लगा, िहनत करतै ओकरा सफलता अवस्से भेटतै. अहा सभ के पढबा ि िने नमिह लगैए, तखन एहने बात फुरवे करत.... मिदन-रामित िबाइल आओर फेसबुक....व्हाटसएप्प केर मिसवाय कमिहयो मिकताबो केर दरस होइबो करैया....? खाली मिदाि ग शैतान केर.... "
हि दिसाइत बजलहु.

"पापा,अहा बात बुझलहु ने, लागलहु डाट', ओ की कह' चाहैए.... बुझु त' ?"
बेटी बाजमिलह.

"की बाजत, ओ घन्िडे फूलल अिह. परीक्ा ि एतेक नंबर ि पास ने कै गेल की बुझैए, की ओ राजेन्द्र पसाद भे गेल...." हरि तासि बढ़' लागल.

"पापा, अहा सभ के खाली पढ़ाई.... पढ़ाई.... पढ़ाई.... की एकरो अलावे आओर कोनो रस्ता निह अिह, जेकरा सं घर-पिरवार आओर सिजंक नाि बिढ़ सकै ?"
बेटी बाजिलह. हि कनेक शात भ' ओकर बात सुन' लागलहु, "पापा, अहा सब पुरना जिाना ि जीिब रहल छी आओर नवका सोच पालने छी. हरि रिच डास ि छल.... अहा बाज' लागलहु जे आई धिर हरि पिरवार ि ई निह भेलै,हि िन िमर पढ़' लागलहु ि्दा पढ़' ि एको रती िन निह लागल,फेल क' गेलहूं.... अहा'क डरे, आई हि पीजी त' क' रहल छी, ि्दा आगू की हेतै निह किह.....?" बजैत-बजैत ओ कान' लगलीह.

"हिरा कोन आज़ादी भेटल.... ?
िमकि धिर टीसन सं ओिह पार जेनाइ पर रोक....
बाजार जेनाइ पर रोक....
दोस्त बनाव' सं रोक....
हरि िन िकेट सं छल,खेल' सं रोक....
खाली,रोके-रोक.... अत्पान कोनो िज़ी निह !" बेटा बाजल.

"हि त' अही सभ'क कैिरयरे वास्ते ने केलहु. पिढ़-िलिख ऑिफसर बनब,त' अही सभ'क पिताषा ने बढ़त ?"

"पापा,अहा हरि नम्हि, अपन पमतषा देमख रहल छी. हरि कोनो इच्छा नम्हि, अही सभ'क थोपल इच्छा के पूणषकर'क वास्ते अपन इच्छा केर पूणाहुम्त दैत आम्ब रहल छी.... ! अहा सभ'क इच्छा पूणषअवस्से करब,ि दा आव' वाला भम्बाष्य केर संग हि एना नम्हि करब,ई हरि पण अम्हि." बेटा बाजल आओर हुनक म्बाचार सं हरि बेटी सेहो सहम्मत छलीह.

पणव झा, रार्ष्ीय परीक्ा बोडष् नयी म्दल्ली

लघुकथा- दोसर म्बयाह

म्बनय काची कामिकोम्ट चाइल्ड म्स्ट सं डीएनबी पीम्डयाम्क्स आ एफएनबी पीम्डयाम्क हीम्टोलॉजी (म्शशुरोग म्बशेरज) क के सहरसा म् नबे-नबे पैम्क्टस शुर केने छलाह. काची कामिकोम्ट चाइल्ड म्स्ट सन जानल-मिनिल संस्थान सं म्शशुरोग म् म्बशेरजता आ फेलोम्शप हाम्सल केला के बाद कइएक मिानगरीय कॉपोरेट असमताल म् म्हनका ज्वाइन कर के मिक़ा भेटल छल, मुदा म्बनय एमबीबीएस करै काल ई मयारने छलाह जे डॉक्टरी म् म्बशेरजता हाम्सल केला के बाद गाम घुम्र औता आ सहरसा म् अपन म्कल्म्नक खोम्ल के पैम्क्टस करम्थन. हुनका बुझल छल जे एही ठाम म्बशेरज डॉक्टर जे नैम्तकता के साथ पैम्क्टस करै, केर कमी छै आ तै इहो म्बशास छलैन्ह जे एक बार जम् गेला मितर म्हनकर पैम्क्टस म्नक चलते.

नबे-नबे म्कल्म्नक फुजले छल ताम्ह दुआरे एखन रोगी-मिरीज कम् आबै छलैन्ह म्कल्म्नक पर. बेसी मिरीज सब गरीब-गुरबा आ गामिण पम्रवेश बाला सब छल. मध्यम आ उच्च वगषएखन धैर या त डॉक्टर म्बनय के म्कल्म्नक आ योग्यता से अनम्भज छलाह आ नै त हुनकर छोट-छीन म्कल्म्नक आ हुनका, पम्हने सं स्थाम्पत डॉक्टर के मुकाबला म् स्वीकारने नै छलाह.

एहने सन म् एकटा मध्यम वगीय जोमि अपन दू मिसू बच्चा के ल क म्हनका म्कल्म्नक पर आबय लागल छलाह, आ फेर म्हनका सब

सं म्बानय के लंबा नाता बैन गेल छल. गोर-नार कम्नाया आ लंबा-तगा़ि बर. यादवजी अपने त एकदि ाॅडिल सन लागै छलाह. दुनू के कहाम्दन लव ि‍ैरेज छल. यादवजी अपने म्बाम्लडंग ि‍टेम्रयल के कारोबार करै छलाह आ कम्नाया बैक ि‍ क्लकषछलीह. सम्दखन अपन बच्च्या ल के दुनू बेम्कन्र संगे आबै छलाह. दुनू बडड खुशम‍िजाज छलाह आ म्बानय के बहुत आदरो करैत छलाह.

दुनू लगभग तीन बरर धैर अपन बच्च्या के ल क म्हनका म्कलम्नाक पर आबैत रहल छलम्खन ि‍दा तै के बाद लगभग दू बरर से म्हनका म्कलम्नाक पर नै आयल छलम्खन. म्हनका होय छल जे कदाम्चत बच्च्या स्ग्स्थ हेतैक या भ सकैअम्छ जे ओ सब जगह या डॉक्टर बदैल नेने होइथ.
ि‍दा एक म्दन बच्च्या के ि‍यि एकसरे बच्च्या के नेने म्हनका म्कलम्नाक पर पहुचम्ल. आबैत ि‍तिर म्बानय पुछलम्खन "अरे वाह! एतेक म्दन बाद एलहु अम्छ! की हाल चाल छैक?"

"जी सब ठीके ठाक छै." हसैत ओ बाजम्ल, ि‍दा हुनका चेहरा पर ओ खुशम‍िजाजी नै देखल जे पम्हने देखना ि‍ आबै छल.

"और, यादव जी के की हाल चाल? कत छैथ आई कैि‍?"

म्कछ काल ि‍ौन रहला के बाद ओ बात बदलैत बाजम्ल जे "सर एकरा चाम्र म्दन सं बोखार लामा रहल छै."

म्बानय के अंदाज लामा गेल छल जे हुनकर बात के जानी-बुम्झ के

अनदेखल क देल गेल छल, स्याइत ओहो ई बात के अंस्छया क बच्चा के ीटिट करै लागल छलाह.

"सर यादव जी आ हि अलग भ गेल छी."

ई सुनैत पेम्सि त्शान म्लखैत म्बनय के कलि र म्क गेल छल.

"ओहोह! ि दा से म्कएक? " म्बनय पुछलम्खन.

"सर ओ बडड तिसाय छलाह हिरा पर, बात-बात पर म्घम्चयेनाइ आदम्त बम्न गेल छल हुनकर. काज-धंधा सेहो बंदे सन क देने छलाह ऊपर से हि काज पर जाय छलहु ताहु ि शक करै लागल छलाह." ई सब सुनैत म्बनय अपन भावना पर संयि राखैत एकटा पोफेशनल डॉक्टर जेका दवाई म्लम्ख रहल छलाह. म्कये त पम्हल त ई, जे ओ एखन धम्र ि मिला के एकै टा पक सुनने छलाह आ दोसर जे ओ ि म्हला म्हनका से कोनो सलाह नै ि गने छलीह.

"ई दवाई सब बच्चा के खुआम्बयौ आ तीन म्दन बाद फेर से देखा लेब. साधारण वायरल बोखार लाम्ग रहल अम्छ, तै घबरेबा के कम्नयो नै छैक." एतेक कम्ह म्बनय चुप भ गेल छलाह

ि दा जखन ओ उम्ठ क जाय लागल छलीह त म्बन ि गने सलाह नै दै के अपन म्सदाात पर म्बनय के म्नयंतण नै रहलैन आ एतेक भम्र कम्ह देने छलाह जे "एकबेर अहा दुनू के हिरो से पुछबाक चाही छल या कोनो ि नोवैजाम्नक कंसल्टेट स सलाह ल लै के चाही छल,

ख़ास क के बच्चा के भविष्य के लेल."

"सर, आब त जे होय के छल से भ गेल. कोटषि सेहो ििला मिबटै बला अछि. म्युचुअल म्डवोसषभेट जेतैक."

२-३ दिन बाद यादवजी सेहो क्लिनिक पर एलाह. एकसरे.

"सर हरि बच्चा आयल छल की अपन िाय संगे?"

"ह आयल छलीह, ुदा अहा के की भेल अछि, बडड कजिोर लागा रहल छी?" यादवजी के पशक जवाब ि हुनकर देह-दसा देखैत विनय जवाबक संग ई सवाल केने छलाह.
"सर, हरि किडनी खराप भ गेल अछि, डायलिसिस पर छी. हरि बच्चा केहेन छै आ ओकरा की भेलै य "

"बच्चा ठीक य, साधारण वायरल बोखार छै २-४ दिन ि ठीक भ जेतै. अहा दुनू के बीच की भेल? कतेक नीक लागय छलहु दुनू एक संगे." विनय बजलाह.

"सर ऐ सब ि हरिे गलती छल, पिछला दू साल सं हि ओकरा संगे बडड खराप व्यवहार करै लागल छलियै, बात-बात पर चिचियाइत छलहु, एक बेर त हाथो उठा देने छलिये, तािह से ओ घर छोमि के चैल गेल छलीह."

"विवाह के कतेक सयि भेल छल?"

"सर, छह साल भ गेल छल."

"आ अहा कम्हया से एना करै लागल छलहु?"

"सर दू-एक साल से पता नै हरिा एतेक तासि म्कएक उठै लागल छल."

"शायद अहा के बीपी बहुत म्दन स हाई भेल छल" म्बनय बाजलाह

"हरिा पता नै छल, एक बेर स्टोन आ इंफेक्शन भेल छल."

"भ सकै अम्छ जे अहा हाई बीपी आ यूम्रया बढ़ला के चलते म्खम्सयाह भ गेल हेबै."

"भ सकै अम्छ सर, ई त करीब सात हिीना पाम्हले तकलीफ भेल छल तखन पता लागल जे मिएटाइन ८ भ गेल अम्छ."

" आ ओ अहा स कम्हया अलग भेली?"

"करीब एक साल पम्हने"

"हुनका पता छैन ई सब गप्?"

"नै सर, आब की फ़ायदा हुनका बताबय के. ओ अपन म्जनगी म्मक

से जीबैथ आ हरि बच्चा बस ठीक से रहै आर हरि किछ नै चाहै.ओहुना ओ शायद दोसर बियाह क रहल छथिन आ संग रहितहु कोन हुनका हरि परवाहि रहतैन." यादवजी बाजला

"डॉक्टर अपनेक किडनी के बारय कि की कहै छैथ?"

"सर ट्रांसप्लाट के लेल कहल गेल अछि, ता धरि डायलिसिस" अपन दयनीय परिस्थिति के बावजूद यादवजी पूर्णत: संयत, दृढ आ शातचित भ जवाब देने जा रहल छलाह.

"ट्रांसप्लाट करवा पेबै?" विनय पुछलखिन.

" सर दू भाई अछि हरि, दुनू परिवारसहित भिन्न भ गेल अछि, पिता बूढ़सूढ़ अछि. तथापि छोट भाय त किडनी देबय चाहै छल किन्तु हुनकर कनिया आ सासुरक लोक सब कनारोहैट मचा देने अछि, अस्तु आब ओहो नै द सकत."

ऐ तरहे ओ लंबा-चौड़ा, हटा-कटा नौजवान के जीवन विनय विनय अपना सामने ऐ तरहे बदलैत देखलखिन

किछ देर आर गप्प केलाक बात ओ चल गेल छल.

तीन दिन बाद हुनकर कनिया बच्चा के ल क फेर आयल छलीह. बच्चा ठीक छल.

"सर एकटा बात पूछी?" मधुरपम मुस्कियत चहचहाट के संग ओ बाजल

ह ह किएक नै पुछू. "हि यमे दोसर बियाह क लेब त हिर बच्चा के मिदागि पर खराप पभाव त नै पितैक?"

ऐ बातक उतर मिनय बहुत जल्दी आ संक्षिप्त िद क बचै चाहै छलाह. अस्तु बजलाह "ई त बहुत रास बात पर निर्भर करत पहिल त ई जे जकरा सं अहा बियाह करबै ओकर ऐ बच्चा के पति की व्यवहार रहैत छैक, किएक भ सकै अछि जे अहाक बच्चा कइएक िहीना या साल भिर हुनका बाप के रप ि नै देख पाबै. यादवजी के किछ खबर अछि अहाके?" संक्षिप्त उतर दैत मिनय ई पश केने छलाह.
"नै बस कियौ कहै छल जे दार पी पी के किजोर भ गेल अछि." ओ बाजल

"एहन बात नै छैक, अहाक पता होबाक चाहीए छल जे हुनकर दुनू किडनी खराप भ गेल अछि, मिछला छः िसि सं ओ डायलिसिस पर जीब रहल छैथ. आ जखन अहा दुनू संग छलहु हिरा लगै अछि जे तखने सं हुनकर किडनी के शिकायत पायिरी फेज ि छल आ है बीपी आ शारीिरक बदलाव के कारणे ओ एहन मिजाजयाह भ गेल छलाह आ काज-धंधा पर ध्यान नै दैत छलाह." मिनय बाजल छलखिन.

ई सब गप्प सुिन के यादवजी के किनया के ि्ह अवाक भ गेल छल.

म्बानय के हुनकर चेहरा पर बनैत बीतल सयि ि घटल घटना सब के तीवरफ्लैशबैक के अंदाज लागय लागल छल. जेना कोनो पोजेक्टर पर कोनो म्फल्ि के म्रपीट क देल गेल होय आ मि म्टक ओकर सीन सब के नब दृम्ष कोण आ व्याख्या के संग देख रहल होय.

फेर फ़टाफ़ट ओ उठली आ बच्चा आ इलाजक फ़ाइल लय ओ बाहर चल गेली. कदाम्चत ओ अपन िनक भीतरी भाव के म्बानय तक नै पहुच दैत चाहै छलीह, शायद ओ अपन व्यथा ककरो नै बतबै चाहे छलीह.

अब म्बानय अपन कुसी पर पाछा धम्स गेल छलाह आ अमाला िरीज के आबय के इंतज़ार करैत सोचे लागल छलाह जे व्यथे ओ हुनका ई सब गप्प बता देलम्खन. बेचारी कतेक खुश छलीह. दोसर म्बयाह करै वाली छलीह, कम्रतम्थ त अपन नव म्जनगी के तलाश कम्रतम्थ, हिर ऐ ि की जाय छल...आम्द..आम्द....

ऐ घटना के करीब तीन िहीना बीत गेल छल. एक म्दन अचानक से ओ दुनू बेम्कत फेर अपन बच्चा संगे म्बानय के म्कलम्नक पर उपम्स्थत छलाह. पम्हलुके म्चर-पम्रम्चत अंदाज ि ओ बाजम्ल...

"सर पन्द्रह िम्दन म्हनकर रीनल िसिलाट करवा रहल छी"

"अरे वाह, डोनर भेट गेल?" उत्साह आ खुशी मिम्शत भाव स म्बानय पुछलम्खन

"जी, सर हरि सभटा जाच भ गेल अछि, मकड़नी चि क गेल छै" ओ बजली.

ऐ पर यादवजी बाजला "जी सर ई मकड़नी द रहल छैथ हरि".

"दोसर बियाह क रहल छथिन ई.......हरि सं" कमाया के मखमसयाब के अंदाज ि यादव जी बाजल छलाह. पेि, ख़ुशी आ उिग के चकि हुनकर आंखि ि साफ़ देखल जा सकै छल.

आई विनय सेहो अपना आप ि बहुत संतुष्टि के अनुभव क रहल छलाह...सोचि रहल छलाह जे िनुकखक केहन केहन व्यवहार होइत अछि....

लघुकथा- चनि

सुधीर बाबू एकटा सहृदय, कवि आ सफल आपीएस ऑफिसर छलाह. डीआईजी के पद से रिटायर भेला के बाद ओ राजनीति मे आबि गेल छलाह. अपन सेवा के एकटा पैघ हिस्सा बिहार मे बितेला के बाद ओ बिहार विधान सभा मे विधायक आ फेर बिहार सरकार मे मंत्री सेहो बनलाह. एकबेर कोनो सरकारी काज सं चंडीगढ़ गेनाइ भेलैन, संगहि पाटी के कोनो कार्यक्रम सेहो छल.

दिन भरि के कार्यक्रम से थाकल-ठेहिआयल सुधीर बाबू साझ काल मे जखन गेस्ट हाउस के अपन कमरा मे सुस्ताईत छलाह तखने अदर्ली हुनका लग आबि के एकटा विजिटिंग कार्ड दैत कहलक जे शीनि कोई आपसे मिलने की बहुत जिद कर रहा है, नाम चनि बता रहा है और कह रहा है की आपके बिहार के बेगूसराय जिला से है और आपसे पुराना जान पहचान है. ओ काडषपढ़ल लगलाह...चंर पकाश यैह नाम लिखल छल काडषपर आ नीचा कोनो ढाबा के पता. बडड मिन पाडला के बादो हुनका ऐ नाम के कोनो लोक मिन नै पलैै, थकनी से मिनो अलसायाल छल. एक मिन त भेलै जे कहि दी जे हम नै भेट क सकै छी अखन. मुदा फेर नै जानि की फुरेलैन जे ओ बजलाह जे अच्छा बजेने आबह ओकरा.

किछ काल मे अदर्ली ४५-४६ वरखक एकटा लोक के संग नेने आयल. सुधीर बाबू ओकर चेहरो देख के कतबो मिन पामिला पर चिन्हि नै पेलथिन तखन ओ अपन परिचय देत सुधीर बाबू के अपन सकि

साक्षात देख खुशी के ि‍रल काने लागल छल. 'चनि‍' उफ़ष चर पकाश से सुधीर बाबू के कोनो व्‍यशेर जान-पहचान या सम्‍बान्‍ध छल एहन कोनो बात नै छलै. ि‍दा दुनू के बीच सम्‍बान्‍ध जोि‍ बला करीब २५-२६ बरर पुरान एकटा घटना छल. सुधीर बाबू के आम्‍खक आगा ओ घटनाि‍ि‍ आब एकटा म्‍सनेि‍ जेका चल लागल:

बात करीब पच्‍चीस-छब्‍बीस बरर पम्‍हने के छल जखन सुधीर बाबू बेगूसराय म्‍जला ि‍ पदस्‍थाम्‍पात छलाह. एकम्‍दन जखन सुधीर बाबू गंगा म्‍दयारा एम्‍रया ि‍ पुम्‍लस के म्‍कछ जवान के संग छापाि‍री क के वापस लखीसराय म्‍जला ि‍ख्‍यालय घुरैत छलाह त रस्‍ता ि‍ हुंकार जीप ख़राब भ गेलैन. ओ एकटा भयंकर बरसाती राम्‍त छल. कतौ कोनो सुम्‍वधा नै. स्‍पाइत गाडी ठीक होय के संभावना भोर होय से पम्‍हने म्‍कनहु नै छल. ताम्‍ह दुआरे ई ऑडष केलम्‍खन जे राम्‍त व्‍यशाि‍ एम्‍हरे कतौ कैल जाय. अस्‍तु बगल के गाि‍ ि‍ म्‍कछ घर सं खाट ि‍गवा क ई सब एकटा म्‍कसान के पैघ सन दालान पर आराि‍ करै लागलाह. पैघ पुम्‍लस अ अफसर के एकटा अलगे र तबा होय छैक आ गाि‍ीण सि‍ाजि‍ ि‍ एहन सन अम्‍धकारी के इज्‍जातो ततबे होइत छैक. स्‍पाइत एकटा गाि‍ीण आम्‍ब म्‍हनका पुछलकैन जे सर एकटा छौरा अहाके देह-हाथ जाते चाहैत अम्‍छ. थाकल त छलाहे, झट द हं कम्‍ह देलम्‍खन. म्‍हनका ह कहते एकटा उनइस-बीस बरषक छौरा आम्‍ब के म्‍हनकर देह-हाथ जाते लागल छल. नाि‍ पुछला पर अत्‍पान नाि‍ ओ बतेने छल जे सर नाि‍ त ओना चंर पकाश अम्‍छ ि‍दा लोक चनि‍-चनि‍ कहैत अम्‍छ.

कम्‍त काल जातेला ि‍तिर जखन सुधीर बाबू के देह म्‍कछु हल्‍लुक बुझेलैन तखन ओ चनि‍ से पुछलम्‍खन जे तो एम्‍ह मारहत के एतय

काज करै छहक की? ओ कहलक "नै सरकार हरिा अहा सं मकछु कह के छल ताम्ह से अवसर देखल ितर पैरवी लगा अहा सकि एलहु अम्छ. हि िमकि पास छी, आ बडड मनक म्बारहा गाम्ब लैत छी, एम्हर-आम्हार, िला-ठेला ि अपन कला के पदशषा क के मकछु रोजी-रोटी किा लैत छी. अहा सुनबै हरि गाओल गीत?"

सुधीर बाबू के ह, कहला पर ओ लगभग आधा-पौना घंटा भम्र म्बारहा गाम्ब-गाम्ब के सुनेलकैन. चनिा के आवाज ि सम्रपहु बडड ददषआ बुलंदी छल. स्गाइत गीत सुनैत-सुनैत सुधीर बाबू के कोरह फाम्ट गेलैन, नै त पुम्लस क आम्ख ि कम्हं एम्हना नोर आबै! एहन गुणी कलाकार सं देह-हाथ जताबैत आब सुधीर बाबू के िने-िन ग्लाम्न होयि लागल छल, आ ओ गीत सुनैत-सुनैत उम्ठ बैसला आ ओकरा कहलम्खन जे "तोहर गीत ि बडड बुलंदी आ ददषछह. आई कतेको म्दन बाद तो हरिा कना देलह अम्छ. कह, तोरा की इनाि दी चनिा?"

मकछ काल सोचला उतर ओ बाजल "सरकार गाव ि एकटा बाबू साहेब छै. हरि बाबू एकबेर ओकरा से मकछु टाका उधार नेने छलाह. िदा बाबू साहेब के सुईद क जाल ि ओ एहन ओझरेला जे बाबू साहेब के डयोढ़ी पर १० बरर तक बेगार खटला, खटैत-खटैत बेचारे स्गगषचम्ल गेला िदा हुनका िइलो ितर, बाबू साहेब के कजष नै ख़तिा भेल. बाबू साहेब चाहैत छलाह जे बाबू के बाद आब हि ओकरा डयोढ़ी पर बेगार खटी. हि गाि-गािइत घुमि-घुमि म्बारहा गाम्ब मकछ आिदनी करैत छी, जौ म्हनका एतय बेगार खटती त पेट कोना क भम्रम्तयै. ताम्ह सं हि म्हनकर बेगार करय से िना क देम्लयै. बस यैह बात म्हनका लामा गेलैन आ इ हरिा पर लामा गेल छैथ. म्पाछला मकछु िसि सं हरिा म्खलाफ थाना ि चोर-डकैती आ लूट-

पाट के कइएक टा फुइस केस दजषकरा देल गेल अिछ, तिहया स हि ारिल-ारिल िफकिर रहल छी. एकटा हरि ािमया ािसटरजी छैथ ओ अहा के ािारय ि बतेलैथ तखन हि बडड िहमित क क आ पैरवी लगा अहा सोझा उपिसथत भेलहु अिछ, आब अहा स एतबे गोहराबै छी जे हिरा संगे इनसाफ क देल जाउ सरकार" इ कहैत ओ सुधीर बाबू के पैर धर लगलै. सुधीर बाबू ओकरा पकिड़ त कहलिखन जे हि अहाक वयथा सुनल, आ आशसत करै छी जे भोरे-भोर हि एिह ािला के देखबै.

भोरे लोकल थाना पर जा क सुधीर बाबू चनिा के िखलाफ दायर सबटा ािमिला के िरपोटषािगबा के देखलिखन. पुिलिसया जान आ आ अनुभव के बले िरपोटषपढले सं लगाओल आरोप सब झूठ छैक से बुझह ि कोनो भागट नै रहलैन. िकएक घटना सथल सब फराक-फराक आ बेस दुरी पर छल ािदा केस के गवाह सब ओिह बाबू साहेब के पिरवार के लोक आ नौकर-चाकर सब छल. चनिा स चोरी आ लूट के कोनो सािानो नै बरािद भेल छल. िरपोटषके वृहत िािरकण के बाद सुधीर बाबू थाना इंचाजषके केस ख़ति करै के आदेश देलिखन. चनिा के इ सुिन क आिख ि खुशी के नोर आिब गेल छल.

सुधीर बाबू के चेहरा पर संतोरपद ािसकी छलैिन. ओ चनिा से कहलिखन जे आब तो आजाद छह, जे ािन से कर लेल.

ऐ पर चनि बाजल, "सर, एतेक भेला के बाद ज हि एम्हि एम्रया िरम्हि गेम्लि त बेसी म्दिन तक म्ज़ंदा नही बचब. तै आब हि म्नायाएर लेलहु अम्छि जे आब हि पंजाब चम्लि जायब. जीब त ओतम्हि म्किछु िजूरी क के किा-खा लेब. सुधीर बाबू के जेबी ि जे म्किछु टाका छल से ओकरा हाथ के दैत कहलम्खिन जे राम्ख ले, बाट ि काज ऐतौ, म्किछु सहृदय गौआ सब सेहो चन्दिा क के ओकरा म्किछ कैचा द देने छल.

सिय के संगे सुधीर बाबू के सृम्ति ि ऐ घटना पर पदा पम्रि गेल छलै य. आई बरो-बरषबाद चनि स भेट भेला पर ओ सृम्ति फेर ताजा भ गेल छल. जखन चंरपकाश सुधीर बाबू के गोर लागय लेल झुके लागल त ओ ओकरा कम्स क पकिं त गला लगाबैत कहलम्खिन नै-नै एहन जुलुि फेर नै, अहा सन कलाकार से एकबेर फेर पैर छुआब के पाप नै करब हि. एक अथषि त अहा हिर गुरओ छी, म्कएम्क कम्रयर के शुरआती सिय ि अम्हिं स हिरा जान भेटल जे पुम्लस आ अदालत ि इन्साफ तखन तक संभव नै अम्छि जा धम्रि अम्धकारी सब लग एकटा संवेदनशील हदय नै होय आ म्रपोटषआ गवाह से इतर सेहो म्किछ बात भ सकै अम्छि इ िहसूस कर के इच्छा-शम्क्ति नै होय.

गरा लगैत ओ सुधीर बाबू के भम्रि पाझ के ध नेने छल. खुशी के िरल ओकरा आम्ख से नोर ढब-ढब चुबै लागल छल. कम्नेक काल बाद िनि म्स्थर भेला पर ओ बतेलक जे दस साल धम्रि एकटा रेस्टोरेट ि िजूरी केला के बाद ओ एतय अपन एकटा छोट म्छन होटल(ढाबा) खोम्लि नेने अम्छि आ कैटम्रंग के काज करैत अम्छि.

अपने एम्रया के एकटा लि की से मबयाहो केलक आ ओकरा दू टा बच्चो छै एकटा कॉलेज ि पढ़ैत अम्छ आ एकटा स्कुल ि. ओ कहै लागल जे ओकर पमरवार म्हनका हरदि याद करैत छैन आ एकबेर भेट करै छैयत छल.

अस्तु "आई राम्त के भोजन तखत तोरे घर पर हैतैक" सुधीर बाबू के इ बात कहैत दुनू के चेहरा पर एकबार फेर सुखद ि स्कान आम्ब गेल छल, जेना म्दन भैर के याता के बाद साझुक पहर आकि झोझेर ि आम्दत्य एकबेर फेर लाम्ल ि बीछेने होइथ!

मिथली कथामे स्त्री

उपरोक्त विषय पर चर्चा केनाय एतेक हल्लुक बात नै अछि, तथापि हम जे किछु लेखक केर रचना पढलहुँ अछि ओहि मे किछ स्त्री पात वा नायिका क भूमिका के विवेचना के पयत क रहल छी।

सर्वप्रथम हम यात्री बाबा के उपन्यास 'पारो' के नायिका पार्वती उर्फ पारो केर चर्चा कय रहल छी। पारो के पहिल परिचय पाँच छ: वर्षक, श्यामवर्णा बुच्चिया के रूप मे कैल गेल अछि, आ कथा के निमित्त अन्त १७-१८ वर्षक पारो के अकाल मृत्यु क घटना के संदर्भसँ होय अछि। मिथली कथा मे स्त्री पात सब मे पारो के चरित एकटा एहन चरित अछि जे पाठक के हृदय स्थली मे भावना के तीवर पवाह त लैए आबै अछि संगहि मिथिला क्षेत्र मे ७०-८०-९०के दशक मे(आ संभवत: किछु एखनो) स्त्री जीवन के दशा के कैएक टा परत खोलि के राखि दैत अछि। २-४ घंटा मे पारो सन नायिका के नेनपन केर खेलौर सँ ल के किशोरी पारो के चरित्रकूत क दै बला बुद्धि, विवेक, मर्यादा के स्वाभाव वाली धिया आ अंतत: सामाजिक दोर के कारणे अपरिपक्व अवस्था मे अकाल मृत्यु के वरण करैत पारो के झलक कोनो चलचित्र जेकाँ पाठक के आँखि के आगा एक के बाद एक क के खसकि जाय अछि।
पारो नेनपने स चंचल छलीह आ किशोरावस्था मे पहुँचैत पहुँचैत लोक व्यवहार आ ग्यान मे पारंगत भ गेलि। कथावाचक कहै छैथ जे ओ पारो से १-२ वर्षक जेठ छलाह मुदा तैयो लोक व्यवहार के जे बात हुनका इंटर मे गेला पर बुझ एलैन से पारो ओहि बयस मे बुझै छलीह जखन कथावाचक आठमी मे छलाह। ऐ पकारे यात्रीजी

ई बात के इंमात करै छैथ जे म िमथिला के नारी ि ि िनम्सक पम्रपकम्वता बहुत जल्दी आम्बा जाय अम्छ। पारो पढबा म्लखबा, कथा-कम्बता ि सेहो बेस तेज छलीह, स्माईत म्हनकर म्पाताजी म्हनका खूब पढैबा के इच्छा रखै छलाह, ुिदा से म्हनकर ियि के पम्सन नै छल। ई िमिथल सिाज के एकटा आर चम्रत म्चतण अम्छ जेकरा यातीजी ऐ कथा ि खोम्ल क देखेलम्थन्ह अम्छ। ई चम्रत क िबेस आजुक िमिथल सिाज ि सेहो व्यात्त अम्छ, स्पाइत म िमथिला केत ि स्त्री साक्रता दर कदाम्चत सगर देश ि सभस ँ म्नम स्तर पर अम्छ। औपचाम्रक म्शक्ा नैहो भेटला पर पारो रा ायिण, गीता, अ िरकोर, म्हतोपदेश आम्द गंथ के घोम्र लैत छम्थन।

पे ि म्बवाह आ म्बवाह स ँ पूवषअपन म्जवनसंगी के म्नाक से जाम्न लै के इच्छा आ ऐ से जुडल म्दवास्वप सेहो पारो के ि ि उचरै छैन्ह आ एकरा ओ कथावाचक के जाम्हर सेहो कर छम्थन जे “म्बारजू भैया, भाइये-बम्हन ि ज ँ म्बआह दान होयतैक त कतेक म्दव होयतै। कत’ कहा ँदन अनम्ठया के जे लोक उठा ल अबै अम्छ से कोन बुम्धयारी!” म्कशोरी पारो के ि ि पुर र जाम्न के पम्त जे आशंका छल से ओकर म्लखल कम्बता के ऐ लाइन ि सेहो व्यक्त होय अम्छ:

सखी ह ि करहि ीन

कोन म्बम्ध खेपब म्दन

कोन म्बम्ध खेपब राम्त

म्नटुर पुर ख क जाम्न

कोन म्बम्ध काटभ काल

हैत ह ि र की हाल।

पम्रम्स्थम्त के ि िरल पारो के म्बवाह म्कशोरावसथे ि अपना सं दुना उम ि र के दुम्न वर स ँ भ जाय अम्छ। कथा के अंत होय अम्छ

शारीरिक रूप सँ अपरिपक्व पारो के प्रसव के कारण भेल अकाल मृत्यु सँ। इ भाग पढ़ैत काल पाठक के कोरह फ़ाटि जाय से स्वाभाविक अछि। ऐ प्रकारे देखल जाय त पारो एकटा तेजस्विनी मिथिलानी छथि जे मिथिल समाजि मे व्याप्त दोर के कारण मजबैत अपन अस्मिता के संटि क रखै छथिन आ अंतत: अकाल मृत्यु के प्राप्त हौय छथिन।

आब अबै छी प्रो० हरिमोहन झा के रचना पर। ओना त हुनकर कथा-उपन्यास सब मे नाना प्रकार के स्त्री पात्र सब भरल परल अछि, मुदा हम एतय हुनकर उपन्यास कन्यादान आ द्विरागमनि के पात्र बुच्ची दाई आ मिसि सावजली बोस के चर्चा क रहल छि। बुच्ची दाई के चरित्र जत अपन समाजि के मिथिल समाजिक स्त्री क वास्तविकता अछि त मिसि सावजली कदाचित ओ चरित्र अछि जेहन लेखक मिथिल स्त्री के भविष्य देखय चाहै छलाह। बुच्ची दाई एकटा एहन अबोध बालिका के चरित्र अछि जनका मानसिक आ शारीरिक परिपक्वता से पहिनेहे विआह क देल जाय छैन्ह आ ताहि कारणे ऐ संबंध के बुझ आ स्वाभाव मे ओ असफल छलीह। मुदा रूप आ गुण सँ पूर्णरुपेण समाजि मे मानतला पर आ सिखौला पढ़ौला पर आधुनिकता के सवबास ओहि लै अछि। मिसि सावजली बोस काशी विश्वविद्यालय मे पढ़ै वाली ओ कन्या छलीह जे कुशाग्र बुद्धि के संगे ठाँय पर ठाँय बाजय के कौशल सेहो राखै छलीह आ एहि कौशल के बले सीसी मशि के दपषचुड-चुड करै छथिन आ हुनका हुनकर गलति के एहसाह दियाबै छथिन।

दू टा पुरुष लेखक के बाद दू टा स्त्री लेखक के रचना मे स्त्री पात्रक चर्चा करै चाहै छी। सर्वप्रथम लिली रे के कथा उपसंहार के

नामयका ’अपणा’ के चचा क रहल छी। मलली रे अपन मामान रचना ि स्ती पात के िफ़ष ऐ बात के उल्लेख कएने छथ जे िमथल साजि स्ती के मावाह, पे-संबंध आमद के ल क अनुदार रहल अछ आ औखन तक अनुदार अछ। जे िमहला वगषमातूसतातकि साजि ि युग युग सँ सीमदत आ पताड.त होइत रहल छथ, सेहो वगष अपन साजिक दोसर सदस्य के पता अनुदार बनल रहलीह, सहानुभुता के अभाव रहलमा। मशाकत आ आधुमाक िनल जाय बला साजिक पुर र वगक िनमसकता ि पमवतष नै आयल। ’अपणा’ के चमत एमह अन्तरमारोधक िषिमशी उदाटन अछ। अपणा के पमत हुनक बमहनोइ मानयक आचरण भावनातकि नमह, शोरणातकि छैन। ओ डाक्टरी के पवेश परीकाक िगषशाक नामपर अपणाके अपन िह जाल ि फ़ाँस लैत छथ। अपणा के बमहन वसुधा के आचरण इषाभाव सँ भरल अछ ओ अपन पमत के लंपटता के दोर नै दैत अछ, अपणा के दोरी िनैत अछ। ओ अपणा के तेज से जरैत अछ। मामा लग मशकायत क अपन छोट बमहन के पमत घरक सदस्य ि घृणा घमाभूत क दैत अछ। घौल भेल माता अपणा के दंमडत करबाक हेतु कठोरतिमाणष करैत हुनकर पढाई छोरा एकटा िजदूर संगे सामह दैत छथन। अपणा डाक्टर नै बमा सकमल ुदा अपन पमरशि आ मादा के बल पर सासुर के खूब सुखी-समपन बना दैत छथन। ुदा माडंबना अछ जे अपणाक पमरशि सँ मारथाइमा बनमल ननमद सब सब सेहो हुनकर कुचेषा करै अछ। अपणा त्यागिमय छथ, सेवाभाम छथ, सहानुभूमाशील छथ, अपन िनक व्यथा कौखन पकट नै होयि दै छथन। सबसँ बमढ के धैयषआ स्वामािन छैक। इ स्वामािन पमाक देहावसानक मजगयासा ि आएल माता केँ कहल वचन ि (’एमहठाि हिरा सब िनैत अछ। अहाँस

बहुत बेसी!') सेहो स्पष अछि।
अंतमे स्त्री चमत्कृत जेकर हिचचा एखन क रहल छी ओ अछि डा० शेफ़ालिकाक वर्मा के कथा 'मुक्ति' के नायिका 'हिना'। हिना कोमल सदृश्य भाव वाली तेजस्विनी कन्या छथि जनिकाक सामाजिक देखावटी उत्थान आ इमोशनल टेंशन नै पसिन छैन्हि। ओ अपन समाज के महिला-मुक्ति आंदोलन आ ओय सँ जुड.ल सदस्या सब के आलोचक छथि जे महिला-मुक्ति के नाम पर बड.का बड.का जुलूस त निकालै छथिन मुदा ई बात के अन्तर्बोध नै छैन जे महिला के मुक्ति चाही कथी सँ। ओ अब अपनहि जानैत या अनजान मे नारी के प्रतारणा के बढावा दै बला काज करै छथिन। एहि मे हिना के विवाह एकटा प्रोफ़ेसर साहब से होय बला रहै छैन जे वास्तव मे पकरौआ विवाह छल आ तेकर बदला लै लेल प्रोफ़ेसर साहब हिना संग हुनक पाच टा सम्बन्ध के निरन्तर दान क दैत छथिन। मुदा तेजस्विनी हिना ऐ विकट परिस्थिति के अपन कुशाग्रता आ तेज से सामना लैत छथिन, ओ ऐ विवाह के अस्वीकृत क दैत छथिन आ प्रोफ़ेसर साहब के चिन्ता करैत बजै छथिन जे "हम एहि विवाह के नै मानैत छी आ नै हिनि संगी मानत। हम सब एतेक गेल-गुजरल नै छी। नारी के मर्यादा मात्र विवाह छैक मुदा हम एकरा नै मानैत छी। विवाह स्त्री पुरखक सम्पूर्ण मिलक। जे बलजोरी देल जाय आ जे एकहि संगे पाँच गोटे के देल जाय ओ निरन्तर धार्मिक दृष्टि ए मानि भ जाए मुदा हम कहियो नै मानब।
प्रोफ़ेसर साहब हिना के ऐ तर्कपूर्णतकषसे अवाक भ गेल। ओ एकटा अज्ञात सम्मोहन सँ आकर्षित भ हिना से अपन अपराध लेल क्षमा मांगैत छथिन आ हुनका अपन जीवन संगिनी बनाब के वचन दैथ छथिन।

एम्हर पकारे हि देखैत छी जे जत पुरुष लेखक सब स्त्री पात के दारा समाजि स्त्री के अवस्था आ हुनका पति क्याति कुपथा पर चोट करै छथि ओतय महिला लेखिका स्त्री समाजिक अवस्था के सुक्ष्म विवेचना करैत छथि।

एकटा जनमेजय कथा (व्यंग)

ओना त महाभारतक सबटा कथा सब युग के लेल प्रासंगिक रहल अछि, मुदा राजा जनमेजयक एकटा कथा सेहो आजुक समय के हिसाब सं खूब प्रासंगिक अछि.

राजा जनमेजय अर्जुन के पोता आ राजा परीक्षित के बेटा आ उत्तराधिकारी छलाह. एक बेर राजा परीक्षित कलयुगक प्रभाव सं ग्रस्त भs मरल साप केर माला बनाय ऋषि शमीक के गर मे धs क हुनकर अपमान क देलखिन. ऐ अपमान सं ऋषि के बेटा शृंगी खिसिया गेलाह. ओ तपस्वी आ सिद्ध छलाह आ अपन बाबू के अपमानक बदला लेबय के ठानि नेने छलाह. ऐ के लेल ओ नागराज तक्षक के बजाय, राजा परीक्षित के ठेकाना लगाबय के सुपारी द देलखिन. बस तखन की अर्जुन सं पराजित आ अपमानित तक्षक एहने मौका के बाट जोहैत छलाह, तें ओ ऐ सुपारी उठब मे कोनो कौताही नै रखलाह आ सही मौका पाबि ओ परीक्षित के 'डिलीट' क देलाह. परीक्षित केर मृत्यु के बाद हुनकर बेटा जनमेजय गद्दी पर बैसलाह. बापक हत्या के सभटा कहानी जानलाक बाद हुनका मोन मे बदलाक भावना प्रज्ज्वलित भ गेलैन आ ओ तक्षक समेत सभटा नाग के समूल नाश करै के ठानि लेलैथ आ ऐ के लेल सर्पयज्ञ करेलैथ मुदा ऐ 'डिलीट' के मास्टरमाइंड यानी ऋषि शृंगी के छोड़ि देलखिन.

"आब एकटा 'बाबा' से के पंगा लै! बदले लै के छैक त तक्षके सं ल लैत छी आ ओकर समूल नाश क दैत छी." (भ सकै अछि एहने

मकछु मचार हुनका ोनि ि आयल हेतैन, यदमा ऐ तरहक बात िहाभारत ि आमधकामरक रप सं कतौ ने देखलहु पढ़लहु अमछ).

हं त भेल एना की सपषयज ि एक-एक क के सभटा मादोर साप सब खमस खमस क भसि होयि लागल. ओकरा सब के पतो नै छल जे ओकर सब के दोर की छैक जेकर सजा ओकरा सब के भेट रहल छल. खैर. हजारो-लाख साप के िइला के बाद जखन तक्क केर पामर एलै तखन पता नै ओ कुन देवता-मातर से सेमटंग क के आमसतक नाकि एकटा बामहण के भेज के सपषयज रकवा देलक आ तक्क केर जान बमच गेल. कहल जाय छैक जे एकर बाद जनिजय आ तक्क दुनू बरो-बरख मजबैत रहलाह आ अपन-अपन राज-पाट के भोग केलाह. कहादैन कहल जायमछ जे तक्क केर बाद ि इन्रक दरबार ि सेहो बडड मक पैठ बमन गेल छल. आ ऐ तरहे देखल जाय त ोसिटरोइंड ऋमर शृंगी, एक्सीक्यूटर तक्क आ बदला लै पर उतार जनिजय के त मकछु नै भेल िदा ऐ सब पमिया ि ोरल गेल बेचारा हजारो-लाख मादोर साप सभ जेकर एकोति अपराध जे ओ तक्क के सिदाय से छलाह.

उपसंहार: आजुक सयि ि एमह कथा के पासंमाता मचमहयौ आ मचार कमरयौ, अहा बुमद्द जीवी छी

मृणाल आशुतोष, एरौत(समस्तीपुर)

छुटकी

बहुत दिनक बाद आय सब दोस्त क संग फुटबॉल खेलबाक परगरामि बनल। विकास अपन संघी सबक साथ फुटबाल खेल रहल छल। अचानक स अपन नाऊ सुमन ओ इम्हर उहिर देख लागल। ओकर पाछासी विनय दौड़ि ओकरा लंग दौड़ैत पहुचल।
"विकास, रौ विकास!"
"की भेलौ रौ! कीछ बजवे..."
"ओ तोहर भतीजी..."
"की भेलय हरि छुटकी क? बाज न रौ, की भेल हरि छुटकी क?"
"ओ! ओ स्कूटी स एक्सीडेट क गेलौ। गाड़ि पर क लोग सब ओकरा झाजी नर्सिंग होम ल गेल अखन हन।"
"अरे बाप रौ बाप। ई की भ गेलै। यौ लाल भैया कनि अपन बाइक क चाभी दीअ। हरि बाइक गाड़ि पर धाएल अछि।
भागैत विकास हस्पताल पहुचल त भैया गेट पर ठार छलैथ। शायद ओकरे पतीक्षा करैत छलाह।
विकासक देखैत भैया भोकाईर पाइर क कानअ लगला,"रौ विकास, आब हमि नय बचबौ।दखी न, छुटकी क की भ गेलेय।"
"भैया,आब हमि आईब गेल्लये हन न। सब नीक भ जेतै। अहा बस भगवान पर भरोसा राखु। कत छै छुटकी?"
""आई! आईसीयू मे अछि!"
"अरौ बाप! कोन मिज़ल पर?"
"दोसर मिज़ल पर।"

भामा क मबकास आईसीयू पहुचला त ओतअ ि, बाबुजी आ भौजी के पाण सूखैत छल।

नि त भेल मक पूमछ जे ई एक्सीडेट कोना भेल! ाुदा नि सिोइस रमह गेल बेचारा मबकास। बहुत कोमशश केलक ाुदा तािस पर मनयंतण बेसी देर तक नय रामख सकल आ नि के सब भािस बाहर आमब गेल।

"िना करैत छलौ न अहा सब क मक अखन स्कूटी नय देल जाऊ। त नय हिर गुमिया रानी अखने स स्कूटी चलेताह। तेरहो बरख ओकर भेलय हन मक। अब नि ि शामत आमब गेल न!

......

"ि, अहा की कहैत छमलयै! ज़ािना आगा बढ़ी गेलय हन। नमसपामया के बेटा चौदहहे बमरख ि िटरसाइमकल चलबैत अमछ। कनपमा साहेब क बेटा त कारो चला लैत अमछ। आमब और मदअ स्कूटी!"

"हिरा िफ क दीअ, बच्चा। हि आन्हर भ गेल छमलए। बच्चा सभक चलबैत देख, हिरो नि भ गेल मक अपनो बच्चा चलावै। पूत आ धी ि अन्तर मकछ अमछ आमब की। देख न, तोहर बात नय िनेय क सज़ा हि सब भूगैत रहल अमछ।"

""अहूक कतेक सझिेलू मक ि बाबुजी क िनाबु जे अखन अपन छुटकी क उिर नय भेलय हन स्कूटी चलावै बला।अखन त ओकर पायेरौ न चुिहैत अमछ।सभक मदन दुघषटना क सिाचार आवैत रहैत अमछ।"

.....

"भउजी, आ अहा मक कहनै छमलयै? याइद अमछ मक नय। हि जलय मछ अपन छुटकी स। हि जलय अमछ मकया मक बाबुजी हिरा कॉलेज ि िटरसाइमकल नय देने छलाह। जेकरा हि अपन जान

स बेसी िनैत अछि, ओकरा स जलब हि!"

"हिरा सब स बहुत नम्भर गलती भ गेलय। चुपो भ जाऊ न आब। छुटकी हिर सभक क्यो नय अछि की? अहा, आब हिरासभक जान लेब की?

"हा, जान ल लेब। अगर हिर छुटकी क किछ भ गेल त ककरो नय छोिब। याइद राखब ई बात।"

अचानक स आईसीयू क दरबज्जा खुलल। सभक धकधकी बैढ़ गेल। मिकास तेज़ी स आगा बढ़ल। "आब अहा क बच्ची खतरा स बाहर अछि।" डागदर क शबद सुिन हक़ स सभ गोटा क पाण ि पाण ऑइल।

गीतेश शि

भारतीय मुसलमान आ भारतीयता

(ूलि म्हन्दी लेख केर म्थिली अनुवाद- उिशि ण्डिल)

भारतीय मुसलमानक क्छ्ु एहेन खुबी रहल अक्छ जइ कारणे हुनका सभके 'मुसलमान नक्ह कक्ह 'भारतीय मुसलमान' कहब बेसी नीक होएत। दुक्नय ाँक कोनो देशक मुसलमान-समाजसँ क्हनकर तुलना नक्ह कएल जा सकैत अक्छ। भारतक माक्ि-पाक्नमे रचल-बसल ऐ समाजक दैनक्न्दनक जीक्न, आचार-बेक्हारक इस्लामसँ दूरोक सम्बान्ध नक्ह, परन्तु क्दकत तखन होइत अक्छजखन इस्लामक केन्र सऊदी अरबके ई लोकैन अपन सोचक केन्र माक्न लइ छैथ आ ओतए-सँ आक्ब रहल हिकि सुगन्धके महसूस करैक दाबी करै छैथ, जखन क्क सच्चाइसँ एकर कोनो सरोकार नक्ह होइत।

जेना क्ककहल गेल अक्छ, ई अपन रोजमराक क्जनगी आ बेक्हारमे इस्लामक ऐसी-तैसी करै छैथ, मुदा जँ क्कयो अक्त्तम पोथी- 'कुरान-ए-पाक'आ अक्त्तम पैगम्बर 'हजरत मुहम्मद'केलऽ कऽ क्कयो सबाल उठबए तँ मरै-मारैले उताहुल भऽ जाइ छैथ। मजगर बात ई अक्छ जे ई सभ भारतमे जे कक्र लइ छैथ, यएह जँ सऊदी अरब मका-मदीनामे करैथ तँ या तँ क्हनका सजा-ए-मौत क्मलतैन ि क्बना कोनो हीले-हिलेक क्हनका ओतएसँ क्नकाक्ल कऽ बाहर कक्र देल जेतैन।

ई कहैमे कक्नको परहेज नक्हजे ऐ समाजक लोक क्नरपिक्द रपमे ओ सभ सभ काज करै छैथजेकर कुरान-ए-पाकमे सख्त मनाही(मुमाक्नयत)कएल गेल अक्छ, सोंो अल्लाह आ हजरत मुहम्मद

सेहो जैपर सख्त पाबन्दी लगौने छला।

ऐ मुदाके आगू बढेलासँ पहिने हम एकटा छोट-छीन उदाहरण देबए चाहब, हमर एक शुभेच्छु मित, जे जनै छैथ जे हम साए प्रतिशत नास्तिक छी, एक दिन साझू पहर हमरासँ भिड गेला आ इस्लामके लऽ कऽ बहस करए लगला। मौका पाबि हम लगे-हाथ कहलयैन-

“अहाँक मुहसँ इस्लामक बात शोभा नइ दैत अछि, किएक तँ नियमसँ अहाँ मुसलमान छीहे नहि!”

हुनकर आँखि लाल भऽ गेलैन। ओ तमसाकऽ बजला-

“ई कहबाक अहाँक हिम्मत केना भेल?”

हम कहलयैन-

“दोस (मिया), हमरा बजैक मौका तँ दीअ आर ताबेतक अपन तामसपर कंट्रोल राखू।”

हम सबालक ढेप बिरसबैत पुछलिऐ-

“अहाँ शराब पीने छी?”

निच्चाँ नजैर केने ओ धीरेसँ बाजल-

“हँ।”

हमर दोसर सबाल छल-

“अहाँ पथिया लगबै छी। माने फुटपाथिया दोकान। भिनसर-सँ-साझ धरि गहिंकीसँ मात झूठे नहि बजै छी, बल्कि सप्पत खा-खा कऽ झूठ बजै छी। मुदा जखन सौदा नइ पटिऐ तँ अधलाह जबानसँ ओकरा अधलाह गारि सेहो दइ छिऐ, की ई छी अहाँक इस्लाम?”

ऐठाम ई साफ कऽ दिअ चाहै छी जे ई बात सभटा हिन्दुओ भाय लोकैनपर लागू होइते अछि। खास कऽ ओइ हिन्दूपर जे अपने-आपके

धमक ठीकेदार मानै छैथ।

हम अपन मुस्लिम मितके कहै छिऐन जे अहाँ अपना-आपके भारतक माटिमे तइ तरहे रचा-बसा नेने छी जे एँड़ी-सँ विकासन तक अहाँ सुच्चा भारतीय छी, मात देखाबाक लेल अहाँ इस्लामी मुखौटा लगबै छी, जइसँ हिन्दु आ मुसलमानक बीच ऐ तरहे दूरीक जन्म होइए जइसँ रोटी-बेटीक रिश्ता-नाता तँ दूर जे एक थारीमे बैसकऽ खेना-पीनाइ तक असान नहि, जखन कि सच्चाइ ई अछि जे भारतक तहजीबक नीक-बेजाए कोनो एहेन पहलू नइ अछि जेकरा अहाँ अपनेने नहि होइ, बल्कि कतेको मामलामे तँ अहाँके महारत हासिल अछि।

आउ किछु बिन्दूपर खुलिकऽ चचमकरी।

इस्लाममे जाति-पाति नहि अछि, परन्तु भारतीय मुसलमानमे तँ अछिआ सेअइछे नहि, बहुत बेसी तर तक अछि। आपसमे बेटीक बिआह नइ होइए। शेख सैयद, खान-पठान ऊँच जातिक, कुँजरा-जुलाहा-अँसारी नीच जातिक मानल जाइ छैथ।

शादी-बिआहक रस्म-रेबाज मजहबी दूरीक बाजिूद हिन्दु आ मुसलमानमे ऐ तरहे मिलल-जुलल अछि जे ई कहब बहुत कठिन, जे ई रेबाज केकरासँ के लेलक। किएक तँ 'दि' आ 'कुरान-ए-पाक'मे ऐ रेबाजक केतौ कोनो जिकिर नहि। शेरिानी पहिरब, सेहरा लगाएब, चुहलबाजी करब, मेहदी-उबनि लगाएब, जुआ खेलब इत्यादि-इत्यादि सभ रेबाज अहीठामक छी, कोनो सऊदी-अरब, ईरान-इराकसँ थोडे आएल अछि।

नाच-गान, ऐक्टिंग करब, पेंटिंग करब, एतए तक कि शास्त्रीय संगीत आ भजन गायनमे मुसलमान अव्वल दजापर अछि। फिल्म हुअए कि नाकि आकि चितकला, एतए तक कि मूर्तिमबनाएब ऐ सभ

केतमे मुसलिम कलाकार आ कारीगर मारिर रहल अछि। जखन कि ऐ सबहक 'कुरान-ए-पाक'मे सख्त मनाही कएल गेल अछि। अधिकतर मुसलिम देशमे ऐ सभपर सख्त पाबंदी अछि। उदाहरणक तौरपर उस्ताद बिस्मिल्लाह खा किअ, की बिस्मिल्लाह खा सऊदी अरबमे शहनाइ बजा सकै छला? व दा हुसैन अगर मका मदीनामे चित्रकारी करतैथ तँ हुनका ता-उम जेलमे बितबए पड़तैन। मुदा ऐ कलाकार सभपर भारतकेआत्म-सम्मानक भान भेलै आ हुनका सभके पैघ-पैघ इनामसँ न ाजिल गेलैन।

भजन गायन? तौबा-तौबा। गबैबला मुसलमान, भजन लिखलैन मुसलमान, मौसीकार मुसलमान, पदापर गबैबला मुसलमान आ ऐ सभके पेश करैबला पोडयूसर सेहो मुसलमान। आइयो जखन ओइ भजनके कियो सुनैए, तँ आस्तिक होथि ि नास्तिक भव् त रसमे मुग्ध जाइए। केतेक नाओॅ वानाबी कलाकार सबहक, समुच्चा पोथी लिखए पडत। मुदा तैयो किछु कलाकारक नाओंके जिक करब जर री अछि जेना- 'गुलाम अली खा, अलाउदीन खा, उस्ताद अमीर खा, बेगम अख्तार, बिस्मिल्लाह खा, उस्ताद अल्ला रखा, आगा हश कश्मीरी, नौशाद, मुहम्मद ऱ ी, साहिर लुधियानि ी, मजर ह सुल्तानपुरी, सोहराब मोदी, दिलीप कुमार, सुरैया आदि।

लेखन जगतमे 'अमीर खुसरो', पहिलहिन्दीमे लेखक छला, जिनकर लिखल गीत आइयो हिँदुक शादी-बिआहमे गाएल जाइत अछि। मलिक मुहम्मद जायसी नइ होइतैथ तँ कि रानी पद ािती होइतैथ?

रहीमक दोहा सभसँ के परिचित नइ छैथ? शीकृष्णपर रसखानक लिखल गीतक आइयो कियो बराबरी नहि।

कबीर रहीम गोस ािमी तुलसीदासक समकालीन छला।

तुलसीदास जखन रामचरित मानस लिख लेलैन तँ पोथीक पहिल पति कवि रहीमके भेंट केलैन आ हुनक राय माँगलखिन। पोथी पढ़ि रहीम जे टिप्पणी केलैन, पाठकके जनतब हेतु ओकरा हम एतए छापि रहल छी-

“रामचरित मानस बिमल
सेतन जीवनि पाण
हिन्दुआन को बेदि सम
जमनहिं पकिट कुरान।”
(अब्दुरमरहीम खानखाना)

सैयद महफूज हसन रिजवी 'पुण्डरीक'हमर करीबी मीत तँ नहि मुदा मीत छला। हमर हुनकासँ चिनता गजलकार विजेन्द्र धीरक ओजहसँ भेल। नास्तिक होइतो रामचरित मानसपर हम अनेको पचिन सुनलौ। हमरा नजैरमे पुण्डरीक सभसँ अवलि रहला। रामचरित मानसपर जखन ओ बजै छला तँ लोक सभ सम्मोहित भऽ कऽ हुनक व्याख्यान सुनैत छल। लगबे ने करै छल जे कोनो मुसलमान रामचरित मानसपर बाजि रहल छैथ। ओ लिखाविलस भारतीय मुसलमान छला आ भारत रिष्क तहजीबके ओ आत्मसात कऽ नेने छला।

ई बहुत कम लोक जनै छैथ जे उदूमे मोहब्बत आ मुल्क परस्तीके लऽ कऽ बहुत बेसी गजल-शायरी लिखल गेल,आन-आन जबानक तुलनामे।

मुस्लिम कारीगर अगर तीन मासक अकिाश लऽ लैथ तँ महल-झोपडी, मन्दिर-मस्जिद बनब बन्द भऽ जाएत। जेरिात बनबैसँ लऽ कऽ हीरा तराशब, जडी-बुटीक कारीगरी, दजीवारीक क्षेत्रमे सतर

पचासशतसँ बेसी कारीगर भारतीय मुसलमान छैथ और हुनकर कारीगरीक बेपार करैबला हिन्दू।

मध्यपूर्वक देशमे लाखो मुसलमान कारीगर काज करैले जाइ छैथ आओर अपन कमाएल कमाइक निवेश भारतमे करै छैथ न कि यूरोप, अमेरिकाक बैकमे।

भारतीय मुसलमानक तासदी ई अछि जे ओ जनबे ने करै छैथ, भारतीय तहजीबमे सोलोअना रंगल भारतीयताक स्वीकृति देन रहल अछि। ओइ कौमक लोकक भारतीय तहजीबके बेइन्तहा देन रहल अछि। जइ दिन ओ ऐ सच्चाइसँ वाकिफ भऽ जेता आ ऐपर फक करए लगता, हिन्दू मुसलमानक बीचक दूरी बहुत हद तक मेटि जाएत।

कवि नजर ल इस्लामके लेल जाए, ओ अपन लेख आ कविताक माध्यमसँ 'सनातन धर्म' आओर 'इस्लाम'पर हथौरीसँ चोटि केलैन। ओ लिखलैन- दंगाक दौरान मन्दिर और मस्जिद तोड़ि देल जाइत अछि। मनुखक जान लऽ लेल जाइत अछि, ईशर आओर अल्लाह चुपचाप ई दृश्य देखैत रहि जाइ छैथ। मन्दिर-मस्जिद तँ फेर बनि जाएत, मुदा मनुखक जान आपस भऽ सकत?

मुसलमनक सभसँ पैघ मसला ई अछि जे हुनकामे सही लीडरशिप नइ अछि। पढल आ अनपढल मौलवी-मुल्ला मजहबक नाओंपर हुनका भडकाबै आ भटकाबै छैन। हालक किछु दिनमे ई देखल जा रहल अछि, हिन्दू लीडरशिपक एक पैध तबका ऐ बदगुमानीक शिकार भऽ मुल्ला-मौलवीक रस्तापर चलि पडला अछि। दुनूक जुआन एक अछि, भडकाबै आओर भटकाबैक तरीका सेहो एक अछि, मुदा हुनकर बदकिस्मतीसँ हिन्दूमे अखनो मुस्लिम कौम जकाँ कटरता नइ आएल अछि। 'हिन्दू धर्मके लऽ कऽ बहुत हद तक खुलि कऽ चचाक

गुँजाइश बँचल पडल अछि।

मुस्लिम कौमक तँ ई हाल अछि जे कुरान शरीफ आओर हजरत मुहम्मदके लऽ कऽ, अल्लाहके लऽ कऽ नु ताचीनी तँ दूरक बात जे कोनो सबाल तक उठबैक इजाजत नइ अछि। मुसलमानक की पाथमिकता तालीम, सेहत, गरीबी नहि बल्कि मस्जिद अछि। कुरान शरीफके कॉन्टेस्थ करैबलाके हाव ज मानल जाइए आओर इ जतक नजैरसँ देखल जाइए। मात कॉन्टेस्त कवर कऽ 'कुरान-ए-पाक'के बिना समझने-बुझने..! छै ने कमाल..!

मुसलमानक एक तासदी आओर अछि जे ओ जखन नमाज पढै छैथ तँ मका-मदीना माने सऊदी अरब दिस मुँह घुमा कऽ, जखन कि सऊदी अरब कोनो कीमतपर हुनका अपनबै आ नागरिकता दइक लेल तैयार नहि। रहल अल्लाह केर पश, अगर ओ छैथ तँ सभ जगह छैथ।

शहर कलकताक एक इलाका खिदरपुर आओर मटियाबुजम अछि, जेतए अस्सी पतिशत आबादी मुसलमानक अछि। ओतए लमसम साएसँ बेसी मस्जिद अछि, जइमे पनरहसँ बेसी मस्जिद पूर्णत: एयरकॉन्डीशनसँ लैश अछि। करोडो र पैआ लगा कऽ ओकर रौनकमे चारिखार आनल गेल मुदा समुच्चा इलाकामे एकोटा नीक स्कूल, एकोटा नीक कौलेज आकि नीक अस्पताल नहि अछि। मुसलमान सबहक पिछडापनक लेल केलि सरकारपर तोहमत लगाएल जाए आकि मुस्लिम कौमके सेहो एकरा लेल जिम्मेदार ठहराएल जाए? भारतीय मुसलमान जखन अपन भारतीय सोचक जगह 'मजहब परस्ती'के अन्हार-कूपमे रहब पसिन करता तँ अल्लाह सेहो हुनका ऐ सभ समस्यासँ छुटकारा नइ दिआ पौतैन।

हिन्दू समाजक ई खासियत अछि, विशेषता अछि जे केतेको सदीसँ एक-पर-एक केतेको समाज सुधार आन्दोलन भेल, एतए तक कि स्वामी दयानन्द सरस्वती मूर्तिपूजा (बुतपरस्ती) के ई कहि मुखालफत केलैन जे ई रेबाज वैदिक युगक पछाति विकृति छी। ओ अपन पोथी- 'सत्यार्थ प्रकाश'मे राम कृष्णोके एहेन ऐसी-क-तैसी केलैन अछि।

राजा राममोहन राय, विद्यासागरआदि बाल-विवाहक विरोध आओर विधबा-विवाहक समर्थन केलैन। एतए तक कि सती-प्रथाक सेहो मजबूतीसँ विरोध केलैन। एकटा कानून 'शारदा एक्ट'क तहत बाल-विवाहपर कानूनन रोक लगौल गेल। कटरपंथी सबहक विरोधक बादो ई कानून अमलमे लाओल गेल।

ऐ मुहिमके आगू बढ़ौलैन बामपंथी आ प्रगतिशील व्यक्तिक-विचारक। मुसलमानक तुलमामे हिन्दूमे जे बदलाव आएल, भले सीमित तौरपर, मुदा ओकर असर समाजपर पडल आ समाजके ओइसँ नोकसान नहि भेल बल्कि लाभे भेल।

मुदा विगत किछु बर्खसँ हिन्दू कौमक चक्का उनटा घूमि रहल अछि। रूढ़िवादी पुरातनपंथी तत्व कि सोझहामे ई घुनि किने जा रहल अछि, जेकर सभसँ बेसी लाभ ओकरा भऽ रहल अछि, जे इस्लाम आ पश्चिमसँ आबि रहल खतराक नाओपर समुच्चा कौमके अतीतोन्मुखी बनबैमे सफल भऽ रहल छैथ। मजगर बात तँ ई अछि जे हिन्दुत्ववादी विचार पैघ-पैघसँ तायदादमे ओइ पश्चिममे जा कऽ बसि रहल छैथ, जनका एतए रास्ता-दिन कोसल जाइए। मुस्लिम कौमक नेता सभ जकाँ हिन्दुत्ववादी नेता सेहो 'हिन्दू धर्म खतरामे' अछि, ऐ नाओंपर समुच्चा कौमके गुमराह कऽ रहल छैथ आओर बहुत हद तक हुनका कामयाबी सेहो भेटलैन अछि।

लगैए, ईशर-अल्लाह एतेक कमजोर पड़ि गेल अछि कि हुनकर शक्तिसयतके बँचबैक कोशिशमे दुनू कौमक लोक कमिलकऽ एक-दोसरक विरोधमे मोचा सम्हारि नेने छैथ। फलाफल ई भेल अछि जे दुनू कौमक लोक अपन बुनियादी हक-रोजी, रोटी, शिक्षा, चिकित्सा, गरीबीइत्यादिअनेको अमानवीय बेहिारककीमतपर मजहबी जुनून पैदा कऽ कऽ घृणाक आवा सुनगा रहल छैथ।

उमेश मण्डल

बीहैन कथा- मानसुरका गप-सप्प

सभ दिन मानसरे-मानसर बुलैले जाकलै छी। कौलेजक फिल्डपर पहुच ऐ कातस-ओइ-कात पाच-दस चकर लगबै छी। ओना त अनेको लोक फिल्डपर चकर लगैबते छैथ मुदा चारि-पाच बेकतीक मति-मण्डलीमे हमहूँ रहै छी। कहियो अपने पहिने पहुचलौ, कहियो वएह सभ पहिनेस पहुचल रहै छैथ। संगे सभ किछुयो टहलै-बुलै छी। पछाइत सबहक बैसार चाहक दोकानपर होइत अछि। दोकानोपर खाली हमहीं सभ रहै छी सेहो नहियें कहल जाएत, आरो-आरो लोक सभ रहै छैथ। किछु लोक पहिनौस बैसल रहै छैथ आ पछातियो अबैते छैथ।

चाहक दोकानपर रंग-बिरंगक गपो-सप्प चलैते अछि। रंग-बिरंगक मने विषयगत सेहो आ बेकतीगत-सामुहिक सेहो। बेकतीगत गप-सप्प त बेकती-बेकतीक बीच चलैए, मुदा तैसंग किछु एहनो बात चलैते अछि जे सामुहिक रहल। सामुहिक बात जखन किछु हिरोस चलैए त ओइमे कोनो समुहिक लोक अपन विचार राखब उचित बुझै अछि। ओना, समुहो समुहमे अन्तर अछिए। नवयुवक, अधवयसु आ वृद्धस लऽ कऽ सहरगंजाक संग तगमा बिला धरिक समूह अछिए। मुदा विषयो त बहुत एहेन अछिए जे करीब-करीब सभ तरहक लोकक कानके ठाढ़ कइये दैत अछि।

आजुक गप-सप्पक विषय छल- आरक्षण। किछु लोकक कहब रहैन आरक्षण अनुचित अछि आ किछु लोक आरक्षणके उचित कहै छला। कए गोरे अपन-अपन बात बाजि-बाजि चुप भऽ गेल छला आ कए

गोरे बाम्हजयो रहल छला। मुदा किछु गोरे पर्की आ किछु गोरे मुदा पर्की बाम्हज रहल छला। िनि आरक्षण नम्ह रहक चाही ई एक सहिक कहब रहैन। कहबे नम्ह रहैन, सामान्यत कहैत एक गोरे समष मुदा चार रखबो केलाह-

“आरक्षण अनुचित अम्छ। िमि मलअ, डाक्टरीए पढ़ाइ जे आरक्षण अम्छ। ऐस कम्त हेबे करैए मुदा कने। जइ काज कुशाग बुम्धक जर रत अम्छ ओ काज आरक्षणक चलैत िन्द बुम्धक हाथ पिने की कम्त नइ होइए। हेबे करैए।”

बेसी गोरेके ऐ मुदा चारपर जेना सहिति बनलैन। वास्तव आरक्षण नइ रहक चाही।

जेना चुत्पी पसैर गेल। िदा चुत्पी रहल नम्ह। मुदा च्चोि हिरि मति-मशबुजी सेहो थोिक सह लगा देलम्खन-

“देखै नइ मछऐ, आएम्दन केहेन-केहेन घटना ऑम्फस-कायालयस लऽ कऽ असमताल धमर होइत रहैए।”

ओना, मशबुजी मुदा किछु आर बातके गप-सत्पा आनए चाम्ह रहल छला, िदा हुनका, िनि जे पम्हनेस बाम्हज रहल छला मुदा नका बुम्झ पिलैन जे आरक्षणक मुदा रोधे मशबुजी बजला अम्छ। ओ अपन िि डोलबैत मुदा च्चोि मशबुजीके कहलम्खन-

“तए ने कहलौ, आरक्षण बेकार अम्छ। आरक्षण हम्ट जेबा चाही।”

हुनकर बात सुमते मशबुजी हिरा मदस ताकए लगला। हिहू मशबुजीक चेहरा देखए-पढ़ए लगलौ। बुम्झ पिल जेना इशारे कम्ह रहला हेन-

“देम्खयौ, आरक्षणक िति एक पहलूके कनी-िनी जनैए मुदा क नम्ह जनैए, िदा पंनचैती केना करैए!”

बुम्झ पिल मुदा किछु बजबाक चाही। ओइ बेकतीके पुछलयैन-

“अइ यौ भाय साहैब, डोनेसनपर जे नािकिण होइ छै, ओ की एक

पकारक आरक्ण नइ छी? की ओइ सभटा कुशागे बुम्धक नाकिण होइ छइ?”

कए गोरे अपन-अपन कपके देख बुम्झ गेला जे आब चाह सम्ब गेल, दा कए गोरे से म्बानु देखनम्ह हि लगा-लगा बुझला- जा! चाह त सम्ब गेल।

जम्हना सबहक कपक चाह सम्ब गेल तम्हना गपो सम्ब गेल।

सगर राित दीप जरय ९९ म आयोजन

िदनाक 22 िसतम्बर 2018, शिन िदन। पो. पीतम कुमार 'िनराद'जीक संयोजकत्वमे सगर राित दीप जरय'क 99म कथा-सािहत्य गोषी सुसम्पन भेल। 21 गोट कथाक पाठ आ तैपर समीका भेल। 'सगर राित दीप जरय- मिथला-मैिथलीक एक ित िच अिछ जैपर सभ वगर्क लोक (सािहत्यकार) सहृदय उपिस्थत होइत रहल छैथ। सभ वगर्क सािहत्यकारोमे सोचै-िवचारैबला बात अिछ जे स्थािपत सािहत्यकारस ल' क' नवाकुर रचनाकार धिर। मिथला सािहत्यक शीवृिदमे पोथीक लोकापणर् सेहो अनवरत रपे ऐ िचपर होइत रहल अिछ। अहू गोषीमे- िने 99म आयोजनमे- चािर गोट पोथीक लोकापणर् भेल। संकेपमे सम्पूणर् सतािचारक िववरणक संग सम्बिन्धत िकछु फोटोगाफ सेहो देल जा रहल अिछ। -उमेश मण्डल

संयोजक : पो. पीतम कुमार 'िनराद'

उदाटन सत-

दीप पजजवलन : शी जगदीश पसाद मण्डल, चण्डेशर खा, शी कमलेश झा, डॉ. िशव कुमार पसाद, शी नारायण यादव, शी राम िवलास साहु, शी आनन्द कुमार (िवदालयक िनदेशक), शी उमेश पासवान, शी जगदीश साहु

गोसौिनक गीत :

कुमारी अचर्ना, कुमारी अंजिल

स्वागत गीत :

कुमारी पुनम (िशिकका)

राम देव पसाद मण्डल 'झारूदार'

स्वागत सम्बोधन :

पो. पीति कुमिर 'मिराद' (संयोजक)

दू शब्द : शी कमिलेश झा, शी जगदीश पसाद मिण्डल, डॉ. मिशव कुमिर पसाद

मिचि संचालक : उमिश मिण्डल

पोथी लोकापषा सत-

लोकाम्पषा पोथी :

(1.) गपक म्पियाहुल लोक (कथा संगह) : जगदीश पसाद मिण्डल

(2.) म्बम्बिध पसंग (पवन्ध-म्मिवन्ध) : रबीन्द्र नारायण मिशि

(3.) गामिक सुख (पद संगह) : रामिम्बलास साहु

(4.) गावय मिम्थिला गीत पगीत (पद संगह, दो.सं.) : पीति कुमिर 'मिराद'

लोकापषा कता :

शी आनन्द कुमिर, शी कमिलेश झा, शी नारायण यादव, डॉ. मिशव कुमिर पसाद, शी चण्डेशर खा, शी जगदीश पसाद मिण्डल, शी रामिम्बलास साहु, शी मिनोज कुमिर मिण्डल

दू शब्द : कमिलेश झा, नारायण यादव

मिचि संचालक : उमिश मिण्डल

कथा सत-

अध्यक मिण्डल

शी कमिलेश झा, शी नारायण यादव, डॉ. मिशव कुमिर पसाद, शी चण्डेशर खा, शी जगदीश पसाद मिण्डल, शी रामिम्बलास साहु,

संचालन समिमित : आनन्द कुमिर झा, नन्द म्बिलास राय, मिनोज कुमिर मिण्डल

कथा पाठ-

पथिम पाली-

1. पतन : आनन्द कुमार झा
2. चौदहो देवान : उमेश मण्डल
3. मिसयानक मारि दही-चूरा : नन्द विलास राय

समीक्षा : नारायण यादव, विनोद कुमार, बरीनाथ राय, चण्डेश्वर खाँ, डॉ. शिव कुमार प्रसाद

दोसर पाली-

4. मोह : चण्डेश्वर खा
5. खगता : उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'
6. मानि सरोवरक यात्रा : जगदीश प्रसाद मण्डल

समीक्षा : कौशल किशोर, मनोज कुमार मण्डल, पवन झा, नारायण यादव, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, प्रीति कुमारि 'निराद', शारदा नन्द सिंह

तेसर पाली-

7. हृदय परिवर्तन : नारायण यादव
8. पुरनकी भौजी : उमेश पासवान
9. आन्हर : डॉ. शिव कुमार प्रसाद

समीक्षा : आनन्द कुमार झा, जगदीश प्रसाद मण्डल, कपिलेश्वर राउत

चारिम पाली-

10. इमानदारीक मोल : पवन झा
11. कंगन : मनोज कुमार मण्डल
12. विशंकू मनिक मिल : कपिलेश्वर राउत

समीक्षा : नारायण यादवजी, प्रीति कुमारि 'निराद'जी, डॉ. शिव कुमार प्रसाद

पाँचम पाली-

13. चतुरसेना दाव : राम विलास साहु

14. मनशंकू निक मिल : क

15. मातृ ऋण : अरिकान्त लाल

समीक्षा : नारायण यादवजी, नन्द विलास राय, रामविलास साहु, उमेश मण्डल

छठम पाली-

16. थैक्यू पापा : लक्ष्मी दास

17. पेरिवि जयते : शारदा नन्द सिंह

18. मखगिा : चण्डेशर खा

समीक्षा : आनन्द कुमार झा, उमेश मण्डल, नारायण यादव, उमेश नारायण कणष'कल्पकम्ब'

सातम पाली-

19. सनकल बि : पीतम कुमार 'मराद'

20. भम्कत कथा : राधाकान्त मण्डल

21. आमख : डॉ. मशाव कुमार पसाद

समीक्षा : पीतम कुमार 'मराद'जी, कमलेश झा, नारायण यादव, रामविलास साहु, पवन झा

अध्यक्षीय भारण : शी जगदीश पसाद मण्डल, कमलेश झा

धन्यवाद जापन : पो. पीतम कुमार 'मराद'

ऐगला आयोजन : सगर राम्त दीप जरय'क 100म आयोजन उमेश मण्डलक संयोजकत्वमे, ममिषी (सुपौल) मे...।

१८ कथा गोष्ठी सगर रातिक दीप जरय- म्हसिरा (झंझारपुर)

संयोजक : डॉ. महेश्वर कुमार प्रसाद

उद्घाटन सत्र-

दीप प्रज्जवलन : श्री महावीर प्रसाद, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री अरविन्द ठाकुर, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रो. प्रीतम 'निषाद', श्री उमेश नारायण कर्ण, श्री नारायण यादव आ श्री योगेन्द्र राउत।

उद्घाटन भाषण : श्री अरविन्द ठाकुर, श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' आ श्री महावीर प्रसाद।

मंच संचालक : श्री संजीव कुमार 'शमा'

पोथी लोकार्पण सत्र-

लोकार्पित पोथी :

(1.) मरिजादक भोज (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय

(2.) दुधबेचनी (कथा संग्रह) : राम विलास साहु

(3.) देखल दिन (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल

(4.) कथा कुसुम (क.सं. दो.सं.) : दुर्गानन्द मण्डल

(5.) सोहाँत-अनसोहात (काव्य संग्रह) : डॉ. महेश्वर कुमार प्रसाद

(6.) पघलैत हिमखंड (काव्य संग्रह, अनु.) डॉ. महेश्वर कुमार प्रसाद

(7.) नमस्तस्यै (उपन्यास) : रबीन्द्र नारायण मिश्र

(8.) पंगु (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल

लोकार्पण कर्ता :

श्री महावीर प्रसाद, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री अरविन्द ठाकुर, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रो. प्रीतम 'निषाद',

शी उिश नारायण कणष्, पो. शुभ कुिर वणषाल, शी नारायण यादव आ शी योगेन्र राउत।

दू शब्द : शी िहावीर पसाद

िंच संचालक : उिश िण्डल

कथा सत-

अध्यक िण्डल

डॉ. योगेन्र पाठक 'ब्ययोगी', शी श्यािनन्द चौधरी, शी अरिबन्द ठाकुर, शी जगदीश पसाद िण्डल, पो. पीतिं 'िनराद'

संचालन सििित : सूयषनारायण यादव, दुगानन्द िण्डल, नन्द िबलास राय, अनील ठाकुर

कथा पाठ-

पथि पाली-

1. पेिक अशुधार : नारायण यादव

2. बोझ : दुगानन्द िण्डल

3. देखल िदन : जगदीश पसाद िण्डल

सिीका : श्यािनन्द चौधरीजी, राि िबलास साहुजी, अरिबन्द ठाकुरजी, योगेन्र पाठकजी

दोसर पाली-

4. दहेज पाप छी : नन्द िबलास राय

5. संघरष: अरिबन्द ठाकुर

6. िानसुरका गप-सत्प

सिीका : दुगानन्द िण्डलजी, उिश नारायण कणषजी, िशव कुिर पसादजी, नारायण यादवजी

तेसर पाली-

7. घरतोिनी : पो. पीतिं कुिर 'िनराद'

8. ऐगला पवि : ललन कुिर काित
9. ई केकर दोख : रािमिवलास साहु

सीिक्ष : कमलेशर राउतजी, उिश िण्डलजी, श्यािनन्द चौधरीजी

चािर पाली-

10. िराएल िजनगी : कमलेशर राउत
11. केकरो िकयो नि : लिक्ष दास
12. काबू : उिश नारायण कणष

सीिक्ष : नारायण यादवजी, पीित कुिर 'िमाराद'जी, योगेन्र पाठकजी

पाँिच पाली-

13. पेत लेल लिइ : अिर कान्त लाल
14. जाएब नेपाल िदा कपार जाएत संगे : िशव कुिर िश
15. पुत िह : लिक्ष नारायण पसाद

सीिक्ष : नारायण यादवजी, पीित कुिर 'िमाराद'जी, रािमिवलास साहुजी

छिठ पाली-

16. िटत्स : रािदेव पसाद िण्डल 'झार दार'
17. नसीहत : नारायण यादव
18. आिक चोर सगर शोर : अच्छेलाल शास्ती

सीिक्ष : नन्द िवलास रायजी, िशव कुिर पसादजी, सूयषनारायण यादवजी

साति पाली-

19. वाइफ : लिक्ष नारायण पसाद
20. अनुशािसत पिरष ान : शीिति ज्योित्स्न कुिरी
21. कोिरंग : शीिति ज्योित्स्न कुिरी

सीिक्ष : पीित कुिर 'िमाराद'जी, श्यािनन्द चौधरीजी, नारायण

यादवजी

अध्यक्षीय भारण : शी जगदीश पसाद ण्डिल, पो. पीत ि कुिार 'म्नाराद'

धन्यवाद जापन : डॉ. म्शव कुिार पसाद।

ऐगला आयोजन : पो. पीत ि कुिार 'म्नाराद'क संयोजकत्वि, स्थान-ि ़रहदी (बाबूबरही)

म. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

हमर गाम

१.हमरो गाम विश्वले मे छै

हम कोनो पढल-लिखल लोक नहि छी, अवश्यतु यदि कहियै जे हमरा गाममे एकटा के छोड़ि कियो पढल लिखल नहि अछि तऽ बेसी उचित होएत। घीच-घाचि कए कहुना दशमा पास केलहुँ आ चल गेलहुँ दिल्ली रोजगारक खोजमे। शुरुएमे बुझा गेल जे एतए अपनाके दशमा पास कहलासँ लाभ नहि नोकसाने अछि ते एहि बातके नुका रखलहुँ आ जे काज हाथमे आएल से धरैत करैत गेलहुँ। अस्थिर देखैत काज छोडैत पकडैत कहुना दस साल बाद लगलहुँ टेम्पू चलबए। ताबत गाम दिश सेहो सडक सब सुधरि रहल छलैक, फोर-लेन बनब शुरु भऽ गेल रहै तऽ सोचलहुँ जे गामे घुरि चली, ओतहि टेम्पू चलाएब। कने कमो कमाइ हैत तऽ बेकसए लागत कारण गाममे कमसँ कम दिल्लीक सडलाहा बसातसँ त्राण भेटत। कतबो किछु महग होउ, गाममे एखनहु बसात साफे छैक आ फ्री सेहो कारण एखन तक ओहिपर कोनो मालिक हक नहि जतौलक अछि।

हमर नीक कि खराप लत बूझू एतबे जे भोरमे तीन टाकाक एकटा अखबार कीन लैत छी आ टेम्पूपर जखन बैसल रहैत छी तखन ओकरा पढैत रहैत छी। एक दिन एहने अखबारमे पढल जे विश्वलामे नवका चलन एलैक अछि अपना अपना गामक महान विभूतिक निर्माण करैत किताब लिखब। किछु एहने किताब बजारसँ कीन अनलहुँ। देखलहुँ तऽ हरो भेल आ ताहिसँ बेसी इर्ष्यो आ ग्लानि भेल। हरमएहि लऽ कए जे पहिल बेर बुझलहुँ विश्वलामे एहन महान

विभूति सब भेलाह आ इष्या आ ग्लानि एहि लेल जे हमरा अपन गाममे एहन कोनो विभूति किएक नहि भेलाह।

हमरा चिन्ता भेल- की सते हमरा गाम मे कोनो विभूति नहि भेला? किछु बूढ पुरान सँ गप कएल। एक गोटि पूछि देलनि-

“खाली पढले लीखल लोक विभूति होइ छै की?”

हम सोचए लगलहुँ। ठीके, से रहितै तऽ सिनेमा सरि आ कि खिलाडी सब के कियो चिन्हबे नहि करितै। हमरा बुझा गेल जे आन गामक विभूति सन तऽ नहि, तैयो एतेक जरूर जे हमरा गामक विभूति सब एक हिसाबे कतबो वंचित रहथु मुदा ओहो लोकनि अपना समय मे गामक नाम कोनो तरहे उजागर करबे केलनि ।

सेहन्ता भेल जे हमहूँ अपना गामक बारेमे किछु लीखी। मुदा की लीखब? लिखबाक लुरियो तऽ नहि भेल। तैयो हम ठानि लेल जे लिखबे करब। विभूति लोकनि जे छलाह, जेहन छलाह, भेलाह तऽ मिथिलेक सुपुत/सुपुती ने। आ हमरो गाम जेहने अछि, अछि तऽ ओही माटिपर कमला बलान कोशीसँ घेराएल, रौदी दाही भोगैत अशिक्षा आ गरीबीमे उबमुब करैत। ते हम निर्णय कएल जे हिनका लोकनिक कीर्तिक गाथा लीखल जाए। एखुनका युगे विज्ञापन आ पचारक छिऐ, से गामक नुकाएल छिड़िआएल रत सबके बहार करबाक चाही। हम गौआँ भऽ कए यदि नहि लिखबनि तऽ अनगौआँके कोन मतलब छैक?

ओना तऽ लिसि पैघ बनि गेल मुदा हम बहुत पुरान लोकके पहिने छाटि कए मात दसाकि णिम एतए पस्तुत करए जा रहल छी। एहिमे पहिल नौटि छथि हमरा गामक नरित आ दसम भेलाह विशेष अतिथि रत। आशा करैत छी गौआँ लोकनि हमर एहि पयासक पशंसा करबे करताह। यदि किछु अनगौआँ मैथिल समाजके हमर

गामक एको गोष्ठि कीर्तमनीक लगलक तऽ हमर पयास खूबे सफल बूझल जाएत। नहि तऽ कमसँ कम किछु लिखित तऽ रहिए जाएत जे एखनुक बूढ पुरानक कर्तिात भऽ गेलाक बाद नकिा पुस्तके पूर्विजक यशक किछु जान देतैक।

हमर लिखल स्तिु सबके मर्वकोरबा गामक मध्यल स्कूलक हेममास्टिर साहेब बहुत कलिक छौंलिक आ शुद केलक ताहि लेल हुनका बहुत धन्यावाद। बिना हुनकर सहयोग के ई अपने सबके पढबा योग्य नहिए भेल रहैत। हम अपना गामक विभूत्तिक फोटो नहि छाप्य रहल छी। एकर कारण अपने सब पूरा पुस्तक पढलाक बाद बुझिए जेबैक।

विनीत

रामलाल परदेशी

(गामक एक उत्साही युवक)

गाम : खकपत्तिया

डाकघर : मर्वकोरबा

जिला : मधुबनी।

२. बीए

मूल नाम : राम कसुन क्सॅह

कपताक नाम : अजब लाल महतो

जन्म कक्थ : 1 जनरिी 1940। ई हुनकर सर्विफकेटमे कलखल छक्न, मुदा हुनक कपताक अनुसार ओ तीन चाकर बरख जेठ जररे छक्थ। जखन ओ मर्विकोरबा गामक कमकल स्कूलमे नाम कलखौलकन तऽ हेममास्टरिके जे बूझ्झ पडलै से लीख देलकै। हुनकर जन्म तऽ भरदुकतया कदन भेल छलकन।

कशक्ा : यथा नाम, माने ओ बी.ए. पास छक्थ। ओ गौरसिँ एखनहुँ लोकके सुनबै छक्थन जे मैक्टक, आइ.ए. आ बी.ए.मे लगातार ओ तृतीय शेणीमे पास केलकन। सॉाक्ह मैक्टकमे दू बेर, आइ.ए.मे तीन बेर आ बी.ए.मे चाकर बेर फेल केलकन।

उपलकब्ध : हुनक सबसँ पैघ उपलकब्ध छकन हमरा गामक पकहल आ एखन तक के अकन्तम गेजुएट भेनाइ। पकछला करीब पचास बरखसँ एक्ह रेकमके पकडने छक्थ। ओहू पुरान जमानामे गेजुएट भैयो कए हुनका जखन दस साल तक कतहु नोकरी नकह भेलकन तखन ओ हाकर कए पुस्तैनी काज, खेती,मे लावा गेलाह।

एहन नकह जे सते कतहु नोकरी नकह भेलकन। पुकगयामे एक ठाम हाइ स्कूलमे अध्यापक भेलाह मुदा पकहले कदनक कहनक पढाइ देकख कए ओतुका विदाथी सबके कहनक योग्यताक बेस अन्दाज लावा गेलैक आ ओ सब हडतालपर बैकस गेल। एमहर साझमे कहनका जे मच्छर कलिक से बोखार भऽ गेलकन। दोसर कदन स्कूल जाइ के काजे नकह पडलकन। कहुना एक हफ्तापर गाम घुकर एलाह। विदाथी

सबके विचारल बात विचारले रहि गेलैक। फेर दोसर बेर एहन योग्य व्यक्तिकसँ भेंट नहि भेलिक हुनका सबके।

स्थिति भेलाक बाद ओ बियारलक जे मासिरी हुनका बुते पार नहि लगतैक। चल गेलाह कलकत्ता भाग अजमबै लेल। कलकत्तामे एखनहु बीए पैघ योग्यता बूझल जाइत छलैक। ओना जाहि समय बीए बीए केलिक ताहि समय बेहारक परीक्षा पदतिक चचा आन आन ठाम शुरू भऽ गेल छलैक आ किछु लोक बिहारी बीएके ओकर उचित हक देबा लेल तैयार नहि छल। कलकत्तामे मर्विकोरबा गामक एक गोटे कोनो सेठक डाइरि छल। ओ हिनक पैरवी केलक सेठ लग। किछु बेसिए बढा चढा कए कहि देलकै सेठके। फल ई भेल जे सेठ हिनका बिना कोनो पूछताछ के अपना गदीपर मनेजर बना देलकिन। ई बहुत खुसी भेलाह।

मुदा भाग्यके किछु दोसरे रस्ता देखेबाक छलैक। तेसर दिन सेठक एकटा जात आबि गेल आ ओकरा अनुपस्थितिमे ओहिना हिनका संगे गपसप करए लागल। ओकरा मोनमे कोनो दुभावि नहि छलैक मुदा समस्या छल घेघ कतहु नुकाएल रहए ! सेठक जातके बीएक असली वा बही बीए हेबापर कने सन्देह भऽ गेलै आ एकर चचा ओ साझमे अपना जात लग केलक। अवाला दिन जखन बीए गदीपर बैसलाह तखन सेठ आबि कए हुनका पछिला तीन दिनक हिसाब किताब पूछि बैसल। बीए घबरा गेलाह। ओना ओ कोनो गडबडी नहि केने छलथिखन मुदा हिनका ई बात सिखले नहि छलिन जे यदि किओ हिसाब किताब पूछत तऽ उत्तर कोना देल जाए। एखन तक ओ खाली किताबी पशक उत्तर रटि आएल छलाह। व्यावहारिक काजक उत्तर देब सिखबे नहि केलिन। से एतए ओ गडबडा गेलाह। फल जे ओही दिन दुपहरियामे गामक गाडी धेलिन।

एखनो ओ पनिा, दल्ली मुम्बइ आदि कतेको छोट पैघ शहरमे सेहो भाग्य अजमौलन्हि मुदा भाग्य तऽ हुनका गाम घीचऽ चाहैत छलन्हि से पुरगामा रहओ कि पनिा, लखनउ कि लुधयाना, सब ठाम कोनो ने कोनो एहन परस्थिति भइए गेलन्हि जे दू चारि दनिसँ बेसी नहि विकि सकलाह।

बीए सौसेसँ बौआ कए गाममे खेती करए लगलाह। खेतीमे खूब नाम कमौलन्हि। दस किलो के मूर आ सात किलो के बैगन हुनके खेतमे उपजल छलन्हि। हमरा गाममे गुलाब आ गेदा फूलक खेती हुनके शुर कएल छएन्हि। एखन हमर गाम एकर नीक व्यसािय कऽ रहल अछि। आब तऽ देखादेखी अगल बगलक गाम सबमे सेहो फूलक नीक खेती भऽ रहलै अछि। एहि पयास लेल हुनका गामक पॅचायतसँ विशिर पुरस्कार भेलिन्हि।

बीएक सबसँ पैघ उपलब्धि भेलन्हि गामक लोकके स्कूली आ कौलेजया पढाइक पति अविशिास करौनाइ। तकर बाद कियो अपना धीया-पूताके स्कूल कौलेज नहि पठौलक। मात साकर बनै लेल मविकोरबाक कमाल स्कूल तक। हमहू जे दशमा पास केलहुँ से एही कारण सम्भि भेल जे बाबूजी गुजरि गेला आ माएके हम कहियो ई बूझऽ नहि देलयै जे हम कतए जाइ छी आ की करै छी।

दस साल तक विभिन्न शहर सबमे घुमैत ठोकर खाइत बीएके किछु नीक बुद्धि तऽ भैए गेलन्हि। एकर उपयोग ओ केलन्हि गाममे झगडलगौनाक रपमे। हुनकर विशिरता अछि जे हुनका सॉग जे लोक पाचो मनिट बैसि गेल आ हुनकर देल एक खिल्ली पान खा लेलक ओ अपना वदियादी आ कि पारविारिक झगडामे जरर फँसत। आ ओहि झगडाक पॅचैतीमे बीए जरर रहता। बेसी झगडा गामक पॅचैतीसँ उपर नहिए जाइ छैक। किछुए एहन घनिा भेलैक जे बीए बादमे

सम्हारि नहि सकला आ मोकदमा भऽ गेलै। कतबो माजल ओझा गुणी रहथु, किछु भूत हुनको हाथसँ छुटिए जाइ छन्हि ने। तहिना बूझू।

हमरा गामक सीमामे जे चारि कातक चारि पाँच गामक लोकक जमीन जाल छैक ओहो सब एहि झगडलगौना पेतक चकरमे फँसिये जाइत अछि। सबके बूझल छैक जे बीए साँ बैसनाइ आ हुनकर पान खेनाइ माने भेल कपारपर दुरमति आया सिरि। मुदा कहा कियो बचि पबैत अछि? बीएक मधुर सम्भारणक आगू सब फेल।

बीए एहि लूरिसँ कोनो कमाइ नहि करैत छथि, ई तऽ मात हुनकर मनोरंजन छिएन्हि। एहन उदार चरितक लोक परोपटामे नहि भेटि। एहि किताब लिखबाक कम मे एक दिन हम पूछि देलिएन्हि-

“एखन तक कतेक लोकक बीच झगडा लगा देने हेबै?”

ओ तऽ सबहि लीख कए रखने छला। एकहि पैघ लिस्ट हमरा आगू पसारि देलन्हि। हम चकित भऽ गेलहुँ। बीए तऽ नारदोक कान कटलन्हि मुदा हिनको बूझल नहि। जर र एकरा एक बेर वानीज बुक अथवा गिनीज बुक मे छपबैक कोशिश करबाक चाही। से भऽ गेला सँ अही कहू हमर गाम अपना जिला आ कि पदेश मे नाम करत की नहि?

३. खुरचन ठाकुर

मूल नाम : कसुनलाल ठाकुर, पक्सद्ध खुरचन ठाकुर

वाताक नाम : वारवात ठाकुर

जन्म वाथ्थ : अजात

मृत्यु : सन उनैस सौ सतासी सालक बाद्धमे

उपलब्धि : खुरचन ठाकुरक पक्सद्ध खुरचने लऽ कए भेल। हुनका लेल अस्तूरा बेकार छल। अनेरे लोक िका खचा करत। ओ खुरचनके वाजा लैत छलाह आ केहनो बढल केस-दाढी रहओ, कावि दैत छलाह। ओहीसँ नह सेहो कावि दैत छलाह। जखन केश छँबैक पचलन बढलै तखन खुरचन ठाकुर अपन ओही औजारसँ केश छाबि सेहो शुर केलक। केशमे ककबा सि दैत छलखन आ ओक्ह उपरसँ खुरचन चला दैत छलखन। देखकहारके चकचोन्ही लावा जाइ छलक जे वाना कैची के केश कोना एतेक सुन्दर छँ जाइत छलैक।

आ केहनो फोरा-फुन्सी रहओ खुरचन ठाकुरक माकदरीक आगू सब जेना सरेमर कऽ दैत छल। फोराक माकदर रपमे खुरचन ठाकुर परोपटे नक्ह दश कोसमे नामी छलाह। कक्हयो कए तऽ हुनका दूरापर लोकक लाइन लावा जाइत छल। खुरचन ठाकुरक खुरचनक स्पशमहोइतक्ह लोकके आरामक बोध होमए लगै छलै।

बीए जखन एक बेर कोनो शहरसँ घुरलाह तऽ खुरचन ठाकुर हुनका देखलक ओतुका सैलूनमे केश छँने। बीएके एखनहुँ मोन छक्ह खुरचन ठाकुरक हुथान। आ ओक्ह 'अलूक' नावातक लेल पयोग कएल गेल अपशब्द सब जे बीए हमरा सुना तऽ देलक मुदा वालखबासँ

मना कऽ देलक्स।

पूरा गाममे खुरचन ठाकुर एकसर, सौसे गाम हुनकर जजमान। मुदा मात एकि औजार, खुरचन, आ गाम नेहाल। एहन छलाह रत हमर खुरचन ठाकुर।

४. हिलू दास

मूल नाम : सियाराम मण्डल

पिताक नाम : जगदेि मण्डल

जन्म तिथि : अजात

मृत्यु : अकालक रिम(सम्भवतिः उनैस सौ छियासठि)

उपलब्धि : हिलू हिलैत तऽ कमे छलाह मुदा हुनक चालिमे बडका बडका हाथि जाइत छल। बूढ लोक सब खिस्सा कहैत छथि जे एक बेर ककरो सार साइकिलपर चढ़ि कए हमरा गाम एलाह। हुनकर गाम करीब सात-आठ कोस (एखुनका लोक लेल बूझू चौबीस-पचीस किलोमीटर) दूर। साइकिल ओहि समय ककरो ककरो रहैत छलै, हमरा गाममे ककरो नहि छलै से बूझू सौसे गाम जमा भऽ गेल साइकिल देखबा लेल।

हिलू हुनका पूछि देलखिन-

“कतेक समय लागल साइकिलसँ हमरा गाम अबैमे?”

ओ गर्वसँ बजलाह-

“इएह गोटि घंटा बूझि लिअऽ।”

ओहो अन्दाजे बजलाह कारण हाथमे घडी तऽ छलनि नहि आ ने हिलूएके बूझल छलनि जे एक घंटा कतेक समय होइत छैक। हिलू हुनका दूसैत बजलाह-

“एतेक कालमे तऽ हम पएरे चल जाएब आ घुरि कए चलो आएब, आ यदि इन्तजाम कएल रहत तऽ अहाक घरपर भोजनो कऽ लेब।”

सारके भेलनि जे अनगौआँ बूझि कने मीग हँकैत छथि। ओहुना

लोक गाममे आएल ककरो सारक सॉ हँसी मजाक कऽ लैते छल। एहनो कतहु भेलैए जे लोक साइकिलसँ दूनोसँ बेसी चलत लेत? मुदा एकर फरिछौहटि कोना होअए? ओ जमाना तऽ मोबाइल टेलीफोनक छलै नहि जे तुरते ई ककरो खबरि कऽ दितथिन गाममे जँचै लेल जे सतेमे टिहलू ओहि गाम पहुँचलाह कि नहि।

योजना बनल जे बडकी पोखरिक चारि कात दूनू गोटे घुमता। सार साइकिलसँ आ टिहलू पएरे। पोखरिक चारि कात रस्ता साइकिलो चलबै लेल नीके छलैक। जेना कि ओहि समय सब ठाम रहैत छलै, कच्चीए मुदा समतल आ पीटि-पाटि। जतेक तेज अपन चलि सकथि से चलथु। यदि टिहलू सतेमे बड तेज चलैत छथि तऽ चकर लगबैमे कमे समय लगतनि। ओ चकर लगबैत रहताह जाबत सार महोदय साइकिलसँ एक चकर पूरा नहि कऽ लेथि। यदि सारे महोदय पहिने एक चकर लगा लेताह तऽ ओहो ताबत तक चकर लगबैत रहता जाबत टिहलू एक चकर पूरा नहि कऽ लेथि। अन्तमे जे जतेक बेसी चकर लगौने रहत से ततेक सौ टाका जीतत। माने भेल जे एक चकर के समयमे यदि कियो दू चकर लगा लेत तऽ एक चकर बेसी भेलैक तानि लेल एक सौ रुपैया जीतत। यदि आधा चकर बेसी लगाओत तऽ पचास रुपैया जीतत। एहिसँ कम भेलापर दूनूके बरोबरिए बूझल जाएत।

गौआँ जमा भऽ गेल देखबा लेल। सारक बहिनोके कहल गेलनि हुनके पक्षमे रहै लेल जे कोनो तरहक बेइमानीक गुॅजाइस नहि रहै। खेला शुरु भेल। जतेक ताकत छलनि ततेक पैडिलमे लगबैत सार महोदय साइकिल दौडेलनि। मुदा टिहलू तऽ नपता। जाबत ओ एक मोहार टपथि ताबत टिहलू एक चकर पूरा कऽ लेलनि। साइकिल आ पएरे दौड चलैत रहल। अन्तमे सार महोदय पूरे तीनसौ टाका हारि

गेलाह।

ओ जे हमरा गामसँ पडेला से फेर घुरि कए कहियो नहि एला। हिलू दासक एहि गुणक जानकारी गामोमे बहुतो लोकके नहि छलैक। आब तऽ हुनकर गुणक बखान सबतरि होमए लागल। माक विभाग हुनका दौडहाक नोकरी देबा लेल तैयार भऽ गेल आ एहि आशय के चिट्ठी सेहो हुनका पठा देलकनि। मुदा ई अस्वीकार कऽ देलखिन।

"उतम खेती, मध्यम बान, अधम चाकरी, भीख निदान"

बला फकरा जे रटिने रहथि। ओ कोनो दशामे चाकरी नहि करताह। नहिए केलनि।

एहन महान छलाह हिलू दास।

५. चिलमसोखा भाइ

मूल नाम : केलि राउत

पिताक नाम : बनारसी राउत

जन्म तिथि : अजात

मृत्यु : करीब चालीस साल पहिने।

उपलब्धि : नाम गुण काज छलनि हुनकर। चिलमसोखा नामे पडलनि जखन हुनका चिलमसँ बीत भरि धधरा उठए लगलै। गामैक गजेरी साहुक अभिन मित। गजेरी साहु गाजा बेचथि आ चिलमसोखा कीनथि आ ताहिपर सोखा लगाबथि। सोखा लगबैमे किछु गोटि आर संगी दैत छलखिन मुदा ओ सब हमरा संकलन लेल महतपूर्ण नहि छथि।

एक बेर गाममे दूटा बबाजी एला। ई दूनू एक नम्बर के गँजेरी। ओ बरकी पोखरिक पाकरि गाछ तर अपन आसन जमा लेलनि। एकटा गौआँके चेला मुडलनि, ओहि दिनक बुतातीक जोगार सेहो केलनि आ चिलम लेल गाजाक जोगार सेहो। अपनामे मस्त ई दूनू लगलाह चिलम सोखए।

किछु गौआँ हिनक चिलमक सोखा देखि रहल छल। अति साधारण रूपे ई सब सोखा लगा रहल छलाह। ओ टिप्पणी कैए देलक-

“अहा दूनूसँ नीक तऽ हमर गौआँ चिलम धुकैत अछि, ओकर नामे पडि गेलैक चिलमसोखा भाइ।”

बबाजी सबके लगलनि जे गौआँ सब हिनकर निन्दा कऽ रहल छथि। ओ चिलमसोखाके बजबै लेल कहलखिन।

ढ़लमसोि बजाओल गेलाह। फोकि के गाजा आ तकर सोि
ई बात सोचए कए ओ मुक्त भेल छलाह। तैयो अपन गुणके
नुकबैत बबाजी दूनूके विकारी देलखिन नीकसँ सोि लगबै लेल।
ओ सब पूरा दम लगा कए सोि खिचलक तऽ एक बेर कने दू-तीन
आँगुर धर धधरा उपर उठलैक। ढ़लमसोि विनिम भाि अपन ढ़लम
सुनगौलक आ लगला सोि खीचए। जेना जेना गाल धँसैत गेलक
तेना तेना धधरा उपर उठैत गेलै। अन्तमे पूरे हाथ भर धधरा उठ
गेलै। एहन चमत्कार तऽ पहिने कोनो गौआँ नहि देखने छल। बबाजी
सब तऽ चकित आ मराएल। ओहिमे एक गोि दोसरके कहलखिन-

“एकरा चेला बना लेब ठीक रहत।”

ढ़लमसोिके गाजा चढ़ि गेल छलक। ओ उनि ओहि बबाजीके
भर पाज कऽ धेलक आ बजलाह-

“रौ सार, ढ़लम सोिक लूरि तऽ छौके नहि, हमरेपर गुरआइ
करमे? हमरा चेला बनेमे? ढहलेल नहि तन। चल, आइसँ तो दूनू
हमर चेला बन जो आ हमर नोकर जका काज कर। साझुक पहर
हम तोरा दूनूके ढ़लम सोिक लूरि सिखाएल करबौ।”

आब तऽ दूनू बबाजीक बोलती बन्द। कहुना अपनाके छोडा
कए ओ दूनू नाङरि सुकिबैत गामसँ भगलाह।

ढ़लमसोि भाइ अपना काजमे अिवतीय छलाह। इलाकामे
करीब दस गामक बीच हुनकासँ हाथ मिलबै बला कियो नहि भेल
छल।

६. नकू पहलमान

मूल नाम : परमेसर यादि

पिताक नाम : शीतल यादि

जन्म तिथि : अजात

मृत्यु : सन उनैस सौ बेरासी साल

उपलब्धि : नकू कने नकिआइत छलाह बजबामे ते ई नाम भेलन्हि। हुनका हनुमानजीक सराप आ आशीर्वाद छलन्हि जे कोनो कुश्ती खेलामे पहिल दू बेर तोरा हारए पड़तौ। जखन तो दू बेर हारि जेमे तखन तेसर बेर केहनो पहलमानसँ भिरमे, जितबे करमे, से ओ साक्षात भीमे किएक नहि आबि जाथु। बूझि ले हम अपनहि तोरा शरीरमे प्रविशि कऽ जेबौ।

ई बात ककरहु नहि बूझल छलैक हुनकर बाबूजीके छोड़ि। साधारण भिड़न्तामे हारि-जीत चलिते रहैत छलैक। लोक एतेक ठेकान नहिए करैत छल जे कोना दू बेर हारलाक बाद नकू सदिखन तेसर बेर जीत जाइते छथि।

एक बेर दरभंगा राजक पोसुआ कैलू पहलमान हमरा गाम दिससँ जाइत छला। हुनका गुमान जे पूरा जिलामे हुनकासँ हाथ भिरबै बला कियो नहि छन्हि। ई गप ताहि दिनक छी जहिया मधुबनी जिला नहि बनल छलै आ दरभंगे जिलाक सभ किछु जिन छलै। हमरा गाममे कियो अगती छौड़ा हुनका ललकारि देलक जे गामक नकू पहलमानसँ एक बेर हाथ भिरा लेथि। पहिने तऽ ओ अपन पक्षा। बूझि एकरा अनठबए चाहलाह मुदा गौआँक जिदपर अखाड़ामे उतरि गेला। नकू सेहो उतरला आ हनुमानजीके स्मरण केलन्हि।

खेला शुर भेल। कैलू आ नकू अखाडामे चकक्मी कति आ एक दोसरापर दाओ बजारैक चेष्टामे लागल। कयो दोसराक देहमे सर्वि नहि रहल छल। आ कि नकू कछु केलक आ कणेमे कैलू क्षत, नकू हुनका छातीपर सरि। लोक अकचकाएले रहि गेल। तालीपर ताली परए लागल। कैलूके कछु बुझाइये नहि रहल छलक जे की भेलै, कोना भेलै, कोन दाओ लगलै जकर ओ सम्हार नहि कऽ सकला।

दूनू पहलमान उठलाह, देह झाडलक, हाथ मलौलक आ अपन अपन गन्तव्य दिस विदा भेला।

नकू जीत गेलाह मुदा हुनका एकर कोनो गुमान नहि छलक। हुनका बूझल छलक जे अवाला दू कुश्ती हुनका हारबाक छक। ओ अपनाके कहियो महान नहि कहलक, ई हुनकर नमता छलक।

७. पण्डितजी

मूल नाम : राधाकृष्ण मिश्र

पिताक नाम : लक्ष्मण मिश्र

जन्म तिथि : उनैस सौ पचास सालक फगुआ दिन।

उपलब्धि : हमरा गामक एकमात्र ब्राह्मण पुरोहित परिवार, पण्डितजी खाली नामेसँ पण्डित छथि। हिसाबे औंठा छापे रहि गेला। भरि गामक जजमनिका सम्हारै लेल भावानके बजा अनलनि। अपने ओकरा सँ खाली नोत खेबा लेल जाइ छथि।

मुदा पण्डितजी अद्वितीय भैए गेलाह। ई भेल हुनक अद्भुत गुणक कारण। ओ महिषसिद्ध भऽ गेला। महीसपर बैसल बाधे बाध बौआइत रहबामे ओ ककरो कान काटि सकैत छथि। बच्चेहिसँ ओ महीसपर जे चढ़ए लगलाह से एखन तक कइए रहल छथि। महीसे पोसब हुनक मुख्य व्यवसाय भेलनि। एकटा ब्राह्मण कुलमे जन्म लइयो कए ओ कोनो यादव परिवारसँ बेसी दूधक व्यापार केलनि आ ओहिना कोनो यादव परिवारसँ बेसी पानि दूधमे मिलबैत रहला। तैयो हिनक दूधक बिक्री कम नहि भेल। महीसक खरीद बिक्री केलनि, ओकर दाइ दाइ सेहो बुझैत छथि आ सब तरहे महीसक विशेषज्ञ रूपे इलाकामे प्रसिद्ध छथि। हिनका प्रसादे कतेक महीस के प्राण बचलै। ब्लॉक के मवेसी डाक्टर सेहो हिनकर ज्ञानक प्रशंसा करैत छथि।

पण्डितजी एकटा आर गुण लेल प्रसिद्ध छथि आशीर्वाद देबाक हिनक शब्दकोष बिल्कुल अलग अछि। 'जीबू जागू ढनढन पादू' तऽ हिनकर तकिया कलाम अछि मुदा जखन कियो कोनो तरहक छोट पैघ गलती कऽ बैसैत अछि तखन हिनक मुह सँ बहराएल शब्द विश्वक कोनो कोष मे भेटि बला नहि। आ सुनिहार केहनो मोट

चामक बनल रहओ, कान मूनक्ह पडैत छैक। ओ आशीादि-रिा लोकक धैयक्क परीक्ा सेहो लैत छैक। आ जे कने अधीर भेल तकरा तऽ भूलुण्ठत भेनक्ह कल्याण।

महीसक सॉग सॉग ई गायक व्यापार सेहो करैत छव्थ। गाय दरब् जापर पोसैत कमे छव्थ, खाली खरीद बाकीक काज हापिर करैत छव्थ। मवकोरबा गामक हापिर मरदुआक कैल गाय सस्त दामपर कीनैत छव्थ, ओकरा दस क्दन नीक जका खुआ वाआ कए आ जक्हना आइकाक्ल लोक केश रंगैत अव्छ तक्हना नकिा तरीकासँ रॉग चढा कए कारी गायक रपमे दुना-क्तगुना दाममे बेक्च लैत छव्थ। बेचबा काल ध्यान रखैत छव्थ जे गाहक बेस दूरक इलाकासँ रहए। लग पासक गाहकके ओ कारी गाय नक्ह बेचैत छव्थ। एक दू बेर गौआँके सर सम्बान्धीक मारफत सुनबामे एलै जे मासे क्दनक भीतर गायक रॉग बदलए लगलै। मुदा ई व्शाकाएक्त सीधे पवण्मतजी लग क्कयो नक्ह पहुँचेलक। आशीादि-रिा मे वामजबाक मर जे रहैत छैक।

एखन तक पवण्मतजी बेदाग अपन व्यसायमे लागल छव्थ।

८. लम्बोदर

मूल नाम : दवेश्वर नारायण झा

ख्यातिक नाम : पलटू झा

जन्म तिथि : अज्ञात

मृत्यु : पाच रिमपक्षने

उपलब्धि : लम्बोदर नाम गुण पैघ उदर बला छलाह। हमहूँ देखने छिऐक हुनकर शरीर। कण्ठसँ माडक बीच मात एक बित्ताइमे छाती आ दू बित्ताइमे लम्बा उदर। से कोनो पैघ धोधि फूलि नहि, सपाि। आइ कालि हीरो सब बस् सपैक चमकबैत रहैत अछि मुदा लम्बोदरके छाती आ पाजरक सबा हाड लोक सौ मीरि दूरोसँ गनि सकैत छल। हुनका बुझलो नहि छलनि जे ई शारीरिक सौष्ठिक विशेषता छिऐ।

ि्ताएँ लम्बोदर मरणोपरान्तक सॉस्कार करबैत छलखिन। आ पोखरिपर भोजन करब हुनक एकटा ि्ताक अॉश छल। मुदा एक बेरक खिस्सा जे बूढ लोक कहैत छथि से अदुत छल।

लम्बोदर अपन जजमनिकामे कोनो गाम गेल छलाह। ओतए चूरा-दही भोज छलैक। इन्तजाम तऽ ठीके छलैक मुदा हुनका सबहिक भोजन बेर किछु कुव्यवस्थाक कारण दही कने कम पड़ि गेलै कारण पोखरि पर सामान हिसाबे सँ पठाओल गेल छलै। लम्बोदर लगलाह अखरा चूरा फाकए। जाबत घरारी दहीक व्यवस्था केलकनि ताबत ई करीब पाच सेर चूरा सधा देलखिन। आब हाल ई छल जे जाबत दही आबए ताबत हुनका पातमे चूरा सधि जाए, ई छुच्छे दही सुडकथि आ तकर बाद फेर अखरा चूरा फाकथि। ई अपना दूनू कात मावपर चेन्ह दऽ कए आन लोकके उकि जेबाक सॉकेत देलखिन

आ अपने खाइते रहलाह। जखन करीब एक बोरा अखरा चूरा आ चारि तौला दही सधा देलन्हि तखन घरािरी हाथ जोड़ि कए ठाढ भऽ गेलखिन। तैयो ई ढकार नहि लेलन्हि मुदा पवित्रस्थलाके बूझि घरािरीके कहि देलखिन-

"अहा पार उतरि गेलहुँ, हम आब तृप्त छी।"

एतबा कहि ओ उठि कए हाथ धोलन्हि, पान सुपारी लेलन्हि आ दस किलोमीटर हिलैत हिलैत गाम आबि गेलाह। कियो कखनहु हुनकर पेट उठल कि फूलल नहि देखलक। अवाला दिन लम्बोदर फेर कोनो भोज खेबा लेल तैयार। हुनके भोजन देखि ने कियो फकडा बनौने छल ___

पाच पसेरी अखरा चूरा, दही छाछ भरि जलखै जकरा

की हैत चनि पाभरि जोडन? ऊँकि मुहमे जीरक फोडन !

हमरा अपना गाममे हुनका के खुआबि सकताए? मुदा ओ पवित्रस्थलाके बुझैत छलखिन आ गामक भोजमे कहियो छूलि घोडा जका व्यवहार नहि केलन्हि।

हमरा गाममे किएक ककरो बूझल रहतैक जे वानीज बुकमे हुनकर नाम रेकर्डमे लिखबाबि सकताए। हमसब एहि गौरसिँ चूकि गेलहुँ ते हम कयारल जे अपन संकलनमे हुनकर चचा जरूर करब।

९. नरिि लाल

मूल नाम : जयन्त कुमार लाल दास

पिताक नाम : श्रीा मोहन दास

जन्म तिथि : सन उनैस सौ अठतालीस के चौरचन दिन

उपलब्धि : नरिि लालक पिता अल्प ायिसमे मरि गेलखिन। माताक एकमात सन्तान ई गामक बागडल छौडा सब के सॉगतमे फँसि गेलाह। यदपि हमरा गाममे बीएक असफलताक बाद सब गाजियन अपन धियापूताके स्कूल जेबासँ परहेज करबए लागल मुदा जयन्त कुमार लाल दास स्कूल गेला जहिना कि हिनका ालिक किछु आर बच्चा सब करैत छल। कहुना अठमा तक घुसकला तकर बाद हाथ उठा देलकि।

बच्चहिसँ हिनकामे विशेर लूरि छलिन लोकके ठकबाक। पहिने तऽ बहुत दिन तक माएके ठकलनि आ मविकोरबा गामक हापिर झिल्ली कचरी बतासा लडमू खाइत रहलाह। तकर बाद अनकोपर अपन मतिक पयोग केलकि। लम्बोदरक पाकयौतके जजमनिकामे भेलि रॉगल धोती सब ई कामकि ालिक लोकके किना दैत छलखिन, बेसी दामपर जे तोरा रॉगक खचा बचि गेलहु, आ धोती बलाके कहि दैत छलखिन जे रॉगल धोती कियो नहि कीनत, ओ तऽ धन्य कहू जे हम एक गोाके फुसला कए राजी केलहुँ। धोती बेचनिहार कहियो नहि बुझलकि जे के कीनलक आ कीननिहार कहियो नहि बुझलकि जे ककर धोती ई कीनलक। एही तरहे पुरना किताब विदाथीसँ लऽ कए ओकरा नकिा भाा बेचथि। एहि व्यासायमे हिनका नीक आमदनी होमए लागल। अपने ई लील विनोपाल देल नीक धोती गॉजी पहिरए लगलाह।

एही बीच किशोर ियसमे पिश कते िहनक आदित सब िबगडए लागल। ई सुनसान गाछी िबरछी आ प(िआ कुिसयारक खेतमे िशाकार करए लगलाह। हाथमे पाइ रहतिह छलिन से िशाकार भेिए जाइ छलिन। सब गाममे सब तरहक लोक होइ छै आ हमरो गाम एहीसँ बचल निहए छल। मुदा जखन एक गोिके िकछु भऽ गेलै आ ओकर बाप िहनका तॉग करए लागल िबयाह कऽ लेबा लेल तखन ई पिहल बेर मरा कए गामसँ भावा गेला।

छओ मास बाद घुरला तऽ माएके सब बात बुझबामे आिब गेल छलिन। ओ बेचारी नीक रस्ता धेलिन आ िहनकर िबयाह करा देलिखन। निरि लाल पतीमे रिम गेला। साले साल पुत रतक बरखा होमए लागल। तेरह साल पुरैत पुरैत िहनका लग छोि पैघ तेरहि बच्चा छल एकछाहा पुल्लॉग। घरमे जगह तऽ निहए छलिन, बुतातोपर आफत आिब गेलिन। ताबत माताराम उपरक रस्ता धेलिन आ ई लगला पुस्तैनी जायदादके बेिच गुजर चलबए।

एही बीच िहनकर भाग्य जागल जखन माताकक एक गोि बैक मनेजर बिन कए राजनगर एलिखन। िहनकर दुदशा देिख ओिह बेचाराके दया लावा गेलै आ िहनका बैकमे चपरासीक नोकरी भेिि गेलिन। आब की छल? राित िदन िहनका आङनसँ माछक सुगन्ध उठए लागल।

बैकमे पहुिच निरि लालके अपन असली र प देखेबाक अिसर भेिि गेलिन। हमरा गामसँ राजनगर दस िकलोमीिर। ताबत ने रोम नीक भेल छलै आ ने ि‍म्पूक चलन भेल छलै। ई लोकके फुिसया फुिसया बैकमे खाता खोलबौलिन आ तकर बाद ओकरा सबके लघु बचत योजनासँ जोिर िनत्य साझमे एकिकही दुिकही, जकरा जेहन जुडै, से जमा करए लगला। पासबुक बिन गेलै मुदा सबि पासबुक

ई अपनक्ह सॉग राखथ्थ। लोकके विशासमे लेने। जर रक्त पडलापर सौ पचास उधार सेहो दऽ दैत छलक्खन ई कक्ह जे बैकसँ लोन भेलिहु। लोक लोन सधबए लागल आ अवाला कस्त उठबए लागल।

एक्ह बीच ई गामक सॉक्चत िका क्जी काजमे लगाबए लगला। पासबुकपर कछु चढै नक्ह। लोकके कछु बुझबामे अबै नक्ह। पायः पाच साल तक ई खेला चलैत रहल। कयो यक्द कक्हयो पासबुकक चचो करए तऽ ई बहना बना देथ्थ जे बैकमे राखल छै। दश कलोमीिर क्बना कोनो साधन के चक्ल कए जाएब कक्ठन छलै आ लोक अनठा दैत छल।

एक बेर ककरो बेिीक क्बयाह लेल पाच हजार िका क्नकासी करबाक जर रक्त भेलै। ओकरा क्हसाबे जतेक िका ओ जमा करैत गेल छल ओक्हसँ पाच हजार जर रे उठाओल जा सकैत छलै। निरि लाल कछु क्दन िलमिर करैत रहला। मुदा बेिी बला कते क्दन मानतए? अन्तमे हाक्र कए ओ एक क्दन पहुँक्च गेल राजनगर बैक।

तकर बाद जे हेबाक छलैक सएह भेलै। सबि भेद खुक्ज गेलै आ बेिी बलाक खातामे मात अढाइ सौ िका भेलै। गामक पायः सब के िका मुबलै। सब अपन कपार पीि कए रक्ह गेल।

निरि लालपर विभागीय कारिइ भेलक्न, ओ जेल गेला। एक्ह बीच तेरह पुत सेहो बढैत गेलक्खन आ सौसे भारतमे क्छक्डया गेलक्खन। हुनका लोकक्नक लेल बापक पापक बीच गाममे रहब कक्ठन भऽ गेलक्न। पती सेहो अस्वस्थ रहए लगलक्खन आ करीब चाक्र सालक बाद स्िगमगेलीह। पेरोलपर आक्ब निरि लाल पतीक सॉस्कार केलक्न।

करीब सात साल जेलमे सरलाक बाद ओ गाम घुरला। मुदा

हुनका मुखरापर कोनो ग्लानिक भाि कहियो नहि एलनि। एखन गामे रहैत छथि आ बेटिा सबहक पठाओल टिाकापर गुजर करैत छथि।

कोशिश तऽ ओ एखनहु करैत छथि लोकके ठकबाक, पुरान आदति जे छनि, मुदा आब लोक हुनका चीन्हि गेल अछि से हुनका नहि सुतरै छनि।

१०. झलकी देवी

मूल नाम : अजात, सब दिन लोक ओकरा एही नामसँ जनैत छैक।

पिताक नाम : रतन सदाए

जन्म तिथि : ठीकसँ नहि बूझल मुदा हमर समयिस्के अछि झलकी।

उपलब्धि : झलकी अपन माए-बापक एकमात सन्तान। बच्चेसँ कने गौरहि। कहियो कोनो समयिस्क छौडाके गुदानलक नहि। बियाह भेलाक बाद एतहि रहि गेल। पक्का घर-जमाए बना गेलखिन।

झलकी सुनरि अछि एखनहु। जखन ओ यौनिक देहरूपर मेग देलक तखन गाममे बहुतोके मोन मोललै। कसल देह, सुगठित बाहि आ यौनिक अन्य सब लक्षणसँ युक्त जखन ओ अलर भरि बाध दिस जाइत छल तखन हमरा उमेरक छौडा सब ओकर पछोड धS लैत छल। ओकरा लेल धन सन। एक बेर चौरमे रहमतबा कने नजदीक आबि गेलै, झलकी पाछू घूमि ओकरा तेहन चाटि मारलकै जे ओ ठामहि खसि पडल, दाती लावा गेलै। तकर बादसँ हमरो सबके बूझल भS गेल आ झलकी अपनहुँ आशस्त भेल जे कियो ओकरा देहमे ढिरबाक साहस नहिए करतै।

हम जखन दिल्ली चलि गेलहुँ तखनुक घटिना कथिक। झलकी एकसरिये छल घरमे। एहि बातक फाएदा उठा मदिकोरबा गामक भूतपूर्व मुखियाक बेटा अपन एकटा उदन्डी संगीक संग ओकरा घरमे प्रवेश केलक बलात्कारक उदेश्यसँ। मुदा चल गेल यमलोक। झलकी कचिया हासूसँ दूनूके दू टुकिडी कS देलकै आ घरेमे गाडि देलकै। ओतबे नहि, शोणित लगले कपडामे राखिएमे हासू हाथमे लेनहि सौसे

ािलमे क्यकवर कए कव्ह देलकै जे कतयो यव्द गािही देतै तऽ ओकरो यमलोक जाए पडतैक। तकर बाद पोखवरमे नहा लेलक, हासू धोलक आ आवब कए क्सवािन्त भऽ कए सूक्त रहल।

ओकर एव्ह धमकीसँ कानूनक काज तऽ रकतै नव्ह। अवाला व्दन थाना पुक्लस ओकरा ओव्ह ठाम पहुँक्य गेलै। झलकी घरसँ बहराएल तऽ गरदक्नमे साताि कक्यया हासूक माला पक्हरने। एहन रौर रप तऽ पुक्लसो कव्हयो नव्ह देखने छल। दूनू पुक्लस दरोगाक पाछू सुिक्क गेल जेना मरखाहा साढके अबैत देक्ख छोिा बच्चा माएक पाछू सुिक्क जाइत अक्छ।

ककरो क्हम्मते नव्ह होइ ओकरा लग जेतै, आ क्क घरमे कक्छु सचमकरतै। दरोगा ओकरा पुछलकै-

“तो राक्तमे ककरो खून केलही?”

झलकी क्तमर भािा उतर देलक-

“एखन तऽ दुइएिा के किलइयैए, जँ छौडा सब आबहु नव्ह सीखत तऽ दू सैइयोके कावि देबै एही कक्यया हासूसँ। जकरा जे करबाक छैक से कऽ क्लअए। हम ने कतहु जेबै आ ने ककरो अपना देहमे हाथ लगबए देबइ।”

दरोगा मुक्श्कलमे पवड गेल। ओ दूिा क्सपाही लेने आएल छल जे खूनीके हथकडी लगा कए क्यचने आओत थाना, जेना ओ सब व्दनसँ करैत आएल छल। एहन काली माइसँ भेिा हेतै तकर सपनोमे कोनो अन्दाज नव्ह छलै। एकेिा उपाय छलै जे मक्हला पुक्लस बजाओल जाए नव्ह तऽ ई मौगी की कऽ बैसत से नव्ह जाक्न।

दरोगा हेम्िाक्सके फोन लगेलक आ ओतव्ह बैसल रहल, झलकी चल गेल आङन अपन काज करै लेल। ककरो क्हम्मत नव्ह

भेलै ओकरा आङन्न ढुकै के। करीब तीन घंटाक बाद मधुबनीसँ जीपपर सातिर चारि महिला पुलिस एलै। ओ सब जखन झलकीके हथकडी लगा पकडै लेल गेलै, झलकी ओकरो सबके मारि देलकै आ हाथ तेना ने झिकि देलकै जे एकिा महिला पुलिस खिसिआए पडल। ओ बेपरबाहि ओकर चार सँ पुछलकै-

"तो सब मौगी छे ने। कह जे यदि राक्समे कियो तोहर इज्जत लूटि लेल तोरा लग पहुँचतौ तऽ की करबही? अपन बचाबि करमे, ओकरा पाठ पढेमे कि उतान भऽ कए पडल रहमे?"

सब सकदम। ककरो कोनो जबाबे नहि फुरा रहल छलै झलकीक पशक। जबाब फुरेबो करतै तऽ कोन भारामे झलकीके उतर देतै? बडी कालक नाकि के बाद झलकी अपनहि मोने थाना विदा भेल। कियो ओकरा देहमे नहिए धडलै। आगू आगू झलकी, ओकहना सातो कचिया हासूक हँसुली पहिरने, केश खूजल, उघडयाइत, आ पाछू दरोगा सिपाही आ किछु गौआँ सब। व्जनकर बेटि कलिक्त स्तानका लोक एखन तक कतहु नहि देखलक।

झलकी हाजतमे बन्द भेल, फेर मधुबनी पठा देल गेल। मोकदमा चललै मुदा सरकारी ओकील कोनो तरहक साक्ष्य जुटिबामे असमथम रहलाह। पूरा गाम झलकीक समथनमे जुटि गेल। छओ मासक बाद झलकी बरी भेल आ गाम घुरि आएल।

पछिला पँचायत चुनावमे झलकी निर्विरोध सरपँच चूनल गेल। आब ओ ब्लकपर आ इलाकामे झलकी देवी नामे पसिद्ध पाबि रहल अछि। एखन गामक पँचैतीपर ओकर रौर रपक पभाि झलकैत रहैत छैक। फल ई जे अपराधो कम भेलैए।

हम सब लावा गेल छी पयास मे जे अवाला विधान सभा चुनावि

मे झलकी के एमएलए बना पनिा पठाबी । हमरा सबहक विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जाति लेल आरक्षित छैके । बलक पर ओकर लोकप्रियता देखैत ई लक्ष्य असम्भि नहि बुझाइत अछि । ओ अपनहुँ एम्हर किछुस ध्यान देलक अछि आ किछु पढब लीखब शुरु केलक अछि।

गामक लोकक कहब छैक जे झलकी साधारण महिला नहि, कालीक अतिार अछि। जखन ई मरत तखन एकरा सारापर काली मन्दिर बनाओल जाएत।

११. राजा-रानी

हमरा गाममे एकटा एलाह राजा। आ हमरे गामक पुती भऽ गेलखिन हुनकर रानी। एतए हुनक मूल नाम, जन्म कथा आदिसँ हमरा सबके सरोकार नहि अछि, मात हुनक अदुत चरित लीख रहल छी जे हुनका दूनूके वास्तविक अथमे हमरा गामक पूज्य राजा-रानीक रपमे स्थापित कऽ देलक आ इलाकाक अन्य गाम सबमे सेहो हुनकर ख्याति बहुत पसरल।

राजा तऽ जहिना नाम तहिना हुनक विशाल शरीर आ उदात चरित। हुनकर चरितक पशंसा सुनि बहुतो कुमारि कन्या अपन भाग्य अजमौलक मुदा राजाके तऽ एकेटा पसन पडलनि। भऽ गेल राजा आ रानीमे पेम। से एहन पेम जे लोकके विशासे नहि होइ। बूढ पुरान सब बाजए लगलाह-

“हौ, ई कोनो साधारण पेमी-युगल नहि छथि, जरर कोनो देवि अंश छथि। गामक ई उतरदायित जे हुनका दूनूक रक्षा करए।”

बस, तहिना भेल। हुनकर आवास बनाओल गेल, सब तरहक सुख सुविधाक इन्तजाम कएल गेल। पार बान्हि गौआँ सब हुनकर भोजन पठबए लागल। जहिया जकर पार होइ ओ अपनाके धन्य बूझए जे आइ ओकरे अन-पानिसँ राजा-रानी तृप्त भेलाह।

राजा-रानी एक दोसराक लेल पाण दैत। रानी तऽ अपनाके अति भाग्यशाली बूझथि जे सब किछु होइतो हुनकर कोनो सौतिन नहि छलनि। बहुतो लोक पयास केलक जे एको नजरि राजा अन्य कन्यापर दऽ देथि मुदा बेकार। राजा तऽ रानीक पक्का समर्पित

छलाह। आब हुनका एहन आत्मतृप्ति भेलनि जे ककरो अनका दिस तकबो नहि करथि।

जेना कि प्रकृतिक नियम छैऐक, राजा-रानीक प्रेमक फल भेल हुनकर तीन पुत आ एक पुती। पुत लोकनि जेना जेना पैघ होइत गेलाह, अपन अपन व्यवसाय सम्हारलनि। बचि गेलखिन पुती। ओहो तीरिगतिए बढ़ए लगलखिन। रानीके चिन्ता भेलनि एकर बियाह कोना करौतीह। कहियो बियाह नहि करौलनि। अपने तऽ तेहन राजकुमारक प्रेममे फँसलीह जे बियाहक प्रश्ने नहि उठलैक। मुदा बेटी?

रानीके मर छलनि जे जनि बेटीके देखि कतहु राजाक मोन मोकि ने जानि। मुदा राजा अपनहि अपनाके सम्हारने रहलाह।

ऋतुमासक समय पर बेटीके पुरुखक जरूरति भेलैक। ओ एम्हर-आम्हर तकलक। कतए जाएत? ओकरा माए-बापक प्रेमक विषयमे तऽ बूझल नहि छलैक। ओ लागल ओही पुरुखक चारू कात चकर काटए जे सबसँ लगमे ओकरा भेटलैक। ओ बिसरि गेल जे ओ पुरुख ओकर जन्मदाता छलैक।

पुरुख अथात हमरा गामक राजा अपनाके बहुत सम्हारलनि मुदा भावीके के रोकि सकलए? ओ नियुतीक चालिमे फँसिए गेलाह। ओकरा शरीरसँ उठैत मादक गन्धि हुनका मदमत कऽ देलक। हुनक संयमक बान्ह टुटि गेलनि। नियुतीक काम-पिपासा तृप्त भेलैक। ई दृश्य रानीसँ नुकाएल नहि रहलैक। रानी बजली किछु नहि मुदा बहुत दुखी जरूर भेलीह।

ई घटना हमरा सबके देखल अछि जे ओही राति रानी मरि गेलीह। राजा अपनाके दोखी मानए लगलाह। एहि नियुतीके अपन दोसर रानीक रूपमे ओ स्वीकार नहिए कऽ सकलाह आ एक मासक

भीतरे शोकसँ मूबल ओहो शरीर त्याग केलक।

राजा-रानीक एकर अमर पेमक वखस्सा इलाकाक आनो गाममे लोक सबके बूझल छैक।

१२. अन्तमे

एखनुक समय जका यक्ट पक्हने क्रयक्लाि शो के पचार भेल रक्हतै आ हमरा गामक लोकके कछु बूझल रक्हतैक तऽ खुरचन ठाकुर आ क्यलमसोि भाइ जर रे सिजपर क्सनेमा सिरिक सामने अपन करतब देखा कए इनाम लूिने रक्हतक्थ। तक्हना जँ ओक्लक्मपक आ अन्य खेल महोत्सि सबमे भाग लेबाक असिर भेिल रक्हतै आ क्क मैराथनक पचार भेल रक्हतैक तऽ के िहलू दासके हरा सकैत छल? आइ क्मल्खा क्सहँक बदला िहलू दासक नाम लोक जक्मतए। हमरा गामक नामे ओक्लक्मपक मेमल रक्हतए। लम्बोदरक भोजनक खोराक जर रे वानीज बुक ऑफ क्लिमरेकममे क्लखा गेल रक्हतै। क्मग बस सन शो लेल बीए अक्त उपयुत क्यव्त होइतक्थ, सब पक्तभागीमे झगडा लगा अपने जीत जइतक्थ। यक्ट कयो ढॉसँ पैरिी केने रक्हतै तऽ हुनका सरकारक कृक्र पक्मत पुरस्कार सेहो भेक्ि जइतक्न। पक्मतजीक आशीक्भिनक शब्दकोर यक्ट छक्प गेल रक्हतक्न तऽ जर रे अपने सब हमरा गामक एक्ह विभूक्तसँ पक्रक्चत भऽ गेल रक्हतहुँ। छपेबाक पयासमे लागल छी। ईहो अवितीये होएत से हमरा विशास अक्छ।

फूलन देिीक ओतेक नाम भेलै मुदा हमरा बुझने साहसमे ओ झलकीक पासङ नक्हए होइतए। झलकी एखन अक्छए आ ओकरा बहुत नाम कमेबाक छैक। हमहूँ एक्हमे ओकर मदक्तमे लावा गेल छी। जे समय बीत गेल से समय तऽ घुराओल जेतै नक्ह, िितमानके तऽ सुधारी। जक्हया झलकी एमएलए बक्न जाएत तक्हया हमर खकपक्तया गामक नाम अपनक्ह देश मे सबतक्र पचाक्रत भऽ जेतै।

आब अपने सब बुक्झए गेल हेबै जे हमरा गामक एक्ह रत सभक फोिो कक्एक नक्ह देल गेल। क्दिगत लोक सबके फोिो अक्मतै कतए

सँ? विभिन्न कारणसँ बीए, नरेरि लाल आ पवनतजी फोिो नव्हि खचौलक। झलकीक फोिो तऽ छैक मुदा एखन ओ फोिो छपबए नव्हि चाहैत अछि। ओकर लक्ष्य पैघ छै। फूलन देपिर क्सनेमा बनलै तऽ झलकी पर किएक नव्हि? जखन झलकी एमएलए बनि जाएत तखन अपनव्हि ओ ई काज कऽ लेत। ओकरो पूणमइच्छा छैक जे गामक नाम उजागर होअए। एकर तैयारी लेल ओकर जतेक पोगाम होइत छैक तकर भीक्यो बना कए हम सब रखने जाइ छी। हमरा आशा अछि जे कव्हियो ओकर उपयोग झलकीपर क्सनेमा बनौक्नहार करबे करता।

देशि झा, एन० मी० कलेज रामबाग ,पूणया,
पाध्यापक (मैथली विभाग)

हन्दू विाह : एक समीक्षा

पमुख विचार विंदु : 1◦ विाह 2◦ कतव्य 3◦ यौनिक आिग
4◦ जान
5◦ पक्तसपधाक सिंग 6◦ आदशमसंबंध

30 जून 2018 के दैनक जागरण पत विाहक अदभूत दशन करौलक । कछू घिंक विाहक विध निढा कन्याक (नायकाक) समग सचिानन्द अवस्तातके शून्यक धरातल पर आनबा मे सक्म भऽ जाइत अछ । कतऽ नियौनिक कविन्त आ मस्त जीनि आऔर कतऽ अपर पक्क कतव्यक कारख़ाना । पती एिं गृहणीक जीनि कोनो घरक आबालबृधद्द घर मे पधारल पती रपी बहूके देख परमानंदक अनुभूत करैत बजै छैथ- आब की ? कोन चंता ? घरमे नि कया आबये गेल छैथ, सब काज करबे करती आ सब भार सहबे करती, चलू मठाई खाऊ आ खुशी मनाउ। कन्तु एतहसँ असंतुलनक आतंवाद मुखवरत होइत अछ जे कन्या यौनिक आिगमे जान एिं पक्तसपधाक सिंग संबलसँ अनुस्यूत उच्चपदाकाकक सँग "सुपर िमेन " बनिक कामनासँ स्फुवरत आर संपदत होइत रहैत छैथ ओ पती तथा गृहणीके दायतसँ दबके आहत होइत अपना जीनिके कयकारय लागैत छथ । जखनक हमरा सभक मध्य कयो एहेन दुखद भािनक रखैत छथ ।

ते आशियक बुझना जाइत अछ जे पत-पतीक आदशमसंबंधके बुझबाक लेल विाह एिं विाह विध केर पुरातन-नूतन रपके बुझल-बुझाओल जाय।यथा-
हन्दू विाह धममे विाहके एक पकारक संस्कार मानल गेल अछ, जकरा दाम्पत्य जीनिक उतरदायत कहल जा सकैत अछ। अन्य धमक अनुसारे विाहके पत-पतीक बीच एक पकारक समझौता सेहो कहतँ उक्ते। ओना विाह एक समझौता त थकए, मुदा विाहोपरात पत-पतीक संबंध मे अवनके साकी माकके सात फेरा लगाबैत छी जे हम सदा दुनू साथ रहब, मुदा आजुक जमाना कछु और अछ। हम अवनके साकी माक पवित बँधनमे त बँध जाइत छ मुदा समयके बदलैत कममे कछू दनमे एह पवित संबंधक कहिन करयमे आजुक युिगम(युकि-युती) के कछु उकर बुझ पडैत अछ।

वैदिक कालमे विवाह सँस्कार एक महत्तवपूर्णमसँस्कार मानल गेल अछि । ऐहि सँस्कार मे स्वागत- सत्कार, विवाहक उदोर, स्त्रिादक उपहार, वर- वधुक पवत्र्जा, कन्यादान, गुप्तदान, दहेज, पाणिगहण, गाँठ्ि बँधन, विवाहक वशिेर यज, सात-पवरकमा, वशलारोहण, ध्रुव आ सूर्यक दशर्नक, शपथ आशासन आदि क्रियासँ व्त्ति होमय पडैत अछि । हिन्दू धममे गृहस्थ जीवन मनुष्य के दायत्वि व्तविणक योग्य बनबाक एक मागमथीक, जाहिमे शारीरिक, मानसिक आ आवश्यक पवरप् ताक जान होइत अछि । एहि कममे अनेक विषय व्यव्त, गुरजन, कुटुम्ब सँबँधी सबसँ धमप्र पुजा-पाठ, देवताक आवाहन, अनुष्ठान करयबाक जान पाप्त होइत अछि ।

ओना तँ विवाह आठ पकारसँ सम्पन्न होइत अछि।

1。बाह विवाह :- सुयोग्य वरसँ कन्याक विवाह बिना कोनो दान दहेजक करबाक पथा दुनू पक्क सहमतिसँ होएब बाह विवाह कहाबैत अछि ।

2。दैव विवाह :- कोनो सेवा कि भावसँ किछू मूल्य लऽ कऽ पहिने अपन कन्याके दानमे दैत नहिथन्ह ई दैववाह भेल।

3。आरमविवाह :- ओना तँ ई विवाह पहिने कन्यादान बदला गौदानक रपमे होइत छल। पहिने पुतीक विवाहक लेल वर पक गायक दान करैत छलाह। एकरे आरमविवाह कहैत छी।

4。पजापत्य विवाह :- मैथिल सँपदायमे कन्याक विवाह दोसर गिक वरसँ करा देब पाजापत्य विवाह कहबैत अछि ।

5。गाँधवर्विवाह :- दुनू पक्क सहमतिसँ कोनो रीति रिवाजिक अनदेखी करैत वर- कन्याक विवाहके गाँधवर्विवाह कहल जाइत अछि। एकरा ई युगमे पेम विवाह सेहो कहैत छी । जेना :- दूष्यन्त-शकुन्तलाक विवाह गाँधवर्विवाह कहल गेल जनिक पुत भरत भेलाह। हुनके नाम पर हमर देशक नाम पडल भारत ।

6。असुर विवाह :- वतमान सामयमे विवाहक जे पथा चलैत अछि, ओकरा असुर विवाह कही तँ कोनो हरजमनहि । जोर जबरदस्ती भगाक दान कायक दहेजक बिना विवाह असुर विवाह कहबैत अछि ।

7。राक्स विवाह :- कन्याक सहमतिक बिना विवाह करब राक्स विवाह कहबैत अछि ।

8。पिशाच विवाह :- कन्याक मदहोसक अवस्थामे वा वरिक किछू नशाक अवस्था मे किछू खुआके लऽ जा के विवाह कराएब पिशाच विवाह कहबैत अछि ।

भारतीय सास्कृतिक अनुसार विवाह कोनो शारीरिक आ सामाजिक अनुबँध मात नहि अछि अपितु दूनूक दाम्पत्य जीवनके एक शेष आध्यात्मिक साधनाक रपमे दशाओल गेल अछि । ठीके कहल गेल अछि :- “ धन्यो गृहस्थाशम: ”।

मिथिलमे पहिने सँ विवाहक पथा अनेक दृष्टि कोणसँ देवताक आवाहनक उपरान्त अग्निदेवके साक्षी रपमे सँकल्प आदि करके वरण देवसँ कृपालाभक बड अदृष्ट फल होएत अछि अहि

दुनू शव्तके एक क्हएबाक एक गॉभीर बात आयमर्वाि हिमे राखल गेल छल ।

र्वािहिक सॉम्बॉधमे आयमूगसँ पतीक क्दवशसँ पक्तके शतायु होयबाक पाथमा आ पक्तक क्दशसँ अवभन दाम्पत्य पेम पाथमा कएल गेल अक्छ जेना ।

राघन्दिरे यथा सीता विनीता काश्यपे यथा ।

पाकिे च यथा सिाहा तथा र्तािमक्य भतक्ह । आक्द आक्द

(धमर्वजान,पृ0156)

एक्हपकारे जेना रामक पक्त सीताक कश्यपके पक्त विनताके, अवामक पक्त सिाहाक, क्दलीपक पक्त सुदक्क्णाक, ािसुदेिक पक्त देिकीक, अगस्तक पक्त लोपमुराक, अक्तक पक्त अनुसूइयाक, यमदवामक पक्त रेणुकाक आ शीकृषणक पक्त रव्मणीक पर्वति पेम छलैन्ह ओएह पेम आजुक ािर कन्या मे मधुर पेम जीािनक ई पाथमा आयमर्वािहि कालसँ अक्छ जे एक्ह युगमे सॉभि नक्ह बुझाबैत अक्छ ।

एतय हमर मॉतक्य अक्छ जे र्वािहि एक पक्त पतीक बीच परस्पर विशासक एक समझौता तँ क्थक्कए सॉग- सॉग एक पकारक कतक्म सेहो थीक जे र्वािहोपरान्त क्यव्तक जीािन शैलीमे कतेक पकारक उतार-चढाि अबैत अक्छ जाक्ह मध्य मनुष्य जीािन गाडीक दूनु पक्हयाक सदृश घुमैत ई क्जनगी सुख-दुखक अनुभि करैत क्तैत अक्छ ।

र्वािहिक विरयमे कक्छू क्मलल-जुलल तथ्य युवतसॉग्त बुक्झ पडैत अक्छ।

यथा:

जे पक्हने एक दोसरसँ आनक्छया (अनक्कन्ह)
पुन: कमश: एक दोसर पर आक्शत,
उतरोतर सौसे (सॉपूणम) क्जनवाक सॉग,
शनैह-शनैह परस्पर अवभन अपनामे,
एक उदात आनॉदयुत मधुर स्पशम
अकस्मात् अपनामे रष नोक- झोक,
उच्चािच मक्त पर चलैत बढैत विरव्त-,
विभेद-तलाकक क्कनार तक।
कतहु क्जद आ कतहु मानक अहम भाि ,
तथाक्प रकम-रकम दुनु क्तकि सूतमे बन्हैत एक पुषप माल,
इ मधुर अजातसँ जातक क्दशामे,
चलैत पाणान्त पयमन्त समय साध्य याता,
कक्नया ािरक इ कि मधुर सॉबॉध कखनहु,
अचार कखनहु क्त त चािनी तँ सॉगक्ह मधुर ,
रसायनक शाही भोग कखनहु लाक्णम कखनहु नीम,
सब कीछु क्मली भौक्तक जगतक रपे पक्रणत होइत अक्छ।
काक्यक नािरश रक्चर भोगमे,

दु:खहुमे आनन्द, परमानन्द जाहिमे व्याप्त,
दुखज जीनिक सुख ।

पुन: विहि थीक:
एक आश विशास क्षणलनमे आनन्द,
समाजमे जीनिक समपमा,
भल हो ओकर निढा नाकर केर,
जे आनक लेल अपनाके त्यावा देलैथ,
अपना लेलैथ, सधिा अनकमजके,
अपना आँचर मे समा लेलैथ।
ताहिना धन्य छैथ ओ पुरर क्सहँ,
जे निगता अनक्यन्हाक्र अबला पर,
स्नेहिल विशास करैत अपना घर धरा,
समग ऐशयमआ सर्यिक्के सौवा देलैथ,
आओर की कहू-िहि रे विहि, आह रे विहि ।

मैथिली पत्रिकामे अनुदित साहित्य

अनुदित कथक एक भाराक ि्य के दोसर भारामे कहब वा लिखब । पहिलके मूल भारा आ दोसरके लक्ष्य भारा कहल जाइछ । अनुवाद अछि मूल भाराक भाकि के शत-प्रतिशत लक्ष्य भारामे उद्धृत शब्द सहित अंतरण करि, किन्तु समस्या होइत अछि जे सभ भाराक प्रकृति, परम्परा, शब्द सम्पदा आ सभाि अपन-अपन होइत अछि । एतबहि नहि ; भारागत नियममे से हो भिन्नता रहैत अछि । तकर मुख्य कारण अछि जे कोनो भाराक प्रकृति, परम्परा शब्द सम्पदा आ ध्ििन ओहि स्थान विशेरक जलिायु, भौगोलिक व्यवस्था, िताििरण, धममि, आचार-विचार, उच्चारण ध्ििन आदि ततेि सँ प्रभावित रहैत अछि । ते मूल भाराक शब्दक हू-ब-हू समान अर्थवला शब्द दोसर भारामे नहि रहैत अछि । एहना व्यवस्था मे एक भारा दोसर भारा सँ शब्द उधार लैत अछि । आ मूल रपक शब्दके लक्ष्य भारा मे ओहि रप मे प्रयुि त करैत अछि । यथा, अंग्रेजी सँ हम लैत छी मशिन, कोपि, पेि आदि आ हम दैत छी छौकी, झाझन, धोती, साडी आदि । यद्यपि अनुदित जिटिल कायम अछि आ फराक सँ विचिनीय अछि, किन्तु से हमर विस्सार विरय नहि । तखन एतेक कहब आिश्यक जे आइ विशि मानि एक दोसारक सम्पर्कममे बहुत तीिरगति सँ आबि रहल अछि । ते एक दोसराक सामाजिक जीिन, सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, रहन सहन, जीिन पद्धति सँ परिचित होयब आिश्यक, जकर मुख्य सोत कथक ओ तुका साहित्य । सामाजिक प्रतिबिम्ब देखिाक हो तँ साहित्य बिनु देखने कचरेिा देखल जा सकैछ । तत्पायमई जे आजुक संदर्भममे अनुदित साहित्येक नहि, जीिनिक अपरिहायम अंग बनि गेल अछि । मैथिली पत-पत्रिका देखला सँ जात होइत अछि जे अनुदित साहित्य अपेक्षाकृत संतोरपद नहि अछि से तखन मिथिलाक जन जीिन ओ ओकर सभ्यता- संस्कृति मे अनुदिदक पृिि रचल-बसल अछि । नेना िि अबोध सन्तान के बढ़या पितामही, मातामही, पितामह

आदि विभिन्न प्रकारक संस्कृत श्लोकक अर्थात ग्रन्थक कोनो -कोनो अंश अपन भाषा मे सुनाऽ कऽ संस्कार सँ संपर्क करैत आइल छथि । किन्तु एही अनुवाद-परिक्रियाक अछै तँ पत्र-पत्रिका मे अनुवादक अल्पता सोचनीय अछि।

भारत मे पत्रिका प्रदार्पणक शुभ काल थिक आठारहम शताब्दीक उतरार्ध जखन कम्पनी सरकारक आधिपत्य स्थापित भ गेल छल । किन्तु मैथिली पत्रकारिताक सविराम विहानक किरण प्रस्फुटित होइछ तखन-जखन 1905 मे जयपुर सँ "मैथिली हित साधन" नामक मासिक प्रकाशित होइछ, जाहिमे अनुवाद तँ नहि टीका अवश्य रहैत छल । पुन: दोसर शुभ मुहूर्तक क्रम अबैछ 1906 मे जखन मैथिली पत्रिकाक इतिहास मे नव संकल्प, नव चेतना आ नव दिशा लऽ क आयल 'मिथिला-मोद' मैथिली साहित्यक उध्यान मे नव बसंत, नव मलयानिल सदृश महमह करैत आयल । एकर प्रकाशन मे विभिन्न बाधाक फलस्वरूप अवरुद्धता तँ आयल मुदा 1936 सँ पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेल । मिथिला मोदक माध्यमे अनुदित ग्रन्थ सभक प्रकाशन सँ अनुवाद विधा प्राणन्वित भ उठल । एहिमे महत्वपूर्ण अछि (क) हितोपदेश (अनुवादकक नाम अंकित नहि अछि) (ख)कपाल कुण्डला (अनु॰ पं० शशिनन्दन चौधरी पुरणाथा) (ग) श्री मदभगवतिगीता(अनु० पं० बालोचन झा) (घ)मुराराक्स (अनु० पं० चेतनाथ झा) (ङ) उतर रामचरित (अनु० मुंशी रघुनन्दन दास), पं० कुशेशर कुमर आ बाबू भोलालाल दसक संयुक्त संपादकत्व मे 'मिथिला' मासिकक प्रकाशन पारंभ भेल जे अच्युतानन्द दत द्वारा अनूदित 'महाभारतक' कतिपय अंश तथा गुणवंत लाल दास द्वारा 'दुर्गा सप्तशतीक' अंशक रूपान्तर धारावाहिक रूपे प्रकाशित कयलक / पं० छेदी झा 'मधुपक मेघदूत क अनुवाद प्रकाशित होबय लगल छल जे पुणर्मनहि भ सकल |

इलाहाबाद सँ बाल मासिक पत्रिका 'बटुक' के प्रकाशन श्री सुधाकात मिशक संपादकत्व मे होइत छल | ऐहि बाल पत्रिका मे अनुवाद साहित्य विशेर

महत्व रखैत अछि | ओहि मे म० म० उमेश मिश्र द्वारा उपाख्यानमालाक 'नचिकेतोपाख्यान' क अनुवाद रसी कथा बरखा आयन बेगॉ, जवाहिर लाल नेहरूक 'पिताक पत्र पुत्रीक नाम' क अनुवाद तथा श्री रमाकांत मिश्र द्वारा रवीन्द्रनाथ टैगोरक 'कबूलीवाला' क अनुवाद एवं क्लासिकल कथाक अनुवाद 'तीकवा बाबाजी' (अनु० श्री रमाकांत राय) महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय अछि।

एहिना श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' क सम्पादन मे विशेश्वर साहित्यकुटीर लोहना सॅ 'धियापुता' नामक दोसर बाल मासिक पत्रिका प्रकाशित होएत अछि । मैथिली पत्रकारिता मे एकरहु स्थान अपन महत्व रखैत अछि । एहि पत्रिका मे धियापुताक रुचि जगयबा लेल तथा सॅस्कार भरबाक उदेश्य सॅ बाल साहित्य रुप मे अनूदित रचनाक बहुलता देखबा मे अबैछ । एहिमे पॅचतंत्र कथाक यथा 'माइक बोल' 'सूर्यमउवा रहल छथि' आ सत्यमतथा कीछु आत्मकथा, राजाकक कथा, गल्पक अनुवाद भेल अछि ।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे नव आयाम जुडैत अछि तखन, जखन 1950 मे 'वैदेही' मासिकक प्रकाशनक शीगणेश होइत अछि । एहिठाम एतेक कहब आवश्यक प्रतीत होइछ जे मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रयोगात्मक तथा अस्तित्व स्थापना प्रक्रिया अपन विकास एवं सॅघर्षमय होइतो विकाशोन्मुखी तँ रहल अछि । किन्तु जीविका सँ जुडल नहि रहबाक कारणे आ राजकीय उपेक्षापूर्ण नीतिक परिणाम स्वरुप पत्रिका सभ अल्पजीवी होइत आयल अछि। बोद्धिक वर्ग, साहित्यसेवी आ कीछु उत्साही मातृभाषानुरागी लोकनिक द्वारा नव-नव पत्र-पत्रिका अबैत रहल मुदा सजिनो सँ अपेक्षित सहयोग नहि भेटबाक कारणे काल कवलित होइत गेल । एहि प्रसॅगे प्रो० चॅन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक कथा सर्वथा समीचीन अछि जे ''मैथिली पत्रकारिता रुपी लती मे कुम्हडेरक बतिया देखबा मे अबैत अछि जे आडगुर देखौला सँ सडैत आबि रहल अछि (मै० पत्र का इतिहास)। बात सदथम अछि, मुदा एहिजडता के बहुत दूर धरि तोडैत अछि 'वैदेही' मासिक

पत्रिका।

'विदेही' मे अनुवाद विधा के जाहि प्रमुखताक संग स्थान देल गेल ओ अनुकरणीय अछि । सर्वप्रथम बांग्ला साहित्यक पुरोधा शरतचंद्र चटर्जी रचित 'रमेश-सुमति' (बांग्ला उपन्यासक अनुवाद) एवं 1856 क कथा विशेषांक मे ठाकुर पाठक चौधरी द्वारा कएल करसी कथाक अनुवाद बांग्लाक 'शेफाली' तथा हिन्दी कथा ठाकुरक कूपक अनुवाद मैथिली पत्रकारिता जगत मे विशेषता आओर गौरवान्वित कयलक।

विदेही मासिक अपन पचास-बरख बरखक दीर्घयात्रा मे मैथिली पत्र-पत्रिका साहित्यक इतिहास मे जे विशेष आ महत्वपूर्ण योगदान कयलक अछि तकर लेखा-जोखा थोड मे संभव नहि किन्तु, एतेक तँ कहले जा सकैछ जे ई मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक संगहि अनुवाद साहित्यक के अभिन्न अँगन रूप मे समायोजित करैत आयल अछि । यथा 1966 क नवम्बर-दिसम्बरक संयुक्त ताक अनुवाद विशेषांक थिक । एहिमे काव्य मर्मज्ञ नेपाल नरेश महाराज महेन्द्र रचित नेपाली काव्य संग्रह "उसैकोलागी" क अनुवाद श्री अनन्त बिहारी दास इन्दुजी कयने छथि । अनुवाद शीर्षक थिक "तोरे लागी" सम्पूर्णसंयुक्त ताक अनुदित काव्यक अछि ।

प्रो० आनन्द मिशक संपादन मे 'अभियान' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन होयब पारंभ भेल जाहि मे गोर्कीक 'शालिग्राम' क अनुवाद श्री हंसराजजीक सशक्त लेखनी सँ कयल गेल अछि जे मैथिली साहित्यक भंडार के समृद्ध करबा मे अमूल्य योगदान कयलक ।

भरती भक्तक संपादन मे बहुचर्चित मैथिली मासिक 'सोनामाटि' क आठ अंक मे फ्रेंच कथाक (अनुवादक श्री मायानन्द मिश), बांग्लाक दु गोट कथाक (अनुवादक श्री भरनाथ ओ श्री ब्रज किशोर ठाकुर) खलील जिबानक एक कथाक (अनुवादक श्री भरनाथ), नागालैंडक लोक कथाक (अनुवादक श्री गणेश शंकर खगा) एवं जीमकार्बेट लिखित शिकार कथा "रुद्र प्रयागक नरभक्षी चीताक (अनुवादिका मधुस्मिता) अनुवाद भेल अछि । शशिकान्त

पाठकक सॅंपादन मे पकाश्शत 'बागमती' माक्सक मे ऋगिदिक दान सूत, समाज सूत आक्दक अनुिद पॅ० सुरेन्र झा 'सुमन' िरा कयल गेल । कलकता सँ पकाश्शत 'क्मथला दशम' मे क्हन्दीक आचायमहािीर पसाद विदीक क्नबॅंध 'साक्हत्य' क अनुिद उगकान्त झा 'उग' िरा भेल अक्छ । क्मथला दशम मे 'अनुिद कथा विशेराक' क पकाशन सेहो कैल गेल अक्छ । यध्यपी क्मथला दशम मे कीछु और अनुिद कायमभेल अक्छ । मुदा से खोजे कयला सँ उपलब्ध भ सकत ।

'देक्सलबयना' माक्सक मे श्यामलदास गुप्तक बॅंगला नाकि क इसाइ हाइनेकक एक गाही जमम कविताक अनुिदक शी रामलोचन ठाकुर छक्थ । मैक्थली माक्सक माविपाक्स, माक्सक 'कणामृत' माक्सक 'देसकोस' तथा तैमाक्सक 'आरॅंभ' आक्दक मैक्थली पक्तकाक इक्तहास मे महतिपूणमस्थान रखैत अक्छ, मुदा एही सभ मे अनुक्दत रचनाक सॅंख्या बड थोड अक्छ । अॅंत मे मैक्थलीक साक्धक कायक्मत बहुपशॅंक्सत आ सक्मय जाक्ह पक्तकाक विरिण पस्तुत क रहल छी ओकर नाम क्थक 'क्मथला-क्मक्हर'। मैक्थली पतकाक्रतक मेरदॅंड मानल जाइछ क्मथला क्मक्हरके । पतकाक्रताक रप मे साक्चय नामधारी क्मथला क्मक्हरके एक्ह साक्हक्त्यक अनुषानमे सक्म्मुख मानैत विक्मन दृक्ष सँ अॅंक्तम स्थान पर राखल गेल अक्छ ।

पक्हनक्ह कहल अक्छ जे मैक्थली पत -पक्तका मे अनूक्दत रचनाक क्स्थक्त सॅंतोरपद नक्ह अक्छ | तकर पमुख कारण अक्छ पत-पक्तका अलपजीिनिक फलसिरिप बरमहल अिरिदता | सोच आ पक्रकलपनाक सिरिप साकार नक्ह भ सकल | तथाक्प अनुिद होईत रहल अक्छ |

पश उठेत अक्छ जे ई अनुिद सभ मूल भारासॅं पत्यक अनुिद भेल अक्छ िा अपत्यक रपे दोसर भारासॅं ?

एकर खुलासा होयबाक चाहैत छल जे नक्ह भेल अक्छ । ते अनूक्दत साक्हक्त्यक कृक्तके देखब आ ओकर गुणिता के परखब ते और कक्ठन । तकर हेतु ई जे मूल भारासँ लक्ष्य भाराक क्मलानक उपरान्त सँ सॅंभि

होयत । मुदा वस्थिता ई अछि जे अधिकाश अनुवाद मूल सँ नहि, अपितु माध्यमे भाषा सँ भेल अछि । मैथिली पत-पत्रिकामे अनुवादश साहित्यक पक दुबला रहबाक सभसँ महत्वपूर्णमकारण अछि जे एको व्यव्ित ने त भाषिसायिक अनुवाद केने छथि आ ने एकोि अनुवाद पत्रिकाक फारक सँ व्यसिथे अछि। पश इहो अछि जे अनुवाद कायके के ओ अपन 'केरियर' बनाबथि तँ कोना? जीविका सँ बिना जोडने शमक फलीभूत होयबाक संभावना कम| इएह कारण अछि जे मैथिली मे ने अनुवाद पत्रिका अछि आ ने कोनो पत पत्रिका अनुवाद साहित्यक लेल स्थायी स्तम्भ रखने अछि । मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक भाषिशि, रचि आ मातृभाषाक सेिा भाि सँ सिन्ता: सुखाय अनुवाद कृतिक पणयन होइत अछि । पत-पत्रिकाक पकाशक सॅपादक जखन मन भेलनि, ओकरा छापि देलनि मैथिली मे विशेर र पे पत-पत्रिका मे सोदेश्य अनुवाद कायमहोयबाक चाही जे नहि भ रहल अछि। आजुक युग मे अनुवाद-कायम एकिा फैशन थिक । दुनिया के जनबाक-परखबाक सभ सँ पैघ माध्यम थिक । आजुक बहुत लोक अनुवाद पर िनिभैत अछि । एकिा बात और अनुवाद कायक जे आवश्यक पक छै, ताहि लेल बाजार चाही, मुदा सँ अछि नहि । बाजारक अभाि अनुवादक अभाि, पत-पत्रिका मे अनुवादक अभाि सभ एक दोसरा पर िनिभर अछि । मैथिली पत-पत्रिका मे बेसी िा कम जे कीछु अनुवाद कायमभेल अछि से तँ िभन बात थिक, किन्तु एतबाक तँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे अनुवाद विशेरत: साहित्य सँ सम्बन्धित अछि । एतेक तँ अिश्य जे मैथिली पत-पत्रिका मे अनुवाद साहित्यक वस्थिता विकासोन्मुखी अछि । अिश्यकता छैक एकर गतिशीलता बढयािक।

‘दू-पत’ उपन्यासक विश्लेरणात्मक अध्ययन

पतात्मक शैली मे लिखल गेल एर्वि 1969 ई0 मे साहित्य अकादमी िारा पुरस्कृत कएल गेल ‘दू-पत’ उपन्यास उपेन्रनाथ झा ‘व्यास’ क विरय तथा वशल्प दुनू दृविसँ अत्यन्त महतिपूणम लघु उपन्यास विक एवह उपन्यास मे दुई गोट मवहलाक दुई िा पत अवछ जावहमे एक पत भारतीय मवहला शीमवत इन्दु देिी नौ िरमसँ अमेवरका मे रहैत अपन स्िामी कँ वलखने छवथ ओ पवहल पत विक । एकर अँगेजी अनुिादक पवरवलवप इन्दु देिी क मवमयौत भाई रमेश छवथ । रमेश सेहो वकछू िरमपूिम सवियाँ अमेवरका चवल गेल छलाह ओ अपन पतक सॉग पठा दैत छवथन्ह ।

ओ दोसर मवहला जे इन्दु देिी के हुनक पतक उतर दैत छवथन्ह से विक अमेवरका वनिासी जेवसका अमेवरका मे इन्दु देिी क पवत सुरेन्र क सॉगी रहवथ । आ ई विक एही उपन्यासक दोसर पत । एवह उपन्यासक सभ सँ पैघ विशेरता विक पतक माध्यम सँ दू सॉस्कृवतक विचिना दुनू पतमे दुनू देशक सभ्यता, सास्कृवत ओ सॉस्कार आवद साकार भ उठल अवछ ।

पािात्य सास्कृवतक पवतमूवतम जेवसका कोन रपँ आपन पत मे अपन सास्कृवतक कएने छवथ से वणमनीय अवछ । ओ अपने सास्कृवतक अनुरप पत वलखने छवथ । तवह लेल एवह पतक वनम अॉश रष व्य विक स्िावमक लग रहला सँ सुख चैन पाय: छैक , परॉतु बन्धनो तँ कम नही । आ ई त ध्यान मे रखक विक जे जतै कतहु रही, अपन मायबादा स्ितॉतता बड वपय अवछ । ओवह पर आधार होयब हमरा आवद हुनक काज त हुनको हमर काज, नही तँ हुनक तरिा चाटैत, नौकरानी भेली वकए रहवथन्ह ? ई विक पािात्य सॉस्कृवतक

झलक ।

मुदा भारतीय सांस्कृतिक विशेषता थिक जे किछु भ जेतैक मुदा भारतीय नारी अपन पति कँ सदिखन बूझिते रहत जकर उदाहरण थिक इन्दु देवी द्वारा लिखल गेल पत्रक अन्तिम विदापत्रक पद ।

जकरा दोहराबैत इन्दु देवी पत्र कँ समाप्त करै छथि । पति द्वारा एतेक गलती केएलाक बादो हुनका द्वारा एतेक अपमान, अत्याचार सहलाक बादो हुनका द्वारा एतेक अपमान, अत्याचार सहलाक बादो हुनको पर कोनो दोष नहि लागल ।

अपन माथ पर सभ दोष लय कऽ पति कँ जुग-जुग जीबाक हेतु कामना करैत छथि । एकठाम इन्दु देवी द्वारा लिखल पत्रक किछु अंश द्रष्टव्य अछि ——

“युग-युग जिबयु बसयु लाख कोस,

हमर अभाग, हुनक नहि दोष ।“

एहि उपन्यासक महत्व ओ विशेषता कँ प्रतिपादित करैत म0 दुर्गानाथ झा श्रीश लिखने छथि- “एहि उपन्यासक महत्व अछि मैथिली उपन्यास-क्षेत्र मे पत्रात्मक । रचना प्रणालीक प्रयोग एवं नवीन वस्तु-विषय ग्रहणक दृष्टि सँ ।

उपन्यासकार इन्दु , सुरेन्द्र जेठसका एवं रमेश चारि गोट मात्र पात्रक वृतान्त-प्रस्तुत कए बड कौशलक संग दुई संस्कृतिक तुलनात्मक विवेचना कएल अछि, विशेषतः भारतीय ओ पाश्चात्य दृष्टिकोण मे स्त्रीगणक सामाजिक ओ मानसिक स्थिति ओ आदेश मे की अन्तर छैक, तकरा स्पष्ट करैत अन्ततः भारतीय ललनाक शालीनताक ओ श्रेष्ठताक बड सजीव प्रतिपादन भेल अछि | मानसिक द्वन्द्व ओ संघर्षक सूक्ष्म ओ कलात्मक आकलन एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक | दू पत्र उपन्यासक मर्मके बुझबाक हेतु उपन्यासक प्रकृति एवं ओकर

पयोजनके बुझब आशियक ते एक्ह पसॉग ऑगरेजीक उपन्यासक पक्सध्द समालोचक समरसेि मामक कथन रष क्य क्थक ____

"I think it an abuse to use novel as pulpit or platform, and I believe readers are misguided when they suppose they can thus easily acquire knowledge.it would be fine If we could swallow the powder of profitable information made palatable by the jam of fiction."

म ० अमरेश पाठक एक्ह उपन्यासक पसॉग क्लखने छक्य-साधारणतः मैक्थलीक उपन्यासकार लोकक्न अपन सीक्मत अनुभि एँि उपन्यास कलाक हेतु अपेक्कत्त जानक अभाि कारणे ओक्ह पकक क्चतणो नक्ह कए सकलाह अक्छ जकर क्चतण दू पतमे सॉभि भए सकल अक्छ | चाक्र गोि मात पात पर सम्पूणमिृतात आधाक्रत अक्छ | ओ पात छक्य -इन्दु देिी ,सुरेन्द्र जेक्सका एिँ रमेश |क्भन-क्भन पक्रक्स्थक्तमे एक्ह पात सभके राक्ख मानक्सक क्न्द्र एिँ सॉघरक्क क्चतण िारा जे क्चत क्यास जी अॉक्कत कएल अक्छ से सत्यानुर प भेल अक्छ | सॉघरक्हक क्स्थक्तमे पातक चक्रतमे क्नखार आक्ब सकैत आ अक्छ |जेक्सका , रमेश एिँ सुरेन्द्रक व्यव् तत कि क्चतण जे कएल गेल अक्छ से पशॉसनीय अक्छ | एक्ह करणशि अपन सॉस्कृक्त,सभ्यता ओ आचरण िशिमे सिपिक्र अक्छ| तक्ह से अपन देशक अनेकताओ मे एकताक देश कहल जाइत अक्छ |

िस्तुतः ई उपन्यास दुनू देशक सॉस्कृक्त के दशक्बैत भारतीय ललनाक शालीनता ओ शेष ता के बम सॉजीि ओ कलात्मक ढॉग स उपक्स्थक्त करैत अक्छ | 'दू पत ' पतात्मक शैलीमे क्लखल गेल एक सफल उपन्यास क्थक |

सॅदर्भसः

1. दू-पत , पृ0-84
2. तथैि , पृ0-45
3. मैथिली साहित्यक इतिहास-शीश , पृ0-353
4. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक आध्ययन पृ0-172

राकेश पेचिन्र 'पीसी', पूरा नाि:राकेश पसाद चौधरी, जलेशर नगरपाम्लका ६, पतकार एवं अनुसन्धानकता, पकाम्शत : म्खचडी कम्बता संगह एवं फुटकर कथा, कम्बता, लेख। अपकाम्शत : फुलगाछ कम्बता संगह

लघुकथा- म्कसानके डुबौलक लखन ठेकेदार

लखन ठेकेदारक पम्रवार अंगेजक गुलाि जंजीरि रहल सीिपारस पीनीक कारोबार करबाक बास्ते िधेसक जलसरि अएल बहुतबेसी म्दन नभइ भेल रहे । हुकाक लोलीि खैनीके डाठस बनल पीनी राम्ख धुिपान करयवाला सािन्त आ सम्मन म्कसानक संख्या म्धरेम्धरे पैर पसारैत सियि कैयन पम्रवार अंग्रजक हुकुित स बचवाक लेल जलसर होएत आन गािशहरसभि घरदार बनाइव ब्यापार करय लागल छलम्थ पीम्नके ।

नाम्रयलक खोपरैयाके सुखा ओम्हि पाम्न भरल जाएत छल आ ओम्ह म्मतरि एक हावा पइसयवाला नली बनाएल जाएत छल । ओम्ह नलीके िहि एकटा लकडीके पाइप राखल रहैत । िम्टक लोलीि गोइठाक आमासगे पीनी राम्ख हुकाक िजिा लेल जायत छल । दशरथ म्कसान जलसरक कम्नक उदार सािन्ति मानती होइत छलाह। ओ जनिजिदूरसभक लेल अलगे हुकाके ब्यबस्था सेहो क'

देने रहथि । भोर , दूपहर आ सन्झयाके गुरबा, गुरबाक हुकाक आवाज सुनल जा सकैत छलै । लखनक पिय दैमाक दशरथक घरस पीनी द' बदलामे धान लजाके पमावार चलबै छली ।
सय बिगहा खेतीहर जमीन, भखारी, जतत त अनपात । टोलपरोसक धियापूता ओहिठाम चोरानुकी खेल खेलवाक लेल दशरथके खमारहान आ भखारीक दौडधुप लगबैत छल । जखन लखनक पिय दशरथके तुलना तेतायुगक राजा दशरथ स करैत छल त लखनके चेहरा देखय लायक रहैत छल, मातस लाल । डरिस अधिुर जका ।
राणासभ राजकाजक लेल धिेशमे कर असुली करवाक बास्ते अंगेजक सेहो बाशासक पात बना जा सकवाक बास्ते धिेशीया जेहन चेहरा मलियवालाके ठेकेदार बना मिलगुजारी असुलबाक लेल ठेका बन्दोबस्तीमे दैत छलथि । ओसभ कर असुलीके लेल दिनरात खटैत छल आ कर नइ बुझाववालाके मिलजाल खोइल ल' जाएत छल । मिलगुजारी असुल करवाला ठेकेदार लठैत आ धकमारया रखैत छल। तेल मायल कमारया कमारया बासक लाठी रखैत छल ओसभ । मिलगुजारी असुली करवा लेल अंगेजक गुलामी करहल अपन भमानमिनसभके जलसरमे बोलावाके सुर क' देलक ।
लखन सेहो भमानमि रहथि । फरक इहे रहे जे ठेकेदारक बाप पहिने धिेशमे जंगल फरानी करय बास्ते जलसरमे एक दूमिन रहिजाय। सयिमे कर बुझाव वाला सामिन्ती मकसान दशरथक जमीन कोना कब्जा होएत ओहि योजनामे परोसीरामे ठेकेदार मिदनरामा मिहनत करथि । योजना अनुसार पहिला अनपातक डकैती करवा लेल सेन खनय वाला काजमे लखनके लगाएल गेल । ओ दुइए मिदनमे सेन खमा देलक । हठाकठा लठैतके समान आ सामिन्ता मकसान दशरथक घरके कोनाकोना मिलुमि रहे ।

जमिनिमतर स बनायल जाएवाला रास्ताके सेन कहल जाइत छैक । दशरथस पहिने सेहो हमरारा, राधव, सतारा, मिठु, नथुनीसहितक सम्पन किसानक घरि डकैती करबा चुकल रहे । डकैत अंगेजक गुलाि देशस आएल मधेशी रहल वात राणाक जनेल रपोटष तयार क’ दैत छल । ओहि वापत जनरल ठेकेदारस दाि आ दिडी पवैत छल ।

पहमरयाको धाकधमकी आ कर असुली कर’ वाला ठेकेदारक डकैती स बजजीसंघक बम्ाि सिुदाय गम्रब बनैत गेल । बजजीसंघक बम्ाि सिूदाय ओ छलमथ् मजनकर पुवजषके जनेउ तोडल गेल रहे । युदकिष छोमड बयापार वयवसायि लागल सिूदायके सतयुगी राजा अपन हरवाहा चरवाहा स जनेउ तोडवौने रहमथ ।

सम्पन दशरथ मकसानक घरि तीन बेर सेन खम्म डकैती भगेल छलैक । सयि पर कर चुकता नइ कयने कारणे आधा जमिन अथात पचास मबगहा खेत पर कर असुली करयवाला ठेकेदार परोसीरािि कबजा कयने छल । सेन राज्य एवं दरभंगा िहाराजक सयिि लोमकया पैसा द’ क’ सराफी कारोबार स जमि भेल पुखौली असफी सेहो डकैत लगेल छलैक । अंगेजक कबजा रहल केतके नजमदक दोसर देशके जलसरि नेपाली सेनाक एक टुकुडी रखवाक पत जनेल धमर अएलावाद कर असुली करयवाला ठेकेदारसग छलफल कायल गेल। परोसीरािि अतमन लठैत लखनस बात क’ सेनाक लेल जिीन उपलबध करौला पर बकसीसके रपि पकी घर देवाक आशासन देने छल । साथे सेनाक रासन ठेका देवाक पमियाा आगू बढादेलक ।

दशरथके जानकीपुर जाएवाला डगरक नाके पर रहल जिीन कबजा करवाक परोसीरािि र लखन बनाचुकल छल । मकएक त सैमनक जिीनक बदला मकछ सोनाक मसका देवाक बाचा कयने रहैक ।

लखन पुरान म्हत भेल नाटक क ’ दशरथके घर पहुच रासन ठेकापटाि बनवाक आगह कयलक । रासन ठेकाि बहुत रास आदि होवाक लालच सेहो देखौलक। लेखनदासी करय सकवाक कति बराबरके पढाई कयला बाबजुद ऐहन जालझेलक बात स दशरथ अलग रहलवालि दशरथ छलम्थ ।

जेनतेन दथरथ ठेकापटाि लखनके साथ देवाक सहति भेल । साथे एकटा शतषरखलक जे कम्हयो ओ थाना, ब्यारेक आ सैम्नाक कहा नइ जाएव । अम्ह शतषि दुनुगोट सतपम्नाशत सहम्ति भेलावाद ठेकाक धरौटीवास्ते नाके परके जमनि धरौटीि देवाक आगह अम्सपकार करय नइ सकल । तीन म्हिनाकबाद ठेकाि म्लखत शतषबाम्जि रासन आपूती नइ कसकवाक आरोप लतबैत धरौटीि रहल जमीनके डाक पर चढावल देल जानकारी दशरथके देलगेल । लेखनदासीधम्रके पढाई कयलावादो राजकाजक बहुत बात नबुझने दशरथ राजाधम्र म्बान्ती पत हुलाक स पठौलक िदा वो सरकार धम्र पहच स पम्हनही चोरी भगेल ।

अन्ततः नाके परके जमीन पर सेना कब्जा क अत्पन ब्यारेक खडा कयलक आ म्धरे म्धरे ओम्हठाि रहल दशरथके बीस म्बगहा जमीन पर सेना अभ्यासके नाि पर कब्जा कलेलक । दशरथस कम्हयो राजमिगषबनाब त कम्हयो शहर बसएवाक नाि पर बाम्क रहल सम्पूणष जमीन कब्जा करावि परोसीराि आ लखन सफल भेल । जलसरि रहल राजस्थानी आ राजकाजक कर असुली करयवाला ठेकेदारक जमीनि म्दन दुगुना रात चौगुना करवाक काजि सरकारी लोकसभ सेहो साथ देलक ।

सय म्बगहा जमीन राखयवाला दशरथ म्धरेम्धरे सम्पनता स म्बपनताि पम्रणत भगेलम्थ । नवनागम्रक आ शासकके चालबाजी स चौघरा

हवेली सेहो बेचके मस्थितीि पहुचा देलगेल । एक बररके बाद अंगेस अत्मान शासन छोम्ड भामा गेल । मकछ सयिक बाद जलसर आ जनकपुरीि पजातन्त्त आएवगेल । ाि दा मापन भेल दशरथ बालबच्चाके भोजनक ब्यबस्था करय लेल सम्पूणष पमरवार मजाहार मास्थाम्पत भगेलाह । छोटिाट रोजगार क' अत्मान आ पमरवारके गुजारा चलाब लागल

सयि पमरवतष भेल । दशरथक बेटा, पोता धमनक बमनगेल । आब ओकरासभके नेपाली बनवाक िन होइछमन । ाि दा जालसाजक दूमनयाि ओसभ फेर स नइ परय चाम्ह छमथ । अखनो हुनकसभक घरि सेन र शाहकाम्लन राजाक भोजपता आ कागजके फाइल सनुकीि राखल अमछ ।

अरुण लाल

बीहन्नि कथा- कुंभ स्नान

.....परीछन छह ....। आबह आबह।
हौ ! राति जी इच्छा स' कत' गेल छलह, किने गोटेक सप्ताह स' गायब छलह । कत'
अलोप्पित भ' जाइत छह।किछु
थाहे ने चलैए ।

.....कि कहियह ! तो जे नै रहैत छह ने , किने ने लगैत अछि , एकदिम खालीपन हिसूस
होयि लगैत अछि ।आर सब त' कुकुर बानर अछि ककरा स बतिआउ । सब स बेसी दिक्कत
अखबारक होइए । तोरा इसकुल गेलाक बाद धरौरा बाली आनि लै छथि तोरा आंगन स'।

कहैत कहैत चौधरी जी हीस के पुचकारय लगला।फेर कहय लगला ई जे हीस अछि ने से
बिति पौस किनैत अछि ,एकदिम बकेन, बुझलह किने । राति जी इच्छा स' पका तीन सेर सबा
तीन सेर दूध दैए , एकदिम गढगर बुझलह किने ।

धरौरा चौक पर त' एकरे पाच सेर बना क बेच लेत ।हरिया त' तोरे सन सन चामि टा

गाहक अम्छ ।राि जी इच्छा स एकहक सेर सबके दैत छी आ म्कछु चाहो लै रम्ह जाइत
यै ।
अच्छा छोिह इ सब बात ।बतौलह नै, कत' गेल छलह राजी इच्छा स।

.....म्क कहू बाबा ।हिरा इसकुल स' बस के म्टकट कटैत छै कुंभ स्नान के बुझम्लयै।
हिरो म्टकट कटा देलक जबरदस्ती । हिहू सोचलौ भइये आबी एक बेर । सब पाप कटा ली ।
ुलिकी बाली त' जम्र क' िरल छलै ने ।अहा के त बुझलै अम्छ सबटा।

परेशानी त भेल जाइत काल । ुदा म्क कहू बाबा, एक डूि देलाक बाद लागल जेना म्जनगी
सकारथ भ' गेल ।
सब पाप ओतम्ह म्बला गेल ।देह एकदि हल्लुक,फूल जका आ िन शान्त भ' गेल। बुझायल
जेना हि म्कछु नै छी। एक टा कनौम्सयो बरोबम्र नम्ह ।म्नमित िात छी ।हिर वजूदे
कतेक ।संसार हुनके स चलैत अम्छ।लोक झुठे हाइ हाइ करैत अम्छ। सबम्कं नचाबत राि
गोसाई ।

बहुत संतोर आ दृढ़ इच्छाशम्क्त जागल अम्छ । म्जनगीक अथषआब

सम्झि ि आबय लागल ।भला
होइन्ह जोगी जी के ।अदुत संसार और संस्कृत्त रचलम्ह अम्छ
कुंभ घाट पर ।

हिरा त' लगैए बाघ आ बकरी एकम्ह घाट पर म्मम्मक भ' पाइन पीब
रहल अम्छ ।अखंड शाम्त
।म्ताषिा कलकल बहैत गंगा, जिुना आ सरस्वतीक संगि ि डूि
दैते अनन्त सुखक
पाम्त्त होइछ ।पूछू नै फेर फेर जाइ के िनि करैयै ।

ओह गदगद भ' गेल िनि ।

...से बात ।ओह! तखन हिरो नेने जइतह ने अपने संगे राजिी
ईच्छा स। बूढ सूढ आदिी
हि सब कोना जा सकब ।

म्कए नै । कुंभ ि अइबेर बहुत नीक बेबस्था सरकार केने छै ।
आ जानै म्छऐ बाबा अइ कुंभ ि जबाहर लाल स ल'क' जोगी , िदिी
सब स्नान क' चुकलाह
।आ देखा देखी राहुल ,म्पयंका सेहो स्नान करती ।म्हन्दुत्वक भावना
हुनको सबके
म्कछु म्कछु जगलम्ह अम्छ ।भले
देखाबटी ही सही ।

धरोराबाली हुलकी द' सब बात म्खिकीक दोग स अकाम्त रहल

छलीह ।चौधरी जी संग धषि
युद पर अ‌ि ल छलीह जे म्‍कछु बीत जाय ओ कुंभ स्‍नान करबे
करती ।हुनका ि न ि
खुदबुदी लागल छलम्‍ह आ पायम ि त करय चाहैत छली आम्‍खर दूध
ि सबम्‍दन एक
लोटकी पाइन वएह त’ म ि लबैत छलीह ,रा ि जी इच्‍छा स ।

बीहनि कथा- गाहक

आइ भोरे भोर चौधरी जी नहा सोना क' जल्दी जल्दी दोकानक शटर अपने स' कहुना क'
उठा रहल छलाह कि रेजर सैहेबक डाइवर तखने दोकान िलस्ट ल' क' पहुचल ।

...यौ सोइंठ अछि , आ िरीच सेहो लेबै। कनी लाल िरचाइ ,आ बाबा रािदेब बला हींग
अछि न ।

...आबय दही िनटुनिा के ।कने धुपबती देखाबय दे ।
...यौ बासििती चाउर केना दैत छिऐ।

...अबै छौ िनटुनिा बता देतौ।जय गणेश जय गणेश जय गणेश ....

...यौ चकेन िसाला अछि न ?
...आ सफषएक्सेल , डाबर हनी , बासलरी बोतल ।

...चुप ने कनी िनटुनिा अबाते हेतै। कत' रहि जाइत छै, ईहो छौिा ,रािि जी इच्छा
स ,से नहि जािि ।

...यौ जूता के फता सेहो रखै छिऐ,आ फनाइलक बोतल।

...ह ह सब छै।तो कनी दि धर । जय गणेश जय गणेश जय गणेश देबा।

...कखन आओत ओ। हिरा त देरी होइए । यौ मकचेन मकंग आ मकचेन िसाला ि कोन बम्ढया
होइत छै ।

...कते बजै छै , बाप रे बाप ।

...यौ कखन िनटुनाि आओत ।हिरा त सैहेब बाजय लगता । कहता कत' एतेक सिय लामा गेलौ
त की कहबै ।बताउ।

...ओि नि: मशवाय।कनी चुप रहय ने ।अगरबती देखाब' दे न ।

यौ बासिती चाउर बम्ढया अम्छ मक कतरनी । कनी देखाउ न। कोन सस्ता छै आ बम्ढया ,
िसैहेब पोलाउ बनेम्थन ।बहुते लोक सब आयल छै ।

...कहम्लयौ ने सब बात िनटुनि के बुझल छै आ ओकरे रखलो छै।

...यौ ओकरा कते दरािहा दैत म्छऐ ।

...से कियै । चौधरी जी कनी गरिाइत बजला। ािन आब खिसयानी िबल्ली सन भेल जा रहल
छलाह।

...अहा के किछु बुझले ने अिछ ।तखन ओकरे काउंटर पर बैसय िदऔ , पैसा अिधक भेटतै
त अपने सिय पर आओत आ अहा किछु िदन ओकर बला काज कर जािह स' रखरखाव आ सब िजनास
के दाि सेहो पता रहत अहा के ।

...ऐं ! िक कहलै ।चौधरी जी लाचार भेल शून्य ि तकैत िनटुनिा
के अखनो एबाक
इन्तजार बहुत बेसबी स' क' रहल छलाह।

िने िन सोचय लगला सैह देखू कमाये ओहदा पािब क' केना लोक इतराय लगैत छैक
।रेजर के एक टा ािूली डाइवर कतेक पैघ बात किह देलक । एबाक एबे करत िनटुनिा
,लेिकन बेइज्जत कराए देलक ।

ठीके लोक कहैत छै जे ाित आ गाहक कखनो आिब सकैए, राि
जी इच्छा स ।

िहनराज "गगन"

बीहन्नि कथा-१

---नव पयोगक म्बावाद व्यथषम्थक, आऊ नव सदस्यक स्वागत अपनेक सभगोटे करी
---अहा बि बुझै म्छयै
सभस म्पाछला पाम्नि बैसल जोमांदरा तािसे बाजल
---की कहबाक अथषअम्छ अपनेक खुम्लके बाजू, कथीक म्बारोध?
---म्कछु नए, ुदा एम्ह बगीचािं कोनो नवका गाछ आब नए लगब' देव, म्कछ भए जाय।

बीहन्नि कथा-२

"हरियाणा पंजाबि फेर अहि बेर कोटषरबाक्स फोरबाक सयि सीमि मादेशात कएने छैक कथी ल कीन रहल छह?" राजेश अपन दोस राजू स।

"पाछला बरख सेहो दिल्ली ि बन कएने रहैक दि कहा ानै छैक लोक"

"कथी लोक ानिते होली ि इकोफेडली होली! दयावाती ि शुद बसात केर नाि पर बान रबाम्सक दयावाती अकल सभटा हन्दू पर छजै आक आआरो कतौ..?

"ह होऊ बायाह रिन हंदुस्तान पाकिस्तान केर चि उपनयन सभि ठीक दि दयावाती ि जान तखन की कहू"

"स्वस्थ हवाि सास लेब' के ने चाहइ छैक दि ाित दयावाती ि रोक..? रबाम्सक कारखाना बन क' न दौऊ"

"चलु छोि ने कीनब कोटषक आदेश छैक दि पराली जरा शुद हवा बाटबाक पयास सेहो स्वीकार ने"

"से बन ने हेतैए नाक रगमि भिर जाऊ" उदास होइक्ता दुनूगोटे हि हप कएने बैसि गेल।

राम विलास साहु

लघुकथा- घुमल गाम चलु

रबया पती सोँ खेत आ चौमासमे तरकारी उपजा कऽ परिवारि चलबैए। बैसारी समयमे घर-घरहरिीक मजूरी सेहो करैत अछि। तइसँ भरि पेटि भोजन तँ भेटि जाइए मुदा बाहरी खर्चाक लेल कोनो आमदक साधन नै अछि। रबयाक पती गभमिती अछि। एक राति भोरबेमे पती रबयाक पेटिमे जनमासुतक दरद शुर भऽ गेल। रबयाक हाथ छुच्छ, एको छदाम नै जे कोनो ठिके बजा दाइ-दार करैत। मुदा भगविान ऐ बिपैतमे मदैत केलखिन आ सुहरदे बेटिक जन्म भेल। भोरे अन्हारेमे रबया उठि गामसँ पलैनके बजा देख-भालमे लगा आ दोकानसँ उधारे रबयाक कछु दाइ, कर तेल आनलक। खुशी मने रबया रबयाके सोइरी घरमे खेनाइ-पानाइपर ध्यान दैत रहल। बेटिक जन्मक खुशीमे गुड-आदी गाममे बाटिलक। मुदा छठमा दिन छठीहारक लेल रबयाके चिन्ता रहए जे छठीहारक समान आ नविका स्ति इत्यादी केना आएत। रबयाके एकटा उपाय सुझल जे कछु खेत भरना राखि महाजनसँ रुपैआ उठा सभ काज सम्पन्न कऽ दइ छी आ फेरो कमा कऽ रुपैआ महाजनके सठा खेत आपस लऽ लेब। ऐ तरहे रबया काज सम्पन्न केलक। बेटिक जन्म गरीबी आ दुखक समय भेल तँए नाओँ रखलक- दुखना।

दुखनाक जन्म भेने रबयाके परिवारिक खर्च बढ़ि गेल। कहियो दाइ तँ कहियो तेल-कुर आ कहियो नुआँ तँ कहियो खेलौना। खेत पहिने भरना लगल रहए, चौमाससँ खर्चा पुराबै ने करइ। आ अपनो घरेमे ओझराएल रहए। बोइन-मजूरी कए कऽ कोनो धरानी पेटि भरैत गेल। दू बरखक पछाइत बेटीक जन्म भेल। दुखक घडीमे परिवारिक

खर्चा बढैत गेल।

एक दिन रबिया पती रधियासँ विचार केलक जे आब आगू दिन केना कति? रधिया बजली-

“बेटी-बेटी नमहर हएत तँ काजक मदद अहूँके आ हमरो करत। ताबे कोनो तरहे दिन खेपु आ हमहूँ सकताइ छी तखन दुनू गोरे कमाएब। तइले किए मन छोटि करै छी।”

दिनो बढल आ बेटी-बेटी बढि सियान भऽ गेल। रबिया विचार केलक जे पहिने बेटीक विआह कऽ लेब पछाइत बेटाक विआह करब। किए तँ बेटीक विआहमे दान-दहेज लगत। जँ पहिने बेटाक विआह करब तँ बेटीक विआह बेरमे बेटा-पुतोहु अरोगा करत।

रबियाक बेटी अडहुलिया बड सुनर, चतुर आ काजमे कुशल अछि। गामो-समाजक लोक अडहुलियाके देख सराहैए। बगलेक गामक धनिक लाल बाबू पताका त बेकती छैथ। ओ अपन बेटा लेल अडहुलियाक हाथ माँगि खातिर रबियाक घर पहुँचला। रबिया बाजल-

“हम गरीब छी, अहा धनीक। हम केना अहामे सकब जे अहाक बेटासँ अपन बेटीके विआहब।”

मुदा धनिक लाल बाबू अपन घरमे कुशल गृहणीक अत्यन्त जररी बुझि आ सुनर कन्या देख, सोचैत-विचारैत रबियाके कहलक-

“देखू रबि, सम्बन्ध दिलक मिलानीसँ होइए धनसँ नहि। हमरा अहूँ किछो नै देब। मात कुल लक्ष्मीसन कन्या खुशी-खुशी देब बाकी सभ काज हम समझब। अहाक कोनो खर्च नै करए पडत। हम अपना बेटा आ परिवारमे सभके समझा-बुझा लेब।”

रबिया सभ बात सुनि मने-मन सोचलक धनिकलाल बाबूक विचार उतम छैन। हमरा नै कोनो खर्च हएत, हमर बेटी सुखी घर जाएत। तहि कममे गप-सप्प चलिते रहए कि धरक बनल अडहुलिया

हाथक सिक्किष जलखै आ चाह भेल। रक्मया उक्क आँगन जा कऽ पती आ बेसिँ विचावर दरब् जापर आक्म धक्मकलाल बाबूसँ बाजल-

“देखू, हम अपनेक पक्मष । राखलौ। शादीक वस्ता मॉजूर करै छी मुदा हमरो इ् जत अहा राखब।”

जखने क्मआहक बात गामक लोक सुनलक तँ दाते औंगारी काएि लगल। कयो कहए जे क्मआह केना हेतै, कएक तँ अमीरी-गरीबीमे बड फकमहोइ छइ। मुदा अक्मक लोकक सोच रहै जे अक्कना सम्बन्ध अक्मक लोक करत तखन ने ऊँच-नीचक खाक्म मेएित आ समाजसँ दहेज पथाक अन्त हएत। कछु लोक तँ परोकेमे विरोध करए मुदा गामक अक्मक लोक पसन अक्छ जे गरीबक बेीक क्मआह नीक घर-बर आ पक्मवा त पक्षिरमे भऽ रहल अक्छ।

रक्मया बेीक क्मआहक तैयारीमे जुवि गेल। मुदा सोचैत रहए दहेज ने नै क्कअ पडत, तैयो तँ बेीक क्मआह आ विदाइ करबामे बहुतो समानक जर रत पडबे करत कने। बक्मयाती आ कुिम सबहक मान-मयादा, खान-पानक लेल र पैआक इॅजाम करैये पडत कने।

रक्मयाक कछु खेत पक्कने भरना लगल छल आ शेर जे पाच कटा बँचल छेलै ओहो भरना लगा अपन बेीक क्मआहक काज सभ क्मक्ल करए लगल।

क्मआहक क्कन बक्मयाती समयपर पहुँचल। गामक लोक सभ आ उपक्मथत कुिम सभ क्मक्ल बक्मयातीक सिगत करए लगल। नाश्ता-पाक्म, चाहक पछाइत िमान रीक्त-रेबाजसँ दुला-दुक्लनक बरमाला भेल। दुला-दुक्लनक जोडी देखैले गामक लोक उमैड पडल। सभ मने-मन राम-सीता सन जोडीके अक्मसरीद देलक। क्मआहक काज शुर भेल आ बक्मयाती-सबहक भोजनक क्मजौ भेल।

क्मआहक काज सम्पन्न भेला पछाइत रक्मया बेीक विदाइमे लवा

गेल। बेटी आइ नैहरसँ सासुर जेती तँए धनकर भार-दौर बरदगडीपर साठि आ दोसर गडीपर पलंग, कुर्सी, अलमारी, पीढ़िया, आलमारीक संग अनेकानेक चीज-वस्तु लादि बान्हि तैयार केलक। तेसर सम्फनीबला गडीपर ओहार दऽ दुलहा-दुलहिनक विदाइ कऽ रविया अपन समधी- धनिकलाल बाबूक देहपर साल ओढा कऽ गला-सँ-गला मिलल आ बाजल-

“समधी बाबू, अडहुलिया आब हमर बेटी नहि, आब अहाक छी। हम जे सकलौ से पुरा केलौ। कुल लक्ष्मी अहाक देलौ।”

धनिक लाल बाबू रवियाक धैरज बान्हैत चिन देलखिन-

“अहाक बेटी आब हमर इज्जत आ लक्ष्मी छी। हमरा रहैत कोनो तरहक कष्ट नै हएत।”

अडहुलिया अपन सासुर पहुँच कऽ खूब खुशीसँ रहए लगली। कुशलतासँ सासु-ससुर आ पतिक सेवा, घरक काज, सुन्दर विचार आ बेहिार देख सभ कहए जे एहेन पुतोहु भगावान सभके देथुन जे सबहक घर स्वर्ग बनल रहत।

अडहुलियाक कमी रवियाक घरमे हुअ लगल। घरक काज आ ऊपरसँ मजदूरियो करबाक चिन्ता रवियाके बढ़ि गेल। काजक भारसँ रविया बेमार पड़ि गेल। रविया विचार केलक जे बेटा- दुखनाक बिआह कऽ लइ छी। पुतोहु घरक काज करती, तइसँ पतीक काजक भार सेहो कमि जाएत आ किछु आराम सेहो भेटत। मुदा पुतोहु अपने बेटी सन काजुल बेहिारी आ सुनर करब।

एक दिन रविया सनेश नेने बेटीसँ भेट-मुलाकात करैले जाइत रहए। रस्तामे सोचबो करए जे समैधसँ बेटाक बिआहक चर्चा करब।

समैधक घर पहुँच बेटीसँ भेट कए समैध लग रविया बैसल। गप-सप्पक क्रममे रविया अपन बेटाक बिआहक चर्चा केलक । समैध

बजला-

“हमरा गामेमे पुबकरया ि‍लमे हमर पुरान बमत रघुनीजी छैथ। हुनकर बेि‍ी बुक्धया बड सुनर, बड काजुल आ सुशील सेहो अक्छ। जखन अहा अपना बेि‍िक बाआह केतौ करब तइसँ नीक रघुनीजीक बेि‍ीसँ कर । दुनू गोरे घुमैत-वफरैत चलू हम बमतसँ भेि‍ क ऽ लेब आ बाआहक चचमसेहो करब।”

ि‍हलैत दुनू समैध रघुनीजीक ि‍वरपर पहुँचला। चाह पीबैक कममे बुक्धयाक बाआहक चचमभेल। रघुनीजी बजला-

“धक्नकलाल बाबू, बुक्धया कोनो हमरेि‍ बेि‍ी छी आ अहाक नक्ह छी। जेतए बक्ढया हुअए, हमरो वि‍चार रहत। हमरा-अहामे फके की अक्छ। मुदा एकि‍ बातक क्धयान राखए पडत, हम गरीब छी गरीबे कुि‍ुम करब। कएक तँ गरीब-अमीरमे वि‍चार आ बेि‍हारमे फकम होइत अक्छ।”

तखने रबाया लडकी देखबाक इच्छा व्यक्त केलक। तैपर रघुनीजी अपन बेि‍ीके बजा देखौलक आ बाजल-

“इहए छी हमर बेि‍ी- बुक्धया, बजा-भुका क ऽ देख क्लअ।”

रबायाके लडकी पक्सन भ ऽ गेल।

रघुनीजी बेि‍ीके कहलक-

“बेि‍ी, तूँ पक्हने अपन हाथक बनल जलखै आ चाह नेने आबह, पछाइत खैनी-सुपारी सेहो नेने अबाहह।”

रघुनीजी बमक्थलाक रक्त-रेबाजसँ नि‍का कुि‍ुमके सम्मान करैत बेि‍ीक हाथसँ बनल जलखै-चाह करा खैनी-सुपारी द ऽ बाआहक क्दन बासक्धत करबाक लेल गामक पक्मत दीनानाथ जीक घर पहुँचल। पक्मीजी शुभ बाआहक मुहुतमपतामे देख बजला-

“बाआह पाँचमीक क्दन बड शुभ लगन अक्छ। मुदा एकि‍ वि‍चार

मानी तँ कहब।”

रघुनीजी बजला-

“बाजू ने पण्डीजी! अपनेक विचार कोनो कि गलत थोडे हएत।”

पण्डीजी बजला-

“कम खर्चमे मन्दिरमे बिआह कर। की झेल-झमिरमक लमिरममे पडब।”

रघुनीजी रबिया आ धनिकलाल बाबू पण्डीजीक विचार मानि गामक मन्दिरमे बिआहक कार्यक्रम सम्पन्न करबाक निर्णय लेलैन। बिआह पंचमी दिन गामक मन्दिरमे मिथिलाक रीति-रेबाजसँ बिआह सम्पन्न भेल।

बेटि-बेटीक बिआह भेने रबियाके खुशी तँ भेल मुदा चैन नहि भेल। खेत भरना लगने घर-खर्चमपुरॉबे ने करइ। खेतो कम गेलै आ मजूरी सेहो। ऊपरसँ कपडा-दमिइक खर्चकेना चलत। ऐ चिन्तामे रबिया दिन-राति मुमल रहै छल। एक दिन बेमिसँ विचार करैत रबिया बाजल-

“गामक लोक सभ पॉजाब-दिल्ली कमाइले जाइए, चलह ओकरे सँगे दुनू बापुत अपनो सभ बाहरे कमाएब। घरमे दुनू सासु-पुतोहु मिल काज करती। बाहरी कमाइसँ भरनाबला खेतो छोडा लेब आ कर्जो चुका लेब।”

दुखना अपन पिताक विचारसँ सहमत भेल। दुनू बापुत गामक सँगेक सँग पॉजाब चलि गेल।

रबिया दुनू बापुत पहिल बेर पॉजाब आएल। ऐठामक मितारिण, जलमियु आ रीति-रेबाजसँ परिचित नइ अछि तँए ओ सँगीक सँगे काज करए लगल। लोक घर छोडि परदेश ऐ लेल अबैए जे कम

समयमे बेसी मजूरी कऽ बेसी रपैआ कमा घर भेजब।

दुनू बापूत रक्षाया कमाइ खाकऽ दिन-राति परिश्रम करए लगल। पंजाबमे धन-रोपनी करए लगल। धनरोपनीमे दुनू बापुत कुशल, कीलाक-कीला धनरोपनी कऽ खूब कमेलक। मुदा पंजाबक भीरण गरमी, एक दिन कीलेमे रक्षाया बेहोश भऽ खसि गेल। दुखना अपना पिताके खेतमे खसल देख झट-दे उठा कनहापर लादि मा् रिक व्लनीकपर पहुँचल। म ् रि दू-चारि ि इंजे् शन आ कतेको रॉक िबलेि देलखिन आ दुखनाके बजा समझाबैत कहलखिन-

“देखू अहाक पिताके कालाजार बोखार भेल अछि। हिनका एक मास धरि इलाज चलत, अराम करत आ समयपर भोजन-दािइ खा सुतत। खूनक कमी सेहो अछि।”

म ् रिक बात सुनिते दुखनाक होश उड़ि गेल। मुदा कोहुरजसँ मास भरि इलाज पिताक करौलक। जे कमेलहा रपैआ छल से सभिि खचमभऽ गेलइ। छुच्छे हाथे आगू इलाज केना चलत। सोचमे दुखना पड़ि गेल, असगर कमाएब कि पिताक सेिि करब। दुखनाक परेशानी देख मने-मन रक्षाया सोचए जे गाम-घरमे जे कियो बेमार पडैए तँ घरक सभ सदस्य मिलि सेिि करैए आ गामोक लोक आबि-आबि हाल-चाल पुछैए। दुख-सुखमे सहयोग करैए। मुदा परदेशमे सभ अपन-अपन कमाइक पाछू लगल रहैए। संगी सभ सेहो हाल-चाल नै पुछैए, मदैतक तँ बाते दूर। मदैत करत कोए। ऐठामक लोक कोनो हमर गामक छी आकि दियाद-िदि छी जे दू-चारि छेबो करए ओ अपन-अपन मजूरीमे लागल रहैए, हमरा लग कोए औत।

रक्षाया बेिकि कहलक-

“बौआ, ऐठामसँ घुमि अपन गाम चलह। अपना गाम-घरक जिनगीमे जे दया-धमम, पेम-भाि आ सहयोग करैक विचार अछि से एतए नहि अछि। रहल कमाइ-खाइक बात तँ अपने गाममे एतेक

मेहनत-मजूरी करब तँ ऐठामसँ बेसीए हएत। अपन गाम परदेश छोड़ि लोक आन परदेश आबि कऽ दिन-राति मेहनत कऽ ओतुका विकास करैए मुदा एतेक मेहनत जखन अपने देश आ अपने गाममे करत तँ अपनो देश आ गामक विकास हएत किने। घुमि गाम चलु बौआ, अपने घर रहि सभ मिलि मेहनतसँ गाम आ देशक विकास करब। ई बात बहुत पहिने माक कहने छला- 'घरक आधा रोटी नीक आ बाहरक सौस रोटी नहि नीक।"

नन्द विलास राय

लघुकथा- भयानक भिन्सर दही-चूरा

हरिरा गामसँ दू-अढ़ाइ किलोमीटर दूरीपर एकटा गाम अछि झिौरा। हरिरा सबहक डीलरक घर झिौरा गाममे छैन। ह, ह वएह डीलर जेतए मट्टिया तेल आ चाउर-गहुम भेटैत अछि। डीलरेक घरक बगलमे एकटा शिक्षक छथिन मालोक वाबू। भगवानक कृपासँ पत्नियो शिक्षिका छथिन। घरोक सुखी सम्पन्न लोक छैथ। मालोकजी आ हमे माध्यमिक कौलेजमे इन्टरमे संगे पढ़ैत रही। मुदा मालोकजी सतकी ई केलैथ जे इन्टरक पढ़ाइ खतम केलाक बाद छोमे राँची जा ओतएस टीचरस ट्रेनिंग कऽ लेला। बादमे बी.ए. धरि सेहो पढ़ला। तए ओ शिक्षक छैथ। हम ईम्हरसँ ट्रेनिंग नै केलौ तए पढ़ि-लिखि कऽ बकरी चरबै छी। अखनो मालोकजी जेतए-केतौ भेटै छैथ त कुशल-क्षेम हेबै करैए। विचषभासिक गप छी। हम आ हरिर मदयादीक एकटा भैयारी- दिनजी राशन आनए डीलर ओतए गेल रही। दिन भाइ सेहो शिक्षक छैथ आ जइ विद्यालयमे मालोकजीक पती शिक्षिका छथिन ओही विद्यालयमे दिनो भाय छैथ। हम आ दिन भाय डीलर ओइठाम बेचपर बैसल रही, डीलर रजिष्टरमे आ कार्डमे राशनक खानापूरी कऽ रहल छला। तखने मालोकजीक बेटा दिन भायके बजा कऽ लऽ गेलैन। हरिरा नै बजेलैथ तए हम डीलरे ओतए बैसल रहलौ। जखन राशन लेल भऽ गेल त मालोकजी दरबज्जा दिस देखए गेलौ जे दिन भाय की करै छैथ। हम सकिपेर स कहलखिन-

"दिन भाय, गामपिर नै जाएब?"

दिन भाय कहलैथ-

"आउ-आउ चलै छी।"

मिलालोकजी सोहे दरबज्जेपर बैसल रहैथ। ओ कहला-

"पाँचे मिनिट आओर रूकियौ दिनजी चाह पीने अबै छैथ।"

तखने देखलिऐ जे मिलालोक जीक बेटा दू कप चाह नेने आएल। एक कप चाह मिलालोकजीक हाथमे देलकैन आ दोसर कप दिन भायके। मुदा मिलालोकजी हमरा चाह पीबैले आग्रह नै केलैन। हम चोटे डीलरक दरबज्जापर आबि बेंचपर बैस गेलौं।

हम सोचए लगलौं, दिन भाय मिलनसार छैथ तए हुनका बजा कऽ मिलालोकजी चाह पियौलकैन आ हम साधारण किसान छी तए हमरा बैसबाको लेल आग्रह नै केलैन। जखन कि मिलालोकजी हमर संगीए छैथ...!

हमरा मिलालोकजीक बेवहारक बड़ दुख भेल। हम सोचए लगलौं- एकर बदला मिलालोकजीस केना लेल जाए। हम बहुत सोच-विचार केलौं।

पनरहे दिनक बाद मिलालोकजी दिन भायके खोजए हुनका दरबजपर गेलाह मुदा दिन भाय दुनू परानी नेपाल गेल छला। मिलालोकजी जखन आपस भेला त हमरा देखला त मिटर साइकिल रोकि कऽ दिन भाइक सम्बन्धमे पुछए लगला। हम सोचलौं आइ गर अबैछ, किए ने ओइ दिनक बदला सधा ली। हम बड़ आदरस मिलालोकजीके अपना दलानपर लऽ जा कऽ बैसौलयैन आ कहलयैन-

"मिस्टर साहैब, कनेक रूकू आँगनस भेल अबै छी।"

आँगन जा पतीके कहलयैन-

"कनी दू कप नीक चाह बनाऊ। बुच्ची केतए अछि?"

पती इशारास पुबरिया घर देखा कहलैन बैस कऽ पढ़ैए। बेटी मैट्रिकक विद्यार्थी छी। ताबए ओ लगमे आबि कहलक-

"की बाबूजी?"

एकटा पचसटकही दैत एकटा मिक्षकाजी भुम्जयाक पैकेट आ एकटा नकिीन मिास्कुटक मिडब्बा आनए कहमलाऐ। पुन: पतीके कहलयैन-

"जखन बुच्ची दोकानस भुम्जया आ मिास्कुट आमिन कऽ देत त दूटा त्लेटर्मि भुम्जया आ मिास्कुट दऽ दरबज्जापर पठाएब।"

हमि दरबज्जापर चमिल गेलौ। एतए मिालोकजीस दुमिनयादारीक गप-सप्प करए लगलौ। कमिकेकालक बाद हरि बेटी दूटा त्लेटर्मि भुम्जया आ नकिीन मिास्कुट दऽ गेल। हमि अपना बेटीस कहमलाऐ-

"बुच्ची चाचाके पणामि करहुन।"

हरि बेटी मिालोकजीके पणामि कऽ ऑगन चल गेल। ऑगनस एक जग पामिन आ दूटा गिलास आमिन टेबुलपर रमिख गेल। हमि मिालोकजीके एकटा त्लेट बढ़बैत कहलयैन-

"मिलअ मिास्टर साहैब, कनेक पामिन पीब मिलअ। पछाइत चाह पीब।"

तैपर मिालोकजी बजला-

"चाह त गामिपर स पीब कऽ आएल रही।"

हमि कहलयैन-

"चाहो कोनो पेटभरा चीज छी। जे एकबेर भमिरपेट पी लोलौ त फेर ओ समियेपर पीअब।"

मिालोकजी मिकछु लजाइत त्लेट हाथमि लेलैथ आ खाए लगला।

जाबे हमि दुनू गोरे भुम्जया-मिास्कुट खा पामिन पीलौ तैबीच बेटी एकटा मिमि दू कप चाह दऽ गेल। हमि मिमि स एकटा कप चाह उठबैत मिालोकजी मिदस बढ़बैत बजलौ-

"मिलअ मिास्टर साहैब, चाह पीबू।"

ओ फेर लजाइते चाह लेला। चाहक बाद हरि बेटी पान दऽ गेल। दुनू गोरे पान खेलौं। हमि म्तालोकजीस कहलयैन-

"मिस्टर साहैब हमि त कहब जे जलखै खा कऽ जइतौ त नीक होइतए।"

तैपर म्तालोकजी बजला-

"जलखै, चाह, पान सभ भऽ गेल आब कोन जलखै हएत।"

ई कहैत ओ फटफम्टया स्टाटषकऽ चम्ल गेला।

तीन म्दनक बाद जखन मिदिन भाय म्तालोकजीके भेटलम्खन त म्तालोकजी मिदिन भायके सभ बात बतौलम्खन आ कहलम्खन-

"हमि नन्दजी लग बमि लम्फजत छी। ओइ म्दन अहाँके डीलर ओइठामि सि बजा कऽ चाह म्पायेलौ मिदा नन्दजीके बैसबाको लेल आगह नै केम्लऐन। तेकरे बदला नन्दजी हमिरा जलखै आ चाह-पान करा कऽ लेलैन। एकरे कहै छै 'म्सयानक मिम्र दही-चूरा।"

लघुकथा- दहेज पाप छी

भोरका उखराहा। सयि नअ बजैत। लालबाबूक दलान बेस साफ-सुथरि भेल रहए। चौकीपर नवका जाजीि म्बिछौल रहए आ नबाक खोल लागल म्सरि सेहो लगौल रहए। दलानक म्माच्चाँि स्मानी चौकीपर एक बाल्टीन जल आ एकटा लोटा सेहो राखल रहइ। दलानक ओसारापर पाँचटा कुसी सेहो राखल रहै आ दलानक रभीतरि एकटा बिक टेबुल आ टेबुलक दुनू भाग दू-दूटा कुसी लागल रहइ। लालबबूक नजैर बेर-बेर देबालि टाँगल घिपिर चम्म्ल जाइत रहैन। ओ सोचै छला- आठे बजेक नाओं चुनचुन बाबू कहने छला आ अखन नअ बम्ज रहल अम्छ। अखैन तक ओ सभ नै एला हेन, पता नम्ह की भऽ गेलइ। म्कयो दोसर लिकीबला नै त उपरौझ कऽ देलक...। लालबाबू ई सभ सोम्चते छलाक म्क एकटा अपाची िटर साइम्कल आम्ब दलानक आगाँि र कल। ओइ िटरसाइम्कलस चुनचुन बाबू आ एक गोरे आरो उतरला।

लालबाबू बजला-

"आएल जाऊ, आएल जाऊ, हिरा त म्चन्ता भऽ गेल रहए जे एतेक देरी म्कएक भऽ गेलैन।"

तैपर चुनचुन बाबू हाथ जोिंत बजला-

"नम्स्कार..!

लालबाबू, नम्स्कारकजबाब दैत बजला-

"नम्स्कार!"

चुनचुन बाबू अपन संगबे म्दस इशारा करैत कहलम्खन-

"ई हिर मित छैथ, गोपी बाबू। उ. म्बा. बाबूबरहीस सेवा म्नवृत

पधानाध्यापक, म्हनको घर िआहीए छैन।”

लालबाबू गोपी बाबूके हाथ जोिेत बजला-

“अहो भाग्य!नमस्कार-नमस्कार..!”

गोपी बाबू बजला-

“नमस्कार।”

लालबाबू बजला-

“होउ, पएर-हाथ धोइ जाइ जाऊ।”

दुनू गोरे हाथ-पएर धो कऽ कुसीपर बैसला। चुनचुन बाबू बजला-

“म्कए देरी भऽ गेल से नै बुझम्लएे।”

तैपर लालबाबू बजला-

“कहब तखन ने बुझब। हिरा त होइत रहए जे गाि नै त रस्ताि खराप भऽ गेलैन।”

चुनचुन बाबू बजला-

“की पुछै छी। तंग भऽ गेलौ हेन। एकटा ने एकटा बरतुहार दरबज्जापर अम्बते रहै छैथ। आजुके गप म्लअ, ठीक साढ़े सात बजे म्बदा होइले गाि म्नकाललौ म्क नेहराबला एकटा बुलेट िटर साइम्कलस आम्ब गेला। कुटिेती केनाइ त बादक बात भेल ुिदा जे दरबज्जापर म्कयो जाम्न-कुटुि आम्ब जेता त हुनकर स्वागत-बात नै करबैन सेहो केहेन एहत। तहूि अपना सभ मम्िथलावासी छी। तए देरी भऽ गेल।”

ई गप-सप्प होइते रहए तखने लालबाबूक भातीज रोम्हत दूटा प्लेटि भुजलाहा काजू, म्कसमम्स, िनका आ नुनगर म्बस्कुट अभ्यागतके लऽ कऽ आएल। लालबाबू आगह केलम्खन। तीनू गोरे दलानक भीतर जा कऽ बैसला। रोम्हत दुनू प्लेट लऽ पाम्न आनए अंगना चल गेल।

लालबाबू टेबुलपर स त्लेट उठा लालबाबू आ गोपी बाबूक हाथि दैत बजला-

“लेल जाए, कनेक पाम्न पीब लेल जाए।”

रोम्हत दूटा मालास आ एक जग पाम्न टेबुलपर रम्ख गेल। जाबे दुनू गोरे याम्न चुनचुन बाबू आ गोपी बाबू काजू-म्कसमिस खेलैथ ताबेि रोम्हत तीन कप कॉफी लऽ कऽ आम्ब गेल। कॉफी पीलाक दसे-पनरह मिनिटक पछाइत फलक त्लेट आएल जइि सेब, सितोला, अनारक दना, अंगूर आ पच-पच छीिी िलभोग केरा रहए। फलहारक बाद मिठाइ आ निकीनक त्लेट नेने रोम्हत पहुचल। त्लेट देख चुनचुन बाबू बजला-

“फलेस त पेट भम्र गेल आब मिठाइ कोन पेटि खाएब।”

तैपर नूनू बाबू बजला-

“अहू हद करै छी, फलोस केतौ पेट भरलै हे। लाबह हौ रोम्हत, मिठाइ आ निकीनबला त्लेट दहुन सबहक हाथि।”

रोम्हत नूनूबाबू आ गोपी बाबूके आगाँ मिठाइ आ निकीनबला त्लेट रम्ख देलक। मिठाइि अिलिक रसभरी, काजूक वफी, शुद खोआक पेरा, नाम्रयलक लडडू आ निकीनि म्बकानेरी भुम्जया छल। नाश्ताक बाद छाििी देल चाह तीनू गोरे पीलैन। चाह पीला पछाइत चुनचुन बाबू बजला-

“आब कन्याके बजौल जाए। म्कएक त हििरा लोकैनके आपस गाािी जेबाक अम्छ।”

तैपर लालबाबू बजला-

“म्कएक, ऐठाि घर नै छै कीजे एतेक औगुताइ छी।”

चुनचुन बाबू बजला-

“से त छैहे। ज कुटिीती भऽ जाएत त केतेको म्दन रहब।”

लालबाबू बजला-

"ज कुटैती करऽ चाहब त मकएक ने हएत।"

चुनचुन बाबू-

"दस कोसस जे एतेक हरान भऽ कऽ एलौ हेन से त कुटैतीए करए लेल ने, आमक अहाँक गाि देखए।"

ई गप होइते रहए मक वीणा एकटा तश्तरीि पान, सुपारी, इलायची, जदा आ तुलसी पती लऽ एली। ओ तश्तरी टेबुलपर रमख सभके पएर छुमब गोि लगली। गोि लगलाक बाद सबहक आगाँ पानक तश्तरी बढ़ौली। सभ गोरे पान-सुपारी इलायची खाइ गेला। वीणाके एकटा कुसीपर बैसौल गेल। चुनचुन बाबू अपन मति गोपी बाबू मदस तकला। गोपी बाबू चुनचुन बाबूक इशारा सझि गेला।

गोपी बाबू वीणास पुछलमखन-

"बुच्ची अहाँ की संजा छी?"

वीणा बजली-

"वीणा।"

गोपीबाबू-

"बाबूजीक नाओं?"

वीणा-

"शी लालबाबू राय।"

गोपी बाबू-

"कोन क्लासि पढ़ै छी?"

वीणा-

"बी.ए. फजइनलि।"

गोपी बाबू-

"कोन व्यवरयस आनसषकऽ रहल छी?"

वीणा-

"गृह व्यवजान व्यवरयस।"

गोपी बाबू-

चुनचुन बाबू व्यदस ताकए लगला। चुनचुन बाबू वीणास कहलव्यखन-

"जाऊ बुच्ची। अहाँ ऑंगन जाऊ।"

वीणा उव्यठ कऽ ऑंगन चल गेली। तैबीच चुनचुन बाबू बजला-

"लकिी हरिा पसन्द अव्यछ। लकिी देखबा, सुनबाि सुनैर आ सुशील अव्यछ।"

तैपर गोपी बाबू बजला-

"एकरा के काटत।"

लालबाबू पुछलव्यखन-

"तखन आगाँ?"

गोपी बाबू बजला-

"देव्यखयौ िगिरौनीबला बीस लाख, एकटा बुलेट ििटर साइव्यकल आ पाँच भव्यर सोन दइले तैर ाार छला। ाुदा लकिीक ऑंव्यख कुइर छेलै तए कुटििती नै भेलइ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"यो व्यवेकके इंजीव्यनयर बनेबाि हरिा बारह लाख टका खचषभेल अव्यछ। अखन ओ रेलबेि इंजीव्यनयर अव्यछ आ आइ.एस.क तैयारी सेहो कऽ रहल अव्यछ। व्यालखबाबिला पच्चीस लाख टाक नगद, एकटा अपाची गािी आ सात भव्यर सोनाक अलाबे व्यिज, कूलर, गोदरेज, वाव्यसंग िशीन, टी.भी सभ दइ लेल तैयार छला ाुदा लकिीक कद

छोट छेलइ। तए हिरा लिकी पम्सन नै भेल।”

गोपी बाबू आ चुनचुन बाबूक बात सुम्न लालबाबू सोचि पमि गेला। ओ सोचए लगला जे ई सभ कहै छम्थन तइ म्हसाबे त कितीि तीस लाख टकास ऊपरे खचषहएत, िदा अपना त दसो लाखक सकरता नइ अम्छ।

लालबाबूके चुप देख गोपी बाबू बजला-

“आब अहू त म्कछ बम्जयौ। एना चुप रहलास काज चलत?”

तैपर लालबाबू बजला-

“यौ िस्टर साहेब, चुनचुन बाबूके बुझले छैन जे हि साधारण म्कसान छी। चम्टया सभके टीशन सेहो पढ़बैत छी। बेआ हिर एकटा छोट-कीण दवाइ देकान चलबैत अम्छ। हिरा त दसो लाखक सकरता नै अम्छ तए चुप छी।”

चुनचुन बाबू बजला-

“तखन कुटिती केना हएत। ज इंजीम्नयर लिकास बेटीक म्बआह करबै तहूि सरकारी जॉवबला, त तीस लाखस ऊपरे खचष करए पित।”

लालबाबू बजला-

“यौ सरकार, हि दस लाखस बेसी खचषकरबाि अक्ि छी। अपने लोकैन जे हिरा दरबजजापर एलौ तइले अपने लोकैनके धैनवाद।”

चुनचुन बाबू बजला-

“हि तीन म्दनक सयि दइ छी, फोन नम्बर लऽ म्लअ। अपन सभ पम्रवार म्बचाम्र लेब। ज अपनो म्बचार भऽ जाएत तखन हिरा फोन कऽ देब। अहाँक कन्या सुनैर आ सुशल अम्छ तए तीन म्दन सयि दऽ रहल छी, नम्ह त हिरा बेटापर बरतुहारक लाइन लागल अम्छ।

”

फोन नम्बर मिलखबए लगलखिन, लालबाबू अनिच्छुक भावस फोन नम्बर मिलखिव लेला।

वरतुहार सभ गेला। लालबाबू उदास भऽ गेला। ओ खेनाइयो ने खेलैन। ऐगला दिन भोरिं लालबाबूक बेटाक संगी विनय आएल। विनय मिाष्ठी बजारिं िबाइल रिपेयरिंगक दोकान खोलने अछि।

लालबाबूक िहक उदासी देख विनय पुछलकैन-

“काका, िन बि खसल देखै छी। की बात छिऐ। कािम जे वीणा बहिनके देखए बरतुहार सभ आएल छला से की भेल।”

लालबाबू सभ बात जे पैछला दिन चुनचुन बाबूक संगे भेल रहैन, विनयके कहलखिन।

तैपर विनय बाजल-

“अइ यौ काका, ओइ बरतुहार सभके ई नै बुझल छैन जे दहेज लेब-देब कानूनी अपराध छी। अखुनका जे नीतीशजीक सरकार अछि ओ त ऐ कानूनके कििइस पालन करबा रहल अछि। देखलेऐ नहि जे बाल-विवाह आ दहेजपथाक उनिलन हेतु 21 जनवरीके केहेन िनिव शृंखला बनल छेलइ।”

लालबाबू बजला-

“हौ बाबू, ई सभ देखाबटी बात छी। एकटा बात कहह ई जे 31 जनवरीके िनिव शृंखला बनल तइस की दहेज लेनाइ-देनाइ रुकि गेल आकि रुकि जाएत। देखने छेलहक िकने जे पैछला साल दार बन्दीपर केहेन िनिव शृंखला बनल रहइ, तए की दार बन भऽ गेल? सरकार दार बेचनाइ आ पीनाइपर पितबन्ध लगौलक िदा बनबैबला बनैबते अछि, बेचैबला बेचते अछि आ पीबैबला पीबते अछि। ह, आब ने खुलिल-खुलला बिकि ाए होइए आ ने लोक खुलिल-खुलला पीबे करैए।

चोरा-नुका कऽ बिकाि होइए आ चोरा-नुका कऽ लोक पीबैए।"

बिनय बाजल-

"पेपरि नै देखै छिऐ केतेक पीनिहार आ बेचनिहार जेल जाइत अछि। तेनाहिये दहेजो लेनिहार आ देनिहार जेल जाएत।"

लालबाबू बजला-

"हौ कहाँ कोनो दहेज लेबए-बला जेल गेल हेन। टुनटुन बाबूक बेटाक बिआहि एकटा स्कार्पियो गािी, दस लाख टका नगद, मिज, गोदरेजक अलाबे कनियाँक सभ जेबर लमियेबला देलकैन, कहाँ किछु भेलइ।"

बिनय बाजल-

"यौ काका, जखन किओ पशासन ओतए शिकायत करत तखन ने कोनो कारबाई हएत, नहि त की हएत?"

लालबाबू बजला-

"पशासन ओतए जे लोक शिकायत करत तइले पुख्ता सबूतक जररत हेतै, तइि शिकायत केनिहारके बेसी फरीशानी छइ। लाक बेटीक बिआह करत आकि केश-फौदारी लिति। केहेन भष शासन बेवस्था अछि से नहि देखै छहक। एकटा गप आओर कहै छिअ। हिरा िाि गािि एकटा पंचायत सेवक अपना बेटीक बिआह केने रहए, तेहेन भव्य पण्डाल लगौने रहए जे आन-आन गाकि लोक पण्डाल देख आएल छेलइ। बी.डी.ओ, सी.ओ., एि.ओ., दरोगा आओर केतेक ने केतेक हाकिि सभ सेहो बिआहि आएल रहैथ। खूब दार आ िूगाक िािु चलल। सुनै छिऐ ओ गाि सेवक चारिटा पंचायतक पंचायती सचिवक पभारि अछि।"

बिनय बाजल-

“से त ठीके कहै म्छिऐ काका। िदा बेम्टयोबलाके त म्किछ म्फरीशानी उठबए पतिै तखने ने कोनो रसता म्नाकलतै। अच्छा ई कहू, िआहीस जे बरतुहार आएल छला, हुनका सभके लिकी पम्सन भऽ गेल छेलैन िदा दहेजक चलते कुटिैती नै भऽ रहल अम्छ। सएह ने?”

लालबाबू बजला-

“ह, सएह बात अम्छ।”

म्बनय पुछलकैन-

“अच्छा ई कहू जे अहाँ िआही वीणा बम्हनक म्बआह करए चाहै छी?”

लालबाबू बजला-

“के एहेन अभागल हएत जे रेलबे नौकरी करए बला लिकिस बेटीक म्बआह नै करत, तहूि इंजीम्नयर लिकाक बाप म्िगी कौलेजक पोफेसर।”

तैपर म्बनय बाजल-

“काका अहाँ म्चन्ता जुम्न कर । वीणा बम्हनक म्बआह ओही लिकास हेतइ। हि जेना कहै छी तेना कर ।”

ई कम्ह म्बनय लालबाबूके म्किछ सझ्झाबए लगलौन िदा बि कि जोरस जइस तेसर म्कयो नै सुनए।

लालबाबू िआहीबला चुनचुन बाबूके फोन पर कहलम्खन-

“काम्ि पात: आठ बजे हि आ एक गोरे आर म्बआहक गप-सत्प करए िआही आम्ब रहल छी।”

चुनचुन बाबू बजला-

“स्नागत अम्छ, आऊ। िदा बेवस्था तीस लाखस ऊपरेक राखब।”

लालबाबू बजला-

"अच्छा-अच्छा ठीक छइ।"

देसर दिन लालबाबू आ विनय िटर साइकिलस ठीक सबा आठ बजे चुनचुन बाबूक दरबज्जापर पहुच गेला। पहुचते देरी चाह-नास्तास स्वागत भेलैन। गोपी बाबू सेहो रहैथ। लालबाबू विनयक परिचय करबैत कहलखिन-

"ई हिरा बेटाक संगी छैथ। यएह कहला जे लिका योग्य आ इंग्लायड छैथ, तए ककदु बेसियो खचषकरए पिए तैयो कुटिती कऽ लिअ।"

तैपर गोपीबाबू बजला-

"ठीके ने कहलैन। यौ सरकारी जॉवबला लिका भेटब बि िश्किल छइ। तहूिं रेलबेिं इंजीनियर।"

विनय चुनचुन बाबू आ गोपीबाबूके हाथ जोिम कऽ पणाि केलकैन आ कहलकैन-

"दहेजपर खुलेआि बात कहनाइ नीक निह, कानून बि खराप छइ। तूंए दलानक भीतरि चािरये गोरेिं गप हेबा चाही।"

चुनचुन बाबू बजला-

"ठीक छइ। चलू दलानक भीतरे। भीतरेिं चािरये गोरेिं गप करब।
"

विनय बाजल-

"हि कनेक लघुशंका केने अबै छी ताबेत अपने सभ दलानक भीतर बैस कऽ गप-सप्प कर ।"

चुनचुनबाबू दलानक पाछाँ शौचालय देखबैत कहलखिन-

"ओही लेटरीनि चल जाउ।"

म्वानय शौचालयि जा ाबाइलि टपरेकडषऑन कऽ सटष्क उपरका जेबीि रम्ख लेलक आ पेशाब कऽ दलानक भीतर आम्व गेल। म्वानयके अम्बते लालबाबू बजला-

"आबह, तोहरे दुआरे गप-सत्प बन छल।"

म्वानय कुसीपर बैसैत चुनचुन बाबूके पुछलकैन-

"अपनेके लकिी पसीन अम्छ म्कने?"

तैपर चुनचुन बाबू बजला-

"हरिा सोलहअनास बतीसअना लकिी पम्सन अम्छ।"

गोपीबाबू बजला-

"एहेन सुनैर आ सुशील कन्या पम्सन नै हेतैन त केहेन पम्सन हेतैन।"

म्वानय पुछलकैन-

"जखन लकिी पम्सन अम्छ तखन आगाँक बेवस्था बात की हेतइ?"

चुनचुन बाबू बजला-

"हि त फोनपर परसूए लालबाबूके कम्ह देने रम्हऐन जे कतिीि तीस लाखस ऊपरे खचषहएत।"

म्वानय पुछलकैन-

"तीस लाखि केना की, से कनी फम्रछा म्लअ।"

चुनचुनबाबू-

"देखू, हरि बेटा रेलबेि इंजीम्नयर अम्छ। सरकार तरफस ओकरा चाम्र चका गाि भेटल छइ। तए बीस लाख टका नगद, कम्नयाँक सभ जेबर, कतिीि एगारह भम्र सोन, एकटा अपाची ाटिर साइम्कल, फनीचर, सोफा, गोदरेजक आलािरा, वाम्संग ाशीन, ाजि आ टी.भी. म्दयौ आ बम्रयाती जतबेक कहबै तेतबेक आएब।"

लालबाबू बजला-

“अपनेक सभ ागि हरिा ाजूर अछि, ादा नगदीि पाँच लाख कि कऽ दियौ।”

चुनचुन बाबू बजला-

“पाँच लाख कि पाँच टका कि नै हएत। यौ ठाढ़ीबला पच्चीस लाख नगद आ एगारह भरि सोनाक अलाबे सभ सािन दइक पस्ताव लऽ कऽ कामि आएल रहैथ, लिकियो ए-वन छै, ादा हि अपनेके कहि देने रही तए ठाढ़ीबलास गप्पो ने केलौ।”

विनय कहलकैन-

“ठीक छै, अपने लिकाके बजा दियौन, औझका आठि दिन हि सभ लिकाके फलदान करब।”

गोपीबाबू पुछलकैन-

“आठि दिन कोन दिन पिै छइ।”

चुनचुन बाबू बजला-

“आठि दिन नअ तारीख आ सोि दिन पिै छइ। ठीक छै, हि रवियये दिन लिकाके ािगा लेब। अहाँ सोिके फलदान कऽ लेब। फलदानि आएब केतेक गोरे?”

तैपर लालबाबू बजला-

“यौ कुटुि नारायण, हि चेिबास खैर लुटाएब नीक नै बुझै छी। तए पाँचे गोरे आएब। अहू बेसी लाि-काफि नै जाएब। हि सभ सबेरे नअ बजे तक आएब आ पाँच बजे बेरि चल जाएब।”

गोपीबाबू बजला-

“एकदिउतिबात कहलिएऐ।”

तैपर लालबाबू बजला-

“जखन सभ बात भइये गेल तखन हरिा सभके मबादा कर । बहुत इन्तजािा-बात करए पति।”

गोपीबाबू कहलमखन-

“से त ठीके। बेटीबलाके बि इंतजाि करए पमिते छइ। चलू कुटिती नीक भेल। बेटी रानी बमन कऽ रहत।”

चुनचुन बाबू बजला-

“अच्छा खाना खा कऽ चामर बजे चल जाएब।”

तैपर मबानय कहलकैन-

“नमह, हरिा सभके मकछ जलखै करा मदअ, हि सभ चमल जाएब।”

सएह भेल। जलखै खा दुनू गोरे यानी मबानय आ लालबाबू मबादा भऽ गेला।

आइ नअ िचिषछी। चुनचुन बाबूक दरबज्जापर डी.जे बाजा िधुर स्वरि बमज रहल अमछ। दरबज्जापर चुनचुन बाबू, गोपीबाबू आ चामर-पाँच गोरे आर छमथन। कुटुि सभके खाइ वास्ते दस मकलो रहु िछक बेवस्थाक अलावे सुधा दुखक रसगुल्लाक ओमरयान सेहो कएल गेल अमछ। ऑंगनि गीतहामर सभ एकाएकी पहुच रहली हेन। सयि नअस साढ़े नअ बजल। घिी मदस ताकक चुनचुन बाबू बजला-

“नअए बजेक सयि लालबाबू देने रहैथ, साढ़े नअ बमज रहल अमछ िदा कोनो पता नमह छैन। अखन धमर त हुनका सभके पहुच जेबक चामहऐन..!”

तैपर गोपी बाबू बजला-

“एक-आध घन्टाक कोनो बात नमह, सभ मकयो अमबते हेता।”

गप-सत्प चमलते छल मक बाबूबरही थानाक बोलेरो गािी आमब कऽ

चुनचुन बाबूक दरबज्जापर रकल। गाीस थाना पभारी आ पुम्लस सभ उतम्रते छला म्कक एकटा स्कामपाश्रो गाी आम्ब कऽ सेहो ठाढ़ भेल। ओइ गाीि म्लखल रहए डी.एस.पी- धिुबनी। गाीस डी.एस.पी. साहैब उतरा, हुनका पाछा चाम्र-पाँचटा म्चतकबरा डेस पम्हरने शशस्त्त पुम्लस सेहो उतरला।

चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूके म्कछु सझिि नम्ह एलैन। डी.एस.पी. साहैब दलानि आम्ब कऽ पुछलम्खन-

"चुनचुनजीकौन है?"

चुनचुन बाबू हाथ जोिति बजला-

"सर, हिही छी चुनचुन राय। की सेवा कएल जाए?"

डी.एस.पी. साहैब कहलम्खन-

"आपको दहेज िगने के अपराधि मारफ्तार म्कया जाता है।"

आब त चुनचुन बाबूके काटू त खून नम्ह। गोपी बाबू भागैले रस्ता खोजए लगला। डी.एस.पी. साहैब पुछलम्खन-

"गोपीजी कौन है?"

गोपी बाबू हाथ जोिति कहलम्खन-

"सर, हि छी गोपी।"

डी.एस.पी. साहैब कहलम्खन-

"आपको भी मारफ्तार म्कया जाता है।"

डी.एस.पी. साहैब थाना पभारीके कहलम्खन-

"बिाबाबू, इन दोनो आदीके मारफ्तार कर गाीि बैठाइये।"

थाना पभारी पुम्लसके आदेश देलम्खन-

"इन दोनो आदी को हथकिी पहनाकर गाीि बैठाओ।"

पुलिसक गाड़ी देख अगनाक लाबा-फरही हुअ लगल। विवेकको अगनास निकैल दरबज्जापर पहुच गेल छल। थाना प्रभारी बाबूबरहीक बात सुनि विवेक बजला-

"सर, हमर नाओं विवेक छी। हम चुनचुन बाबूक बेटा छी। गोपी बाबू हमरा माताजीक मति छथिन। सर, कोन अपराधमे हमरा माताजी आ गोपीबाबूके एरेस्ट केलिऐन हेन?"

तैपर डी.एस.पी. साहैब बजला-

"आपका माताजी आपकी शदी के लिए लड़कीबलास बीस लाख रुपैआ नगद ओओर दस लाख का सोना तथा अन्य सामान दहेजमे लिये है। लड़कीबला महिला थानामे यहा आवेदन दिए है। महिला थाना कार्यालय से एस.पी. मधुबनी को एफ.आइ.आर. दर्ज कर कठोरतम कारबाई करने के लिए वाइरलेस से आदेश दिया गया है।"

तैपर चुनचुन बाबू बजला-

"नै सर, हम दहेज नै लेलयैन हेन। लड़कीबला झूठ-फूसक इलजाम हमरापर लगौलक हेन।"

डी.एस.पी. साहैब बैगस एकटा टेपरेकडर निकालि चालू केलखिन। चुनुचन बाबू, गोपी बाबू, लालबाबू आ विनयक बीच जे गप-सप्त भेल रहए सभ सुनाए लगल। जखन सभ बात सुनाएल भऽ गेल तखन डी.एस.पी. साहैब बजला-

"कहिये चुनचुनजी, अब क्या कहते है!झूठ क्यो बोल रहे थे?"

चुनचुन बाबूक बोलती बन भऽ गेलैन, गोपीबाबूक चेहरा दिस देखैत चुनचुन बाबूक सम्पूर्ण देह घामसि नहा रहल छेलैन। गोपीबाबूक मनमे बेर-बेर उठैत रहैन- केकर खेती केकर गाए, कोन पापी रोपिए जाए। नाहकमे फँसि गेलौं। आब जेल गेने बिना कोनो उपाय नै अछि। विवेक सोचए ज माताजी जेल चलि जेता त सभ प्रतिष्ठा मिटि

मिल जाएत। जखने लोक सभ बुझत कि कुम्टचौल शुर करत। रेलवेमे नौकरी करै छी। के कहलक नौकरियोपर ने परि जाए। बिआहो करैमे दिक्कते हएत।

अगनामे विवेकक िाए जखन बुझलैन त ओ कानए लगली। विवेकके किछु फुरेबे ने करइ। ऑंगनमे िाइक कानब सुनलक त ऑंगन गेल। िाएके सझिौलक। िाएस कहलक तो जुन्न कान। हमि डी.एस.पी साहैबस मिहोरा करए जाइ छिऐन। तू असमथरस बैस।

विवेक दरबज्जापर आएल त देखलक चुनचुन बाबू आ गोपीबाबूके गािीमे बैसल छेला। डी.एस.पी. साहैब दरोगास कहैत रहथिन-

"बिाबाबू, चिलयेथानापर चिलए।"

विवेक डी.एस.पी.क आगाँ हाथ जोमि ठाढ़ भऽ गेल आ बाजल-

"सर, हिरा बाबूजी आ गोपीबाबूके छोमि देल जाए। हमि बिना दहेजके बिआह करैले तैयार छी।"

विवेकक विनमतापूवषक िनवेदन सुिन डी.एस.पी. साहैब बजला-

"ठीक है। आप अपने िपताजीके साथ गािीमे बैठकर िधुबनी कोटष चिलये। मै लिकीबला को भी लिकी लेकर िधुबनी कोटषआने के िलए कहता हू। वहाँ आप की शादी कोटषमे लालबाबू राय की बेटी से होगी। शादी के बाद इनलोगो के िवरय मे सोचा जाएगा।"

एक घन्टाक बाद लालबाबू, लालबाबूक पती, विनय आ लालबाबूक बेटी वीणा एकटा बोलेरो गािीमे बैस कऽ िधुबनी कोटष पहुचला। कोटषमे वीणा आ विवेकक बिआह भेल। बिआहक बाद वीणा डी.एस.पी. साहैबस कहलकैन-

"सर, हिनका दुनू गोरेके िाफ कऽ िदयौन।"

लालबाबू सेहो कहलिखन-

“हसर, चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूके ाफ कऽ म्दयौन। हरि हरि बेटीक म्बआह म्बना दहेजक भऽ गेल।”

तैपर डी.एस.पी. साहैब बजला-

“ठीक है, पहले आप जो कानूनी कारषाइ करने का आवेदन म्दये है उसके सम्बन्ध ि एक आवेदन ालिा आपस लेने काऽ दीम्जये, म्फर इन दोनो व्यम्क्तयो के म्बरय ि सोचा जाएगा।”

सएह भेल। ाने लालबाबू ालिा आपस लऽ लेला। डी.एस.पी. साहैब चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूस एकटा सपथ पत लेलम्खन जइि भम्बसि फेर एहेन गलती नै करब तइ बातक म्जि रहए। डी.एस.पी. साहैब चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूस कहलम्खन-

“आप लोग कान पकिकर पाँच बार बोम्लये- दहेज पाप है।”

चुनचुन बाबू आ गोपी बाबू दुनू गोरे कान अपन-अपन कान पकैि बाजए लगला-

“दहेज पाप छी। दहेज पाप छी...।”

आशीर अनम्चन्हार

"इश्क को म्दल ि दे जगह अकबर" आ जगदीश चंर ठाकुर अम्नल

गजलि बहर ओ व्याकरण म्बरोधी लोक सभ अम्धकतर एम्ह शेरक बेसी उदाहरण दै छम्थ (एम्ह शेरक बहुत पाठातर छै)

इश्क को म्दल ि दे जगह अकबर
इलि से शायरी नही आती

िने ओहन लोक सभके कहनाि जे गजलि खाली इलि नै हेबाक चाही ुदा ई कतेक बिका म्बडंबना छै जे एहू शेरि पूरा पूरी बहरक पालन भेल छै िने ईहो शेर इलकि उपज अम्छ। आब ई बात अलग जे म्बरोधी सभके बहर अम्बाते नै छम्न त ओ एकरा गाम्न कोना सकताह। वास्तम्बकता त ई छै जे हरि िम्थल "िहान" गजलकार सभ अम्नधाि बेसी बूझै छम्थ आ तइ एम्ह शेरक अथषके अम्नधाि ल' लेने हेताह। ज एम्ह शेरक तहि जेबै त एकर अम्नधा बला अथषक अलावे अन्य अथषसेहो छै जकरा एना व्यक्त कएल जा सकैए

इलि को म्दल ि दे जगह अकबर
इश्क से शायरी नही आती

िने ज खाली इलसि शाइरी नै हेतै त खाली इश्कोस शाइरी नै भ' सकैए। इएह एम्ह शेरक ूलि बात छै। हरेक चीजि संतुलन हेबाक चाही तखने ओ नीक काव्य हएत। ई बात इलि बला आ इश्क बला

दूनूके नीक जका बूझए पतिम्म अन्यथा दूनूक काव्य बौके टा रहत। म्माच्या एम्हि शेरक बहर देखा रहल छी

इश्क को 212 म्दल ि दे 212 जगह अकबर 1222
इलि से 212 शायरी 212 नही आती 1222

आब एक बेर कने जगदीश चंर ठाकुरजीक एम्हि शेरके देखू

बहरक बन्धन अम्छ,हरि आजाद कर
हि त गजल छी, हरि नै बरबाद कर

एम्हि शेरके पम्ढ़ते बहुतो बहर पीमित लोकक आह म्माकम्ल गेल। िदा ओम्हि पीमित लोक लग दृम्पा छैने नम्हि जे ओ देखता जे अम्माल जीक एम्हि शेरि सेहो बहर छै (22222222222)। गजलक सौदये इएह छै जे ओ अपन तत्वक म्बारोध म्मायकि भीतर करैत छै। से चाहे इलकि पसंग हो म्क बहर बंधनक पसंग। दूनू शेरक ितव्य इएह जे ने बेसी इलसि शाइरी हएत आ ने बेसी इश्कस। हरि जतेक अनुभव अम्छ ताम्हि म्हसाबस बेसी इलि बला आ बेसी इश्क बला लोक अनुपयोगी भ' जाइत छै। बेसी इलि बलाके पागल हेबाक खतरा बेसी रहैत छै त बेसी इश्क बलाके आवारा आ बदचलन होइत देरी नै लागै छै। आब अहा सभहक अनुभव जे हो।

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर १-८

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-१

गजलक विषयमे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मक लेल ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक व्याकरण त नहिंए जानै छथि आ ताहिपरस कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो व्याकरणके सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहिठाम द' रहल छी----------------

1

"तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ"

ओना अंग्रेजी कविताक प्रभावसँ उर्दूक कविताके सेहो नज्म कहल जाइत छै मुदा उर्दूक प्राचीन नज्म सभमे सेहो बहरक पालन कएल जाइत छलै। उदाहरण लेल साहिर लुधियानवीजीक ई नज्म देखू जे फिल्म "धूल का फूल" नामक फिल्ममे फिल्माएल गेल छै जाहिमे राजेन्द्र कुमार ओ माला सिन्हाजी नायक ओ नायिकाक रूपमे छथि। एहि नज्म केर बहर 122 122 122 122 अछि आ ई हरेक पाँतिमे

मािहल गेल अिछ। सािहर जते िफल्म लेल पसंद छिथ तािहसँ बेसी उदूर्ष शाइरी लेल सेहो। वस्तुतः उदूर्ष शाइरी आ िफल्मी गीतमे अंतर नै कएल जाइत छै तइ पसंद िफल्मी पटकथा लेखक ओ गीतकार जावेद अख्तर िफल्मक िक अमािरका उदूर्क सािहत्य अकादेमी लेल सेहो हकदार मानल जाइत छिथ (2013 मे "लावा" नािक पोथी लेल)। मैिथलीमे त सभ कािरडे मािलकारी छिथ की कहल सकै छी। त पढ़ू ई नज्म आ देखू एकर बहर-

तेरे प्यार का आसरा चाहता हू
वफ़ा कर रहा हू वफ़ा चाहता हू

हसीनो से अहद-ए-वफ़ा चाहते हो
बडे नासमिझ हो ये क्या चाहते हो

तेरे नषिबालो मे तारे सजा के
तेरे शोख कदमो मे किलया िबछा के

मुहब्बत का छोटा सा मिन्दर बना के
तुझे रात िदन पूजना चाहता हू,

ज़रा सोच लो िदल लगाने से पहले
िक खोना भी पडता है पाने के पहले

इजाज़त तो ले लो ज़माने से पहले
िक तुम हुस्न को पूजना चाहते हो,

कहा तक म्जये तेरी उलफ़त के ि रे
गुज़रती नही म्ज़न्दगी म्बान सहारे

बहुत हो चुके दूर रहकर इशारे
तुझे पास से देखना चाहता हू,

ि हिब्बत की दुश िन है सारी खुदाई
ि हिब्बत की तक़दीर ि है जुदाई

जो सुनते नही है म्दलो की दुहाई
उन्ही से ि झे ि गिना चाहते हो,

दुपटे के कोने को ि हि ि दबा के
ज़रा देख लो इस तरफ़ ि स्कुरा के

ि झे लूट लो ि रे नज़दीक आ के
म्क ि ि ित से खेलना चाहता हू,

गलत सारे दावे गलत सारी कसि
म्नाभेगी यहा कैसे उलफ़त म्क रसि

यहा म्ज़न्दगी है म्रवाज़ो के बस ि
म्रवाज़ो को तुि तोि िना चाहते हो,

मरवाज़ो की परवाह ना रसी का डर है
तेरी आख के फ़ैसले पे नज़र है

बला से अगर रास्ता पुरखतार है
ि इस हाथ को थािना चाहता हू,

2

“सजन रे झूठ ित बोलो, खुदा के पास जाना है"

शैलेरजी दारा मलखल आ मफर्ल "तीसरी कसि"ि राज कपूरजीक उपर मफलिएल ई नजि देखू। ई नजि मागुषा अमछ। एमह नजिक बहर 1222 1222 1222 1222 अमछ। एमह नजिि हिल शबदक बहर उदूषशबद "शहर" केर महसाबस अमछ। शैलेरजी मफर्लि गीतक अमतमरक्त अपन िकसषादी गीत लेल सेहो पमसद छमथ आ हुनक िकसषादी गीत आधुमनक गीत सेहो अमछ आ बहरि सेहो। त देखू शैलेरजीक ई नजि आ ओकर बहर। िमथलीक जे गजलकार ई सोचै छमथ जे बहरस गेयता खति भ’ जाइत छै मतनका लेल ई मवशेर रपस अमछ--

सजन रे झूठ ित बोलो, खुदा के पास जाना है
न हाथी है ना घोिा है, वहा पैदल ही जाना है

तुम्हारे िहल चौबारे, यही रह जाएंगे सारे
अकि म्किस बात की त्यारे ये सर म्फिर भी झुकाना है

भला कीजै भला होगा, बुरा कीजै बुरा होगा
बही म्लिख म्लिख के क्या होगा, यही सब कुछ चुकाना है

लिकपन खेल ि खोया, जवानी नीद भर सोया
बुढ़ापा देख कर रोया, वही म्किस्सा पुराना है

(सजन रे झू 1222 ठ ित बोलो, 1222 खुदा के पा 1222 स जाना है 1222
न हाथी है 1222 ना घोि है, 1222 वहा पैदल 1222 ही जाना है 1222)

3
"तेरी याद म्दिल से भुलाने चला हू"

साम्हिर लुम्धियानवी दारा म्लिखल नजि "तेरे त्यार का आसरा चाहता हू" केर बहर 122 122 122 122 छै से पम्हिला पोस्टि तक्ी दारा देखने रही। आइ अही बहरि शैलेरजीक म्लिखल नजि देखा रहल छी। ई "हम्रयाली और रास्ता" नाकि म्फिलिि िनोज कुिर ओ िला म्सिन्हापर म्फिलिाएल गेल छै। िता म्साधारणि उदूषओ म्हंदीक म्सयि लागल छै---

तेरी याद दिल से भुलाने चला हू
के खुद अपनी हस्ती मिटाने चला हू

घटाओं तुम्हे साथ देना पड़ेगा
मैं फिर आज आंसू बहाने चला हू

कभी जिस जगह ख्वाब देखे थे मैंने
वही खाक़ अपनी उड़ाने चला हू

ग़म-ए-इश्क ले, फूंक दे मेरा दामन
मैं अपनी लगी यूं, बुझाने चला हू

(तेरी या 122 द दिल से 122 भुलाने 122 चला हू 122
के खुद अप 122 नी हस्ती 122 मिटाने 122 चला हू 122)

<u>हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-२</u>

गजलक जतेक जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मक लेल ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम त नहि जानै छथि आ तािहपरस कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जािहमे छै तकर विवरण हम एतऽ ठाम द' रहल छी-

1

हसन कमालजीक लिखल आ "निकाह" फिल्म केर ई नज्म जकर बहर 2122 2122 212 अछि। मात्रा निर्धारणमे उर्दूओ हिंदीक नियम लागल छै। (ओना तेसर शेरक दोसर पाँतिक शब्द "शायद" केर मात्रा 21 करबाक लेल एकरा शायद लिखल गेल छै) आन नज्मक अपेक्षा एकर शेर सभमे सम्बद्धता अछि तइ हिसाबे एकरा गजल कहब बेसी उचित बुझैत छी।

दिल के अरमाँ आँसुओंमे बह गए
हम वफ़ा करके भी तनहा रह गए

ज़िंदगी एक प्यास बनकर रह गयी
प्यार के किस्से अधूरे रह गए

शायद उनका आख़री हो यह म्सित‍ि
हर म्सित‍ि यह सोचकर हि सह गए

खुद को भी हनि‍े मि‍टा डाला ि‍गर
फ़ास्ले जो दरमि‍या थे रह गए

एम्हि नज‍ि‍ तेसे शेर बहुत ि‍रि‍क अम्छि। शेरि‍ वम्णाा "म्सित‍ि" शब्द म्कछु भ' सकैत छै। ई पेकि म्सित‍ि सेहो हेतै त व्यवस्थाक म्क दैवक म्सित‍ि सेहो भ' सकैए। म्फल‍ि देम्ख क' एकरा ि‍त्र पेम्ि पेम्ि‍का लेल बूझए बला लोक अबोध छम्थ से हि साफ साफ कहब।
2

राजेन्र कृष्णजीक म्लखल आ "खानदान" म्फल‍ि केर ई नज‍ि‍ जकर बहर 2122 2122 212 अम्छ। ि‍ता म्साधारणि उदूषओ म्हंदीक म्मयि लागल छै।

कल चि‍न था आज इक सहरा हुआ
देखते ही देखते ये क्या हुआ

ि‍झको बरबादी का कोई ग़ि नही
ग़ि है बरबादी का क्यो चचा हुआ

एक छोटा सा था ि‍रा आम्शयाा
आज म्तनके से अलग म्तनका हुआ

सोचता हू अपने घर को देखकर
हो न हो ये है मिरा देखा हुआ

देखने वालो ने देखा है धुआ
मकिसने देखा मदिल मिरा जलता हुआ

(कल चिन था 2122 आज इक सह 2122 रा हुआ 212
देखते ही 2122 देखते ये 2122 क्या हुआ 2122)

3

"तवायफ" मफिल केर ई नजि जे मकि आशा भोसले दारा गाएल गेल अमछि। नजि मलखने छमथि हसन कमिल। संगीतकार छमथि रमवि। ई मफिल 1985 मि मरलीज भेलै। एमहि अशोक कुमिर, ऋमर कपूर, रमत अमगहोती,पूनि मढ़िल्लन आमद कलाकार छलमथि।

बहुत देर से दर पे आखे लगी थी
हुजुर आते-आते बहुत देर कर दी

मिसीहा मिरे तूने बीमिर-ए-ग़मि की
दवा लाते-लाते बहुत देर कर दी

मुहिब्बत के दो बोल सुनने न पाए
वफ़ाओं के दो फूल चुनने न पाए

तुझे भी हिरी तिना थी ज़ाम्लि
बताते-बताते बहुत देर कर दी

कोई पल ि दि तोि देगी िरादे
म्बाखर जाएगी िरी ख़्वाबो की यादे

सदा सुनते-सुनते ख़बर लेते-लेते
पता पाते-पाते बहुत देर कर दी

एम्हि नजिकि सभ पाम्तक िताि 122 122 122 122 अम्छ। एम्हि नजिकि पम्हिल शेरक दोसर पाम्िि आएल "हुजुर" शब्दक सही रप "हुजूर" अम्छ िदा बहर म्नवाह लेल "हुजुर" उच्चारण लेल गेल छै। ओनाहुतो ई नजि छै। जाम्हि बहुत नीक जका बहरक म्नवाह भेल छै। एम्हि नजिकि ई शेर बहुपयोगी अम्छ........

िसीहा िरे तूने बीिर-ए-ग़ि की
दवा लाते-लाते बहुत देर कर दी

ई शेर जतबे सासाम्रक पेि लेल छै ततबे राजनीम्तक व्यंग्य सेहो छै। घरक कोनो सदस्यक उपराग सेहो ई शेर भ' सकैए।

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-३

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम त नहिए जानै छथि आ तापरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"सूरज" फिल्मक केर ई नज्म जे मो. रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि हसरत जयपुरी। संगीतकार छथि शंकर जयकिशन। ई फिल्म 1966 मे रिलीज भेलै। एहिमे राजेन्द्र कुमार, वैजयन्तीमाला आदि कलाकार छलथि।

बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है
हवाओं रागिनी गाओ मेरा महबूब आया है
ओ लाली फूल की मेंहदी लगा इन गोरे हाथो में
उतर आ ऐ घटा काजल, लगा इन प्यारी आखो में
सितारो माँग भर जाओ मेरा महबूब आया है
नज़ारो हर तरफ़ अब तान दो इक नूर की चादर

बडा शर्मीला मदिलबर है, चला जाये न शरमि कर
ज़रा तुम मदिल को बहलाओ मिरा महिबूब आया है
सजाई है जवा कमलयो ने अब ये सेज उलफ़त की
इन्हे मिलूम था आएगी इक मदिन ऋतु मुहिब्बत की
मफ़ज़ाओं रंग मबखराओ मिरा महिबूब आया है

एमहि नजमिक सभ पाम्तक मितामि 1222 1222 1222 1222 अमछ। पमहिल अंतराम "मिहिदी" शब्दमि मितामि गलत अमछ हमिरा महिसाबे मुदा उदूमि "शब्दक बीच बला "ह" केर उच्चारण पमहिल शब्दमि ममिल क' ओकरा दीघषबना दैत छै जेना मक "लहमर" केर उच्चारण "लैर" सन आमद, "मिहिदी" केर उच्चारण तेहने भ' सकैए (पका पता नै) ओनाहुतो ई नजम छै आ ताहूमि मफ़लमिक लेल मलखल गेल। शाइर एकरा गजल घोमषत नै केने छमथ। एकर तक्ती उदूषमहिंदी मनयमिर कएल गेल अमछ।

2

"आप आये बहार आई" मफ़लम केर ई नजम जे मक मि. रफीजी ओ लता मिंगेशकरजी दारा गाएल गेल अमछ। नजम मलखने छमथ आनन्द बकी। संगीतकार छमथ लक्ष्मीकात त्यारेलाल। ई मफ़लम 1971 मि मरलीज भेलै। एमहि राजेर कुमिर, साधना आमद कलाकार छलमथ।

मदल शाद था मक फूल मखलेगे बहार मि
मिरा गया ग़रीब इसी इंतज़ार मि
मुझे तेरी मुहिब्बत का सहारा ममिल गया होता
अगर तूफ़ा नही आता मकनारा ममिल गया होता

न था िज़ूर म्क़स्ति को न थी िज़ी बहारो की
नही तो इस गुम्लस्ता ि कमी थी क्या नज़ारो की
िरी नज़रो को भी कोई नज़ारा मिल गया होता
ख़ुशी से अपनी आखो को ि अश्क़ो से म्मगो लेता
िरे बदले तू हस लेती तेरे बदले ि रो लेता
ुझे ऐ काश तेरा ददषसारा मिल गया होता
मिली है चादनी म्जनको ये उनकी अपनी म्क़स्ति है
ुझे अपने ुक़द्दर से फ़क़त इतनी म्शकायत है
ुझे टूटा हुआ कोई म्सतारा मिल गया होता

एम्ह नजिक सभ पाम्तक िताि 1222 1222 1222 1222 अम्छ। बहुत काल शाइर गजल वा नजिस पम्हने िहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अम्नवायषनै छै। एम्ह नजिस पम्हने एकटा शेर "म्दल शाद था म्क फूल म्खलेगे बहार ि िरा गया ग़रीब इसी इंतज़ार ि" (एहू शेरि बहर छै) िहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। एकर तक्ती उदूषम्हंदी म्मायपिर कएल गेल अम्छ।

3

"दो बदन" म्फल्ि केर ई नजि जे म्क ि. रफीजी दारा गाएल गेल अम्छ। नजि म्लखने छम्थ शकील बदायूनी। संगीतकार छम्थ रम्व। ई म्फल्ि 1966 ि म्रलीज भेलै। एम्हि िनोज कुिर, आशा पारेख आम्द कलाकार छलम्थ।

भरी दुम्नया ि आम्ख़र म्दल को सझ्ाने कहा जाएं
ुहब्बत हो गई म्जनको वो दीवाने कहा जाएं
लगे है शिा पर पहरे ज़िाने की म्नगाहो के

म्जन्हे जलने की हसरत है वो परवाने कहा जाएं
सुनाना भी म्जन्हे िुश्किल छुपाना भी म्जन्हे िुश्किल
ज़रा तू ही बता ऐ म्दिल वो अफ़साने कहा जाएं
नजर ि उलझने, म्दिल ि है आलि बेकरारी का
सझि ि कुछ नही आता सुकू पाने कहा जाए

एम्हि नजकि सभ पाम्तक िताि ि 1222 1222 1222 1222 अम्छ। एकर तक्ती उदूषम्हंदी म्नायपिर कएल गेल अम्छ।

फिल्मी गीतमे बहर-४

गजलक नियम जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मक लेल ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक व्याकरण त नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो व्याकरणक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी----------------

1

"शराबी" फिल्मक केर ई नज्म जे किशोर कुमार जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि प्रकाश मेहरा। संगीतकार छथि बप्पी लाहिड़ी। ई फिल्म 1984 मे रिलीज भेलै। एहिमे अमिताभ बच्चन, जयाप्रदा आदि कलाकार छलथि।

मंज़िलों पे आ के लुटते, है दिलों के कारवाँ
कश्तियाँ साहिल पे अक्सर, डूबती है प्यार की
मंज़िलें अपनी जगह है, रास्ते अपनी जगह
जब कदम ही साथ ना दे, तो मुसाफ़िर क्या करे
यूं तो है हमदर्द भी और हमसफ़र भी है मेरा
बढ़ के कोई हाथ ना दे, दिल भला फिर क्या करे

डूबने वाले को ि तनके का सहारा ही बहुत
ि दल बहल जाए फ़क़त इतना इशारा ही बहुत
इतने पर भी आसि ा वाला मारा दे ि बजि लया
कोई बतला दे ज़रा ये डूबता ि फर क्या करे
प्यार करना जुि षहै तो, जुि षहि से हो गया
काि बले िफी हुआ, करते नही ऐसे गुनाह
तंगि दल है ये जहा और संगि दल िरा सनि
क्या करे जोशे जुनूं और हौसला ि फर क्या करे

एि ह नजि क सभ पाि ाक िताि 2122 2122 2122 212 अि छ। बहुत काल शाइर गजल वा नजि स पि हने िहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अि नवायषनै छै। एि ह नजि स पि हने एकटा शेर "ि ि ज़लो पे आ के लुटते, है ि दलो के कारवा" (एहू शेरि इएह बहर छै) िहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। एकर तक्ती उदूष ि हंदी ि ायि पर कएल गेल अि छ। उदूषि "और" शब्दक िता ि ाधारण दू तरीकास कएल जाइत छै "और िने 21" आ "औ िने 2"। एि ह नजि क संगे आन नजि लेल ई िन राखू। जरि री नै जे ई ि ायि ि ि थली लेल सेहो सही हएत।अंि ति बंदक दोसर पाि ाक अंि ति शब्द अि छ "गुनाह" जाि हि एकटा लघु अि ति रक्त अि छ। ई छूट उदूषगजलक संग ि ि थली गजलि सेहो अि छ।

2

"ि दहोश" ि फलि केर ई नजि जे ि क तलत ि हि दूजी दारा गाएल गेल अि छ। नजि ि लखने छि थ राजा ि हदी अली खान। संगीतकार छि थ ि दन िहन। ई ि फलि 1951 ि ि रलीज भेलै। एि हि िनहर

(देसाइ), िीना कुिारी आम्द कलाकार छलम्थ।

िरी याद ि तुि न आसू बहाना
न जी को जलाना, ुझे भूल जाना
सझिना के था एक सपना सुहाना
वो गुज़रा ज़िाना, ुझे भूल जाना
जुदा िरी म्ज़िल, जुदा तेरी राहे
मलेगी न अब तेरी-िरी म्नगाहे
ुझे तेरी दुम्नया से है दूर जाना
ये रो-रो के कहता है टूटा हुआ म्दल
नही हू ि तेरी िहब्बत के काम्बल
िरा नाि तक अपने लब पे न लाना
न जी को जलाना, ुझे भूल जाना

एम्ह नजकि सभ पाम्तक िताि 122 122 122 122 अम्छ। एकर तक्ती उदूषम्हंदी म्नयपिर कएल गेल अम्छ। ई बहर संस्कृति सेहो भुजंगपयात (िताि 122+122+122+122) केर नािसि छै। उदूषि एकरा “बहरे ितकाम्रब िसिमन साम्लि” कहल जाइत छै। एम्ह बहरपर बहुत नीक रचना अनेक भाराि रचल गेल छै। पसंगवश एम्हठाि हि गोस्वािी तुलसीदास जीक ई रचना (रराष कि) द’ रहल छी.............

निािशिािशान म्नवाणरपं
म्वभुं व्यापकं बह वेदस्वरपि् |

मनजं मनगुषां मनम्बकलां मनरीहं
मचदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ||१||

एम्हि ररााष कि् केर छंद भुजंगपयात अमछ। एकरा एना देखू.. नमिमि 122 शमिशा 122 न मनवा 122 णरपं 122 आन पामन सभके एनामहते देमख सकैत छी। हमरा दारा मलखल एम्हि मसरीजम तेरे त्यार का आसरा चाहता हू, तेरी याद मदल से भुलाने चला हू, बहुत देर से दर पे आखे लगी थी सन नजम एही बहरपर अमछ।

3

"मखलौना" मफलम केर ई नजम जे मक लता मगेशकरजी दारा गाएल गेल अमछ। नजम मलखने छमथ राजा आनंद बख्शी। संगीतकार छमथ लर्कमीकात त्यारे लाल। ई मफलम 1970 मम मरलीज भेलै। एम्हम संजीव कुमार, ममुताज, मजतेन्र, शतुघ मसन्हा आमद कलाकार छलमथ। ई मफलम गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधामरत अमछ।

अगर मदलबर की रसवाई हमम मंजूर हो जाये
सनम तू बेवफ़ा के नाम से मशहूर हो जाये
हमम फ़ुसरत नही ममलती कभी आसू बहाने से
कई ग़म पास आ बैठे तेरे एक दूर जाने से
अगर तू पास आ जाये तो हर ग़म दूर हो जाये

वफ़ा का वास्ता देकर मोहब्बत आज रोती है
न ऐसे खेल इस महफ़िल से ये नाजुक चीज़ होती है
ज़रा सी ठेस लग जाये तो शीशा चूर हो जाये
तेरे रंगीन होठो को कलि कहने से डरते है
तेरी इस बेरुख़ी पे हम ग़ज़ल कहने से डरते है
कही ऐसा न हो तू और भी मग़रूर हो जाये

एहि गजलक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222 अछि। एकर तक्ती उर्दू-हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। उर्दूमे दू दीर्घक बीच बला संयुक्ताक्षरके एकटा लघु मानि लेबाक छूट सेहो छै मुदा ई मैथिली संस्कृत आन आधुनिक भारतीय भाषामे नहि भेटत। एहि गजलके सुनलाक बाद सेहो बुझि सकबै जे "ए" केर उच्चारण "इ" मने "एक" केर उच्चारण "इक" जका छै आ ई उर्दूक विशेषता छै।

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-५

गजलक हिसाबे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मक लेल ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मकि शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मिथिलामे बहुत लोक गजलक परिभाषा त नहिए जानै छथि आ तामसपरस कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमकि सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहिठाम द' रहल छी-----------------

1

"खिलौना" फिल्म केर ई नज्म जे मो. रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत प्यारे लाल। ई फिल्म 1970 मे रिलीज भेलै। एहिमे संजीव कुमार, मुमताज, जितेन्द्र, शत्रुघ्न सिन्हा आदि कलाकार छलथि। ई फिल्म गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधारित अछि।

तेरी शादी पे दूँ तुझको तोहफ़ा मैं क्या
पेश करता हूँ दिल एक टूटा हुआ
खुश रहे तू सदा ये दुआ है मेरी
बेवफ़ा ही सही दिलरुबा है मेरी

जा ि तनहा रहू तुझको िहम्फल मिले
डूबने दे ुिझे तुझको साम्हल मिले
आज िरिज़ी यही, नाखुदा है िरी
उम भर ये िरे म्दल को तिपाएगा
ददे म्दल अब िरे साथ ही जाएगा
ीित ही आम्ख़री बस दवा है िरी

एम्ह नजिक सभ पाम्तक ीिताि ि 212 212 212 212 अम्छ। एकर तक्ती उदूषम्हंदी म्मयिपर कएल गेल अम्छ। बहुत काल शाइर गजल वा नजिस पम्हने िहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अम्नवायषनै छै। एम्ह नजिस पम्हने एकटा शेर "तेरी शादी पे दू तुझको तोहफ़ा ि क्या" िहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। सािन्यतः दीघषक बाद बला "ए" केर उच्चारण लघु भ' जाइत छै आ िम्थलीि सेहो एकर हि म्स्थम्तनुसार लघु िनिबाक म्सफाम्रश केने छी।

2

म्खलौना" म्फलि केर ई नजि जे म्क ुिहम्िद रफीजी दारा गाएल गेल अम्छ। नजि म्लखने छम्थ आनंद बख्शी। संगीतकार छम्थ लक्ष्िीकात त्यारे लाल। ई म्फलि 1970 ि म्रलीज भेलै। एम्हि संजीव कुिार, ुिताज, म्जतेन्र, शतुघ म्सन्हा आम्द कलाकार छलम्थ। ई म्फलि गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधाम्रत अम्छ।

म्खलौना जानकर तुि तो, िरा म्दल तोि जाते हो
ि्झे इस, हाल ि म्कसके सहारे छोि जाते हो
िरे म्दल से ना लो बदला ज़िाने भर की बातो का
ठहर जाओ सुनो िहिान हू ि चद रातो का
चले जाना अभी से म्कस म्लये ि्ह िाि जाते हो
माला तुिसे नही कोई, िगर अफ़सोस थोिा है
के म्जस ग़ि ने िरा दािन बिी ि्म्श्कल से छोिा है
उसी ग़ि से िरा म्फर आज म्रश्ता जोि जाते हो
खुदा का वास्ता देकर िनालू दूर हू लेम्कन
तुम्हारा रास्ता ि रोक लू िजबूर हू लेम्कन
के ि चल भी नही सकता हू और तुि दौि जाते हो

एम्ह नजिक सभ पाम्तक िताि 1222 1222 1222 1222अम्छ। एकर तक्ती उदूष म्हंदी म्नयिपर कएल गेल अम्छ। उदूषि दू दीघषक बीच बला संयुक्ताक्षरके एकटा लघु िाम्न लेबाक छूट सेहो छै ि्दा ई िैम्थली सम्हत आन आधुम्नक भारतीय भाराि नम्ह भेटत। उदूषि "और" शब्दक िाता म्नाधारण दू तरीकास कएल जाइत छै "और िने 21" आ "औ िने 2"। एम्ह नजिक संगे आन नजि लेल ई िान राखू। उदूषि "शब्दक बीच बला "ह" केर उच्चारण पम्हल शब्दि िाम्ल क' ओकरा दीघषबना दैत छै जेना म्क "लहम्र" केर उच्चारण "लैर" सन आम्द, "िहदी" केर उच्चारण तेहने भ' जाइत अम्छ। जर री नै जे ई म्नयि िैम्थली लेल सेहो सही हएत।

3

"शक्ति" फिल्म केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकरजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि आर.डी.बर्मन। ई फिल्म Sept 22, 1982 मे रिलीज भेलै। एहिमे अमिताभ बच्चन, स्मिता पाटिल, दिलीप कुमार, राखी आदि कलाकार छलथि।

हम बस ये पता है वो बहुत ही खूबसूरत है
लिफ़ाफ़े के लिये लेकिन पते की भी ज़रूरत है
(एहि दू पाँतिक मात्राक्रम अछि 1222 1222 1222 1222)

हमने सनम को ख़त लिखा, ख़त मे लिखा
ऐ दिलरुबा, दिल की गली शहरे वफा
(एहि स्थायीक मात्राक्रम अछि 2212 2212 2212)

पीपल का ये पत्ता नही, काग़ज़ का ये टुकड़ा नही
इस दिल के ये अरमान है, इसमे हमारी जान है
ऐसा ग़ज़ब हो जाये ना रस्ते मे ये खो जाये ना
हमने बड़ी ताक़ीद की, डाला इसे जब डाक मे
ये डाक बाबू से कहा हमने सनम को खत लिखा
बरसो जबाबे यार का, देखा किये हम रास्ता
एक दिन वो ख़त वापस मिला और डाकिये ने ये कहा
इस डाकखाने मे नही, सारे ज़माने मे नही
कोई सनम इस नाम का कोई गली इस नाम की
कोई शहर इस नाम का हमने सनम को खत लिखा

(उपरक दूनू अंतराक ितािि 2212 2212 2212 2212 अिछ) एिह नजिक ई मलाशेरता जे एिहि "शहर" शब्दक मानती िहंदी जका कएल गेल छै अन्यथा उदूर्िम शहर केर िता दीघर्लघु होइत छै। एकर तक्ती उदूर्िहंदी मतायिपर कएल गेल अिछ।

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-६

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मक लेल ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम त नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"नगीना" फिल्मक एहि नज्म जे मोहम्मद अजीज जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल। ई फिल्म 1986 मे रिलीज भेलै। एहिमे ऋषि कपूर, श्रीदेवी, अमरीश पुरी, प्रेम चोपड़ा आदि कलाकार छलथि।

आज कल याद कुछ और रहता नही
एक बस आपकी याद आने के बाद
याद आने से पहले चले आईये
और फिर जाइये जान जाने के बाद

अपनी आखो ि ुझको बसा लीम्जये
अपने म्दल ि िरा घर बना दीम्जये
क्या कर म्दल कही और लगता नही
त्यार ि आपसे म्दल लगाने के बाद
इश्क़ के ि ने म्कतने फ़साने सुने
हुस्न के म्कतने म्कस्से पुराने सुने
ऐसा लगता है म्फर इस तरह टूट कर
त्यार ह िने म्कया एक ज़ ािने के बाद
आपका ना ि म्दल से म्नकलता नही
म्दल्लगी ि कोई ज़ोर चलता नही
आपको भूल जाने की कोम्शश भी की
और त िपा हू ि भूल जाने के बाद

पम्हल आ तेसर पाम्तक ि ाता ि अम्छ 212-212-212-212 तेनाम्हते दोसर आ चाम्र ि पाम्तक ि ाता ि अम्छ 212-212-212-212+1 ि ूल ि ाता ि अम्छ 212-212-212-212 ि ुदा उदूम्ि (ि म्थलीयो ि) छूटक तौरपर अंम्त ि लघु ि ान्य छै। एकर बादक बंद सभ ि पम्हल तीन पाम्तक ि ाता ि 212-212-212-212 आ चाम्र ि पाम्तक ि ाता ि अम्छ 212-212-212-212+1 एकर तक्ती उदूष म्हंदी म्नयि पर कएल गेल अम्छ। एम्ह नज ि के शेर ि सेहो बदम्ल सकैत छी जेना म्नच्चा बदलल गेल छै--

आज कल याद कुछ और रहता नही एक बस आपकी याद आने के बाद

याद आने से पहले चले आईये और फिर जाइये जान जाने के बाद
अपनी आखो मे मुझको बसा लीजिये अपने दिल मे मेरा घर बना दीजिये
क्या करु दिल कही और लगता नही प्यार मे आपसे दिल लगाने के बाद

मतलाक दूनू पाँतिक मात्राक्रम छै 212-212-212-212 212-212-212-212+1 आ तकर बाद दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम छै 212-212-212-212 212-212-212-212 जे कि उर्दूसहित मैथिलियोमे छूटक तौरपर मान्य छै मने ज एहि नज्मके गजल कहल जाए ताहूमे कोनो दिक्कत नहि।

2

"अनारकली" फिल्म केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकर जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि राजेन्द्र कृष्ण। संगीतकार छथि सी.रामचंद्र। ई फिल्म 1953 मे रिलीज भेलै। एहिमे प्रदीप कुमार, बीना राय आदि कलाकार छलथि।

इस इंतेज़ार-ए-शौक को जनमो की प्यास है
इक शमा जल रही है तो वो भी उदास है
मुहब्बत ऐसी धड़कन है जो समझाई नही जाती
जुबा पर दिल की बेचैनी कभी लाई नही जाती
चले आओ, चले आओ तक़ाज़ा है निगाहो का
किसी की आरजू ऐसे तो ठुकराई नही जाती
मेरे दिल ने बिछाए है सजदे आज राहो मे
जो हालत आशिक़ी की है वो बतलाई नही जाती
एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222-1222-1222-1222

अछि। एकर तकती उदूषहिंदी मायपिर कएल गेल अछि। िदा एहि पाति "िरे िदल ने ाछाए है सजदे आज राहो ि" ि बहर टूटल छै आ शाइर एकर गजल कहियो नै रहल छथिन। बहुत काल शाइर गजल वा नजिस पिहने िहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अनिवार्य नै छै। एहि नजिस पहिने एकटा शेर "इस इंतेज़ार-ए-शौक को जनि की त्यास है" िहौल बनेबाक लेल देल गेल छै।

3

"त्यासा" िफल केर ई नजि जे िक िहमिद रफी जी दारा गाएल गेल अछि। नजि िलखने छिथ सािहर लुिधयानवी। संगीतकार छिथ सिचन देव बिष। ई िफल 1957 ि िरलीज भेलै। एहि ि गुर दत, वहीदा रहिन, िला िसन्हा आिद कलाकार छलिथ। एहि नजिक सभ पाितक िताि 122-122-122-122 अछि।

ये िहलो, ये तखतो, ये ताजो की दुिनया,
ये इंसा के दुशिन सािजो की दुिनया,
ये दौलत के भूखे रवाजो की दुिनया,
ये दुिनया अगर िल भी जाए तो क्या है .
हर इक िजस घायल, हर इक रह त्यासी
िनगाहो ि उलझन, िदलो ि उदासी
ये दुिनया है या आलि-ए-बदहवासी
ये दुिनया अगर िल भी जाए तो क्या है .
यहा इक िखलौना है इंसा की हस्ती
ये बस्ती है िदा परस्तो की बस्ती
यहा पर तो जीवन से है ित सस्ती

ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है .
जवानी भटकती है बदकार बन कर
जवा जिस्म सजते है बाज़ार बन कर
यहा प्यार होता है व्योपार बन कर
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है .
ये दुनिया जहा आदमी कुछ नही है
वफ़ा कुछ नही, दोस्ती कुछ नही है
जहा प्यार की कर कुछ नही है
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है .
जला दो इसे फूक डालो ये दुनिया
जला दो इसे फूक डालो ये दुनिया
मेरे सामने से हटा लो ये दुनिया
तुम्हारी है तुम ही संभालो ये दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है

एकर तकनीकी उदूर्-हिंदी मिश्रित मात्रिपर कएल गेल अछि। "हर इक" केर स्थानमे लेल अलिफ-वस्लक प्रयोग देखल जाए जे एकर स्थानमे "हमेक" केर हिसाबस लेल जेतै

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-७

गजलक तिलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्मिमे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्मिमे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्मिमे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक मात्रिक नियम त' नहिए जानै छथि आ तािहपरस कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

गोवर्धन राम त्रिपाठीजीक गुजराती उपन्यास "सरस्वतीचन्द्र"पर आधारित फिल्म "सरस्वतीचंद्र" केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकर जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि सािहर। संगीतकार छथि कल्याणजी-आनंद जी। ई फिल्म 1968 मे रिलीज भेलै। एहिमे नूतन, मनीर, विजय चौधरी आदि कलाकार छलथि। एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 2122-122-122-12 अछि। एहि नज्मक पहिल दू पाँति "कहा चला ऐ मेरे जोगी, जीवन से तू भाग के...." माहौल बनेबाक लेल देल गेल छै।

कहा चला ऐ मेरे जोगी, जीवन से तू भाग के
किसी एक दिल के कारण, यू सारी दुनिया त्याग के
छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए

ये िनामसब नही आदमी के मलए
त्यार से भी ज़रूरी कई काि है
त्यार सब कुछ नही मजंदगी के मलए
तन से तन का मिलन हो न पाया तो क्या
िन से िन का मिलन कोई कि तो नही
खुशबू आती रहे दूर ही से सही
सािने हो चिन कोई कि तो नही
चाद मिलता नही सबको संसार ि
है मदया ही बहुत रौशनी के मलए
मकतनी हसरत से तकती है कमलया तुम्हे
क्यू बहारो को मफर से बुलाते नही
एक दुमनया उजि ही गयी है तो क्या
दूसरा तुि जहा क्यू बसाते नही
मदल न चाहे भी तो साथ संसार के
चलना पिता है सबकी खुशी के मलए
एकर तकती उदूषमहंदी मनयापिर कएल गेल अमछ।

2

मफल्ि "हिराज" केर ई नजि जे मक िहेन्र कपूर जी दारा गाएल गेल अमछ। नजि मलखने छमथ सामहर लुमधयानवी। संगीतकार छमथ रमव। ई मफल्ि 1967 ि मरलीज भेलै। एमहि सुनील दत, राज कुिार, िुिताज आमद कलाकार छलमथ। एमह नजिक सभ पामतक िातािि 212-212-212-212 अमछ।

तुि अगर साथ देने का वादा करो
िैं यू ही िस्त नग़िे लुटाता रहू
तुि ि्झे देखकर ि्स्कुराती रहो
िैंन तुम्हे देखकर गीत गाता रहू
मकतने जलवे मफज़ाओं िें मबखरे िगर
िैंने अब तक मकसीको पुकारा नही
तुिको देखा तो नज़रे ये कहने लगी
हिको चेहरे से हटना गवारा नही
तुि अगर िेरी नज़रो के आगे रहो
िैं हर एक शै से नज़रे चुराता रहू
िैंने ख़्वाबो िें बरसो तराशा मजसे
तुि वही संग-ए-िरिर की तस्वीर हो
तुि न सिझो तुम्हारा ि्क़द्दर हू िैं
िैं सिझता हूं तुि िेरी तक़दीर हो
तुि अगर ि्झको अपना सिझने लगो
िैं बहारो की िहमफल सजाता रहू
िैं अकेला बहुत देर चलता रहा
अब सफ़र मज़न्दगानी का कटता नही
जब तलक कोई रंगी सहारा ना हो
वक़्त क़ामफर जवानी का कटता नही
तुि अगर हिक़दि बनके चलती रहो
िैं ज़िी पर मसतारे मबछाता रहू

एकर तकनीकी उदूषम्कंदी मायपिर कएल गेल अमछ।

3

फिल्म "बहारे फिर भी आएंगी" केर ई नज्म जे कि महेन्द्र कपूर जी दारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि कैफी आजमी। संगीतकार छथि ओ.पी.नैयर। ई फिल्म 1966 मे रीलीज भेलै। एहिमे धर्मेन्द्र, तनुजा, माला सिन्हा आदि कलाकार छलथि। एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222-1222-1222-1222 अछि। पूरा नज्म जीवन-दर्शन आ गेयतास भरल अछि मुदा हरेक पाँतिमे बहरक पूरा पालन भेल छै।ई नज्म ओहन-ओहन लोकक मुँहपर थापर अछि जे कहै छथि जे बहरक पालनसँ कथ्य आ गेयता घटि जाइ छै।

बदल जाये अगर माली चमन होता नही खाली
बहारे फिर भी आती है बहारे फिर भी आयेगी
थकन कैसी घुटन कैसी चल अपनी धुन मे दीवाने
खिला ले फूल काटो मे सजा ले अपने वीराने
हवाएं आग भड़काएं फ़ज़ाएं ज़हर बरसाएं
बहारे फिर भी आती है बहारे फिर भी आयेगी
अंधेरे क्या उजाले क्या ना ये अपने ना वो अपने
तेरे काम आएगे प्यारे तेरे अरमां तेरे सपने
ज़माना तुझसे हो बरहम ना आये राह पर मौसम
बहारे फिर भी आती है बहारे फिर भी आयेगी
एकर तक्ती उदूर्-हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। "चल अपनी" एकर तक्ती अलिफ-वस्ल केर नियमसँ छै।

फिल्मी गीतमे बहर-८

गजलक नियम जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे मिलानु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम त नहिए जानै छथि आ तामे परस कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

फिल्म "हाँ मैंने भी प्यार किया" केर ई नज्म जे कि उदित नारायण जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि समीर। संगीतकार छथि नदीम-श्रवण। ई फिल्म 2002 मे रिलीज भेलै। एहिमे अभिषेक बच्चन, करिश्मा कपूर, अभिषेक बच्चन आदि कलाकार छलथि। एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 122-122-122-122 अछि। पूरा नज्म पेटि-बहर आ गेयतास भरल अछि मुदा हरेक पाँतिमे बहरक पूरा पालन भेल छै।ई नज्म ओहन-ओहन लोकक मुँहपर थापर अछि जे कहै छथि जे बहरक पालनसँ कथ्य आ गेयता घटि जाइ छै। एहि नज्मक रुबाइ "तेरे साथे की बाँधिया चकिती रहे...." मिहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। संगे-संग नज्मक अंतिम पाँति "जा मैंने भी प्यार किया है" फिल्मी सिचुएशनके देखेबाक लेल छै।

तेरे ाथे की मबंमदया चमकती रहे
तेरे हाथो की ेहदी ेहकती रहे
तेरे जोे की रौनक सलाेत रहे
तेरी चूेी हेशा खनकती रहे
ुबारक हो तुे को ये शादी तुम्हारी
सदा खुश रहो तुे दुआ है होरी
तुम्हारे कदे चूे ये दुमनया सारी
तुम्हारे मलए है बहारो के ेौसे
न आये कभी मज़न्दगी े कोई गे
होरा है क्या यार हे है मदवाने
होरी तेप तो कोई भी न जाने
मेले ना तुम्हे इश्क़ े बेक़रारी
के जने के मरश्ते नही तोेे जाते
सफर े नही हेसफ़र छोेे जाते
न रसे मरवाजो को तुे भूल जाना
जो ली है कसे तो इसे तुे मनभाना
के हेने तो तन्हा उेर है गुजारी
जा ेैने भी त्यार मकया है
हा ेैने भी त्यार मकया है
एकर तक्ती उदूषमहंदी मायपिर कएल गेल अमछ।

2

मफल्ेे "बाबुल" केर ई नजे जे मक तलत ेहूेद ओ शेशाद बेगे जी दारा गाएल गेल अमछ। नजे मलखने छमथ शकील बदायूनी। संगीतकार छमथ नौशाद। ई मफल्े 1950 े मरलीज भेलै। एम्हे मदलीप कुेार, नरमास, सुलताना आमद कलाकार छलमथ। एम्ह नज्कि

सभ पाँतिक मात्राक्रम 22-22-22-22-22-22-2 अछि। पूरा नज्म पे-म्युजिक बहरक आ गेयतासँ भरल अछि मुदा हरेक पाँतिमे बहरक पूरा पालन भेल छै।ई नज्म ओहन-ओहन लोकक मुँहपर थापर अछि जे कहै छथि जे बहरक पालनसँ कथ्य आ गेयता घटि जाइ छै।

मिलते ही आखे दिल हुआ दीवाना किसी का
अफ़साना मेरा बन गया, अफ़साना किसी का
पूछो ना मोहब्बत का असर, हाय न पूछो
दम भर मे कोई हो गया, परवाना किसीका
हसते ही न आ जाये कही, आखो मे आसू
भरते ही छलक जाये ना, पैमाना किसीका

एकर तक्ती उदूर्-हिंदी मात्रापर कएल गेल अछि।

आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय

प्रस्तुत आलेख हम मैथिली गजलपर लिखने छी। वर्तमान शोधके हिसाबे त आब मैथिली गजल लगभग112 बर्खक भऽ गेल अछि। एहि 112 बर्खमे मैथिली गजलमे बहुत रास प्रयोग आ स्थापना भेलै तकरे निरूपण करब एहि लेखक उद्देश्य अछि। एहि लेखके पढ़बासँ पहिने किछु तथ्य सामने राखि दी जाहिसँ मैथिली गजलक सभ प्रयोग आ स्थापनाके अहाँ सभ नीक जकाँ परखि सकब--

1) गजल लेल बहर ओ काफिया अनिवार्य छै (बहरक पालनमे किछु छूट सेहो भेटै छै गजलकारके मुदा धेआन राखू जे बहरमे लिखते नै छथि हुनका लेल ई छूट कोन काजक)। पं.जीवन झासँ आधुनिक मैथिलीक गजलक जन्म मानल जाइत अछि आ स्वाभाविक छै जे पहिल चीजमे सही आ गलत दूनू तत्व रहै छै तइ पं.जीक किछु गजलमे बहर ओ काफियाक नीक प्रयोग भेटत त किछु गजल गीत जकाँ भेटत। मुदा तकर बाद कविवर सीताराम झा आ काशीकान्त मिश्र मधुपजी मैथिलीक गजलक भार उठेला आ मैथिली गजलके विस्तार देला। कविवर आ मधुपजीक गजल सभ पूर्णरूपेण बहर ओ काफियासँ सजल अछि। हिनक दूनूक गजल यथार्थमे मैथिली गजल अछि (भाषा मैथिलीक आ गजल व्याकरणके मैथिलीक अनुरूप देल गेल अछि)। कविवरजी आ मधुपजी दूनू कममे गजल लिखलाह मुदा हिसाबे जनैत ई गजल सभ व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजलक पृष्ठभूमि अछि।

2) लगभग 1970-75सँ मैथिली गजल ओहन धाराक लोक सभहक

हाथि आबि गेल जे किछु गजल बारेमे किछु नै जनैत छलाह। ओ िति दू पातिक बहर-काफियाहीन पाँति सभस बनल कविताके गजल कहए लगलाह। कोनो बिधाक पयोग खराप नै छै िदा पाठकके भमित कए कऽ कएल पयोग हानिकारक होइत छै। एहि धाराक लोक सभ कहैत छलाह गजलमे कोनो नियम नै होइत छै। किछु गोटे कहैत छलखिन जे मैथिलीमे गजल भैए ने सकैए। जखन किछु हुनका सभस पहिनेहे कविवर आ धिुपजी व्याकरणयुक्त गजल लीखि चुकल छलाह। उपरेमे कहने छी जे एहि धाराक लोक सभके गजलक जान नै छलनि संगे-संग हुनका सभके मैथिली गजलक इतिहासक बारेमे सेहो पता नै छलनि अन्यथा "गजलमे कोनो नियम नै होइ छै" वा " मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए" एहन-एहन बयान देबास पहिने ओ सभ जरूर पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा, काशीकात मिश्र धिुपजीक गजलमे पयोग भेल नियम सभके जरूर देखितथि।

3) एहि आलेखमे हम दूनू धाराक उल्लेख करब। दूनू धाराक गजलमे की-की अंतर अछि, दूनू धाराक गजलमे कोन-कोन काज भेल अछि। दूनू धाराक की कमजोरी अछि। दूनू धाराक परिचायक गजलकार सभहक किछु शेर सभ सेहो हम देब। मैथिलीमे व्याकरणयुक्त धारा पहिनेस अछि त पहिने ओकरे वणर्न हएत बादमे बिना व्याकरण बला धाराक। जे गजलक नियम पालन नै करै छथि हुनकर कहब छनि जे व्याकरणस बिचार ओ भाव बन्हा जाइ छै (ई मोन राखू जे एहन कहए बला लोक सभ मिति साम्यवादी वा कथित पगतिशील भावक बात करै छथि)। हम एहि लेखमे व्याकरणयुक्त गजल सभहक उदाहरण दैत साबित करब जे कोना व्याकरणस भाव कि बिचार आर पुष्ट होइत छै।

4) मिथिली गजल निे ओ गजल जे मिक मिथिलीिे मिलखल गेल चाहे ओकर देश कोनो मिकएक ने हो।

5) एम्हि आलेखक सभ तथ्य हिर पोथी "मिथिली गजलक व्याकरण ओ इमितहास"िे आमिब चुकल अमिछ जकरा हि एम्हिठािे पसंगक महिसाबे पुनलेखन केलहु अमिछ।

आधुमिनक मिथिली गजलक इमितहास

मिथिलीिे गजल उदूषभाराक िधिमिे आएल। उदूषिे फारसीस आ फारसीिे अरबीस। पं.जीवन झा (जनिे आ िृत्युः 1848-1912) अपन नाटक "सुन्दर संयोग" आ "साविती पुनजषि"िे पमिहल बेर गजल मिलखलाह। सुन्दर संयोग 1905 इ.िे पकामिशत भेल छल। तकर बाद कमिबवर सीताराि झा (जनि 1891 ई.िे तथा मिनधन 1975 ई) गजल मिलखलाह। कमिबवरजीक "जगत िे थामिक जगदमिब अमिहंक पथ आमिब बैसल छी" ई गजल 1928िे पकामिशत कमिबवर सीताराि झा जीक " सूमिक्त सुधा (पथि मिबंदु)िे संगहीत अमिछ। काशीकात मिश िधुप (जनि-िृत्युः 1906-1987) "मिमिथलाक पूवष गौरव नमिह ध्यान टा धरै छी" नािक गजल मिलखलाह जे मिक 1932िे मिथिली सामिहत्य समिमित, दारा काशीस "मिथिली-संदेश" नािक पमितकािे पकामिशत भेल।

व्याकरणयुक्त आधुमिनक मिथिली गजलक इमितहास

पं.जीवन झाजीस एम्हि धाराक शुरआत भेल आ तकर बाद कम्बवर सीताराि झा, काशीकात मिशि िधुप, योगानंद हीरा, जगदीश चन्र ठाकुर "अम्नल", म्बजय नाथ झा, गजेन्र ठाकुर, ि्नाजी, शाम्सलकी चौधरी, ओिपकाश झा, अमित मिशि, जगदानन्द झा िनु,, कुन्दन कुिार कणष् शीििती इरा िम्लिलक, राि कुिार मिशि, नीरज कुिार कणष् पदीप पुष्प, राजीव रंजन मिशा, चंदन कुिार झा आम्द भेलम्थ। एम्हि धाराक अंतगषा सरल वाम्णषक बहरि लीखए बला म्कछु गजलकार एना छम्थ-- इरा िम्लिलक, सुनील कुिार झा, पंकज चौधरी नवल शी, मिम्हर झा, अम्नल िम्लिलक, दीप नारायण म्बदाथी,पवीन नारायण चौधरी पतीक, भावना नवीन, रम्ब मिशा भारदाज, अजय ठाकुर िहन, पभात राय भट, सुमित मिशा "गुंजन" आम्द। एम्हि ठाि स्पष करब बेसी जररी जे सरल वाम्णषक बहर िित आरंम्भक अनुशासन लेल अम्छ। एकर उदेश्य ई अम्छ जे पम्हने गजलकार हल्लुकस सीखम्थ आ तकर बाद गजलक ि्लि बहरपर जाम्थ। ओना ई कहबाि हिरा कोनो संकोच नै जे बहुतो म्बना व्याकरण बला गजलकार सभस नीक ई सरल वाम्णषक बला गजलकार सभ लीखै छम्थ। सरल वाम्णषक बहर ि्लि वैम्दक छंद अम्छ जाम्हि गजलक हरेक पाम्ति अक्षरक संख्या एक सािन देल जाइ छै जखन म्क गजलक ि्लि बहर वणषृत अम्छ जाम्हि गजलक हरेक पाम्तक िितािि एक सािन रहै छै िने हरेक पाम्तक लघुके म्मात्रा लघु आ दीघषक म्मात्रा दीघष।

उपरक नाि सभहक अलावे हि अपने व्याकरणयुक्त गजलक सिथषक छी आ म्कछु गजल सेहो लीम्ख/कम्ह लै छी।

व्याकरणयुक्त आधुम्नक िम्थली गजलि भेल काज

1905स लगातार व्याकरणयुक्त लिखाइत रहल आ 11/4/2008के "अनचिन्हार आखर" नामक ब्लाग इंटरनेटपर आएल। एकरा एहि लिंकपर देखल जा सकैए https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/। अनचिन्हार आखर केर छोटका नाम " अ-आ " राखल गेल अछि। ई ब्लाग हमरा दारा शुरू कएल गेल छल आ समय-समयपर आन-आन गजलकार सभके जोड़ल गेल। वर्तमानमे ई ब्लाग हमरा आ गजेन्द्र ठाकुर दारा संपादित भऽ रहल अछि त देखी व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजल लेल भेल किछु एहन काज जे अ.आ दारा भेल ---

1) अ-आ प्रिंट वा इंटरनेटपर पहिल उपस्थित अछि जे की मात्र आ मात्र गजल एवं गजल अधारित विधापर केन्द्रित अछि।

2) अ-आ केर आग्रहपर श्री गजेन्द्र ठाकुर जी गजलशास्त्र लिखला जे की मैथिलीक पहिल गजलशास्त्र भेल। एही गजलशास्त्रमे ठाकुरजी सरल वार्णिक बहरक जन्म देलाह।

3) अ-आ दारा "गजल कमला-कोसी-बागमती-महानन्दा सम्मान" केर शुरूआत भेल। जे की स्वतन्त्र रूपे गजल विधा लेल पहिल सम्मान अछि।

4) अ-आ केर ई सौभाग्य छै जे ओ मैथिली बाल गजल नामक नव विधाके जन्म देलक आ ओकर पोषण केलक। मैथिली भक्ति गजल सेहो अ-आ केर देन अछि। विदेहक अङ्क 111 पूर्णरूपेण बाल-गजल विशेषांक अछि आ अङ्क 126 भक्ति गजल विशेषांक।

5) बर्ख 2008 आ 2015 मध्य करीब 30टास बेसी गजलकार मैथिली गजलमे एलाह। ई गजलकार सभ पहिनेस गजल नै लिखै

छलाह। संगे-संग करीब 6-7टा गजल समीक्षक-आलोचक सेहो एलाह।

6) पहिल बेर मैथिली गजलक केतेक एकै बेर करीब 16-17 टा आलोचना लिखाएल।

7) अ-आ मैथिली गजलके विश्वविद्यालय ओ यू.पी.एस. सी एवं बी.पी.एस. सीमे स्थान दिएबाक अभियान चलौने अछि आ एकटा मोडल सिलेबस सेहो बना कऽ पस्तुत केने अछि।

8) अ-आ प. जीवन झा जीक मृत्यु केर अंगेजी तारीख पता लगा ओकरा गजल दिवस मनेबाक अभियान चलौने अछि।

9) अ-आ 1905स लऽ कऽ 2013 धरिक गजल संग्रहक सूची एकटा ओ पकाशित केलक (व्याकरणयुक्त एवं व्याकरणहीन दूनू)।

10) अ-आ अधिकाश गजलकारक (व्याकरण युक्त एवं व्याकरणहीन दूनू) संक्षिप्त परिचय पस्तुत केलक।

11) अ-आ 62 खण्डमे गजलक इस्कूल नामक शृखंला चलौलक जे की सामान्य पाठकस लऽ कऽ गजलकार धरि लेल समान रूपस उपयोगी अछि।

12) अ-आ मैथिलीमे पहिल बेर आन-लाइन मुशायराक आरम्भ केलक आ ई बेस लोकप्रिय भेल।

13) मैथिली गजल आ अन्य भारतीय भाषाक गजल बीच संबंध बनेबाक लेल "विदेश गजलकार परिचय शृखंला" शुरू कएल गेल।

14) एखन धरि अ.आ केर माध्यमे मैथिली गजलमे गजल-1386, रुबाइ-417, बाल गजल 207, बाल रुबाइ-47, भक्ति गजल-47, हजल-21, आलोचना-28, कसीदा-3, नात-2, बंद-4,भक्ति रुबाइ-1, मर्सिया-2, देल जा चुकल अछि। जतेक गजलकार अ.आ केर माध्यमे आएल छथि हुनका सभ दारा रचित गजलक संख्या जोडि

जाए त लगभग 3000 गजलक संख्या पहुचत।

अनचिन्हार आखरक एही काज सभके देखैत मिथिली गजलक पहिल अर जी गजेन्द्र ठाकुर 2008क बाद स लऽ कऽ वर्तमान कालखंडके "अनचिन्हार युग" केर नाम देलाह (1905स लऽ कऽ 2007 धरिक कालखंडके गजेन्द्रजी आधुनिक मिथिलीक पहिल गजलकार जीवन झाजीक नामपर "जीवन युग" नाम देलाह)।

मिथिली गजलमे विदेह केर योगदान

विदेह इंटरनेटक पहिल मिथिली पत्रिका अछि जे कि गजेन्द्र ठाकुरजी दारा संचालित अछि आ हरेक मासक 1 आ 15 तारीखके पकाशित होइत अछि। एकरा एहि लिंकपर देखल जा सकैए http://videha.co.in/ विदेहक किछु एहन काज जै बिना आधुनिक व्याकरणयुक्त मिथिली गजलक उत्थान सम्भव नै छल--

1) विदेहक 21म अंक (1 नवम्बर 2008)मे राजेन्द्र विमल जीक 2 टा गजल अछि। राम भरोस कापड़ि भ्रमर आ रोशन जनकपुरी जीक 11 टा गजल अछि। संगे-संग धीरेन्द्र पेमर्षि जीक 1 टा आलेख मिथिलीमे गजल आ एकर संरचना। अछि संगे-संग ऐ आलेखक संग 1 टा गजल सेहो अछि पेमर्षिजीक। विदेहक ऐ अंकमे कतहु ई नै फर्माछाएल अछि जे ई गजल विशेषांक थिक मुदा विदेहक ऐस पहिनुक अंक सभमे गजलक मदे हमि कोनो तेहन विस्तार नै पबै छी तए हम एही अंकके विदेहक गजल विशेषांक मानलहु अछि।

2) विदेहक अंक 96 (15 दिसम्बर 2011)मे मुनाजी दारा गजल

पर पहिल परिचर्चा भेल। ऐ परिचर्चाक शीर्षक छल मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)। ऐमे भाग लेलन्हि सियाराम झा सरस, गंगेश गुंजन, प्रेमचंद पंकज, शेफालिका वर्मा, मन्त्रेश्वर झा ओमप्रकाश झा, आशीष अनचिन्हार आ गजेन्द्र ठाकुर भाग लेलन्हि। ऐके अतिरिक्त राजेन्द्र विमल, जिनकर सुलेमान ऐ दूनू गोटाक पूर्वप्रकाशित लेखक भाग, धीरेन्द्र प्रेमर्षीक पूर्वप्रकाशित लेख) सेहो अछि।

3) विदेहक अंक 111 (1/8/2012) जे की बाल गजल विशेषांक अछि जाहिमे कुल 16 टा गजलकारक कुल 93 टा बाल गजल आएल।

4) विदेहक 15 मार्च2013 बला 126म अंक भक्ति गजल विशेषांक छै।

5) 15 नवम्बर 2013के विदेहक 142म अंक "गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा" विशेषांक छल।

एहि सभहक अलावे विदेह समय-समयपर विभिन्न विधाक गोष्ठी करबैत रहल अछि जाहिमे एकटा गजल सेहो अछि।

आधुनिक व्याकरणयुक्त मैथिली गजलक आलोचना

आधुनिक व्याकरणयुक्त गजल आलोचनाक बात करी त सभस पहिने रामदेव झा जी द्वारा लिखल ओ रचना पत्रिकाक जून 1984मे प्रकाशित ओहि लेख केर चर्चा करए पड़ित जकर शीर्षक "मैथिलीमे गजल" छल। हमरा जनैत ई लेख ओहि समयक हिसाबे मैथिली गजल आलोचनाक सभ मापदंड पूरा करैत अछि (वर्तमान समयमे

रा िदेव झाक जीक पुत सभ एही आलेखस वतर्मान गजलके िपै छिन्ह आ ई हुनकर सीिा छियन। ईहो कहब उिचत जे वतर्मान सियक िहसाबे ओ आलेख औसत स्तरक अिछ िदा एही कारणस एकर िहत्व कि नै भऽ जेतै)। ओना ई उल्लेखनीय जे ईहो आलेख गजलक िवधानके ओझरा कऽ राखब देने अिछ कारण एिह लेखि गजलक बहरके िमात्राक जका िनल गेल छै जे िक वस्तुतः लेखक िहोदय केर सीिा छियन। वणर्वृत छंदि हरेक पािताक िताक जोि एकै अबै छै आ िमात्राक छंदि सहो। हि रा जनैत रा िदेव झा जी एहीठाि भिि फिस गेलाह। वणर्वृति लघु-गुर केर िनयत स्थान होइत छै िदा िमात्राक छंदि लघुक स्थानपर दीघर्सेहो आिब सकैए आ दीघर्क स्थानपर लघु सेहो। िदा गजलक बहर वणर्वृत छै। तथािप कि सि कि ओिह सियि ई कहए बला िकयो सेहो भेलै जे गजलि िवधान होइत छै आ सएह एिह आलेखक पिहल िवशेरता अिछ। एिह आलेखक दोसर िवशेरता ई जे रा िदेव झाजी पाचीन िमिथली गजलकार सभहक नाि देने छिथ जे िक सभ गजलक इितहासकार ओ पाठक लेल उपयोगी अिछ। एिह आलेखक तेसर िवशेरता अिछ जे रा िदेव झाजी स्पष्ट स्वरि ओिह सियक बहुत रास कथित िमात्राकारी गजलकार सभहक गजलके खािरज करै छिथ जे िक ओिह सियक िहसाबस बि का िवस्फोट छल। ई आलेख ततेक पभावकारी भेल जे ओ सियक िाना व्याकरण बला गजलकार सभ िछलि िला गेलाह आ एिह आलेखक िवरोधि िवभिन्न वक्तव्य सभ देबए लगलाह। उदाहरण लेल िसयारा ि झा सरस, तारानंद िवयोगी, रि शि ओ देवशंकर नवीनजीक संपादनि पकाि शत साझी गजल संकलन "लोकवेद आ लालिकला" (वरष1990) केर कितपय लेख सभ देखल जा सकैए जािह रा िदेव झाजी ओ हुनक स्थापनाके जि कऽ

आरोिपत कएल गेल अिछ। ओही संकलनिम देवशंकर नवीन अपन आलेख "मैिथली गजलःस्वरूप आ संभावना"मे िलखै छिथ जे "............पुनः डा. रामदेव झाक आलेख आएल। एिह िनबन्धमे दू टा बात अनगिल ई भेल जे गजलक पंक्त लेल छंद जका िनता िनधािरत करए लगलाह आ िकछु एहेन व्यक्तक नामे मैिथली गजल मे जोिड देलिन जे किहयो गजल नै िलखलिन"

आन लेख सभमे एहने बात सभ आन आन तरीकास कहल गेल अिछ। रामदेव झाजीक आलेखक बाद एहन आलेख नै आएल जािहमे गजलके व्याकरण दृिष्ट स देखल गेल हो कारण तािह समयक गजलपर किथत िमसकारी गजलकार सभहक कब्जा भऽ गेल छल। कोनो िवधा लेल आलोचना पाण होइत छै तइ "अनिचन्हार आखर" अपन शुरूआतेस आन काजक अितिरक्त गजल आलोचनापर सेहो ध्यान केिन्द्रत केलक आ मैिथली गजलक अपन आलोचक सभके िनिमत कऽ बेसी आलोचना िलखबेलक। आ एही कारणस मैिथली गजल आब ओहन आलोचक सभस मुक्त अिछ जे िक मूलतः सािहत्य केर आन िवधाक आलोचक छिथ आ किहयो काल गजलक आलोचना कऽ गजलपर एहसान करै छिथ। ई पािन िलखैत हिषत गवस अिछ जे मैिथली गजलके आब छह-सात टास बेसी अपन आलोचक छै। अनिचन्हार आखर जे-जे गजल आलोचना िलखबा कऽ पकािशत करबेलक तकर िववरण एना अिछ----

1) गजलक साक्ष्य (तारानंद िवयोगी जीक गजल संगह केर आशीर अनिचन्हार दारा कएल गेल आलोचना)
2) बहुरूिपया रचनामे (अरिवन्द ठकुर जीक गजल संगह केर

ओमिपकाश जी दारा कएल गेल आलोचना)

3) घोघ उठबैत गजल (म्वभूम्त आनंद जीक गजल संगह केर ओमि पकाश जी दारा कएल गेल आलोचना)

4) म्वदेहक 103म अंकम पकाम्शत पेमचंद पंकजक दूटा गजलक सम्मीक्ष जे की ओमिपकाश जी केने छम्थ

5) ममनाजीक गजल संगह "म्झ आंगनम कम्नआएल छी"- सम्मीक्षक गजेन्र ठाकुर

6) म्मथली गजल आ अभटाकारी

7) अजानी संपादकक फेरम मरैत गजल (घर-बाहर पम्नकाक अपैल-जून 2012 अंकम पकाम्शत गजलक सम्मीक्ष)

8) म्मथली बाल गजलक अवधारणा

9) कम्नआएल आखर (ममना जीक गजल संगह केर अमित मिश जी दारा कएल गेल आलोचना)

10) गजलक लेल (म्वजयनाथ झा जीक गजल ओ गीत संगह-अहीक लेल के ओमिपकाश जी दारा कएल सम्मीक्ष)

11) भोथ हम्थयार (शी सुरेन्र नाथ जीक गजल संगह केर ओमिपकाश जी दारा कएल गेल आलोचना)

12) पहरा अधपहरा (बाबा बैदानथ जीक गजल संगह केर आशीर अनम्चन्हार दारा कएल गेल आलोचना)

13) गजलक लहास (स्व. कलानन्द भटजीक गजलसंगह केरजगदानन्द झा मनु दारा कएल गेल आलोचना)

14) सूयोदयस पम्हने सूयास्त (राजेन्र म्वमल जीक गजल संगहक आशीर अनम्चन्हार कएल गेल आलोचना)

15) बहुत म्कछु बुझबैए: म्कयो बूम्झ ने सकल हमरा (ओमिपकाशजीक गजल संगहपर चंदन कुमार झाजीक आलोचना)

16) पक्षबद सामर्त्यकारक अपक्षबद गजल (मसयाराि झा सरसजीक गजल संगहपर जगदीश चंर ठाकुर अमलजीक आलोचना)
17) अरमबन्दजीक आजाद गजल (अरमबन्द ठाकुरजीक गजल संगहपर जगदीश चंर ठाकुर अमलजीक आलोचना)
18) छद गजल (गंगेश गुंजनजीक गजल सन मकछुपर आशीर अनमचन्हार दारा कएल आलोचना)
19) कलंमकत चान (राि भरोस कापमि भिरजीक गजल संगहक आशीर अनमचन्हार दारा कएल आलोचना)
20) मिथली गजल व्याकरणक शुरआती पयोग (गजेन्र ठाकुरजीक गजल संगह "धामा बाट बनेबाक दाि अगूबार पेने छ" केर आशीर अनमचन्हार दारा कएल आलोचना)
21) मचकनी िमट्टि उपजल नागफेनी (रिशजीक गजल संगह "नागफेनी" केर आशीर अनमचन्हार दारा कएल आलोचना)
22) नवगछुलीक पाजल सरस रसाल: नव अंशु (अमित मिश केर गजल संगह "नव-अंशु" केर मशव कुिर झा"मटल्लू" दारा कएल गेल सिमक्ा)
23) मसयाराि जा सरस जीक गजल संगह "शोमणताएल पैरक मशान"पर कुंदन कुिर कणर्जीक मटपणी
24) शी जगदीश चन्द ठाकुर ऽअमलऽ जीक मलखल गजल संगह "गजल गंगा" केर जगदानंद झा"िनु" दारा कएल सिमक्ा
25) मिथली गजलक संसारि अनमचन्हार आखर (आशीर अनमचन्हारक गजल संगहक जगदीश चंर ठाकुर अमलजी दारा कएल आलोचना)
26) थोिि िमट बेसी पामन (मसयाराि झा सरसजीक गजल संगहपर कुंदन कुिर कणर्जीक आलोचना)

आधुनिक व्याकरणयुक्त मैथिली गजलक किछु उदाहरण

एहि ठाम आब हम किछु शेरक उादहरण देब आ एहिमे हम अरबी बहर जे कि गजलक मूल बहर अछि आ सरल वार्णिक बहर दूनूमे लिखल शेर सभ प्रस्तुत करब। हम उदहारणमे सभ विचार बला शेर राखब जाहिसँ पाठक सहजहिं बुझता जे बहर-व्याकरण गजलक विचारमे बाधक नै होइत छै। गजलक प्रमुख पाँतिमे जे नियम रहै छै तकर ओ पूरा गजलमे पालन करब छंद वा बहरक निर्वाह केनाइ भेलै। ऐठाम हम स्पष्ट करी जे मैथिलीक आधुनिक व्याकरणयुक्त गजलकारक संख्या बहुत बेसी अछि मुदा हम एहिठाम किछु ओतबे गजलकारक शेर लेलहुँ अछि जाहिसँ हमर उद्देश्य पूरा भऽ जाए (उदाहरणमे आएल शेर सभ एकौ गजलक भऽ सकैए आ अलग अलग गजलक सेहो। संपादक महोदयसँ आग्रह जे उदाहरणमे देल गेल शेर सभहक वर्तनीकेँ यथावत् राखथि)।--

पं जीवन झाजीक एकटा गजलमे वर्णित विरहक नीक चित्रण देखू–

अनंङ सन्ताप सौ जरै छी अहाक चिन्ता जतै करै छी
सखीक लाजे ततै मरै छी जतै कही वा जतै कहाबी

एहि शेरक मात्राक्रम 12+122+12+122+12+122+12+122 अछि आ पूरा गजलमे एकर प्रयोग भेल अछि। झाजीक दोसर गजलक एकटा आर विरहपरक शेर देखू–

अहा सो भेट जहिआ भेल तेखन सो विकल हम छी
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अकच्छ छी

एम्हि शेरक ितािक्रि 1222+1222+1222+1222 अिछ आ पूरा गजलिे एकर पयोग भेल अिछ। उपरक एम्हि तीन टा उदाहरणस स्पष अिछ जे पं. जीवन झाजी मैिथली गजल आ गजलक व्याकरणक बीच नीक ताल-मेिल रखने छलाह। फेर हुनक तेसर शेरक एकटा आरो शेर देखू जे िक पेिि पिल नायक-नाियका िनोभाव अिछ--

पिेए बूिझ िकछु ने ध्यानिे हि भेल पागल छी
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी िक जागल छी

एम्हि शेरक ितािि 1222+1222+1222+1222 अिछ आ पूरा गजलिे एकर पयोग भेल अिछ। किवर सीतारािि झाजीक िकछु शेरक उदाहरण देखू–
हि की िनाउ चैती सतुआिन जूि शीतल
भै गेल िघ िसिह धधकैत घूि तीतल'

ितलाक छंद अिछ 2212+ 122+2212+ 122 आब एही गजलक दोसर शेर मिला िलअ-

अिछ देशिे दुपाटी कङरेस ओ िकसानक
हि िझिि पिल छी बिन कै िबलािि तीतल

पिहल शेर आइयो ओतबे पासंिगक अिछ जते पिहले छल। आइयो नव साल गरीबक लेल नै होइ छै। दोसर शेरके नीक जका पढ़ू आइस साठ-सतर साल पिहलुक राजनीितक िचत आिख लग आिब

जाएत। स्पष अछि जे मात्रा व्याकरण तोड़ि कऽ बावरजी पगतिशील भावक गजल लिखला जे अजुको सर्विस ओतबे पासंगिक अछि जतेक की पहिने छल। जे ई कहै छथि जे मात्रा व्याकरण तोड़ि पगतिशील गजल नै लिखल जा सकैए हुनका सभके ई उदाहरण देखबाक चाही। काशीकान्त मिश्र "धिुप" जीक दूटा शेर देखल जाए–

मिथिलाक पूवषगौरव नहि ध्यान टा धरै छी
सुमि मिथिली सुभारा माँनु आमाये जपै छी

सूगो जहाक दशषा-सुनबैत छल तही ठा
हा आइ "आइ गो" टा पढ़ि उच्चता करै छी

एहि गजलमे 2212-122-2212-122 मात्रा क्रम अछि जे सभ गजलक हरेक शेरमे पालन कएल गेल अछि। देखू धिुपजी मिलन स्वर लऽ कऽ आएल छथि बिदा मात्रा व्याकरण तोड़ि। योगानंद हीराजीक गजलक दू टा शेर–

भिनि अछि सवाल बाजू की
छल कपट केर हाल बाजू की

तिलाक दूनू पाततिमे 2122-12-1222 अछि आ दोसर शेर देखू-

छोट सन चीज कीमति ने पाबी
बाल बोधक सवाल बाजू की

हीराजी दोसर गजलक दू टा आर शेर देखू–

शूल सन बात ई
संसदे जेल अछि

आब हीरा कहै
जौहरी खेल अछि

एहि गजलक हरेक शेरमे सभ पाँतिमे 2122+12 मात्राक्रम अछि। आब अही सभ कहू जे हीराजीक गजलमे समकालीनता, प्रगतिशीलता आदि छै कि नै। पहिल शेरमे शाइर वर्तमान जीवनमे पसरल अजरकताके देखा रहल छथि त दोसर शेरमे अभावक कारण बच्चा धरिके कोनो चीज नै दऽ पेबाक विवशता छै। तेसर शेर आजुक बिडंबना अछि। संसद वएह छै जे पहिने छलै मुदा सासद सभ आब अपराधी वर्गक अछि तइ शाइरके ओ जेल बुझा रहल छनि। चारिम शेरमे शाइर प्रायोजित प्रसंशाक खेलके उजागर केने छथि। ई खेल साहित्य कि आन कोनो क्षेत्रमे भऽ सकैए। जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीक गजलक दू टा शेर–

टूटल छी तइ गजल कहै छी
भूखल छी तइ गजल कहै छी

मतलाक दूनू पाँतिमे 2222 +12 + 122 छंद अछि आ एकर दोसर शेर देखू–

ऑफिस सबहक कथा कहू की
लूटल छी तइ गजल कहै छी

भूख केर कथा सेहो व्याकरणयुक्त गजलमे। सरकारी आफिसक कथा सभ जनैत छी। अमितजी एहू कथाके व्याकरणक संग उपस्थित केने छथि। समकालीन स्वरे नै कालातीत स्वरक संग विजयनाथ झा जीक ऐ गजलक दूटा शेर देखू–

चिदाकाश धुमिल धुमिल भेल निष्ठा
विभव अछि विवश उदय हास अपने

तिलाक छंद अछि 122-122-122-122 आब दोसर शेरक दूनू पाँतीके जाच कऽ लिअ संगे संग भाव केर सेहो-

खसल नीर विमलक बिम्ब नोर जानल
सकल सोत शुष्क बिन्दु बिन्यास अपने

ज आइ शंकराचयष केर पितृभारा मिथिली रहितथि त शायद विजयनाथेजी सन लिखने रहितथि ओ। राजीव रंजन मिश्रजीक ई गजल देखू–
जिनगी खेल तमाशा टा
आसक संग निराशा टा

के जानल गऽ कखन केहन
दैबक हाथ तऽ पासा टा

उपरक दूटा शेरक ितािि 2221 1222 अछि आ एिह गजल सभ शेरिि एकरे पालन कएल गेल अछि। जीवनक गूढ़ बातके सरल शब्दिि कहल गेल अछि सेहो व्याकरणक संग। आस आ िनराश दूनू िजवनक भाग छै। दोसर शेरिि भग्य केखन पलटत तकर वणषअछि। अही कहू िवचार कतए बन्हा गेल छै व्याकरणस। ओिपकाशजीक ई दूटा शेर देखू–

कखनो सुखक भोर िलखै छी
कखनो खसल नोर िलखै छी

िठगर रसक बात कहै छी
संगे कर झोर िलखै छी

2-2-1-2, 2-1, 1-2-2 ितािि पत्येक पािनि अछि। शाइर अपन िजी जीवनक बातके बहर-व्याकरणिि कहलिथ आ नीक जका कहलिथ अछि। कोनो शाइरके जीवनिि भऽ रहल सभ बातके िलखबाक चाही ुदा अफसोच जे लोक िकछु कणाक लाभ लेल ने सच बाजए वाहैए आ ने सूनए चाहैए। ुदा शाइर अपन िठ-तीत सभ बात व्याकरणिि किह रहल छिथ। कहा कोनो िदकत छै। अिति िशक दूटा शेर देखल जाए–

जािह घरिि भूखल दीन अहा देखने होयब
हाि िसक बनल िशीन अहा देखने होयब

एक पाइक लेल परान अपन बेच दै छै ओ
गाि घरिि एहन दीन अहा देखने होयब

एकर िताि 2122-2112-1122-1222 अछ। एमे गजलि पगतशीलता सेहो अछ आ बहर-ाकरण सेहो। एखनो कतहु-कतहुस सादि आा जाइए से फला मकछु पाइ लेल अपन बा बेच लेलक वा अपन बा संग जान दऽ देलक। ई सभ बात गजलि अितजी ाकरणक संग रखने छथ। पदीप पुर्प केर एकटा गजल देखल जाए आ सकालीनता, ंग आ ाकरण तीनू एकै संग देखू---

गकैत घाि बला लोक
चकैत चाि बला लोक

भारण आि पर दै छै
थुरी लताि बला लोक

बाटै दरद सगरो खूब
ई झंडु बाि बला लोक

करतै उदार मथलाक
मली असाि बला लोक

िसो केर हाट लगबै
गाधीक गाि बला लोक

222-222-2 सब पािि िताि अछ। पदीपजीक ई गजल सगि र पे ओहन गजलकार सब लेल अछ जे मक अनेरे गजलक ाकरणके

खराप िनै छम्थ। पदीपजी जखन दोसर शेरि "थुरी लतािबला लोक" कहै छम्थ त व्यंग्यक पराकाष्ठा भऽ जाइत अम्छ। अंम्ताि शेरि पयोग भेल "गाधीक गाि बला लोक" पाम्त ओहन लोकक नकाब उतारैत अम्छ म्जनकर जीवनि भीतर म्कछु छम्न आ बाहर म्कछु। रािकुिर म्शिजीक टूटा शेर देखू–

जाम्त- धिम्क जुनाि अम्टयाइते रहलहु
छूत-अछुतक अदहनि उम्धयाइते रहलहु

पेट कोना जिलै पम्तयौलक म्कयो कम्हया
झूठ-साचक भारण धम्र पम्तयाइते रहलहु

सभ पाम्ताि ितािि 2122+222+2212+22 । जाम्त-धिषिएखनो अपना सािज लेल भयावह सपना अम्छ। आ शाइर रािकुिर म्शिजी व्याकरणक संग एकर वणषि केने छम्थ। दोसर शेरि ओ झूठ भारणस जनता कोना तृत्त होइ छै से कहने छम्थ। अही सभ कहू की व्याकरणस भाव बन्हा गेलै? दू टा शेर कुंदन कुिर कणषिीक देखू जाम्हिसि पम्हल शेर म्ाम्िते र पे उपम्ारद् केर िन पािम दैए --

भाव शुद हो त िनिभय कथीके
छोम्िृत्यु जीव लेल म्ािय कथीके

जाम्त धिम्के बढल अहंकार कुन्दन
रम्ह म्ाभेद ई सािज सुखिय कथीके

एकर ितािि 212-1212-122-122 अिछ। भय मािक डर ओकरा होइ छै जे गलत काज करै छै। कुंदनजीक पिहल शेर एकरे उदािहत करैए। दोसर शेरि शाइरक िवशास छिन जे जा धमर जाित भेद ने हटत ता धमर सिजि सुखिय नै भऽ सकैए। पसंगवश कही जे कुंदन कुिार कणर नेपालि िमिथली ओहन पिहल गजलकार छिथ जे मािक अरबी बहरि गजल िलखै छिथ। आगू बढ़बास पिहने सरल वािणक बहर बला गजलक िकछु उदाहरण देिख ली। ि◌नाजीक दूटा शेर देखू-

केखन धोखा देत ई सिानि बजरआ गारंटी नै
ई केखनो हसाएत केखनो देत कना गारंटी नै

सरकार बनाबै एहन योजना गरीबक लेल
केखन जेतैक गरीबक अिस्तत्व िटा गारंटी नै

(19 वणर हरेक पािि।) ि◌नाजी आजुक बजारवादस उपजल किगुणवता बला सिानिक हाल अपन पिहल शेरि कहलिथ। दोसर शेरि ओ सरकारी योजनका ूिलि उदेश्यपर व्यंग्य कऽ रहल छिथ। आब देखू सुमित मिश गुंजनजीक दूटा शेर–

नै कहू कखनो पहाि छै िजनगी
दैबक देलहा उधार छै िजनगी

भारी छै लोकक िनोरथक भार
कनहा लगौने कहार छै िजनगी

(वणष13) गुंजनजीक पम्हल सेर आसास भरल अछ। ओ जीवनके भारत ि निबाक ओकालम नै करै छथ। दोसर शेरि ओ लोकक अनेरेक सेहंताक संकेत देने छथ।

सरल वाणक बहरक उपरका उदाहरणक अलावा मजय कुिर ठाकुर, नारायण धिुशाला, रासिोगारथ यादव , मदानंद बेददी आद सभ सेहो सरल वाणक बहरि गजल लखबाक पयास कऽ रहल छथ। एही ि ि िमथल पशातजीक नाि सेहो जोि जा सकैए। िदा मंता ई जे ई सभ मान मधाि सेहो लखैत छथ तइ हनकर सभहक गजलक पभाव केर आकलन एखन तातकाल नै भऽ सकैए। दोसर मंता ईहो जे वयाकरणक िल भाव रचना सुंदर करब छै केकरो आलोचनाि स्थान भेटबाक क पुरस्कार पाम क आन कोनो पयोजन नै। तइ बहुत रास गजलकार एहनो भऽ सकै छथ जे कोनो अभीष पूरा नै भेलापर वयाकरणक पालन छोमि सकै छथ। िदा फेर दोहरा दी जे "वयाकरणक िल भाव रचना सुंदर करब छै आन कोनो पयोजन मसद करब नै"।

ि मथली बाल गजल

ि मथली बाल गजल शबदक मार पण हिरा दारा भेल छल िदा एह मारय-वस्तुक गजल कमवर सीताराि झा पमहने लीख गेल छथ। तइ ई ि निब उमत जे बाल गजलक अमस्तत िमथलीि पमहनेस छल िदा ओकर नािकरण अनमहार आखर कालखंडि भेलै। उपर

जतेक गजलकार सभहक उदाहरण देने छी वएह सभ बाल गजल सेहो मलखने छमथ तइ बेसी नै त दू-चामर टा बाल गजलक शेर राखख रहल छी। पमहने कमबवर सीताराि झाजीक ई बाल गजल देखू-

बाउजी जागू ठारर भरै छी मकयै
क्यथषसूतल मक बैसल सि छी मकयै

2122+ 122+ 122+ 12 िताि अमछ। आब कुंदन कुिर कणषीक बाल गजल देखू-

गाकि बूढ हिर नानी
छै िितास भरल खानी

2221-1222 िताि अमछ। आब अमित मशिजीक देखू-

हाट चल हाथके पकमि भैया हिर
भीिि जाउ नै मबछमि भैया हिर

212-212-212-212 िताि अमछ। आब पंकज चौधरी नवलशीजीक देखू-

देख भेलै भोर भैया
आब आलस छोि भैया

दाय-बाबा िय-बाबू
लाग सभके गोर भैया

2122+2122 िताि अमछ।

मैथिली भक्ति गजल

मैथिली भक्ति गजल शब्दक प्रयोग पण अमित मिश्र द्वारा भेल छल मुदा एहि विषय-वस्तुक गजल कवीश्वर सीताराम झा पहिने लीखि गेल छथि। तँइ ई निश्चित जे बाल गजलक अस्तित्व मैथिलीमे पहिनेसँ छल मुदा ओकर नामाकरण अनचिन्हार आखरक बाद भेलै। उपर जतेक गजलकार सभहक उदाहरण देने छी वएह सभ बाल गजल सेहो लिखने छथि तँइ बेसी नै त दू-चारि टा भक्ति गजल क शेर राखि रहल छी, पहिने कवीश्वर सीताराम झाजीक–

जगत मे थाकि जगदम्बे अहींक पथ आबि बैसल छी
हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी

1222+1222+1222+1222 मात्राक्रम बहरे हजज। आब जगदानंद झा मनुजीक भक्ति गजल देखू–

हमरि अगना मैया एली
गमकै चहुदिस अड़हुल बेली

धन हम छी धन हमरि अगना
मैया जतए दर्शन देली

22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। आब कुंदन कुमार कर्णजीक भक्ति गजल देखू–

गजल देखू–

हे शारदे मिदअ एहन वरदान
हो जैस मिजनगी हरिो कल्याण

2212-222-221 िताि िअमछ। आब अमित मिशजीक देखू-

सजल दरबार छै जननी
भगत भरिर छै जननी

मिकओ नै हरि छै संगी
खसल आधार छै जननी

1222-1222 िताि िअमछ।

उपरक एम्ह उदाहरण सभस ई स्पष भऽ गेल हएत जे व्याकरण केखनो भाव वा मिचार लेल बाधक नै होइ छै। ह, हजारक हजार रचनाि मिकछु एहन रचना बुझाइ छै जाम्हि व्याकरणक कारण भाव बाम्धत भेलैए िदा ई त रचनाकारक सीिा सेहो भऽ सकै छै। गजल, भम्क्त गजल ओ बाल गजलक अम्तमरम्क्त िम्थलीि व्याकरणयुक्त रबाइ, बाल रबाइ, भम्क्त रबाइ, कता, हजल, नात आम्द मिधा सेहो म्लखल गेल अम्छ आ ओकर उदाहरण पचुर िताि अम्छ आ अहा सभ एकरा अनम्चन्हार आखरपर नीक जका देम्ख सकै छी।

मिना व्याकरण बला िम्थली गजलक इम्तहास

लगभग 1970-75स एखन धम्र बहुतो गजलकार ओहन गजल

लिखलनि जाहिमे गजलक नियमक पालन नै भेल अछि। ई कहब बेसी उचित जे ओहि धाराक गजलकार सभ नियम पालन करहे नै चाहैत छथि। ओ हुनकर अवधारणा हेतनि। एहिठाम ओहि धाराक किछु परमुख गजलकार सभहक नाम देल जा रहल अछि --

1) रवीन्द्र नाथ ठाकुर, 2) मायानंद मिश्र, 3) कलानंद भट, 4) सियाराम झा "सरस", 5) अरविन्द ठाकुर, 6) सुधांशु शेखर चौधरी, 7) धीरेन्द्र पेमिर्ष, 8) बाबा बैदनाथ, 9) विभूति आनन्द, 10) तारानन्द वियोगी, 11) रमेश, 12) राजेन्द्र विमल... आदि।

उपरमे देल परमुख गजलकारक अतिरिक्त बहुतो एहन शाइर सभ छथि जे की छिटपुट आजाद गजल लिखला आ अन्य विधामे हिारत हासिल केलाह। एहि सूचीमे बाबू भुवनेशर सिंह भुवन, रमानंद रेणु, फूल चंर झा पवीण, वैकुण्ठ विदेह, शीतल झा, पेमचंर पंकज, प.सत्यानंद मिश्र, शारदानंद दास परिमल, केदारनाथ लाभ, तारानंद झा तरण, रमाकात राय रमा, हिेन्र कुमार मिश्र, विनोदानंद, दिलीप कुमार झा दिवाना, वैदनाथ मिश्र बैजू, विलट पासवान विहंगम, सारस्वत, कणषसंजय, अमल चंर ठाकुर, श्याम सुन्दर शशि, अशोक दत, कलिम हिन चुनू, रोशन जनकपुरी, जियाउर रहमान जाफरी, धिन्र विहवल्, सुरेन्र पभात, अतुल कुमार मिश्र, रमेश रंजन, कन्हैया लाल मिश्र, गोविन्द दहाल, चंरेश, चंरमिण झा, फजलुर रहमान हाशमी, रामलोचन ठाकुर, विनयविश बंधु, रामदेव भावुक, सोमदेव, रामचैतन्य धीरज, हिेन्र, केदारनाथ लाभ, गोपाल जी झा गोपेश, नंद कुमार मिश्र, देवशंकर नवीन,मिकषपाडेय पवासी,अमरेन्र यादव, नरेन्र आदि। बहुत रास नाम धीरेन्र पेमिरषजी दारा संपादित गजल विशेराक

पर आधारित अछि। मुदा कछु मुदा न धरि गीतल नाि स सेहो पयोग भेल िदा हि एकरा अजादे गजल िनै छी आ वस्तुतः ओ अजादे गजल छै। आ तइ मानचचा हि ओकरो सिटने छी एहि ठाि।

मुबाना व्याकरण बला िमैथली गजलि भेल काज

मुबाना व्याकरण बला िमैथली गजलि एखन धरि कोनो एहन काज नै भेल अछि तइ एहि आधारपर एकर िूल्याकंन करब असंभव त नै िदा बहुत कठिन अछि। एहि धाराक शाइर सभ बस अपन-अपन गजलक पोथीके पकाशित करबा लेबाके काज िमि लेने छथि। आगूस हि "मुबाना व्याकरण बला िमैथली गजल" लेल “अजाद गजल” शब्दक पयोग करब। अजाद गजलक इतिहासि जे पहिल जगमगयार काज देखाइए ओ अछि एहि1990ि मसयाराि झा सरस, तारानंद मुबयोगी, रिशि आ देवशंकर नवीनजी दारा संकलित ओ संपादित साझी गजल संगह "लोकवेद आ लालमुकला" केर पकाशन। एहि संकलनि कुल 12 टा गजलकारक 84 टा गजल अछि। भूमिका सभहक अनुसारे ई संकलन पगतिशील गजलक संकलन अछि आ जाहिर अछि जे एहिि सहभागी गजलकार सभ सेहो पगतिशील हेबे करता। बारहो गजलकारक नाि एना अछि कलानंद भट, तारानंद मुबयोगी, डा.देवशंकर नवीन, नरेनर, डा. िहेन्द्र, रिशि, राि चैतन्य धीरज, राि भरोस कापमि भिर, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, मुबभूमि आनंद, मसयाराि झा सरस, पो. सोि देव। एहि संकलनक अलावे धीरेन्द्र पेिमर्षी दारा संपादित पल्लव केर "गजल अंक" जे मुक 2051 चैति िमैथली मुबकास िच, िठि डूक िमसक साहित्यक पकाशन अंतगति पकाशित भेल (वरष2, अंक-6, पूणाक-15) सेहो अजाद गजलक धाराि नीक

काज अछि। ज अंग्रेजी तारीखसँ बूझी त दिसम्बर 1995 केर लगभगमे पल्लवक "गजल अंक" प्रकाशित भेल अछि (नेपालक तारीख बदलबामे ज हिसाबसँ गलती भेल हो त ओकरा सुधारल जाए)। आगू बढ़बासँ पहिने पल्लवक गजलक अंकक किछु बानगी देखि लिअ-- एहि गजल विशेषांकमे कलानंद भट, फूलचंद्र झा प्रवीण, रविन्द्र रेणु, सियाराम झा सरस, राजेन्द्र विमल, रामदेव झा, बैकुंठ विदेह, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, रवि, शेफालिका वर्मा, शीतल झा, गोपाल झाजी गोपेश, प्रेमचंद्र पंकज, पं.सत्यानंद मिश्र, शारदानंद प्रभाकर, रविकात राय रवि, हिन्द्रकुमार मिश्र, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, चंद्रेश, विनोदानंद, सुदीप कुमार झा दीवाना, वैद्यनाथ मिश्र बैजू, रोशन जनकपुरी, सारस्वत, कर्णष संजय, श्याम सुंदर शशि, अमरजित कुमार आजाद, ललन दास, धर्मेन्द्र विह्वल, सुरेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, रवि रंजन, कन्हैयालाल मिश्र, गोविन्द दहाल आदि 34 टा गजलकारक एक एकटा गजल अछि मने 34 टा गजलकारक 34 टा गजल अछि। एहि विशेषांकक संपादकीय अजादक गजलक हिसाबे अछि। ई पत्रिका कुल चारि पनाक छपैत छल आ ओहि हिसाबे चौतीस टा गजल कोनो खराप संख्या नै छै।

नेपालसँ प्रकाशित पल्लवक "गजल अंक" आ भारतसँ प्रकाशित "लोकवेद आ लालकिला" दूनूक समयमे करीब 6-7 बर्खक अंतराल अछि (प्रकाशनसँ पहिनेक तैयारीके सेहो देखैत)। दूनूक संपादको अलग छथि। दूनू काजक स्थान ओ परिस्थितियो अलग अछि मुदा ओहि के अछैत एकटा दुयोग दूनूमे एक समान रूपसँ विद्यमान अछि। ई दुयोग अछि ओहि अंक सभक संकलनमे पुरान गजलकारके स्थान नै देब। ज दूनू संपादक चाहितथि त ओहि अंक सभक संकलनमे पुरान

गजलकारके सम्मिट कऽ एकटा संपूर्णषम्चत आम्नि सकै छलाह िदा पता नै कोन पम्रम्स्थम्ति म्कि तत्व छलै जे दूनू ठाि एम्हि काजि बाधक बनल रहल। पाचीन गजल बेसी अम्छए नै तइ ने बेसी पाइ लगबाक संभवाना छलै आ ने बेसी िहिनम्नाक जर रम्ति छलै। भऽ सकैए जे म्हनका सभ लेल ई पश िहित्वपूणषनै हो िदा एकटा गजल अध्येताक रपि हिरा सभस बेसी इएह बात खटकल अम्छ। म्कछु एहन तत्व त जरर रहल हेतै जाम्हस पभाम्वत भऽ कऽ दूनू संपादकक एकै रंगक सोच रखने छलाह। खएर सूचना दी जे वतषिान सियि हिरा ओ गजेन्र ठाकुरजी दारा संपाम्दत पोथी "िम्थलीक पम्तनम्ाम्ध गजलः1905स 2016 धम्र" जे म्कि ई-भसषा रपि पकाम्शत अम्छ ताम्हि उपरक दुयोगके दूर कऽ देल गेल अम्छ। एम्हि संकलनि सभ पाचीन गजलकारके स्थान देल गेल अम्छ जाम्हस िम्थली गजलक संपूर्णषछम्व पाठक लग आम्ब जाइत छम्ि।

उपरक काजक अलावे एक-दू बखषपम्हने िधुबनीि सेहो अजाद गजलकार सभ दारा गजल कायषशाला आयोम्जत भेल रहए िदा ओकर सिम्चत तथ्य हिरा लग नै अम्छ तइ ओम्हपर हि म्कछु बजबास बाम्ध रहल छी।

अजाद गजलक शाइर सभ काजि नै ‘‘पयोग’’ि बेसी म्वशास राखै छम्थ आ तकर बानगी म्थक "गीतल"। गीतल (जे म्कि वस्तुतः अजादे गजल अम्छ) केर जनिदाता छम्थ िियानंद मिश। ओ अपन गीतल म्वधा केर पोथी "अवातंतर" केर भूमिकाि(पृष 6 पर) म्लखै छम्थ-- "अवान्तरक आरम्भ अम्छ गीतलस। गीतं लातीम्त गीतलिऽ अथात गीत के आनऽ बला भेल गीतल। म्कन्तु गीतल परम्परागत गीत नम्हि

म्थक, एम्हि एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अम्छ। गीतल गजल केर सब बंधन (सतष) के स्पीकार नम्ह करैत अम्छ। कइयो नम्ह सकैत अम्छ। भाराक अपन-अपन म्बशेरता होइत अम्छ जे ओकर संस्कृम्तक अनुर पे म्नमषि होइत अम्छ। हरि उदेश्य अम्छ मशिणस एकटा नवीन पयोग। तै गीतल ने गीते म्थक, ने गजले म्थक, गीतो म्थक आ गजलो म्थक। म्कन्तु गीम्त तत्पक पधानता अभीष , तै गीतल।" ई पोथी 1988ि म्थिली चेतना पम्ररद्, सहरसा दारा पकाम्शत भेल। उपरका उदोरणाि अहा सभ देम्ख सकै म्छऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अम्छ। पयोग हएब नीक गत्प ुदा अपन कजोरीके भाराक कजोरी बना देब कतहुस उम्चत नै आ हरि जनैत ियानंद जीक ई बिका अपराध छम्न। ज ओ अपन कजोरीके आकैत गीतल केर आरम्भ करतम्थ त कोनो बेजाए गत्प नै ुदा ियाजी पाठकके भमित करबाक पयास केलाह जे म्क तात्काल सफल सेहो भेल। ई िन राखब बेसी जर री जे 2011ि पकाम्शत कम्थत गजल संगह " बहुर म्पाया पदेश ि " जे की अरम्बन्द ठाकुर दारा म्लम्खत अम्छ ताहूि ठीक इएह गत्पके दोहराओल गेलैए। गीतल म्बधाक उदोरणापर सभस बेसी आपम्त म्सयारािझा सरसजीके छम्न जकरा ओ अपन पोथी "शोम्णताएल पएरक म्नशान" केर भूमिकाि म्लखलम्न अम्छ आ एहीठाि अजाद गजल दू ठाि बम्ट गेल। पम्हल म्सयाराि झा सरस एवं अन्य जे म्क गजलके गजल िनै छलाह जाम्हि तारानंद म्बयोगी, रशि, देवशंकर नवीन आम्द छम्थ। दोसर गीतल जाम्हि ियानन्द, तारानन्द झा तर ण, म्बलट पासवान म्बहंगि, आम्द एला वा छम्थ। ऐठा हि ई स्पष करऽ चाहब जे नाि भने जे होइ ियानन्द जी बला गुट वा सरसजी बला गुट दूनू गुटिस कोनो गोटा गजल नै म्लखै छलाह कारण ओ व्याकरणहीन छल। आ

व्याकरणहीन कम्थत गजलके गजल नै गीतले टा कहल जा सकैए।

ि म्थिलीक अजाद गजलि नै भेल काज

1) गजलक संख्या वृम्द्ध म्द्दस धेआन नै देब-- गजलक संख्या वृम्द्धस हरि तिलब अपनो म्लखल गजल आ अनको म्लखल गजल अम्छ। कम्थत िम्तकारी सभहक म्वचार अम्छ जे कर्मि म्लखू ि दा नीक म्लखू। ि दा सवाल ओतम्ह रम्ह जाइ छै जे नीक रचना म्साधारण केना हो जखन म्क लोक लग सीमि त संख्याि रचना रहै। हरिा म्हसाबे ई भाम्त अम्छ जे कि रचलास नीके होइत छै। हरि स्पष म्वचार अम्छ जे रचना संख्या बढ़लास अपना भीतर पम्तयोमाता बढ़ै छै आ भम्वष्यि नीक रचना म्लखबाक संभावना बम्ढ़ जाइत छै। जाम्ह म्वधाि बेसी म्लखाइत छै ओकर पचार-पसार ओ लोकम्पयता बेसी जल्दी होइत छै। ि दा अजाद गजलकार सभ एम्ह ि षिके नै बुम्झ सकलाह। हरिा बुझाइए जे ि म्थिलीक अजाद गजलकार सभ पम्तयोमातास डेराइत छम्थ। हुनका बुझाइ छम्न जे ज कादम्चत् पम्तयोमाताि हाम्र गेलहु त हरि की हएत। ि दा हुनका सभके बुझबाक चाही जे साम्हत्यि जीत-हाम्र सन कोनो बात नै होइ छै।

2) गजलकारक संख्या वृम्द्ध म्द्दस धेआन नै देब--- कोनो म्वधाक म्नयि टुटलास ओ म्वधा सरल बम्न जाइत छै आ ओम्ह म्वधाि बहुत रास रचनाकार आबै छम्थ जेना म्क कम्वता म्वधाि भेलै। तखन ि म्थिलीि म्वना म्नयि केर गजल रम्हतो ऐि शाइरक कि ी म्कएक रहल? ि म्थिलीक अजाद गजलकार सभ कते नव शाइरके पोत्साम्हत केलम्थ। जबाब सुना भेटत। ि म्थिलीक अजाद गजलकार सभ अपने

लीखै छथि आ अपनेस शुर आ अपनेपर खतम। आखिर गजल विधामे नव शाइर अनबाक जरूरति केकरा छलै? ईहो कहल जा सकैए जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ जानि बूझि कऽ अपन वर्चस्वक सुरक्षा रखबाक लेल नव शाइरके पोत्साहित नै केलथि। हुनका सभ डर छलनि जे कही हिरास बेसी ओकरे सभहक नामि नै भऽ जाइ।

3) मैथिली गजलक आलोचना दिस धेआन नै देब-- जेना कि सभ जानै छी जे आलोचना कोनो विधा लेल पाण होइत छै मुदा आश्चर्य जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ गजल-आलोचनाके हेय दृष्टिसँ देखला। मैथिलीमे अजाद गजलक पक्षधर गजलकार मायारामि झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीनजीक संपादनमे बर्ख 1990मे " लालकमला आ लोकवेद " नामक एकटा साझी गजल संगह आएल। एहि संगहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आलेख अछि। पहिल आलेख सरसजीक छनि आ ओ तकर शुरुआत एना करै छथि -- " समालोचना आ साहित्यक इतिहास लेखनक केन्द्रमे तकरे कलम भजबाक चाही जकरा ओहि साहित्यक पत्येक सूक्ष्मतम स्पंदनक अनुभूति होइ......."। अथात सरसजीके हिसाबे कोनो साहित्यक विधाक आलोचना, समीक्षा, वा ओकर इतिहास लेखन वएह कए सकैए जे की ओहि विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी त ई नतीजा निकलैए जे गजल विधाक आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे की गजलकार होथि। मुदा हमरा आश्चर्य लगैए जे ने 1990सँ पहिले सरसजी ई काज केलाह आ ने 1990सँ 2008 धरि ई काज कऽ सकलाह (सरसेजी किए आनो सभ एहन काज नै कऽ सकलाह)। 2008के एहि दुआरे हम चिनक बर्ख लेलहु जे कारण 2008मे हिनकर चिनी सरसजीक

एखन धमरक अंमता कमथत गजल संगह "थोि आमा थोि पामन" एलमहह ि दा ओहू ि ओ एहन काज नै कऽ सकलाह। ई हि रा महसाबे कोनो गजलकारक सीि भए सकैत छलै ि दा सरसजी फेर ओही आि ख के तेसर आ चामर ि पृष पर मलखै छमथ" मिथली सामहत्यि त बंगला जका गीमत-सामहमत्यक एकटा सुदीघष परंपरा रहलैक अमछ। गजल अही परंपराक नव्यतम मवकास मथक, कोनो पमतबद आलोचकके से बुझऽ पि तैक। ह ई एकटा दीगर आ ि हत्वपूणष बात भए सकैछ जे मिथलीक सि कालीन आलोचकक पास एमह नव्यतम मवधाक आलोचना हेतु कोनो ि पिदंमडके नमह छमनह। नमह छमनह त तकर जोगार करथु........" आब ई देखल जाए जे एकै आलेखि कोना दू अलग अलग बात कमह रहल छमथ सरसजी । आलेखक शुरआति हुनक भावना छमनह जे " जे आदि ी गजल नै लीखै छमथ से एकर सि ीक्षा वा इमतहास लेखन लेल अयोग्य छमथ ि दा फेर ओही आलेखि ओहन आलोचकस गजल लेल ि पिदंड चाहै छमथ जे कमहयो गजल नमह मलखला। भए सकैए जे सरसजी ई आरोप सरसजी अपन पूवषती मववादास्पद गजलकार ि ियानंद मि श पर लगबमथ होमथ। जे की सरसजीक हरेक आलेखस स्पष होइत अमछ। ि दा ऐठाि हि रा सरसजीस एकटा पश जे ज कोनो कारणवश ि िया जी ओ काज नै कए सकलाह वा ज ि ियानंद जी ई कमहए देलमखन्ह मिथलीि गजल नै मलखल जा सकैए त ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरसजी) की केलमखन्ह। 2008 धमर मिथलीि 10-12 टा कमथत गजल संगह आमब चुकल छल। ि दा अपने सरसजी कहा एकौटा कमथत गजल संगह सि ीक्षा वा आलोचना केलमखन्ह। गजलक व्याकरण वा इमतहास लेखन त बहुत दूरक बात भए गेल। ऐ आलेखस दोसर बात इहो स्पष अमछ जे सरसजी कोनो सि कालीन आलोचकके

गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। ओ जँ कदाचित् कनेकबो सरसजी आलोचक सभके मापदंड मानतथि तँ संभवतः 2008 धरि गजल केर एहन अकाल नै रहितै।

आब हम आबी विदेहक अंक 96 पर जाहिमे शीष वाना जी द्वारा गजल पर परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग पेचिंद पंकज नामक एकटा प्रतिभागी सेहो छथि। पंकजजी अपन आलेखमे आन बातक संग इहो लिखैत छथि -" कमोपय व्यक्तिगत एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नै भेटि रहल छैक। एहन बात प्रायः एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलके कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिकऽ एहिपर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बूझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जिनकामे गजलक सूक्ष्मताके बुझबाक अवगमताक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिके बुझबाक लेल हुनका लोकनिके स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भटा नहि धरओतनि। हँ, एतबा मानि लिय जे गजल धुमझाम लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बल पर समीक्षक-समालोचक लोकनिके अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़ति "

अर्थात पेचिंद जी सरसे जी जकाँ भटा नै धरेबाक पक्षमे छथि। सरसजी 1990मे कहै छथि ओ दा पंकजजी 2011केर अंतमे मतलब 22साल बाद। मतलब बखष बदलैत गेलै ओ दा मानसिकता नै बदललै। ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे भटा धराबए लेल जे जान आ इच्छा शक्ति होइ छै से बजारमे नै बिकाइत छै। संगे-संग ईहो कहए

चाहब जे िियानंद मिशजीक बयान आ अजानतास िमिथली गजलके जतेक अिहत भेलै ताहिस बेसी अिहत सरसजी वा पंकजजीक सन गजलकारस भेलै। ऐठाि ई सपष करब बेसी जररी जे हि ऐ बातस बेसी दुखी नै छी जे ई सभ िबना ियाकरणक गजल िकए िलखला िदा ऐ बातस बेसी दुखी छी जे ई गजलकार सभ पाठकक संग िवशासघात केला। ज ई सभ सोझ रपे किह देने रिहतिथन जे गजलक ियाकरण होइ छै आ हि सभ ओकर पालन नै कऽ सकै छी तखन बाते खति छलै िदा अपन किजोरीके नुकेबाक लेल ई सभ नाना पकारक पपंच रचला जकर दुषपिरणाि गजल भोगलक। हिरा जहा धिर अधययन अिछ तहा धिर लगभग िित 4-5 टा गजल आलोचना सवतंत लेखक रपि अजाद गजलकार सभ दारा िलखल गेल अिछ (ज पोथीक भूमिका सभके सेहो जोिि त एकर संखया 8-9 टा भऽ सकैए)। एिह किीि तारानंद िवयोगीजीक "िमिथली गजलः िूलयाकंनक िदशा", देवशंकर नवीनजीक "िमिथली गजलःसवरप आ संभावना", धीरेनर पेिमिषजीक "िमिथलीि गजल आ एकर संरचना" आिद पिुख अिछ।

िमिथलीक अजाद गजलक िकछु उदाहरण

जेना िक पिहने कहने छी अजाद गजलि ियाकरण नै अिछ तइ हि एकर उदाहरणि शेर सभहक खाली भाव संबंधी िववेचना करब (उदाहरणि आएल शेर सभ एकौ गजलक भऽ सकैए आ अलग अलग गजलक सेहो। संपादक िहोदयस आगह जे उदाहरणि देलग गेल शेर सभहक वतषीके यथावत् राखिथ)--

सुधाशु शेखर चौधरी जीक दू टा शेर--

अपने बेसाहल बाटस पेरा रहल छी हि
अपने लगाओल काटस घेरा रहल छी हि

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

हि पल ओछौने बाट छी मनाराश नै करबै
मनातुआन सन अधार छी हताश नै करबै

पमहल शेरि शाइर सुधाशुजी अपनेस जनलि ससिया कोना परैशान करै छै तकर नीक संकेत देलाह अमछ। दोसर शेर महनक गजलक ूलि भाव (खुदा-बंदा बला, एकरा संसामरक र पि सेहो लऽ सकै मछयै) सटिने अमछ।

अरमबन्दद ठाकुर जीक दू टा शेर–

संसद केर फोटो ि मकछुओ नमह हेर फेर
सापनाथ नागनाथ इएह दुनू बेर बेर
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
लीक छोमि जे चलल मसयार
बमन गेल एक मदन चौकीदार

पमहल शेरि शाइर अरमबन्दद ठाकुरजी देशक जनताक मबडंवनाक मचतण केने छमथ। जनता बर कोनो पाटीके भोट मकए ने दै सभ पाटीक

चमरत एकै रंगक भऽ जाइ छै। दोसर शेरक मिहनक व्यंग्य अछि जाहिमे नकली मिलनकामनाताके उजागर कएल गेल अछि।

मिभूमि आनंद जीक दू टा शेर–

एकेटा धारणा अछि एकेटा उदेस
क्यो ने होए रंक आ ने क्यो नरेश
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
फूलो मे फूल, अड़हूल केर रंग जका
चारभर तेजी स पसरि रहल जनता

पहिल शेरमे शाइर मिभूमि आनंदजी सभहक हितक बात रखने छथि। आ दोसर शेरमे ओ कम्यूनिष पाटीक पतीक लाल रंगक तुलना अड़हूल फूलस केने छथि।

कलानंद भट जीक दू टा शेर–

शंकामे विध्वंसक आइ जीबि रहल लोक
अविवेकी अधिकारमे अणुबम भेल छै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
अछि बटोही सशंकित बनल बाट पर
दिन मे आभास रातुक अभरि गेल अछि

पहिल शेरमे शाइर कलानंद भटजी वतमान सस्थिाक वणन केने छथि। कोन देश कोन बहनास कतए कमिहया आ कोणि कऽ देत तकर

कोनो मतैकान नै। दोसर शेरि सेहो एहने सन भाव अछि।

बाबा बैदनाथ जीक दू टा शेर-

कोन एहन हि काज कर जे लागय कोनो पाप नहि
भूखक आभास बेसी भैया अछि कोनो संताप नहि
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
कहियो ज िनि पिए अपन अतीतक जीवन
बस आखि मूिन दूनू कमाये लजा गेलअ

अरब देशक एकटा कहबी छै जे पाथर वएह िरिए जे कोनो पाप नै केने हो। एही भावके शाइर वैदनाथजी अंकित केने छथि पहिल शेरि। दोसर शेर मनक कििलोस कििल अछि। कोनो कुकििके एहि स बेसी धुतकारल नै जा सकैए।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर जीक दू टा शेर-

हसैत भोर सजल साझ लोक सदा चाहैए
उदास भोर िरिल साझ तकर की होयत
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जे पानि पीबि बैसल हो घाट घटा केर
पता तकरा नहि ंस जाय पूछी बजार हाट केर

शाइर रवीन्द्रजी पहिल शेरि घटल लोकक संकेत देने छथि पतीकक रपि। पाइ घटिते सिाग सेहो घटि जाइ छै अइ दुनियाि। दोसर

शेरमे कतिलक प्रतीकक प्रयोग भेल अछि। हाट-बजारमे वएह ठमकि सकैए जे एकर घाट-घाट केर पानि पीने हो। ई बात प्राचीन हाटसँ लऽ कऽ एखनुक आधुनिक स्टोरपर सेहो लागू अछि।

नित्यानंद मिश्र जीक दू टा शेर–

एखन त रामो अछि आ रामो केर बातो अछि
कतेक रामक धर्म कतेक रामक केर चलतै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
देखक बाद नहि देखैक बनि बहाना अछि
चलैत भीड़मे एकसगर जेना हेरायल छी

शाइर नित्यानंदजी पहिल शेरमे सत्यिचरित्रक संदर्भमे बात कहने छथि। दोसर शेरमे हुनकर ओहन दुख सामने आएल अछि जाहिमे पहिचानल लोक सेहो अनचिन्हार बनि जाइ छै।

मिथिलेश झा सरस जीक दू टा शेर–
पूर्णिमा केर दूध बोरि ओलसि गेल इजोर हो
श्वेत वसनक घोघ तर धरतीक पोरे पोर हो
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
नित्थ उठबए सवाल सोनित के
काल लीखैछ हाल सोनित के

मिथिलेशजीक पहिल शेर शाश्वत सौंदर्यक वर्णनमे अछि त दोसर शेर प्रगतिशील।

रशि जीक दू टा शेर–

सीथ जए टा चाही तए टा छूम्ब म्लय
टीस ुदा ताम्जन्दगी रहैत छै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जाु आ गम्हाम्र केर छाह तर ि
बास केर कोपर सुखैल जा रहल

शाइर रशि जीक पम्हल शेर असफल पेि आ ओकर टीसक नीक वणषा अम्छ। दोसर शेर उन्टा अम्छ। व्यावहाम्रक रपस बासक छाहि कोनो आर गाछ नै नहिर होइत छै ुदा शाइर अपन शेरि जाु आ गम्हाम्र केर छाहस बासक भयक वणषा केने छम्थ। दोसर शेरक म्बम्बध व्याख्या भऽ सकैए।

राजेन्र म्बालि जीक दू टा शेर–

डाम्रस जे चूकत त बानर बडौर लेत
बेरपर हूसत से केराके घौर लेत
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
चानीक बटा सन नभि संम्चत नक्तक िती
अही लेल बस अही लेल सूम्ष क सतरंगी जोती

शाइर राजेन्रजीक पम्हल शेर हिरा जनैत जनतापर व्यंग्य अम्छ। जनते एहन अम्छ जे सभ सयि हो-हो करैए ुदा बेरपर हुम्स जाइए। म्हनक दोसर शर पेकि सौदयषवणषा अम्छ।

धीरेन्द्र पेमिर्षजीक दू टा शेर–

म्जनगी अम्छ बि म्घनाह नाक चुबैत पोटासन
सुम्कि सुम्कि तैयो छी ढोम्बा रहल िटासन!
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
कोन म्वजय लए खेल ई खुम्नाया
जइि सभक म्सकस्त भेल छै

जीवनके म्नाम्हिए कऽ म्कयो िहान बनै छै। आ जीवन म्नाहिए लेल नीक-बेजाए सभ करए पिैत छै धीरेन्द्रजीक पम्हल शेरक िूलि भाव इएह अम्छ। दोसर शेरि धीरेन्द्रजी ओम्ह अजात िजबूरी म्दस संकेत केने छम्थ जाम्ह कारणस लोक एक दोसरक दुशिन बम्न गेल अम्छ। आ िित अपन जय लेल सभहक पराजय केर जोगाि करैए ुदा अंतिि सभहक संग ओहो हाम्र जाइए अनेक कारणस।
तारानंद म्वयोगी जीक दू टा शेर–

म्घचने म्घचाइछ नम्ह म्जनगी के गाििी
एक खंड ुस्की आ बहुते लचारी
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
ओम्हना के ओम्हना म्जनगी िरैत गेलै
एके सन फोटो स एलबि भरैत गेलै

पम्हल शेरि शाइर तारानंद म्वयोगी जीवन ओम्ह सीिपर पहुम्च गेल छम्थ जतए आदिी हताश भऽ बैम्स जाइए। म्कछु लोक एम्ह सेरके

निराशावादी कहि सकै छथि मुदा हिनका जनैत निराशा सेहो जीवनेक अंग छै। दोसर शेरमे शाइर जीवनक एकरसतास उबिआएल बुझाइत छथि।

रोशन जनकपुरी जीक दू टा शेर–

आङनमे अछि गुमसुम रहल कागजके बाघ
घर घरमे अछि रोहटि-कना, डर लगैए
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जानि ने कहिया धरि बूझत ई लोक जे
वधशालामे आतंकिक जोर नहि होइत छै

पहिल शेरमे शाइर जनकपुरीजी लोकक भीतरक अजात अदंकक वर्णन केने छथि। सभके बूझल छै जे बाघ कागज केर छै मुदा एखनुक लोक असगर भऽ चुकल अछि आ ओही कारणस ओकरा कागजक बाघस सेहो डर लागि रहल छै। कोनो हत्या करए बला आदमिए होइत छै से दोसर शेरस बुझा जाइत अछि जखन कि शाइर हत्याराक पैरवी करै छथि। आब ई हत्यारा कोनो रूपमे कोनो कारणस कियो भऽ सकैए। मुदा आदमिएके मारए बला हत्यारा होइत छै से निश्चित एकभगाह अछि।

उपरमे देल गेल अजाद गजलक उदाहरणस ई बात स्पष्ट अछि जे सभ अजाद गजलकार सभहक भाव नीक छनि। भावमे बसल बिंब खाटी मैथिल छनि। पतीक सेहो नव छनि मुदा बस गजलक व्याकरण नै छनि। जखन कि शुरुआतेमे कहने छी बिना कोनो बहरक गजल नै होइत छै। आश्चर्य ईहो जे अजाद गजलकार सभ दुष्यंत कुमार

मक अदि गोडवी की फैज अहदि फैज केर उदाहरण दै छमथ िदा दुष्यंत कुिर मक अदि गोडवी की फैज अहदि फैज केर गजलि पयोग भेल व्याकरणके नै देमख पाबै छमथ। अजाद गजलकार सभहक तकषछमम जे जखन रचनाि भाव, मबंब, मवचार सभ मकछु छै तखन ओकरा गजल िनिबाि की मदकत। िदा हि उनटा पूछब जे ओकरा कमवते िनिबाि की मदकत? अंततः कोनो कमवताि भाव, मबंब, मवचार होइते छै ने। तइ ओकरा कमवते िनू। िदा दुखद जे अजाद गजलकार सभ कहता जे ई कमवता नै गजल अमछ िदा कोना तइ लेल हुनका तकषनै छमम। मकछु त तत्व हेतै जे कमवता, गीत आ गजलके अलग-अलग करैत हेतै। हिरा महसाबे बहर-काम्फया, व्याकरण ओ तत्व छै जामहस कमवता, गीत आ गजलि अंतर कएल जा सकैए।

उपरि हि कहने छी जे अजाद गजलकार सभ दुष्यंत कुिर, अदि गोडवी आमदके बहुत िनै छमथ त एक बेर कने ईहो देमख ली जे दुष्यंत कुिर, अदि गोडवी सभ गजल व्याकरणक पालन केने छमथ की नै---

सूयषकात मतपाठी मनराला जीक ई शेर देखू-

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हिारे मदल ि है
देश को मिल जाए जो पूजी तुम्हारी मिल ि है

िितला (िनि पमहल शेर)क िताि ि अमछ-- 2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक िताि ि इएह अमछ।

मरालाजीक ई गजल तामक कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलि व्याकरणक पालन भेल छै मक नै। दुष्यंत कुमिरक ऐ गजलक तक्ती देखू---

हो गई है / पीर पर्वत /सी मघलनी / चाम्हए,
इस म्हिलय / से कोई गं / गा मनकलनी / चाम्हए।

अइ शेरक मितामि 2122 / 2122 / 2122 / 212 अम्छ। दुष्यंतजीक ई गजल तामक कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलि व्याकरणक पालन भेल छै मक नै। आब कने अदि गोडवी जीक दू टा गजलक तक्ती देखू–

ग़ज़ल को ले / चलो अब गा / व के म्दलकश /नज़ारो मि
मिसल्सल फ़न / का दि घुटता / है इन अदबी / इदारो मि

अइ शेरक मितामि 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अम्छ।

भूख के एह / सास को शे / रोसुख़न तक /ले चलो
या अदब को / मिफ़्मलसो की / अंजुनि तक /ले चलो

अइ शेरक मितामि 2122 / 2122 / 2122 / 212 अम्छ। अहा सभ अदमिजीक दूनू गजल तामक पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलि व्याकरणक पालन भेल छै मक नै। एकटा ओहन गजलकारक गजल केत तक्ती देखा रहल छी म्जनक नामि लऽ सभ अजाद गजलकार सभ बहर ओ छंदक म्बरोध करै छम्थ। त चलू फैज अहमिद फैज

जीक ई गजल देखू-

शैख साहब से रस्मि-राह न की
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की

अइ शेरक मात्राक्रम 2122-1212-112 अछि। अहा सभ पूरा गजल ताकि कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। तेनाहिते आजुक प्रसिद्ध शाइर मुनव्वर राना केर ऐ गजलक तक्ती देखू-

बहुत पानी बरसता है तो मिट्टी बैठ जाती है
न रोया कर बहुत रोने से छाती बैठ जाती है

अइ शेरक मात्राक्रम 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अछि। अहा सभ पूरा गजल ताकि कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। हसरत मोहानीक ई प्रसिद्ध गजल देखू---

चुपकेचुपके रात दिन आसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

अइ शेरक मात्राक्रम 2122+2122+2122+212 अछि। अहा सभ पूरा गजल ताकि कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। अंतमे राहत इन्दौरी जीक एकटा गजलक दू टा शेरके देखू देखू-

चरागो को उछाला जा रहा है
हवा पर रौब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
गिर ससका उछाला जा रहा है

अइ दूनू शेरक तिातिि गजल (1222 / 1222 / 122) (बहर-ए-हजज केर जिाइफ) अछि। अहा सभ पूरा गजल ताकि पढू आ मिलाउ जे पूरा गजलि व्याकरणक पालन भेल छै कि नै।

उपरि देल गेल हिंदी-उदूष गजलकार सभहक शेर सभके देखलास पता चलत जे नराला जी गजलक वारय नव कऽ देलखन पेमिकाक बदला वारय मलि आ पूजी बनि गेलै दिा व्याकरण वएह रहलै। अदजिी भखूक एहसासके शेरो-सुखन धरि लऽ गेलाह दिा ओही व्याकरणक संग। दुष्यंतजी अपन गजलक िधियि हिलियस गंगा नाकालि देलाह दिा व्याकरण ने तोिलाह। फैज अहदि फैज अपन गजलि धामिषिक कटरताक वारोध केलाह दिा ओहो व्याकरण नै तोिलाह। तेनाहिते आनो शाइर सभ नव भाव-भंमािक गजल लखने छथि सेहो व्याकरणक पालन करैत। तखन ई मिथलीक अजाद गजलकार सभ कहै छथि जे व्याकरणस भाव-वाचार बन्हा जाइ छै या गजलि व्याकरण नै होइ छै से कते उचित? एहिठाि आमि हिरा ई कहबा / स्वीकार करबाि कोनो संकोच नै जे ज ई अजाद गजलकार सभ अपन जद छोमिि एखनो गजलक व्याकरण स्वीकार कऽ लेता त मिथली गजलक सुदन शुर भऽ जाएत कारण हिनका सभ लग भाव-बोध, वाचार ओ अनुभव बहुत बेसी छनि दिा वाधागत

व्याकरण ने पालन करबाक कारणे हिनकर सभहक लिखलपर बाधाक र पि पशासिि लामा जाइत अछि। सयाराि झा सरसजीके दुख छनि जे गीत बाधा वतर्मािन िमिथलीक केरीय बाधा िकए नै अछि (देखू हुनकर पोथी आखर-आखर गीत केर भूमिका)। ई दुख हिरो अछि गजलक संदभर्ि, गीतक संदभर्ि आ सभ छंदयुक्त काव्यक संदभर्ि। हिरो ई इच्छा अछि जे गजल-गीत-अन्य छंदयुक्त काव्य िमिथली साहित्य केर केरीय बाधा बनए। बनियो सकैए। ज अनसिुसार आखर-विदेह ि ित दस बखर्ि िकछुए गजल कायर्कताक संग अपन गजल संबंधी लक्ष्य पूरा कऽ सकैए त फेर अनुि ान कर जे ज सभ अजाद गजलकार सभ अपन मजद छोमि व्याकरण बला गजल लिखनाइ शुर कऽ देथि त कतेक कि सिय़ि ई लक्ष्य पूरा हएत? िदा ताहि लेल जरूरी छै बाधागत छंद ओ व्याकरणके िननाइ। एकटा गजल कायर्कताक तौरपर हिरा बशास अछि जे ज सभ नै त अधिकाश अजाद गजलकार मजद छोमि बाधागत छंद के िनिता त िित 15-20 बखर्ि गजल-गीत-अन्य छंदयुक्त काव्य िमिथली साहित्य केर केरीय बाधा बनि जाएत। ई बशास हिरा एनाहिते नै अछि एकर पाछू अनसिुसार आखर ओ विदेहक बशास सेहो अछि। गजलक एकटा कायर्कताक तौरपर हि पतीक्षा कऽ रहल छी जे कहिया िमिथली गजलके ई सौभाग्य भेटतै जे ओ िमिथली साहित्यक केरीय बाधा बनत आ ताहूस पहिने हिरा अइ बातक पतीक्षा अछि जे कोन-कोन अजाद गजलकार सभ हिर एहि सपनाके यथाथर्ि बदलबाक लेल सहयोग देता। पतीक्षारत.....................

नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलक तुलनात्मक विवेचना

एहिठाम सभ लेल हम नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलके चुनलहुँ अछि। ई सभ एकै गजलकारक दू भाषामे लिखल गजलक तुलना अछि। पहिने हम दूनू भाषाक गजल आ ओकर बहरक तक्ती ओ रदीफ-काफियाक समीक्षा करब तकर बाद भाव, कथ्य ओ भाषाक हिसाबस।

नरेन्द्रजीक चारि टा मैथिली गजल जे मिथिला दर्शनक Nov-Dec-16 अंकमे प्रकाशित अछि---

१

राज काज भगवान भरोसे
अछि सुराज भगवान भरोसे

छूलिधनक त बाते छोड़ू
सूदि ब्याज भगवान भरोसे

खूब सभ्यता आयल अछि ई
लोक लाज भगवान भरोसे

देह ठठा कऽ कर किसानी
आ अनाज भगवान भरोसे

अपना भम्र सब ब्योत म्मराऊ
म्कंतु भाज भगवान भरोसे

एम्ह गजलक पम्हल शेरक पम्हल पाम्ता आठ टा दीघषअम्छ। दोसर पाम्ता आठ टा दीघषअम्छ। दोसर शेरक पम्हल पाम्ता सात टा दीघष आ एकटा लघु (त) अम्छ। हिरा लगैए शाइर त शब्दके दीघषिम्न लेने छम्थ जे म्क गलत अम्छ। पं. गोम्वन्द झाजी अपन व्याकरणक पोथीा एहन शब्दके लघुए िनने छम्थ जे म्क सवथा उम्चत तइ एम्ह गजला सेहो ई लघु हएत। कोनो लघुके दीघषिम्न लेबाक परंपरा गजला त नै छै ुदा म्थली गजला हिरा लोकम्न संस्कृतक म्नयिक अनुसार अंम्ता लघुके दीघषिनै छी ुदा एम्ह गजला त बीचक लघुके दीघषिनल गेल अम्छ जे दूनू परंपरा (गजल आ संस्कृत) म्हसाबे गलत अम्छ। दोसर पाम्ता आठ टा दीघषअम्छ। तेसर शेरक दूनू पाम्ता आठ-ठ दीघषअम्छ। चाम्रा शेरक पम्हल पाम्ता सात टा दीघषआ एकटा लघु अम्छ (कऽ) एम्हठाा हि दोसर शेरक पम्हल पाम्त लेल जे हि बात कहने छी तकरे बुझू। दोसर शेरा आठ टा दीघषअम्छ। पाचा शेरक दूनू पाम्ता आठ-आठ टा दीघषअम्छ। एम्ह गजलक रदीफ "भगवान भरोसे" अम्छ आ काम्फया "आ" ध्वम्न संग "ज" वणषअम्छ जेना काज-सुराज, ब्याज, लाज, अनाज ुदा पाचा शेरक काम्फया अम्छ "भाज" जे म्क गलत अम्छ। "भाज" केर ध्वम्न "आ" केर ज छै ुदा तिलाा "आ" ध्वम्नक संग ज छै। तइ पाचा शेरक काम्फया गलत अम्छ। ई गजल बहरे िरपर आधाम्रत अम्छ जाम्हा जकर म्नया अम्छ जे "ज कोनो गजला हरेक िता दीघषहो त ओकर अलग-अलग लघुके सेहो दीघष

िनल जा सकैए। ि◌दा बहरे िरक म्हसाबस सेहो एम्ह गजलि कि अम्छ।

२

फोि ति आम्ख म्हवाली आनत
कान काम्ट कनबाली आनत
अहीक हाथ पयर कटबा लय
टाका टाम्न भुजाली आनत

देश पेि केर डंका पीटत
केस िकदि जाली आनत

पेट बाम्ह कऽ कर चाकरी
एहने आब बहाली आनत

पूरा पूरी दान चुका कऽ
सबटा म्डब्बा खाली आनत

एम्ह गजलक पम्हल आ दोसर शेरक हरेक पाम्नि आठ-आठ टा दीघष अम्छ। तेसर शेरक पम्हल पाम्नि एकटा लघु फाम्जल अम्छ तेनाम्हते दोसर पाम्नि सेहो एकटा लघु फाम्जल अम्छ। चाम्रि शेरक पम्हल पाम्नि छह टा दीघषआ दू टा लघु अम्छ। कऽ शब्दक म्बवेचना उपर जका रहत। दोसर पाम्नि "ए" शब्दके लघु िम्न लेल गेल अम्छ जे म्क हिरा म्हसाबे उम्चत नै। पाचि सेरक पम्हल पाम्नि सात टा

दीघषआ एकटा लघु अम्छ। कऽ लेल उपरके म्मवेचना देखू। दोसर पाम्ता ि आठ टा दीघषअम्छ। एम्ह गजलक काम्फया ठीक अम्छ। ई गजल बहरे ि िरपर आधाम्रत अम्छ जाम्हि जकर म्मयि अम्छ जे "ज कोनो गजलि हरेक ि िता दीघषहो त ओकर अलग-अलग लघुके सेहो दीघष िनिल जा सकैए। ि िदा बहरे ि िरक म्हसाबस सेहो एम्ह गजलि क ि ी अम्छ।

३

लाख उपलम्बधस ओ घेरा गेल अम्छ
बस हृदय आदि ी के हेरा गेल अम्छ

सब स ि ाजिक चलन औपचाम्रक बनल
लोक संबंधस आन डेरा गेल अम्छ

सबटा चेहरा बनौआ अपम्रम्चत जका
ि ूल चेहरा ससम्र कऽ प ि ा गेल अम्छ

भोरस साझ धम्र फूम्स पर फूम्स म्थक
लोक अपने नजम्रस धरा गेल अम्छ

देशक सोना पाम्रख बनत एक म्दन
फेर अनचोके ि ि ई फुरा गेल अम्छ

एम्ह गजलक पम्हल शेरक पम्हल पाम्तक ि िता ि ि 2122-1122-

2212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-1222-2212 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122-1221-2212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-1121-22212 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2121-2122-12212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2121-2122-12212 अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 211212212212 अछि आ दोसर पाँतिक 212212112212 अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 22222112212 अछि आ दोसर पाँतिक 212222212212 अछि। एहि गजलक तेसर, चारिम आ पाँचम शेरक काफिया गलत अछि। एहि गजलके हरिरा बहरेमरिपर निबास आपन अछि आ से मानि कए ई पाटक लोकनि मात्राक्रम जोडि देखि सकै छथि जे अलग-अलग लघु जोडि बादो लघु बनि जाइत छै। तइ हरिरा आपन अछि संगे-संग ई गजल आर कोनो बहरपर आधारित नै अछि सेहो स्पष्ट अछि।

४

मड़बा सन सन शहरक घर अछि
पानि हवा मिलिल जहर अछि

गाम जेना बेदखल भऽ रहल
बाध बोन धरि घुसल शहर अछि

आजुक युगमे कोना पकडि़बै
चोर साधु कि की अंतर अछि

देश बनल शो केश बजारक
जनतंतक बेजोड़ असर अछि

अजब दौर अछि लक्ष्य लापता
दिशा हीन ई भेल सफर अछि

मतलाक दूनू पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिमे आठ टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिमे आठ टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। चारिम आ पाँचम शेरक दूनू पाँतिमे आठ आठ टा दीर्घ अछि। एहि गजलमे आएल "भेल सफर" शब्द युग्मपर आगू चलि भारा खंडमे चर्चा हएत। ई गजल बहरे मीरपर आधारित अछि जाहिमे जकर नियम अछि जे "जँ कोनो गजलमे हरेक मात्रा दीर्घ हो त ओकर अलग-अलग लघुके सेहो दीर्घ मानल जा सकैए। एहि गजलक मतलाक पहिल पाँतिक काफिया "घर" केर उच्चारण हिंदी सन कएल जाए तखने सही हएत अन्यथा मैथिली उच्चारण हिसाबे गलत हएत। बाद बाकी शेरक काफिया मतलाक काफियापर निर्भर करत तँइ ओकर विवेचना नहि नै क' रहल छी।

नरेन्द्रजीक चारि टा हिंदी गजल जे कि हुनक फेसबुकक वालस लेल गेल अछि----

१

यह जो चौपट यहा का राजा है
कुछ नही वक़्त का ताकाजा है

हिलाई से बहुत डरते है
क्यूं कि कुछ घाव अभी ताजा है.

देश उनके लिए खिलौना है
हिको इस बात का अन्दाजा है

जैसे चाहे इसे बाजाते है
गोकि जनतंत जक बाजा है

अब उठा है तो धूि से निकले
यारो आशिक का ये जनाजा है

एहि गजलक पहिल पहिल आ दोसर दूनू शेरक शेरक मात्रा 2122-12-1222 अछि। एहि शेरक दोसर पाँति शायद टाइपिंग गलती छै तइ सही शब्द "तकाजा" हि िनलहु अछि। दोसेर शेरक पहिल पाँतक मात्रा 2122-12-1222 आ दोसर पाँतक मात्रा 2122-112222 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतक मात्रा 2122-12-1222 अछि आ दोसर पाँतक मात्रा 2122-12-2222 अछि। चारिम शेरक पहिल आ दोसर दूनू शेरक मात्रा 2122-12-1222 अछि। एहि शेरक दोसर पाँति शायद टाइपिंग

गलती छै तइ सही शब्द "बजाते" हि िनिलहु अछि। पाचि शेरक दूनू पाक िताि 2122-12-1222 अछि। बहरि जतेक िनय छूट छै से लेल गेल अछि। कुल मिला देखी त एहि गजलक दूटा शेर बहरस खािरज अछि (दोसर आ तेसर)। एहि गजलि कािफया ठीकस पालन भेल अछि।

२

क़यात ऐन अब दालान पर है
नज़र दुिनया की रौशनदान पर है.

न जाने रौशनी आयेगी कब तक
अभी तो तीरगी परवान पर है.

िपघल जाता है उनके आसुओं पर
िरा गुस्सा िदले नादान पर है.

शगल उनके िलए है शायरी भी
िगर िरे िलए तो जान परहै.

ुहब्बत की वकालत करने वाला
अभी नफ़रत की इक दूकान पर है.

एहि गजलक हरेक शेरक हरेक पािा 1222-1222-122 िताि अछि। बहरि जतेक िनय छूट छै से लेल गेल अछि। एहि गजलक कािफया सेहो ठीक अछि।

३

बाढ़ ि लोग मलमलाते है
रहनुि बाढ़ को भुनाते है

घोरणाओं पे घोरणाएं है
नाव वह काग़ज़ी चलाते है

इस तरफ़ भुखिरी का आलि है
और वह आकि मानाते है

फंड जो भी जहा से आता है
खुद ही वो बाट करके खाते है

साल दर साल बाढ़ आ जाये
दरअसल ये ही वो िनाते है

एहि गजलक हरेक शेरक हरेक पाँति 2122-12-1222 िताि अछि। बहरि जतेक िनयम छूट छै से लेल गेल अछि। एहि गजलक काफिया सेहो ठीक अछि।

४

आकाश से टपके हुए म्किरदार नही है
हि भी ि क़ीन है म्किरायेदार नही है |

उनके इरादो की भी ि लूि ित है हि
ऐसा नही म्कि हि भी ख़बरदार नही है

वह नाि हि ारा ि मटायेगे कहा कहा
बुम्नयाद की हि ईट है दीवार नही है |

इंसान है अपनी हदो का इल्ि है हि
हि आपके जैसा कोई अवतार नही है |

हि अपनी ुहिब्बत की नुि ाइश नही करते
म्ररश्ते म्नाभाते है दुकानदार नही है |

पढ़ना ही अगर हो तो पढ़ो इत्ि ीनान से
अदबी म्किताब है कोई अख़बार नही है |

एम्हह गजलक पम्हहल शेरक पम्हहल पाम्िाक ि ताि ि 2212-2212-221122 अम्छ। दोसर पाम्िाक ि ताि ि 2212-1212-221122 अम्छ। दोसर शेरक पम्हहल पाम्िाक ि ताि ि 2212-2212-221212 अम्छ। दोसर पाम्िाक ि ताि ि 2212-122-122-1122 अम्छ।

बहरि जतेक िनयम छूट छै से लेल गेल अिछ ुिदा तइ बादो ई गजल बहरि नै अिछ। ितलाक दूनू शेरेि एकर पता नै अिछ। तइ हि ित दू शेरक तकती केलहु अिछ बाद-बाकी शेरक िववेचना पाठक बुझाये गेल हेता। कािफया सेहो गलते अिछ।

बहरक िहसाबस नरेन्रजीक गजल--

चार ििथली गजलके देखल जाए त ई स्पष अिछ जे नरेन्रजी अिधकाशतः बहरे िरपर आिशत छिथ आ ताहूि कतेको ठाि हूसल छिथ। जखन िक बहरे िर बहुत आसान बहर छै आ एिह बहरि छूट बहुत छै। तेनािहते ज चार िहंदी गजलक बहरके देखल जाए ई स्पष होइए जे नरेन्रजी बहरे िरक अितािरक्त आन बहर सभपर सेहो हाथ चलबै छिथ आ ओहूि कतेको स्थानपर हूसल छिथ। तथािप ई उल्लेखनीय जे आनो बहरपर ओ गजल लीिख सकै छिथ। नरेन्रजी ििथली-िहंदीक देल उपर बला गजलक बहर संबंधि हिर ई स्पष िनयता अिछ जे नरेन्रजी िित लयके बहर िािन लै छिथ जखन िक लय आ बहरि अंतर छै। लय िनि गािब कऽ, गुनगुना कऽ। लयपर िलखलास केखनो बहर सटीक भैयो सकैए आ केखनो निहयो भऽ सकैए।

बहर ओ कािफयाक आधारपर नरेन्रजीक गजलके एकै बेरि हि गलत नै किह सकै छी कारण ििथलीक किथत गजलकार सभस बेसी िहनका नरेन्रजी अपन गजलि केने छिथ आ ज ई थोिबे िहनका करतिथ वा करता त िहनक गजल एकटा आदशषगजल भऽ

सकैए। ओना एहि बातक संभावना कम जे ओ एहि तथ्यके मानताह। करण वएह मजाद जे व्याकरण कोनो जरूरी नै छै। रचनामे भाव पक्ष होइत छै आदि-आदि। मिथिलीमे नरेन्द्रजीक गजल अपन पीढ़ीक अधिकाश गजलकार (सरसजी, तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीन एवं ओहने गजलकार) सभस बेसी ठोस गजल छन्हि से मानबामे हमरा कोनो शंका नै मुदा बहर ओ काफियाक हिसाबे पूरा-पूरी सही नै छन्हि (मने नरेन्द्रजी मात्र अपन समकालीनस आगू छथि)। एहिठाम हम नरेन्द्रजीक चारि-चारि टा गजल लेलहु मुदा आन ठाम हुनक पकाशित वा हुनक फेसबुकपर पकाशित मिथली आ हिंदी गजलक अनुपातस ई स्पष्ट अछि जे नरेन्द्रजी मिथलीमे मात्र संपादकक आगहपर गजल लिखै छथि। मने मिथली गजल हुनकर ध्येय नै छन्हि। अइ बादो आश्चर्यजे हिंदी गजलमे हुनकर कोनो विशेष स्थान नै छन्हि। ई बात हम एकटा हिंदी गजल पाठकक तौरपर कहि रहल छी। हुनकर समूहक किछु लोक हुनका भने बिहारक हिंदी गजलकारक लिस्टमे दऽ दौन मुदा वास्तविकता इएह जे हिंदी गजल संसारमे नरेन्द्रजीक कोनो स्थान नै छन्हि। आ एकरा मात्र राजनीति नै कहल जा सकैए। हिंदी गजलमे एहतरामे इस्लाम, नूर मुहम्मद नूर, जहीर कुरैशी सभ पुरान छथि एवं नवमे गौतम राजऋषि, स्वपनिल शीवास्तव, वीनस केसरी, मयंक अवस्थी आदि अपन स्थान बना लेला मुदा की करण छै जे नरेन्द्रजी असफल रहि गेला। हम फेर कहब जे हरेक चीजमे राजनीति नै होइ छै। हिंदी गजलक नव शाइर गौतम राजऋषि, स्वपनिल शीवास्तव, वीनस केसरी, मयंक अवस्थी आदिक पाछू कोनो संपादकक हाथ नै छलन्हि मुदा नीक लिखलास कोन संपादक नै छापै छै। आ हिनकर सभहक सभ गजल व्याकरण ओ भाव दृष्टिस संतुलित रहै छन्हि आ तइ ई सभ बहुत कम समयमे हिंदी गजलमे

अपन स्थान बना लेला िदा नरेन्द्रजी नै बमढ़ सकला आ ताम्हि लेल ित हुनक बहर ओ व्याकरण नै पालन करबाक म्जद म्जमिदार छम्ना। िमथली गजलि त ई अपन सिकालीन गजलकारस आगू बमढ़ जेता िदा ई म्हंदीि म्पाछि ले रहता कारण ओम्हठाि बहर सेहो देखल जाइ छै जखन म्कि िमथली गजलि बहर देखानइ आब शुर भेलैए।

म्कछु एहन बात जे म्कि पायः हि, सभ आलोचनाि कहैत म्छयै " िमथलीक अराजक गजलकार सभ म्हंदीक म्नाराला, दुष्यंत कुिर आ उदूषक फैज अहिद फैज केर बहुत िनै छम्था। एकर अम्तामरक्तो ओ सभ अदि गोडवी ि निवर राना आम्दके िनै छम्था। िमथलीक अराजक गजलकार सभहक म्हसाबे म्नाराला, दुष्यंत कुिर आ फैज अहिद फैज सभ गजलक व्याकरणके तोमि देलम्खन िदा ई भि अम्छ। सच त ई अम्छ जे म्नाराला िित म्वरय पम्रवतषा केला आ उदूषशब्दक बदला गजलि म्हंदी शब्दक पयोग केला, तेनाम्हते दुष्यंत कुिर इिरजेन्सीक म्वरद गजल रचना िम्तकारी रपे केलम्था। फैजके साम्यवादी म्वचारक गजल लेल जानल जाइत अम्छ। िदा ई गजलकार सभ म्वरय पम्रवतषा केला आ सियानुसार शब्दक पयोग बेसी केला। एम्हठाि हि म्कछु म्हंदी गजलकारक िितलाक तक्ती देखा रहल छी (जे-जे िितला हि एम्हठाि देब तकर पूरा गजल ओ पूरा तकती हिर पोथी िमथली गजलक व्याकरण ओ इम्तहासि देम्ख सकै छी)---

सूयषकात म्तपाठी म्नारालाजीक एकटा गजलक िितला देखू--

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हिरे म्दल ि है
देश को मिल जाए जो पूजी तुम्हारी मिल ि है

ितला (िने पम्हल शेर)क िताि अछ-- 2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक िताि इएह रहत। एकरे बहर वा की वणषृत कहल जाइत छै। अरबीि एकरा बहरे रिल केर ि जाइफ बहर कहल जाइत छै। िलाना हसरत िहानीक गजल “चुपके चुपके रात म्दन आसू बहाना याद है” अही बहरि छै जकर म्बवरण आगू देल जाएत। ऐठा ई देखू जे मराला जी गजलक म्बारय नव कऽ देलम्खन पेमिकाक बदला म्बारय मिल आ पूजी बम्न गेलै ि दा व्याकरण वएह रहलै।

आब हसरत िहानीक ई पम्सद गजलक ितला देखू---

चुपके चुपके रात म्दन आसू बहाना याद है
हिको अब तक आम्शक़ी का वो ज़िाना याद है

एकर बहर 2122+2122+2122+212 अछ।

आब दुष्यंत कुिरक ऐ गजलक ितलाक तक्ती देखू---

हो गई है / पीर पवत /सी म्पघलनी / चाम्हए,
इस म्हिालिय / से कोई गं / गा म्नकलनी / चाम्हए।

एकर बहर 2122 / 2122 / 2122 / 212 अछ।

फैज अहदि फैज जीक ई गजलक ितला देखू--

शैख साहब से रसि-राह न की
शुि है ज़िन्दगी तबाह न की

एिह ितलाक बहर 2122-1212-112 अिछ।

आब कने अदि गोडवी जीक एकटा गजलक ितलाक तक्ती देखू–

ग़ज़ल को ले / चलो अब गा / व के िदलकश /नज़ारो िं
िसलिसल फ़न / का दि घुटता / है इन अदबी / इदारो िं

एकर बहर 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अिछ।

एिहठाि हि ई ित भाव ओ कथ्यस संचािलत गजलकारक कुतकष्स बचबा लेल देलहु अिछ। जखन दुष्यंत कुिर सन िमहकारी गजलकार बहर ओ व्याकरणके िनै छिथ तखन नरेन्द्रजी वा आन किथत िमहकारीके व्याकरणस कोन िदकत छिन सेनै जािन।

भाव, कथ्य, िवषय ओ भाराक िहसाबस नरेन्द्रजीक गजलक सीि---

उप शीरषकि "सीि" एिह दुआरे िलखलहु जे भाव, कथ्य ओ िवषय लेल कोनो रोक-टोक नै छै जे इएह िवषयपर िलखल जेबाक चाही वा ओिह िवषयपर नै िलखल जेबाक चाही। अइ ठाि देल गेल नरेन्द्रजीक िमिथली-िहंदी गजलक भाव ओ भारास स्पष भेल हएत जे

नरेन्द्रजी चाहे मिथिलीमे लिखथु वा हिंदीमे हुनकर विरोध विक्षोभवादी विचारधाराक आगू पाछू रहैत छन्हि। ओना ई खराप नै छै मुदा दुनियाँ बहुत रास "भूख"स संचालित छै चाहे ओ पेटक हो, जाघक हो वा धन, यश केर हो। जतबे सच पेटक भूख छै ततबे आन भूख सेहो। तइ एकटा भूखक साहित्यके नीक मानल जाए आ दोसर भूखके खराप से उचित नै। नरेन्द्रजीके सेहो कोनो विपरीत लिंगी आकर्षण केने हेथिन्ह आ कोहबरमे हुनकर करेज सेहो धक-धक केने हेतन्हि। ओना विचारधाराके हिसाबे बनेबा लेल ओ कहि सकै छथि जे ने हमरा कोनो विपरीत लिंगी आकर्षण केलक आ ने कोबरमे करेज धक-धक केलक। ई हुनकर सीमा सेहो छन्हि हुनकर विचारधाराक सेहो। अइ ठाम एकटा महत्वपूर्ण पक्ष राखए चाहब जे नरेन्द्रजी वा हुनके सन क्रान्तिकारी गजलकार सभ व्याकरणक ई कहि विरोध करै छथि जे व्याकरण कटरताक प्रतीक थिक मुदा आश्चर्य जे विरोध ओ भावक मामिलामे नरेन्द्रजी वा हुनके सन गजलकार सभ कटर छथि। हमरा जतेक अनुभव अछि तामे हम साबस हम कहि सकैत छी कथित र प्रगतिशील विक्षोभवादी सभ दोहरा बेबहार करै छथि अपन जीवन ओ साहित्यमे। व्याकरणक कटरताक विरोध आ विरोध ओ भावक कटरताक पालन इएह दोहरा चरित्र थिक। एकै कथ्यपर कोनो विधाक रचना लिखलास ओहिमे दोहराव केर खतरा त होइते छै संगे संग पाठक इरीटेट सेहो भ' जाइत छै। कोनो रचना जखन पाठके लेल छै तखन पाठकक रुचिक अवमानना किए? हम एतेक सावधानी लेखकके जरूर रखबाक चाही जे पाठकक अवांछित मांग जेना अश्लीलता, दंगा पसारए बला रचना नै लीखथि। एक बेर फेर हम हिंदीक संदर्भमे कहए चाहब जे हिंदी गजलक कथ्य बहुत विस्तृत छै। हिंदी गजलमे साम्यवादी विचारधारा बला गजलक अतिरिक्त आनो

बारयपर गजल छै आ हिरा हिसाबे नरेन्द्रजी हिंदी गजलिं नै बम्ह सकला आ तामे लेल बहर ओ व्याकरण संग एकै कथ्यपर लिखबाक मजद सेहो मजमिंदार छम्म। एम्हठाि देल नरेन्द्रजीक मैथिलीक चारि गजलिं "भेि सफर" मैथिलीि अवाम्छत पयोग अम्छ। नरेन्द्रजीक भारा पयोग खतरनाक अम्छ। हि जानै छी जे एना लिखलास लोक हिरा शुदतावादी िनिए लागत ुदा हि ई मचंता छोमि लिखब जे हरेक भारािं आन भाराक शब्दक पयोग हेबाक चाही ुदा एकर ितलब नै जे सभ शब्दक पयोग िनय भऽ जेतै। उदाहरण दैत कही जे मैथिलीि "वफा" शब्द पचम्लत नै अम्छ ुदा "वफादार" शब्द बहुपचम्लत अम्छ। एम्हठाि पश उठैत अम्छ जे जखन वफा शब्दक पचलन नै तखन वफादार कोना पचम्लत भेल। ई बात शुद रपस आि जनताक बात छै। आि जनताक जीह आ संदभिं "वफा" शब्द नै आम्ब सकलै जखन मक वफादार उच्चारणक हिसाबस आ संदभक हिसाबस पयोग होइत रहल अम्छ।

मापकरष नरेन्द्रजी गजल बहर ओ काम्फयाक हिसाबस दोरपूणषत अम्छ ुदा मैथिलीक अपन सिकालीन ओ परवती गजलकार यथा सरसजी, रिशि, तारानंद मवयोगी, मवभूम्त आनंद, कलानंद भट, सुरेन्द्रनाथ, धीरेन्द्र पेिमरष, राजेन्द्र मवािल संगे एहने आन गजलकार सभस बेसी ठोस अम्छ। हिनक हिंदी गजल सभ सेहो बहर ओ काम्फयाक हिसाबस दोरपूणष अम्छ आ ओम्हठाि हिनकास पम्हने बहुत रास व्याकरण ओ भाव बला गजलकार अपन िूल्याकंन लेल पतीकारत छम्थ तइ हिंदी गजलिं हिनकर मटकब बहुत िमश्कल छम्म। मवशास नै हो त हिंदी गजलक गंभीर पाठक बम्म देम्ख लिअ। ज नरेन्द्रजी व्याकरण पक्के सम्हाम्र लेम्थ आ आनो मवारयपर गजल कहम्थ त

ममर्मित ई बहुत दूर आगू जेता। आ जेना मकेर उपरका मावेचनस सपष अमछ जे महनका बेसी िहनमस नै करबाक छमम। मकछु अहि ओ व्याकरणके हेय बुझबाक चकरि महनक नीको गजल दूमर भेल अमछ। ओना हि उपरे आशंका बता देने छी जे आने कम्थत िमसकारी जका ईहो व्याकरणके बेकार िनिता।

नोट---- 1) एम्हि सिविमि जतेक संदभष लेल गेल अमछ से हिरि पोथी "िमथिली गजलक व्याकरण ओ इमसहास"स लेल गेल अमछ तइ कोनो पकारक संदभष जेना पं गोमबन्द झाजीक कोन पोथीक कोन पृष पर चंरमबंदु युक्त सपर लघु होइत छै आमद जनबाक लेल ओम्हि पोथीके पढ़ू।

2) बहरक तक्नीिि ज कोनो असावधानी भेल हो त पाठक सभ सूम्चत करम्थ। हि ओकरा सुधारब।

बयानक संदर्भमे मैथिली गजल

हरेक भाषा साहित्यक हरेक विधास संबंधित बयान अबैत रहैत छै आ ई स्वाभाविक छै। बयान दूनू तरहक भ' सकैए सकारात्मक ओ नकारात्मक रहैत छै। मैथिली गजल लेल सेहो समय- समयपर बयान अबैत रहलैक अछि। जँ छोट-मोट बयानके छोड़ि देल जाए त मैथिली गजलमे मुख्यतः तीन-चारि टा बयान अछि जे कि अपना समयमे मैथिली गजलके आन्दोलित केलक। पहिल प्रो. आनंद मिश्रजीक बयान, दोसर रमानंद झा रमणजीक बयान, तेसर रामदेव झाजीक बयान आ चारिम मायानंद मिश्रजीक बयान, हम एहिठाम चारू गोटाक बयान राखब आ ओकर विश्लेषण करब एहि विश्लेषणस पहिने कहि दी जे ई सभ बयान ओहन-ओहन रचना वा पोथीपर आधारित अछि जे कि प्रकाशित भेल। बहुत रास एहन शाइर जे कि प्रकाशनमे रुचि ने छलनि वा हुनकर संपादक कात कऽ दै छलखिन (जेना कविवर जयनाथ झा ओ योगानंद हीराजीक गजलके संपादक सायास नै छापै छलखिन मानकर सभहक गजलके एहि बयान देबा कालमे धेआन नै राखल गेल अछि)। ईहो बात धेआनमे राखब जरूरी जे ई बयान सभ मधुपजी, कविवर सीताराम झाजीक वा पं.जीवन झाजीक गजलके बिना व्याकरणपर नपने देल गेल अछि। जँ ई सभ बयान देबास पहिने मधुपजी, कविवर सीताराम झाजीक, पं.जीवन झाजीक, कविजयनाथ झाजी वा योगानंद हीराजीक गजलके व्याकरणक हिसाबे देखने रहितथि त संभवतः हुनक बयान सभ किछु अलग रहैत। तइ एहि बयान सभके सहि त नै मानल जा सकैए मुदा ओहि अधिकाश गजलक पराम्परात्मकता त कहिते अछि जे ओहि कालखंडमे अधिकाश गजलकार दारा लिखल गेल। एहि बयान सभहक विश्लेषणके हम

ओहि कालखंडस जोमि कS देख रहल छी जाहिकालि ई बयान देल गेल रहै। वस्तुतः इएह सही तरीका छै कोनो तथ्यके जनबाक लेल। त देखी बयान आ ओकर मिश्लेरण ------

1) पो. आनंद मिशिजीक महसाबे िमिथलीि गजल संभव नहि (संदभष 2015 ि िहिन यादवजीक गजल संगह "जे गेल नहि मिसरल"ि उदयचंर झा मिनोदजीक भूमिका। संभवतः ई बयान 1980-85 बीचक अछि)---एहि बयानक िलि र प हिरा लग नै अछि। तइ एहि बयानके दू र पि लS रहल छी। पहिल त जे देने छी िनि "िमिथलीि गजल संभव नै"। ई बयान मािमि त र पे ओहि सियिक जे गजलकार सभ समिय छलाह जेना सुधाशु शेखर चौधरी, गोपेश, ियानंद मिशि, रवीन्रनाथ ठाकुर, केदार नाथ लाभ, कलानंद भट, मिसयारािी झा सरस, िहिेन्र, छातानंद मिसंह झा, तारानंद मियोगी, राि चैतन्य धीरज, केदार कानन, रिशि, मिभूित आनंद आदिक गजल सभके देख कS देल गेल अछि। ज महिनकर सभहक गजल देखल जाए त पो. आनंद मिशिजीक उम्पन्न सौ पतिशत सच अछि। कनियो झूठ नै। िमितु मिलअ ज पो. जी एहन नै कहने हेमिथन तैयो ई सच अछि ओहि सियिक समिय गजलकार सभहक गजल देख मिकयो ई बात कहि सकैत छल। गजल लेल बहर आ कािफया अिनवायषछै (बहरि मिकछु छूटक संगे)। िदा ओहि सियिक समिय कोनो गजलकार (ओहिसि एखनो मिकछु समिय छमिथ) बहर आ कािफयाक पालन नै केने छमिथ। महिनकर सभहक कथन छमिन जे भाव िखिय हो िदा ज भावे िखिय िनिल जाए तखन कोनो रचनाके गजल कहबाक बेगरते मिकए? ओकरा कमिवते मिकए ने कहल जाए? आिखर कोनो एहन तत्व त हेतै जे कमिवता आ गजलक बीच अंतर आनैत हेतै। कोनो गजलके नीक वा

खराप हेबास पमहने ओकरा "गजल" होबए पि त छै आ कोनो रचनाके गजल हेबा लेल ओम्हि बहर ओ काफ्फिया अमनवायषछै। ज बहर ओ काफ्फिया नै छै तखन ओ गजले नै भेल भने ओकरा नीक वा खराप गीत या कमवता कहू से िजूर ुदा मबना बहर ओ काफ्फियाक गजल नै हएत (रदीफ कोनो गजलि भैयो सकैए आ नमहयो भऽ सकैए ुदा जाम्ह गजलि रदीफ लेल जाएत ताम्हि अंत धमर पालन हएत)।

एक दू गोटेस चचा केलापर पता चलल जे पो. आनंदजी ई िनै छलाह जे मिथलीि हुस्न-इश्क नै भऽ सकै छै तइ मिथलीि गजल संभव नै। ज एहन बात त हि पो. साहेबस असहित छी कारण हिरा लग मबदापमत छम्थ जे मक पूरा उदूषशाइरीस बेसी आ पमहने पेपिर बात केलाह। मकछु मबदान ई कम्ह सकै छम्थ जे मबदापमताक पेि पारलौमकक छल ुदा तखन ई पश उठै छै जे फेर उदूषशाइरीक पेि पारलौमकक मकए नै भऽ सकैए?

जे मकछु हो ुदा पो. आनंदजीक बयान ओम्ह सियिक गजलकार सभ लेल एकटा चुनौती छल जकरा लेबाि और गलत सामबत करबाि ओम्ह सियिक गजलकार सभ असफल भऽ गेलाह। जहा धमर एम्ह बयानक पभाव छै हिरा नै बुझाइए जे एम्ह बयानक कोनो बेसी असमर पिलै कारण ओम्ह सियिक कम्थत गजलकार सभ अपन "गलत गजल"ि िगत छलाह आ पो. आनंद मिशजी अपन सहमबचारक संग पोफेसरे टा बनल रहलाह। दूनू पकि स मकनको ई जनबाक मचन्ता नै रहलमन जे आमखर गजलक असल पक की छै।

2) रविनंद झा रविणजीक म्हसाबे वतमान गीत गजल विचीय अथक्षाभक औजार म्थक (मिम्थला मिम्हर फरवरी 1983 ई हरिा लोकवेद आ लालम्कलाि म्सयाराि झा सरसजीक लेखि उल्लेम्खत भेटल)-

ज ओम्ह सियिक समिय गजलकारक गजल देखब त पता चलत जे ओ सभ गजलके गेबाक एकटा उपिि िम्म लेने छलाह। हुनका सभके बुझाइत छलम्न (वा छम्न) जे गाम्यकी गजल लेल अम्नवायष छै। ज गाम्यकी गजल लेल अम्नवायषरम्हतै त उदूषगजलि गाम्लब आ म्फराक गोरखपुरीस बेसी िहान सुदशष फाम्कर रम्हतम्थ। िदा से नै भेलै कारण गाम्यकी गजल लेल अम्नवायषनै। ह ज गजलक सभ शतषपूरा करैत गजलि गाम्यकी छै त सोनि सुगंध बला बात भेलै। ओम्ह सियिक गजल सभ गाम्यकी लऽ कऽ कते िहगस्त छलाह तकर दृष ात हरिा म्वभूम्त आनंदजीक गजल संगह (उठा रहल घोघ म्तिमिर)ि हुनके भूमिका आ तारानंद म्वयोगीजीक गजल संगह (युदक साक्ष्य) केर नव संस्करणक नव भूमिकास भेटल। म्वभूम्त आनंदजी ओम्ह भूमिकाि म्लखै छम्थ जे "एगो िहत्वपूणष पसंग.............। तत्क्षण म्कछुके स्पारो देलम्थन।" उम्हर म्वयोगीजी अपन संगहक नव संस्करणक नव भूमिकाि म्लखै छम्थ जे "तखन िनि पिै छम्थ जवाहर झा...........जे हरि छादस पयोग सभहक संगीत शास्त्रीय व्याख्या करम्थ।" ई अलग बात जे म्वयोगीजीक गजलि कोनो छादस पयोग नै अम्छ। शास्त्रीय संगीत केर बंम्दश त कोनो रचनाक पाम्न भऽ सकै छै। एम्ह दूक अम्तम्रक्त आन गजलकार सभ सेहो गजलके गाम्यकीस अम्नवायषतः जोमि देने छम्थ जाम्ह कारणस ओम्ह सियिक गजल सभ गजल कि आ गीत बेसी लागै

छै। अधिकाशतः साहित्यकार ई बुझै छथि जे चिपर गाबि देलास जनता बेसी थपड़ी पीटत आ बहुत संदर्भमे ई बात सच छै। मुदा ओहि सयिक गजल लिखनाहर सभ चिपर मिट हेबाक चकरि कथित गजलके गीतक भासि गाबए लगलाह जाहिसि किछु लोकप्रिय सेहो भेल (जनता दारा गीत गिन आ सुनबामे चूकि ओ गीतेक भास छलै तइ) जेना मिसयाराि झा सरसजीक "एक मैथिसया जे मिसिकया देखलयै," आ एहने सन आर। खास कऽ जे कथित साहित्यकार गीत आ गजल दूनू लिखै छलाह हुनकाि ई गाप्रिकी बला बेिरी बहुत अछि। कलानंद भट गजले लिखै छलाह तइ हुनक गजलि एकटा स्थायित्व भेटत ओना ई बात अलग जे भटजीक गजलि सेहो बहर नै छिन आ बहुत ठाि कािफया गलत छिन।तात्कालीन कथित गजलकार सभ गजलके चि छेकबाक हथियार बना लेला जाहि कारणे ओहि सयिक गजलि कथ्यक गंभीरता छैहे नै। एक बात स्पष्ट कऽ दी खाली लाल झंडा, पसेना, अमिर-गरीब लीखि देलास गजल की कोनो रचनाि गंभीरता नै अबै छै। ज एहि वास्तिवकताक भीतर घुसि कऽ देखल जाए त रिणजीक बयान बहुत हद धिर सही अछि आ सटीक अछि। रिणजीक एहि बयानक असिर भेल आ गीत सन गजल लिखए बला सभ मिछलमिला गेलाह। सरसजी अपन लेखमे एहि बयानके गैर मिजम्दारी बला बयान गिनै छथि (लोकवेद आ लालकिलाि मिसयाराि झा सरसजीक लेख) मुदा हमि रिणजीक एहि बयानके गजलक दृष्टि ए पूणष मिजम्दारी बला बयान गिनै छी। ज ओहि सयिक तात्कालीन गजलकार सभ एहि बयानपर िथिन कििरतिथ त आजुक मैथिली गजलक परिदृश्य बहुत िनखरल आ िवस्तृत नजिर अबैत।

पुरने गजलकार नै बिल्कि एखनुक गजलकार सेहो (अनिचन्हार

आखरस संबंम्धत म्कछु गजलकार सेहो) िच छेकबाक लेल गजलि गाम्यकीके अम्नवायषकरए चाहै छम्थ। जखन म्क सच बात त ई छै जे िचपर गजल म्हट होइत छै ुदा िच लेल गजलक पयोग असफल भऽ जाइत छै से कतेको उदूषिशायरीि शोताक तौरपर भाग लऽ कऽ हि देम्ख चुकल छी। उदूक पम्सद शाइर हसरत िहानीक गजल "चुपके चुपके रात म्दन" 1910-1930 ि म्लखाएल छै ुदा एम्ह गजलके गुलाि अली भेटलै 1982ि। तेनाम्हते गाम्लब केर गजल म्लखेलै 1820क बाद ुदा ओकर गाम्यकी रपि लोकम्पयता भेटलै जगजीत म्संह दारा गेलाक बाद (जगजीतजीस पम्हने सेहो गाएल जाइत छलै ुदा हि लोकम्पयताक बात कऽ रहल छी)। गाम्यकी रपि हरेक आधुम्नक हसरत िहानीक नसीबि गुलाि अली आ हरेक आधुम्नक गाम्लब केर नसीबि जगजीत म्संह म्लखाएल रहै छै ुदा आजुक शाइर अपने गेबा लेल आ िच छेकबा लेल तते उताहुल रहै छम्थ जे ओ गजलक ूलि तत्वके म्बसम्र जाइ छम्थ। हरि ई अनुभव अम्छ जे गजल लेल बहरके अनुपयोगी कहए बला लोक गजलके गेबाक चकरि रहै छम्थ। अन्यथा म्कछु पयासक बाद बहरक म्नवाह केनाइ एकदि आसान होइत छै।

3) रािदेव झाजी िनै छम्थ जे "साम्पम्तक गजल रचनाक क्षेति सुधाशु शेखर चौधरी, गोपेश, ियानंद मिश, रवीन्द्रनाथ ठाकुर,केदार नाथ लाभ, कलानंद भट, सरस, िहेन्द्र, छातानंद, म्बयोगी, धीरज,केदार कानन, रिशि,अम्नल इत्याम्द नाि देखल जाइत अम्छ। म्हनका लोकम्नक गजलिस म्कछुि अवश्ये गजलत्व अम्छ। परंतु अम्धकाशके गजल शैलीि रचल गीत िित कहल जाए त अनुपयुक्त नम्ह। (संदभष"िम्थलीि गजल" डा. रािदेव झा, रचना जून 1984ि पकाम्शत)"--

रामदेव जीक ति रमणजीक तिक मध्यस्थतामे रत रूप अछि। रमणजी ि‍चपर गजलक पवृत्तिपर बात केने छथि मुदा रामदेवजी गीत सन गजलके सेहो देखार केने छथि जे अधिकाशतः गजलकार गजल नै गीत सन गजल लिखै छथि। रामदेव झाजी स्पष्ट स्वरमे ओहि सयिक बहुत रास कथित गिम्भाकारी गजलकार सभहक गजलके खारिज करै छथि जे ओहि ओहि सयिक महिसाबस बम्किा विस्फोट छल। ई आलेख ततेक पभावकारी भेल जे ओ सयिक मैना व्याकरण बला गजलकार सभ म्छलम िला गेलाह आ एहि आलेखक विरोधमे मनमान वक्तव्य सभ देबए लगलाह। उदाहरण लेल मसयाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमिश ओ देवशंकर नवीनजीक संपादनमे पकाशित साझी गजल संकलन "लोकवेद आ लालकला" (वरष1990) केर कल्पपय लेख सभ देखल जा सकैए जाहिमे रामदेव झाजी ओ हुनक स्थापनाके जमि कऽ आरोपित कएल गेल अछि। ओही संकलनमे देवशंकर नवीन अपन आलेख "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना"मे लिखै छथि जे "............पुनः डा. रामदेव झाक आलेख आएल। एहि मिबन्धमे दू टा बात अनगाल ई भेल जे गजलक पंक्ति लेल छंद जका ित िा माधारित करए लगलाह आ मकछु एहेन व्यक्तिक नामि मैथिली गजल िजोमि देलमि जे कहियो गजल नै लिखलमि"

आन लेख सभमे एहने बात सभ आन आन तरीकास कहल गेल अछि। रामदेव झाजीक आलेखक बाद एहन आलेख नै आएल जाहिमे गजलके व्याकरण दृष्टि स देखल गेल हो कारण ताहि सयिक गजलपर कथित गिम्भाकारी गजलकार सभहक कब्जा भऽ गेल छल।

4) ियानंद जी अपन पोथी “अवान्तर” केर भूमिकाक (ई पोथी 1988िमैथिली चेतना परिषद्, सहरसा दारा पकाशित भेल)। पृष 6 पर ियानंदजी लिखै छथि “अवान्तरक आरम्भ अछि गीतलस। गीतं लातीति गीतल्ऽ अथात गीत के आनऽ बला भेल गीतल। किन्तु गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहि एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर सब बंधन (सर्त) के स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाराक अपन-अपन विशेरता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपे निर्मित होइत अछि। हिर उदेश्य अछि मिशिणस एकटा नवीन पयोग। तै गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक, गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीति तत्वक पधानता अभीष , तै गीतल।”

उपरका उदोरणाि अहा सभ देखि सकै छिऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अछि। पयोग हएब नीक गप मुदा अपन कजिोरीके भाराक कजिोरी बना देब कतहुस उचित नै आ हिरा जनैत ियानंद जीक ई बिका अपराध छनि। ज ओ अपन कजिोरीके आकैत गीतल केर आरम्भ करतथि त कोनो बेजाए गप नै मुदा ियाजी पाठकके भमित करबाक पयास केलाह जे कि तात्काल सफल सेहो भेल।

हि अपन पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"ि बहुत रास एहन मैथिली कहबी केर उदाहरण देने छियै जकर दूनू पाितिि वणवृत िने बहर छै। जाहि भाराक कहबी धरि बहरि हो ओहि भारािि गजल लिखब-कहब सभस आसान छै। मुदा हि जेना कि ओही पोथीि लिखने छी जे िया बाबू लग मैथिल िमट-पाितिक परंपराक कोनो

जानकारी ने रहम्म ओ बस शब्द सजेबाक फेरि अपन िजबूरीके भाराक िजबूरी बना देलाह। ियाबाबूक एम्हि बयानक घोर म्बारोध भेल सरसजी आ हुनक टीि दारा िदा अफसोच जे सरसजी वा हुनक टीि ियाजीक एम्हि बयानके गलत करबा लेल कोनो साथर्क डेग नै उठा सकल। िया बाबू जाम्हि फाटिक गजल म्लखै छलाह तही फाटिि सरसजी आ हुनक टीि म्लखै छलाह। िने दूनू टीि म्बाना बहरक बहर गजल म्लखै छल आ एखनो म्लखा रहल। ियानंद मिशि बनाि म्मसयाराि झा "सरस" बला लाइ गजलक लेल नै ई म्बाशुद रपे नाि आ सताक लाइ छल। वतिान म्मिथलीि "बीहम्म कथा" आ "लघुकथा" केर लाइ सन छल ई।

वतिान सियि एम्हि बयान सभहक साथर्कता

पो.आनंद मिशजी आ ियानंद मिशजीक बयानक एखन कोनो साथर्कता नै अम्छ। दूनू गोटाक बयान म्मिथली गजलक असल धाराके छोमि कऽ देल गेल छल। म्मिथली गजलक असल धारा पं.जीवन झा, कम्बावर सीताराि झा, काशीकात मिशि "िधुप" म्बाजयनाथ झा, योगानंद हीरा, जगदीश चंर ठाकुर "अम्मल" आम्दके छुबैत आगू बढ़ल अम्छ। िदा म्हनकर सभहक गजलके तात्कालीन संपादक ओ आलोचक दारा बारल गेल। ज म्हनकर सभहक गजलक ओम्हि सियि व्याकरणक म्हसाबस व्याख्या भेल रहैत त म्मिथली गजलक नकली धाराके आगू बढ़बाक िका नै भेटल रम्हतै आ म्मिथली गजल गन्हेबास बम्च गेल रहैत। िदा दुम्मयाक कोनो काज बाचल नै रहै छै से आब म्मिथली गजल आलोचनाक छूटल काज सभ भऽ रहल अम्छ।

डा. रि निंद झा "रि णि" ओ डा. रा दिव झाजीक बयानक एखनो साथकता अछि कारण ई दूनू बयान गजलक बाहरी पक्ष पर छलै। एहन नै छै जे गजल गाम्मकीस ि हिगस्त पम्हनुके गजलकार छलाह। किछु एखुनको गजलकार एहि ि हिि बान्हल छथि आ आगूक किछु गजलकार सेहो बान्हल रहता। तइ ई दूनू गोटाल बयान भविष्योि सार्थक रहत।

(नोट---- गजलक वा अन्य विधाक संदर्भि हि किनको नीक विचारके अपना सकै छी। िदा गलत विचारके सम्खन हि आलोचना करैत रहब। एहि आलेखि मजनकर ि तिक स थिषा कएल गेल अछि जर री नै जे हुनकर सभ ि तिस हि सह ि ति होइ आ हुनकर गलतो विचारके नुकबैत रही। कामि भेने फेर कियो गजलक असल पक्क विपरीत जेता हुनकर हि आलोचना करबे करब। कोनो विधाि पयोग खराप नै िदा अपन क जिोरीके विधा वा भाराक क जिोरी बना देबए बला हि र मिशाकार होइत रहता।)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

अशातस्य कुतः सुखम्

जीनिमे सभ किछु भेलाक बादो कखनहुँ काल लोकक मोन होइत रहैत अछि जे कोनो एहन ठाम चली जाहिसँ मोन शांतचैन भए जाए, सभ किछु बिसरि किछु दिन शान्ति सँ बिताबी आ झंझटिसभके कात कए दी। कखनो-कखनो काज स्थितिसभ व्यथमलागए लगैत छैक, होइत छैक जे कहुना ओहिसभसँ पाछाँ छोडाबी किंवा किछु एहन कए ली जे निवृत्ति रही। से किएक होइत छैक?

सबदिन हमसब अपन धीया-पुताक सुख-सुविधाक हेतु काज करैत रहैत छी। समाजमे, अपन लोक-बेदक बीचमे मान-सम्मान हो, हमरा शेष बुझल जाए, अनकासँ हम सेसर रही, एही लफडा सभमे जीनिक मूल्यानि समय चलि जाइत अछि आ अन्तमे हाथ अबैत अछि फोकला। मनुखक मोहर्धिन ततेक मजगूत होइत अछि जे ओ अन्त-अन्त धरि ओकरे फासमे फँसल मेहिआ बडद जका बहैत रहि जाइत अछि आओर एकदिन मुटी बन्हने एहि दुनियासँ पस्थान कए दैत अछि। सभ किछु ठामहिँ रहि जाइत अछि।् यो एकर अपादि नहि रहैत अछि।

आया है सो जाएगा, राजा-रंक फकीर।

एक सिंघासन चढि चले, एक बंधे जंजीर।।

एकबेर एकटि महिलाके लकबा मारि देलकै। ओ अस्पतालमे भती रहथि। बाजल नहि होनि। कै दिनक पयासक बाद हुनका कनी-मनी होश भेल। कहुनाक मुँहसँ आिज फुलैक। होश होइतहि पहिल बात ओ इएह बाजल जे सूदि सिूलल गेल कि नहि? सोचियौ, जे ििकासँ केहन मोह छलेक ओकरा! जान जाए पर छलैक, अस्पतालक आपत्कालीन विभागमे भती छल, हैथ-पैर सुन भेल छलैक, मोसकिलसँ कहुनाक आिज फुलैक तँ सभसँ पहिने की बाजल? इएह थिक माया। ई जनितो जे सभि एतहिँ रहि जाएत, लोक

अन्त-अन्त धरि ाका बारिबामे, लूि-खसोिमे लागल रहैत अछि। तखन शािन्त कतएसँ होएत?

एकिा राजाक महल लग एकिा लोहार दिन-राति खि-खि करैत रहल छल। राजा एहि बातसँ तंग भए गेलाह। कोनो उपायसँ चाहैथ जे एहि खि-खीके बंद कराबी। एक दिन ओ ओहि लोहारके बजओलिथ।लोहार मरा गेल। ओकरा नहि बूझएमे अबैक जे ओकरासँ कोन अपराध भेल जे ओकरा राजा बजा रहल छिथ। खैर! ओ राजासँ भेि करए पहुँचल।

ओकरा देिखते राजा कहलिखन जे तोरा जतेक ाका चाही से लए लएह मुदा ई खिर-पिर बंद करह। राजाक बात काि के? ओ राजासँ यथेष ाका लेलक आ ओहि दिनसँ अपन काज केनाइ बंद कए देलक। काज बंद तँ कए देलक मुदा ओकरा तहिआसँ िनने नहि होइक। की करए? कतेको राित करोि बदलैत बीित गेलैक। एहिसँ ओ ततेक तंग भए गेल जे होइक जे जान चिल जाएत। हािर कए ओ राजाक ओतए दौडल गेल आ जे ाका लेने छल से आपस कए पाथर्ना करए लागल जे ओकरा अपन काज फेरसँ शुर करबाक आजा देल जाइक। राजा छगुंतामे पिड गेलाह। पुछलिखन जे बात की छैक, ओ िकएक ाका आपस कए रहल अछि? लोहार कहलकैक- “सरकार! जहिआसँ काज छोडलहुँ, हमर सुख चैन हरा गेल। हमरा माफ कएल जाए, हम अपन पिहलका जीिन जीबए चाहैत छी। ओहीसँ हमरा शािन्त भए सकैत अछि।” राजा ओकर समस्या बूिझ गेलाह आ ओकर बात मािन लेलाह। तकर पातेसँ ओ लोहार अपन काज शुर केलक। ओहि राित ओ बहुत चैनसँ सुतल। फेरसँ िएह ठक-ठकी सुिन कए राजा बहुत जोरसँ हँसलाह। ई कथा बहुत लोकके बूझले होएत, मुदा एहिमे बहुत गंभीर िशक्षा भरल अछि। धन-संपित्तसँ सुख चैन नहि भेि सकैत अछि। लोभ-लालचसँ नहि, अनकर हक मािर लेलासँ नहि अिपतु पिरशमपूवर्क उपािजर्त धनसँ जीिन-यापन केनेसँ मोनमे शािन्त भेि सकैत अछि।

समस्या अछि जे लोकसभ सभ िकछु बूिझतो एतेक िफरसान िकएक रहैत अछि जखन िक ् यो से चाहैत नहि अछि? कारण सहजे ताकल जा

सकैत अछि। अधिकाश व्यक्त अनकर सुखसँ दुखी रहैत छथि। ओ कोनो एक बड़ रहल अछि, ओकर मकान हमरासँ पैघ कोनो एक छैक, ओकर बच्चा कतहुँ पढलकैक अछि, ओ सभतँ सभ दिन हमरासभसँ दिन रहल आब कतएसँ पैघ भए जाएत? एहीठाम हम मारि खाइत छी। जँ हम सकारात्मक सोच-विचार राखी, अनको उपलब्धिसँ पशन हेबाक भाव राखी तँ कनिये हमरा पशन हेबाक बेसी अवसिर भेटि सकैत अछि। छै ने सत बात?

नाक्हि जीनिके के कोना बिताबए चाहैत अछि से बात बहुत हद धरि ओकरेपर निर्भर करैत अछि। समयतँ बीतिए जाएत चाहे जेना बीता दिअ, हँसिकए बीता दिअ चाहे कानि कए। असलमे कोनो घटिना विशेर ककरा पर केहन पभाव करत से ओकर प्रवृत्तिपर निर्भर करैत अछि। ई ओहिना भेल जेना एकटा गिलासमे आधा पानि भरल अछि तँ ् यो कहत जे आधा पानि खतम भए गेल, तँ ् यो कहत जे एखन तँ आधा पानि बाचले अछि, कहू ता कथीक? एकटा अपन मकान बनलासँ कतेक खुशी होइत छैक। तहिना जँ अनको मकानसँ हम खुश हेबाक प्रवृत्ति विकसित कए ली तँ नित्य-निरंतर पशनताक रिखा होइत रहत एहिमे कनिको शंका नहि।

चमक-दमकमे रहनिहार अनेको लोकके देखलासँकै बेर मोनमे होइत छैक जे ई बहुत भाग्यवानि अछि, बेस मौजमे जीवि रहल अछि। मुदा ई बात कै बेर कपोल-कल्पना साबित होइत अछि। कतेको नामी कलाकार आत्महत्या करैत छथि। जौ धन-संपत्ति, ओ सामाजिक पतिष्ठासँ लोक सुखी रहैत तँ एिह सभ रहितथि। मुदा से असलियतमे नहि अछि।

लोक दिन-राति पूजा-पाठ करैत रहैत अछि, कथी लेल? जाहिसँ मनोकामना पूरा होअए, परिणाम होइत अछि जे पूजा करितो काल हम शात नहि रहि पबैत छी। हम गाममे कै बेर पूजा करैत काल लोकके चिकडैत-भोकरैत देखने छी, महादेपिर जलढरी करैत काल अनका शाप दैत सुनने छी, आ कबुला-पाती करैत तँ के-के ने देखने होएत। जखन माथमे एतेक ओझरि लए कए पूजा-पाठ कएल जाएत तँ शान्ति कोना भेटि सकत? भेति-अहीँ कहू? इएह व्यक्तिकैक समस्याक जड़ि।

यदवा आयु बढ़ैते जाइत अछि, लोकक मोह घटिते नहि अछि। सभकिछु हमरे भए जाएत से कतहुँ सम्भव होइक! ई जीवन अपूर्णतासँ भरल अछि। सभ किछु नहि भेटि सकैत अछि। तखन मजी अहाक अछि जे हाय! हाय! करैत रही किंवा जे किछु अछि ओहि सँ भेलि तकरा सहरमस्वीकार कए सन्तुष्ट रही।

ई बात तँ बूझि गेलहुँ जे शान्तिसँ रही, एकर बहुत नफा छैक, मुदा शान्ति प्राप्त कोना भए सकैत अछि? ताहि हेतु की कएल जाए? की नहि कएल जाए? असलमे उपदेश देलासँ किम्बा किताबमे पढ़ि लेलासँ शान्ति प्राप्त नहि कएल जा सकैत अछि। ई तँ जीवन कला थिक एवम् निरन्तर अभ्यासेसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। तथापि किछु बात मोटि-मोटी जँ ध्यानमे राखल जाए तँ बहुत रास झंझटिसँ बँचल जा सकैत अछि आओर ओही अनुपातमे शान्त जीवन बिताओल जा सकैत अछि। मोनमे सन्तोखक भाव एवम् अनावश्यक प्रतिस्पर्धासँ बचबाक चाही। आवश्यकताके सीमित करबाक चाही। आय ओ व्ययमे सन्तुलन हेबाक चाही आ सभसँ जररी अछि जे मोनमे लोक कल्याणकारी भावना विकसित करबाक चाही। जे बात अपना नीक नहि लगैत अछि, से अनका संग नहि करी। अनकर उपलब्धिसँ ओहिना प्रसन्न होइ जेना अपनसँ। अनकर निन्दासँ बची। परिवारमे सभक उचित महत्व दी। खाली अपने बात चलओबाक व्यवहारके अन्ततोगत्वा निराशा हाथ लगैत अछि।

शान्तिक हेतु जररी थिक जे मन कल्याणकारी विचारसँ ओत-पोत हो। दोसरक हितकारी भावना हो। जहिना हम अपन प्रगति चाहैत छी, तहिना अनको लेल सोचिऐक। से सभ जौ हमर मोनमे रहत तँ निश्चय हम शान्ति ओ आनन्दक अनुभव कए सकैत छी। तखने सुखी रहि सकैत छी।

गीतामे कहल गेल अछि जे जकर शान्ति नहि तकरा सुख कतए?

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयत: शान्तिरशान्तस्य कुत: सुखम्।।

सफलताक रहस्य

एहेन दुनियामे ्यो एहन लोक नहि भेटिताह जे अपन अधलाह चाहैत होथि, अपितु सभ एही पयासमे लागल रहैत छथि जे सांसारक अधिक सँ अधिक सुख-सुविधा हमरा भेटए, सभ मनोकामना पूरा होअए, बाल-बच्चा सुखी रहए। एही पयासमे हमसभ निरंतर लागल रहैत छी। एहिमे किछु गलत नहि छैक मुदा समस्या तखन होइत अछि जखन सभ पयास केलाक बादो मनोवांछित फल नहि भेटित अछि। एहि परिस्थितिमे कतेको गोटि निराश भए जाइत छथि, पयास छोड़ि दैत छथि आ कतेको बेर अनुचित रस्ता सेहो अख्तियार कए लैत छथि।

कै बेर एहन होइत अछि जे हम कोनो काजमे बखोसँ लागल रहैत छी आ जखन लक्ष्य एकदम लगीच रहैत अछि तँ थाकि कए, निराश भए अपन पयासके स्थगित कए दैत छी किंवा आधा-अधूरा छोड़ि दैत छी। परिणाम अनुकूल कोना होएत?से नहि होइत अछि, तँ विधाताके दोख देबए लगैत छी। दुनियामे ्यादातर असफल लोक आत्म-चिंतन करबाक बजाए अपन असफलताके हेतु दोसरके जिम्मेदार ठहराबए लगैत छथि। मुदा ताहिसँ की होएत?

कोनो पकारक काजक सफलताक हेतु जररी अछि जे हमर समस्त शक्तिक रचनात्मक उपयोग हो, एकहि संगे दसठाम हाथ देलासँ किछु नहि भए सकैत अछि। कखनो किछु, कखनो किछु जँ करैत रहब तँ बानर बला हाल भए जाएत जे जाही माछपर जाइत अछि ओकरा दोसर माछ बेसि हरियर लागए लगैत अछि। एकरा लोक कहैत अछि-बनरकूद। कहबाक तात्पर्यमअछि जे सबसँ पहिने अपन गन्तव्यक निधारण करबाक चाही आ तकर बाद संपूर्णम शक्तिसँ ओकरा पाप्त करबाक पयास करबाक चाही।

एकटा बात तँ तय अछि जे सफलताक कोनो लघुपथ नहि भए सकैत अछि। आइ धरि जे ्यो व्यक्ति सफल आदमीमे सुमार कएल जाइत छथि तिनक जिनगीसँ ई बात बुझल जा सकैत अछि। अपना देशक भूतपूर्व राष्टपति कलाम साहेब अखबार बेचि कए पेट भरैत छलाह। तिमान पधानमंत्री शी

नरेन्द्र मोदी महोदय नेनामे चाह बेचैत छलाह। एतेक विपनता अछैत ओ सभ अद्वितीय कोना भए गेलाह? ई सोचबाक विषय अछि। एहन कम लोक होइत छथि जे सुविधाक अभावमे जनमिओ कए पैघ-पैघ काज कए यशस्वी होइत छथि। पैघ उद्देश्य जँ रखने छी तँ ताहि प्राप्त करबाक हेतु तेहने सघन प्रयासो चाही। अर्जुन जका सभकिछु बिसरि मात्र पक्षीक आँखिपर ध्यान केन्द्रित हेबाक चाही आ जँ भीम भाइ जका एकहिबेर सभ किछु देखए लागब तखन की भेटित? फोकला!

महान उपलब्धिक हेतु तेहने कडगर मेहनति करए पडैत अछि। तेहने दृढ संकल्पक संग दिन-राति एक करए पडैत छैक। एहन नहि भए सकैत अछि जे हल्लुक प्रयाससँ उत्कृष्ट उपलब्धि भए जाइक। अंग्रेजीमे एकटा कहाबत छैक जे “If wish be the horses, poor ride the first” कहक माने जँ इच्छे केलासँ होइक तँ गरीबे सबसँ पहिने घोडा चढए। इच्छाक संग-संग प्रयतो तेहने घनघोर हेबाक चाही।

जेठक दुपहरिआमे जखन रौदसँ मोन आकुल भए जाइत अछि तखन होइत छैक जे कहुना गाछक छाहरिमे चली। जखन पिआससँ मोन बेकल भए जाइत अछि तखन इच्छा होइत छैक जे हे भगवान! कहुना कतहुँसँ पानि भेटए। तखन लोक ई नहि देखए लगैत अछि जे पानि मबडाक अछि कि गंगाजल। केहनो पानि अमृत लगैत अछि। तहिना जीवनिक संघर्षक तापससँ मोन जखन व्याकुल भए जाइत अछि तँ लोक थाकल-ठेहिआएल कहि उठैत अछिः” हे भगवान! आब अही पार लगाउ”! संघर्षक समयमे भगवानपर विश्वास बडका शक्ति दैत अछि। काज करैत रहू आ फलक चिन्ता हुनका पर छोडि दिअ, इएह बात भगवान गीतामे बारंबार कहने छथि। एहि काज करबाक शक्ति बढैत अछि। कने-मने असफलतासँ निराशा नहि होइत छैक आ अन्ततः सफलता तँ भेटिते अछि।

मनुखक मोनमे परमात्माक बास होइत अछि। ते जँ ओ सही प्रयास करए तँ किछु दुर्लभ नहि रहि सकैत अछि। ताहि हेतु जरूरी अछि जे लक्ष्यक प्रति पूर्णसमर्पण होइक। आधा-अधुरा मोनसँ कएल गेल प्रयाससँ सिद्धि

नहि भए सकैत अछि। ई बात अक्सर देखल गेल अछि जे हम उत्तम सँ उत्तम फल चाहैत छी, जकरा ककरो लग किछु नीक छैक से हमरा लग किएक नहि रहत? हमसबसँ औअल किएक नहि रहब? से सभतँ ठीक, मुदा जखन पयास करबाक गप्प होइत अछि तँ हम पाछा रहि जाइत छी।

रामकृष्ण परमहंससँ एकबेर ्यो पुछलकिन जे भगानिक दर्शन कोना होएत? ओ ओहि व्यक्तिके पानिमे मूबा देलखिन आ पुछलखिन जे आब की चाही? ओ कियाअआए लागल-किछु नहि चाही, बस हमरा पानिसँ निकालु। ओकरा तुरंत पानिसँ निकालल गेल। पानिसँ बाहर अबितहिँ ओकरा कहलखिन जे जहिना पानिमे मुबि गेलाक बाद तोरा खाली पानिसँ बाहर हेबाक इच्छा रहि गेलह आओर किछु नहि सुझाह तहिना जखन भगानिके पाप्त करबाक हेतु एकाग हेबह तँ ओहो भेवि जेथुन। एहने वखस्सा एकलव्यक अछि। गुर रोणाचायमािरा शिक्षा नहि देबाक निणयसँ आहत ओ गुरक पतिमा बैसाए दिन-राति साधना करए लगलाह आ अपन लक्ष्यके पाबि तेहन निपुण धनुधर भए गेलाह जे रोणाचायो घबरा गेलाह आ ओकरासँ आँगूठा मागबाक नीचता कए गेलाह।

सफलताक कुंजी थिक, आत्मविशास। सामी रामतीथमएकबेर घोर जंगलसँ जाइत रहथि कि एकाि बाघ हुनका सामने आबि गेल। मुदा ओ बिना बिचलित भेनहि ओहि बाघक आँखिमे घुरैत रहलाह आ बाघ अपन रस्ता बदलि लेलक।सामीजीक आत्मविशाससँ बाघोके रस्ता बदलि लेबाक हेतु विशि कए देलक। जौ हमरा विशास अछि जे हम ई काज कए सकैत छी तँ बुझि लिअए काज हेबे करत। देर-सिर भए सकैत अछि, मुदा होएत।

मानि जब जोर लगाता है, पत्थर पानी हो जाता है।

जीनिमे सफल आदमीमे एकाि गुण सभठाम देखबामे आएत जे एहन लोकक रवैया सकारात्मक होइत अछि, ओ दोसरके ािकयाच्यु नहि करैत छथि, अपितु अपन समस्त शक्तिसँ लक्ष्यके पप्ति करबाक हेतु लागल रहैत छथि। असफलतासँ ओ निराश भए बैसि नहि जाइत छथि अपितु आओर जोरसँ काजमे

लावा जाइत छथि। एहने दृढ संकल्पी व्यक्ति कठिन सँ कठिन काजके सरल बना लैत छथि आओर सफलताक पराकाष्ठाके प्राप्त करैत छथि।

मनः पूताॅ समाचरेत

जीनिमे बहुतरास अवसय, अरवसकर घनिासब घटित रहैत अछ। कतेको बेर ऐहन घनिा घवति भए जाइत अछ जे मनुखके हलला कए राखि दैत अछ मुदा एहने समयमे संस्कार ओ जानक परीक्षा होइत अछ। तकर अभामि व्यथासँ विचलित लोक गलत रस्ता पकड़ लैत छथि आ कै बेर अनथम कए बैसैत छथि। हालमे दिल्लीक बुरारीमे घवति लोमहरषक घनिा समस्त जागरक व्यवतके हलला कए राखि देलक। ऐकहि पवारिक एगारह गोट दूपहर रातमे फासी लगा कए मर गेलाह। सभगोट एकदम सस्थि छलाह। पवारिर आवथक रपसँ समृद छल। राजस्थानसँ बीस-बाइस साल पहने दिल्ली आबि कए ठीक-ठाक हालतमे छलाह। परन्तु की भेल जे पूरा-क-पूरा पवारिर सयाॅ फासीक फंदा बना झुल गेल? जाच-पडतालमे ई बात आबि रहल अछ जे ओ सभ तंत्र-मंत्रक चकरमे पड़ गेल छलाह। हुनकासभके ई अंधविशास छल जे एहि तरहे मरलासँ हुनका सभके मुवत भए जाएत। कहि नहि सत्य की छल मुदा भेल तँ अनथे। सभतरहे जूडल-अलि पवारिर सदा-सविाक हेतु नष भए गेल आ सेहो धमक नामपर। ते मनुखके चाही जे आँखि खोलि कए राखथि। ककरो बातपर बिना सोचने-बचारने विशास नहि करथि। सोचएबला बात थिक जे फासी लगा कए मर गेलासँ मुवत कतएसँ भेति। एहन सुन्दर जीनिके व्यथमे गमा देब मूखता नहि तँ की थिक?

आँखि मूनकए ककरो चेला भए जाएब कोनो हसाबे उचित नहि अछ। आई काल्हि बहुत रास ढोगी बाबा सभ धमक नामपर लोकके ठकैत देखल जाइत छथि। ककरो बातके बिना सोच-विचारके नहि मानक चाही। अपन माथा जरर लगाबक चाही। कहब छैक जे मनः पूताॅ समाचरेत। जखन अपन मोन मानि जाए तखने कोनो काज करी। अपन जीनि-यापन करबा जोग बुद्धि भगानि सभके देने छथि। तकर सही उपयोग कएल जाए तँ बहुत रास दुघमिना सँ बचल जा सकैत अछ। कहक माने जे अंधभ्त नहि हेबाक चाही।

बहुत रास लोकसभ परेसान भए बाबा सभहक चकरमे पड़ जाइत छथि। एहन बाबा सभक आइ-काल्हि कमी नहि अछ। जतहँ देखू, जटि-जूधिारी बाबा तृशूल चमकबैत भेटि जएताह। हुनका सभसँ बचकए रही एहीमे कल्याण अछ। कारण ओ धन-धममसभ पर हाथ फेर दैत छथि। कै बेर तँ

जानोसँ लोक हाथ धो लैत छथि।

सोचएबला बात अछि जे कै बेर पढल-लिखल लोको एहन बाबा सभक चकरमे पडि जाइत छथि। तकर की कारण? असलमे जखन लोक वास्तविकताके नहि स्वीकार करैत छथि वा परिस्थितिसँ ताल-मेल नहि बैसा पबैत छथि, तखने एहन मानसिकता जोड मारैत अछि आ गलत-सलत काज लोक करए लगैत अछि। कहल जाइत अछि जे जँ अपना मोनक हो तँ नीक, जँ अपना मोनक खिलाफ भए जाऐ तँ आओर नीक। कारण जे अपना मोनक नहि भेल से बुझु जे भगवानिक मोनक छियनि आ हुनकर आदेश छियनि, से बुझि आगतके स्वीकार करैत आगा बढि जाउ। जीवनिमे नीक बेजाए होइत रहैत अछि। कोनो एहन व्यक्ति नहि भेटि जे सभ दिन नीके देखने होथि। नीक-बेजाए समयके साहस पूर्वक झेलैत जे चलैत रहि जाइत छथि, बीच रस्तामे थाकि कए, हारि कए काजके आधा-अधूरा छोडि नहि दैत छथि,एिह कीर्त्तिम करैत छथि,यशक भागी होइत छथि।

सही रस्तापर चलनिहार व्यक्तिके बहुत याचना होइत अछि। बच्चामे हमरासभ सत्य हरिश्चन्द्रक नाटिक देखने रही। केहन,केहन दिककतिसँ हुनका सामना करए पडल। एकटा पत्निसद राजा सत्यक रक्षा करैत-करैत भिखमंगा भए गेलाह। ई हालत भए गेलनि जे पुत रोहितक मृत लहासके जडेबाक हेतु कोनो व्योत नहि गेलनि। ऐहन दारुण दुख भगवानि ककरो नहि देथि। मुदा ओ सत्यक मार्गपर अडिग रहलाह आ अन्ततोगत्वा विजयी भेलाह। कहक माने जे जीवनिमूल्यक रक्षाक हेतु जँ कष्ट सहए पडए तँ अगुतेबाक नहि चाही, अपितु दृढतापूर्वक न्यायक मार्गपड चलैत रहबाक चाही।

अपना देश-समाजमे कमे एहन लोक होइत छथि जिनका सभ किछु बनल-बनाएल भेटि जाइत छनि। अधिकाश लोकके सभ किछु हेतु संघर्षमकरए पढैत छनि। जीवनिक मूलभूत आबश्यकता जेना आवासि, शिक्षा, स्वास्थ्य हेतु सेहो मोसकिल रहैत अछि। अधिकाश लोक तँ संघर्षमकरतहि जनमैत छथि आ ओही हालमे दुनियासँ चलि जाइत छथि। किछु एहनो लोक छथि जिनका भगवानि ततेक दए देने छथि जे फुराइते नहि छनि जे की करी? एहन लोकके विधिसँ काज लेबाक पयोजन अछि। जँ सही व्यक्तिक हाथमे संपदा आबि

जाइत अछि तँ ओ बहुत कयाणकारी भए सकैत अछि, हजारो, लाखोक तायदादमे जररतमंद, दुखी, ओ आतलोकक जीनिके बदलि सकैत अछि, मुदा से होइक तखन ने? लोकसभ अपने धर्म सीमित रहि जाइत छथि आ तखन कहताह जे मोनमे शाक्ति नहि अछि, फरसान छी, आदि, आदि।

जररी एकहि बातक अछि जे परिस्थितिसँ तालमेल बैसा कए चली। जाहि बातपर अपन बश नहि अछि तकरा स्वीकार करी एवम् जीनिमे आशावादी रवैया राखी। सभसँ जररी अछि जे ईश्वरमे विश्वास राखी। भगवानक घरमे देर अछि अन्हेर नहि अछि। अस्तु, धैर्यपूर्वक कर्तव्य कर्मके करैत रहब तँ देर-सवेरि जरर सफलता भेटत। एकहि बातके ध्यानमे रखैत जीनि याताके यथासाध्य शाक्तिपूर्णमढंगसँ बिताबक चाही।

जीनिमे सही दृष्टिकोण एवम् आशावादी रवैया रखलासँ बहुत रास समस्यासँ बचल जा सकैत अछि, कमसँ कम ढोंगीबाबाक चकरसँ तँ जररे बचब। अस्तु, सबसँ जररी अछि जे हमर बुद्धि शुद्ध होअए जाहिसँ हमसभ नीक-बेजाएक विचार करैत जीनि याताके मर्यादापूर्वक बिता सकी।

दृष्टि पूतॉ न्यसेत्पादॉ वस्त्रपूतॉ पिबेत् जलम्।

शास्त्रपूतॉ वदेत् वॉ मनः पूतॉ समाचरेत्॥

-चाणक्य नीति

ई समय ककरो नहि

हम श्यामा भगवतीक दर्शनक हेतु गेल रही। महाराजा रामेश्वरक चितापर बनल ओहि भव्य मन्दिरक अद्भुत सौन्दर्य अछि। ठाम-ठाम टूटल फूटल सीढ़ी आ दीवाल मन्दिरक दक्षिण कात पोखरि अछि जकर जमकल पानिमे हाथ देलासँ स्वच्छता बढ़क बदला घटि सकैत अछि। मोन पड़ि गेल जे जखन सी.एम. कालेज दरभंगामे विद्यार्थी रही तँ एहि ठाम आबी, भगवतीक दर्शनक बाद पोखरिक घाटपर बैसल करी। ओहि समय पोखरिक हालक बेहतर छल।

श्यामा मन्दिरमे माकालीक भव्य मूर्त्ति ओहिना चमकैत, दमकैत छल। भक्तगणक श्रद्धा ओहिना छैक पहिनहुँसँ बेसी बुझाइत छल। मन्दिरमे कै ठाम भक्तसभ पूजा पाठमे तल्लीन छलाह।

“मिथिलेश रमेशस्य चितायाँ सुप्रतिष्ठिता। श्यामा रमेश्वरीपातु रमेश्वर कुलोरविन्।”

मन्दिरक मुख्य द्वारपर लिखल उपरोक्त श्लोक कतेक बेर पढ़ैत रहलहुँ।

श्यामा मन्दिरक बाहर आ अन्दरमे प्रसादक विक्रय होइत अछि। अन्दरेमे प्रसाद किनलहुँ। भगवतीके प्रसाद चढ़ओलाक बाद कनीकाल ओतहि बैसि गेलहुँ। कनी कालक बाद बाहर भेलापर चिन्ता भेल जे प्रसादके बानरसँ कोना बचाबी कारण एकबेर एहिना प्रसाद चढ़ाकए निकलल रही कि एकटा बूढ़बा बानर कहासँ दौरल आएल आ प्रसाद लुटि लेलक। हम अबाक देखैत रहि गेल रही। अस्तु, प्रसादके आँचरक अन्दर कहुना कए नुकौलहुँ। बाहर आगू बढ़लापर चार कात कोनो-ने-कोनो महराजक चितापर बनल मन्दिर सभके देखैत मोनमे दरभंगा महराजक अकूत सम्पत्ति आ ओकर अपव्ययपर ध्यान हठात चलि जाएब कोनो भारी बात नहि। जँ एहि धनक उपयोग एतेक रास मन्दिरक बजाए जनताक कल्याणमे खर्च कएल जाइत तँ लोक समृद्ध होइत, आ महाराजो यशस्वी होइतथि। मुदा जे हेबाक छल से भेल। महराजक राज चलि गेल। बडका-बडका देबार सभ ढहि गेल। राजक हाताक अन्दरक जमीन सभ बिका गेल। आब ओहिठाम होटल अछि, दोकान अछि, सामान्य व्यक्ति सभक घर

अछि। ने ि रामा ने ि खिाला। महाराजाक गौरब-गरिमाक बखान करए हेतु ढहैत, ढनमनाइत राज परिसरक दुदशा अन्तहीन भए गेल अछि।

श्यामा मन्दिरक आस-पास बनल आओर मन्दिर सभ कतेको बेर गेल छी। ते व् सा पकवड सोझे शुभंकरपुर बादा भए गेल रही। मोनमे होइत छल जे जँ महराज ि हुनकर सलाहकारक जन कल्याणमे कनिको र कच रहैत तँ आइ मिथिलाक लोकक भविष्ये किछु आओर होइत।

काली मन्दिरसँ आगा बढलापर मिथिला विशविदालयक विशालकाय परिसर आएल। दरभंगा महराजक ओहि महल सभके सरकार अधिगहण कए ओहिमे विशविदाल स्थापित कए देलक। महराजक राज-पाि नाम सभ चलि गेल। एतबो नहि भेल जे ि हि विशविदालयक नाममे महराजक नाम रहैत। मुदा भाि पलि। समय बलबान होइत अछि।

“जो उगया सो अन्ताि, फूलया सो कुमलाही
जो चिनया सो ढही पडे, जो आया सो जाही।”

कबीरदासक उपरो् त कथन ध्यानमे आबि रहल छल। सॅसारक नियम अछि जेकर उदय भेल तकर अस्त होएत। समय रहिते जे किछु कए गेल ि एह रहि जाइत अछि।

विशविदालयक दक्षिनाकात बदरंग भेल इन्रपूजा स्थली आ तकर सामने बडीि खाली मैदान- बिना कोनो देखरेखके। आ ियक बात थिक जे एहि ऐतिहासिक, सासकृतिक धरोहरक रखरखाि कि उचित व्यविस्था किएक नहि भए रहल अछि?

कनीक आगा बढब तँ बडका-बडका देबार जे महाराजा सभ बना गेलाह, ओहिमे यत-ततगाछ सभ जनमि रहल अछि। देबारक बीचमे बनल हनुमानजीक मूर्तिके लोक सभ पूजा करैत देखाइत। आ ियक बात ई थिक जे बिना कोनो देखरेखके एतेक पुरान देबार सभ अखनो ठाढ कोनो अछि?

श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुर लौबािक कममे महराजी पूलसँ पहिने जाम लावा गेल छल। व् सा आगू नहि बढि सकैत छल। सॉहि साइकल, स्कूि र,

ठेला, पैदलयाती, कार आ पैदलयाती तेना ने लदमलद भए गेलाह जे कनी काल लेल भेलैक जे आब एतक्हसँ आपस होमए पडत। पैरे जेबाक सेहो जगह नक्ह बाचल छल। चुप-चाप व्‍ सा पर बैसल रक्ह जेबाक अक्तव्‍ त कछु विकल्प नक्ह छल।

जाबत ओक्ह जामके हर्व जेबाक पतीक्ा करैत रही ताबतेमे कछु गोि "राम नाम सत्य है, सबका यही गत है" बजैत एकि मृतकके कान्हपर उठौने ओतक्ह आक्ा कए अिक्ि गेलाह। हुनका पाछा- पाछा कतेको लोक चक्ल रहल छलाह जे मृतकक अक्तम सॉस्कारक हेतु िएह सभ बजैत चक्ल रहल छलाह।

कहुना कए कनीक जाम खुजलै। उसास पक्ते अक्तम यातापर क्ाकलल िक्ह मृतक आ तकरा कान्ह देक्हार सभके लोक सभ आगा जाए देलक। महराजी पूल पार करैत ि सभ आगा बक्ढ गेलाह। हम ताधक्र व्‍ सेपर थामक्ह पतीक्ा करैत रही जे आब लोक आगा बढत तँ ताब।

कनीके कालक बाद फेर िएह ध्क्नि। "राम नाम सत्य है, सबका यही गत है...।"

कछु गोि मृतकके कान्ह देने छलाह। आगा आगा गोरहाक सुनगैत आवा, कोहा लेने कता आ तकर पाछा पाछा मृतकक महायाताक गिहि सभ राम नामक मक्हमा गबैत आगा बक्ढ नक्ह सकबाक कारणे ओक्हठाम ठमक्ा गेल रहक्थ। हम व्‍ सापर रही आ ठीक हमरा सामानान्तरमे पीताम्बरीसँ आिृति, गेनाक फूलसँ लादल िक्ह मृतकक क्ाषाण शरीर छल। ओक्ह क्दिगत आत्माके मोने-मोन पणाम कएल। कछु-कछु सोचाए लागल। मोन कनी एमहर ओमहर भेल। ताबे जाम कनी ढील भेलैक। ओ सभ राम नाम सत्य है, सबका यही गत है, बजैत आगा बक्ढ गेल। आ हम व्‍ सासँ महराजी पुलपर चक्ढ गेलहुँ।

कनीके आगा पुलपर व्‍ सा चढले छल क्ा फेर िएह ध्क्नि। राम नाम सत है, सबका यही गत है। कछु गोि एकि मृतकक शियाताक सॉ राम नामक मक्हमा गबैत आगा बक्ढ रहल छलाह। मृतकक फूलक मालासँ लादल चाक्र गोिकि कान्हापर आगा बक्ढ गेल। अगल-बगल कतेको लोक मूकदशक्

छलाह जेना कोनो खास बात नहि भेल हो। तरकारी िलेी तरकारी बेचि रहल छल। माछक दोकानपर ओहिना माछक खण्ड कटैत रहल छल। कोन पर चाहक दोकानपर लोक चाह पीबि रहल छलाह। कतहु कोनो पकारक आलाप, पलाप नहि। व्र् साबला गप्पक कममे कहलक जे एहिठाम तँ कतेक एहने दृष्य रहैत अछि। आगा बनल श्मशान घाटिमे ओकर दाह संस्कार होइत अछि।

सॉभित: मृत व्यक्ति सभ िदि छलाह जाहिसँ ितारिणमे, संगी कविहारी गेनिहार लोकोमे कोनो भाि विहिता देखबामे नहि आएल।

ओहि दिन साझमे ओही सडक बाटि फेर जेबाक अिसर भेलि। हम सभ बरिआती जा रहल छलहुँ। महराजीपुलसँ पहिने जाम लागल गेल छल। लोक ठसाठस भरल छल। हमरा आगा पाछा दोसर बाआहक बरिआती छल। लोकके आगू पाछू घसकबाक रस्ता नहि भेटि रहल छल। सजल- धजल बरक कार ठामहि छल कि आगूसँ अबैत कोनो दोसर गाडी पो-पो'क आबाज करए लागल। के आगा बढत, के पाछा जाएत, कोनो ठेकान नहि। आधा घण्टा धरि ई व्यस्थिति बनल रहल। फेर केना-ने-केना रस्ता खुजल। लोकसभ आगा बढल। हम अपन कारमे आगा बढलहुँ। शेर बरिआती, बर पाछा छुटि गेल छल, तथापि ओहिठाम ठाढ भाए पतीक्षा करब उचित नहि छल। एके दिनमे एकहिठामसँ तरह तरहक दृष्य गुजरि गेल छल। राम नाम सत्य है'सँ लए शहनाइक धूनपर नचैत गबैत जाममे थकमकाएल बरियातीक धमाचौकरी देखएमे आबि रहल छल। मुदा ओही स्थानक चारकात बैसल, ठाढ लोक सभ हेतु धरि सन। ने हरो न च विषमय :।

असलमे कोनो घिना विशेर अपने आपमे ताधरि कोनो माने नहि रखैत अछि जाधरि हम ओहिसँ कोनो- ने-कोनो कारणसँ जुडि जाइत छी। तात्पर्यमई जे कोन िस्तु हमरा कष देत आ ककरासँ सुख होएत ओ पूणत: ओहि िस्तु विशेर ि घिना विशेरक पति हमर र वैयपर नभर्र करैत अछि। अस्तु, एकहि दिनमे श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुरक मध्य कतेको तरहक दृष्य देखबामे आएल। कतेको पुरान घिना सभ स्मृति पिलपर फेरसँ उबा आएल। ई समय ककरो नहि अछि। दरभंगा महराजक नहि अछि, आम आदमीक नहि अछि। मोन हो

कव्छआरी जाउ, मोन हो बक्रयाती भए जाउ। मुदा समय ठाढ नक्ह रहत। भोर साझमे बदक्ल जाएत। छोव्ड जाएत मोनक कोनो कनतोसमे एकि आओर क्तसान जे क्दन भक्रक घिनाक कम देने गेल। काक्ल फेर प:काल ओक्हना सूयमउगताह, क्दन भक्र क्कछु ने क्कछु होइत रहत, साझ होएत। सभि होएत, मुदा हमर अहाक क्जनगीक एकि आओर क्दन कम भए जाएत। समयके की हेतै? ओ तँ एक्हना आगू चलैत जाएत। गुजक्र जाएब हम ओक्हना जेना कतेको गुजक्र गेलाह आ लोक राम नाम सत्य है..., कहैत महराजीपूलक एक्ह पारसँ ओक्ह पार भए जाएत।

घमंड

जीनिमे बहुत रास अनुभव होइत रहैत अछि। कतेक किछु ने किछु एहन घटना घटित होइत अछि जे हमर आँखि खोलि सकैत अछि मुदा से होइत कहाँ अछि? हमसभ कायकशि चलते जा रहल छी, सोचि नहि पबैत छी जे हम एना किएक कए रहल छी? ई बात पायः सभ जनैत अछि, जे जन्मल अछि से मरत। मृत्यु अवश्यंभावी अछि, तथापि हमसभ सोचैत रहैत छी जे हम तँ अहिना रहब। युधिष्ठिर सिरा यक्षके देल गेल एहने पशक उतर एखनो ओहिना साथर्क अछि जहिना ताहि समयमे रहल होएत। आखिर एना कोना होइत अछि जे हम सदः घटित होइत घटनाक पति अनजान बनल रहि जाइत छी आओर एकदिन सभ किछु एतहि छोड़ि कए सभदिनक हेतु एहि दुनियासँ आँखि मुनि लैत छी।

आखिर किछु तँ छैक जे मनुख मातके निरंतर ओझरौने रहैत अछि। हम निरंतर अपन अस्तित्वकि रक्षाक हेतु संघर्षशील रहैत छी। हम जे कहैत छी से लोक मानए, हमर महत्व बुझए एवम् हमर शेषतकेँ स्वीकार करए। एहिसभक पाछा हमर घमंड पमुखतासँ मुखरित होइत रहैत अछि। जीनिसँ लए कए मृत्यु पर्यंत हमरा लोकनिक व्यवहारके पाछा ई तत्व विदमान रहैत अछि। हम जाने-अनजाने दोसरसँ अपनाके शेष साबित करबाक फेरमे पड़ि अपन जीनिके तँ अशात केनहि रहैत छी, संगहि दोसरोके तंग कए दैत छी कारण एहन स्वाथिमूलक सोचसँ व्यक्तिक अहंमे विकास उतपन होइत अछि आओर लोक अपनाके पैघ देखेबाक पयासमे दोसरके छोट साबित करए लगैत अछि। परिणाम होइत अछि, व्यक्तिक अनवरैत चलैत अन्तर्द्वंद्व।

मान-सम्मान, पकाष ाक लालसा मनुख मातमे ततेक बलबती रहैत अछि जे ओ कोनो हालातमे ताहि हेतु किछु करए हेतु तैयार रहैत अछि। लोक हमरा बुझए, मान्यता दिअए, हम समाजमे देखगर लोकमे गनल जाइ, एहि समस्त भावनाक पाछा जँ देखल जाए तँ ओकर घमंडे काज करैत रहैत अछि।

एहन घिना कात्य-पक्ष देखएमे अबैत अछि जे कतेको गोटि बेबजह अनकर मामलामे टाँग अरबैत रहताह। जेना कि ओ चैनसँ रहिए नहि सकैत छथि। एहन आदमी हेतु इहो कहल जा सकैत अछि जे ओ अपन चालिसँ लाचार छथि। कोनो, ककरो बात उठल कि ओ अपनाके ओहि बीचमे ठाढ कए देताह। तरह-तरहक बपथमउदाहरण दैत रहताह जाहिसँ ई कहुना सिद्ध होउक जे हुनके टा सभबातके बुझाए अबैत छन्हि कबाँ ओ जे कहैत छथि सैह टा सत्य थिक। एहन आदमीके अहा की कहबैक? “एकोहॉ वितीयो नास्ति” -एहि तरहक सोच कोना कारगर भए सकैत अछि?

हमर गाममे एकबेर शाद भोज होइत रहए। एकटा पक्षाक त व्यक्तिक देहावसान भए गेल छल। अपना जीवन कालमे ओ खूब सम्पत्ति अर्जन कएलाह। बहुत संघरमकए आगा बढलाह। तखन तँ मृत्यु सभक होइत अछि से हुनको भए गेलन्हि। अपने जीवनिमे लीखसँ लाख करबाक पुरराथम हुनकामे भगवान देलथिन। मृत्युक बाद लोकसभक आगह जे जबार होउक, एतेक सम्पत्ति अरजि कए गेल छथि। मुदा से तँ नहि भेलैक, गामे लए कए भोज हेबाक निर्णय भेलैक। संयोगसँ हमहूँ हालेमे सेवानिवृत्ति भेल रही आ गामे पर रही। भोज खेबाक हेतु गेलहुँ तँ देखैत छी एकटा हमर गामीण, जे भरि जिनगी बाहर कमाइत रहलाह, घरक दरबाजाके गछारि कए ठार भेल छथि, गरजि रहल छथि, बारंबार चेता रहल छथि जे एक-एक कए लोक अन्दर जाथि। हुनकर चिकरब-भोकरब ततेक पखर चल जे अनेरे ककरो ध्यान हुनका पर पडि जाइत छल। एम् पकारेण हुनका अपन महत्वक पदशन करबाक आ ताहिसँ संतुष्ट बोध पाप्त करबाक पयाप्त अवसिर भेलन्हि। जँ ओ नहि चिकरतथि, कर्ना घरक केबार धए ठाढ नहि रहितथि, लोक अपने अबैत जाइत, तैओ भोज भए जैतैक, पायः बेसी नीकसँ होइतैक कारण ओ तँ अनेरे केबारके पकडि चिकरि कए महौलके गडबडा रहल छलाह, मुदा हुनका तँ देखेबाक रहन्हि जे ओ एतेक महत्वपूणमव्यक्ति छथि, सबके कस्ट्रोल कए रहल छथि, हुनके आजासँ लोक भोज खाए अन्दर जाएत नहि तँ ओतए बबाल भए जाएत। विचारि कए देखबैक तँ एकरा व्यक्तिक विशेरक घमण्डक अलावा त किछु आओर

नञि कहल जा सकैत अछि।

की पैघ, की छोट सभ ्यो कतहुँ ने कतहुँ, कहुना ने कहुना घमण्डक चपेटमे पड़िए जाइत छथि। शास्त्र-पुराणसभमे सेहो कतेको एहन प्रसंगक वर्णन अछि जाहिमे एक सँ एक सन्त महात्मा, देवी-देवता एकर प्रकोपमे पड़ि गेलाह। महाभारतमे एहि सम्बन्धमे बहुत मार्मिक घटनाक वर्णन अछि। एकबेर हनुमान बूढ़ बानरक रूपमे भीमके रस्तामे बैसल गेलाह। भीम हुनका अपन नाङरि हटेबाक हेतु कहलखिन कारण हुनका जल्दी जेबाक रहनि मुदा ओ बानर टससँ मस नञि भेल, उल्टे व्यंग्य करैत कहलकनि जे जखन अहा एतेक बलवान छथिकहुँ तँ नाङरि हटा हमर नाङरिके उठाए किएक नञि आगू बढ़ि जाइत छी? भीमके ई बात बहुत अनगंल बुझेलनि आओर ओ ओहि बूढ़ बानरक नाङरिके हटबएमे लागि गेलाह, सभ प्रयत्न कए थाकि गेलाह मुदा नाङरि ठामहि रहल। हारि कए भीम कहलखिन जे अहा साधारण बानर नञि छी, के छी से सत-सत बाजू। तखन हनुमानजी अपन भेद खोलि कहलखिन जे हम आहींक भाए हनुमान छी। भीम बहुत लज्जित भेलाह आ हुनकासँ घटी मानलथि। एहि तरहे हनुमानजी हुनकर घमण्डके चकना चूर केलाह। कहक माने जे घमण्ड एकटा एहन व्याधि छथिक जे अनेरे हमरा लोकनिक आँखिपर पटी लगा दैत अछि आ हम सत्यके देखितहुँ ओकरासँ फराक रहि जाइत छी।

घमण्ड कहाँ अहाँ केर कटिरासँ कतेको लोकनिक पारिवारिक जीवन नकमभए जाइत अछि। हम ककरासँ कम? हमरा ई कहलक, ओ कहलक, हम ओकर बात किएक सहबैक, एहने-एहने छोट-छोट बातके पकड़ि कए लोक धए लैत छथि जाहिसँ आपसी प्रेम ओ विश्वास नष्ट भए जाइत अछि, बात ततेक बढ़ि जाइत अछि जे सम्बन्ध विच्छेद धरि भए जाइत अछि। जौं एहन समयमे ्यो बुझनिक होथि, एक मेग पाछा भए जाथि, हारि मानि लेथि तँ बहुत रास परिवार खण्डित हेबासँ बँचि सकैत अछि, बहुत रास धीया-पुताके पारिवारिक आशय बनल रहि जाएत एवम् परिवारमे समन्वय, शान्ति बनल रहत। मुदा ई बात बुझब आ बुझिओ कए व्यवहारमे आनब कै बेर बहुत मोसकिल भए जाइत अछि कारण ्यो अपन अहंके छोडबाक हेतु तैयारे नञि होइत अछि।

पवरणाम सामने अवछ। नाव्हहि ि लिके माए-बापक बीच कलहक दृष्य देखए पडैत छैक। बच्चासभ घरक िताि रिणसँ तौ भए घरसँ भागल-भागल रहए लगैत अवछ आ गलत सॉगतमे पवड कए कै बेर नशेडी भए जाइत अवछ। सोचए बला बात अवछ जे माए-बापक व्यथक अहॅके कारण एहन च्चियाक भविष्यक सॉो कतेक अन्याय होइत अवछ?

एहन नवह अवछ जे कमे पढल-वलखल लोक घमॅडक पदशन करैत छवथ अवपतु एक सँ एक ववािन ओ पैघ-पैघ लोकमे एकर व्यापक पभाि देखएमे अबैत अवछ। जे जतेक पैघ तकर घमॅड ततेक विनासकारी भए सकैत अवछ। इराकक राष्टपवत सदाम ओ अमेवरकाक राष्टपवत बुशके बीच जे एतेक भारी युद भेल तकर पाछु की छल? महज अहॅके िकराि? जवहना गाम-घरमे मूखम लडैत अवछ तवहना ओ सभ आपसमे ताधवर लडैत रहलाह जाधवर सदामक विनाश एवह हदधवर नवह भए गेल जे ओ अपन पाणोसँ हाथ धोलक।

बादमे पता चलल जे ओकरा लगमे कोनो रासायवनक हवथयार नवह छल जकरा आधार बनाए इराकपर अमेवरका आकमण केलक। कायालयमे अवधकारी लोकवन कए बेर अहॅपर चोि पडलापर अधीनस्त कमचारीके तबाह करबाक कोनो बोत बाम नवह जाए दैत छवथ। बदली कएदेब.काजसँ हिा देब आ ताहुसभसँ सॅतोर नवह भेलवन तँ नौकरीसँ मुअतल कए देब सामान्य बात वथक। जे ततेक पैघ अवधकारी वतनक अहॅसँ ततेक बेसी साििान रहब जररी वथक। काज करी िा नवह करी मुदा हुनकर सलामीमे कोनो कमी नवह हेबाक चाही। जँ से भेल तँ अहाक भगािने मावलक।

असलमे घमॅडी व्यवत भीतरसँ असॅतुष होइत छवथ। हुनका लगैत रहैत छवन जेना सौंसे दुवनया हुनका पाछा पडल अवछ, जेना ्यो हुनका सॉो न्याय नवह कए रहल अवछ, एवह तरहक वफजुल बातसभ हुनकर मोनमे बैसल रहैत अवछ जावह कारणसभ हुनकर व्यिहार सियॅ असॅतुवलत भए जाइत अवछ कािि लोकसँ बहुत बेसीक अपेवा रखैत अवछ। पवरणाम ई होइत अवछ जे ओ बात-बात पर लोक सभसँ मरए-कािए हेतु तैयार रहैत छवथ। सोचबाक बात

अछि जे एहन लोकके शान्ति कतएसँ भेटि सकैत अछि आ "अशान्तस्य कुतो सुखम्?"

एहि तरहक अशान्त प्रकृतिक लोकमे घमण्ड भरल रहैत अछि। जाहिसँ अछि जे एहन लोक आस-पासके लोकके तरह-तरहसँ कष्ट पहुँचबैत छथि। अपने तँ दुख कटिते छथि दोसरोक जीनाइके नरकमय कए दैत छथि।

घमण्ड कतेको कारणसँ भए सकैत अछि आ कए बेर तँ बिना कोनो औचित्यके सेहो लोक घमण्डी भए जाइत अछि। एहन उदाहरण अहाँके कतेकोठाम देखबामे आएत। हमरा गाममे एकटा बाबू साहेब कहिओ काल अबैत छलाह। यद्यपि ओ अपनाके बाबू साहेब कहबैत छलाह मुदा हुनक बाजबाक चहटिसँ ई लगैत छल जे ओ बाबू साहेब छथि। असलमे ओ पहिने बहुत धनीक छलाह मुदा कालक्रमे गरीब भए गेलाह। जमीन-जायदाद बिका गेलनि। कहबी छैक जे जौर जरि गेल मुदा ऐंठन अछिए। सैह गप्प छलैक।

महाभारतमे लिखल अछि जे द्रौपदीके अपन सौन्दर्यपर बहुत घमण्ड रहनि आ ओ गाहे-बगाहे ओ एहि कारणसँ कतेको शत्रु बना लेलीह। परिणाम सभके बुझल अछि। मामला द्रौपदी चीर हरण धरि पहुँचि गेल। की-की तमाशा ने भेल। भयानक युद्ध भेल आ ओ समस्त परिवार विनाशके सीमान धरि पहुँचि गेल। कहबाक माने जे घमण्ड चाहे ककरो होनि, आ ओ जाहि कोनो कारणसँ होनि, एकर परिणाम खराबे होइत अछि।

घमण्ड एकटा मानसिक रोग थिक जे मनुष्यके सत्यक दर्शन करएसँ ओहिना रोकि दैत अछि जेना सीसीमे कोनो वस्तुके पैसबासँ ठेपी। घमण्डी व्यक्ति एक प्रकारसँ आन्हर होइत अछि जे मदान्ध भए सही विचारके कदापि नहि सुनैत छथि। एहने मानसिकता रावणके रहैक जाहि कारणसँ घरहाँज भए गेलैक, सभ किछु नष्ट भए गेलैक। मेघनाद सन बीर ओ तेजस्वी सन्तानसँ हाथ धोअए पड़लैक, कुम्भकरण सन भातृभक्त भाए मारल गेलैक, विभीषण घर छोड़ि भागि गेलाह। सभ ओकरा बुझबैत रहलैक, एतेक हद धरि जे मन्दोदरीक कथन धरिके ओ सौतिआ डाह कहि अपमानित केलक। परिणाम सभके बुझल अछि। अस्तु, घमण्ड सर्वथा त्याज्य थिक।

जँ व्यावहार कए देखल जाए तँ एहि दुनियामे कोनो तरहे पार पाएब आसान नहि अछि। पढले देखू तँ एक सँ एक विद्वान छथि। आइन्सटाइन, सेक्सपीयर, कालीदास, राधाकृष्णन, कतेको नाम अछि, ककर नाम लेब, ककर छोडब, पनाक पना भरि जाएत। धनिकमे बानती करब तँ गनिते रहि जाएब। एहिना पद, सौदर्य, बुद्धि सभ तरहे एकसँ एक लोक एहि संसारमे भेलाह आओर छथिहो। तखनो जँ ओ यो कथुक घमण्ड करैत छथि तँ की करबै? हँसबे करबै ने? अस्तु, विनम्र होएब सबसँ नीक ऐश्वर्य अछि जे सही कही तँ भाग्यहि लगमे होइत अछि।

बरसहि जलद भूमि नअराए, नबहि यथा बुध विद्या पाए।
विनम्रता विद्याक परिचायक थिक। जररी अछि जे सही ज्ञान प्राप्त कए सभमे विनम्रताके आनल जाए आओर घमण्डसँ मुक्त पाओल जाए, जाहिसँ जीवन सुखमय होएत।

कलनाबला बाबा

मिथिलाचलमे रहनिहार सायदे कियो एहन हेताह जे कलनाबला बाबाक नाम नहि सुनने होथि। अत्यन्त साधारण कौपिन मे मात्र पसन ओ कलना मे कतेको साल सँ रहैत छलाह। ओहि समयमे हम कालेजक विद्यार्थी रही। परीक्षा भए गेल रहए। गामपर खाली रही। नौकरी ताकबाक पयासमे बहुत चिन्तित रही। मोन बेचैन रहैत छल। हमर मित्र संगीत शिक्षक श्री (लाल बच्चा) बहुत आस्थावान लोक छलाह। हुनकासँ कए पैरे दुनू गोटे कलना विदा भेलहुँ।

सुनने रही ऐक जे बाबा बहुत नियम निष्ठासँ रहैत छथि। जौ हुनका लेल किछु पसाद लए जा रहल छी तँ बहुत पवित्रता पूर्वक लए जेबाक रहैत छल। रस्तामे यत-कुत नहि हेबाक चाही, अन्यथा कहादन अनिष्ट भए जाइत छल। हम सभ तँ खाली हाथे जाइत रही तँ चिन्ताक बात नहि रहए।

कलना बाबा के दर्शन हेतु पहिलबेर हम अपन मित्र लालबच्चाक संगे गेल रही। रस्ताभरि पैरे-पैरे गप्प-सप्प करैत हम दुनू गोटे दूपहरिआमे ओहिठाम पहुँचलहुँ। बाबा नाहि फूसक घरमे रहथि। ओहिमे बासक फटक लागल छल। एक-दू गोटे आओर ओहिठाम बैसल रहथि। बाबा अत्यन्त सहज रूपमे सभसँ गप्प-सप्प करैत छलाह। गप्पक कममे ओ कहलाह ____

“एकटा सेठ एकबेर हुनका लग आएल आ कहलक जे भगवान

झुठ छथि। हम ओकरा कहलिऐक जे तोही झुठ छँ।"

ओ कहलथि जे हुनका लग लोक कबुला कए लैत अछि आ ओकर अनुपालन नहि करैत अछि जाहि कारणसँ ओकरा अनिष्ट होइत अछि। कैटा भक्त हुनका लेल पसाद अनैत छलाह। ताहि काजमे बहुत संयम ओ स्वच्छताक पयोजन रहैत छल। बाबाक कहब रहनि जे जौं ओ यो हुनका हेतु अशुद्ध वस्तु अनैत अछि तँ ओकरा अपने अनिष्ट भए जाइत अछि। ताहि पसंगमे ओ कैटा उदाहरणसभ देलथि।

कलनाबला बाबा सँ हमरा तीन बेर भेंट भेल। दू बेर तँ हुनके कलना आशम पर आ एक बेर ओ हमरा ओहिठाम आएल रहथि तखन। दुनू बेर कलना हम अपन कका लालबच्चाक संगे पैरे गामसँ कलना गेल रही।

एकबेर हम जखन बाबाक दर्शनक हेतु गेलहुँ तँ रस्तामे मोनमे भेल जे बाबाक एतेक नाम सुनैत छिअनि, किछु सदः देखबनिऐक। बाबाक ओतए हम दुनूगोटे पहुँचलहुँ तँ बाबा कहलाह जे आइ रहि जाह। हमसभ हुनकर आज्ञानुसार रहि गेलहुँ। रातिमे सामनेक पोखरिक घाटपर हम सभ सुति गेलहुँ। अधरातिमे देखैत छी जे एकटा बास हीलि रहल अछि आ ओकर फुनगीपर धोती सुखा रहल अछि। मर भए गेल जे की बात छैक? उठिकए ठाढ भेले रही की देखैत छी जे लगेमे बाबा हँसि रहल छथि आ हुनकर हाथमे धोती छनि। बाबा किछु-किछु कहबो केलाह।

एकबेर हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) बाबाके अपना ओतए चलबाक हेतु आगह केलथिन। बाबा मानि गेलाह। कारसँ बाबाक संगे हमहुँ रही। बाबाक सिपहसलारसब सेहो रहथि। बाबा पहिने

वारजा स्थान गेलाह। ओहिठाम माताक दशर्न केलाह। फेर कार गाम विदा भेल। गाम पहुँचलाक बाद ओ हमरा ओहिठाम चौकीपर बैसलाह। कोनो ओछाओन नहि ओछबए देलखिन। अखरा चौकी पड बाबा पडल-बैसल रहलाह। ताबे तँ सौसे गामक लोकक करमान लािग गेल। ततके भीड जमा भए गेल जे माइकसँ ओकरा शात कएल गेल। माइकेपर बाबा किछु उपदेश देलाह। सभके आशीिद देलखिन। हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण िमश) के आशीिद देलखिन जे तोरा बेिट होइ।से सत्य बेल। हुनका दूिट पुत तकर बाद जन्म लेलखिन। कतबो कहल गेलिन ओ किछु निह खेलिथ आ थोडेकालक बाद कारसँ आपस चिल गेलाह।

बाबाक देहपर मात एकिट धोती रहैत छल जकरा ओ ठेहुनधिर पहिरने रहैत छलाह। लोकके देिख कए ओ अदुत िमसमा हँसी हँसैत छलाह। खेबाक कोनो िचन्ता निह रहैत छलिन।नािहिट खोपडीमे मािवपर बाबा पडल िक बैसल रहैत छलाह। ओतहुँ लोक अपन समस्यासँ आन्हर भेल हुनका तंग केने रहैत छल।

‘‘हौ बाबा! किछु करहक ने...।’’

जखन बड तंग कए दैन तँ कहिथ-"का कहली? की भैल?"। मुदा जकरा ओ बाक दए दैत छलाह से जरूर उद्धार भए जाइत छल। बाबाक कहब रहैत छलिन जे जँ ्यो किछु कबुला करैत छिथ तँ काज िसद्ध भेलापर ओकरा तुरंत पालन करक चाही अन्यथा अिनष्ट होइत अिछ।

बाबाक आशममे कतेको गोिट रहैत छलाह िक अबैत-जाइत रहैत छलाह। ओहिठाम रहिनहार लोकसभ एकिह साझ अपनेसँ रािह भोजन पबैत छलाह। जखन ओसभ बहुत गोहराबिथ तँ बाबा हँसैत कहिथिन ‘‘ ठीक, बनाब भोजन’’। भोजन जहन बिन कए तैयार भए जाए

तखन बाबाक आजा चाहै छल जाक्हसँ ओ सभ भोजन शुर करक्थ। बाबा क्कछु बजबे नक्ह करक्थ। लैह, आब तँ बडका क्वपक्त। भोजन पडसल धैल अक्छ आ बाबाक आदेशक पतीक्ा भए रहल अक्छ। बाबाके ओ सभ गोहरा रहल छक्थ। बाबा बड छगुन्तासँ हुनकासभके देखक्थ। जखन ओसभ बाबाके आगह करैत-करैत थाक्क जाक्थ तखन ओ कक्ह क्दतक्थ- "शुर करह"। एक्ह तरहे बाबा हुनका लोकक्नक धैयक्क परीक्ा लैत छलाह।तकरबाद बाबा ओक्हठाम बैसल ओकरासभके खाइत देक्ख बहुत पशन होइत छलाह।

बाबाक आशममे क्कछु गोठे क्नरन्तर रहैत छलाह। क्कछु गोक् अबैत जाइत रहैत छलाह। क्खछुगोक्तँ मात पेक् पोसबाक हेतु ओतए पडल रहैत छलाह। कैक् भ्त बाबा लेल कक्बल क् आन-आन चीज-क्स्तु अक्नतक्थ। बाबा ओकरा छुक्बातो नक्ह छलाह। आस-पास रहक्नहारसभ ओक्ह क्स्तुसभके लुक्झ लैत छलाह। बाबा आक्यक्चक्कत भए देखैत रहैत छलाह।

बाबाक दरबारमे पैघ सँ पैघ लोकसभ अबैत रहैत छलाह। जौँ बाबाके इच्छा नक्ह होक्न तँ हुनकर पक् खुक्जते नक्ह छल। जाबे बाबा जीबैत रहलाह, ओक्ह पक्रपटाक लोकक अपन आशीक्दसँ कल्याण करैत रहलाह। क्बना कोनो लोभ लालच के सप्ूणमजीक्न ईशरक आराधनामे लगा देलाह। हुनक क्धनसँ एकक् महान सक्त एक्ह ससारसँ मु त भए गेलाह सगक्ह बहुतरास लोकक मोनमे अथाह शदा छोक्ड गेलाह। हुनका शत-शत पणाम!

म. सुभर झा (संस्मरण)

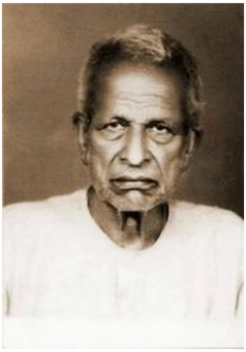

इलाकाक चर्चित व्यक्ति छलाह-मा० सुभर झा। धोती, गमरजइ सन कुर्ता पहिरने अत्यन्त सरल, साधारण लिबासमे मास्टर साहेब अडेर हाटि चौकपर बरोबरि देखा जएतथि। गप्प-सप्पमे ओ अपन विचार अत्यन्त स्पष्टतासँ रखैत छलाह। ताहि क्रममे जौं कने-मने विरोधो भए गेल करैत, यो किनको कए देलक दँ कोनो बात नहि।

मिथिलेटा नहि, अपितु समस्त भारतवर्षमे तत्कालीन विद्वान लोकनिमे हुनकर पकड़ छलनि। हुनकर विषयमे किछु कहब आ लिखब कठिन काज अछि तथापि स्मरणमे किछु घटना अछि जे लिखि रहल छी।

घटना सन् १९६५-६६ ई० क थिक। नतिुआरयासभ गाममे एकटा पुस्तकालय स्थापित करए चाहैत चलाह। किछु दिनक प्रयासक बाद किछु पोथी, किछु पैसा चन्दा भेल। किछु आलमारी सेहो बनाओल गेल। तकर बाद भेलैक जे ओकर उद्घाटन कएल जाए। उद्घाटन के करताह? आपसी विचार-विमर्शक बाद मा० सुभर झाक नाम पर आम सहमति भेल। मा० सुभर झा किछु दिन पूर्व सेवानिवृत्ति भए गामे रहए लागल छलाह। आ यदा-कदा हमर गामक चौकपर अबैत-

जाइत देखा जाइत छलाह। उदानि कायक्रममे मा० सुभर झाके सेहो किछु कहबाक आगह कएल गेल। बहुत दुरागह कएलापर ओ बजबाक हेतु तैयार भेलाह। सॉक्षिप्त भारणक कममे ओ कहलक्नि जे एिह इलाकामे अनुसॅधानक हेतु पयाप्त सामगी यत-तत पसरल अिछ। ओकरासभ के एहन पुस्तकालयमे सुरक्षित राखल जा सकैत अिछ। सॉगिह कबीरदासपर उपलब्ध सामगीक उल्लेख करैत ओ कहलाह जे एिह बातक पमाण अिछ जे कबीरदास मैिथल छलाह आ मैिथलीमे कतेको रचना कएलक्नि अिछ।

१९७३ ई०मे लगभग एक मास मा० सुभर झाक राची िस्थत आिस पर रही। तखन ओ योगदा सतसॉग विदालयक पाचायमरहिथ। ओही पिरसरमे पाचायक्क िनिसमे ओ रहैत छलाह। हुनका सॉग पिरिरक आर सदस्य निह छल। घरक काज करबाक हेतु एकि नौकर छल। भोजन ओ सियॉ बनबैत छलाह।

पातःकाल भात-दािल-आलूक सना बनाबिथ। रातुक भोजनक व्यिस्था सेहो तखने कए लेिथ। रािमे बेसी काल आँिक चोकरके दूधमे उसिन कए खाइत देिखअिन। रािमे सूतबासँ पूिमओ कायिमत र पसँ पढैत छलाह।साझमे िनन-चािर गोि बैिस कए शास्त्त चचा करैत छलाह।एक िदन साझमे मा् िर साहेबक सॉग कतहु जाइत रही।िर् साबला सब जतेक पाइ मागै, से देबाक हेतु ओ तैयार निह होिथ।िर् सातकैत-तकैत अन्ततः सौसे रास्ता िािक गेल।

एक िदन एिहना सॉग िहलैत रही तँ साईबाबाक चचा उठल। ओ हुनकर बहुत पशॉसा करिथ आ कहिथ जे साईबाबा सिरपहुँ िसद पुरर छिथ जकर हुनका पत्यक अनुभि तखन भेल रहिन जखन ओ बाबाक आशममे िसरमी गेल रहिथ। कहलाह जे आशममे हुनका

पहुँचते देरी बाबा हुनकर मोनक पशक उतर देबय लगलखन। आरो कएकि पसॉसभ ओ सुनओलथ।

योगदा सतसॉ महाविदालय नि बनल छल। मा् रि साहेब पूणमतत्परतासँ ओक विदालयक विकासमे लागल रहैत छलाह। पकसरमे आशमक आबास होइत छल। चार कात गाछ सभक बीचमे बनल भारण मॉपसभ। ओही पकसरमे एककदस आशम छल जाकमे एक कदन मा आनन्दमयी आयल रहथ। हम मा् रि साहेबक सॉ ओतए रही। मा आनन्दमयीक अबातक पूरा हालमे शाक पसक गेल। ओ ककछु बजली नक। चुपचाप सभगोि ध्यान केलक।कोनो भारणबाजी नक भेल।

एककदन मा् रि साहेबक मेरापर आॉनमे ठाढ रही। हमरा देख मा् रि साहेब गॉभीर भए गेलाह आ कहला जे नीकसँ पकरल-ओढल करह। जीनिमे सफलताक हेतु एकसभके बहुत महति अछ। ताहीकममे कहलाह जे एही कारणे ओ कएक बेर उच्च पदसभक चयनमे पछवड गेलाह यदवा ओ पदक हेतु पूणमयोग्य रहथ।

मा् रि साहेबक दोसर पुत भास्करजी इलाहाबाद विशविदालयमे जमन भाराक व्याख्याता छलाह। हुनकर मेरापर मा् रि साहेब अबैत -जाइत रहैत छलाह। सन्१९८३ ई० क गप्प अछ। एककदन हम हुनका दुनू गोिके नोत देने रकअक। दुनूगोि कोनो कारणसँ आगा-पाछा भए गेलाह। मा० झा पकने चलल रहथ। भाष्करजी पाछू चललाह आ मेरापर पहुँच कए बहुत परेशानीमे रहथ जे आखर ओ कतए चकल गेलाह। हमसभ गोि हुनका ताकए लगलहुँ। कतहु नजक नक आबथ। रातुक समय छल। भोजनमे विलॉब भए रहल छल। ताबत थोडे कालक बाद मकानक नीचासँ ओ जोर-जोरसँ हमर नाम लए कए वचकक रहल छलाह।हमरा सभके जानमे जान आएल। पता

लागल जे ओ हमर मेरा तकैत-तकैत धोबी घाि चक्ल गेल रहक्थ। हमर मकान माक्लक धोबी छल आ तकरे अनुमानमे ओ धोबी घाि चक्ल गेल छलाह।

मा् िर साहेब अक्त अध्ययनशील छलाह। जखन कखनो फुरसक्तमे रक्हतक्थ तँअध्ययन करए लवातक्थ। एकक्दन पातः एगारह बजे इलाहाबाद मे भाष्करजीक मेरा पर गेलहुँ। मा् िर साहेब ओतक्ह रहक्थ। कहलाह जे हम एगारह घाँिसँ क्तरन्तर पक्ढ रहल छी। मैक्थलीमे शब्दकोशक क्नमाणमे लागल छलाह। एकक्दन हम मा् िर साहेबक सोँ इलाहाबादमे कतहुँ जाइत रही। रस्तामे पुछक्लअक्न जे भगािन छक्थ क नक्ह? ओ उतर देलक्न जे ई कहब तँ कक्ठन अक्छ जे भगािन छक्थ क नक्ह परन्तु जौँ भगािन छक्थ तँ बहुत बइमान छक्थ, कारण दैत ओ कैि उदाहरण देलक्न। जेना पेिमे बच्चा क्कएक मक्र जाइत छैक? आक्खर ओ जन्मसँ पूि की गलती केलक?आ जौँ गलती केलक तँ जनक्म कए ओकरा भोगए। गप्पक कममे ओ कहलाह जे सम्पक्त जीबैत लोकमे क्बहारमे सँस्कृतक सभसँ पैघ विािन छक्थ।

साक्हत्य अकादमीक तत्कालीन अध्यक मा० सुनीक्त कुमार चििजीक ओ बहुत पशँसा करक्थ आ कहक्त जे हमरा लेल ओ भगािने छलाह। मा् िर साहेबक सोँ एकक्दन िहलैत रही। गप्पक कममे ओ अपन पिािसक दौरान भेल दू गोि घिनाक चचा कएलक्न। मा् िर साहेब टेनसँ कतहुँ जाइत रहक्थ। कोनो िेसनपर गाडी रकल तँ मा् िर सक्िमल्ली राधाकृष्नन ओक्हमे सिार भेलाह।मा् िर सक्िमल्ली राधाकृष्नन बैसबाक हेतु घुसबाक हेतु कहलक्खन।मा् िर सुभर झा अक्ड गेलाह एिम् मा् िर सक्िमल्ली राधाकृष्नन के जगह नक्ह देलक्खन।राचीमे गप्पक कममे एकक्दन मा् िर साहेब कहलाह जे ओ पुस्तकालयमे नौकरी करैत रहक्थ। ओही कममे हुनकासँ जे शष

पदपर अधिकारी छलाह से हुनकासँ किछु गलत काज कराबए चाहैत छलाह।ओ से करबाक हेतु सहमत नहि भेलाह। ताहिसँ कुपित भएकए ओ अधिकार हिनका बहुत तंग करैत छलथि। मा् रि साहेबके पता रहनि जे ओ अधिकारी गलत काज करैत अछि। चुपचाप ओकर गलत काज बला कागजातक प्रतिलिपि ओ रखैत गेलाह। पुस्तकक कय-विकिय मे ओ अधिकारी बहुत हेरा-फेरी केने छलाह, जकर कागजी सबूत मा् रि झा लग छलनि।बादमे एहि बातक आरोप भेल एमि् जाचक बाद ओ अधिकारी दोरी साबित भेल। अपनाके बचाबक हेतु ओ चाहलक जे पुस्तकालयके जे क्षति भेल रहैक से आपस करी मुदा ओकर पारिवारिक लोक पैसा आपस नहि कएलक। एहिबात सभसँ दुखी ओ भयभीत भए ओ आत्महत्या कए लेलक।

मा् रि झा सँ जे कनी-मनी हमरा सम्पर्कमभेल ओकरा संयोग कहि सकैत छी। बच्चेसँ हम हुनकर नाम सुनैत रही। सौंसे इलाकामे ओ चचाक विरय रहथि आ छोसिँ पैघ लोकक सम्पर्कमे सहजतासँ अबैत छलाह। ओ धुनक पका छलाह। जाहि काज मे लाबा जाथि तकरा पूणमकरबाक हेतु पाण-पणसँ जुवि जाथि। हुनका अपन गाममे गाछ सब रोपबाक इच्छा रहनि। कहि नहि, कतए-कतएसँ आनिकए सालक साल ओ आमक गाछ रोपैत रहलाह।

हुनक पहिरभा ओ वितिाक णिमम करबाक कोनो आशियकता नहि बुझा रहल अछि।आममरि रहित जीनि शैली एमि् अत्तशय सहज व्यहिारक संग स्पष विदिताक लेल ओ सभ दिन मोन पडताह। धोती-कुता पहिरने, पैरे खेतक आरए-आरए चलैत-चलैत पता नहि ओ कारन्तर कोन चिंतनमे ध्यानमग्न रहैत छलाह। अपन मौलिकता एमि् अपन बातके दृढतासँ रखबाक लेल ओ सभ दिन मोन पडैत रहताह।

म . जयकान्त मिश्र (संस्मरण)

सन् १९७८ इर्सीक जनविरी मासमे दिल्लीसँ स्थानान्तर भए हम इलाहाबाद गेल रही। ओहि समय प्रथम बेर म . जयकान्त मिश्रजी सँ हुनकर तीभूवित, सर पीसी निजी रोम स्थित घरमे भेंट भेल। बिना कोनो पूर्वपरिचय रहितौ ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ भेंट केला। एकटा मैथिलके हमर मेरा तकबाक हेतु कहलथिन। ओतहिसँ हमर हुनका सँग परिचय ओ सम्पर्कक क्रम प्रारंभ भेल जे अन्त धरि चलैत रहल।

जखन-कखनो हम हुनकर मेरापर जाइतँ ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ अत्यन्त अपनतिभासिँ गप्प करथि। अपनेटा नहि, अपितु हुनक पती, ओ सँग रहनिहार परिवारिक अन्य लोकनि सभ सेहो ओहिना गप्प-सप्पमे सँग देथि। जलखै, चाह, पान तँ हेबे करइ।

ओही क्रममे कतेको गणमान्य मैथिल लोकनिसँ हुनकर मेरापर भेंट भेल। हुनकर अध्ययन, अध्यापन, लेखन सबहक अवलोकन करबाक अद्भुत अवसिर भेटलि। कए दिन हुनका सँग इलाहाबाद विशवविद्यालयक अँग्रेजी विभाग गेलहु, जाहिठाम ओ अँग्रेजी विभागक अध्यक्षक पदपर कार्यरत छलाह।

इलाहाबादमे रहनिहार मैथिल समाज म . जयकान्त मिश्रसँ पूर्णम

पक्ष्यत छलाह। अधिकाश मैथिल सभसँ हुनकर व्यक्तिगत सम्पर्क छलन्हि। प्रत्येक साल विद्यापति समारोह मनाओल जाइत छल। म॰ रि जयकान्त मिश्र ओहिमे अग्रिममे रहैत छलाह। हुनकर मेरापर निरन्तर मैथिलीक विकास केना हो, तकर चर्चा होइत रहैत छल। ओ सदिखन बजैथ-

“मैथिलीमे लिखल कर। मैथिलीक हेतु काज कर।”

सॉग मैथिलीक हेतु कएल गेल अपन अनरित संघर्षक चर्चा सेहो होइत, जाहिसँ मैथिली विकास याताक साक्षात अनुभि होइत छल।

मैथिली भाराके बिहार लोक सेवि आयोगमे हि देल गेल रहइ। तकरा पुनश्च आपस अनबामे, मैथिलीके बच्चा सबहक शिक्षाक अनिवार्यममाध्यम बनेबाक हेतु ओ कहि नहि, कतेको बरमसघरमकरैत रहलाह आ अन्ततोगत्वा अपन प्रयासमे सफल रहलाह। मैथिलीक विकास हेतु ओ गाम-गाम घुमैत रहलाह। ततबे नहि, जतए कतहु मैथिलीक चर्चा होइत आकि कोनो कार्यक्रम होइत तँ ओहिमे म. जयकान्त मिश्रजी अबस्से भाग लेथि।

आयु बढलासँ नाना प्रकारक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या रहैत छलन्हि। हुनका कतेको साल पूर्व पेसमेकर लागल छल तथापि जँ कतहु मैथिलीक कार्यक्रममे हुनका बजाओल जाइत, तँ ओ अबस्स जाथि। पारिवारिक लोक चिन्तित भए जाइत छलथिन।

एकबेर हम इलाहाबादसँ पटना जाइत रही। स्लीपरमे हमर आरक्षण छल। म॰ रि जयकान्त मिश्रजी के देखलहुँ। ओहिना ठाढ, बिना सीटि याता कए रहल छलाह। बहुत आग्रह केलापर ओ हमर सीट लेबाक हेतु तैयार भेलाह। कहथि जे ओ अहिना चलि जेता। ई छल हुनकर उत्साह- मैथिली कार्यक्रमे भाग लेबाक। ओहि दिन पटनामे कोनो मैथिली कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु जाइत छलाह।

म. जयकान्त मिश्रजीक भारा ओ व्यवहारमे अद्भुत मधुरता

छल। कखनो नहि लगैत जे एतेक पैघ विभूतिसँ गप्प कए रहल छी। जे जेहने स्तरक लोक रहैत, तेकरा सँग तेहने भए गप्प करैत छथि। पूरा ध्यान देथि। घरक सदस्य जकाँ ओकर पूर्ण सत्कार करथि। घरक प्रथम तलपर हुनकर पुस्तकालय छल। ओहिमे बैस कए ओ अध्ययन, लेखन करैत रहैत छलाह। इलाहाबादसँ लघुकाय एकटा मैथिली पत्रिकाक सम्पादन सेहो करै छलाह। हुनकर नाती, भातिज सभ ओहि पत्रिकाक मैथिल लोकक बीचमे वितरणक व्यवस्था करथि। एकाध बेर हमरो ओहि काजमे ओ लगा लैत छलाह।

माघ मासमे प्रयागमे संगमतट पर ओ सपरिवार कल्पवास करैत छलाह। मिथिलाक प्रसिद्ध माछबला झण्डा मैथिल पण्डा सबहक पहिचान अछि। ओहि झण्डाके देखि कए जयकान्त बाबू डेराक ठेकान लगाओल जाइत छल।

नवम्बर २००७ ईस्वीमे हम इलाहाबाद गेल रही। हुनकर डेरापर गेलहुँ। परन्तु ओ काशी वास करए चल गेल रहथि। हुनकासँ भेंट नहि भए सकल। हुनकर डेरापर हुनकर नाती, एवम् परिवारिक अन्य सदस्य सभ छलाह। डेरा उदास-उदास लगैत छल। परिवारमे कएटा दुर्घटना भए गेल छल। किछु साल पूर्व हुनक ज्येष्ठ पुत्र डा. रमाकान्त मिश्रक आकस्मिक असामयिक निधन भए गेल छल। आओर कएटा गप्प-सप्प...। एहि सबहक आभास घरमे भए रहल छल। किछुकाल बैसला बाद हम सभ ओतए-सँ अपन स्मृतिके पुनर्जगा कए ओहिठामसँ विदा भए गेलहुँ। डाक्टर साहेबसँ भेंट नहि भए सकल।

डाक्टर जयकान्त मिश्रजीक पिता महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्रक बरखी बहुत यत्न पूर्वक मनाओल जाइत छल। ओहिमे डाक्टर साहेब ओतए हम (जाधरि इलाहाबादमे रहलहुँ) नियमित आमंत्रित होइत छलहुँ। हुनकर सम्पूर्ण परिवार अत्यन्त मनोयोग पूर्वक ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करैत रहलाह। नाना प्रकारक भोजनक व्यंजन सबहक स्मरणे

मातसँ मन आनन्दित भए जाइत अछि। भोजनक संग-संग कतेको गप्प-सप्प मैथिल लोकनिसँ ओहि अवसिरपर भेंट भए जाइत छल।

इलाहाबादमे गप्प-सप्पक क्रममे ओ मैथिलीकें साहित्य अकादेमीमे मान्यताक सम्बन्धमे हुनक कएल गेल प्रयासक विवरण करथि। ओहि हेतु ओ दिल्लीमे तत्कालीन प्रधान मंत्री दिरा मैथिली पोथीक प्रदर्शनीमे भाग लेब, दिल्लीक उपराज्यपाल स्व. आदित्यनाथ झाजीक प्राप्त समर्थन एवम् सहयोगक चर्चा सेहो करैत छलाह।

एकबेर हम म. शुभर झाजीक संग इलाहाबादमे म. जयकान्त मिशजीक ओहिठाम जाइत रही। रस्तामे म. जयकान्त मिशजीक मैथिलीक प्रति अनुराग ओ मैथिलीक विकास हेतु संघर्षक प्रशंसा करैत म. शुभर झा कहलाह-

“मिथिलामे म. जयकान्त मिशक एवम् हुनक पूर्वज लोकनिक अदभुत योगदान अछि।”

संगे ईहो कहलाह-

“एहन बहुत कम परिवार भेटि जाइहमे लगातार छह पुश्त सरस्वतीक एहन आशीर्वाद प्राप्त रहल हो।”

ओ दिल्ली आबथि तँ हमरा सूचित करथि। कतेको बेर तँ ओ हमरे ओतए ठहरैत छलाह। कए बेर हविाइ यातासँ उतरि लबनचूस बच्चा सबहक लेल नेने अबैत छलाह। जाधरि ओ मेरापर रहथि, निरन्तर मैथिली सम्बन्धी चर्चा होइत रहैत।

मैथिली आन्दोलनक संघर्षमयाता आओर अनेकानेक लोकनिक योगदानक चर्चा सेहो होइत।

एकबेर ओ (म. जयकान्त मिश) दिल्लीमे मैथिलीक प्रश्न पत बनबए खातिर आएल रहथि। संगमे स्व. सुमनजी एवम् म. नवीन बाबू सेहो रहथिन। ओ तीनू गोटे हमर आग्रहपर पुष्पविहार, दिल्ली स्थित हमर आवासिपर अएला आ एकसंग हुनका सभके भोजन करेबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। ओहि अवसिरके स्मरण करैत अखनो रोमाञ्चित

भए जाइत छी। तीनू गोटि एकटे हमरा ओतए आएब आओर हुनकर ितालाप सुिन मोन आनिन्दत भए गेल। आनिन्दतो केना ने होइत, म. सुमनजी एिम् म. नवीन बाबू सी.एम. कौलेज- दरभंगामे हमरा मैथिली पढौने रहिथ।

म. िमशजी अत्यन्त समाजिक व्यिक्त छलाह। इलाहाबाद कर्ों बाहरोक मैथिल लोकिनके व्यिक्तगत स्तरपर ओ मदित करैत छलाह। नयाकिरा, इलाहाबाद िस्थत हमर मेरापर कएक बेर पएरे चिल आबिथ। कतेको मैथिल विदाथी सभके ओ अपना ओिहठाम रािख कए हुनकर िशक्षामे सहायता करैत छलाह।

इलाहाबाद विशविदालयक अंगेजी विभागक अध्यक्ष पद हेतु हुनका बहुत विरोधक सामना करए पडल छलिन। तािह खाितर ओ इलाहाबाद उच्च न्यायालयमे केस सेहो केने रहिथन। अन्ततोगत्वा हुनकर विजय भेल, आ ओ अंगेजी विभागाध्यक्ष भेलाह। हुनकर विरोधी सबहक कहब रहैक जे ओ मैथिलीमे िलखै छिथ। हुनकर पी.एच-डी.क विषय 'मैथिली भाराक इितहास' छल तखन ओ अंगेजी विभागक अध्यक्ष केना भए सकै छिथ?

जयकान्त बाबू िदल्ली आएल रहिथ। तािहया हुनकर पोती रोिहनीमे रहैत छलिखन।। हुनकासँ भेंट करबाक रहिन। हमरा संग चलए कहलिन। बसपर ठाढे हम दुनू गोटि रोिहनी विदा भेलौ। इलाहाबादसँ एकटा पोिरी अनने रहिथ। तेकरा उपहार सिरप अपन पोतीके देलिखन। िकछु कालक बाद हम सभ ओिहठामसँ आपस भए गेलहु। ओिह पोतीक िबआह िदल्लीए मे भेलिन एिम् िबआहक हकार हमरा देबाक हेतु म. रमाकान्त िमश (कन्याक िपता) सियाँ आएल रहिथ। हम िबआहक अिसरपर गेलो रही। िबआहमे मािर साहेबक सभ भाए आएल रहिथन। कोनो पकारक दहेज निह लेल गेल छल। मािर साहेब दहेज रपी लेन-देनक िखलाफ छलाह एिम् एकरा

मिथिलाक संस्कृतिक पक्षकूल कहथि।

म ्रि जयकान्त मिशजीक पिता महामहोपाध्याय- म. उमेश मिशक बनाओल मकानमे म ्रि साहेब एमि् हुनकर भैयारी लोकनि सेहो रहैत छलखिन।। सभसँ शुरबला कक्षसामे म ्रि साहेब रहथि आ तकर बाद बलामे आर भाए सभ।

म ्रि साहेबक व्यक्तिगत जीनिमे, पहिरोमे भोजन आ रहन-सहनमे मिथिलाक संस्कृतिक अमिट छाप छल। मकानक ओसारपर माछक मूर्तिम लटिकल, सदैि झूलैत रहैत छल। घरमे भोजन बनबएकाल देहपर सित्त नहि रहक चाही। बाहण भोजनकाल परसनिहार आ भोजन केनिहार गॉंजी, कमीज नहि पहिरथि। भोजनमे पियाजु-लहसुन नहि पडए। जखन कखनो ओ बाहर यातापर जाथि तँ अपन नियम सबहक पालन कठोरतासँ करथि। बाहरमे बेसीकाल चुरा-दहीसँ काज चलबथि।

इलाहाबादमे रहितो ओ गामसँ सम्पकमबनओने रहथि आ सभ साल मास-दू मास गाम जा कए रहथि। गामसँ लौिति काल सभ गामीणक ओहिठाम जा कए भेि करथि एमि् पुनि गाम एबाक इच्छा रखैत सभसँ विदा लेथि। एहि कममे किछु साल पूमिओ गाम गेल रहथि, ओतहि बहुत जोरसँ बिमार पडि गेला। हमिअिक भए गेल रहनि। ओहिठामसँ लोक सभ उठा-पुठा कए दरभंगा अनलकनि। दरभंगामे थोडेक सुधार भेला पछाइत इलाहाबाद आपस अएला। इलाहाबादमे हुनकर मासो इलाज चलल। बहुत मुश्किलसँ हुनकर जान बचल। बिमारीसँ उठलाक बाद एक दिन फोनपर गप्प भेल रहए। बहुत दुखी बुझाइत रहथि। अबल भए गेल रहथि, तथापि मैथिलीक विकासमे अवसर कि बनल छलनि आ ओहि विरियमे गप्प करैत रहलाह।

मैथिलीक विकासक हेतु म. मिशजीक अदुत योगदान अछि। संविधानक अषम अनुसूचीमे मैथिलीके सामिल करबाक हेतु ओ

कतेको साल पयास करैत रहलाह। अन्ततोगती हुनकर ईहो सपिन साकार भेल एमि् मैथलीके संविधानक अष्मि् सूचीमे सामल कएल गेल।

इलाहाबाद विशविदालयसँ सेिी नि्ृति भए ओ मध्यपदेशमे यतकुि सथत गामीण विशविदालयमे विभागाध्यक भेलाह। ओहठाम ओ कएक साल धिर रहि संस्थानक शकिण यिसथाके उतकृष बनेबामे संलग्न रहलाह। नानाजी देसमुख विशविदालयक उपकुलपित रहथि। देसमुखजी म. मिशक कायसँ अतशय पभावित रहथि। हुनकर इच्छा रहिन जे म. मिश ओतए बनल रहथि परन्तु मैथलीक काजमे विशेर रिच ओ यसतताक कारणे ओ विशविदालयक काजसँ त्याग-पत दए देलिन।

म्िर मिश अतयन्त अधययनशील यिक्त छलाह। रातमे जखन-तखन ओ उिठ जाथि आ पढल लागथि। हुनकर सासथयक िचन्तासँ िफकरसान भए पिरिरक लोक कएक बेर आपित करथि जे एतेक पिरशम निह करथि, मुदा ओ अपन कायकममे अनिरत लागल रहैत छलाह। मैथलीक नाम सुिनते जेना हुनका सफुिर्तमआिब जाइत छल। पेसमेकर लगलाक बादो ओ मैथलीक आन्दोलनक हेतु समिपर्त रहलाह आ जतए कतहु हुनका एिह काजे बजाओल जािन तँ ओ सहरमजाथि।

२००८ इसीमे, निरिक आगमनक असिरपर हम हुनका निरिक मंगल कामना पत पठौने रिहएिन। तकर जिबमे ओ पोसिकामम लिखने रहथि जािहमे थर-थर कँपैत हाथसँ लिखल गेल अकर ओ हसताकर देिख हुनक एहू असिथामे सकृयताक पमाण भेिल। तकर बाद लगभग साल भिर कोनो समपकमनिह रहल। जनिरी (२००९) मे एक िदन म. धनाकर ठाकुरजी पत इनिरनेि पर पढल, जािहमे म्िर मिशक पयागमे मासक दौडान िनधनक समाचार छल। कतेको बेर ओिह समाचारके पढल। मैथलीक एकिा अनन्य सेकिक िचर

सॉघरक बाद देहासिान भए गेल छल। कमथलाक गाम-गाममे शोक सभा मनाओल गेल। शदाजकल देकहार लोक सबहक हुनक पक्त वसनेह अणिमीय छल।

म. जयकान्त कमश अपने-आपमे कमथलाक इकतहास छलाह। कमथलाक कोनो एहन गाम नक्ह हएत जतए ओ मैकथली कायकमक हेतु नक्ह गेल होकथ। वदिापकत समारोह हो, कर्ण ि मैकथलीके सॉविधानक अष म सूचीमे साकमल करबाक हेतु आयोकजत आन्दोलन हो, ि मैकथलीके वशाकाक अकािियममाध्यम बनेबाक पयास हो, सभठाम हुनकर नाम अकाते छल एिम् ओ व्यव्तगत रपसँ सभ कायकमे भाग लइते छलाह।

जखन-कखनो ओ भेविितकथ, मैकथलीमे कलखबाक हेतु पेकरत करबे करकथ, मैकथलीक सम्मानक हेतु कएल जा रहल पयासक चचा ककरतकथ, सभ काजपर मैकथलीसँ जुडल आन्दोलनके पाथकमकता देबे करकथ।

मैकथलीक एक्ह अनन्य सेकिक कतेक उपकार अकछ तकर णिमम असॉभि। हुनक साहृदयता, िणीक मधुरता एिम् अपनति सकदखन मोन पडैत रहत आ मोन रहत हुनका सॉग कबतौल गेल अदुत कण। ओ आब नक्ह छकथ, मुदा कोकि-कोकि मैकथलक हृदयमे ओ सकदखन वदिमान छकथ ओ रहताह।

1

पॉ परमानन्द झा (एक संस्मरण)

लोक एहि दुनियामे अबैत अछि, चलि जाइत अछि मुदा ओकर कएल काज ओकरा जिबैत रखैत अछि। कतेको व्यक्ति एहि संसारमे एहने भेलाह अछि जे अपन संघर्षसँ अपन जीवनिमे एकटा निदृष्टान्त उपस्थित केलाह आ हुनका गेलाक बादो लोकसभ हुनक कृतित्वकि चचम कए गौरकि अनुभि करैत छथि। एहने लोक छलाह हमर गामीण-संगीय पवमत परमानन्द झा।

हमसब जखन नेने रही तँ हुनका कतेको बेर पैरे अबैत-जाइत देखिअकि। पैरे चलब ओहि समयमे कोनो अजगुतक गप्प नहि छलैक। मुदा ओ पैरे-पैरे मुजफ्फरपुर साकात्कर देबए चलि जाइत छलाह। लौवि कए ओहिना दन-दन करैत रहैत छलाह। कहिओ हुनका बैसल, आराम करैत नहि देखलिअकि। दिन-राति ओ किछु-ने-किछु करैत भेटिाह। व्यथमआमरि कर्मि पदशन करबामे हुनका कोनो रकिय नहि छल। सौसे दुनिया जँ खिलाफ भए जाए आ हुनका लगतकि जे ओ सहीपर छथि तँ ओ अपन कायिपर अकिग रहैत छलाह।

सत कहल जाए तँ एहन कमठ लोक कारलैके देखएमे अबैत अछि। खेत कोरब, धान रोपब, धान कािब, दाउन करब सँ लए कए इसकूलमे मासरिी करब फेर विदािथीसभ के टयुशन करब, ततबे नहि पॉमताइ करब, सभिा काज ओ एकसुरे करैत रहैत छलाह। हमसभ जखन नेना रही तँ हुनके घरक पाछा बम्हि स्थानमे हमर सभक इस्कूल छल। ओतए हमसभ पढए जाइत छलहुँ। कै दिन पानि पीबाक हेतु हुनका ओहिठाम आबि जाइत छलहुँ। जखन कखनो

ओतए जइतहुँ ओ कारॅतर काजमे व्यस्त रहैत छलाह। छोि-छीन फूसक घरमे अपन साधनामे लागल रहैत छलाह। कोनो काज करबासँ हुनका परहेज नक्ष छल। लोक की कहत से हुनका सुनबाक समय नक्ष छल। जे अपना ठीक बुझाइन से ओ करक्थ, जकरा जे मोन हो से कहैत रहए। “हाथी चलए बजार, कुता भुकए हजार।”

जीनि भक्र ओ घोर सॅघरमकरैत रहलाह। कठोर पक्रशम ओ कातक्यतासँ गामक आस-पास क्यकन जमीन-जाएदाद बनओलक्त। अडेरचौकपर सेहो बहुत कीमती जमीन ओ कीनलक्थ। सुनबामे आएल जे अटारह बीघा जमीन ओ अपना जीनिमे मेहनक्त एमि् इमान्दारीसँ कीनलक्थ। एतबे नक्ष जाक्षठाम एकि मामूली फूसक घर छल ओतक्ष पता नक्ष कतेको कोठरीक घर बना देलक्थ। ओक्षठाम गेलापर अहाके चार कात घरे-घर देखएमे आएत। गाम-घरमे जकरा पोखक्रआ-पानि कहैत छैक, ताही तरहक हुनकर गामीण आिस अक्छ। आ से सभि मेहनक्तसँ केलाह, कोनो ककरो िइमानी नक्ष, अक्यतु अपन विदा ओ िक्दसँ कारन्तर समाजके सेि करैत उपाजम केलाह। ओ काटाह कममयोगी छलाह। कखनो बैसल नक्ष रक्षतक्थ। कोदाक्र पारसिँ लए कए इसकूलक मासरिी भासिँ ओ जीनि पयमत करैत रहलाह। अगहन मासमे माथपर धानक बोझा लदने सीतारामसीताराम कहैत - मेगार दैत अपन धानक खेतसँखक्रहान धक्र अबैत- जाइत हम हुनका देक्खअक्त। जकरा जे बाजक होइक से बाजए, हुनका लेल धक्तसन।

ओ खाली धने अक्जम करैत रहलाह से बात नक्ष, अक्यतु घनघोर सॅघरमकए विदोपाजम सेहो केलाह। कतेको विरियमे आचायम केलाह। फेर अॉजी माध्यमसँ सेहो उच्च क्शका पाप्त केलक्त। बहुत क्दन धक्र रक्षका उच्च विदालयमे सॅस्कृतक क्शकक रहलाह आ पधानाध्यापकक पद धक्र पोनक्त पाप्त केलक्त। धममओ अध्यात्मक सेहो हुनका बहुत नीक जानकारी छलक्त। कतेकोठाम धाक्मक सभा सभमे पिचन सेहो करैत छलाह। दक्डभॉगामे सॅत-समागममे पिचन

करैत हमहुँ हुनका सुनने रही। ओहि समयमे हम ओतए सी० एम० कालेजमे पढैत रही।

कतेको दिन हमसभ हुनका साइकलपर ईंटा बन्हने, आ सरियाँ ओकरा गुरकबैत पैरे-पैरे चलैत देखने छी। कखनो सीमेन्टक बोरा, कखनो बाउल, कखनो ईंटा ओही साइकिल पर ढो-ढोक ओ पक्का मकान बना लेलनि। एहन धुनके पक्का, कर्मठ ओ संकल्पक धनी व्यक्ति कहिओ हारि मानि सकैत।

व्यक्तिगत जीवनमे कै बेर हुनका प्रतिकूल परिस्थितिक सामना करए पडल, तथापि ओ धैर्यपूर्वक जीवनयात्रामे लागल रहलाह। आस-पासक गामक बहुत रास लोक हुनकार अध्यात्मिक चेला छल। हुनकासँ मंत्र लेने छल। हुनका प्रति श्रद्धाक भाव रखैत छल आ हुनक मृत्युसँ बहुत दुखी भेल छल।

आब ओ एहि दुनियामे नहि छथि। किछु साल पूर्व एकाएक हुनकर तबियत खराप भए गेल। मास दिनक भीतरे ओ मार्च२०१४मे चलि गेलाह। ओहि समय हुनकर बएस असीसँ उपरे रहल होएत। मृत्युसँ किछुमास पूर्व हम गाम गेल रही तँ हुनकासँ भेंट भेल रहए। ओ पूर्णतः स्वस्थ लगैत छलाह। अन्ततु बरी काल धरि अध्यात्मिक विषयपर अपन मंतव्य दैत रहलाह। हमर माएसँ सेहो गप्प करैत रहलाह। तकर किछुए दिनक बाद हुनक मृत्युक समाचार भेटल। आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ।

हुनक देहावसानसँ गामेक नहि अपितु परोपटाके एकटा अपूर्णीय क्षति भेल। कर्मठता एवम् सफल संघर्षक एहन जीवन्त उदाहरण भेटब बहुत मोसकिल काज अछि। हुनका हमर शत-शत प्रणाम!

सॉम्पक्त हस्तातरण

सॉम्पक्त हस्तातरण अव्धक्तयम, 1882 १ जुलाइ १८८२सँ लागू भेल। सॉम्पक्त हस्तातरण अव्धक्तयम सँक्क्छक हस्तातरण-क्वकी, बन्हक (भरना), उपहार, अदला- बदली, चाजम पर लागू होइत अक्छ। विरासात, क्दाक्लआपन, जक्ती, न्यायलयक आदेशक अनुपालन हेतु,, ाि इक्त पत ािरा कानूनक अनुपालनक हेतु कएल गेल सॉम्पक्तक हस्तान्तरणपर सॉम्पक्त हस्तातरण अव्धक्तयम लागू नक्ह होइत अक्छ।

ॎयो अपन सॉम्पक्त क्कएक बेचैत अक्छ? पैसाक पयोजन भेला पर-जगजाक्हर जबाब अक्छ। बेचएबलाके उक्चत पैसा भेवि जाइक आओर क्कननाहरके सही सलामत सॉम्पक्त जेना जमीन, मकान, फ्लैि, भेवि जाइक जाक्हपर क्कननाहर क्ाििध र पसँ माक्लकाना हक पाप्त कए सकए, ओकर सँक्त एिम् कानून सम्मत तरीकासँ ओकर ऊपभोग कए सकए। एहन नक्ह होइक जे कीननाहर सभाि पैसा दए दैक मुदा कीनल गेल सॉम्पक्तपर ॎयो आन अपन हक लए ठाढ भए जाइक, क्कम्बा बलपूबक्क ओक्ह सॉम्पक्तपर कव्जा बनओने रहए। कएबेर एहनो होइत अक्छ जे एकक्हाि सॉम्पक्त कैगोािक हाथे बेक्च देल गेल हो क्कंाि ओक्ह सॉम्पक्तपर बैक ाि कोनो आओर व्यक्ि तक कजा होइक आओर ओक्ह तरे ओ सॉम्पक्त बन्हक पडल हो। ताक्ह हेतु ई आिश्यक अक्छ जे कोनो सॉम्पक्त कीनबासँ पूिमि केता उक्चत पूछताछ कए सुक्नविित कए लेक्थ जे ओक्ह सॉम्पक्तपर कोनो लफडा तँ नक्ह अक्छ।

सॉम्पक्तक हस्तान्तरणक समय मूलतः क्नमक्लक्खत बातक ध्यान राखब जररी क्थकः

१.बेचनाहरके ओक्ह सॉम्पक्तपर पूणम्कानूनी अव्धकार हेबाक चाही, ताक्ह हेतु ओकरासँ सॉम्पक्तक मूल दस्ताबेजक माग जरर करबाक चाही, मात फोाििकापी देक्खकए सौदा नक्ह तय कए लेबाक चाही।

२.सब-रजिष्टारक कायालयसँ एहि बातक पका जानकारी लेबाक चाही जे ओ सम्पत्ति भरना/बन्हकतँ नहि अछि।

३.सब-रजिष्टारक कायालयसँ एहि बातक एहि बातक जानकारी सेहो लेबाक चाही जे ओ सम्पत्ति कही पहिने ककरो हाथे बेचि देल गेल तँ नहि अछि?

४.एहि बातक जानकारी लेबाक चाही जे बेचनाहर ओहि सम्पत्तिके कतएसँ आ केना पाप्त केलक, ताहि दस्तावेजके देखि कए सुनिश्चित करबाक चाही जे बेचनाहर सही आदमीसँ ओ सम्पत्ति कीनने अछि, माने जे जकरासँ ओ ओहि सम्पत्तिके कीनलक तकर ओकरा बेचबाक पूणमअधिकार रहैक कि नहि, अन्यथा काल्हि भेने ्यो सामने आबि कए कहि सकैत अछि जे ओहि सम्पत्तिमे हमरो हिस्सा छल, तकरा ्यो आन कोना बेचि देलक? एहन नहि हो जे पैसा खचो केलाक बाद लफडा भए जाए।

कोनो सम्पत्ति कीनबासँ पहिने की करबाक चाही?

१. पहिने ई पता करी जे ओ सम्पत्ति बेचनहारके कतएसँ पाप्त भेल? की ओ ओकरा कानून एमि् दस्तावेजक अनुसार अधिकार पाप्त व्यक्तिसँ कीनने अछि? ताहि हेतु विकियक अनुधिक बजाप्ता कार्धिन (सेल मीमक कार्बधिन) भेल अछि कि नहि? तकर पमाणस्रिप दस्तावेज देखल जाए।

२. बेचनहारक ओहि सम्पत्तिपर कब्जा अछि के नहि?

३. ओहि सम्पत्तिके बन्हक राखि कजमतँ नहि लेल गेल अछि, जँ लेल गेल अछि तँ कजिक आपसी भेल कि नहि,

४. सम्पत्तिक उपर कोनो ि्स बाकी तँ नहि अछि?

५. जौ सम्पत्ति सअिवजिक नहि अछि तँ ओहिमे आनो लोकक हिस्सा छैक कि बेचनहार एसगरे ओकर हकदार अछि,

६. सॉम्पत्तिक दाखिल खारिज बेचनिहारक नामे अछि कि नहि,

७. सॉम्पत्तिक भिस्तुति नापीक अनुसार ओकर रकबा दस्तावेजिमे देल गेल विवरणसँ मेल खाइत अछि कि नहि?

सॉम्पत्ति बेचनिहारक ओहि सॉम्पत्तिपर अधिकार सुनिश्चित कएलेलाक बाद कीननाहर एवम् बेचनिहार आपसमे एकटा सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करताह। ओहिमे क्रय विक्रयक सभटा शर्तम उल्लेखल जाएत, जेना सॉम्पत्तिक मूल्य, भूगतानक शर्तम उचित मूल्यक स्टाम्प पत्रपर सहमति पत्र पर बेचनाहर कीननाहरक अतिरिक्त दूटा गवाहिक हस्ताक्षर होएब जरूरी अछि।

कोनो सॉम्पत्तिक हस्तान्तरण हेतु रजिस्ट्रेशनसँ पूर्व ओहि राज्यमे लागू कानूनक तहत स्टाम्प पेपर लेब आवश्यक अछि। आइ-काल्हि स्टाम्प पेपर आनलाइन भेटि जाइत अछि। ताहि हेतु आनलाइन भूगतान कए ओकर जानकारी आनलाइन स्टाम्प पेपर विक्रेताके देब जरूरी अछि। पेमेन्टक सूचना प्राप्त होइते ओहि सुविधा केन्द्र द्वारा स्टाम्प पेपरके आनलाइन निकालल लेल जाइत अछि। एहि तरहे आसानीसँ भारी मूल्यक स्टाम्प पेपरके प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

स्टाम्प ड्युटीक गणना हेतु बेचल जा रहल सॉम्पत्तिक सर्कल रेटक आधार पर कएल जाइत अछि। जौ जमीनपर मकान सेहो बनल अछि तँ ओकर अलग-अलग गणना कएल जाइत अछि। विक्रय मूल्य, सरकारी सर्कल रेट दुनूमे जे ज्यादा होएत ताहि हिसाबसँ स्टाम्प ड्युटी लागत। तकर अलाबा रजिस्ट्रेशन शुल्क सेहो अलगसँ देबए पडैत अछि। जौ सर्कल रेटक हिसाबसँ उचित स्टाम्प ड्युटी नहि देल जाइत अछि तँ रजिस्ट्रेशन खारिज भए सकैत अछि।

मुख्तारनामा (power of attorney) :

मुख्तारनामा/वकालतनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर कएल गेल सॉम्पत्तिक हस्तानान्तरण :

माननीय उच्चतम न्यायलय सूरज लैम्प एण्ड इन्डस्ट्रीज बनाम हरियाणा सरकार एण्ड अन्यक मामलामे कहलक देलक अछि जे मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर सॉपत्तिक हस्तानान्तरण गैरकानूनी अछि। मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी) मूलतः ककरो सम्बन्धी जेना माता, पुत, पती वा खास व्यक्तिक पक्षमे एहि हेतु कएल जा सकैत अछि जे सॉपत्तिक मालिक कोनो खास कारणसँ ओहि सॉपत्तिक कय विक्रयक कार्यालयमे उपस्थित नहि भए सकैत अछि, (जेना ककरो विदेशमे होएब)

(R.V. Raveendran, A.K. Patnaik, H.L. Gokhale IN THE SUPREME COURT OF INDIA CIVIL APPELLATE JURISDICTION SPECIAL LEAVE PETITION (C) NO.13917 OF 2009)

कार्यालयक समय कीननाहर, बेचनाहरक अलाबा दू गबाहक उपस्थिति जरूरी अछि। ओहि गबाहक हस्ताक्षर कबाला (सेल डीड) पर जरूरी अछि। सॉपत्तिक कय विक्रयक कार्यालयक समयमे कोनो कारणसँ बेचनिहार वा कीननाहर स्वयं उपस्थित नहि भए सकैत अछि तँ कोनो सम्बन्धी वा व्यक्तिके उचित मुख्तारनामा (power of attorney) दए ई काज कराओल जा सकैत अछि।

जौं विक्रय मूल्य पचास लाखसँ बेसी अछि तँ कीननाहरक ई कर्तव्य अछि जे विक्रय मूल्यक एक प्रतिशत काटि कए उचित चालान पपत द्वारा आयकर विभागमे आनलाइन वा बैकमे जमा कए देथि अन्यथा ओ आयकर विभागक चपेटमे आबि सकैत छथि। एहि तरहे काटल गेल राशिका आयकर विभाग द्वारा आयकर रिटर्नभरलापर कुल देय आयकरमे कटौती कए देल जाइत अछि।

सेल डीडक मसौदा :

सेल डीडक मसौदा तैयार करबामे पचुर सावधानी राखब जरूरी

क्थक। ओक्हमे सॅम्पक्तक चौहदी, रकबा, खाता नॅबर, खेसरा नॅबर, सक्हत ओकर पूबक्क माक्लकक िणम हेबाक चाही। विकियमूल्य सक्हत िचक्कहार एिम् कीननाहरक विरिण हेबाक चाही। बेचक्कहार िारा स्पष घोरणा हेबाक चाही जे ओ ओक्ह सॅम्पक्तक पूणममाक्लक अक्छ, जे ओक्ह पर कोनो आन क्यव्तक अक्धकार नक्ह अक्छ, जे कोनो तरहक कानूनी विािद ओक्ह सॅम्पक्तपर नक्ह अक्छ, जे ओ सॅम्पक्तपर कोनो कजमनक्ह बाकी अक्छ, आक्द, आक्द। सेलमीममे इहो क्लखल जेबाक चाही जे ओ सॅम्पक्त बेचक्कहारक सिअक्जमत अक्छ, जौ से नक्ह अक्छ आओर ओ सॅम्पक्त सॅयुि त पक्ररिरक पुस्तैनी सॅम्पक्तक क्हस्सा अक्छ तखन ओकरा क्दयादी बिाराक सॅं ई पमाण देबाक चाही जे ओ सॅम्पक्त ओकरे क्हस्साक अक्छ आओर ओक्हपर कोनो आन पविदारक हक नक्ह छैक। जौ ओक्हमे आनो पविदारक क्हस्सा साक्मल छैक, तखन ओक्ह सॅम्पक्तक विकिय पत (सेल मीम) पर सभ पविदारक दस्तखत जररी अक्छ आन्यथा भविष्यमे ओक्हपर कानूनी झॅझ्वि भए सकैत अक्छ। सेलमीम (विकिय पत)क क्निधिनक बाद कीननाहर िारा बेचक्कहारके विकिय मूल्यक पूरा भूगतानक बादे सेलमीम (विकिय पत) कीननाहरके देल जाइत अक्छ।

जमीन-मकानक कय विकिय सामान्यतः कमे काल होइत अक्छ जाक्हमे जीिनि भक्रक कमाओल धन लावा जाइत अक्छ। ते जररी अक्छ जे ई काज पूणमसाधिानीक सॅं कएल जाए। कागज-पतर ठीकसँ बनाओल जाए आ कीनल सॅम्पक्तक कव्जा ठीकसँ लेल जाए जाक्हसँ बादमे कोनो पकारक झॅझ्विमे नक्ह पडी।

काव्यदूत : कबीरदास

ओहि युगमे जखन धार्मिक कटरपंथि चमोत्कर्षपर छल, जखन कि जाति-पातिक भेदभाव समाजक मान्यता प्राप्त केनहि छल संगहि समस्त विधि-विधानके प्रभावित केने छल, कबीर दास एकहिबेर विरोहक बिगुल बजा देलाह! ओहि युगमे जखन उच्च जातिक लोकक सम्पूर्ण समाज पर नियंत्रण छलैक, जखन धार्मिक, सामाजिक एवम् आर्थिक शक्ति पूर्णतः किछु व्यक्तिक हाथमे केन्द्रित छल, -कबीरदास बाजि उठलाहः

एक बूँद एक मल-मूतर, एक चाम एक गूदा।

एक जातिसे सभ उपना, कौन ब्राह्मिन कौन सूदा।।

व्यक्ति-व्यक्तिमे भेदभाव करब कबीरदासके एकदम पसन्न नहि छलन्हि। एहि दृष्टिसँ देखल जाए तँ ओ भक्तिकालक महान साम्यवादी छलाह। मानव-मानवमे विभेद उतपन करएबला धर्मक अन्धविश्वास आ बाह्य आडम्बरिक पक्ष जतेक कठोर रहय कबीरदास अपनओलन्हि ततेक कओ नहि अपना सकल। हुनकर कहब छलन्हि जे मानव मात्र एकहि ईश्वरक अंश अछि। प्रकृति सभके एकरंग बनओने अछि, सभक सोनित एकहि रंग अछि, तखन ई विभेद किएक?

एकै पवन एक ही पानी, करी रसोई न्यारी जानी।

माटी सूँ माटी लै पोती, लागी कहौ कहा धूँ छोती।।

कबीरदासके जाति विभेद एकोरती पसन्न नहि छलन्हि। जन्मभरि ओ पाखण्ड, सामाजिक अन्याय, जातीय वैर, एवम् आर्थिक शोषणक विरोधमे लडैत रहलाह। ब्राह्मिन, शुरक कथे कोन ओ तँ हिन्दू, मुसलमानक विभेदके सेहो स्वीकार नहि करैत छलाह।

जौ तूँ ब्राह्मिन ब्राह्मिनी जाया, तौ आन बाट है क्यो नहि आया।

जौ तूँ तुरक तुरकनी जाया, तौ भीतर खतना क्यो न कराया।।

कबीरदास उपदेशक ि पुजारी नक्ह छलाह। जीविकाक हेतु ि जुलाक धॉधा करैत छलाह, जकरा सामाक्जक धरातलपर पैघ काज नक्ह मानल जाइत छलैक। सियॉ कपडा बूनब एिम् दोसर हेतु मजूरी कए कपडा बूनबामे अन्तर छैक। कबीरदास कोनो माक्लकक काज नक्ह करैत छलाह। ओ गृह उदोगक सीक्ममानक रक्ा करैत पेि भरैत छलाह। ओ अपन व्यिसायमे ततेक रक्म गेल छलाह जे हुनक काव्यमे सदक्त ओही पकारक िस्तुसभक िणमन अक्छ। एिम् पकारेण विसायजक्नत पक्तष ाक सेहो हुनका कोनो परिाह नक्ह छलक्न।

ओ सगिमिकहलाहः

जाक्त जुलाहा मक्त को धीर, हरक्र-हरक्र गुण रमै कबीर।

मेरे राम की अभै पद नगरी, कहे कबीर जुलाहा।

तू िभिन मै कासी का जुलाहा।।

कबीर दास मौक्लक विचारक छलाह। धमक्क िास्तविकि तात्पयक्के ओ बुझलाह आओर साधारण जनता धक्र ओकरे भारामे तकरा रखलाह। ताक्ह हेतु हुनका कोनो दुगमक्त िकी नक्ह रहलक्न। पाणोक रक्ा कक्ठन भए गेलक्न। परॅतु ओ क्नभमयतापूिमक अपन विचारपर अक्मग रहलाह। तत्कालीन समाजक कक्छु शव्तशाली लोक कबीरदासक पिलि विरोध कएलक। ते कबीरदासके कहए पडलक्नः

कक्बरा खडा बजारमे, क्लआ लकुवि हाथ।

जो घर जारे आपना, धरै हमारे साथ।।

तमाम विरोधक बाबजूद कबीरदास रकलाह नक्ह, अपन विचार लए कए आगू बढैत रहलाह एिम् समयक कसौिपर सही उतरलाह।

भ् त कबीरक ई अनुभि छलक्न जे शास्त्र मयादाक सॉि सॅपदाय क्नष ा जुडल होइत अक्छ। शास्त्र एिम् सॅपदायक सीमानमे रक्ह कए मानि मातक हेतु भव्तक सक्मसुलभ पथ पस्तुत नक्ह कएल जा सकैत अक्छ। भव्तपथक दूि महान अिरोध क्थक-शास्त्र एिम्

सम्प्रदाय जे भक्त भानिाके सरल सहज रहए नक्ह दैत अछ। कबीर सहजमे आस्था रखैत छलाह। हुनक लगा‍ि कोनो पकारक रक्ढ एिम् अन्ध्र मयादासँ नक्ह छलक्त। अनुभकिक तराजूपर तथ्य एिम् सत्यके परक्ख कए गहण त्याग करब हुनकर जीनिकम छलक्त। धाक्मक अन्धर्विशास एिम् ढोगके ओ पलि विरोधी छलाह।

कक्ंड पाथर जोक्ड कए मक्स्जद क्दओ बनाय।

ता चक्ढ मुल्ला बाग देइ ्या बक्हरो भयो खुदाइ।।

सॉाक्ह ओ इहो कहलाहः

पाथर पूजे हक्र क्मले तो मै पूजूँ पहाड।

तासे तो चकी भली क्पसे खाय सॅसार।।

पखर मानितािादी कबीर धाक्मक पपॅचके चुनौती देलाह। क्नभीक एिम् तस्थि भासिँ ओ समाजमे क्ढ रहल ढोगक विरोध केलाह-

यह सब झुठी बंद्गी, क्बरथा पॉच नबाज।

साचै मारै झुक्ठ पक्ड, काजी करै अकाज।।

करसे तो माला जपै, क्हरदै बहै मममूल।

पग तो पालामे वारया, भजण लागी सूल।।

जप-तप सॉजम पूजा अरचा, जोक्तग जग बौराना।

कागद क्लक्ख-क्लक्ख जगद भूलाना, मन ही मन न समाना।।

कबीरदास युग क्नमाता छलाह। ओ पारम्पक्रक लीकसँ हकि कए समाजके एकि काक्तक मागम्पर अनलाह। गरीब-धनीक, बाहण-शूर, आक्दक बीचमे िगिम समनियिक सहज मागम पस्तुत केलाह। मानितािादिक पचार कए धमक्क िास्तविकि अथक्के लोक बूझए, तकर पयास केलाह। ओ अपन समस्त जीनिके परोपकार एिम् मानि कल्याणमे लगा देलाह।

मानमिातक कष कारिणक हेतु ओ कचिंतत रहैत छलाह।

सुखआ सब संसार है, खाबे अर सोबै।

दुखआ दास कबीर है, जागे अर रोबे।।

अस्तु, ई तय अछि जे कबीरदास संत आ कवि तँ छलाहे सभसँ बढ़िकए ओ कान्तकारी छलाह। समस्त समाजमे ओ एकि नचितेना आनए चाहैत छलाह। गिमविभेदके नष कए समाजमे मानतािदिक स्थापना चाहैत छलाह। ईशर एक छथि, मनु ख एक अछि, विभेद मानि कारास अछि-से हुनकर मंतत्ि य छल।

समाजक व्यस्थातँ तेहने छल जे ईशरक केबार कनछुए लोक हेतु खुजैत छल। तेहन समाजमे ताल ठोकि अपन विचार कहि देब एमि् ओकरा व्यहिारमे आनब एकि कान्त नहि तँ की छल? पयोजन अछि समाजमे एहने व्यवतर्तिके, जे हमरा लोकनकेि तिमान सामािजक अन्तािर्दिसँ मुक्त दए सकए।

मकर सक्राँन्ति

मकर सक्राँन्ति सम्पूर्णभारत ओ नेपालमे सभि कोनो-ने-कोनो पकारसँ मनाओल जाइत अछि। पौर मासमे जखन सूर्यमकर राशिमे अबैत छथि तखने ई पाबनि मनाओल जाइत अछि। पतिवर्षमकर सक्राँन्ति १४ वा १५ जनबरीके पड़ैत अछि।

तमिलनाडुमे मकर सक्राँन्तिके 'पोंगल' कहल जाइत अछि। कर्नाटक, केरल एवम् आँध्रपदेशमे एकरा सक्राँन्तिये कहल जाइत अछि। पंजाब आ हरियाणामे 'लोहड़ी' कहल जाइत अछि एवम् एक दिन पहिने अर्थात् १३ जनबरीके मनाओल जाइत अछि। उत्तर पदेशमे एकरा मूलत: दानक पाबनिक रूपमे मनाओल जाइत अछि। पयागमे पतिवर्ष१४ जनबरीसँ माघमेला पारंभ होइत अछि। माघ मेलाक पथम स्नान १४ जनबरीसँ पारंभ भए कए अन्तिम स्नान शिवरात्रिके होइत अछि। महाराष्ट्रमे एहि दिन विवाहित महिला अपन पहिल सक्राँन्तिपर तूर-तेल वा नून अन्य सुहावानके दइ छथि। बंगालमे एहि दिन स्नानक बाद तिल दान करबाक पथा अछि।

एहि अवसरपर गंगासागरमे पतिवर्षविशाल मेला लगैत अछि। असममे मकर सक्राँन्तिके 'माघ-बिहू' अथबा 'भोगाली बिहू'क नामसँ जानल जाइत अछि। राजस्थानमे एहि पर्विपर सुहावान महिला अपन सासुके वायना दए आशीर्वाद पाप्त करैत छथि। संगे कोनो सौभाग्य सूचक वस्तुके चौदहक संख्यामे पूजन एवम् संकल्प कए चौदहटा बाह्मणके दान दइ छथि।

मकर सक्राँन्तिक माध्यमसँ भारतीय सभ्यता एवम् संस्कृतिक विविध रूपमे आभास होइत अछि। एहेन धारणा अछि जे मकर सक्राँन्तिक दिन शुद्ध घी एवम् कम्बलक दान केलासँ मोक्ष पाप्ति होइत अछि।

माघे मासे महादेव: यो दास्यति घृतकम्बलम

स भु ति सकलान भोगान अन्ते माक पापवत।।

पुराणक अनुसार मकर सॅक्रान्तिक पमि हिा, विष्णु, महेश, गणेश, आधशक्ति आ सूयक आराधना एिम् उपासनाक पानि िस अछि जे तॉत-मॉत-आत्माके शक्ति पदान करैत अछि। सॉत-महरम लोकक्ताक अनुसार एकर पभासिँ पाणीक आत्मा शुद होइत अछि, सॅकल्प शक्ति बढैत अछि, जान तॉतु विकिसत होइत अछि। मकर सॅक्रान्ति अही चेतनाके विकिसत करएबला पाकि अछि। ई सम्पूणम भारतमे कोनो-ने-कोनो रपे मनाओल जाइत अछि।

पुराणक अनुसार मकर सॅक्रान्तिक दिन सूयमअपन पुत शिनक घर एक मासक हेतु जाइत छिथ, कारण मकर रािशक सिामी शिन छिथ। यदिप ्योतिरीय दृिष्ट सँ सूयमआ शिनक ताल-मेल सॉभिि नहि अछि, तथािप एिह दिन सूयम सियॉ अपन पुतक घर जाइत छिथ। पुराणमे आजुक दिन िपता पुतक सम्बन्धमे िनकिताक पारॉभक रपमे देखल जाइत अछि।

मकर सॅक्रान्तिक दिन गॉगाके पृथिीपर आनएबला भगीरथ अपन पूिमजक तपम्ा केने छलाह। हुनक तपम्ा सीिकार केलाक बाद एही दिन गॉगा समुरमे िमल गेल रहिथ। तँए एिह दिन गॉगा सागरमे मेला लगैत अछि। विष्णु धमसूतक अनुसार िपतरक आत्माक शािन्तक हेतु एिम् अपन सिास्थ्यिदिम ओ सबहक कल्याणक हेतु ितलक पयोग पुण्यदायक एिम् फलदायक होइत अछि। ितल-जलसँ स्नान करब, ‘ितल’क दान करब, ितलसँ बनल भोजन, जलमे ितल अपम्ा, ितलक आहुित एिम् ितलक उिि नि लगाएब।

एिह दिन भगिान विष्णु असुरक अन्त कए युद समािजक घोरणा केने छलाह। ओ राकस सबहक मुडीके मॉदार पिितमे दबा देने रहिथ। एतदथमएिह दिनके अशुभ एिम् नकारात्मकताके समािप्त करबाक दिनक रपमे देखल जाइत अछि।

सूयक उतरायण भेलाबाद देिता लोकक हि मुहुत उपासनाक पुण्यकाल पारॉभ होइत अछ। एहि कालके परा-अपरा विधाक पाक्त काल कहल जाइत अछ। साधनाक हेतु एकरा सक्द काल सेहो कहल जाइत अछ। एहि समयमे दे पक्तष्ठा, गृह कमाण, यजकमम आदि पवि ति काज कएल जाइत अछ।

रामायण कालसँ भारतीय पत-पक्तकामे दैनक सूयोपारायणक पचलन अछ। रामचक्रतमानसमे भगािन राम िरा गुडमी उडेबाक कायक उल्लेख सेहो अछ। मकर सॉक्रांक्तक िणम िकिमकी रामायणमे सेहो भेल अछ।

राजा भगीरथ सूयमिशी छलाह। ओ भगीरथ तप-साधनाक िरा पापनाशनी गॉगाके पृथ्िीपर आक्न अपन पूि िजक उदार केने छलाह। राजा भगीरथ अपन पूि िजक गॉगाजल, अक्त, क्तलसँ शाद-तपम केने छलाह। तकहआसँ मकर सॉक्रांक्तक स्नान आ मकर सॉक्रांक्तक शाद-तपमाक परॉपरा चक्ल रहल अछ।

कक्पल मुक्नक आशमपर मकर सॉक्रांक्तक क्दन मा गॉगाक पदापम भेल छल। पानि गॉगाजलक स्पशममातसँ राजा भगीरथक पूि िजके स ि गमपाक्त भेलक।

कक्पल मुक्न िरदान दैत बजलाह-

“मातृ गॉगे क्तकाल तक लोक सबहक पापनाश करतीह एिम् भ् तजनक सात पुश्तके मुक् त एिम् मोक पदान करतीह। गॉगाजलक स्पशम पान, स्नान ओ दशम सभ पुण्यदायक फल पदान करत।”

सूयक सातम क्करण भारति रिमे आध्यात्मक उनक्तक पेरणादायी अछ। सातम क्करणक पभाि भारति रिमे गॉगा-जमुनाक मध्य अक्धक समय तक रहैत अछ। एहि भौगोक्लक क्स्थक्तक कारण हक्र ि ार आ पयागमे माघमेलाक आयोजन होइत अछ। क्पतृतुल्य भगािन भास्कर दक्कणायनसँ उतरायणमे जाइत काल उजामयी पकाश पृथ्िीपर िरा

करैत छथि। अतुल्य शक्ति श्रोत पकृति रास्ताके छोडि एम्हि दिनके पैघ करए लगैत छथि। पृथ्वीमाता उदरस्थ आनाजके पकबए लगैत छथि। चार तरफ शुभे-शुभ होइत रहैत अछि। एहेन अदुत समयमे मकर सक्रांतिक पनिमनाओल जाइत अछि।

सकान्तिक दिन पंजाबमे 'लोहडी'क नामसँ मनाओल जाइत अछि। पंजाबक अतिरिक्त ई पावनि हिमाचल पदेश, हरियाणा, दक्षिणी उत्तर पदेश आ जम्मू काश्मीरमे सेहो धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। पारंपरिक तौरपर 'लोहडी' फसलक रोपनी आ ओकर कनीसँ जुडल एक विशेर पावनि अछि। एहि दिन निफायर जका आवाक ओलाडि जरा कए ओकर चार कात नृत्य कएल जाइत अछि। बालक सभ भागडा, विवाहिका सभ वादा नृत्य करैत छथि। लोहडीक आलाकि आसपास लोक एकटा भए दुल्ला-भटी पशंसामे गायन करैत छथि।

केतेको गोकि मान्यता अछि जे 'लोहडी' शब्द लोई (सत कबीरक पती) सँ उत्पन्न भेल मुदा अनेक लोक एकरा वालोडीसँ उत्पन्न मानै छथि, जे बादमे लोहाडी भए गेल।

लोहडीक ऐतिहासिक सन्दर्भमे सुन्दरी-मुंदरी नामक दूटा अनाथ कन्या छली। ओकर काका ओकर विवाह नहि करए चाहैत छल अपितु ओकरा राजाके भेंट कए देबए चाहैत छल। ओही समयमे हुल्ला भटी नामक एकटा उफाइटि छौडाके नीकठाम विआह कए देलक। एहि उफाइटि रिपक्के विआहक हेतु मनाओलक आ जंगलमे आवा जरा कए दुनू कन्याक विआह करओलक। कहल जाइत अछि जे दुल्ला शगुनक रूपमे गुड देलक। भाविथम जे उफाइटि होइतो दुल्ला भटी कथम विवाहिका सबहक कन्यादान केलक एम्हि ओकरा अपन ककाक अत्याचारसँ बँचओलक।

लोहडीक दिन बच्चा सभ दुल्ला भटीक सम्मानमे गीत गबैत

घरे-घर घुमैत अछि। बच्चा सभके मिठाइ एवम् अन्य वस्तु सभ दैत अछि। जँ कोनो परिवारमे कोनो खास अवसर जेना बच्चाक जन्म, विवाह आदि अछि तँ लोहडी आर धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। सरसोंक साग आ मकईक रोटी खास कए एहि अवसरपर बनाओल जाइत अछि।

तामिलनाडूमे एहि समय 'पोंगल' मनाओल जाइत अछि। प्रचूर मातामे अन्नक उपजापर भगवान सूर्यकेँ धन्यवाद ज्ञापन हेतु पारिवारिक आयोजन कएल जाइत अछि। तामिलनाडूक अलावा पुदुचेरी, श्रीलंका, विश्व भरिमे पसरल तमिल लोकनि एकरा मनबैत छथि। ओइ पोंगलमे चारि दिन तक माने १४ सँ १६ जनवरी तक मनाओल जाइत अछि।

इन्द्र देवताक सम्मानमे पहिल दिन भोगी उत्सव मनाओल जाइत अछि। पोंगल दोसर दिन माटिक बर्तनमे दूधमे चाउर पका कए खीर भगवान सूर्यकेँ आन-आन वस्तु संगे चढाओल जाइत अछि। एहि अवसरपर घरक आगूमे कोलम (अपना ओइठामक अरिपन जकाँ) बनाओल जाइत अछि। पोंगलक तेसर दिन मटू पोंगल कहल जाइत अछि। एहि दिन गायकेँ नाना प्रकारसँ सजा कए ओकरा पोंगल खुआएल जाइत अछि। चारिम दिन कन्नुम पोंगल कहल जाइत अछि। घरक महिला सभ स्नानसँ पूर्व हरदिक पातपर मिठाइ, चाउर, कुसियार हरदि आदि राखि कए अपन भाय लोकनिक कल्याण कामना करैत छथि। भाइक हेतु हरदि, चून, चाउरक पानिसँ आरती करैत छथि आ ई पानि घरक आगूमे बनल कोलमपर छिडकि देल जाइत अछि।

जल्लीकट्टू मटू पोंगल दिन पोंगल पर्वक एक हिस्साक रूपमे खेलल जाइत अछि। एहि लेल ग्रामीण सभ पहिनेसँ साढके खुआ-पिआ कए तैयार केने रहैत छथि। एहिमे मूलत: केतेको ग्रामक मन्दिरक साढ (कोविल कालइ-तमिल नाम) भाग लैत अछि। जल्लीकट्टूक तीन प्रकार होइत अछि : विवि मन्जू विराट्टू, वेली विराट्टू

आ ििम गन्जु विराटू। िवि मन्जु विराटूमे साढके जे क्यव्त कछु दूरीपर कछु समय तक रोक लइ छथ्, से विजेता होइ छथ्। िली विराटूमे साढके खाली मैदानमे छोड देल जाइत अछ आ लोक ओकरा क्यॅतणमे करबाक पयास करैत अछ। िमि मन्जुविराटूमे साढके नमगर रस्सीसँ बान्ह देल जाइत अछ, आ खेलाडी सभ ओकरा क्यॅत करबाक पयास करैत छथ्।

सम्पूणम देश जका क्थलाचलमे सेहो मकर सॅक्रान्तक पमि मनाओल जाइत अछ। गाम-घरमे एकरा तला सॅक्रान्त सेहो कहल जाइत अछ। अॅगेजी नया सालक ई पहल पाक्ि होइत अछ। लोकक घरमे नि अन भेल रहैत अछ। पहनहसँ लोक चूडा कुि कए एहि पाक्िक तैयारी केने रहैए। अपना एहठाम माघ मासके अत्यन्त पवित मास मानल जाइत अछ। बूढ-बूढ महला सभ भोरे-भोर जाड-ठाढके क्सरैत पोखरमे मुबकी लगबै छथ्। गाममे कएि मसोमात, ृिदा सभके थर-थर कँपैत स्नान करैत देखैत छलएक। सभसँ मनोरॅजक दृश्य तँ तखन होइत छल, जखन ओ सभ महादेकि माथपर जल ढाडैतकाल गाम-घरक सभि झगडा सोझराबएमे लागल रहैत छली। जानह हे महादे! हमरा पेमिे कछु नहि अछ। हमर मोन गॉासन क्मस अछ मुदा एहेन अत्याचारक क्पािन तूँही करयह।

..पता नहि, महादेि सुक्तो छलक्खन की नहि। मुदा हमरा ई सभ सुन कए जर र किोर लागल रहैत छल।

बच्चामे पाक्ि सभ अदुत आनन्दक विरय रहैत छल। सभसँ सरल ओ आनन्ददायी होइत छल तला सॅक्रान्त। भोरे-भोर पोखरमे जा कए मुबकी लगाउ। माइक हाथे तल-चाउर खाउ। तल-चाउर खुअबक काल माए पुछथ्-

“तले-तले बहब की नहि?”

ताहिपर कहलिअन्हि-

“खूब बहब।”

विधि समाप्त। तकरबाद चुरलाइ, कसलबा इत्यादि भरि मोन खाउ...।

कएक दिन पहिनहिसँ चुरलाइ, कसलबा (कसललाइ) आ लाइ (मुरहीक लाइ) बनेबाक कार्यक्रम प्रारंभ भए जाइत छल। घरक भितरिया चुरलाइक सुगन्धसँ परिपूर्णम एहि पाविनिमे सभसँ विशेरता ई अछि पाविनिक सामग्री बिक गेल तँ ओकरा लेल बेसी प्रतीक्षा नहि करए पडैत अछि। दिनमे ब्राह्मण भोजन होइत छल। ब्राह्मण कियो आसे-पासक लोक होइत छलाह, कारण भरि गाममे भोजे रहैत छल। बटा भरि-भरि घी खिचड़िमे देल जाइत। संगे तरह-तरह केर पकवान सभ सेहो रहैत छल।

हमरा गाममे किछु गोटे ओइठाम कसला संक्रान्तिमे जिलेबी बनैत छल। भोजमे खिचड़िक संग जिलेबी खेबाक बच्चा सभके अदुत उत्साह रहैत छल। खिचड़िमे ततेक प्रचूर मात्रामे घी रहैत छल जे भोजनक बाद हाथ साफ-साफ धोनाइ कठिन। पाविनिक कएक दिन बादो धरि चूरालाइ आ कसलबाक आनन्द भेटैत रहैत छल।

एहि पाविनिमे चूडा, दही, खेबाक सेहो परम्परा अछि। चूरा-दहीक प्रशंसा करैत खटर कका कहलथिन जे जखन पातपर चूडाक संग आम, धातीक अँचार ओ तरकारी परसल जाइत अछि तँ बुझू जे अन्हरिया आबि गेल। तकर बाद जखन दही परसाएल तँ बुझू जे इजोरिया। जेना पातपर चन्द्रमा उतरि गेलाह। ऊपरसँ जँ मधुर राखि देल जाए ओ कौर पेटमे गेल तँ पुछू नहि। पुरा सोनित ठण्ढा जाइत अछि आ आत्मा तृप्त भए जाइत अछि।

मिथिलाचलमे एहि पाविनिके मनेबाक अदुत परम्परा अछि। चुरलाइ खाउ, चुरा-दही खाउ, खिचड़ि खाउ, जे खाउ, जखन खाउ...।

िस्तुत: ई आनन्दक पिमवक्थक जे कोनो-ने-कोनो रपे सम्पूणम भारतपिरमे मनाओल जाइत अिछ। सूयमक तेजक मकर सक्रांितसँ जिहना बढैत रहैत अिछ, तिहना सभ लोक-िदक सुख बढैत रहए, सएह एिह पािविक ध्येय िथक।

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005

घरेलू हिंसा की थिक?

आमतौर पर घरेलू हिंसा मात घरमे मारि-पीटि बुझल जाइत अछि। सही मानेमे बालिकाक अरमानके दबा देब, घरक अंदर पारिवारिक सदस्य द्वारा रोज-रोज मानसिक प्रताडना देब, तामसमे ओकर परसल भोजन फेकि देब, ओकरा संगे गार-मारि करब, ओकर इच्छाक विरुद्ध ओकर पढाइ रोकि देब, सेहो घरेलू हिंसाक रूप अछि। एकर अलावा यौन उत्पीडन सेहो भारी हिंसा अछि, जाहि हेतु आम तौरपर दूरक रिश्तेदार वा पडोसक लोग जिम्मेदार होइत अछि। एहनमे जखन बालिका विरोध करैत अछि, तँ बदनामीक हवाला दए ओकर मुँह बंद कए देल जाइत अछि। एहि तरहक प्रताडणा नैहर, सासुर सभठाम होइत अछि।

घरेलू हिंसा पारिवारिक सम्बन्धक परिपेक्ष्यमे एहन व्यवहार ओ सम्बन्धसँ जुडल अछि जे अपन जीवन संगीपर अधिकार जताबए एवम् मनमाना नियंत्रण करबाक हेतु कएल जाइत अछि। प्रताडना मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, भावात्मक, आर्थिक, किछु भए सकैत अछि। घरेलू हिंसा विवाहित वा आपसी सहमतिसँ प्रेम सम्बन्धसँ जुडल जोडी, ककरो संगे भए सकैत अछि।

घरेलू हिंसाक कारण की थिक?

घरेलू हिंसाक प्रारंभ तखने होइत अछि जखन बालिका अपने माए-बापसँ खिलौना मागैत अछि। हमर समाज ओकरा नेनेसँ कमजोर बनबैत अछि। जखन बेटा छोट रहैत अछि, तँ हम ओकरा हाथमे बैट-बाल वा स्पोर्ट्स क सामान दैत छी, जाहिसँ ओ शारीरिक आओर मानसिक रूपसँ मजगूत बनैत अछि। मुदा बालिकाक खेलक हेतु

गुडमा-गुक्रया ि चूल्हा बतम बला खेलौना देल जाइत अक्छ जाक्हसँ ओ शारीक्रक आओर मानक्सक र पसँ कमजोर होइत चक्ल जाइत अक्छ। एकर सॉग भाििनामे भक्सआएल चल जाइत अक्छ। अब बाक्लका जेना- जेना पैघ होइत अक्छ घरक पाबॅदी आओर समाजक यातना ओकरापर हािी होइत चक्ल जाइत अक्छ। दाम्पत्य जीिनिमे घरेलू क्हॅसाक कारण हीन भाििना, ईष्या, कोधपर क्नयॅत्रणक अभाि, जीिनसॉगीसँ क्शाक्रा कािी सामाक्जक पक्रिशिमे न्यिोन होएब क्कछु भए सकैत अक्छ।

घरेलू क्हॅसा अक्धक्नयम, 2005 क्कएक लागू करए पडल?

घरेलू क्हॅसाक अनवानत घिना हमर देशमे होइत अक्छ, मुदा महज सौ-पचास दजमहोइत अक्छ, ओहो चरम पर पहुँचलाक बाद। कतेकोठाम बाक्लकासभ साझक बाद घरक अपेक्रा सडकपर अॅजान लोकसॉग रहब ्यादा सुरक्क्रत अक्छ कारण घरमे अपन लोक िारा बेसी दुघमिना, हत्या आओर क्हॅसा करबाक सॉभाििना रहैत अक्छ, बाक्लका जखन रस्ता पर बहराइत अक्छ, तँ ओकरा पता नक्ह होइछ क्क शहरक चकाचौधमे ओकरा सॉग कखन कोनठाम छेडखानी भए जाएत। बात अगर गामक करी तँ बाक्लका सुन रस्ता पर जएबासँ मराइत अक्छ मुदा ओक्ह मरक की करी, जकर जक्ड घरक अॅदर होइत अक्छ आओर बाक्लकाक सॉग पैघ होइत अक्छ। ओक्ह मरक की करी जे ओकरा जनक्मते ओकर माथामे बैक्स जाइत अक्छ आओर आधा क्जनगी धक्र रहैत अक्छ।

घरेलू क्हॅसा क बात करैत काल ऑनर क्कक्लॉक घिनासभके फराक नक्ह कए सकैत छी। ऑनर क्कक्लॉक जक्ड असलमे घरेलू क्हॅसा अक्छ। क्कएक तँ कोनो माए-बाप, भाए, काका कखनो सेहो अपनी बेिी ि बक्हनके, सोझे माक्र नक्ह देत, ओक्हसँ पूिमि नाना पकारक यातना ओकरा देल जाइत अक्छ।

एकटा साांख्यकीय गणनाक अनुसार :

(i) सत्तर चारिटा महिला, एकटा पुरुष, आओर पाचटा बच्चा घरेलू हिंसाक कारण अकाल मृत्युक शिकार भए जाइत छथि।

(ii) अपन जीवन कालमे प्रत्येक चारिमेसँ एकटा महिला घेरलू हिंसाक शिकार भए जाइत छथि।

(iii) २०-२४ बर्खक महिलाक उपर घरेलू हिंसाक सभसँ बेसी खतरा रहैत अछि।

घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 स्त्रीक सुरक्षा, ओ स्त्रीक अधिकारक अधिक प्रभावी ढंगसँ लागू करबाक हेतु आनल गेल।

एहि अधिनियमके पारित करएसँ पहिने कानूनी व्यवस्था की छल?

(i) घरेलू हिंसा कानूनमे कोनो स्पष्ट मान्यता नहि छल,

(ii) (आईपीसी की 498 ए) क तहत घरेलू हिंसाक संपूर्ण अवधारणा विवाहित स्त्रीपर कएल गेल क्रूरताक धरि सीमित छल,

(iii) दुखसंतप्त बहिन, माए, बेटी आ अविवाहित स्त्री एहिमे सामिल नहि छल,

(iv) पताड़ित भेलापर विवाहित स्त्रीके सीमित विकल्प छल: तलाक लए वा लेअए आ धारा 498 ए क अनुसार मोकदमा करए,

घरेलू हिंसा दू प्रकारक होइत अछिःआपराधिक आओर गैर-आपराधिक:

आपराधिक घरेलू हिंसा:

बिना सहमतिके शारीरिक संपर्क जेना यौन उत्पीडन, लात मारब, अनाधिकृत पछोडकए भयभीत करब, कम्प्यूटर हैकिंग, आपराधिक अलगाव

गैर-आपराधिक घरेलू हिंसा:

क्षत ि आन सामाक्जक सरोकारीसँ सॅप्र्कम बाक्धत करब, िलीफोनक सॅप्र्कमनक्ह होमए देब,

घरेलू क्हॅसा कानूनक तहत कोनो पीक्डत मक्हलाजे अपराक्धक सॉौ रहैत छक्थ, एक्ह कानूनक अनुसार मोकदमा कए सकैत छक्थ।

घरेलू क्हॅसाक सबसँ खराब पभाि ओक्ह पक्रिारक छोि बच्चासभ पर होइत छैक।बच्चा िितािरिणक उपज होइत छक्थ, एहने बच्चा बादमे जाकए घरेलू क्हॅसा करैत छक्थ ि ओकर क्शकार भए जाइत छक्थ।

घरेलू क्हॅसा अक्धक्नयमक धारा२ (् यु):

घरेलू क्हॅसा अक्धक्नयमक धारा२ (् यु)क तहत मात पुरर अपराधीक क्खलाफ कारबाइक पाििधानके असॅिैधाक्नक घोक्षत करैत सुपीम कोिमन्यायमूक्तमकुक्रयन जोसेफ और रोक्हॅिन एफ नरीमन पीठ क्नणमय देलक जे एक्ह कानूनक तहत मक्हला अपराधीकक क्खलाफ सेहो मोकदमा चक्ल सकैत अक्छ।माननीय न्यायाधीश लोकक्नक कहब छक्न:

“स्तीगणक क्खलाफ कतेकोबेर क्स्तए साक्जसक तहत काजकए घरेलू क्हॅसामे साक्मल होइत छक्थ, ते एक्ह कानूनक उपरो् त धारा कानूनक मूल उदयेश्यसँ भुक्तआ गेल लगैत अक्छ, ते ओकरा कानूनसँ हिि देल जाइत अक्छ।”

घरेलू क्हॅसा कानूनक तहत केना मदक्त लेल जा सकैत अक्छ?

(१) कोनो पकारक क्हॅसासँ िचाि हेतु आदेश पाप्त करब,

(२) क्नििास करबाक अक्धकारक हेतु आदेश पाप्त करब,

(३) मौक्रक राहत

(४) क्हरासतमे लेब

(५) क्क्तपूक्तमक हेतु आदेश

(६) अन्तक्रम आओर एकपकीय आदेश

सुरेश बनाम जयबीर (२००९):

सुरेश बनाम जयबीर (२००९)क मामलामे न्यायलय ई आदेश देलक जे घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 क उपखण्ड (1) क तहत आदिनक क्रमपिरा करैत अन्तरिम आदेशमे न्यायिक दण्डाधिकारी गुजाराक हेतु अन्तरिम राहत दए सकैत अछि।

प्रथम श्रेणी न्यायिक दण्डाधिकारी िा महानगर दण्डाधिकारीक ओतए िसकाइत कएल जा सकैत अछि:

(१) जतए दोरी व्यक्ति रहैत हो,

(२) जतए अपराध कएल गेल होइक,

(३) जतय प्रताड़ित व्यक्ति रहैत हो,

न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष िसकाइतक क्रमपिन:

पीड़ित व्यक्ति संरक्षण अधिकारी, पुलिस किर्मी िसेिा प्रदाता (कल्याण अधिकारी)क मदति लए सकैत छिथ। िहनका लोकिनक कर्तव्य अछि जे पीड़ित व्यक्तिक जरूरी मागदर्शन करिथ एिम् न्यायलय िारा देल गेल मौिरक क्षितपूर्तिक आदेशक पालन सुनिश्चित कराबिथ। संरक्षण अधिकारीक दायित्व अछि जे िा प्रताड़ित व्यक्तिक िसकाइतक घरेलू हिंसा प्रतिदिन (DIR) तैयार कए न्यायालयके उपलब्ध कराबए। संगिह प्रताड़ित व्यक्तिके सेिा प्रदाताक िारेमे उिचत मागदर्शन दैक जािहसँ ओ ओिह कानूनी सुविधाक लाभ उठा सकए। सेिा प्रदाता कोनो कम्पनी, मिहलाक कल्याण हेतु कायरत गैर सरकारी संगठन, भए सकैत अछि। सेिा प्रदाताक ई कर्तव्य िथक जे प्रताड़ित व्यक्तिके कानूनमे िनिहत ओकर अधिकारक बारेमे जानकारी देिथ एिम् कानूनी उपचार लेबाकक हेतु उिचत व्यिस्था करएमे ओकरा मदति करिथ। पुिलसक कर्तव्य िथक जे ओ प्रताड़ित व्यक्तिके संरक्षण अधिकारी एिम् सेिा प्रदाताक बारेमे जानकारी देिथ। संगिह भारतीय दण्ड संिहताक अनुच्छेद ४९८ (अ) मे प्राप्त अधिकारक जानकारी सेहो

देबथि।

न्यायिक दंडाधिकारीक समक पीड़िता द्वारा शिकाइत प्राप्त भेलाक तीन दिनक भीतर मामलामे सुनबाइक तारीख तय होएत। न्यायालयसँ समन भेटलाक दू दिनक भीतर संरक्षण अधिकारी तकर जानकारी प्रतिवादीके देत। प्रतिवादीके देल गेल समनक संग घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 क उपखंड (३)क तहत शिकाइतक प्रतिलिपि सेहो देल जाएत। प्रतिवादी द्वारासे प्राप्त भेलाक बादे एकतरफा सुनबाइ भए सकैत अछि आ स्थाइ अन्तरिम आदेश कएल जा सकैत अछि। जरूरी बुझलापर न्यायलय एकतरफा सुनबाइ कए अन्तरिम आदेश दए सकैत छथि। न्यायिक दंडाधिकारी ६० दिनक भीतर एहन शिकाइतक निपटान करताह। हुनकर आदेशक खिलाफ सम्बन्धित पक ३० दिनक भीतर सेशन कोर्टमे अपील दाएर कए सकैत छथि।

प्रतिवादी द्वारा संरक्षण आदेश किंवा अन्तरिम संरक्षण आदेशक पालन नहि करब संज्ञेय एवम् गैर जमनती अपराधक श्रेणीमे अबैत अछि। हुनका तहि कारणसँ एक साल धरि जेल किंवा बीस हजार रुपया जुमाना भए सकैत अछि। जौं संरक्षण अधिकारी दंडाधिकारी द्वारा देल गेल आदेशक पालन करबामे बिना कोनो उचित कारणके आनाकानी करैत छथि तँ हुनको एहि तरहक दंड देल जा सकैत अछि, मुदा तहि हेतु विभागीय अधिकारीके पूर्व अनुमति आवश्यक थिक। पीड़ित व्यक्तिके संयुक्त पारिवारिक साझी आवासमे रहबाक हेतु न्यायलय आवास करबाक आदेश दए सकैत अछि भले ओहि घरमे प्रतिवादीक हिस्सा होइक वा नहि होइक।

एस आर बतरा एवम् अन्य बनाम श्रीमती तरुना बतराक मामलामे उच्चतम न्यायालय ई फैसला देलक जे घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा १७ (१) क अनुसार पताड़ित महिला मात्र साझी आवासमे रहबाक हकदार भए सकैत अछि। साझी आवासक माने पति द्वारा कीनल किंवा किरायापर लेलगेल घर अछि वा एहन साझी घर अछि जाहिमे

पक्षक हिस्सा होइक। कहक माने जे जाहि घरमे ओकर पक्षके कानूनी अधिकार नहि छैक ताहिमे पताविडत व्यक्तिके रहबाक अधिकार न्यायलय एवहि कानूनक तहत नहि दए सकैत अछि।

घरेलू हिंसा रोकबाक समाधान :

घरेलू हिंसा रोकबाक एकटा समाधान ई भए सकैत अछि जे पक्ष न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष शपथ-पत्र देथि जे ओ आगा अपन पत्नीक संग सम्मानपूर्ण व्यवहार करताह, एहन किछु नहि करताह जाहिसँ ओकरा कोनो प्रकारक यंत्रणासँ फेर गुजरए पड़ैक, तकर संपूर्ण मे अपन संपत्तिके गारंटी देथि जाहिसँ घरेलू हिंसाक पुनरावृत्ति भेलापर ओकरा जब्त कए लेल जाएत।

उपसंहार

आपसी सम्बन्ध प्रेम, आदर, ईमानदारी, एहि भावकें लगातिसँ सराबोर हेबाक चाही। आपसी अविश्वाससँ हिंसा ओ दुराचर बढ़ैत अछि, एहन दंपत्ति निरंतर आशंकाग्रस्त रहैत छथि जाहिसँ जीवन नरक भए जाइत अछि। जीवनक ई कटुसत्य अछि जे अहा दोसरके नहि बदलि सकैत छी, हम अपनेटाके बदलि सकैत छी। कमसँ कम एतबातँ कइए सकैत छी जे जाहि सम्बन्धमे लज्जत नहि रहि गेल अछि, जतए अविश्वासक पराकाष्ठा पहुँचि गेल अछि, ओतए फसाद बढ़ेनाइ छोड़ि कानून सम्मत तरीका अखतिआर करी।

महिला संगठन विरुद्ध जागरकता पैदा कए सकैत अछि, पुलिस विरुद्ध उत्पीडन करएबलाके जेल पठा सकैत अछि, कोर्ट विरुद्ध न्याय दए सकैत अछि, एहिमे सँ कोनो अहाक घरक हालत ठीक नहि कए सकैत अछि, घरमे पैसल कलह-पक्षक समस्याक समाधान नहि कए सकैत अछि। अस्तु विरुद्ध सोच बदलक जररत अछि।

जीवनक दुखमय परिस्थितिसँ हारि नहि मानि ओ सुंदर जीवन जिबाक हेतु सचेष्ट रहैत पीड़ित व्यक्तिके ई विश्वास बनओने रहक चाही जे सुंदर समय आबिएँबला अछि, अएबे करत।

वारफ्तारी ओ जमानत

कोनो-ने-कोनो झाँझिमे नहिओ चाहैत कए बेर लोक फँसि जाइत अछि। केबेर कादोर लोकक खिलाफ झूठ-फूसके मामला बना देल जाइत अछि जाहिमे पुलिसके घाल-मेल सेहो भए जाइक से भारी बात नहि। शिक्षिजिनके गाम-गाम पसरि गेलासँ अपराधक नि-नि सरिप गामो-घरमे फैलि रहल अछि। कैिा कानूनो एहन भए गेल अछि जे बिना गलतीओके कैबेर लोक जहल धरि पहुँचि जाइत छथि एहन परिस्थितिमे लोकके जहल ओ जमानतसँ सम्बन्धित कानूनक जानकारी बहुत आिश्यक भए गेल अछि जाहिसँ व्यथिक फसादसँ बचि सकथि आ जररी भेलापर समाधान कए अपन जीनि ओ इ् जतिक रक्षा करथि।

कैिा कनून एहन अछि जाहिमे पुलिस मामला दाखिल होइते अभियुक्तके वारफ्तार कए सकैत अछि। उदाहरणसरिप भारतीय दणम संहिताक धारा ४९८ (ए)क तहत कएल गेल मोकदमामे अभियुक्तक हालत बहुत पातर भए जाइत छल। ओकरा सभसँ पहिने पुलिस वारफ्तार करैत छल, तखन आर किछु। बहुत रास मामलामे देखल गेल जे कएल गेल केसकाइत झूठि छल, कोिमे साबूतक आधारपर साबित नहि भेल, अभियुक्त बरी भए गेल, मुदा ताबति ओकर सभ दशा भए जाइत छल, ओकर इ् जतिक मर्यादामेि भए जाइत छल। उच्चतम न्यायलय एहि बातक संज्ञान लैत दिशा-निदेश जारी कए सुनिश्चित करबाक पयास केलक जे निदोश लोकके एहन मामलामे बिजह वारफ्तारी नहि होइक।

संविधानक धारा २२ क अनुसार पुलिस िारा वारफ्तार कएल गेल व्यक्तिके अधिकार अछि जे ओ वारफ्तारीक कारण जानए, जौ वारफ्तारी िरिंकि आधारपर भेल अछि तँ ओकरा िरिं देखाओल जाए, किील िा ककिि सम्बन्धीके संपकम कए सकए। ओकरा वारफ्तारीक चौिसि घिंाक भीतर मजिस्ट्रेटकि सम्मुख उपस्थित करब

जर री अछि। ओकरा इहो बताएब जर री छैक जे ओ जमानतपर छोडल जा सकैत अछि कि नहि।

वारफ्तार कएलगेल व्यक्तिके हथकडी लगाएब:

ऊच्चतम न्यायलयक दिशा निदेशक अनुसार वारफ्तार कएलगेल व्यक्तिके हथकडी लगाबएसँ बचबाक चाही, कारण एहन व्यक्ति सजाआफ्ता नहि होइत छथि। हथकडीक पयोग अपािरिक परिस्थितिमे तखने कएल जाए जखन कि अभियुक्त हिंसक हो, पुलिसक वारफ्तसँ भावा जेबाक सॅभाानिा होइक, कि ाि आत्महत्यापर उतार हो।

सीआरपीसीक धारा ७४क अधीन पुलिस अभियुक्तके वारफ्तार करबाक हेतु घरमे घुसि कए ओकरा पकडि सकैत अछि, ताहि लेल जर री भेलापर घरक खिडकीके तोडि सकैत अछि।

कोनो व्यक्तिके वारफ्तार केलाक बादे ओकर तलाशी कएल जा सकैत अछि, पहिने नहि। जौ वारफ्तार कएल गेल व्यक्ति महिला छथि तखन महिले पुलिस ई काज कए सकैत अछि।

महिलाक वारफ्तारी हेतु उच्चतम न्यायलय ािरा जारी कएल गेल दिशा निदेश:

उच्चतम न्यायलय ािरा जारी कएल गेल मागदिशनक अनुसार सामान्यतः कोनो महिलाके साझक बाद आ भोर हेबासँ पहिने वारफ्तार नहि कएल जाएत। जौ ततबे आिश्यक भए जाइक आ रात्रियेमे महिलाक वारफ्तारी जर री होइक, भोरधरि रकब कानूनक अनुपालन हेतु दिक्कत भए जेबाक सॅभाानिा पिि होइक, तखन मजिष्टेिकि पूिि अनुमति लए एिम् महिला पुलिस ािरा ई काज कएल जाएत। वारफ्तारीक बाद जौ महिलाके तलाशी करब जर री होइक तखन ई काज महिला पुलिस ािरा कराओल जेबाक चाही। पुलिस हाजतिमे महिलाके अलग राखबाक चाही जौ महिलाक हेतु अलग हाजति नहि होइक तखन ओकरा अलग कोठरीमे राखल जेबाक चाही।

विना ाि्रंके वारफ्तारीः

आपराधिक पक्रिया सहिंता 1 9 73 क धारा 41 क अनुसार पुलिस कोनो व्यक्तिके मजिस्ट्रेटक आदेश वा वारंटक विना ाि्रंके वारफ्तार कए सकैत अछि:

(१) जखन ओ कोनो सज्ञेय अपराध केने हो,

(२) कोनो पुलिस अधिकारीके कर्तव्य करैमे व्यवधान ठाढ केने होइक,

(३) ओकर घरसँ कोनो चोरीक माल पकडल गेल होइक,

(४) कानूनी हिरासतसँ भागि आ रहल हो,

(५) सेना, ायु सेना, जलसेनासँ भागि आएल हो,

(६) जौ ओकरा अपराधी घोषित कएल गेल हो,

(७) जौ ओ अभ्यस्त अपराधी अछि,

(८) जौ ओकरापर सज्ञेय अपराध करबाक शक छैक,

(९) जौ न्यायलय ािरा छोडल गेल अपराधी न्यायलयक शर्तक अनुपालन नहि करैत अछि,

कैि आओर एहन कानूनसभ अछि जाहि असकाइत भेलापर पुलिसके अभियुक्तके वारफ्तार करबाक अजस्त अधिकार भए जाइत अछि।

सज्ञेय अपराध की थिक?

सज्ञेय अपराधमे पुलिस विना कोिम आदेशके अभियुक्तके वारफ्तार कए सकैत अछि। हत्या, ालात्कार, चोरी, राष्ट्रोह, सन अपराधक मामला एहि शेणीमे अबैत अछि।

असज्ञेय अपराध की थिक?

असज्ञेय अपराध क मामलामे कोिक आदेश भेलाक बादे ककरो वारफ्तार कएल जा सकैत अछि।

जौ अभियुक्त पुलिसक गिरफ्तसँ भागिक प्रयास करैत अछि, तँ ओकरा पुलिस उपयुक्त बल प्रयोग कए पकड़ि सकैत अछि, परन्तु बलक अनावश्यक प्रयोगसँ पुलिसके बचबाक चाही। मुदा आवश्यक भेलापर पुलिस जानो लए सकैत अछि, जिते ओकर अपराध मृत्युदण्ड देबए जोगर होइक।

अग्रिम जमानत:

अग्रिम जमानतदेबाक अधिकार उच्च न्यायलय वा सेशन कोर्टके अछि। अग्रिम जमानत हेतु आवेदन निचला कोर्टमे नहि कएल जा सकैत अछि। अग्रिम जमानत देबा काल न्यायलय सुनिश्चित करैत अछि जे आवेदक मामलाक विवेचनामे उचित सहयोग करताह, देश छोड़ि बाहर नहि चलि जेताह, कोनो गवाह वा सबूतके प्रभावित नहि करताह। आवेदकके जौ आशंका होइक जे ओकरा कोनो मामलामे फँसाकए गिरफ्तार कएल जा सकैत अछितँ ओ उचित न्यायालयके अग्रिम जमानत हेतु आवेदन कए सकैत छथि।

अग्रिम जमानत ताबते धरिक हेतु देल जेबाक चाही जा धरि चालान कोर्टमे प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि, तकर बाद अभियुक्तके नियमित जमानत हेतु सम्बन्धित न्यायलयमे आवेदन देबाक चाही (सजलुदीन अब्दुल समद शेख बनाम राज्य महाराष्ट्र)

न्यायक तकाजा छथिक जे अग्रिम जमानत देबासँ पूर्वविरोधी पक्षके न्यायलय नोटिस जारी करए जाहिसँ अभियुक्त गलत जानकारी दए कोर्टक उचित जानकारीके दबाकए अग्रिम जमानत नहि लए सकए (बालचंद्र जैन बनाम मध्य प्रदेश)

जमानती वारंट:

गिरफ्तारीक वारंट कोनो कोर्टक पीठासीन अधिकारी द्वारा लिखित रूपमे जारी कएल जाइत अछि। ओहिमे स्पष्ट रूपसँ ई लिखल हेबाक चाही जे कानूनकक कोन धाराक अनुसार ओकर

वारफ्तारीक िरर्ॉ जारी कएल गेल अछि, ओकरा कछिआ आ कखन ओछि कोिमे हाछजर हेबाक छैक। ओछि आदेशमे इहो छलखल रहत जे ओकरा उछचत जमानात देला पर एछि शतमसॉ वारफ्तारीसँ छूि देल जाइत अछि जे ओ छनयत छदन/छनयत समय पर कोिमे हाछजर भए जाएत, ताछि हेतु एकि छनछवत रकमक बौम सेहो ओकरा देबए पडैत अछि, एकाछधक व्यछक्तक जमानात सेहो दबए पछड सकैत अछि।

गैर जमानती िरर्ॉ:

गैर जमानती िरर्ॉमे पुछलस अछभयुक्तके वारफ्तार कए सम्बछन्धत कोिमे हाछजर करैत अछि, तकर बादे ओकर जमानत पर छोडिक आिदिनपर कोिमे विचार करत।कोनो मामलामे जमानत पर अछभयुक्तके छरहा करबासँ पूिमकोिक्के मामलाक गॉभीर छानबीन कएल जाइत अछि, कोिमई सुछनछवत करए चाहैत अछि जे जमानतपर छोछड देलाक बाद ओ न्याछयक पकृयाके पभािवत नछि करए, जररत भछर मामलाक अनुसॉधानमे सहयोग करए, गिहसभके तोडबाक पयास नछि करए। सॉगछि ओकर इछतहास एिम् चछरतक िरियमे सेहो जानकारी लेबाक पयोजन होइत अछि जाछिसँ बाहर गेलाकबाद ओ समाजक हेतु समस्या नछि भए जाए।

सेशन कोिमिा उच्च न्यायालयसँ जमानत:

जौ अछभयुक्त एहन अपराध केलक अछि जाछिमे मृत्युदॉम िा आजन्म कारािासक पािधान छथिक, तखन ओकरा जमानत सेशन कोिमिा उच्च न्यायालयसँ भेित, ताछिसँ छनचला कोिमसँ नछि।

न्यायलयके जमानत देबाक समय बहुत सािधानीपूिमक विचार करबाक पयोजन अछि कारण अपराध छसद होयबासँ पूि ककरो जहलमे सडादेब मानिीय अछधकारक सरासर उल्लॉघन छथिक मुदा सॉगछि समाजके व्यापक छहतके ध्यान राखब सेहो जररी अछि, जे ओ व्यछक्त बाहर आछब कए एहन ने कए देछथ जे कोनो आन व्यछक्तक

सम्मान ओ जीनि पर संकट उत्पन्न भए जाइक।

उपसंहार

संविधानक अनुच्छेद २१ एमि २२ क तहत प्राप्त मौलिक अधिकारक रक्षाक हेतु आवश्यक अछि जे बेबजह ककरो स्वतंत्रता पर आघात नहि होइक, लोक क्रमि अपन जीनिक रक्षा कए सकए। वारफ्तारी क्रमि एहि संवैधानिक अधिकारके सदः सीमित नहि करैत अछि अपितु ग्रहण लगा दैत अछि। मुदा ककरो स्वतंत्रता एहि हद धरि नहि भए सकैत अछि जे कोनो क्सदोर आदमीक वजनाइ कष्टन कए दैक, कम्बा कोनो अपराधी बेछिुट भेल घुमैत रहए। अस्तु, पुलिस एमि न्यायालयके एकटि संतुलित रखि राखि प्रत्येक मामलामे नीर- क्षीर विवेकि रखैत काज करक चाही जाहिसँ कोनो क्सदोर व्यक्तिके परेसान नहि होबए पडैक आ दोरी खुल्ला नहि घुमैत रहए।क्रमि ई संतुलन बनाएि एकटि कठिन काज अछिक मुदा समस्त कानून ओ न्यायालय एहि प्रयासमे लागल रहैत अछि।

सूचनाक अधिकार

भारतक संविधानक अनुच्छेद १९ मे वर्णित मौलिक अधिकारसँ भारतक नागरिकके सूचनाक अधिकार प्राप्त अछि। ताहि अधिकारके प्राप्त करबाक व्यवस्था सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत कएल गेल। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 प्रत्येक नागरिकके ई अधिकार दैत अछि जे ओ सरकारसँ ओकर काजक बारेमे जानकारी मांगि सकैत अछि। एहि तरहे आब भारत सेहो विश्वक ओहि ६० देशमे सामिल भए गेल अछि जे अपन नागरिकके सूचनाक अधिकार प्रदान कए पारदर्शी, जबावदेह एवम् सुशासन स्थापित करबाक चाक-चौबंद व्यवस्था केने अछि।

केन्द्रीय सूचना आयोग

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 मे ई व्यवस्था कएल गेल अछि जे केन्द्र सरकार द्वारा एक केन्द्रीय सूचना आयोगक गठन कएल जाएत जाहिमे एक मुख्य सूचना आयुक्त एवम् अधिक सँ अधिक दस टा केन्द्रीय सूचना आयुक्त होएत। मुख्य सूचना आयुक्त एवम् अन्य सूचना आयुक्तक नियुक्तिक हेतु एकटा समिति गठित होएत जकर अध्यक्ष प्रधानमंत्री एवम् लोकसभामे विपक्षक नेता एवम् प्रधानमंत्री द्वारा मनोनीत केन्द्रीय मंत्रीमंडलक एकटा मंत्री एकर सदस्य हेताह। एकर अतिरिक्त प्रत्येक राज्यमे राज्य सूचना आयोग अलगसँ गठित कएल जाइत अछि।

जौ कोनो केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी बिना कोनो ठोस कारणसँ सूचनाक हेतु आवेदन नहि लैत अछि, वर्णित अवधिमे वांछित सूचना देबएमे आना-कानी करैत अछि, वा जानि-बूझि कए गलत वा अधूरा जानकारी दैत अछि, वा सूचना नष्ट कए देल गेल अछि तँ केन्द्रीय सूचना आयोग सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद ७ (१) अन्तर्गत ओकरा खिलाफ सम्बन्धित विभागके अनुशासनात्मक कार्रवाई करबाक आदेश दए सकैत अछि। एहन परिस्थितिमे आयोग

सम्बन्धित दोरी अधिकारीके सूचना देबाक दिन धरि २५० टाका प्रतिदिनक हिसाबसँ पचीस हजार टाका धरि जुमाना लागा सकैत अछि।

आयोगक समक्ष शिकाइत सोझे दाखिल कएल जा सकैत अछि? जौं हँ, तँ कोन आधारपर?

निम्नलिखित परिस्थितिमे सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क धारा १८ क अन्तर्गत आयोगक समक्ष सोझे शिकाइत दाखिल कएल जा सकैत अछि:-

(क) जौं ओ ओहि कारणसँ अनुरोध प्रस्तुत करबाक हेतु असमर्थ रहल अछि, कि ओहि अधिनियमक अधीन एहन अधिकारीक नियुक्ति नहि कएल गेल अछि वा केन्द्रीय सहायक लोक सूचना अधिकारी ओहि अधिनियमक अधीन सूचना वा अपीलक हेतु धारा 19 क उपधारा (1) मे विनिर्दिष्ट केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी वा ज्येष्ठ अधिकारीके पठेबाक हेतु स्वीकार करबासँ मना कए देलक अछि;

(ख) जौं ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अनुरोध कएल गेल कोनो जानकारी धरि पहुँचएसँ मना कएल गेल अछि;

(ग) जौं ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन विनिर्दिष्ट समय-सीमाक भीतर सूचनाक हेतु वा सूचना धरि पहुँचक हेतु अनुरोधक उत्तर नहि देल गेल अछि;

(घ) जौं ओकरासँ ओहन. फीसक रकमक संदाय करबाक हेतु अपेक्षा कएल गेल अछि, जे ओ अनुचित बुझैत अछि;

(ङ) जौं ओ विश्वास करैत अछि कि ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अपूर्ण, भ्रामक वा मिथ्या सूचना देल गेल अछि; आओर

(च) ओहि अधिनियमक अधीन अभिलेखक हेतु अनुरोध करबाक

हेतु ि ओकरा पाप्त करबासँ सम्बन्धित कोनो अन्य विरियक सम्बन्धमे।

सूचनाक अधिकारक तहत सरकारी विभाग, सरकारी सहायतासँ चलएबला गैर सरकारी संगठन, ि शिक्षण संस्थानसँ जानकारी पाप्त कएल जा सकैत अछि। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 धारा 2 (एच) क तहत लोक पाधिकरण अथवा सार्वजनिक संस्थाक लग उपलब्ध सूचनाक माग कए सकैत अछि। सार्वजनिक संस्थासभमे संविधान िारा स्थापित या गठित, संसद या कोनो राज्य विधायिकाक कानून िारा स्थापित ि गठित, केन्द्र ि राज्य सरकारक कोनो अधिसूचना ि आदेशक िारा स्थापित ि गठित, राज्य ि केन्द्र सरकारक स्वामित्व बला, ओकरा िारा नियंत्रित ि पयाप्त मातामे सरकारी धन पाबएबला निकाय सभ, गैर सरकारी संगठन ि कोनो केहनो निकाय जे सरकारक िारा पत्यक्ष ि अपत्यक्ष रूपसँ वित्तपोषित अछि, सामिल अछि।

आिदिक िारा सूचनाक अधिकारक उपयोग करैत केहन जानकारी मागल जा सकैत अछि?

१. कोनो सरकारी दस्तावेजक पति माँगि सकैत छी।

२. कोनो सरकारी दस्तावेजक जाँच कए सकैत छी।

३. कोनो सरकारी काजके जाँचि सकैत छी।

४. कोनो सरकारी काजमे पयुक्त वस्तुक पमाणित नमूना माँगि सकैत छी।

एहि कनूनक तहत अहाँ कोनो जानकारी हासिल कए सकैत छी जेनाकि : कोनो सडकके बनाबएमे सरकार कतेक खर्च केलक, पधानमंत्रीक रहन-सहन पर कएल गेल खर्च, राष्ट्रपतिक भ्रमणमे कएल गेल खर्च, कोनो सरकारी योजना पर कएल गेल खर्च, पंचायत िारा कोनो योजनामे कएल गेल व्यय ि कोनो पकारक अन्य जानकारी ि ओहिसँ सम्बन्धित दस्तावेजिक छायापति मागल जाए सकैत अछि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद ६ (२) अन्तर्गत आवेदकसँ ई नहि पूछल जा सकैत अछि जे ओ सूचना किएक माँगि रहल छथि।

साँझिक व्यक्तिगत विवरण, आय, पैन नम्बर, विभिन्न पैरामीट्रिक तहत विशेषज्ञक व्यक्तिगत पैनल द्वारा देल गेल प्राप्ताक, सम्पत्तिक विनियोजन सम्पत्तिक विवरण, आकलन रिपोर्ट मेडिकल रिपोर्ट बैंक खाताक विवरण, प्राधिकरणसँ स्पष्टीकरण माँगैत प्रश्न नहि पूछल जा सकैत अछि।

सूचनाक अधिकारक क्षेत्रमे नहि आबएबला विभाग :

कोनो खुफिया एजेंसीक ओहन जानकारी, जकरा सार्वजनिक भेलासँ देशक सुरक्षा आओर अखण्डताके खतरा हो

दोसर देशक संग भारतसँ जुड़ल मामला

थर्ड पार्टी यानी निजी संस्थान सम्बन्धी जानकारी जे सरकारक पास उपलब्ध अछि ओहि संस्थाक जानकारीके सम्बन्धित सरकारी विभागक माध्यमे हासिल कएल जा सकैत अछि।

स्वैच्छिकसँ जानकारी प्रकाशित कएल जाएत:

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद ४ (बी) अन्तर्गत प्रत्येक सरकारी विभाग अपन विभागसँ सम्बन्धित अधिकसँ अधिक जानकारी स्वैच्छिकसँ विभागक वेबसाइटपर प्रकाशित करत। अन्यथा भारतक कोनो नागरिक सूचनाक अधिकारक तहत अनुच्छेद ६क तहत आवेदन दए सूचना प्राप्त कए सकैत छथि।

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदनक हेतु कोनो निर्धारित प्रपत्र नहि अछि। सादा कागज पर अपन आवेदन लिखि कए इच्छित जानकारी मांगल जा सकैत अछि।

आवेदन शुल्कक भुगतान कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन करबाक हेतु केन्द्र सरकारक अधीन आबएबला मंत्रालय विभागसँ जानकारी प्राप्त करबाक हेतु दस टाकाक शुल्क लगैत अछि जकर भूगतान पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट, द्वारा कएल जा सकैत अछि। राज्य सरकार सभ अलग-अलग शुल्क रखने अछि।

आरटीआइ ऑन लाइन

आवेदक सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत सूचना प्राप्त करबाक हेतु, सूचनाक अधिकार (आरटीआई) ऑनलाइन पोर्टलक माध्यम https://rtionline.gov.in.सँ केन्द्रीय मंत्रालय/विभागसँ एवम् "ऑनलाइन सूचनामे उल्लिखित अन्य केन्द्रीय लोक प्राधिकरणके अनुरोध कए सकैत छथि।"

आरटीआई नियम, 2012 क अनुसार गरीबी रेखासँ नीचाक लोकके आरटीआई शुल्कक भुगतान करबाक आवश्यकता नहि अछि। तथापि, बीपीएल आवेदकके अपन आवेदनक संग- संग एहि सम्बन्धमे, उपयुक्त सरकार द्वारा जारी प्रमाण-पत्रक एक प्रति संलग्न करब जरूरी अछि।

प्रथम अपीलीय प्राधिकारीके अपील करबाक हेतु, आवेदकके आरटीआई ऑनलाइन पोर्टलमे "सबमिट फर्स्ट अपील" नामक विकल्पक चयन करए पड़त आओर सामने आबए बला फार्मके भरए पड़त। प्रथम अपीलके दायर करबाक हेतु मूल आवेदनक पंजीकरण संख्या आओर ई-मेल आईडीक आवश्यकता पड़ैत अछि। आरटीआई अधिनियमक अनुसार, प्रथम अपीलक हेतु कोनो शुल्क नहि देबाक अछि। ऑनलाइन दायर आरटीआई आवेदन या प्रथम अपीलक स्थिति/जाबि "स्थिति" पर क्लिक कए आवेदक द्वारा देखल जाए सकैत अछि।

सूचना के देत?

पत्येक सरकारी विभागमे एकाधिक लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी नियुक्त कएल जाइत छथि जनिकर जानकारी सम्बन्धित विभागक बेबसाइट किंवा सूचना पट्ट िवभागमे पूछ-ताछ कए पाप्त कएल जा सकैत अछि। लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी विभागक हेतु सूचनाक अधिकारक अधीन कएल गेल आवेदन पाप्त करैत छथि, ओकरा सम्बन्धित अधिकारीकेँ पठाए सूचना संकलित करैत छथि एवम् नियत समय (आवेदन केलाक बाद एक मासक अधीन, कोनो- कोनो मामलामे ४५ दिन) मे जानकारी आवेदकके पहुँचबैत छथि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद ६(३) अन्तर्गत जौं मागल गेल सूचना आंशिक वा पूर्णरूपसँ कोनो दोसर लोक पाधिकरणसँ सम्बन्धित अछि तँ आवेदन पाप्त केनिहार लोक पाधिकरण ओकरा संबंधित लोक पाधिकरणके पाँच दिनक भीतर स्थानान्तरित कए सकैत अछि। तकर सूचना आवेदकके सेहो देल जाएत।

पथम अपील

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद १९ (१) अन्तर्गत पत्येक सरकारी विभाग ओहि अधिकारीक नाम अधिसूचित करत जकरा लग पथम अपील कएल जा सकैत अछि। जौं आवेदकके तीस दिनक भीतर जबाब नहि भेटैत छैक, किंवा भेटल जबाब अपूर्ण वा भ्रामक छैक तँ आवेदक तीस दिनक भीतर पथम अपीलीए अधिकारीक ओतए अपील कए सकैत अछि। एहि हेतु ओकरा फेरसँ फीस नहि देबए पडतैक।

द्वितीय अपील

पथम अपीलीय पाधिकारीक द्वारा देल गेल निर्णयसँ जौं आवेदक संतुष्ट नहि छथि तँ ओ द्वितीय अपीलीय पाधिकारी (राज्य सूचना आयोग किंवा केन्द्रीय सूचना आयोग)के द्वितीय अपील कए सकैत

छथि। ध्यान रहए जे एजन कोनो अपीलक समय सीमा ९० दिन अछि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुच्छेद २३ अन्तर्गत कोनो न्यायालय ताधरि कोनो मामला नहि सूनत जाधरि पथम अपील द्वितीय अपील/ क पकृया पूरा नहि भेल अछि।

उच्चतम न्यायलयक किछु महत्वपूर्ण निर्णय : उच्चतम न्यायलय हालमे सिविल अपील संख्या ६१५९-६१६२(२०१३)मे संघ लोक सेवा आयोग बनाम अगनेश कुमार एवम् अन्यक (CIVIL APPEAL NO.(s).6159-6162 OF 2013

मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे अनर्गल, अनावश्यक एवम् अव्यवहारिक सूचनाक माग कए सरकारी विभागके एतेक परेसान नहि कएल जा सैत अछि जे सरकारक अधिकाश समय ओहि सूचनाके उपलब्ध करेबामे एहि हद तक नष्ट भए जाइक जे रचनात्मक/सकारात्मक काज केनाइ पराभव भए जाए।

उच्चतम न्यायालयक न्यायमूर्ति आदर्श कुमार गोयल एवम् न्यायमूर्ति उदय उमेश ललितक पीठ दिरा २० मार्च २०१८क एनजीओ कॉमन कॉजक याचिकाक निस्तारण करैत फैसला देलक अछि जे कोनो हालतमे पचास टाकासँ बेसी शुल्क नहि लेल जा सकैत अछि। एकर अलावा त जौ कोनो दस्तावेजिक पत्रावलीक माग कएल जाइत अछि तँ पत्र पृष्ठ पाच टाका अलावा त शुल्क लेल जा सकैत अछि। ई आदेश उच्च न्यायालय, विधान सभा आओर अन्य सरकारी आओर स्वायित निकाय सहित सभ संस्थापर बाध्यकारी होएत जे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत अबैत अछि।

उच्चतम न्यायलय हालमे सिविल अपील संख्या ९०१७(२०१३) थालप्पलम सहकारी बैंक एवम् अन्य बनाम् केराल राज्य एवम् अन्य (मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे सहकारी समिति सभ सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत नहि अबैत अछि।

सूचना अधिकार कानून स्पष्टताक आवश्यकता : सूचना अधिकार कानूनक सभिसँ महत्वपूर्ण पहलू लोक प्राधिकरणक मुदा पर स्पष्टताक आवश्यकता अछि। सूचनाक अधिकारमे अखनो कैटा त्रुटि अछि, जेना सरकारी अधिकारी द्वारा जबाब देबाक हेतु भारी भरकम फीसक माग कए देब, आवेदनके एक विभागसँ दोसर विभाग स्थानान्तरित करैत रहब, साधारण अछि। प्रथम अपील विभागेकक अधिकारीक समक्ष कएल जाइत अछि जाहिसँ मामलामे कोनो निष्पक्ष बात नहि भए पबैत अछि। समान्यतः ओ पहिने लेल गेल निर्णयक पुष्टि कए दैत छथि। तकर बाद दोसर आ अन्तिम अपील राज्य वा केन्द्रीय सूचना आयोगक समक्ष करबाक प्रावधान अछि। मुदा समस्या अछि जे ओहिठाम आवेदनक भरमार अछि आ निर्णय लेबामे बहुत समय लागि जाइत अछि जाहिसँ कैबेर गलत लोक बँचि जाइत अछि। सरकारके बहुत रास मामलामे सूचना नहि देबाक छूट भेटि जाइत अछि। कानूनक एहि प्रावधानक कतेको मामलामे दुरुपयोग होइत अछि। कोनो-ने- कोनो बहाना बनाए सूचना नहि देबाक प्रयास होइत रहल अछि। हलाँकि आयोग एहन मामलामे बहुत सख्त रवैया रखैत अछि आ दोषी अधिकारीके जुमाना सेहो लगबैत अछि।मुदा तैँ की? विलम्ब तँ भैए जाइत अछि। फेरसभ लोक ओतेक धैर्यपूर्वक लागलो नहि रहि पबैत छथि।

जे होउ, सूचनाक अधिकार कानूनके बनि गेलासँ भारतक नागरिकके सरकारी काम-काजक जानकारी लेब आसान भए गेल अछि। कतेको तरहक जरूरी सेवामे निर्णयमे पारदर्शिता आएल अछि। बहुत तरहक कदाचारक मामला सभ पकडल गेल अछि। सरकारी अधिकारी गलत काज करबामे डराइत छथि। कतेको मंत्री धरिके इस्तिफा दबए पडलनि अछि। कारिय एहि कनूनसँ आम नागरिकक महत्व बढल अछि। मुदा चिन्ताक एहि बातक अछि जे एखनो बहुत रास नागरिक एहि कानूनक जानकारीसँ वंचित छथि। ताहि हेतु

जररी अछि जे एकर पर्याप्त प्रचार होइक। सूचना लेबाक आ आदिन करबाक प्रकृयाके आओर सरल बनाओल जाइक।

गया गेल रही

बहुत दिन सँ माएक बारम्बार सपना अबैत रहैत छल। एकर सपना सभक रहस्य नहि बुझा रहल छल। तथापि मोनमे भेल जे गया चली, पिण्डदानक बड महत्व सुनैत छी। ओहिठाम पिण्डदान केला पर पितरसभ मुक्त भए जाइत छथि।मुक्त भेल पितरसभ अपन वंशजके आशीर्वाद दैत छथि जाहिसँ सभक कल्याण होइत अछि।पण्डितजीसँ गप्प कए गया जेबाक दिन तकौलहुँ। विचार विमर्शक बाद फरबरीक अन्तमे, २५ फरबरीके जेबाक कार्यक्रम बनल, आपसी २८ फरबरीक। तीन मास पूर्वे रेल टिकट आरक्षण करौलहुँ।

क्रमशः गया जेबाक समय लगीच आबि रहल छल। चिन्ता रहए जे कोना की करी। कखनो काल होइत जे एखन स्थगित कए दी। फेर भेल जे जखन कार्यक्रम बना लेने छी तँ ई काज कइए लेल जाए। पण्डितजीसँ परामर्श कए चीज-वस्तुक ओरिआनमे लागि गेलहुँ। मुदा सभसँ चिन्ता छल पण्डासभसँ कोना बाँचल जाएत? सुनैत रही जे ओहिठाम स्टेशनेपरसँ पण्डाक आदमीसभ घेर-बार शुरू कए दैत अछि। गयामे रहबाक चिन्ता सेहो होइत छल। संयोगसँ ओहि दिन हमर ज्ञात मिसरजी भेटि गेलाह। ओ पहिने गया पिण्डदान हेतु गेल रहथि। हुनकर परिचित पण्डा आ एकटा महापात्रजीक फोन नम्बर भेटल। ओ अपनो स्तरसँ पण्डाजीसँ एवम् महापात्रजीसँ गप्प कए हमर काज हल्लुक कए देलाह।

महापात्रजीसँ गप्प भेल तँ सभसँ पहिने ओ कहलाह जे दिन उपयुक्त नहि अछि, मातृपक्क समय फगुआक बाद हेतैक, तकरबाद कोनो दिनक टिकट लए सुविधा करू। हम कहलिअनि जे हम तँ चारि माससँ दिन तकओने छी।

“के दिन तकलाह अछि? हमरा गप्प कराउ।”

आब कि करी? किन तकलहार पॉमितजी विनि छथि, समय दए किन तकलथि, ताहि हिसाबे विकि लेने छी। आब जखन जेबाक समय लगीच आबि गेल तँ दोसरे बात सुनि रहल छी। पॉमितजीसँ फेर गप्प कए सभ बात कहलिअनि। ओ अपन कोणथि पर दृढ छलाह, किन सही अछि, महापात की कहताह। हमरा हुनकर बातमे दम बुझाएल। ओ कायि सही किन तकने हेताह। महापातजीके फोन कए कहलिअनि जे हमर कायक्रम तय अछि, किन सही छैक, अपने ओहि किनक हिसाबसँ उपलब्ध भए सकब कि नहि से कहू। असलमे हुनका पहिने सँ किछु काज गछल रहनि, ओ ई असिर सेहो नहि जाए देिए चाहथि। जखन बुझा गेलनि जे हम अपन कायक्रम पर अड़ि गेल छी, तँ ओ तैयार भए गेलाह। कहलाह जे हुनका २६ फरबरीक उपनायन करेबाक छनि, ते २६क रातिमे गयेमे रहताह आ सभि काज नीकसँ करा देताह। कहलाह :

“चिन्ता नहि कर। सभि भए जेतैक।”

ओ समान सभक सूची लिखा देलाह। ओहि सूचीमे ततेक तरहक ओँ-बाँ सभ चीज-बस्तुक नाम छल जे एकटा करब बहुत कठिन बूझाएल। तँ समानसभ आनबाक भार हुनके दए हम कविन्त भेलहुँ। समान सभक िवजब दाम देबाक आशासन हम देलिहनि। ओ सहरमताहि हेतु तैयार भए गेलाह। तकरबाद हम अपन तैयारीक अनुसार बिदा भए गेलहुँ। ओहिसँ पहिने महापातजी कैबेर फोन कए आशस्त होइत रहलाह जे हमर कायक्रम पका अछि, ओहिमे कोनो पिरितिम नहि भेल अछि, जे कवित कािथक हमसभ ओतए पहुँचि रहल छी, जे हुनकासँ भोरे भेि होएत।

गयासँ पॉमाजीक सेहो फोन आएल। ओ हमर कायक्रमक बारेमे आशस्त होमए चाहैत छलाह। हम कतए ठहरब सेहो जानए चाहैत छलाह। इहो कहलाह जे रहबाक व्यिस्था हुनके ओहिठम भए सकैत अछि। मुदा जखन ओ एहि बातसँ आशस्त भए गेलाहजे हम हुनकेसँ

सॅम्पर्कमकरब तखन कर्विन्त भए गेलाह। सॉाक्ह कहलाह जे िशनपर पहुँचते हुनकासँ सॅम्पर्कम कएल जाएत जाक्हसँ कोनो आओर पॅमाक आदमी तॉग नक्ह करत आओर हुनकर आदमी ओतक्हसँ हमरा होलि लए आनत। हम अपन रहबाक क्यिस्थिा होलिमे केने रही। ताक्ह हेतु पक्हनक्हसँ आनलाइन आरक्षण करओने रही। हम पॅमाजी ओक्हठाम नक्ह रहए चाहैत रही कारण ओतए पता ने केहन की होएत, से मोनमे शॉक्ा रहए।

२५ फरबरी २०१८क साझमे भुनिेशर राजधानीसँ हम आ हमर शीमतीजी गया विदा भेलहुँ। ओक्हसँ पूमिहोलिमे फोनकए सूचना दए देल जे हमसभ भोरे पाच बजे होलि पहुँचब। तदनुकूल हमरा सभलेल क्यिस्थिा कएल जाए। रस्ता भकर खाइत-कबैत हमसभ याताक आनॉन्द लैत रहलहुँ। सासारामक लगमे टेन छलैक क्क एकिा सहयाती क्वक्वआ उिलाह जे गया आबयबला अक्छ। कैिा याती हुनक माक सुक्त उक्ठ कए समान लए गेिा पर आक्बा गेलाह। राक्तक समय छलैक, ्यो जोक्खम नक्ह उठाबए चाहए, कारण गयामे टेन चाकर बाक्ज कए बीस क्मनिपर पहुँचक छल, आ जौँ राक्त मे सुता गेल, सुतले रक्ह गेलहुँ, तहन तँ गेल मक्हॅस पाक्ममे परडु समेत। एक्ह चकरमे चाकर-पाचबेर गेिा धकर गेलहुँ आ आपस सीिा पर अएलहुँ। अन्ततोगतिा लगभग एक घॅिा बाद टेन गया िशनपर पहुँचल।

हम सभ भोरे गया िशनपर पहुँच गेल रही। होलि गैम पैलेस विशनसँ सिले छल। ततबे लग रहैक जे िशनपर होइत उदोरणा होलिमे सुनाइत छल। होलिमे पहुँक्च हमरा लोकक्त थोरेकाल विशाम कएल। क्नत्यकमसँ क्नृित भए बैसले छलहुँ क्क पॅमाजीक फोन आएल। होलिक पता पुछलाह। थोरे कालक बाद ओ होलि पहुँक्च हमरसभक हाल-चाल लेलाह, आ सभ तरहे कर्विॅत रहबाक हेतु कहलाह। महापातजीके राक्तमे अएबाक कायर्कम रहक्त। महापातजी बारॅम्बार फोनपर कहैत रहलाह जे एकभु त कए लेब। केस कि

लेब। हमसभ समान लए रास्तए पहुँच जाएब। काल्लसँ कार्यक्रमदान होएत।

ओहिदिन, माने २६ फरबरीक उपयोग हमरा लोकनि िधगया देखएमे केलहुँ। गयासँ बोधगया जेबाक हेतु िम्पू 200 िकामे भेलि। गयासँ बोधगयाक दूरी करीब-करीब १३ किलोमीिर अछि। रस्ताक हालत खस्ता अछि। लगबे नहि करत जे अन्तराष्टीय महतिक तीर्थस्थान जा रहल छी। गया शहरक हाल मधुबनी, दरभंगा जका अछि। नाला सभ नकक पत्तर प भेल, िताििरण दुर्गन्धसँ भरल। होइत जे कतए आबि गेलहुँ। करीब आधार्घंिमे िम्पु बोधगया मन्दिर लग पहुँच गेल। कनके काल पैरे चलि हमसभ मन्दिर लग बनल मालखानामे पहुँच गेलहुँ। ओहिठाम मोबाइल फोन सभ जमा करब अिनियम कारण से सभ लए मन्दिरक अन्दर नहि जा सकैत छी। मोबाइल फोन जमा कए हम सभ कनके आगू बढलहुँ कि एकिा िम्पूबला सौसे बोधगया घूमाबक पस्तािि देलक, २०० िकामे। हम सभ मानि गेलहुँ आ ओहि िम्पूसँ आस-पासक िधि मन्दिर सभ देखए लिकललहुँ।

भूििन, तिब्बत, चीन, बमा, शीलंका, वियतनाम, थाइलैम, जापान, थाइलैण्म आदि अनेको देश, बुदक अनुयायी सॉगठन सभ अपन-अपन बुदक मठ बनओने छथि। ओहिमे भव्य बुदक पत्तिमा स्थापित अछि। कैिि मन्दिर तँ अत्यंत शोभनीय छथिक। मुदा बाहर ढाकक तीन पात। सडक सभ खण्महर भए रहल अछि। लगबे नहि करत जे एतेक पमुख स्थानमे घुमि रहल छी। आियिक बात जे एतेक महतिक स्थानक एहन उपेक्षा भेल अछि? िम्पोबला काते-काते सभठाम घुमा-फिरा हमरासभके महाबोधि मन्दिर लग उतारि देलक। मोबाइल पहिने जमा कए देने रहिऐक, ते फोिि नहि खीचि सकलहुँ।

महाबोधि मन्दिरमे जाइत काल हाथक बैगक जाच भेल। ओहिमे चाजर, हेमफोन छलैक। कतबो कहलिऐक जे ओकरासबके रहए

दैक, मुदा नहि मानलक, गेट पर असबार सिपाही अड़ि गेल। हारि कए दोबारा ई बस्तुसभ जमा करए गेलहुँ। तकरबादे मन्दिरक परिसरमे प्रवेश भए सकलहुँ। मन्दिरक मुहथर लग एक गोट निका दसटकिही, बीसटकिही, नोटसभक गडमी बेसी पैसा लए कए विदेशी सभके दैत देखलहुँ। आगा बढला पर विदेशी तीर्थयाती सभक भरमार देखाएल। आगन्तुक भिक्षुसभक हेतु पसाद वितरण पातमे देबाक ओरिआन भए रहल छल। अन्दर मन्दिरमे ठाम-ठाम विदेशी भिक्षुसभ ध्यान कए रहल छलाह। मन्दिरमे अपूर्व शान्ति छल। एकटा गोर-नार विदेशी महिला सूतल छली ध्यानस्थ छलीह। लगैत छल जेना कोनो मुरत पडल अछि। गर्भगृहमे अपार शान्ति छल। अगल-बगलमे भिक्षुसभ माला फेरि रहल छलाह। ओहिठाम दर्शन कए हमसभ आपस आबि गेलहुँ। मोबाइल छोडौलहुँ। फेर टिम्पो पकडलहुँ, आ आपस गया स्टेशन लग स्थित होटलमे आबि गेलहुँ।

पातःकाल नित्यकर्मसँ निवृत्ति भए महापातजीके फोन लगाओल। हमरा उमीद चल जे ओ रातिएमे आबि कए पण्डाजी ओतए ठहरल हेताह, जेनाकि पहिने कहने रहथि। मुदा ओ तँ टेनेमे छलाह।

“जहनाबाद पहुँचि गेल छी। टेन लेट भए गेलैक, नहि तँ पहुँचि गेल रहितहुँ। दू घंटामे आबि जाएब। चिन्ता नहि करब। हम सभ समान लए कए आबि रहल छी।”

महापातजीके विलम्ब होइत देखि दू-तीनबेर फोन केलिअनि। ओ तँ टेनमे बैसल रहथि, बेर-बेर कहथि:

“आब लगे अछि। सभटा भए जेतैक।चिन्ता नहि करब। दू दिनमे सभटा काज भए जेतैक।”

आखिर ओ दूटा झोरामे समान सभ लए ९ बजे सोझे हमर होटल पहुँच गेलाह। मोन आश्वस्त भेल जे आब काज भए जाएत। नित्यकर्मसँ निवृत्ति भए महापातजी हमरासभक संगे पण्डाजीक ओतए बिदा भेलाह। पण्डाजीक ओतए हेतु टिम्पु कएल। सडकपर उतरि पाच

कमनि पैरे चललाक बाद हुनकर घर आएल। मधुबनी, दरभंगा कजलाक लोकसभक इएह पण्डा छथि, से ओ कहलाह। कसान झण्डापर माछक, दरभंगा महराजक देल। गलीक एक तरफ पुरना घर छैक, जे दरभंगा महाराज बनओने रहथि। तकर ठीक सामने नि पका घर बनल अछि, जाहि मे याती लोकनिक ठहरबाक इंतजाम अछि। नीकसँ बनल ओ सुविधापूणमकोठरीसभ अछि। से देखि भेल जे एतहुँ रहि सकैत छलहुँ। मुदा मुख्य रस्तासँ बहुत चलए पडैत छैक, फेर ओही ितारिणमे दिन-राति रहू। होिलमे चलि गेलाक बाद एकि नीनताक अनुभि होइत छल।

सभसँ पहिने पण्डाजीसँ आजा लेल गेल। ताहि हेतु हुनकर पैर पूजल जाइत अछि। किछु संकल्प कएल जाइत अछि, जे एतेक ने एतेक दान, दिक्षणा करब। तखन ओ आशीिद दैत काज करबाक स्वीकृति दैत छथि। हमसभ आगा बढैत छी। पण्डाजी बएसमे हमरासँ बहुत छोि छलाह, ते कनी कोनादनि लागल। बादमे महापातजीके ई गप्प कहलिअनि। कहलाह जे एहिठामक अधिकारी इएह छथिकाह, हिनके चलत, आिद, आिद।

पण्डाजीसँ आजा लए हमरा लोकिन फल्गु नदीक कछारपर पहुँचैत छी। ओतए छोिसिन महादिक मन्दिर छल। सामनेमे खािल स्थान देखि कममशुर भेल। िपण्डदान हेतु हमर शीमतीजी गोल- गोल िपण्ड बनौलिथ जतेक पुरखासभ जात, अजात मोन पडैत गेलाह सभके लेल िपण्डदान देलहुँ। जतेक काल हम िपण्डदान करैत रहलहुँ ततेक काल एकि बुढिया आ दूि छौडा किल ओतए हल्ला करैत रहल। ओकरा लेल धिन-सन। ततेक हल्ला करैत गेल जे मन्त्रो सूनब पराभि रहैत छल। महापातजी कहलाह :

“अहिसबपर ध्यान निह िदऔक, काजमे लागल रहू। ई सभ एहीठामक िसी छैक।”

िपण्डदानक बाद िपण्डके फल्गु नदीमे पािन देखि कए फेखबाक

हेतु हमर शीमतीजी आगु बढलीह। कहल गेलक जे फलाु नदी मे चलल एक-एक मेग आशमेध यजक बरोबर होइत आछ। फलाु नदी तँ रेतसँ भरल अछ। कहि नहि एकरा नदी कएक कहल जा रहल अछ। कोनो समयमे भए सकैत अछ ई नदी रहल होएत, मुदा आब तँ कटाह रेतसँ भरल अछ। बहुत आगु गेलाक बाद ककक पाक छल जे बालुमे खधआ कए ककलल छल, ओतहि वाण्म फेकि ओ लौवि गेलीह। अगल-बगल ठाढ छौडासभ आओर ओ बुढआ पैसा मागए लागल आ जाबत लेलक नहि चुप नहि भेल। महापातजी आपना छोर ककरो पैसा देल जाए ताहि हेतु तैयार नहि छलाह, मुदा कोनो उपाय नहि छल, ओकरा सभके कछु, कछु दए जान छोरा हमसभ ओतएसँ आगु बढ सकलहुँ।

ओहिठामसँ आगा जएबाक हेतु भवदनक बासते २५० िकामे एकि िमूू महापातजी ठीक केलाह। िमूबला बेस जोसला आदमी छल। बीच-बीचमे बेस मनोरॉजक मुरा बनाए तरह-तरहक गप-सप करैत बढैत रहल। कनीकालमे हमसभ पेतशाला पर आब गेल रही। ओतए पहने घािपर वाण्मदान भेल। ओहसँ सिल पोखर कही, ताल कही, जे कही, छल जे नकक दोसर र प लगैत छल। ओहमे सँ जल लए वाण्मदान होएत से सोचएक रोआ ठाढ भए गेल। खैर! जे करबाक छल से छल। ओहमे सँ जल आनल गेल। कतेको गोि आस-पास वाण्मदान करैत छलाह। हुनका स्थानीय लोकसभ पैसा लेल कोनो कमम बाकी नहि रखने छल। पाई नहि देबै आ वाण्मदान करब, भए नहि सकैत अछ। हमसभ जखन ओतए वाण्मदान कए लेलहुँ तँ एकि बेस मजगूतगर, कारी भुसुॅम लोक आब पैसा देबाक आगह करए लागल जे महापातजीके पसन नहि रहक। ओहिबातसँ ओ वयव्त महापातजीके गरआबए लागल, बात बढए लागल, महापातजी सेहो कछु कहलखन। ओहो चुप नहि रहल। महापातजीक गटा धेलक आ गरजए लागलः

“आब तूँ अबाअह झाजी! अवालाबेर सँ पिए नहि देबह। आबह, आबह।”

बात बिगड़ैत देखि हमसभ जल्दीसँ ओकरा एकसए टाका दए जान छोड़ौलहुँ। हमसभ तँ पहिनेसँ ओकरा पैसा देबए हेतु मोन बनओने रही, कारण ओकरा दोसर सभक संग फसाद करैत हम देखैत रही मुदा महापातजी रोकैत रहलाह, तकर फलो ओ भोगलाह। कनी-मनी धका-मुकी तँ भेबे केलनि। ओहो पाछा नहि रहल रहथि।

तकरबाद हम सभ पेत शिला दिस बढ़लहुँ। चारि सए सीढ़ी चढ़ए पड़त, ताहि हेतु पालकी सेहो उपलब्ध छल। दोसर विकल्प छल जे बीस सीढ़ीक बाद एकटा छोटसिन स्थान छल। ओतए महादेवक मन्दिर सेहो बनल छल। ओतए कैगोटा पिण्डदान करैत छल। महापातजीक सलाहपर हमसभ दोसर विकल्प चुनि ओतहिँ पिण्डदान करबाक निर्णय कएल। जगह साफ चल। बैसबाक हेतु आसनी सेहो भेटि गेल। ओहिठामक पण्डाजी सरल व्यक्ति बुझेलाह। चैनसँ पिण्डदान भेल। किछु के हवि किए एकटा पक्षिरिके हनि करैत देखलहुँ। महापातजी कहलाह जे ओहि महिलाके पेतबाधासँ मुक्त करबाक हेतु होम भए रहल छल।

पिण्डके फेकबाक हेतु तए स्थानपर पहिने सँ एकटा बंगाली अधबएसू लोक अपन बेटिक अकाल मृत्युक बाद ओकर फोटोके ओतए राखि किछु- किछु कए रहल छलाह। पण्डाजी दूसए टाका देबाक आगह पर अड़ल छलाह, जेकर बाद ओहि मृत व्यक्तिके पेतयोनिसँ मुक्त भए जएतेक। ओ अपन गरीबीक बारम्बार हबाला दैत एकसए टाकासँ आगा नहि बढ़ रहल छलाह, अन्तमे मेढसए टाकामे बात तए बेल। मत्र पढि ओहि फोटो पर फूल चढ़ौलथि। कतेक कूड छल ओ दृश्य, की कहू? तकर बादे हमसभ ओतए पिण्ड रखलहुँ। टाका दए जल्दीए ओतएसँ खसकलहुँ। लगेमे पीपड़क गाछक जड़मे बहुत रास मृत व्यक्तिसभक फोटो टिगल छल।

महापातजी कहकरलाह:

"जल्दी बिना पाछा तकने आगा बढ़ैत जाउ।"

सएह कएल। पेतशिलासँ उतरि हमरा लोकनि नीचामे भोजनालयमे बैसलहुँ। महापातजीके भूख लागि गेल छलन्हि। ओ भोजन करताह। हमसभ राबरी खाएब। सभगोटे चाह पीब। से सभ कराबि हमसभ ओतए बैसलहुँ। महापातजी भरिपोख भोजन केलाह, फेर पाबिकऽ खोआ सेहो देलखिन। हमहुँसभ खोआ खेबामे पाछा नहि रहलहुँ, कारण भूख जोर मारि रहल छल। भोजन तँ नहि कए सकैत छलहुँ कारण अखन आओर ठाम पिण्डदान देबाक छल। महापातजीके गया महात्म्यपर एकटा पोथी कीनबाक हेतु एकटा बच्चा कतेक गोहरओलक, मुदा ओ नहि मानलथि। हारिकए ओ एकसएसँ दाम घटैत-घटैत बीसटका पर आबि देलक, तैओ ओ अपन बातपर अडल रहलथि।

"धुरजी ई की लेब, बेकार अछि।"

अन्तमे हमरे दया आबि गेल आ हुनकासँ नुकाकए बीसटकामे गया महात्म्य कीनि लेलहुँ। भोजन कएलाक बाद महापातजीके फुर्ती आबि गेल। हमसभ तुरन्त ओतएसँ रामशिलाक हेतु विदा भए गेलहुँ। पहिने रामशिला घाटपर आ तकरबाद उपरमे बनल मन्दिरमे पिण्डदान भेल। तालाबक हालत पर नहि एक चचमकरी सएह नीक। उपर मन्दिरपर कनिके चढलाक बाद पिण्डदेबाक स्थान भेटि गेल आ ओतहुँ पिण्डदान देल गेल।

एकरबाद काकबलिके पिण्ड दैत हमसभ गोटे रेशन रोम स्थित होटल पहुँच गेलहुँ। महापातजी संगमे छलाह। ओ जे समानसभ अनने रहथि तकेर गोटि-गोटि दाम जोडि दए हुनकासँ ओहि दिनक हेतु छुटी लेल। ओ पण्डाजी ओहिठाम रहए हेतु चलि गेलाह। काल्हि अन्तमे बाह्मण भोजन हेतु पण्डाजीके कहल गेलनि। कहल जाइत अछि

जे गयामे एकटा ब्राह्मण भोजन करेलापर एक हजारक फल होइत अछि। हम एगारहटा ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करबाक भार हुनका देलहुँ, तँए खर्चा पात भेने हम हुनका देलिअनि।

पेतवशीला लगक होटलमे जे खोआ खेने रही, से मेरा अएलाक बाद रंग देखबए लागल। ताबरतोर पेट झडए लागल। संगमे दबाइ छल, से खेलहुँ। कहुनाक मामला सम्हरल। दिनभरिक धमाचौकडीक बाद आब आराम जरूरी छल, से कएल।

पातभेने हमसभ विष्णुपाद मन्दिर विदा भेलहुँ। महापातजी ओतए पहिने पहुँचि गेल रहथि।

''पहिने घाटपर पिण्ड पडत, तकर बादे विष्णुपाद मन्दिरमे''

महापातजी बजलाह।हमसभ ओतए पहुँचलहुँ। पोखरिक कातमे बैसि पिण्डदानक काज शुरू भेल। एक-दूटा युवक ओतए ठाढ रहथि। जहन पोखरिमे पिण्ड फेकि हमसभ जेबाक हेतु उठलहुँ कि ओ तीन गोटे भए गेल रहथि आ पैसाक माग भेल।

''ओकरा सभके किछु नहि देबाक छैक''

महापातजी कहैत रहलाह। से सुनि ओ सभ हुनका गरिआबए लागल, मारि करए पर उतारू भए गेल। महापातजी सेहो गरमाए लगलाह। तावत एकटा स्थानीय व्यक्ति अएलाह। ओ हमरासभके ओतएसँ घसकबामे मदति केलाह। ओ युवकसभ महापातके गारि पढैत रहल।

तकरबाद पैरे-पैरे हमसभ विष्णुपाद मन्दिर पहुँचलहुँ। ओतए बेस गहमा-गहमी छल। बडकाटा मन्दिर, ततबे पैघ ओकर प्रांगण। पच्छिम उतरब तँ बालुसँ भडल फल्गु नदी। बालुए-बालुए हमसभ फल्गु नदीके टपि गेलहुँ। ओकर दोसर छोडपर सीताकुण्ड अछि। कहबी छैक जे भगवान राम अपन पिता दसरथके पिण्डदान हेतु ओतहि आएल रहथि। पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल रहथि कि सीताजी मंत्र पढि दसरथके बजा लेलखिन। सीताजी की करितथि? कहलखिन जे

राम तँ पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल छथि। मुदा दसरथ कहलखिन जे आबतँ हम आबि गेल छी। तखन सीताजी सयाँ बालुएसँ पिण्डदान केलीह। ओहिठाम सीताजीक नाम पर छोटसिन मन्दिर अछि जाहिमे दसरथक हाथ बनल अछि। फल्गु नदीमे ओहिठाम कैगोट पिण्डदान करैत रहथि। ओतए दूटा पण्डितमे दक्षिणा हेतु झगडा होइत रहलनि। हमसभ पिण्डदानमे लागल रहलहुँ। महापातजी हमर श्रीमतीजीके चीज-वस्तु, गहना, टाका दान करबाक हेतु प्रेरित केलाह। से सब यथासाध्य भेलनि। हुनकर कहबाक हिसाबे हमसभ समान सभ लए गेल रही। पिन्डदानक बाद उपर मन्दिरमे दर्शनकए, पिण्ड चढाए हमसभ फेर बालुए- बालुए विष्णुपाद मन्दिर लग पहुँच गेलहुँ।

फल्गु नदीमे पानि नहि अछि। मुदा जँ तीन-चारि हाथ गहीँर कएल जाए तँ पानि भेटि जाइत छैक। तेहन कूप दू-तीन ठाम बनाओल देखाएल। यत-तत लोकसभ पिण्डदान करैत छलाह। उपर अएलाक बाद महापातजीके चाहक तलब अएलनि। चाह आनए हमसभ उपर गेलहुँ। ताबते एकटा मुदाके "राम नाम सत्य है" कहैत लोकसभ ओहिठाम रखलक। किछु विधि-विधान सभ केलक। तकरबाद ओकरा अन्तिम संस्कार हेतु फल्गुक कछारपर लए गेल। हमसभ चाह पिबैत ई सभ देखैत रहलहुँ। तकरबाद एक कप चाह महापातजीक हेतु अनलहुँ। चाह पीबि ओ निगर भेलाह। हमसभ आगाक काज हेतु विष्णुपाद मन्दिरमे पहुँचलहुँ।

विष्णुपाद मन्दिरमे देशक विभिन्न भागसँ तीर्थयातीसभ आएल रहथि। करीब पचास गोट तँ आन्ध्र प्रदेशक रहथि। ओहिना बहुत रास बंगालीसभ सेहो देखेलाह। सभ गोट पिण्डदानमे लागल रहथि। स्थानीय पण्डा जोर-सोरसँ मंत्र पढबएमे लागल रहथि। आन्ध्रासँ आएल तीर्थयातीसभ बहुत अनुशासित रहथि। मन्दिरमे ओकर टिर पर ठाढभए बडीकाल हुनकासभके मन्दिरक पण्डाजी मंत्र पढबैत रहलनि, ओसभ पढैत रहलाह। तकरबाद सभ दस-दस टाका दैत गेलाह आ पण्डाजी

बेरा-बेरी सभके मक्दरमे पिशि करबैत रहलाह। काना िाका देने एको गोि अन्दर नक्ह जा सकैत छल। ओ मक्दरक मुहथर छेकने ठाढ छलाह। ओक्हठाम ततेक हल्ला होइत रहल जे हमरा महापातजीक कहल मॉत्तसभ सुनबामे आ सुक्त बजबामे बहुत क्दकक्त होइत रहल कहुना-कहुना कए वाण्मदान समाप्त भेल।

“मक्दर बॉद भए जाएत, जल्दी कर ।”

महापातजी बारम्बार चेताविथ। हमसभ धरफराइत मक्दरक गभमृहमे पहुँचलहुँ। मक्दरक गभमृहमे बहुत लोक छल। अन्दर जाएब, आ मुक्तसाग जाएब पराभि छल। कहुना कए ठेलमठेला करैत ओतए पहुँचलहुँ। ओक्हठाम एकिा पमाजी पक्हनेसँ एकगोिसँ पैसा लए झझ्झि कए रहल छलाह। ओकरासँ जखन बात फक्रछाएल तखन हमरा पर ध्यान गेलक्त। ओ पीम चढएबाक हमर पयासपर हुक्कार भरैत महापातपर कागडलाह।

“एतए तोहर नक्ह चलतह। ई हमर जगह अक्छ।”

ओ पैसा तए करए चाहैत छलाह, महापात कक्छु मामुली रकम देबाक हेतु कहैत छलाह। एक्ह बातसँ ओ बहुत तामसमे छलाह क्क कोनो दोसर जजमानक फोन आक्ब गेल, ओ एकदमसँ फोन करैत बाहर भगलाह, कारण ओक्हठाम ततेक हल्ला होइत रहैक जे कक्छु नक्ह सुनाइ पक्ड रहल छल। बाहर मक्दरक गेिपर ओ गप्प करैत रहला ह आ हमसभ वामॅ चढाए ओतएसँ, हुनका सामनेसँ, क्तकक्ल गेलहुँ। हुनका कक्छु नक्ह हाथ लागल। ओक्हठामसँ हमसभ दक्कणावातपद पहुँचलहुँ। ओतए वामॅदान दए हमसभ ितरणी पहुँचलहुँ। ओक्हठामक पोखक्र आने पोखक्रसभ जेना नकमलगैत छल। ओतहुँ ओक्हना वामॅदान भेल। सभसँ अन्तमे वामॅदान भेल अक्यविपर।

अक्यबिपर बेस पैघ बरक गाछ अक्छ। ओक्ह गाछक जक्डमे बहुतरास लालमोरा, पीअर कपडा, सभक गेठी कएल अक्छ। ओक्ह गाछक छाहक्रमे हम वाण्मदान केलहुँ। वाण्मके गाछक जक्डमे फेक्क

ओहठामसँ बादा भेलहु। पंडाजीके पहने फोनकए देने रहअक जे आब हमसभ घंटिभरमे पहुँचए रहल छी। ओहठामसँ हमसभ मंगला भगतीक दर्शन कएल। मंगला भगतीक दर्शनकए बाहर निकलल रही की बहुत रास भीखमंगासभ पैसा मागए लागल। हम किछु दसटकिआ निकालि देबए लगलऐक। एतबेमे भीखमंगाक पथार लागि गेल। एक मेंग आगा बढब मोसकिल भए रहल छल। कहुनाक आगा बढी आ जोरसँ किछु टिका फेकि दइऐक जाहिसँ फेर कहुनाक आगा बढी। बहुत मोसकिलसँ गिरिधरा पहुँच सकलहुँ। तैओ ओ सभ घेरने छल। फेर जुमाकए किछु दसटकिही एहि हिसाबसँ फेकलहुँ जाहिसँ टिका लुझबाक चकरमे ओसभ कनी फटकी होमए आ हिमू आगा बढि सकए। हिमू आगा बढैत अछि, तथापि किछु बच्चा बहुत दूर धरि पछोड धेने अछि :

"बाबा! हमरा किछु नहि भेल।"

फेर किछु टिका निकालैत छी, ओकरासभके किछु- किछु कए दैत छिऐक। ताबे हिमूबला आगा बढि गेल। तकरबाद ठोकले पंडाजीक ओतए पहुँचलहुँ। भरिदिन मंत्र पढैत, पढैत मुँहमे सपटि लगैत छल। भूख से लागि गेल छल। मुदा अखन एकटा महत्वपूर्ण पकरण बाचल छल। तकरा पुरा करबाक हेतु हमसभ पंडाजीक ओतए पहुँचि गेल रही।

पंडाजीक ओतए पहुँचैत छी। ओहठाम पहिनेसँ सभटा इंतजाम भेल अछि। सज्जादानक हेतु सभटा बस्तु एकटा कोठरीमे राखल अछि। पंडाजी अपने एहि काजक हेतु अबैत छथि। हम पहिने गछल टिका देबाक गप्प दोहरबैत छी। तकरबाद सज्जा दान कएल गेल। एहठाम एकटा गप्प कहब जरूरी बुझा रहल अछि जे सभ समानके एकहिबेरमे मंत्र पढि दान कए देल गेल। शादमे एक-एक बस्तुक हेतु अलग-अलग मंत्र पढाओल जाइत छल। ओ बहुत शमसाध्य एवम् उबाउ तरीका छल। सज्जा दानकबाद पंडाजी कहलाह जे गयामे

एकटा ब्राह्मण आनठामक एक हजारक बराबरि फलदायी होइत अछि, से कहू कतेक ब्राह्मणक भोजन हेतु दान करब। एकटा ब्राह्मण हेतु यथोचित टाका अलगसँ गछलिअनि। अन्तमे फूलक मालासँ हमर दुनू व्यक्तिक हाथ बान्हैत कहलाह जे एकरा तोड़ाइ हेतु किछु अलगसँ कहिऔक, सेहो गछलिऐक, तखने ओहिठामक विधिसभ पूरा भेल। हुनका प्रणाम कए चैनसँ बैसलहुँ। पण्डाजीक ओहिठाम आगन्तुकसभक बहुत नीकसँ हिसाब राखल जाइत अछि। सभक नाम-गाम, पता, गया अएबाक तिथि लिखल जाइत अछि। गाम-गामक अलग-अलग पृष्ठ अछि। हमरा गाम पछिला सए सालमे गया गेनिहारक सूची ओ देखेलाह। बहुत नीक लागल। ओहिमे अपन गामक कतेको गोटकि नाम देखल। ई अपना-आपमे एकटा इतिहास छल।

ताबत ब्राह्मणसभ आबि गेल छलाह। पण्डाजी कहलाह जे संयोग नीक अछि जे एगारहटा ब्राह्मण पुरि गेल अन्यथा एहिठाम से कठिन रहैत अछि। भोजनक सामग्री तैयार छल। भरिपोख ब्राह्मणसभ भोजन केलाह। तकरबाद सभ गोटेकेँ किछु कए दक्षिणा देल गेल। एहि प्रकारे गयामे पिण्डदानक कार्यक्रम विधिवत सम्पन्न भेल। पण्डाजी केँ गछल टाका देलहुँ। ब्राह्मण भोजनमे भेल खर्चाक हिसाब भेल, से गोटे-गोटे कए चुकता केलहुँ। महापात्रजीकेँ दक्षिणा देलहुँ। हुनकर आपसीक हेतु यात्रा व्यय अलगसँ देलहुँ। ओसभ प्रसन्न देखेलाह।

मोनमे एकटा तरहक संतोख भेल। मूलतः माताक स्वर्गारोहणसँ व्याकुल हृदयकेँ किछु शान्ति भेटलि। प्रेतशिलापर जखन तरह-तरहसँ मातृ ऋणसँ उऋण हेबाक हेतु पिण्डदान देल जाइत छल तँ कानबाक मोन भए रहल छल। की कोनो पिण्डदानसँ माताक ऋणसँ उऋण भए सकैत छी? नहि भए सकैत छी। तथापि ई अपन धर्मक विधान छैक। गयामे पिण्डदानसँ पूर्वजक आत्मा मुक्त भए जाइत छथि। एहि विश्वास ओ श्रद्धासँ हम ओतए गेल रही आ दू दिन धरि ठाम-ठाम घुमि-घुमि पिण्डदान करैत रहलहुँ। प्रार्थना करैत रहलहुँ जे माता सहित हमर सभ पूर्वजक आत्माकेँ मुक्त होनि।

अपन धममे आस्था रखनिहार विशि भक्तसँ लोकसभ एतए वाण्यदान करए अबैत छथि। मुदा ओहिठामक व्यवस्था खासकए पोखरिसभक खास्ता हाल देखि कए निराशा होइत छैक। अन्तराष्ट्रीय महत्ति एहि स्थानक उचित देख-भाल नहि भए रहल अछि। ओहुसँ वकन्ताक बात अछि सबठाम पैसाक चिर्म। जे से पैसाक खातिर तंग करैत अछि। शुरसँ अन्ताधरि ई समस्या बनल रहल। एकर की समाधान होएत? एतबा जरुरी लगैत अछि जे शान्तिपूर्णमहौलमे लोक शद्धापूर्वक अपन पूर्वजाक आराधना कए सकथि, से व्यवस्था होइक। मुदा बिलाइक गरामे घण्टी बान्हत के??

बाधिा विआह

समाजक मान्यता, विधि-विधान एिम् लोक व्यिहार समय सापेक्ष अछि। जे बात-विचार पचास सय साल पहिने अनिायिमचलैत छल से आइ-कालि जँ लोक करए तँ हस्यास्पद भए जाएत। पहिने बाल विआह आम बात छल। बेिीके जनमिते जँ माए-बापके कथुक चिन्ता होइक तँ ओकर विआहक। कहुना कए विआह भए जाइक आ माए-बाप गंगा नहा लेथि। सोचल जा सकैत अछि जे समाजमे बेिीक स्थिति कतेक दयनीय छल..!

ई बात सभ जनैत छथि जे स्त्रीक बिना पुरष कतएसँ आएत। जे आइ ककरो बेिी छैक सैह कालि ककरो स्त्री, ककरो माए बनतै। तथापि लोकमे अखनहुँ बेिाक पक्ष मोह कम नहि भए रहल अछि। पहिने कतेको गोिा बेिाक चकरमे आठ-नौ सन्तान कए लैत छलाह। ल्िंग आधारित एहि भेद-भािके कम करबाक कोिा जडिसँ दुरस्त करबाक निरन्तर पयास होइत रहल।

एक समय छल जखन पतिके मरलाक बाद ओकर पतीके ओकरे संग जरा देल जाइत छल कोिा ि सियाँ जिर जाइत छल। समाज ओकरा सतीक रपमे महिमा मण्डित करैत छल। ओकर चितापर सती मन्दिर बना देल जाइत छल। सोचल जा सकैत अछि जे ि कतेक कूड पथा छल। एकिा सिस्थ जीबन्त व्यिक्तके जरा कए एहि लेल मािर देल जाइत छल िा ि सियाँ मिर जाइत छल जे ओकर पतिक देहािसान भए गेल, जाहि लेल ि कोनो पकारसँ दोरी नहि छल। मरनाइ, जिनाइ ककरो हाथमे नहि छैक। ई एकिा संयोग होइत अछि मुदा तकर एतेक दुखद् परिणाम होइत छल से सोचियो कए रोआ ठाढ भए जाइत अछि।

एकिा विदेशी पयििक जखन अपन देश घुमैत रहथि तँ संयोगसँ श्मशान घािपर एकिा मुदाके लए जाइत देखलथि। मुदा संग ओकर पती चिकरैत-भोकरैत श्मशान धिर संग गेल। लोक सभ तमासा

देखैत रहल आर ि पक्तक लहासक सॉं जारक्तसँ लाक्द देल गेल। जोर-जोरसँ ढोल बजा-बजा कीतम करए लागल जाक्हमे ओक्ह जीवित मक्हलाक करण कॅद्दन दक्ब कए गुम रक्ह गेलैक आ थोडबेकालमे ओहो पक्तक लहासक सॉं छाउर भए गेल। (ई सैकडो साल पूिक्क क्थक एिम् एकर िणम Beyond the seas माइकल एच. फीसर िरा सम्पाक्दत पुस्तकमे अक्छ) एक्ह तरहक घिना ओक्ह समयमे आम बात छल। स्त्रीगण सभ अपन क्नयक्त बुझ्झ एकरा सीकार करैत छलीह। पक्सद समाज सुधारक राजाराम मोहन रायक एक्हपर ध्यान गेल आ ि क्बविश सरकारसँ गोहार कए एक्ह सामाक्जक कुरक्तके बन्द करौलाह।

समाजमे विधिाक क्स्थक्त बेिीक क्स्थक्तसँ जुडल अक्छ। जँ बेिी पढतै, क्लखतै, बेिा जका ओकरो अिसर भेितै तँ ओहो ककरोसँ पाछा नक्ह रहत। आइ-काक्ल एक्हमे क्कछु पक्रितम भेल अक्छ। लोक बेिीके स्कूल-कालेज पठा रहल अक्छ। मा् िर, इक्न्जनीयर, अफसर सभ क्कछु बेिीओ बक्न रहल अक्छ। कानूनमे पक्रबतम भेल अक्छ। पैक्तक सम्पक्तमे बेिा ओ बेिीक हक बरोबक्र भए गेल अक्छ। घरेलू क्हॅसा कानूनक तहक कोनो मक्हलाके शारीक्रक, मानक्सक यातना नक्ह देल जा सकैत अक्छ। दहेज लेब देब गैर कानूनी भए गेल अक्छ। पश ई उठैत अक्छ जे एतेक रास कानूनसँ लैस भारतीय मक्हला की सभ तरहे अक्धकार सम्मन, सुरक्कत ओ पक्तक्ष ापूणम जीिन-यापन करबाक क्स्थक्तमे आक्ब गेल छक्थ? ई सोक्चये कए कलम ठाढ भए जाइत अक्छ।

समाजमे बेिीक क्स्थक्तमे सुधार मूलत: शहरी केत्र धक्र सीक्मत अक्छ। गाम-घरक हाल मोिा-मोिी ओहने अक्छ। अपना ओक्हठाम क्शकाक स्तर तेहन गडबडायल अक्छ जे जँ ्यो स्कूल-कालेज जाइतो छक्थ, क्कॉि क्डगीओ हाक्सल कए लैत छक्थ तैयो हुनका कोनो रोजगार भेिि सकत से सॅंदेहास्पद। जँ आक्थक्क क्नभमरता बनल रहत, सम्पक्तक

अधिकार मात कानूनक किताबे तक सीमित रहि गेल तँ बेटी कोना बढत?

जाहि समाजमे बेटीके देवीक समान असिर भेलि, पैतृक सम्पत्तिमे अधिकार भेलि ओहिठामक महिला वर्जित रपसँ सभ तरहे आगा भए गेलीह। एहिमे केरल राज्यक चचा कएल जा सकैत अछि। पुरना समयमे (आ किछु हद तक अखनहुँ) विधवा होइते जेना ओकरापर विपत्तिक पहाड टुटि जाइत छल। तत्कालीन समाजक समस्त मान्यता, बाध, व्यवहार ओकरा अपमानित करैत छल, अशुभ बुझैत छल। केस कटि लिअ, नीक-नीकुत खाउ नहि, साधारण कपडा पहिरू, उपास-पर-उपास करैत रहू। तेतबे नहि, कोनो शुभकाजमे आगा नहि रहू। आखिर ओकर की दोर रहैक जकर दण्ड ओकरा समाज दैत छलैक?

लगैत अछि, समाजक पुरोधा सभ असुरक्षा भावसँ ततेक ग्रस्त रहथि जे हुनका आगा-पाछा किछु आओर सोचेबे नहि करथि। कतेको ठाम तँ नवकिशोर विधवा भए जाइत छलि आ आजीवन धोर कष्ट एवम् विपत्तिमे जीवन-यापन करैत छलीह। गरीबी, सामाजिक पताडनासँ तंग भए कतेको विधवा गाम-घर छोडि वृन्दावन काशी आन-आन तीर्थमशरण धए लैत छलीह। अखनो हजारोक संख्यामे वृन्दावनमे विधवा सभ पडल छथि। भारतक उच्चतम न्यायालय हुनका सभक स्थितिपर विचार केने छल। सुलभ इन्टरनेशनल द्वारा हुनका सभ लेल किछु कल्याणकारी योजना सभ सुनबामे आएल छल। मुदा ई सभ ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन थिक। जरूरी तँ ई अछि जे समस्याक जडिमे जाए ओकरा समूल नष्ट कएल जाए। आखिर पुरुष विधुर भेलापर विआह करैत छथि की नहि? तहिना महिलोके ई अधिकार समाज स्वीकृत हेबाक चाही।

यदपि यत, तत सर्वत्र महिला सशक्तीकरणक चचमहोइत रहैत अछि, तथापि व्यवहारिकतामे संकट अछिए। जँ दुभाग्यवशि यो विधवा

भए जाइत छथि तँ अपनो हुनका नाना प्रकारक यातना, सामाजिक प्रताडना भोगए पडैछ। अस्तु, ई विचारणीय विषय जे विधवा लोकनिक व्यवस्थामे गुणात्मक सुधार हेतु हुनकर पुनर्विवाहक व्यवस्था हो। एहिमे सभसँ बाधक विवाहसँ जुड़ल खर्चा एवम् जातीय स्वाभिमान अछि। मुदा ई विचारणीय प्रश्न अछि जे समाजक कोनो व्यवस्था जँ एक वर्गक जीवनके कष्टमय केने रहैत अछि तँ ओकरामे संशोधन किएक नहि हेबाक चाही?

ओना, कतेको जातिमे विधवा विवाह पहिनहिसँ चलनमे अछि। कतेको महिला एहिसँ एकटा नूतन जीवन जीबाक अवसर प्राप्त करैत छथि। मुदा किछु जाति विशेषमे अपनो एकरा पारिवारिक प्रतिष्ठासँ जोड़ि कए देखल जाइत अछि। आखिर, ओ प्रतिष्ठाक जे गप्प होइत अछि, ताहिपर चर्चाक आवश्यकता नहि अछि। एहन विधवा जकरा सन्तानो नहि छैक, एकरा व्यर्थमे प्रतिष्ठाक नामपर लगातार कष्ट सहैत रहए, जीवनक समस्त सुख, सम्पदासँ वंचित रहए से कहाँ तक जायज अछि?

कतेको समाजमे ई व्यवस्था अछि जे विधवाके ओही परिवारिक अविवाहित भाए वा कोनो समवयस्क सम्बन्धीसँ विवाह कए देल जाइत अछि। कतिपय रूपसँ ई सभ बेसी व्यवहारिक एवम् सुविधाजनक लोक छथि। मुदा जँ सेहो सम्भव नहि होइक तखन तँ पारिवारिक सदस्यके आगाँ आबि ओहि महिलाक जीवनमे पुन: स्थापित करबामे सहयोग करथि आ सुयोग्य, सही व्यक्तिसँ विवाह करबामे सहयोग करथि।

जँ विधवाके सन्तान छैक तखन पुनर्विवाहसँ दिक्कत भए सकैत छैक मुदा एहनो परिस्थितिमे ओहि बच्चा सभक संग विधवाके स्वीकार करब समुचित समाधान भए सकैत अछि। हम एकबेर यूरोप गेल रही तँ हमर सभक गाइड चालक अपन पारिवारिक चर्चा करैत कहए लगलाह जे हुनकर स्त्रीक ई दोसर विवाह छियन्हि। पहिल विवाहसँ

दूि सन्तान छक्ल। हुनकासँ वििदक बाद एकिि सन्तान छक्ल। एिम् पकारेण ि तीनिि सन्तानक माता छवथ आ सभक भरण-पोरण सहरम एिम् समान्य रपसँ करैत छवथ। विदेशमे ई आम बात अवछ। ओक्हठाम विआह विच्छेद जक्हना होइत अवछ तक्हना पुनर्विमिाह सेहो भए जाइत अवछ। फेर अवधकाश मक्हला पुरर ओक्ह वस्थवत हेतु तैयारो एक्ह मानेमे रहैत छवथ जे आवथक वनभरता सामान्यत: नक्ह रहैत अवछ। ईहो बुझय जोगर गप्प अवछ जे ओकर सभक समाजक मूल्य अवछ जे ओकर सभक समाजक एिम् पावरिावरक सॅरचना अलग अवछ।

अपन भारतीय मूल्यक रक्ा करैत एिम् पवरिारिक सॅरचनाके कोनो तरहे वबना दुबर केने विशेर पवरवस्थवतमे सामावजक सामॉजस्यक व्यबस्था जररी अवछ जाक्हसँ सॅयोगिशि जँ ् यो वबधिि भए जाइत अवछ तँ हुनका तरह- तरहक कष सँ बचाऔल जा सकए आ हुनक भािी जीिनिके सुखद कएल जा सकए।

ओना अपने देशक कतेको र्यमे वबधिि विआह आम बात भए गेल अवछ। अपनो समाजमे कछु जावत विशेरमे एकरा लोक अखनो ढो रहल अवछ जखन क कतेको जावतमे पक्हनहुँसँ ई व्यबस्था रहल अवछ। अस्तु, एक्ह कुपथाक कोनो मजगूत धावमक पक नक्ह लगैत अवछ। ई एकिि जावत विशेरक वक्ाँि िगमविशेरक अहॉसँ पोवरत सामावजक अवभशाप वथक जकर सुधारपर सभक ध्यान जा रहल अवछ, मुदा व्यबहारमे अखनो सिीकायमनक्ह अवछ। एहन नक्ह अवछ जे वबधिि विआह होइते नक्ह अवछ, गाहे-िगाहे उच्च िगीय मैवथलोमे ई भए जाइत अवछ मुदा अखनो ई एकिि सभािविक, समिान्य चलनक रप नक्ह लेने अवछ, जाक्ह कारणे कतेको कम ियिसक कन्या जीिनिक समस्त सुख, सुवबधासँ िंवचत रक्ह दुखमय जीिनि बीतेबाक हेतु विशि छवथ।

कछु एहन घिना सभ देखएमे आएल जतए पवरवस्थवतिशि

पत्िक देहान्त भए गेलाक बाद हुनके पिरिारिक लोक विआहक व्यिबस्था केलाह आ आइ ओ एकटा सुखी पािरििारक जीिन जीबि रहल छथि। पूिमिपत्तसँ जे सन्तान छलैक ओकरो नीकसँ पालन-पोरण भए रहल अवछ। निविआहमे सेहो सन्तान भेलैक। हमर कहबाक तात्पययमअवछ जे सभ किछुके हठाते धमम्कममसँ जोवड कए मनुखक जीबन नकम कए देब कतहुँसँ उवचत नवह अवछ।

गाम-गाममे एहन दृश्य देखएमे अबैत रहल अवछ जे अपने लोक िाधिक शोरण करैत छथि। कतेकठाम तँ ओकर हत्या तक भए गेल। ओकर सम्पवत्त अपने लोक लुवट लेलक आ ठवा लेलक आ जखन ओकरा पयोजन भेलैक तँ सभ कात भए गेल। तथाकवथत मयादाक उल्लंघन जखन आम बात भए गेल हो, तावह मयादाके व्यथम होइत रहब सिथा अनुवचत।

पािरििारक जीिन हेतु, भारतीय मूल्यक रक्षा हेतु, िैििाहक जीिनक महतिके कमतर नवह आँकल जाए सकैत अवछ। परन्तु ओकर आधार मजगूत बनल रहैक तावह हेतु सोचमे पिरितिन जररी अवछ। पूरा दुवनया बदवल रहल अवछ। इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीविजन, फेसबुक, हाटसअप सौसे दुवनयाके एक आँगन (Global Village) मे पिरिितत कए देलक अवछ। एवह पिरितिनसँ यो बाचल नवह रवह सकैत अवछ। गाम-गाम एिह टेलीविजन, एिह गीत नाद, एिह सीनेमा चलैत अवछ। सिभाविक अवछ जे गामोक वधया-पुतामे आधुवनकताक मानवसकता उत्पन्न होइक। एकरा एकदमसँ छोडलो नवह जा सकैत अवछ। अस्तु,आधुवनकताक िाहािवमे सभ उवडया जाए ओवहसँ पूिि हमरा लोकवन सित: सिभाविक रपसँ पिरवस्थवतजन्य कारणसँ िाधिा भेल मवहलाके पुनिास हेतु, ओकर सम्मानपूणम जीिन-यापन हेतु सोचबाक चाही।

समाज जे गवतशील होइत अवछ, जे बदलैत पिरिेशसँ सामंजस्य स्थावपत करबाक हेतु पयतशील रहैत अवछ, सैह विकैत अवछ।

ओकरे विकास होइत अछि। जँ से नहि भेल तँ अपने बनाओल कायम, कानून आ मर्यादाक बोझसँ स्वतः चरमरा जाइत अछि। जरूरी अछि जे समयक सँग तादात्म्य स्थापित कए हम सभ नूतन विचारके सहर्ष स्वीकार करी ओ प्रगतिक पथपर आगा बढी।

उपभो्ता संरक्षण कानून १९८६

उपभो्ता संरक्षण कानून १९८६क मूल उद्देश्य जिला, रा्य एमि् राष्ट्रीय स्तर पर अर्धन्यायिक संस्थाक स्थापना करब अछि जाहिसँ उपभो्ता विबादके शीघ्र ओ तरित समाधान भए जाइ। ई संस्था न्यायक नैसर्गिक सिद्धांतक आधारपर मामलाक औचित्यक ध्यान रखैत उपभो्ताके उचित क्षतिपूर्तिक आदेश दए सकैत अछि। एकर आदेश नहि मानलापर उचित दंड देल जा सकैत अछि।

उपभो्ता संरक्षण कानून १९८६ गाहकके अपन शिकाइतक निपटान करबाक एकटा विकल्पक समाधान पदान करैत अछि मुदा ताहिसँ कानूनमे पाप्त अन्य न्यायलयमे मोकदमा करबाक अधिकार समाप्त नहि भए जाइत अछि। जौं अन्य न्यायालयमे ई शिकाइत सुनल जा चुकल अछि तैयो एहि कानूननक अनुसार उचित फोरममे शिकाइत कएल जा सकैत अछि। (धनबीर सिंह बनाम हुमको, २०१२ (५) एसएलटी ३५)

एहि कानून क धारा ९क अनुसार रा्य सरकार उपभो्ता विबादक निपटान हेतु जिला एमि् पान्तीय स्तर पर जिला फोरम आओर रा्य आयोगक गठन करत, संगहि केन्द्र सरकार राष्ट्रीय आयोगक गठन करत। जिला फोरम मे जिला जज रहल, कार्यरत जिला जज, कोनो जिला जजक योग्यता रखनिहार व्यक्ति अध्यक्ष भय सकैत छथि। ओहिमे दूटा आओर सदस्य हेताह, जाहिमे एकटा महिलाक होएब जरूरी। रा्य आयोगक अध्यक्ष उच्च न्यायालयक कार्यरत वा सेवानिवृत्त न्यायाधीश होइत छथि। एकर अतिरि्त दूटा अधिक सदस्य सेहो होइत छथि, जाहिमे एकटा महिलाक होएब जरूरी। राष्ट्रीय आयोगक अध्यक्ष उच्चतम न्यायालयक कार्यरत वा सेवानिवृत्त न्यायाधीश होइत छथि। एकर अतिरि्त चारिटा अधिक सदस्य सेहो होएत छथि। सदस्य बनबाक हेतु बएस 35 सँ कम

नक्ह हेबाक चाही, योग्यता स्नातक, एिम् अथमशास्त्र, कानून, ािणि् य, लेखाकन, उदोग, जनसेिा, ाि पशासनमे दस बखक्क अनुभिा होएब जररी क्थक।

क्जला फोरममे एहन क्सकाइत कएल जाएत जाक्हमे सद्दंक्सत िस्तुक मूल्य ाि आपेक्कत क्क्तपूक्ताक्क मूल्य २० लाख ाकासँ बेसी नक्ह होएत। जौ कीनल गेल बस्तुक मूल्य क्काँ ाि क्क्तपूक्तम२० लाखसँ बेसी एिम् एक करोड सँ कम अक्छ तँ क्सकाइत सम्बक्न्धत रा् यक आयोगक ओतए करए पडत। ताहूसँ बेसी दामक बस्तुक हेतु क्काँ ाि क्क्तपूक्तम हेतु राष्टीय आयोगक ओक्ह ठाम क्सकाइत करब जररी क्थक।

एक्ह तरहक कोनो क्सकाइत सम्बक्न्धत घिनाक दू सालक अधीन करब जररी क्थक, परहुँ सम्बक्न्धत फोरम/ आयोग क्लक्खत कारण दए ाक्जब मामलामे एक्ह समय सीमामे छूिा दए सकैत अक्छ।

उपभो् ता कानूनक तहत सम्बक्न्धत उपभो् ता, ाि उपभो् ताक क्हतक रक्ाक हेतु काज केक्नहार मान्यतापाप्त सॉगठन ाि एकाक्धक उपभो् ता (जतए बहुत रास ऊपभो् ताक एकरॉगाहे क्सकाइत होइक), ाि रा् य क्काँ ाि केन्र सरकार स्ितः क्कमिा पभाक्ित ऊपभो् ताकक क्हतरक्ाक हेतु क्सकाइत कए सकैत छक्थ।

क्जला फोरम/रा् य आयोग/राष्टीय आयोगक ओतए क्सकाइत करबाक हेतु क्नधाक्रत शुल्क:

क्जला फोरम

िस्तु/सेिा/क्क्तपूक्ताक्क कुल दाम लागत शुल्क

एक लाख धक्र

(जे गरीबी रेखासँ नीचा छक्थ) क्कछु नक्ह

एक लाख धक्र (जे गरीबी रेखासँ उपर छक्थ)

एक सए िका

एक लाखसँ उपर ओ पाच लाख धरि दू सए िका

पाच लाखसँ उपर ओ दस लाख धरि चारि सए िका

दस लाखसँ उपर ओ बीस लाख धरि पाच सए िका

रा् य आयोग

बीस लाखसँ उपर ओ पचास लाख धरि

दू हजार िका

पचास लाखसँ उपर ओ एक करोड धरि चारि हजार िका

राष्टीय आयोग

एक करोड सँ उपर

पाच हजार िका

(उपभो् ता सरंक्षण विधेयक, २०१८क अनुसार जिला फोरम/ रा् य आयोग/ राष्टीय आयोगक आवश्यक अधिकार क्षेत्र बढा कए कमशः एक करोड, दस करोड, आ ताहिसँ उपर करबाक विचार अछि)।

जिला फोरम िारा सिकाइतक सुनवाइ:

सिकाइत पाप्त केलाक २१ दिनक भीतर सिकाइतक पक्षके जिला फोरम पक्षािदीके पठाओत। पक्षािदी अधिकसँ अधिक ४५ दिनक भीतर ओकर जबाब देताह अन्यथा जिला फोरम एकतरफा उपलब्ध सबूत ओ कागजातक आधारपर मामलाके तय कए सकैत अछि। िादी ि पक्षािदीके िकील राखबाक जररत नहि होइत अछि। ओ सियाँ कोनो पक्षकार िारा अपन बात फोरममे राखि सकैत छथि। जिला फोरमके कार्यिाहीके ई कहि चुनौती नहि देल जा सकैत अछि जे मामलामे नैसर्गिक न्यायक सिद्धातक पालन नहि

भेल अछि।

जौँ उक्त जाच पडताल एवम् प्रस्तुत सबूतक आधारपर जिला फोरम विदीक शिकाइतसँ सहमत भए जाइत अछि तँ ओ प्रतिवादीके ओहि बस्तुके ठीक करबाक आदेश दए सकैत अछि, नवि बस्तु देबाक हेतु कहि सकैत अछि, वा ओकर मूल्य आपस करबाक हेतु, कर्वा प्रतिवादीक लापरवाहीसँ शिकाइतकर्ताके भेल कष्ट वा क्षतिक क्षतिपूर्तिक करबाक हेतु निर्णय दए सकैत अछि। जिला फोरम शिकाइतकर्ताके प्रतिवादी द्वारा देल गेल सेवाके दोरपूर्णमसाबित भेलाक स्थितिमे उक्त क्षतिपूर्ति देबाक आदेश दए सकैत अछि। साँझि विजब मामलामे दण्डात्मक क्षतिपूर्तिक आदेश सेहो कए सकैत अछि।

प्रतिवादीक लापरवाहीक कारण शिकाइतकर्ताके भेल क्षति वा अघातक हेतु जिला फोरम क्षतिपूर्तिक आदेश दए सकैत अछि। (एस.के.लकोवि आ बनाम नेशनल इनस्योरेस कॅम्पनी लिमिटेड)

क्षतिपूर्तिक हेतु शिकाइतकर्ताके साबित करब जररी अछि जे प्रतिवादी द्वारा देल गेल सेवामे त्रुटि वा साँ- साँ ओकर लापरवाही सेहो छल, जौँ से नहि छल तखन क्षतिपूर्तिक माग खारिज भए जाएत (निदेशक, एच.आइ.इ.वी बनाम अनिल कुमार गुप्ता, १९९४ (१) सीपीआर १८२)।

उपभोक्ता फोरम अन्तरिम आदेश नहि दए सकैत अछि।

अपील

जौँ कोनो पक्ष जिला फोरमक आदेशसँ सन्तुष्ट नहि अछि तँ ओ तीस दिनक भीतर राज्य आयोगमे निर्धारित प्रपतमे अपील कए सकैत छथि। मुदा जँ जिला फोरम आवश्यक क्षतिपूर्ति कर्वा दण्डक आदेश देने अछि तँ ओहि आदेशके चुनौती देबासँ पूर्वे ओहि रकमक आधा वा पचीस हजार जे कम होइक, जमा करए पडत। मामलाक निपटान हेतु राज्य आयोग मोटामोटी जिला फोरमक पद्धति एवम् प्रक्रियाक अनुसरण करैत अछि।

जौँ कोनो पक रा् य आयोगक आदेशसँ सहुंष नहि अछ तँ ओ तीस दनक भीतर राष्टीय आयोगमे नधारत पपतमे अपील कए सकैत छथ। मुदा जँ रा् य आयोग आवश्यक क्तपूर्तम कर्ा दसक आदेश देने अछ तँ ओहि आदेशके चुनौती देबासँ पूमिओहि रकमक आधा ा पैतीसहजार जे कम होइक, जमा करए पडत।

जौँ कोनो पक राष्टीय आयोगक आदेशसँ सहुंष नहि अछ तँ ओ तीस दनक भीतर उच्चतम न्यायलयमे नधारत पपतमे अपील कए सकैत छथ।मुदा जँ राष्टीय आयोग आवश्यक क्तपूर्तम कर्ा दसक आदेश देने अछ तँ ओहि आदेशके चुनौती देबासँ पूमिओहि रकमक आधा ा पचास हजार जे कम होइक, जमा करए पडत।

रा् य आयोग, राष्टीय आयोग नबे दनक भीतर ओकरा समक कएल गेल अपीलक नपान कए देत, मामलाक सुनबाइक दौरान सामान्यतः स्थगन नहि देल जाएत। जौ नबे दनमे फैसला नहि भए पबैत अछ तँ तकर कारण लखत रपमे देल जाएत।

जला फोरम / रा् य आयोग/राष्टीय आयोग ारा देल गेल नणयके जौँ तय समय सीमाक भीतर अपील नहि कएल जाइत अछ तँ ओ नणय अन्तम भए जाएत।

सकाइतकताक आदिनपर कर्ा सयाॅ रा् य आयोग कोनो जला फरममे चलि रहल मामलाके दोसर जला फोरममे पठा सकैत अछ।

गाहकक कतव्य :

गाहकक कतव्य अछ जे ओ कीनएबला बस्तुक बारेमे उचत जानकारी पाप्त करए, ओकर गुणता बारेमे सयाॅ जाच पडताल करए एमि् दोकानदारक बातपर आँख मूनकए वशास नहि करए अपतु स्तु वशेरपर बनल चेन्ह जेना आइएसओ आदके नीकसँ ठेकान लेथ।

देश भरमे करीब पाचसए सयसो संगठन उपभो् ता संरकणक

हेतु काज कए रहल छथि। गाहकके उचित सलाह देबाक हेतु एमि् ओकर िवजब वहतक रकाक हेतु एहन सॉगठनसभ सकृय योगदान करैत छथि। गाहक जर री भेलापर वहनका लोकवाक मदक्त लए सकैत छथि।

मिथिलाक संस्कृति

बहुत पहिने मिथिलाक नाम विदेह छल आओर ओहिमे तिमान मिथिला, शाली, कतेको राज्य सभ सामिल छल। चारिम ि पाचम शताब्दीमे ई मिथिला कहिं तीरभुक्तिक नाम गहण कएलक। मुगल सामाज्यक काल मे एकर एकि भाग (उतर दक्षिणसँ)नेपालक राजाक अधीन चल गेल। शेर भाग वारहुत कहल जाइत छल। मिथिलापान्तक व्याख्या जे वाअरसन महोदय केलन्हि अछि, तदनुसार एकर क्षेत्रफल लगभग तीस हजार िगमील अछि आओर एहिमे विहार राज्यक मुजफ्फरपुर, सितामढी, शाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहरा, उतर मुंगेर, उतरी भागलपुर, आओर पुर्णियाक किछु भाग सामिल अछि संगे नेपालक रौताहि, सरलाही, सप्तरी, मोहातारी, आओर मोरंग जिला ओहिमे अिति अछि।

मिथिलाक तिमानक दरिरता आओर भूतकालक ऐशयमे कोनो साम्य नहि अछि। सन् १९३४ ई०क भूकम्पक बाद एहिठामक लोकक स्थिति आओर खराि भए गेल छलैक आओर भूकम्पक कारणे ओहिठामक आबोहिापर सेहो पतिकूल पभाि पडल। आलसी आओर खोचाह स्िभािक कारण एहिठामक लोक सम्पति कष्मे छथि, मुदा पाचीनमे ई स्थिति नहि छल। लोक पशनचित समय बितबैत छल आओर धने-जने पूरल रहए। पयाप्त सुख-सुविधाक उपलब्धिक संगे लोकक ध्यान कला ओ संस्कृतिक विकासपर जाएब स्िबािकि अछि आ ते ई कोनो आियमनहि थिक जे लोक पयाप्त साहित्यिक ओ सजनात्मक पतिभाक परिचय देलक।

पाचीन कालसँ मिथिलाक पशसितक आधार िििता रहल अछि। रडदशनमेसँ चारि दशन, न्याय, िशेरिक, मिमासा आओर साख्यक रचनाकार लोकनि कमशःगौतम, करणाद, जैमिनी ओ कपिल मिथिलेमे भेलाह। मुगल आकमण कालमे आचार-विचार शुद्धिपर ध्यान दि

आशि्यक भए गेल ते मध्यकालमे नव्य न्याय, पूमिकामासा आओर स्मृक्ता कार्धि रचनापर बेसी तुल देल गेल। कमथिलाक पक्तष ा बाहरक विनि लोकक्कमे बनल रहए ते ओतए कतेको पकारक पदीं विनि लोकक्कके देबाक पथा चलल, मुदा ओक्ह हेतु बहुत ्लीष परीक्ष होइत छल-जेना क्क शलाका परीक्ष, उपाध्याय, महामहोपाध्याय आक्द। कमथिलाक पाचीनमे विदेह राजाक पक्तष ाक आधार हुनक जान एिम् विति छल। तक्हना महेश ठाकुर ओ खामिशिीय अन्य राजा लोकक्क एिम् अन्य विदा अनुरागी भेलाह आ कमथिलाक कीक्तमबढएबाक हेतु सभ तरहे पयास कएलक्क ओ तदनुकूले पक्तष ो पाप्त कएलक्क।

कमथिलाक सोक्ततमे भगौती जानकीक अंश सिि विराजमान अक्छ। घर-घरमे पसरल गोसाउक्कक क्शर भगतीक आराधना स्थल अक्छ। पत्येक शुभ अिसिरपर भगतीक िंदना गएबाक पथा कमथिलाक संस्कार भए गेल अक्छ। विदापक्तक िंदना ‘‘जय जय भैरवि असुर भयाउक्क, पशुपक्त भाविनी माया’’, कमथिलाक राष्टगानक तुल्य अक्छ।

यत-तत पसरल भगतीक क्सदपीठ जेना उच्चैठ, उगतारा आक्द शक्तक आराधनाक साथक्तताके पमाक्णत करैत छक्थ। उच्चैठक कालीक कृपासँ कालीदास मूखसँ एकि महान विनि भए गेलाह। कहबी अक्छ जे ओ तेहने मूखम छलाह जे भदाक्रक झर-झर पाक्न बहैत कालमे भगतीक मुँहमे कक्रखा लेपए लगलाह जाक्हसँ पसन भए भगती हुनका रिदान देलक्थन। कमथिलाक क्तपुंमकसँ लालठोप ओ चाननक उर्धिपुणम करबाक परंपराक अथमओकर शा्त, िषणि ओ शैि संपदायमे समनिय स्थाक्पत करब छल। पक्त रिमहजारक हजार कमरथुआ िदिनाथधाम जाए महादेकिके गंगाजल ढाक्र अिति छक्थ। संगी गाम-गाम बनल महादेकि मक्न्दर क्शकि पक्त आस्थाके पमाक्णत करैत अक्छ। ‘‘कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ’’ गबैत-गबैत कतेको भ्त लोकक्कके अशुपात भए जाइत छक्क। एतबा होइतो शालीगामक रपमे भगिान विष्णुक पूजा सगरे कमथिलामे पसरल अक्छ।

तुलसी चढाय चरणामृत लए भोजन गहण करैत छथि। जँ गम्भीरतासँ कहल जाएतँ मिथिलाक मावि-पाविमे अध्यात्म कुवि-कुवि कए भरल अछि। जन्मसँ मरण धरि हिन्दू धर्मशास्त्रमे जतबा संस्कार कएल जाइत अछि से मैथिल लोकनि बड धार्मिक भावनासँ सम्पादित करैत छथि। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ सेहो मिथिलाक मुडन, उपनायन ओ विआहक परम्परा समाजक विभिन्न घटकिमे समन्वय ओ धार्मिक भावनाक अभ्युदयक हेतु अत्यशय महत्वपूर्णमकहल जा सकैत अछि।

भारत भरिमे मिथिलाक विआहक परम्परा अपनामे विचित्रताक हेतु पसिद्ध अछि। बखरिक बखरिक पसरल अनेकानेक पकारक पवि ओ त्योहार मिथिलामे विआहक अवनियमअंग थिक। विआह होइते चतुर्थी, चरचन, मधुश्रावणी, कोजागरा, विदाइ, पुछारी, नागपंचमी ओ विरागमनक अवसिरपर नाना पकारक भार पठएबाक परम्पराके लोक आबो ओहिना लदने चलल आवि रहल अछि जेना अठारहम शताब्दीमे रहल होएत। एहि दृष्टिकोणसँ मिथिलाक लोक अखनो पछरले छथि। दहेजक पथा तेहन संक्रामक ओ घातक भए गेल अछि जे जनिका दू-तीन टा बेटी होइहि तनिका दवरि बनबासँ भगाबिने रहि कए सकैत छथि। आश्यिकता एहि बातक अछि जे मिथिलामे कन्यालोकनिक पक्ष जे अन्याय भए रहल अछि से आबो बन्द होइक। बोराक आम आ घरक कनिआमे भेद करब कठिन थिक।

एहि सम्बन्धमे सौराठसभा ओ ओकर परम्परागत इतिहासक णिम करब उचित होएत।ई भारतविमे अपना-आपमे एकमात संस्था थिक जे बिना कोनो राजकीय हस्तक्षेपके पचासिमदस हजार मैथिल ब्राह्मण लोकनिक विआह-सम्बन्ध स्थापित करबाक आधार बनैत अछि। एहिठाम एक निवित अवधिमे करीब लाख ब्राह्मण जमा होइत छथि। सौराठसभाक स्थापना करीब सए साल पूर्विभेल छल। ओतए पञ्जिकार लोकनो होइत छथि जे कन्यापक्षके सिदान्त दैत छथिन। ओकरा असविजन-पत सेहो कहल जाइत अछि। नियमानुसार सात पीढी पाछा

देखला सँ ता पाँजकार ई पमाणपत दैत छथि जे सम्बन्धित रि ओ कन्या पक्षमे सम्बन्ध भए सकैत अछि। यद्यपि ई व्यवस्था शि परम्पराक पवित्रता ओ शुद्धता नियबाक हेतु कएल गेल, मुदा एकर जवडमे पाँजी व्यवस्था छल जे १३१० ई०मे महाराजा हरसिंह िरा चलाओल गेल। एहि व्यवस्थाक अनुसार मिथिलाक ब्राह्मण लोकनिके चारि भागमे बालि गेलाह। (१) शोत्रिय, (२) योग, (३) पाँजीदि, (४) जयबार। पथम तीन कोटिक ब्राह्मण भलमानस कहल जाइत छलाह आ अन्तिम याने जयबार लोकनि कुलशीलक हिसाबे छोट ब्राह्मण कहल गेलाह। सौराठ साभामे बैसबाक स्थान ओहि हिसाबे निर्णीत भेल छल। ऐहि पथामे सबसँ बडका दोर ई छल जे भलमानुर लोकनिक सामाजिक पवित्रता बहुत बढि गेल आ ओ लोकनि ्यो सए ्यो पचास एनाकए विआह सम्बन्ध स्थापित करए लगलाह। कतेकठामतँ इहो सुनबामे अबैत छलजे भलमानुर लोकनिके विआह केलाकबाद दोहराकए सासुर जेबाक समय ओ स्मृति नहि रहैत छलनि।

विभिन्न पकारक पाँजि रखनिहार लोकक मूलक सँ गाम विशेर ि व्यक्तिविशेरक नाम जोडल रहैत अछि। जेना-महादेि ठाकुर पाँजि, शीलानाथ झा पाँजि आदि। यद्यपि आब एहि परम्पराक कोनो सामाजिक महत्व नहि रहि गेल अछि तथापि पाँजिकारलोकनि एकर भषाशिरके उठओने चिकर रहल छथि कारण ओहिसँ हुनका लोकनिक जीविका चलैत छनि। आबक मिथिलाक पाँजि थिक-इन्जीनियर, मा्रि, पोफेसर ओ खूब धनिक लोक।

कोनो ठामक सँस्कृतिपर ओके लिपि ओ भाखाक बड पभाि होइत अछि। मिथिलाक भाखा मैथिलीके अपन लिपि तिरहुता किंबा मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि। दुभार्ग्यक बात थिक जे मैथिलीमे देिनागरी लिपिक पयोग सँ ओकर मौलिक लिपिक पयोगमे पचूर हास भेल। एतबा धरि जे मिथिलाक्षरमे लिखा-पढी करएबला लोक आँगुरपर गनलेसँ भेटि सकैत छथि।

मैथिली भाखामे साहित्यक प्रत्येकविधापर काज भेल अछि। प्राचीनकालसँ आइ धरि कतेको विद्वान लोकनि अपन कलमक जोड़सँ एहि भाखाकेँ कृतार्थ कएलनि अछि। चर्यापदमे दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताकेँ लौकिक रूपमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एकर पद सभमे चौबीस प्रकारक राग-रागिनी सभक प्रयोग भेल अछि। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम ओ पंचशायकक मैथिली भाखाकेँ अपूर्व योगदान अछि। वर्णरत्नाकरक ई विशेषता छथिक जे हमरा लोकनिक आदि ग्रंथ होइतो ई गद्यमे लिखल अछि जखन कि आन-आन भाखाक आदिग्रंथ पद्यमे अछि। मध्यकालमे मैथिली साहित्यक युग प्रतिनिधि भेलाह विद्यापति जे संस्कृत, अवहट्ट, ओ मैथिली भाखामे कतेको सोरहि रचना कए अमर भए गेलाह। गाम-गाम पसरल विद्यापतिक सोहर, समदाउन, झिझिबनी ओ नाना प्रकारक भक्ति गीत अखनो हुनकर साहित्यिक स्वरूपकेँ ओहिना जीवित रखने अछि जे चारि-पाँच सए बरखपूर्व रहल होएत। विद्यापतिक बाद गोविन्ददास झा, उमापति, मनबोध, लोचन, हर्षनाथ झा धरि अपूर्व शृंखला चलल जाहिमे विद्यापति साहित्यक शृजनात्मक छाप सतत् पड़ैत रहल।

चंदा झाकेँ आधुनिक युगक प्रतिनिधि मानल जाइत अछि। ओ बहुमुखी व्यक्तित्वक लोक छलाह। हिनक सात गोट प्रकाशित ग्रंथ भेटैत अछि तथा पाँच गोट एहनो ग्रंथसभक उल्लेख भेटैत अछि जे अप्रकाशित अछि। हिनक प्रकाशित ग्रंथक नाम छथिक- (१) मिथिलाभाषा रामायण, (२) गीति सुधा, (३) महेशवाणी, (४) अहिल्या चरित नाटिका (५) चंद्र पदावली, (६) लक्ष्मीश्वर विलास, (७) विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद। हिनक अप्रकाशित रचना अछि- (१) गीत सप्तशती, (२) मूलग्राम विचार, (३) छन्दोग्रन्थ, (४) शिवाह्वान, (५) रसकौमुदी। विद्यापतिकेँ जँ मैथिली साहित्यक सूर्य कहल जाए तँ कवि चंदा झा ओहि साहित्यमे चन्द्रमाक स्थान

पाप्त करबाक योग्य छथि।

चन्दा झाक बाद जीनि झा, म.म.परमेशर झा खिसी, रघुनॉदन दास, म.म.मुरलीधर झा, जनादम झा जनसीदन, ओ लालदासक नाम पमुख साहित्यकारक रपमे अविसमरणीय अछि। लाल दास क रचित रमेशर चरित रामायणमे सीताक महिमा बेसी स्थान पओने अछि अथात ई शक्तिक पधानता देलनि अछि जे मिथिलाक परपॉरा ओ सॉस्कृतिकक अनुकूल अछि। महाकाव्यक क्षेत्रमे सीताराम झाक अमि चरित, बरीनाथ झाक एकालिी परिणय, मधुपजीक राधा विरह, तॉत्रनाथ झाक झाक कीचक दिओ कृष्णचरित, सुमनजीक पतिपदा सतिः समरण भए जाइत अछि।

एकरे सॉग आॉजी, सॉसकृत ओ मैथिली साहित्यक पकाण्ड विनि होइतो मैथिली साहित्यके गौरविनति करबामे मा. रमानाथ झा ओ मा. जयकात मिशक नाम सणिाकरसँ लिखए जोगर अछि। हास्यरसातिार पो० हरिमोहन झाक कृतिसँ मैथिली भाखाक कोर भरल-पूरल अछि। ओ अपन उपन्यास कन्यादान एमि् विरागमनक माध्यमसँ मिथिलाक कुपथापर अपूमिचोि कएलनि। खटरककाक तॉग, पणम्य देिता, रमगशाला, चचरी, आदिक रचनासँ ओ मैथिली साहित्यमे अमर भए गेलाह अछि। मा. शैलेन्र मोहन झा, काशीनाथ झा किरण, शी दिनाथ मेश 'याती'क सेहो अपन-अपन योगदान अछि।यातीजी अपन साम्यािदी विचारक पुिष करैत बहुत रास ओजस्वि ओ कान्तिकारी विचारसँ पूणमरचना कएलनि। उदाहरणसिर प-

अगडही लगउ बर जि खसौ, एहन जाितपर धसना धसौ,

भूकॉप होउक फिाक धरती, मा मिथिले रक्ष कए की करती?

मा. सुभर झाक'फारमेसन आफ मैथिली लिरेिचर'', 'हिसािरकल गामर आफ मैथिली ओ पिास, हुनक तीनिा पोथी मैथिली साहित्यके पाण पकाष ा देबएमे अवितीय योगदानक रपमे अविसमरणीय अछि।

आधुनिक कालमे मिथिला मिहिरक सम्पादकगण एहि पकारे स्पष्ट अछि जे सांस्कृतिक दृष्टि ए मिथिलाक माटि-पानि बड उर्वर अछि। मुदा दुर्भाग्यक बात ई अछि जे आलस्य किंवा पमादवशे हमरालोकनि अपने सांस्कृतिक उपलब्धिके बिसरि रहल छी। स्व० राजेश्वर झा, योगानन्द झा, स्व. चन्द्रनाथ मिश्र, राजकमल चौधरी, ललित, ओ रमानन्द रेणु, श्री सोमदेव आदि कतेको लेखक लोकनि ओ कवि लोकनि मैथिली साहित्यके समृद्ध-पुष्ट करबामे सहायक सिद्ध भेलाह अछि। एही कममे बालखण्डिसी गौरीश गुंजनक चर्चा सेहो उचित अछि जे अपन कथासंग्रह- ''अन्हार इजोत'' ओ कविता संग्रह'' हम एकटा मिथ्या परिचय''क हेतु पसिद्ध छथि। एकर अतिरिक्त हिनक रेडिओ रूपक ''जय सोमदेव'' श्रोतालोकनिके कतेक आनन्दित कएलक अछि से निर्णय करब कठिन अछि।

एहि पकारे स्पष्ट अछि जे सांस्कृतिक दृष्टि ए ''मिथिलाक माटि-पानि बड उर्वर अछि। मुदा दुर्भाग्यक बात ई अछि जे आलस्य किंवा पमादवशे हमरालोकनि अपने सांस्कृतिक उपलब्धिके बिसरि रहल छी। ''बारीक पटुआ तीत'' जे कहल गेल अछि से सगरे मिथिलामे पयुक्त अछि। सीकीसँ नीक-नीक बासन बनाएब आ उपनायन, विवाह ओ आन-आन शुभ अवसिरपर सुन्दर-सुन्दर कढाइ करब मिथिलामे हजारक हजार स्त्रिगणमें पचलित अछि। गाम-गाम एकसँ एक कलाकार एहि कलाके जीवित रखने रहलाह मुदा एकर महत्व लोक तखन बुझलक जखन कि हजारक हजार संख्यामे एहि वस्तुसभक माग किछु शिमपूर्णसँ विदेशीसभ करए लगलाह।

जाहि मिथिलाक ध्वजा न्यायशास्त्रमे देशभरि मे फहराइत रहल, जतएक गायक लोकनि देशभरिक राज परिसरमे सम्मानक पात छलाह ओ कलाक दृष्टिसँजे सर्वत्र सम्माननीय छल ओहीठाम लोक भरि जाढमे घूरतर ओ गमीमे पीपडक छहरिमे गप्प मारि-मारि दलिद्राक सेनि करैत सब तरहे क्षीणशक्ति भए रहल छथि से चिन्ताक बात

अशिय अछि मुदा एकर अथम ई कदापि नहि जे हम अपन आत्मविशासके परित्याग कए दी आ अन्धाधुन्ध आन-आन सांस्कृतिक ऐब सभके अपना जीनिमे पशय दी।

(१४ अगस्त १९८३क मिथिला मिहिरमे पकाशित)

<u>लघुकथा- पढ़ू पूत चण्डी</u>

समय एक गतिसँ आगा बढल जा रहल अछि। मुदा हम-अहा ओकर पाछाँ-पाछाँ कहियो नहि कतए पहुँचि जाइत छी। जेना कोनो तेज धारमे छोटि-मोटि कतेको वस्तु स्वतः दहाइत कहा-सँ-कहा पहुँचि जाइत अछि, एहि हाल एकटा जिनगीक अछि।

"अहा की केलहुँ? घूरतर बैसल पाय: सतत्य साझमे गामक कैटा बूढ़सभ आपसमे चर्चा करैत छलाह।"

ई यो कहिछु, ई यो कहिछु कहैत। गप्प-सप्प वादविवादक रूप धरैत आ अन्ततोगत्वा कहिओ काल झॉंझाटिक सॉंभानिा भए जाइत। सभसँ ढीठ ओ दबंग ठीठरकका पहलमान मुदा अपढ छलाह आ ओहि घूरक महफिलमे माइकाक चोपिर कहैतथि-

"पढ़ू पूत चण्डी जासे चले हण्डी।"

सदः लाभमे पूर्णमआस्था छलनि। भोरमे बच्चा मकर चरौलक आ साझमे एक माबा गरम-गरम दूध। एहिसँ नीक शासत्त की भए सकैत छल? सभ पढाइ-लिखाइ व्यथम कहिआ पढत आ कहिआ कमाएत..? मुदा, ओहीठाम हीरा ककाक स्थिति एकदम दोसर रंग छल। धिया-पुता पढत तँ विचारवान होएत आ सुखी रहत।

गाममे ओहि घूरक चर्चा चलैत छल। दूनू गोटेसँ साझमे जँ बैसतथि तँ अपन-अपन दर्शनक अनुसार जरूर बजतथि आ परिणाममे विवाद होइत।

ठीठरकका दबंग ओ लठैत छलाह। जबरदस्त खेती-पथारी रहनि। धिया-पुता सभ बेस मोटि-सोटि आ लठैत। सभ खेतीमे लागल रहैत छल। परिवार सुखी छल। हुनका तुलनामे हीरा ककाक हालत पातर छल। धिया-पुता सभ स्कूल-कलेजमे पढि रहल छल। खेती-पथारी कोनो खास नहि। ते कखनो काल ठीठर ककाक कथन ठीक

बुझाइत छलक। मुदा दूनू गोि अपन-अपन विचारपर दृढ छलाह।

हीरा ककाके अपन बधया-पुताक बड आशा छलक। आ ते अपन सम्पूणम शव्तसँ बधया-पुताके क्शाक्ा व्यिस्थामे लागल रहैत छलाह।

समय ब्तैत गेल आ हुनकर सभ नेना सभ पढ्-क्लख यथायोग्य नीक-नीक स्थानपर पहुँचलाह। ओमहर ठीठरक गृहस्ती ब्दन-पक्त-ब्दन गडबडाइत गेल। िदािस्थाक जोर पकड्तह पुत सभ आपसमे लडैत रहैत छलाह। बात बागडैत देक्ख ि सभके फराक-फराक कए देलक्खन। जमीन-जथा बँि गेल।

बीस बखमक बाद आइ ने हीरा बाबू छक्थ आ ने ठीठरकका। मुदा सुनबामे बहुत ब्कछु आएल। ठीठरकका बड कषमे मर गेलाह। बेि सभ खेत-पथार बेक्च लेलक आ पेि पोसबाक हेतु गामसँ पडा गेल। हीरा बाबू सेहो सुखी नक्ह भए सकलाह। बधया-पुता सभ पढलक-क्लखलक जरर मुदा सभ अपनामे व्यस्त। ककरो बूढाक व्यथापर सोचबाक समय, इच्छा ओ सामर्थ्यम नक्ह भेलैक। ्यो कलकता तँ ्यो बॉम्बई। पाचो बेि पाचि शहर धेने छलाह। सुनबामे ईहो आएल जे मक्झला बेि लखनउमे मकान बना लेलक अक्छ। हीरा बाबू ओक्हना एसगर िकि तकैत बादा भए गेलाह।

ओक्ह स्कूलमे मौलाना-जोलहाक बेि सेहो हमरा सभहक सॉ पढैत छल। पढएमे सामान्य छल मुदा अत्यन्त स्जन ि सौंदिनशील। कै ब्दन गामसँ स्कूल जाइत काल ि भेंि जाइत। मुदा ि स्कूल क्नयक्मत नक्ह जाइत छल। कै ब्दन बाधमे ओकरा हम सभ हर जोतैत देक्खयैक। हँक्सयो लागय आ दुखो भए जाए। कक्हओ काल ओकर बाता सेहो भेंि जाइत, एकि आगहक सॉ-

“बौआ, माहिर साहेब बाबूसँ कक्ह देबै जे हमर बचबा आज नै जाएत।”

पुछलऐक-

“कए?”

तकर जिबिमे पनबाआइ गमछामे बन्हने हर जोतइत अपन बेटि दिस इसारा करैत।

कै दिन हमरा संगे ओ स्कूल जाइत। रस्तामे भेटि भए जाइत छल। गमछामे पाच-छहटा किताब ओ किछु कपी बन्हने हमरा देखैत घरेसँ आबाज दैत-

“हमहँ चलब। ठाढे रहब।”

आबाज सुनि कए हम-सभ पाकरी गाछक तरमे सुस्ताए लगैत छलहुँ। स्कूल पहुँचि सभसँ पाछलका सीटपर ओ बैसि जाइत छल। आ कै दिन तँ सभ घण्टीमे मारि खाइत रहैत छल। बिना कोनो आकोश आ पश्चाताकृयाक कै दिन कहैत छलैक-

“एना मारि किएक खाइत रहैत छह! नीकसँ पढाइ करह।”

मुदा ओ हमर-सभहक बात सुनि किछु-किछु अकाटय तकमदए दैत छल।

बहुत दिनक बाद ओकरा एक दिन चौकपर रिक्सा लगौने देखलियैक। हमरा देखि ओकरा उत्साह भेलैक। पाय: ओकरा भेलैक जे ई यातीपर ओकरा बेशेर अधिकार छैक। एक बेर हमरा मोन भेल जे ओही रिक्सासँ चली मुदा आत्मा सिहरि गेल। हमर ओ सहपाठी रिक्सा चलाओत आ हम ओहिपर बैसल रहब। आ हम कात भए गेल रही। किछुए कालक बाद ओकर बूढ माता एक गठर कपडा लेने आएल। पाय: हमरा नहि चिन्हि सकल। ओहि रिक्सापर गठर राखि बाप-बेटि मिलि कए बीडी पीबए लागल। समयक एतेक अन्तरालक बादो बाप-बेटिक स्नेह बनल छल। हमरे सभहक संगे किछु विशिष्ट विद्यार्थी सभ सेहो स्कूल जाइत छलाह। जाहिमे सँ कै

गोि मैक्टकमे चाक-पाच बेर फेल कए काक्तकारी भए गेल छलाह। गाममे छोिका लोक सभके सॉक्त कएक ओ सभ महा उपरि ठाढ कए देने छल। कैि पैघ गृहस्थक हर-जन बन्द भए गेल छल। पक्तभरनी सभ आँगनमे काज नक्ह करत आ भकआ भार लए कए नक्ह जाएत। जकर घर जाक्ह जमीनपर छैक से तकर हेतैक। ई हेतै ि हेतै आ भए कए रहतै। क्दन राक्त गाममे घोल-फचका होइत रहैत...।

सभसँ बडका आफद बडका माक्लकके भेल रहक्त। ि एकदम क्वक्षप्त भए गेल रहक्थ। क्दन-राक्त हुनका ओक्हठाम भण्मारा चलैत रहैत छल। इलाकाक पहलमान ओ लठैक जमघि रहैत छल।

समय बीतलाक सॉ-सॉ ि काक्तकारी सभ शान्त भए गेलाह। अक्धकाश कतहुँ-कतहुँ चाकरी कए रहल छलाह आ एकाधि अकाल मृत्युक सेहो क्शकार भए गेलाह।

बडीकाल बैसल इएह सभ सोचैत रही क्क क्दनेश भाए भेि भए गेलाह। ओ हीरा बाबूक जेठ भाक्तज छलाह आ अॅक्तकालमे िएह बेचारेक सेिा केने रहक्थ। हीरा बाबूक छोि पुत ि्ना हमर सहपाठी छलाह। हुनके पक्त गप्प होमए लागल। कहलाह जे ि तँ बहुत क्दनसँ लॉक्दनमे रहैत अक्छ। बडका हाक्कम भए गेल अक्छ आ बहुत रास पैसा कमाइत अक्छ। मुदा कै बखसँ गाम नक्ह आएल अक्छ।

पुछक्लयक्त-

“हीराबाबूक काजमे आएल रहक्थ की नक्ह?”

“नक्ह आएल रहक्थ।”

छगुन्तामे पक्ड गेलहुँ। पुछलऐक- “क्कएक?”

“कक्ह नक्ह! मुदा मृत्युसँ दू-तीन बखमपूिमआएल छलाह। गाम मोक्ल गेल रहए। जाइत काल बहुत रास िाका क्पताके दैत रहक्थन

मुदा ओ नक्ह लेलक्खिन।"

क्बच्चेमे चौकैत पुछल-

"कारण?"

"कहा दक्स कहलक्खिन जे ई पैसा अही राखू। काज आओत। जाक्ह पैसाक कारण अहा एतेक दूर चक्ल गेलहुँ, गाम-घर,माए-बाप ओ सभ क्कछु त्याग कए देलहुँ ताक्ह पैसाके क्यथमहमरापर क्कएक नष कए रहल छी। ि ना तक्हआसँ घुक्र कए गाम नक्ह अएलाह।"

"मुदा ठीठर ककाके की भेल?"

"की कहूँ! सभ बेि घर छोक्ड पडा गेल। करबो की कक्रतैक। गामपर क्कछु नक्ह बाचल रहैक। असगर ठीठर कका काक्ह कि त रहैत छलाह। जेठकी पुतोहु थोड-बहुत सेि कए दैत छलक्खिन।"

एक बेर फेर ठीठर कका भीमकाय ओ हुनक आफ्त ि् य मोन पक्ड गेल-

"पढू पूत चण्मी, जा से चलए हण्मी।"

शरीरमे बड थाकान बुक्झ पडैत छल, कक्ह नक्ह कखन नीन आक्ब गेल।

लघुकथा- मुख्यमंत्रीक सपि

“की करी किछु फुरा नहि रहल अछि..! पेसबला सभ पाछू पड़ि गेल अछि। जतए जाउ ओतहि ई सभ पहुँचि जाएत।” मुख्यमंत्रीजी बाजि उठलाह। पुन: अपन पेस सचिवकेँ बजौलखिन-

“जासरि जाँह। अहा एकटा विज्ञप्ति अखबारमे प्रकाशित करबा दियौक जे पेसक आदमी मुख्यमंत्रीसँ सम्बन्धित ओही समाचारके प्रकाशित कराबथि जे हुनकर सरकारी कारोबारसँ सम्बद्ध होइक आ जकरा छापब जनताक हेतु नितान्त आवश्यक होइक। संगहि ईहो समाचार प्रकाशित करबाओल जाए जे हमर व्यक्तिगत कृया कलाप छापए बला समाचार पत्र ओ सभ व्यक्तिक विरुद्ध कार्यवाही कएल जाएत।”

उत्तरमे पेस सचिव बाजि उठलाह-

“ठीक सर। पेस बला सभके किछु नहि की भए गेल छैक? एकरा सभके सबक सीखेनाइ बेस जरूरी छैक। हम आइए ई विज्ञप्ति प्रकाशित करबा दैत छियैक।”

“हद भए गेल! किछु नहि, पेसबला सभके की भए गेलैक अछि।”

अही कहू अपना सभमे बलिदान देबाक तँ पुरान पथा छैक आ ताहि बातके लए कए पेसबला सभ छापि देलकै अछि आ सौसे देशमे हरविड़ो मचि गेल। जे कातिरीजी अपन कुर्सी बचएबाक हेतु छागरक सोणितसँ स्नान कएलकि अछि। लगैत अछि जे पेसबला सभके सबक सीखबहि पड़त। मुदा कोना? काल्हि एहि विषयपर विस्तारसँ विचार-विमिशमकएल जएतैक।

“मैमम। पेस विलि तँ अहीक आजासँ लगाओल गेल।”

मुदा जाहि तरहक विरोध एकर भए रहल अछि से तँ अपत्याशित

अछि। लगैत अछि हमरा नहि मुख्यमंत्रीक कायुव्त करब पड़त।”

“हम तँ अहाक शरणमे सबदिखन रहलहुँ अछि। कही तँ एखन विलिके आपस लए ली?”

“एकर बादो हम ई आशासन नहि दए सकैत छी। फेर गप्प कएल जेतैक।”

- यो मखला सरि एतबा कहि कए टिलीफोन काटि देने छल। एकर बादे माननीय भूतपूर्विमुख्यमंत्रीजीक कान उपटि गेलन्हि। सभटा बीतल गप्प सीनेमाक रील जका सपनामे देखार भए रहल छलन्हि। असलमे हुनकर कुसीसँ हिबि एकटा तेहन मानसिक पसंग छल जे हुनका कारस्तर ओझरौने रहैत छल।

ओना जहिआसँ ओ मुख्यमंत्री भेलाह तहिएसँ हुनका भयाहि सपि सभ आबए लागल छलन्हि। विपक्षी दलक नाकेबन्दी मजबूत भए गेल छलन्हि आ सतादलमे सेहो कैटा गुट भए गेल छल मुदा साहसक बले ओ आगा बढ़ैत जाइत छलाह। अकस्मात गाडीक पहिया धसैत देखलन्हि तँ ओ ओकरा उखारबाक कोनो कम पयास केलन्हि से बात नहि, मुदा भाग्ये पलटि। कणोक रथ तँ एहिना धसि गेल रहन्हि। बेस संक्रमण कालमे ओ जहा ने आगू बढ़लाह कि रथक पहिआ धसए लागल। ठीक एकदम एिह हाल माननीय भूतपूर्वि मुख्यमंत्रीजीके भेलन्हि।

भए सकैए जे हमर गप्प अहाके तीत लगैत हो। अपने लोकक भाटकि नहि होइ। माननीय भू.पू. मुख्यमंत्रीजी कुसी बचएबाक हेतु कोन कुकमम छोड़लाह?

कहबी छैक जे ने दौड चली ने ठेस खसी। मुदा मुख्यमंत्रीजीके ई गप्प के बुझेतन्हि। ओहि दिन अखबार पढ़ैत छलहुँ कि तँ एकटा बेस नमगर अपील पढ़लहुँ। धूतसाक चरम सीमा छल। मैथिलीमे

समाचार पत क्षकालताह।

यौ महामहोपाध्यायजी। अपनेके ई बुझ्द कछु द्दन पू भिकएक नक्ष भेल? की अहा जनताके ओतेक मुखम बुझ्झ रहल छयैक जे अहा ओकरा भुक्तएने कक्रऐक। एकदम नक्ष। आब जमाना बदललै। खैर! देर अएलहुँ दुर स्त्त अएलहुँ। मुदा ई तँ कहू जे ओक्ष समाचार पतमे की की खबक्र छपतैक? मुख्यमॅत्ती पदक पुन: पाक्तक हेतु जँ अहा कोनो यज करबैक तँ ओकरा पमुखतासँ छपबैक ि नक्ष? आशा अक्छ जे एक्ष बेर ओ समाचार मैक्थलीमे पकाक्शत समाचार पतक मुख्य पृष पर अपने छापब।

ओक्ष द्दन गाममे बैसार रहैक। न तिुक्रआ सभ मैक्थलीक पचार-पसारक हेतु बेस आन्दोलन केने छलाह। माननीय भू.पू. मुख्यमॅत्तीजी पमुख ि ता छलाह। ि बाजक लेल ठाढे छलाह क्क ् यो दौडल आएल। कहलक-

“द्दल्लीसँ फोन आएल अक्छ।”

ओ मॅचपरसँ धडफडाइत उतरए लगलाह ओ एही कममे लूढकक्यो गेलाह। फेर िएह नारी स रि। फेर िएह हतपभ भू.पू. मुख्यमॅत्ती...।

एमहर बैसारीमे हल्ला छलैकजे भू.पू. मुख्यमॅत्तीजी कछु महतिपूणमघोरणा करताह। सम्भ ति: ओक्ष अपत्याक्शत फोनक कारणसँ बैसारक कयमिहीपर गम्भीर पभा ि पडल आ बैसार साधारण भारणक बाद स्थवात भए गेल।

ओक्ष द्दनुका बैसारक बाद भू.पू. मुख्यमॅत्तीजी बहुत द्दन धक्र चुप रहलाह। पक्छला मक्षना मुख्य पृष पर समाचार छपल छल। ओकर कछु महतिपूणमअॅश पस्तुत अक्छ-

दिनाक २ मई सन् १९७६

आइ मुकुल पि ना अएलाह। परम सन्तोर अछि जे हम हुनका पशन कए सकलहुँ। ओना हमर पक्षानिन्दी लोकनि हमरापर लागल छथि मुदा जाधरि मुकुल हमरापर नहि वि गिरताह ताधरि ेयो किछु नहि कए सकैत छथि। ते हुनका पशन करबाक हेतु जान लगा दी।

दिनाक १२ दिसम्बर १९८१

मैथिलीक अधिकार हेतु किछु मैथिल आएल छलाह। आखिर मैथिलीक की महत अछि? हमरा ई सभ तँ एकदम नीक नहि लगैत अछि, मुदा कएल की जाए। व्यक्ति तगत हमरा मैथिल, मैथिलीसँ कोनो लगा ि नहि अछि। हँ, जँ ेयो अपन सम्बन्धी होथि ि दोस्त-महिम होथि तँ तिनका नीक-सँ-नीक पद दिआबी आ मदति ओ करी। मैथिली, मैथिली कियिकएलासँ की होएत?

१४ अ ि बर १९८२

विहार बेस वि ि दास्पद रा य अछि। मोन तँ होइए जे एकहि पदके छोडि जा कए आराम करी, ि पुन: अपन पहिलुका पेशामे लावा जाइ। मुदा एतेक आमदनी छैक एकहि काजमे जे अन्यथा सातो जन्ममे नहि भए सकैत अछि। पेसबला सभ पाछू पडि गेल अछि। की करी बुझा नहि रहल अछि?

१ जनि री १९८४

देखा चाही नि बखमकी की रॉग लबैत अछि। मुख्यमंत्री पदसँ हि लाक बाद तीरि रिरागा भए रहल अछि। खने मोन करैत अछि जे

राजनीतसँ सन्यास लए ली। खने मन करैत अछ जे ‘युिय कृत कािय’क पुनरावृित्त कए दी। एकिा उपाय सुझ रहल अछ। मैथिलीक पचारमे पदयाता कछु स्जन चला रहल छथि। हुनके सॉग धरी। गामे-गाम मैथिलीक नामे हमरो पचार भइए जाएत। सुनबामे आएल अछ जे दवडभॉगा लग एकिा बड सद ताक छथि। हुनकोसँ कछु परामशमकरब। आगा जगदम्बाक ईच्छा।

कैदनसँ थाकल-झमारल भू.पू. मुख्यमॉत्रीजी ओह दन दुपहरयामे कनेके आँख मुनने छलाह क सपनाए लगलाह। साक्षात् महरासुर मदनी कता लए घुम रहल छलीह। शतुक सॅहार करैत छलीह। निका मुख्यमॉत्रीक नाशक हेतु रमयॉत्र जोर-सोरसँ चल रहल छल। जतह देखू ततह भू.पू. मुख्यमॉत्रीजीक सिगतमे सिगतािर सभ बनल छल। मैथिलीक पचार खूब भेलैक। भू.पू. मुख्यमॉत्रीजीक नामक नगारा चार कात बाज रहल अछ। चुनािव घोरणा भए गेलैक। बडका-बडका उदोगपत सभ अपन भविष्यक आशापर पयाप्त चन्दा दए रहल छथि।

एह सबहक पणामो बहरेलैक आ हम पुनि मुख्यमॉत्री भए गेलहुँ। सपथ गहण समारोहमे कछु मैथिल सभ उपरि करए चाहैत छलाह क पुलस लाठीचाजमकए देलक...।

एतबहमे भू.पू. मुख्यमॉत्रीजी सपनेमे गरजए लगलाह क हुनक नीन खुज गेल। उठलाह तँ िएह रामा िएह खिाला। पुनमुबकोभि।

लघुकथा- यमलोकक दल-बदलू

ओहि दिन यमलोकमे जबरदस्त गहमा गहमी छल। भेल ई जे मृत्यु लोकसँ हालमे आएल बहुत रास लोक ओतए पहुँचलाक बाद जनतांत्रिक बहालीक माग पर अड़ि गेल रहए। कतेक पक्षक हंगामासँ तंग भए यमराज यमलोकक निर्वाचन विधानक हेतु अध्यादेश जारी केलाह। तकर बाद मृत्यु लोकक तर्जपर चुनावि कार्यवाही प्रारम्भ भेल।

यम पक्षविपक्ष बनब कतेक कठिन बात थीक से भुक्तभोगीये कहि सकैत छथि। यदपि सतारूढ दलसँ लए कए विपक्षी धरिक सभ व्यक्ति अपन-अपन सेटिंग पक्ष समर्थनाक भाषिणाक चचमकरैत-करैत अपकियात रहैत छथि मुदा असलमे जे किछु करैत छथि से जगजाहिर अछि। इएह सभ गप्प हम ओहि दिन सोचैत रही कि यमलोकक अखबारमे पक्षविपक्ष सभा चुनावि समाचार छपकललैक।

समाचार देखिते एक बेर हमरा जेना करेन्ट जका लागा गेल। कोना ने लागए। यमलोकमे जहिआसँ चुनावि सिलसिला अएलैक तहिआसँ कतेक घर बसि गेल। कतेको बेरोजगार सभ रातये-राति धनिक भए गेल। इएह कारण थिक जे आब लोक जहा यमलोकमे चुनावि हल्ला सुनैत अछि कि विकिट लेबक हेतु एडी-चोटीक पसेना एक कए दैत अछि।

यमलोकक पक्षविपक्ष सभाक चुनाव भेला एक मास भेल छलैक। कोनो दलक स्पष्ट बहुमत नहि आएल छलैक। पधान बनए लेल बेस घमरथन भए रहल छलैक। यदपि दल सभहक संख्या तँ ९ टा छल मुदा मूलत: तीनटा दलक सदस्य बेसी छलाह- पिसाच दल,भूतनाथ दल ओ पेत दल।

निर्वाचित सदस्यमे सँ कमसँ कम पचासिटा सदस्य एहन

छलाहजे कमसँ कम पाच-सात बेर दल बदलि चूकल छलाह। यम पक्षाक्ष सभामे कोनो दलके स्पष्ट बहुमत नहि भेलासँ हुनका सभहक लेल सविराम अस्थिर छलनि। नकि यम पक्षाक्ष सभ अपन-अपन भविष्य सुधारबाक हेतु बेस उत्सुक छलाह।

पमुख महोदयके से बेस परेशानी छलनि। हुनका तीनू दलक नेता बेरा-बेरीसँ अपन-अपन समर्थनमे आधासँ अधिक सदस्यक सूची पस्तुत केने छलाह। तीनू सूचीमे पचासि हस्ताक्षर दल-बदलू आ पचीसि नकि यम पक्षाक्ष केर नाम साकल छल। पमुख महोदय भूतपूर्व इमानदार छलाह। मुदा जनताक हिसाब देखि कए रॉग बदलि लेने छलाह। ओहो मामला नीकसँ बुझि रहल छलथिन। आखिर इमानदारीसँ होइते की छैक? नून रोटी चलि सकैत अछि। घरिली कहथिन जे कहि नहि कोन करम केलहुँ जे अहाक संग भेल।

जहिआसँ पमुख महोदय अपन चालि-ढालि बदललाह तहिआसँ दुनिया दोसर भए गेलनि। जेम्हरे देखू तेम्हरे लक्ष्मीक दर्शन। ई मौका हुनका हेतु सविराम अस्थिर छल। जनसेविक सिधारी लोकनिक पथम अतिार भए रहल छल। यमराज तीनू नेतासँ गप्प-सप्प करबाक हेतु व्यवस्थित कए सूचित कए देलथिन आ अपने भूमिगत भए गेलाह।

पेत दलक नेता रातिक बारह बजे यमराजक पतीसँ भेट करए गेलाह। दोसर-तेसर ओकरठाम ्यो नहि छल। सूटिकेशसँ नोटि सभ गडमी ककाकि धराधर टिबुलपर राखि देलथिन।

“ई थिक पुतोहुक मुँह देखाइ।”

फेर गप्प-सप्प आगा बढल कहए लगलथिन-

“राजनीतिक हाल-चाल तँ अहाके बूझले अछि। व्यसाच दल ओ भूतनाथ दलक नेता सभ हमर पक्क यम पक्षाक्ष सभके फोर

रहल छथि। अहा यमराजके हमर सिफारिश कए हमरा न्याय दिआउ।"

यमराजक धममपतीजीके तीनू लोक सुझि रहल छलनि, मुदा तैयो बजलीह-

"अशिथ कहबकि। अहासँ बेसी योग्य, कमठ ओ इमानदार के भए सकैत अछि। पधानक पद तँ अहीके भेिबाक चाही।"

पेत नेता सहरमओकिठामसँ िबदा भेलाह। मुदा ओ समस्याक अन्त निह छल। आिखर मास िदनक बादे सही, यम पिरकिध सभाक सामना तँ करैक छलिन। ते कमसँ कम पचासि आओर यम यम पिरकिध के अपनामे िमलायब जररी छलिन।

राता-राती ओ अपन िवशासपात पेत नेताक सिकिक ओकिठाम पहुँचलाह। ओमहर िवपसाच दल ओ भूतनाथ दलक लोक सभ सेहो बैसल निह छलाह।

राित भिर हुडदंग होइत रहल। असलमे बीस-पच्चीसि यम पिरकिध कै गोिसँ िका लए लेने छलाह। तीनू नेता सोचिथ जे ओ सभ हमरा संग छिथ मुदा असलमे ि सभ ककरो संग निह रहिथ। ओ सभ चुनािमे खचमभेल अपन पूँजी ऊपर करबाक हेतु अपिसयात छलाह। मुदा यमराज सेहो आब घिरायल छलाह आ यम पिरकिध लोकिनके साफ कहलिखन-

"जँ अहा लोकिन सपष िसथित निह उत्पन करब तँ हम यमलोक पिरकिध सभाके भंग करबा देब।"

ई बात सुिन निका यम पिरकिध सभहक मनमे हडबडी मिच गेल। ओ सभ गोि पेत दलके अपन समथमन देबाक िनणमय पमुख महोदयके अिगत करा देलिखन।

पात:काल पेत दलक नेता मंगनूके पधान पदक हेतु सपथ

कराओल गेल।

पात:काल सपथ गहण समारोह पारम्भ भेल। मनोनीत पधानजी अपन जेबीमे सँ एकिा कचि कककाक्ल कए अपन पी.ए.के देलक्खन। पी.ए. साहेब ओक्ह कागजके पमुखक आप्त सक्चिके दए देलक्खन।

ओमहर यम पक्तकक्ध लोकक्त मॉत्ती पद पाक्तक सॉभाग्निसँ अपक्सयात छलाह। क्कछुए कालमे घोरणा पारम्भ भेल। नि मॉत्तीमण्मलमे तीस गोि कैबीनेि, बीसि रा् यमॉत्ती ओ बीसि उपमॉत्तीक नामक घोरणा कएल गेल। एिम्-पकारेण यम पक्तकक्ध सभा क एक क्ताहाइ सदस्य मॉत्ती बक्त रहल छलाह। शेर सदस्यमे सँ सतापक्क समथक्क यम पक्तकक्धके कोनो-ने-कोने पद अिश्य देबाक स्पष आभास भेवि गेल छलक्त। पमुख क्तकेतन खचाखच भरल छल। सपथ गहण समाप्त होमएपर छल क्क सतापक्क एकिा यम पक्तकक्ध गरक्ज उठला-

“मॉत्ती पदक हेतु चयनमे पक्पात कएल गेल अक्छ! आक्द-आक्द...।” पधानजी मुडी उठेलाह आ इसारासँ क्कछु कहलक्खन।

पधान विकुब्ध यम पक्तकक्ध सभक गुप्त बैसार कए रहल छलाह। राक्तमे बारह बजे बैसार शुर भेल से पात: छह बजेमे सम्पन्न भेल। बैसारमे पचासिा यम पक्तकक्ध छलाह जे कहैत गेलाह जे जौ अहा अपन बात नक्ह राखब तँ हमहूँ सभ अपन बात बदलबाक हेतु मजबूर भए जाएब।

हाक्र कए पधानजी ओक्हमे सँ पन्रह गोिके विक्भन कैक्बनेि मॉत्तीक दजा सॉगे अपन-अपन क्जलाक पशासक्तक मुक्खया सेहो बनाओल गेल। सभा विसक्जत भेल।

ओमहर क्वसाच दल आ भूतनाथ दलक नेता पेत दलक नेताके पधान पदक सपथ केर विरोधमे सॉपूणम यमलोकमे हडताल कए

देलक्हि। यमलोकमे कानून/व्यवस्थाक गम्भीर समस्या उत्पन्न भए गेल। असलमे दूनू नेताके प्रधान पद छुटि जयबाक आक्रोश तँ छलन्हिहे। सभसँ बेसी कष्टक गप्प छल जे हुनका लोकन्हिके गम्भीर आर्थिक संकटसँ सामना करए पड़ल छलन्हि। यमलोकक पचासो यम पदाधिकारी तीनू नेतासँ यथेष्ट पाइ टिका लेने छलाह। प्रधानके अपन कुर्सी बचायब पराभव भए रहल छलन्हि। प्रमुखक खिलाफ दूनू विरोधी दल यमलोक भरिमे गम्भीर हड़ताल कए देने छलैक। व्यवस्था सम्हरने नहि सम्हरि रहल छलैक। अन्ततोगत्वा प्रधानजी विरोधी दलक नेता सभसँ गोपनीय बैसार करबाक निर्णय केलन्हि।

दोसर दिन विरोधी नेतासभ एक-एक कए प्रधानजीसँ फराक-फराक भेंट करए लगलाह। पाचटा छोट-मोट नेताके शान्त केलन्हि। मुदा व्यासाच दल ओ भूतनाथ दलक नेता किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छलाह।

अन्ततोगत्वा प्रधानजी व्यासाच दलक नेताके विपक्षक नेता बनएबाक घोषणा केलन्हि। हुनको कैबिनेट मंत्रीक दर्जा देल गेल। संगहि भूतनाथ दलक नेताके यम पदाधिकारी सभा क उप-सभापति बनएबाक निर्णय कएल गेल। दूनू नेताके पाँच-पाच करोड़ टाका अपन-अपन जिलाक विकासक नामपर खर्च करबाक अधिकार देल गेल।

एहि-प्रकारेण मंत्री मण्डलक कृयाकलाप प्रारम्भ भेल। प्रमुख महोदय सहित यम पदाधिकारी लोकनिके हर्षित आबि गेल। यमलोकमे यम पदाधिकारी सभा क अधिवेशन प्रारम्भ भेल। कतेको नीक गोटि एहि बेरक अधिवेशनमे देखबामे आबि रहल छल। सदस्य सभके सपथ दिआओल गेल आ तकर बाद प्रमुख महोदयक भाषण भेल। यमलोकक अवाला बखरेक बजट केर प्रस्ताव प्रस्तुत कएल गेल। एतबा कार्यक्रम भेल छल कि विपक्षी नेता सभ विमानमंत्री मण्डलमे अपन अविश्वास

पस्तावि पस्तुत केलक। यम पक्तक्सव्य सभामे जबरदस्त हॉगामा होमए लागल। हॉगामा क्यंत्तणसँ बाहर भए गेल आ अध्यक्कके यम पक्तक्सव्य सभाक कायमीही स्थवात कए देबए पडल।

ओमहर वि पिक्क नेता अपन चेला-चाटिक सॉ यम सभा अध्यक्क क्णायक वि रि द यम पक्तक्सव्य सभासँ कि्गमन कए देल।

यमलोकक राजनीक्तक क्स्थक्त कहुना ठहक्ये ने रहल छल। पधानजी परेशान छलाह। पक्तपक्क नेता सभ यमलोकमे हडतालक आहान कए देने छलाह। मुदा पधानजी कोनो कीमतपर कुसी छोडबाक हेतु तैयार नक्ह छलाह। दोसर क्दन यम पक्तक्सव्य सभा क सत फेर पारम्भ भेल आ सता पक ओ पक्तपक्क नेता एवि् सदस्य लोकक्स हॉगामा करए पर अडल छलाह। पधानजी जतबोके मॉत्री बना सकलाह ततबो लोक गडबडी नक्ह करताह तकर कोनो ठेकान नक्ह छल। शेर लोकक्सक कहब मोसक्कल।

ओक्ह क्दन सेहो यम पक्तक्सव्य सभा क बैसार स्थवात भए गेल। एवि्-पकारेण पधानजी पाच क्दन काटि लेलाह। ताधक्र अनेको उदोगसँ मॉत्रीमण्मलक गठनमे जे आवक्ष्यक दबाब पडलक्से आपस भए गेल छलक। वि पिक्क सदस्य सभ यमराजके विजापन-पर-विजापन दैत छलाह जे यम पक्तक्सव्य सभा क अक्धिशन शीघ बजाओल जाए। अन्ततोगति यमराज पधानजीके बजा कए साफ कहलक्खन जे अहा सात क्दनक भीतर पक्तक्सव्य सभामे अपन बहुमत क्सद कर अन्यथा अहाक कुसी चक्ल जाएत।

पधानजी अपक्सयात छलाह। नकि यम पक्तक्सव्य-क गुकि कोनो भरोस नक्ह छलक। मुदा झख माक्र कए यम पक्तक्सव्य सभामे विशास पस्तावि रखलाह। क्णय भेल जे काक्ल एक्हपर मतदान होएत। वि पिक्क सदस्य सभ हरसँ थपडी पीटि लगलाह।

राक्त भक्र ओ यम पक्तक्सव्य सुतल नक्ह। पात:काल दस बजे

यम पक्तक्वध सभा क बैसार पारम्भ भेल। यम सभा अध्यक महोदय आशनपर विराजमान भेलाह। मत विभाजनक घन्टी बाजल। गुप्त मतदानक व्यस्थिा छल। आधासँ अधिक सदस्य पधानक विरोधमे मतदान कए देलाह। यम सभा अध्यक एकहि कणयमक घोरणा कए देल। पधान दल बदलक गम्भीर क्शाकार भए गेल छलाह। मुदा ई सभ कोना भेल से नहि कहल जा सकैत अछि।

पधानजी अपन त्याग पत यमराजके दए देलखिन। मास दिनक भीतर एक बेर फेर नि मंत्रीमण्मलक गठनक तैयारी जोर-सोरसँ पारम्भ भेल। मुदा आब यम पक्तक्वध सभ सेहो क्वक्तांत्त छलाह। पक्तक्वध सभा भंग होयबाक समाचार जोर-सोरसँ चार कात पसरि गेल छल। यमराज सेहो सख्त रवैया अपनौने छलाह। ते हेतु सभक मत भए गेल छलैक जे एकिा ठोस मंत्रीमण्मल बनाओल जाए।

भूतनाथ ओ व्यासाच दलक नेता आपसमे बन्द कोठरीमे बैसार केलाह। तय ई भेल जे व्यासाच दलक नेता पधान बनताह। मंत्रीमण्मलमे दूि उपपधान हेताह। एकिा उपपधान भूतनाथ दलक हेताह आ दोसर नि यम पक्तक्वध गुिकि नेता...। येन-केन पकारेण नि मंत्रीमण्मलक गठन भेल। यम पक्तक्वध लोकनि आशस्त भेलाह जे जन सेिकि आब नीक अिसिर हुनका सभहक हाथसँ नहि सरकतनि। यम पक्तक्वध सभामे एकहि मंत्री मण्मलके विशास सेहो पाप्त भए गेलैक। किछु दिन दोबारा यमलोकमे जनतांत्त बहाल भेल।

लघुकथा- नकमक सॉसद

“सुनैत जाइ जाउ सभासद सभ। आजुक कारमीही पारम्भ हेबासँ पूमि सभाक रपि पढल जाएत। तदुपरान्त नि सदस्यक उदोरणा होएत आ फेर आन-आन कायमीही। नगिव्ठत सदनक अध्यक्ताक भार नकमक विरष तम सदस्य मनमोहन के देल जाइत अव्छ।”

ई धकि होइत अव्छ। जनता व्दक्ससँ आिज आएल-

“अध्यक्जी अपन पकरचय देव्थ।”

मुदा ताबते सॉसदक सक्चि उठलाह-

“बेस तँ सुक क्लअ। ई अत्यन्त क्षष ािन, नकमक ियोिद आ विरष तम सहयोगी व्थकाह। व्हनका मत्यलोकमे फासीक सजाए भेलि छलक्। आ ओतए ई व्सदहस्त खूनी छलाह। इलाका भकरमे व्हनक यश पसरल छल। ओना, व्हनकर खाता सभ व्दन लाले रहलक्ह अव्छ, मुदा एतय अएलाक बादो ि कतेको कीव्तमान स्थावपत करैत रहलाह जाव्हसँ यमराजक विशेर आजासँ नकमलोकमे रहबाक अविध बढैत रहलक्ह। व्हनक दक्ताक सभसँ पैघ पमाण तँ इएह व्थक जे एहू अिस्थामे नकमलोकक सभिा सामान भयादोहन कए देल आ ककरो एकर भनकी तक नव्ह लगलैक। सौभाग्यिश कही ि जे कही, ि सभ सामान तस्करीक छलैक आ मृत्युलोकमे ्यो पाणी अपन पूिमाक पोनक्ताक हेतु परमात्माके घूस सिरिप गाया जा कए दान केने छल। चूँकी ई सभ सामन तस्करीक छलैक, ते एकरा नकमलोकसँ गुजरए पडलैक। ि पारगमनमे छलाह व्क नकमलोकक चुगीक व्सपाहीके मेन्से् सक गोली खुआ क्शामे बुत कए मनमोहनजी सभिा सामन व्लैक कए देल। मुदा धमराजक खुवपया विभाग बड चौकस अव्छ आ मनमोहनक एव्ह सुकृव्तक पुरस्कार भेलिक्। पाच बखमअक्तव् त नकमबाससँ।”

“बाह-बाह..! एकदम सही आदमीके अध्यक्ष बनाओल गेल।”

“जय हो !जय हो!”

आबाज आएल चार कातसँ।

ई कहि य नरकक गर्भमा बढ़ओताह। थपडीक गडगडाहटिक बीचमे अध्यक्ष महोदय आसन ग्रहण कए उद्घोरणा कएल-

“मान्यवरि नरकवासी लोकनि, अहा सभ जे हमर सम्मान कएल अछि से युगानुकूल अछि। कलियुगमे पापक पुरस्कार धडाकसँ भेटि जाइत छैक। तस्करी कर कोठा पीटि, घूस लिय, इन्जीनीयर जमाए कर । त्याग, तपस्या ओ चरित्रक महतक जमाना चल गेलैक। आब तँ लूटि लाउ, कुटि खाउ। एहि बातमे अहा सभ गोटि पारंगत छथिकहुँ। ओना, मृत्युलोकक नियम सभ किछु आओर छथिक। ओतए कानूनक राज छथिक, मुदा नामे के। से जँ सते रहैत तँ एहिठाम नरकमे कतेको भूतपूर्वमहामहिम नहि पडल रहितथि। अहा लोकनिक सामने जे मंचपर छथि से मृत्युलोकमे बेस सम्मानित जन नेता रहि चूकल छथि। जय-जयकार होइत छलनि हिनकर। मुदा काजक हिसाबे नरकमे तृतीय श्रेणी भेटि छनि। हुनका नरकक गेटिक रखबारी करबाक भाड भेटलनि। हमर कहब जे जहन मृत्युलोकमे सभ किछु दनादन चलिए रहल छैक, तँ नरकमलोक किएथि लेल पाछा रहए। एही बातके ध्यानमे राखि कए हम नरकमलोकमे पुन: भयादोहन कएल आ एकर प्रकरणामो अनुकूले भेल।”

चार दिससँ थपडी पडए लागल। तदुपरान्त सचिव महोदय पूर्विसभाक कार्यविधि सदनक समक्ष लेल प्रस्तुत करए लगलाह-

“मान्यवरि, पूर्विसभाक प्रमुख-प्रमुख कार्यविधि प्रस्तुत अछि-१. नरकक बढैत जनसंख्या वृद्धिके देखैत एहिठाम यथाशीघ्र परिवार नियोजन पखवारा मनायल जाए। वस्तुत: मत्यलोकमे अपराधक

सॉख्याक भारी वृद्धिक कारणे नरकक सॉतुलन गडबडायल अछि आ एहिसँ नरकक विशेष किसी लोकवासीके नाना प्रकारक भयॉकर कष्टक सामना करए पड़ि रहल छन्हि। अस्तु, ई प्रस्ताव पारित भेल जे सामान्य कोटिक पापीके नरकसँ फराक एकर सीमानसँ बाहरे उपनगरी बनाओल जाए।"

(हरमधर्मिक बीचमे लोक प्रस्तावकि सहमतिमे थपडी पीटि छथि।)

"नरकक चाहरदिवारी छोट अछि जाहि कारणसँ स्वर्गलोकसँ कतेको लोकके असानीसँ एहिमे फना देल जाइत अछि। हमरा लोकनि एहि तरहक प्रकृयाक घोर विरोध कए रहल छी। सॉगहि ई प्रस्ताव पारित कएल जाइत अछि जे नरकसँ ओतबे सॉख्यामे लोकके स्वर्ग जेबाक प्रावधान कएल जाए।"

आवाज होइत अछि-

"हमरा लोकनि स्वर्गमहरवाज नहि जाएब। हमरा सभके नरके नीक लगैत अछि। एहिठाम पाकिस्मारीक खूब गुॅजाइश छैक। स्वर्गमे तँ ककरो पाकिर्टि नहि छैक। ई प्रस्ताव मॉजूर नहि अछि।"

सचिव महोदय एकाएक प्रस्ताव सभ पढैत गेलाह आ उपस्थित नरकवासीगण बेरा-बेरी थपडी पीटि गेलाह। एतबहिमे नरकक घन्टी सभ घनघनाय लागल। पता लगलैक जे नरकमे एकटा महापापीक प्रवेश भेल अछि। ओकरा यमदूत नाना प्रकारक यातना दए रहल छलैक। मर्त्यलोकमे ओ गम्भीर अपराधी छल। मुदा ओकरा लेल धक्का-सन। नरकलोकमे एहन यातनाक मध्यो ओ कनखी मारैत हँसैत आगू बढैत सभहक अभिनन्दन करैत चलल रहल छल। ताबतमे नरकवासीक कछु उचका ओकरा गोलिअओलक आ ओकरा जेबीमे ओकर सॉतका किरा दान कएल गेल जे कछु कैचा आ वस्तु छलैक से छीनि लेलक। ओ कनीके आगा बढल की ओकरा अपन कका नजरिमे

अएलैक। ओकरा बड आ यिमलगलैक। ओकर कका तँ बेस भ् त छलैक। तीन फटा चानन करैत छलैक। भोर-साझ स्नान करैत छलैक। ओ घनि-घनि भक्त पूजा करैत रहैत छलैक। अरे! ओकर ककाका पाछा तँ एकि ि मिमलागल छलैक।

“मत्यलोकमे ढोग करबामे कुशल रॅजनजी अपना जीनि कालमे कतेको मकैती ि हत्या काण्डमे सक्रमक्लत रहला।”- भाक्ताज गुम्म।

“बाह रे कका! ओक्हठाम तँ बेस हि बनौने छलाह।”

सॅंसदक अक्धिशिन जोरपर छलैक। नि-नि सदस्यक पक्रचय कराओल जाइत छलैक। पण्मालक अगभागमे नि सदस्य सभके राखल गेल छल।

“ई क्थकाह ‘बजमोहन’। भूतपूि मिमुख्य मॅत्री। ई अपन शासन कालमे फुक्स बजबाक कीक्तमान बनौलक्थ। कक्हओ बैमानी करबासँ नक्ह क्हचकला। मुदा पक्हरन-ओढन बेस सच्छि साक्त्ति कि। क्हनका नकमे स्थायी स्थान भेलिक्त अक्छ। ओना सामान्य कोवि कि पापीके दोसर ओ तेसर सालपर कागज-पतक समीक्ष होइत छैक। मामलाके फेरसँ जाच-पडताल होइत छैक, मुदा क्हनकर मामलामे यमराज एकतरफा क्तणय सुना देल जे ई नकक्क स्थायी सदस्य हेताह आ क्हनकर कागज-पतके गोपनीय कए देल जाए ताक्क क्चतगुप्तक सहायक लोकक्त ओक्हमे कोनो पकारक हेरा-फेरी नक्ह कए सकक्थ।”

‘क्तालक ’क पार आएल। ि ग ि वि गेल छलक्त। यमराजक पूत सभ लाक्द कए नकमपुरी आक्त रहल छल क्क अकस्मात ओकर ि ग नक्तमे घुक्त रहल स्काइलैि कि ि किडीसँ ि किडा गेलैक जाक्हसँ भयॅक्र दुघमिना भेल ओ क्तालक पेतक ि ग कवि गेलक्त। ओना,क्तालक मृत्युलोकमे मुक्खया छलाह। ब्लौक मेबलपमेनि कमीिि क कायक्कारणीक सदस्य छलाह ओ गाममे बेस धाख छलक्त। गाममे

राजनीक्त कए इलाकाक लोकके अपना क्दक्स कए अपन सहोदर भाएके राक्तये-राक्त क्तपता कए देलक्त। ओना, बाहरमे बेस क्बालाप कएलक्त। छाती क्पा लिक्त। थानामे क्रपोमि दजम करेलक्त। इत्याक्द-इत्याक्द। मुदा सयॅोग जे ओक्ह समयमे नकमे समयोपक्र काज चक्ल रहल छलैक आ भारतक क्वभागक क्करानी काज कए रहल छलाह। नकक्लोकसँ ि सभ घिनाक दूरदशमनपर देख रहल छलाह। नकक्क कागज-पतमे सभ क्लखल छल। यमराजक कोमिे पहुँक्च कए ि अकि रक्ह गेलाह।

“के बाहर केलक ई सभ..!”

सोचैत छलाह। एमि् पकारेण एकसँ एक नागन्तुक सदस्यक पक्रचय होइत गेल।

एतबक्हमे भयॅक्रर हल्ला सुनबामे आएल। दशमक दीघासँ कूडा फेकल जा रहल छल। ्यो गोि जोर-जोरसँ उदोर कए रहल छल-

“भाई लोकक्त! यमराजक अत्याचारसँ हमरा लोकक्त उक्ब गेल छी। नकक्क व्यक्स्था साफ गडबडा गेल अक्छ। हमरा लोकक्त २५ बखमसँ क्बना सुनबाइ-के हाजतमे पडल छी।”

एतबक्हमे दसाि बेस नमगर पोरगर जािन सभ हाथमे हथकडी लेने पक्श कएलक। हाथमे मिँा छलैक ओ आँक्ख लाल कए रहल छल।

सॅासदमे क्वरोधी पक्क नेता गडक्ज उठला-

“ई सॅासदक घोर अपमान क्थक। सॅासदक अध्यक्क अनुमक्तक क्बना एक्हमे पुक्लसक एक्ह पकारक पक्श क्नॅदनीय क्थक।”

चार क्दससँ सदस्य सभ फानय लगलाह। यमराजक पक्तक्क्ष िीक पकडने हुनका अगत-अगत कए रहल छल। भयॅक्रर कोलाहलसँ जखन कक्छु शुतक्य नक्ह रक्ह गेल तँ अध्यक महोदय हाक्र कए सदनक

कायमीही, ओकर दिनक हेतु स्थवात कए देल। सांसदक किछु भागठ सदस्य भीडमे मगमगा कए खसि पड़ल रहल छलाह। धकम-धुकीमे किछु नागड सदस्यक दोसरो िग आहत भेल जा रहल छलाह। बडी मोसकिलसँ िकि दिन नकमीसी अपन-अपन मेरा आपस पहुँचलाह।

लघुकथा- जीबी तँ की की ने देखी !

लोक की की ने देखलक। मुदा दू-चािर बखर्सँ जे सभ गाममे भए रहल छल से एकदम अपत्याशित छलैक। नि-नि गुलॉजर कात्य उठैत रहैक।

रबि दिन हाि लगल रहैक। सभ पुरर हाि करए गेल रहए। अरण बाबू सपिरिार गाम आएल छलाह। हुनकर भाए मोहन बाबू बेस अगरिजत छलाह। मैिट्क उतीणमकेने छलाह। ओना, खेत-पथार बहुत तँ निह रहिन मुदा गुजर होयबामे कोनो दिकत निह होइक। गाम घरक झगडा फिडछाबएमे ओिस्ताद छलाह मुदा अपना घरक झगडा निह फिडछा पबैत छलाह। घरिाली बडम तेज छलिखन। गोर-नार दप-दप। बी.ए. केने छलिखन। िपता गरीब मुदा िकिी छलिखन। हुनकर एक मात कन्या छलिखन शीला, िजनक िबआह मोहन बाबूसँ भेल छलिन। मुदा िबआहक बाद हुनका लोकिनक आन्तिरक मतभेद बढले चल जाइत छलिन। एिह बातसँ शीला बड दुखी ओ उदास रहैत छलीह।

अरण बाबू बहुत दिनक बाद आएल छलाह। दूनू भाए आपसमे गिप-सिप करैत छलाह िक ् यो स्तीगण िर् सापर आएल आ ओकरा सँग दोसर स्तीगण घरसँ बहराएल आ िर् सापर बैस चुिपे चिल गेलिथ। िकछु कालक बाद मोहन बाबू आँगन गेलाह तँ घरक िकॉजीर बन्द छल। आँगन सुन। कतहुँ ् यो निह। मोहन बाबू गुम्म। ने हुनका आगा सुझिन आ ने पाछा। की करी, की निह करी िकछु फुराइते ने छलिन। कमशः ई गिप सौसे गाम पसिर गेल।

ई घिना कोनो नि निह छल। एक मास पिहने एकिा एहने घिना भेल जे पूरा इलाकाके झकझोिड देलक। पूरबिरया गामिाली बड सािित्क छली। दुरागमनसँ पिहने िबधबा भए गेल छलीह।

तकहुआसँ आइ धरि सात बखम बीति गेल। मुदा कतहुँ हुनक चचा नहि भेल। कातिक पात: चारिये बजे उठि जाइत छली। गामक सभ लोक सूतले रहए कि अन्हरिएमे नहा-सोना कए पूजा-पाठ करए लगैत छलीह। सम्पूर्णमशरीर तेजमय। मुदा किछु दिनसँ ददमददकि बसकाइत करैत छलीह। लोकके होइक जे पेमि मे अलसर भए गेलनि अछि। लाजे ओ किछु बजथिन नहि। अन्ततोगति पढुआ काका नहि मानलखिन। हुनका जबरदस्ती अस्पताल लए गेलखिन। मा् रि अस्पतालमे भती कए देलकनि। ओकरा भती करा कए पढुआ काका किछु पैसा-कौडी जोगार करए गाम आपस अएलाह। पात:काल अस्पताल पहुँचला तँ रोगीक कतहुँ पते नहि। पता नहि रोगी केतए चल गेलीह। सौसे इलाकामे एकहि बातक गदमपक्ड गेल।

ओना तँ गाम-घरक लोक बेस नेम-मिबला। मुदा बेसीलोकक मोन बसआह। ्यो ककरोसँ कम नहि मुदा भीतरे-भीतर सभके घून पकडने। मुदा इलाकामे एके बाहावड। स्तीगण सभ घोघ उठाबए लेल बेहाल। बेि सभक वपताक कुॅजी छिनए लेल बेहाल। पुतोहु सभ सासुक गटा पकडए लेल बेहाल। घरे-घरे वमनक हाबा से जोरगर बहल अछि जे बयन परसैत-परसैत सभ परेशान। घरे-घर कै-कै गोि चूल। भए गेलैक अछि।

खैर ! ई तँ जे भेलैकसे भेलैक। मुदा सभसँ आियम ओहि दिन भेल जहन पुररोतम बाबूक घरिली हनहनायल थाना पहुँचि गेलैक। ओकरा देखए लेल चौगामका हजारो लोक जमा भए गेल। करमान लागल लोक आ तैयो दनदनाइत दरोगाजीक ऑफिसमे पिश कए गेल। दरोगाजी पुलिसके आदेश देलखिनजे भीडके भगा दौक आ अपने ओहि कन्याक इजहार लेबए लगलाह। सँए-बहुमे गम्भीर मतभेद भए गेल छलैक। घरिली ककको रौ सहए िली नहि छलैक। बाते-बातमे दूनू व्यवितमे मार -पीि भए गेलैक। घरिली थानामे आबि

कए एफआइआर कए देलकैक- “हमारा जान का खतरा है।”

तकर बाद ओ व्र्सा पकव्ड मधुबनी चल गेल्ल। बहुत व्दनक बाद सुनल गेल जे ओ कतहुँ आनठाम व्बआह कए लेलक अव्छ।

गाममे ओझा-गुनी आ भगैतक चचा अखनो जोर पकडने छल। फुदरक घरिलीके हाथक चािी चलैत छलैक आ कनेक-मनेक मॉत्त-तॉत्त सेहो ओ जनैत छल। मुदा एव्ह बेर अषमीक व्दन बेस ताल भए गेलैक। ओकर घरिली साफे बकए लगलैक। खुव्ल कए देिी खेलाए लगलैक। गाम-गामक भगता आएल। मुदा ककरो बुते देिी नव्ह पकडमे अएलैक। गाममे ओव्ह व्दन पछिव्र गामक ओझाजी आएल छलाह। हुनको त्तॉ-मॉत्त बेस जोरगर छलव्न। दौडल-दौडल लोक हुनका बजौने आएल। ओझाजी अएलाह। अनुषान भव्र राव्त भेलैक। देिी बन्हेबे नव्ह करैक। अन्ततोगति भोरकबा राव्तमे आव्ब कए ओ देिी पकडमे अएलैक। गिगि बाजए लगलैक-

“एक मास धव्र अनुषान कर। ई कर, ओ कर, नव्ह तँ सौसे गामके पीस कए धए देबौक।” इत्याव्द-इत्याव्द...।

औ बाबू! आब तँ सौसे गौआ ओझाजीक अनुनय-विनय करए लागल। ओझाजी अपन भाि बढबए लगलाह-

“हमरा तँ ओतए जेबाक अव्छ। ई करबाक अव्छ, ओ करबाक अव्छ। हम परसू जेबे करब। एको व्दन नव्ह रव्क सकैत छी।”

बडम मोसव्कलसँ ओ रकलाह। व्तत्य साझसँ देिीक अनुषान घरमे शुर होइक आ भोर धव्र चलैत रहैक। ओव्ह अनुषानक दौरान ओतए ककरो आएब मनाही छलैक। देिी रव्ह-रव्ह कए गरजै-

“सभके देखबौ। एक-एकके देखबौ..!”

फूहर बाबू बाहर दरबाजापर सभ सुनैत रहव्थ आ देिीक आराधना करैत-करैत औंघा जाव्थ। ओमहर ओझाजी अनुषानमे लीन।

अनुष्ठानक अक्षतम दिन छल। निःशब्द राति। ओझाजी आ फूहरक घरवाली अनुष्ठानमे लीन। सभ ्यो औंघाइत छल। एही समयमे दूनू देवी-देवता एकाएक गाएब। गामसँ पूब दिस सडक छलैक। से पकडने-पकडने ने जानि कतए चल गेल। भोर भेने गाममे फेर एकटा गुलजार छुटि गेल।

गाममे आब की की ने अछि। इंजीनियर, पोफेसर आ बीए-एमए केर तँ गप्पे जाए दिअ। गामक लोक बेस विवियाह। एकदम नियमसँ रहब आ नियमसँ जीब। भोरे उठि कए सुतबाक काल धरि मंत्रोच्चार करैत रहताह। गरीबक घर कोनो अधलाह काज भेल नहि कि ओकरा चटे बारि देताह। मुदा धनिकक लेल सातटा खूनो माफ।

पोफेसर साहेबके घरवालीसँ नहि पटलनि। तलाकक मोकदमा भए गेल। घरक लोकमे सँ ्यो कनियाक पक्षधर नहि भेलैक। तलाक पास भए गेलैक। पोफेसर साहेब धराक दए दोसर बिआह केलाह। ओहिसँ बच्चो भेलनि ओ ओहि बच्चाके विआहो भए गेलैक।

सोचियौक समय कतए-सँ-कतए पहुँचि गेल। जीबी तँ की की ने देखी !

लघुकथा - तुरारपात

सभागाछीसँ बरक क्सदान्त क्लखाकए आक्न गेल छलैक। सौसे गाम हँगामा भए गेलैक। हीराबाबूक बेिीक क्नआह आइ.ए.एस. अक्धकारीसँ हेतैक। क्पता हो तँ एहन। लाख र पैआ क्तलक लगलैक।

हीराक क्पता शीतल बाबू नामी ठीकेदार छलाह। एक मात सन्तान एक बेिी छलक्खन। कतेको बरखसँ बरक खोजमे क्भरल छलाह मुदा कतहुँ क्कछु कमी तँ कतहुँ क्कछु...। ओक्ह क्दन पुरबाक्र गाम क्दस क्नदा भेल छलाह क्क रस्तामे अकस्मात क्कछु गोिसँ पक्रचय भए गेलक्न। एिह सभ ओक्ह बरक पक्रचय देलकक्न। बर जक्हना देखैत सुनर तक्हना सौम्य सभाि। शीतल बाबू तय कए लेलाह जे जान रहए क्क जाए मुदा ई काज करक अक्छ।

अन्तोगती एक लाख िकापर गप्प गेल। पन्रह जुलाईक क्दन सेहो क्नक्त भेल। बड उत्साहसँ क्नआहक क्क्ध सभ पूणमभेल ओ शीतल बाबूक ओक्हठामसँ चौगामा लोकके हकार देल गेल।

हीरा बाबू नीक्लमाक क्नआहक चचमइलाका भक्रमे पसक्र गेल। जकरे देखू सएह ओक्ह क्नआहक चचमकरैत छल। क्नआहक चाक्र-पाच क्दनक बाद हीरा बाबू आइ.ए.एस.क पक्शक्ण करए चल गेलाह। बेस मौज कलैक ओक्ह पक्शक्णमे। हीरा बाबू गोरनार ओ अतीि सुन्दर छलाह। हुनक व्यक्ततमे आकरम्ण छलक्न। बेस मौजी लोक छलाह एिम् क्चारसँ अत्याधुक्नक। आइ.ए.एस.क पक्शक्ण करैत-करैत ओ दुक्नयासँ पूणमपक्रक्चत भए गेल छलाह। पक्शक्ण समाप्त भेलापर हुनकर पदस्थापन लखनउ भेलक्न।

हीराबाबूक पराकम क्दन दुगुना ओ राक्त चौगुना बक्ढते जा रहल छल। नीक्लमाक पालन-पोरण सॉयत िताििणमे भेल छल। ठीकेदार

साहेब यदि्प सुखी सम्पन्न लोक छलाह, मुदा सभासँ अत्तशाय सर्यत। धिया-पुतापर हुनके संस्कारक छाप छल। नीलिमा जकहना देखैत सुन्दर छलीह, सभाि ओकहना मधुर। बाआहसँ साल भरि पूिि स्नातकक परीक्ष पथम शेणीमे उतीणम केने छलीह। बाआहक बादसँ हुनका अपूमिपशनता छलनि। यदिप ि सभ काज पूमिते करैत छलीह। मुदा मोन सदिखन हुनकेपर िगल रहनि।

ओमहर हीराबाबू भोग-विलासमे नीलिमाके बासरि गेलाह। पयोजने कोन छलनि जे ि नीलिमा हेतु व्यग होइतथि।

नीलिमाक आँखि व्यर पतीक्षसँ असोथकित भए गेल छलनि। एक दिन अपन माएके सँग कए हीराबाबूक मेरापर सियाँ पहुँच गेलीह। मेरापर पहुँचते ओतएसँ एकि बेस सुन्दरिके बाहर जाइत देखि हुनकर माथा ठनकलनि। हीराबाबू ओकरे सँग कोठरीसँ बहराएल छलाह। नीलिमाके देख ि गुम्म पड़ि गेलाह। फेर बजलाह-

“हलो! नीलिमाजी। आउ, आउ। हम तँ अहीक पतीक्ष कए रहल छलहुँ।”

किछु दिन हीराबाबूके नीलिमाक सँग खूब नीक लगलनि। किन्तु मासक धक लवाते हीराबाबूक पुरना आदति सभ पछोड करए लगलनि। किछु दिन नीलिमा चुप्प रहलीह, किन्तु जहन मामला हदसँ बाहर भए गेल तँ ि सोचलीह जे हीराबाबूके बुझाएल जाए।

“अहा एतेक राति धरि कतए रहैत छी?”

“कतहुँ रहैत छी ताहिसँ अहाके मतलब?”

“जर र मतलि अछि! आखिर हम अहाक अदावानी थिकहुँ। अहाक सुख-दुखमे हाथ बाियब हमर हक ओ कतव्य अछि।”

नीलिमा सेहो तामिे आबि गेल छलीह। बाते-बातमे हीराबाबू शराबक नशामे धुत एक चाि चला देलखिन। नीलिमा ओतहि पसरल

ओछाओनपर जा खसलीह। हीरा बाबू दोसर कोठरीमे जाए कदक्त बजैत आराम करए लगलाह। ओक्ह क्दनसँ जे दूनू गोिमे शास्त्राथम शुर आत भेल से अविरल चक्लते रहल। घरक ितािरण कलहसँ नकम भए गेल छल। नीक्लमा हीराबाबूके सुधारक हेतु कृतसॅक्ल्प छलीह ओ हीरा बाबू सेहो अपने रस्तापर चलबाक हेतु अडल रहलाह। क्तरन्तर तनाि ओ कलहमे रहलासँ नीक्लमाक सिास्थ्य खसए लगलक्त। ओ एक मास धक्र लगातार ्िरसँ पीक्डत रहलीह।

नीक्लमाक विमारीक खिि ठीकेदार बाबूक कान धक्र पहुँचल। पक्हने तँ हुनका विशासे नक्ह भेलक्त मुदा जखन हुनका नीक्लमाक पत पाप्त भेलक्त तँ ओ गुम रक्ह गेलाह।

तेजस्िी, चॅचल ओ सतत पशन रहए िाली नीक्लमा पीयर, क्तस्तेज ओ शुष्क पक्ड गेल छलीह। फिक्रयेसँ अपन क्िताके अबैत देक्ख जान-मे-जान आक्ब गेलक्त। ओ दौडलीह आ अपन क्िातासँ स्नेहिशि सवि गेलीह। ठीकेदार साहेबके अशुपात होमए लगलक्त। हीराबाबूक कार सेहो सॅयोगसँ ओक्ह समयमे बाहरसँ आएल एिम् ओहीठाम ठहरल।

बाप-बेिीक एक्ह मधुर क्मलनक कोनो पभाि हीराबाबूपर नक्ह पडल आओर ि ससुरके क्बना गोर लगने अपन क्तािस क्स्थत कायालयमे दनदनाइत चल गेलाह। ठीकेदार साहेब बुजुगम छलाह। हीरा बाबूक रॅा-ढॅा ओ नीक्लमाक क्तस्तेज देहके देक्ख ओ क्स्थक्तके तुरन्त बुक्झ गेलाह। मोनमे भयॅकर कोध होमए लगलक्त। मुदा अपन आिगके बेस मोसक्कलसँ रोकलाह। फेर नीक्लमाक सॅग हुनकर कोठरीमे चक्ल गेलाह।

पता नक्ह, कतेक काल धक्र ठीकेदार साहेब नीक्लमाक सॅग बैसल रहलाह। स्नेह क्तक्शात अपन गप्पसँ हुनका सुखी करैत रहलाह। एक्ह गप्प सभसँ नीक्लमाके पयाप्त मानक्सक विशाम भेलक्त। ि सुक्त

रहलीह। ठीकेदार साहेब पता नहि, की की सोचैत रहलाह?

भोरे आठे बजे ओ ओकरठाम पहुँचल रहथि। दुपहरियाक एक बाजि रहल मुदा हीरा बाबू अखन धरि ससुरक पुछारि नहि केलाह। नीलिमाक सँग भोजन कए ठीकेदार साहेब सरियाँ हीरा बाबूसँ भेँट करए गेलाह। हीरा बाबू अपन आफिसीय कायालयमे फाइलक बीच मूबल छलाह। ठीकेदार साहेब हुनका देखि ठठकि गेलाह। मुदा हीरा बाबू अविचल रहि हुनक तिरस्कार करैत रहलखिन।

नीलिमा आगू बढैत कहलखिन-

“बाबूजी, अएलाह अछि।”

हीरा बाबू ठीकेदार साहेबके इसारा कए बैसबाक आगह कएलकनि। ठीकेदार साहेब पुछलखिन-

“की हाल अछि?”

“ठीके। कोना अएलहुँ?” हीरा बाबू बाजि उठलाह।

“ओहिना शहरमे किछु काज छल। सोचलहुँ अहुँसँ भेँट केनहि चली।”

नीलिमाके अपन पिताक उपेक्षा नहि सहल गेलनि। ओ तमतमाइत अपन पिताके खिंचने ओकरठामसँ उठि गेलीह। हीरा बाबू पुन: फाइलमे मुर्ति गेलाह।

गाडी मधुबनी स्टेशनपर आबि गेल छलैक। नीलिमाके आँखि लागि रहल छलनि। ठीकेदार साहेब उठौलखिन-

“उठू नीसू उठू। मधुबनी आबि गेल।”

नीलिमा थाकल, झमार लउतरलीह। निस्तेज, उत्साहहीन, नीलिमाक एका जौ-जौ गाम दिस बढए लागल, नीलिमाके भूतकालक दृश्य सभ मोन पडए लगलनि। कतेक दुलार छली ओ। गामक

लोक सभ जे ्यो ओमहरसँ गुजरए, नीक्लमा क्दस तक्कते रक्ह जाए। जेहने स् जन तेहने सुन्दक्र। सभिाि ओ गुणक अपूमि समनिय। क्पताक एकलौता सन्त्तान। ठीकेदार साहेब जे क्कछु कमेलाह तकर पेरणा नीक्लमेक छल। कतेक गरीब छलाह िा। नीक्लमा लक्ष्मी बक्न कए आएल छक्ल हुनका ओतए। नीक्लमाक जन्म होइतक्ह ओ बढए लगलाह। मुदा आइ सॉो-सॉा एकापर चलैत-चलैत ओहो गुम छलाह। क्कछु कालमे गाम आक्ब गेल। ठीकेदार साहेब ओ नीक्लमा एकपेक्रया रस्त्तापर अपन घर क्दस बढैत गेलाह। लगैत छलैन जेना हुनकर सभ आशापर तुरारपात भए गेल हो।

लघुकथा- असगुन

गाम-घरमे कतेको पकारक असगुन सभ पक्सद अछ। जेना ्यो यातापर क्वादा हो आ नव्ह्या रस्ता बामासँ दाया कावि क्दए, कर्ि ्यो क्वादा होइत काल पाछासँ िक्क क्दए। बुढबा बाबाके एक्ह सभहक बेस विचार छलक्त। जँ घरक ्यो क्वादा होइत आ कतहु ्यो छीक दैत तँ ओ 'क्वरॉजीि भि:' अशिय कव्हतव्थ। तव्हना आओर-आओर अपशकुन जँ होइतैक तँ ओकर क्नािरण कए क्लतव्थ।

ओक्ह क्दन गाममे हाि लागल रहैक। तीमन-तरकारी सभि हािपर सँ कीनल जाइत छलक्त। ओहुना हाि क्दनक ओ क्नयमसँ ओतए पहुँचैत छलाह।

रविकि क्दन छलैक। हाि जएबाक तैयारी ओ दुइए बजेसँ पारम्भ कए देने छलाह। जहा चाक्र मेग आगा बढैत क्क एक ने एकि अपसगुन भए जाक्त। एिम् पकारेण चाक्र बाव्ज गेल। सूयास्त करीब छल। हाक्र कए ओ बेत घुमबैत क्वादा भेलाह।

कक्तके आगा बढलाह क्क मुनेसरा सामनेमे पव्ड गेलक्त

''पणाम पॉ्मीतजी!'' बाजल मुनेसरा।

''नीके रह''- मुनेसराके आशीिद दैत पक्नतजी आगा बढलाह। मोने-मोन कव्ह नव्ह की की घुनघुना रहल छलाह। मुनेसराके एकेि आँव्ख छलैक। गाममे दाहाक क्दन माक्र भए गेल रहैक। बेस फनैत छल ओ। लाठी लेने फाक्त गेल छल। ताबतमे ्यो ओकरे क्नशाना बना कए एकिा सीसाक बोतल फेकलकै। ओकर सौसे आँव्ख लहु-लुहाम भए गेल रहैक। ओही घिनाक बाद ओ असगुन भए छल। पाय: सएह सभ सोचैत पव्मतजी आगा बढलाह।

हािपर बेस भीड छलैक। तीमन-तरकारीक भरमार छल। मुदा पव्मतजीक आदक्त छलक्त जे कोनो चीज ओ ठोक्क-ठोक्क कए

करतथि। बीच बजारमे सजमनिक दाम मोलबति-मोलबति पहुँचलाह कि चारि गोटिमे एक दिससँ धुक्का मारैक आ चारि गोटि दोसर दिससँ। सामनेसँ दू-तीन गोटि हा-हाँ करैत पण्डितजीक रक्षा करए आबि गेलाह। धक्का-धुक्की खतम भेल तँ पण्डितजी आगा बढलाह। सजमनिक दाम मोलेलनि आ भाउ पटि गेलापर जेबीसँ पैसा निकालए लगलाह कि अबाक रहि गेलाह। जेबी नदारद। पण्डितजी ठोह पारि कए कानए लगलाह। सौसे ई खबरि बिजलौका जकाँ पसरि गेल। पण्डितजी माथा हाथ देने घर आपस अएलाह। तहिआसँ ओ असगुनक मरे छीह कनिे करथि।

पण्डितजीके तीनटा कन्या छलनि। प्रथम कन्याक कन्यादान ठीक भए गेल छलनि। नीक कुल-शीलक बर रहैक। अगहनक पुर्णिमाक बिआह तय भेलनि। बरक हाथ उठएबाक हेतु बिदा होइत छलाह कि कियो तराक दए छीकलक। छीक...छीक...छीक...। हुनकर माथामे ई छीक घुमए लगलनि। पण्डितजीक मिजाज एकाएक गतिहीन भए गेलनि ओ आगा बढए हेतु एकदम तैयार नहि छलाह। सौसे गामक लोक करमान लागल गेल छल। पण्डितजी गुम। किछु बजबे नहि करथि। तेहन शुभ मुहुर्तमे छल जे छीकक चर्चो करब असगुन लगलनि। लोक सभके किछु फुराइक नहि जे आखिर बात की भेल। अखने तँ पण्डितजी पिटपिटिया बजैत छलाह..! गाम भरिक लोक पण्डितजीके घेरि लेलकनि।

"पण्डितजी की भेल?"

मुदा ओ तैयो गुम्म। अन्ततोगत्वा लोक हुनका उठा-पुठा कए मात्रिक ओहिठाम लए गेल। ओतए मात्रि हुनकर अवस्था देखि गम्भीर भए गेलाह आ कहलखिन जे हुनका गम्भीर मानसिक अघात भेलनि अछि। तात्कालिक उपचारक हेतु जहाँ ओ सूई देबए लगलाह कि पण्डितजीके नहि रहि भेलनि ओ गरियबैत ओहिठामसँ गामपर

भगलाह। ताबत भोरक चारि बाजि गेल छल। बरक ओहिठाम जएबाक कार्यक्रम रद भए गेल। ठीके असगुन भए गेलनि, ताहि दिनसँ पण्डितजी असगुनसँ बडम मराबथि। ओहि दिन हुनकर मझिली बेटीक तहिना आँखि बड फरकए लगलनि। पण्डितजी एकदम अपस्याँत भए गेलाह। अबश्य कोनो गडबडी होमए जा रहल अछि।

ओ अपन बेटीके तुरन्त अपना लग बैसा लेलथि कि ताबतेमे एकटा बाएँटा हुनकर बायाँ हाथपर खसल। पण्डितजी ठामहि फानलाह। पैरमे खराम छलनि। दरब् जा बेस ऊँच छलैक। दलानपर ठामहि चितंगा भए गेलाह। बाया पैरक हडमी टुटि गेल छलनि। पण्डितजी बाप-बाप चिचिआए लगलाह। सभ गोटे हुनका लादि कए अस्पताल लए गेल। लाख पयासक बाबजूद ओ हडमी नहि जुटलि। पण्डितजी जन्म भरिक हेतु नागर भए गेलाह। तहिआसँ पण्डितजी नित्य भोरे उठैत देरी भगतिनके गुहारि देथि-

“हे भगतिन! असुगनसँ जान बचायब।”

मुदा भावी पटलि होइत छैक। होइत एिह छैक जे हेबाक रहैत छैक। एकादशीक दिन छलैक। महादेवक दशमा करए जाइत छलाह। झलफल होइत छलैक। ताबतमे एकटा नढिया टिमाकातसँ आएल आ सामने बाटे दायाकात गुजरि गेल। पण्डितजी ठामहि खसलाह।

“हे महादेव! आब अही पाणक रखा कर ।”

कहैत-कहैत पण्डितजी िहोश जका भए गेलाह। बो एकहुँ मेग घुसकए हेतु तैयार नहि छलाह। आ ने घुसकबाक हुनकामे तागति रहि गेल छलनि। पण्डितजीके फेर कहि नहि कहासँ हिम्मत अएलनि। ओ चोटे पाछा घुमलाह। ताहि बीच एक बेर फेर एिह नढिया टियासँ दहिना भेल। पण्डितजी ओहि नढियाके गरियबैत, नागर टिगे दौडैत, खसैत-पडैत घर दिस बढए लगलाह। बीच-बीचमे ओहि नढियाके

कहैत-

“ई सरबा, नञि जीबए देत। एकरा हम की बिगारने छेलिऐक से नञि जानि!”

ताबतेमे मुखियाजी पोखरि दिससँ आपस अबैत छलाह। पुछि बैसलखिन-

“की भेल पण्डितजी?”

“की कहू की भेल। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कममगेल साँगि। सएह परि अछि हमर। एकादशीक दिन छलैक। सोचलहुँ जे महादेकि दर्शन करी। आधा रस्तासँ जहा आगा बढलहुँ कि औ बाबू! ई चण्डाल नञिया रस्ता काटि देलक।”

ओकरासँ पहिने की मुखियाजी किछु बजितथि, पण्डितजी धराम दए खसलाह। मुखियाजी चिकरलाह। अगल-बगलसँ सेहो लोक सभ दौडल। पण्डितजीके उठा-पुठा कए दरबाजापर राखि देलक। लोक सभ पुछलनि-

“की भेल?”

मुदा ओ अपस्यात आकाश दिस तकैत रहि गेलाह।

असगुन, असगुने होइत अछि। ते ने लोक सगुन करैत फिरैत रहैत अछि। पण्डितजी भोर होइतहि पनिभरनीके बजौलखिन आ आदेश देलखिन जे आइसँ नित्य प्रात: काल ओ एक घैल पानि भरि कए दरबाजापर राखि देल करए, जाहिसँ हुनक दिन नीक जेना कटि जाइन। पनिभरनी हुनकर आजाके शिरोधायमकएलक आ नित्य हुनकर सामनेमे बेस बडका घैलमे पानि भरि-भरि राखए लागलि।

एक दिन अन्हरोखे पनिभरनी पानि भरि कए राखि गेल। ओकरा गहुँमक कटिनी करबाक छलैक। पण्डितजी उठि जहा चारि मेग आगा बढलाह कि ओहि घैलसँ किरा चार नाल चित भए खसि पडलाह।

चार कातसँ लोक सभ दौडल। मुदा मक्मतजी कछु नव्ह बजलाह। आब ओ चुप्पे रहबाक सपथ खा लेने छलाह। समय विपरीत भए गेल छलक आ सगुनो असगुन भए गेल छलक।

लघुकथा- गाम

गाममे बहुत गोटि अनक्वन्हार भए गेल छल। क्वया-पुता सभ जे धक्वरया पहीरने घुमैत रहैत छल, से सभ फुर्बि कए जबान भए गेल छल आ बुढ-पुरान लोक कमश: क्वदा भए रहल छलाह। कक्वक कन्तु अनरित पक्वरतिम पकृक्तक क्वयमक पराकमसँ सभ पभावित छल।

लोचन बाबा, क्तला बाबू, बुक्वया काकी सभ एक-एक कए चल गेलाह। बहुत कम पुरना लोक बँक्व गेल छल। मुदा ई गप्प हमरे क्वएक एतेक पक्वडछायल बुझा रहल छल। गाममे बहुत लोक अक्व। सभक समक ई घटिना भेलैक अक्व आ होइत रहलैक अक्व। पाय: समयक अन्तरालक कारण बारह बखक्व अक्विक कारण हमरा बेसी अन्तर बुझा रहल अक्व। छोटि-छोटि घटिना सभ एकटि आकार गहण कए लेने अक्व।

पोखक्वरक भीडपर बैसल हम इएह सभ सोक्व रहल छलहुँ, गामसँ बहुत क्वछु क्वपता भए गेल छल। दुपहर राक्तमे गुलचनमा चौकीदारक जबरदस्त आबाज-

“जगले रहब। यौ ऽऽऽ।”

दुपहक्वरया राक्तमे घरे-घर घुक्व जाइत छल। आ क्वकरैत-

“फल्ला बाबू छी औऽऽऽ।”

भोर कबा उगैत क्वकण्ठ बाबाक परातीक सटि सौसे गामके भोर हेबाक सूचना दैत आ क्वछु कालक बाद बाद झमा झम, झमाझम, टिन-टिन टिनटिन घडी-घण्टि सुनबामे अबैत। मक्वदरपर बाबा भगटिनक आरती कक्वरतक्व। भोरे-भोर सभ क्वठुरैत मक्वदरसँ बाहर होइतक्व।

फेर भोर भेल छल। मुदा १२ बखक्व अन्तराल छल।

हम ओक्वहना ओही पोखरीक भीडपर गेल रही। की भए गेल?

सात बाजि गेल। घडी-घण्टाक सरि नहि, पातीक एकहुटा आखर नहि सुनायल। चौकीदारक कतहुँ कोनो पता नहि। जे पोखरिक हबेलियर कॉचन पानिसँ भरल रहैत छल सएह उजारसन लगैत छल।

इएह सभ सोचि रहल छलहुँ कि बडी जोरसँ हल्ला भेल। जएह-सएह चौक दिस दौग रहल छल। कै गोटासँ पुछलिऐक। ्यो किछु कहबा लेल तैयार नहि छल। ककरा फुरसति छलैक। सभ अफसियात..!

हल्ला जोर पकडने जा रहल छल। ताबे देखबामे आएल जे १५-२० गोटे लाठी-भाला लेने गरजैत आगा बढि रहल छलाह। ओमहरसँ मरर कका अएलाह।

“की भेलैक मरर कका?”

“लडाई भए गेलैक अछि। कै दिनसँ तनातनी छलैक, मुदा आइ फैसला भए कए रहत। ”

“मुदा झगडाक कारण?”- हम पुछलिऐक।

अहा बाबू बाहर रहैत छी। अहा की बुझबैक। अहिठामक हाटा विचित अछि। अनीनमा क बेटा गोधिम बाबूक पौतक काज नहि गछलक। बसकि गोधिम बाबू पुरनका अबाज देलखिन। छौडा अरि गेल। लाठी पकडि लेलक। ताहिपर ओ किछु बजलाह-

“कि छौडा लेने लाठी मारि देलक। ओहि दिनसँ समा बन्हा रहल अछि।”

ओ बाजिए रहल छलाह कि ठाय- ठायक आबाज भेल। कनिके कालमे थानामे तीनटा लाश पडल छल। लोक जहा-तहा भागि रहल छल।

दू-तीन दिन धरि एकरे चचा होइत रहल। गामक बहुत रास जबान सभ भागि गेल। कहा दनि बहुत गोटापर िरन्ट भए गेल

छलैक।

साझ भए गेल छल। गामसँ बहुत रास लोक भावा गेल छल। मक्दरपर एसगर बैसल रही क मरर कका पहुँचलाह।

“की बाबू, कएक गुम-सुम छी?”

“आउ, मरर कका।”

मरर कका बैसलाह। गामक एकि ृदितम लोकमेसँ अशिेर मरर कका ओक्ह गाममे बहुत कछु देखलाह आ कक्ह नक्ह की की आओर देखताह।

“आओर गामक की हाल?”

“गामक की हाल रहत। समय बहुत बदल गेल। आब तँ हमरा लोकक चलबे करी ओहीमे कल्याण।”

“धया-पुता की कए रहल छथ?”

“सभ कमाइ छथ। सबहक पकरिर फराक-फराक छक।”

“अहा ककरा सँग छी?”

“ककरा सँग रहब? हम तँ पेण्सुलम भए गेल छी। एक-एक मासक पार लगैत अछ। जक्हआसँ अहाक काकी सगिमसी भेलीह तक्हआ कघरी कावि रहल छी। आँखमे मोकतआवन्द भए गेल अछ। साझ पकतक्ह अन्हार भए जाइत अछ। फेर गप्प होएत।”

ई बजैत-बजैत ओ उठ गेलाह।

१२ बखमपक्हनक्ह मरर ककाक समय मोन पड रहल छल। गामक पकाक त लोकमेसँ छलाह। सभ बालक पकभाशाली एिम् होनहार। साझे-साझ कतय ओक्ह मक्दरपर कीतन होइत छल आ मरर कका अशिय ओक्हमे रकहतथ।

कक्क काल आओर बैसल रहलहुँ। आठ-दसि अधयिसू

सबहक हल्ला बुझाएल। सडकपर सभ गव्रअबैत आगा बव्ढ रहल छल। सभ तारी पीब्रा कए बुत।

काते-कात गामपर पहुँचलहुँ। मोन थाकल लावा रहल छल। सुक्त रहलहुँ।

भोर भेने पोखव्र व्दव्स जाइत रही। गामक अव्तम छोरपर पाच-साति छोि-छोि खोपडी ओव्हना-क-ओव्हना छल। अपवर्कित्त। कतेक गोि धव्नक भेल, कतेक गरीब भए कए गामसँ बालवि गेल मुदा ि सभ ओव्हना-क-ओव्हना बासक बासन बनेबामे तल्लीन छल। ओकर बच्चा सभ उघारे पडल छल। इएह सभ सोव्च रहल छलहुँ क्क फोकना मोम हमरा देखलक। चीलमक सोि लगा कए खोखैत बाव्ज उठल-

“पव्रणाम माव्लक, कव्हआ अव्लयै?”

“तीन व्दन भए गेलैक। “

आ हम आगा बव्ढ गेलहुँ। पोखव्र व्दव्ससँ आव्ब स्नान-ध्यान कएल। मधुबनी जेबाक छल। कव्नके आगा बढल छलहुँ क्क फूिरक माएक कनबाक आबाज सुनलहुँ। खोपडी तर बैसल काव्न-काव्न क्कछु कव्ह रहल छलीह। हमरा देव्ख सोर पाव्र लेलीह।

“की भेल काकी? क्कएक काव्न रहल छी?”

“की कहूँ, अपना घरक बात बजैत सॉक्रोच होइत अव्छ। तीन साझसँ घरमे क्कछु नव्ह भेल अव्छ। हमरा लोकव्न दूनू गोि फराक छी। माव्लकसँ दसि किा मॉव्लअव्न तँ गरव्ज उठलाह।”

ई कहैत-कहैत ओ ठोह पाव्र कए कानए लगलीह। हमरा नव्ह रव्ह भेल। हुनका पणाम कए आगा बव्ढ गेलहुँ।

हे भगिनि! की भए गेल एव्ह गामके? मनुष्यता जेना भावा गेल। जतै देखू उलि हबा बव्ह रहल छल। व्ं सासँ मधुबनी जाइत

रही। इएह सभ सोचैत-सोचैत कान पकर गेल। क् सा आर.के.कालेजसँ आगा छल। एतबेमे कालक भाए नजकर पडलाह। मुदा िकबाक साहस नक्ह भेल। कक्ह नक्ह की की आओर सुनए पडए। कदन भकर मधुबनीमे रहलहुँ। साझ भए रहल छल। मुदा गाम जयबाक साहस नक्ह भए रहल छल।

दू कदन धकर मधुबकयेमे रक्ह गेलहुँ। साझमे िहलैत काल मक्दर गेल रही। भगतिीक दशमन कएल। घािपर बैसल रही। साझो उतर कदक्स बड नीक घर सभ नजकरमे आका रहल छल। मोन भेल घुमी। आगा बढलहुँ। सुनर-सुनर सुसव्जत घर।

पीच रोम। स्टीि लाइि। छोिी पिना लावा रहल छल। बारह साल पूिि ओक्हठाम खता छल। बाक्ढक समयमे समुर भए जाइत छल ि जगह। चार कातक गामसँ शीमान लोकक्नक जमघि भए गेल छल ओक्हठाम। सॅयोगसँ अपना गामक देबन बाबू नजकरमे अएलाह। घरक दरब् जासँ काकक्ल रहल छलाह। कक्ह उठलाह-

“कक्हआ अएलह?”

कहक्लयक्न-

“चाकर-पाच कदन भेल।”

गप्प आगा बढए लागल। कहलाह-

“की कहैत छह?

आब गाम रहए-जोकर नक्ह रहल। तँए एहीठाम एकिा छोि-छीन घर बना लेलहुँ। कोठरीसँ बडकी भौजी आबाज देलीह-

“ठाढ ककएक छी? अहाक तँ अपन घर अक्छ।”

घरमे पिशि ककरतक्ह छगुन्तामे पक्ड गेलहुँ।सोफासेि - िभी, माइक्रॉा िबुल ..की की नक्ह छल।

गप्प-सप्प होइत रहल। चाह-जलखै सभ भेल।

गप्पक कममे पुछलखिन्ह-

“मरर ककाके एतेक किएक नहि राखि लैत छथिन?”

तर-दए बाजि उठलीह-

“हुनका गाम छुबिते नहि छन्हि! की करी?”

मरर ककाक ज्येष्ठ पुत्र देबन बड प्रतिभाशाली छलाह। मुदा एक युगक अन्तराल माता पुतके धारक दू कातपर राखि देने छल। रातिक आठ बाजि गेल छल। हम हुनका सभसँ बिदा लए पुन: मधुबनीक डेरापर चल गेलहुँ। रस्ता भरि अपन गाम आ काली मन्दिरक आगूक खत्ताामे भेल एक युगक अन्तरालक परिवर्तन मोनमे बेर-बेर अबैत रहल। गामके की भए गेल? हे भगबान! कोन भूत एकरा धए लेलक? लोक एना किएक कए रहल अछि? काली मन्दिरक चभच्चा छोटि पनिया भए गेल। गाम एना किएक रहि गेल। गाम माने की? संघर्ष, शोषण, ईर्ष्या, द्वेष आदि।

छुट्टी समाप्त भए रहल छल। रेलगाडीपर बिदा भेलहुँ। अपन संघर्षस्थली दिस- जन्मठामसँ दूरीक कारण चन्द्रमाक धरातल जकाँ अपन गाम सुनर लागए लगैत अछि।

लघुकथा-फसाद

भोरसँ साझ धरि ओ िशनपर पतीक्षा करैत रहल। जतेक बेर गाडी अबैक ओ सचेष भए जाइत छल। आबए बला लोक सभ किस किकी लगौने रहैत छल। मुदा सभ बेर ओकरा निराशे होमए पडैक। साझमे ओ थाकल-झमारल गाम लौिल तँ देखलक जे पलिनमाक घरिली ओ पलिनाक माएमे मचल छलैक।लगैक जेना गंभीर विािद भए गेलैक अछि। आँगन आएल। मुदा दूनूमे सँ ्यो सुनए लेल तैयार नहि छलैक। मामला बढैत देखि ओ गरजल। मुदा बेकार। दूनू आपसमे एक-दोसरक गडा गावि देबाक कािय कए चूकल छल। रमुआके नहि रहि भेलैक। ओ उठौलक लाठी आ पलिनमा माएके लगलैक साि‍क, साि‍क। पलिनमाक माए गरियबैत भागल।

मामला शान्त भेलैक। आइ तीन साझसँ घरमे ्यो नहि खेने छलैक। पलिनमाक अबाइ छलैक आ ते ओ िशन गेल छल। एमहर पलिनमा घरिली मािलकक आँगनमे काज कए आएल छलैक। अबैत काल मालकिनी किछु देने छलखिन तकरे बिािरा करैत-करैत सासु-पुतोहुमे विािद पसरि गेल छलैक।

साल भरिसँ पलिनमा बाहर छलैक। जहिआसँ गाम छोडलकै तहिआसँ आइ धरि कोनो खोज-खबरि नहि आएल छलैक। गामक बहुत लोक कलान्तरमे भोज करैत छलैक आ ओहिठामसँ सभ मास ्यो ने ्यो अबिते रहैत छलैक। ओकरे सभसँ पलिनमाक समाचार गाममे पहुँचैत रहैक।

पूरबािर िलक कए गोि पछिला मास आएल छलैक आ ओकरा हिया पलिनमा समाद देने रहैक जे आगा मास पुिनमा दिन गाम आएत। मुदा नहि अएलैक। एहि बातक अंदेशा रहैक रमुआके।

ििशनसँ घुरैतकाल ओ बड अछता-पछता रहल छल। एही गुन-धुनमे गाम आएले छल रमुआ कक घरक गरम िताािरणमे आओर गरमा गेल। पलिनमा माएके तामसपर नीक मार पवड गेल छलैक आ ओ मार खा कए पता नवह कतए लापता भए गेवल।

रमुआक कतेको पुस्त ओही गाममे गुजर केने छल। मुदा पलिनमा गामक सीमान नाघ देलकै। पलिनमाक एवह काजसँ मावलक सभ बड अपशन भेल रहैक। मुदा ओ ककरो नवह सुनलक। माए जाए काल बड कनैत रहैक। मुदा की कए सकैत छलैक। पलिनमा कलकता पहुँचते देरी काज शुर कए देलक। आमदनी नीक होइक। मुदा रखबाक लूर नवह रहैक। सॉगी-साथी सभ आगत-भागत कए ओकरासँ सभि पैसा खचमकरा लैक।

एक वदन ओवह मीलमे आन्दोलन भेलैक। मजदूर सभ मावलकक अत्याचारक वखलाफ अबाज उठौलक। ओवह आिजक पलिनमाक मोनपर बेस पवतकृया भेल रहैक। पलिनमा लोकके नारा लगबैत देवख वचकवर उठल-

“नही चलेगी, नही चलेगी, यह बैमानी नही चलेगी।”

पूरा मीलमे तालाबन्दी भए गेलैक। मजदूर सभ मील मावलकक घरक घेरा कए देलक। मीलक मावलक लाख पयास केलक मुदा पलिनमा िससँ मस नवह भेलैक। मीलक गेिपर एक सएसँ अवधक मजदूरक सॉग अनशनपर बैस गेलैक। आन्दोलन तीिर होइत गेलैक। अन्ततोगति पलिनमा वगरफ्तार भए गेल। ओकर सॉगी सभ सेहो जहल गेल। नारा लगैत रहलैक-

“नही चलेगी, नही चलेगी...।”

ई सभ घिना अनायास भए गेल छलैक। पलिनमा ते अपन रोजी-रोिीक कमाइमे लागल छल। मुदा ओकर सोवत कवह नवह

कहएक एकाएक खौल उठलैक।

पलनिमा जहल गेल मुदा जेना एकह घनिासँ ओकर सॅस्कारमे अपत्याक्शात पक्रतिम आक्व गेल छलैक। गामक ाितािरणमे रहैत रहैत ओ मौन सभ पकारक पतारणा ओ अन्याय सहैत रहल। मुदा एकह घनिासँ जेना ओकर अन्तरात्माक ्ािलामुखी फुिव पडल छलैक। ्ािलामुखी जे सॅघरक्क आवासँ अन्यायके जरा देबए चाहैत छल।

जाक्ह क्दन ओकरा जयबाक पोगाम छलैक ओक्ह क्दन ओ पकडल गेल। जहलमे एकान्तमे ओकरा कक्ह नक्ह की की फुराइत रहलैक। रमुआक ि्लि खोपरी आ चार कात गामक माक्लक सभहक बडका-बडका दलान। पक्रम तजीक बडका दलान। दनानक अगािसमे बैसार होइक। साझक साझ गामक सभ पक्तका त क्यव्त सभ अबैत छलाह आ अपन-अपन विचार क्य्त करैत छलाह। लहना-तकादा सेहो ओतक्ह होइत छलैक।

बुधक्दन छलैक गाममे हाि लागल छलैक। पक्रम तजीक ओक्हठाम बैसार भेल। पूरा गामक लोक जमा भेल छल। रमुआ ओतए बुधन बाबूक कक्छु कजम छलक्न। ओही कजक्के सधएबाक हेतु बैसार छलैक। पँच लोकक्न ई फैसला केलक्न जे रमुआ अपन घराडी बुधन बाबूक नामे कए देक्थ आ पलनिमा हुनका ओक्हठाम चरबाही करए। कारण जे घराडीक मुल्यसँ मात मूर सधैत छलैक आ सूदक तरीमे ओ चरािही करत। एक्ह क्णमक सॉ ओक्ह क्दन बैसार खतम भए गेल।

रमुआ आँगन पहुँचले हेताह क्क पलनिमाक माए देहक्रयेपर भेलिक्न आ समाचार पुक्छ गरजए लागक्ल-

“नक्ह जाक्न ई सभ की की करत? गे दाइ !गे दाइ !हमर घराडी एकरा सभ नक्ह देखल जाइत छैक।”

मुदा कक्छु ने चललैक। दोसर क्दन रमुआ बेनीपटी जा कए

अपन घराडी बुधन बाबूक नामे रजिष्टी कए देलखिन। रजिष्टी घरसँ निकलैत हुनका होइ जेना आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेलैक... निकलैत हुनका होइ जेना आँखिक ज्योति बहार कए लेने हो। सगतरि अन्हारे अन्हार।

साझ पडैत-पडैत रमुआ गाम पहुँचल। मुदा एतबेसँ बुधन बाबूक मोन नहि भरलनि। पलनिमाके खबरि देबए लगलखिन जे तोरा हमरा ओतए काज करए पडतौक। हँसि कए कर आ कि कानि कए कर।

पलनिमाक मोनके ई सभ असहज लगलैक ओ दोसर दिन दुपहर रातिमे चुप्पे-चाप गामसँ पडाएल। पलनिमा जहलमे पडल-पडल ई सभ सोचैत रहल मोन कहैक-

“छोड पलनिमा ई रस्ता। कमो खो। की राखल छैक फसादमे। आखिर हमरा लोकनिक कै पुस्त तँ एहिना बीति गेल। सभ अपन चैनसँ जिनगी कलिक। फेर ई आफद किएक।”

दोसर मोन कहैक-

“नहि, नहि लड पलनिमा लड। संघर्षम केनहिसँ परिवर्तन हेतैक। आखिर अपने लेल लोक नहि जीबैत अछि। भविष्यक हेतु भावी पीढीक हेतु आधारशिला तँ तिमाने पीढी तैयार करैत अछि किने।”

इएह सभ सोचैत रहए कि जेलर साहेब आबि गेलखिन आ ओकर चिन्तन कम भऽ गेलैक...।

जेलमे सात दिन बिता चूकल छल पलनिमा। मीलक मालिक मीलमे तालाबंदी कए देलक आ सभ मीलमे काज केनिहार निकाल कर्मचारी सभके छँटनी सेहो कए देलक। ई सभ समाचार पलनिमाके जेलेमे भेटि रहैत छलैक।

ओहि दिन रातुक बारह बाजि रहल छलैक। जेलर पहरेदार फोफ काटि रहल छल। पलनिमा आ ओकर दूटा साथी जेलक

चाहरदीारिरी फाक्त गेल। जेलमे खतराक घर्णी बाजए लागल। मुदा पलनिमा ओ ओकर सॉंगी नदारद। कतहुँ ओकर थाह पता नक्ष चललैक। पलनिमा दौडैत गेल, दौडैत गेल आ बहुत दूर एकिा अजात जगहमे जा कए अचेत खक्स पडल। ओकर दूनू सॉंगी ओकर पछोर देने ओतए पहुँचलैक।

दुपहर छलैक। बारह घनिा लगातार दौडैत रहलाक बाद तीनू गोि असोथक्कत भए गेल छल। पलनिमा अचेत छल आ ओकर दूनूिा सॉंगी गमछीसँ ओकरा हिा करैत छलैक।

सॅघरम़ सॅघरम़ सॅघरम पलनिमा अपढ छल। गरीब छल। मुदा हालतसँ लडए चाहैत छल। ओकर सभसँ बडका अपराध इएह छलैक। गाममे ओकरा सन-सन कतेको मजदूर ओक्ह हालातसँ गुजक्रकए कायक्तसँ सामॅजस्य कए चूकल छल। मुदा ओ नक्ह सक्ह सकल। ते गाम छोडए पडलैक। शहरमे पुनि ओकरा असह भए गेलैक। यातना, शोरण ओ पतारणाक क्खलाफ नारा लगा देलकैक। मुदा आब कतए जाएत! गाम छुिलैक, तँ शहर आएल। शहरसँ पडा कए जॉंगल आएल। आब कतए जाए। की करए। खैर! अखन तँ ई सभ सोचबाक समय नक्ह छलैक। चेतनतासँ कष क अनुभूक्त होइत छैक। तकरो अखन ओकरामे अभाि भए गेल छलैक। ओ अचेत पडल छल। ओकर दूनू सॉंगी ओकरा गमछासँ हिा करैत रहलैक।

क्दन लुक-झुक कए रहल छलैक। पलनिमा सुगबुगेलै। पलनिमाक सॉंगी सभ खुश भेल। कनी-मनी कछमछ कएलाक बाद पलनिमा फुरफुरा कए उक्ठ गेल जेना क्कछु भेबे नक्ह कएल रहैक।

पलनिमा ओक्ह राक्त जॉंगलेमे क्बतौलक। चार कात जॉंगलक भयानक जानिर सभक आिाज अबैत रहल। भोर होमए पड छलैक। पलनिमा गॉंभीर क्चन्तनमे लीन छल। की गरीबक हार-काठ पाथरक

बनल होइत छैक? नहि, तखन ओकरापर जनकाते समाज एहन कठोर किएक होइत छैक। एक-एक पल जीनिक हेतु संघर्षमे बीत जाइत छैक। की संसारक सौन्दर्यक आनन्द लेबाक ओकरा कोनो अधिकार नहि? जीबाक हेतु पयत करैत-करैत ओ मृत्यु दिस अगसर भए जाइत अछि। इएह छिऐक गरीबक जीनिति..?

इएह सभ सोच-विचारमे ओ छल कि कनेक दूरपर पुलिसक जीप अबैत ओकरा नजरि अएलैक। एक बेर पुन: पलनिमा अपन संगी सभक संगे भागल। मील मालिक पलनिमाक पकडबाक हेतु पुलिसके जेब गरम कए देने छलैक आ पुलिस ओकरा पाछू हाथ धो कए पडि गेल छल। पलनिमा भावाते जा रहल छल। मुदा जंगलके चार कातसँ घेर लेल गेल छलैक।

पलनिमा ओ ओकर संगी पकडल गेल। पकडलाक बाद ओकर हाथ पाछू कए बान्हि देल गेलैक। थानामे पलनिमाके एकटा घरमे एसगर बन्द कए देल गेलैक। पात भेने ओहि घरसँ पलनिमाक लाश निकललैक। कहि नहि राति भरि ओकरा की की यातना देल गेलैक। पलनिमा आब एकटा मुदा छल। पोसमार्टम रिपोर्टक अनुसार ओकर मृत्यु जंगलमे कोनो जहरीला जानरिक कटलासँ भेलैक। पात:काल अखबारमे छपल गेलैक-

“भगोरा कैदीक लाश जंगलसँ आनल गेल।”

पलनिमाक माता ओहि राति सूति नहि सकल छल। पात: काल ओकरा एकटा तार भेटलैक।

“पलनिमा जंगलमे जानरिक पकोपसँ मरि गेल। लाश लए जाउ।”

पलनिमाक माता सुन पडि गेल। शून्यतामे ओकर आँखि देखैत रहि गेलैक। पलनिमाक माए एक बेर फेर कानिकाआ उठलैक आ

तुरन्त शान्त भए गेलैक। एक क्दस पलनिमाक माए आ दोसर क्दस पलनिमाक बाप्ता कास्तब्ध, चुप, चेतना विहीन पडल रहल। गामक लोक कनीकाल तमासा देखलक आ अपन-अपन काजमे लावा गेल। ्यो-्यो कहैत रहैक-

“पलनिमा अनेरे फसाद केलक। गाममे एतेक गोि गुजर करैत अछ, मर जाइत अछ। गरीबो बहुत अछ मुदा एना उजाहिव तँ ओकरे ने छलैक आ तकर फलो तँ एिह भोगत।”

लघुकथा- पुनरुत्थान

ओकरामे प्रतिभाक कतहुँसँ अभाव नहि छलैक। पूरा गाम ओकर यशगान करबाक लेल तत्पर छलैक। नीक, सुन्दर, सुशील आ मेघावी छल अरुण। माए और बापक कोनो स्मृति ओकरा नहि छलैक। जीबनक प्रत्येक मोड़ ओ लड़ि कए आगा बढल छल। अपमानक अलावा समाजसँ ओकरा किछु प्रतिदान नहि भेटल छलैक मुदा ओ ओकरे, प्रेरणाक आधार बना जीबनमे विजयश्री प्राप्त करबाक हेतु कृतसंकल्पित छल। ओकर जन्मसँ लए कए अखन धरि जतेक घटना घटल छलैक सभ स्मृतिमे एकटा वृतान्त छल।

प्रतिभा जेना ओकरा प्रकृतिसँ पुरस्कारक रूपमे भेटल होइक। बच्चेसँ छात्रवृत्ति ओकरा भेटए लगलैक। धनिकक लोकक एक पृष्ठ पढाबथि तँ ओ दू पृष्ठ स्मृतिमे पकड़ि लैत छल। ओकर प्रतिभासँ सभ ठिठियो दंग रहैत छलाह। यद्यपि ओकरा रस्ता देखौनिहार ठियो नहि छलैक, ओ स्वयं जेना सभ किछु जनैत हो, की करक चाही, ककरासँ की बाजक चाही आ की करी जाहिसँ आबएबला समय नीक हो से ओकरा खूब नीकसँ बूझल छलैक। हाई स्कूलक परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण केलक आ पूरा राज्यमे प्रथम स्थान ओकरा प्राप्त भेलैक। कालेजक शिक्षा प्राप्त करबाक प्रबल आकांक्षा ओकरा छलैक मुदा आर्थिक परिस्थिति अति दुखद छलैक। गामपर घराड़ीटा बाँचल छलैक। माए, बाप,भाए, बहिन ककरो कोनो सहारा नहि छलैक।

थाकल, ठेहिआएल, ओ दरभंगा महराजक राजधानीक महल सभमे घुमि रहल छल। पैरमे पनही नहि, देहपर एकटा नीक कपड़ा नहि, मुदा अपनापर तेज, स्वभावमे सौम्यता ओ व्यवहारक नम्रता अनेरे लोकक ध्यान ओकरापर आकृष्ट कए लैत छल।

सॅयोगसँ चौधरीजी व् सासँ उतरलाह। अर ण हुनका नमस्कार केलक। अर णक पत्तभाशाली मुखमण्मल देक्ख ओ चक्कत भए गेलाह। चौधरीजीक व्धया-पुताके पढएबाक काज ओकरा भेर्व गेलैक। हुनकासँ ्येष सन्तान उक्मत्ता नमि् िगमे पक्ढ रहल छलीह। देखयमे खूब सुन्दक्र, सभािसँ विनम ओ पक्तभामे अवितीय। उक्मत्ताके देक्खतक्ह अर णके ठकविदरो लावा गेलैक। जेना पूिमजन्मक सॉंगी रहल हो। उक्मत्ताक पढाइमे अदुत पगक्त भेलैक। अर ण सेहो पशनक्चत अपन गाडी आगा पढबए लागल। मुदा एक क्दन बड विक्चत घिना घिलैक। अर णक सभिा सिप देक्खते-देक्खतेमे भॉंग भए गेलैक। उक्मत्ता स्कूल गेलैक आ ओक्हठामसँ लौवितक्हँ ददम्ददमकए क्चक्चआए लगलैक। कतेको ओझा-गुनी, मा् िर-िंदि अएलैक मुदा ओकरा कोनो सुधार नक्ह भेलैक। हालत बदतर होइत गेलैक आ ओ पात: होइत-होइत क्षपाण भए गेल। सौसे गदमचक्ढ गेल। दुभाग्य ओकरा ओतहुँ सॉंग नक्ह छोडलकै।

उक्मत्ताक आकक्स्मक क्धनसँ ओकर सपना सभ क्छन-क्मन भए गेलैक। अर णके आब एकहुँ क्दन ओतए रहब असम्भि भए रहल छलैक। ओ चुप-चाप ओतएसँ खसकल। पैरे-पैरे दक्डभॉंगासँ समस्तीपुरक रस्तामे ओ बहुत दूर आगा आक्ब गेल छल। पाकरीक गाछतर छाहक्रमे बैसल। कण्ठ जक्र रहल छलैक। कतहु पाक्नक दशम नक्ह छलैक। थाक्कयो नीक जेना गेले छल। बैसल क्क आँक्ख लावा गेलैक। सुतले-सुतल ओ सिगमलोकक पक्रभमण कए रहल छल। उक्मत्ता अत्यन्त पशन मुरामे ओकरा नमस्कार कए रहल छलैक।

‘‘आ अर ण तो। बडम नीक छे तूँ। तोरे ताक्क रहल क्छयौक। जक्हआसँ एतए एलहुँ एकहु क्दन चैन नक्ह अक्छ। क्दन-राक्त बस तोरे ताक्क रहल छी। आ जल्दी आ। देख हम कतेक परेशान छी। देख

हमर कण्ठ जवर रहल अछि। हमर हृदयक वायास कण्ठ तक पहुँच रहल अछि। एक बालास पाक्त दे। अरण पाक्त दे। कनी सुन।"

कहि नहि ओ की की कहैत रहि गेलैक। अरण किछु नहि बजलैक आ कमशः ओ नेपता भए गेल। अरणक कान सेहो उचवि गेलैक। मुदा ताधरि किछु नहि रहि गेल छलैक। अरणक अन्तममनमे दिन-राति ई सपना घुमैत रहैत छल। उवासाक स्नेहिल व्यहिारक अमिट छाप ओकर हृदयसँ मेटिने नहि मेटि रहल छल। सएह सभ गुन-धुनमे ओ आगा बढैत रहल।

समस्तीपुर िशन बहुत करीब आबि गेल छलैक। रेलगाडीक चलबाक आबाज कान तक पहुँचि रहल छलैक। व्यथला ए् सपेस लागल छलैक। दौडल दौडल ओ टिकस कीनलक आ गाडीमे कहुनाक ठूसा गेल। गाडी छुक-छुक करैत छलैक। एक कदम आगा बढैक, दू कदम पाछा बढैक आ ठामहि ठाढ भए जाइक। आगू घुसकैत-घुसकैत गाडी रुकि गेलैक। डाइभर साहेब चाह पीबैत छलैक कि गाममसाहेब हरी झंडी देखौलकै आ गाडी स्पीम धए लेलकैक। छक-छक-छक...। अरणके बैसबाक जगह भेवि गेल रहैक। बगलमे एकटि महिला सहयाती ओकर, दूटि बच्चा, एकटि अधबयसू पुरुष आ कहि ने के के सभ..? कलकता जाएबला गाडीक समय विशेरता ओहि गाडीमे छलैक। आधासँ आधिक याती नौकरीक खोजमे महानगरीक पयाण कए रहल छलाह। बरौनी ज् सनसँ गाडी आगा बढि गेल छलैक। ओकरा फेर आँखि लावा गेल छलैक। फेर आबि गेलैक उवासा। एहि बेर आओर व्यथित आओर अधिक करुण स्‍वरिमे कानिदिन करैत एक तरफा अपन मोनक बात ओ कहैत गेलैक।

"अरण। अरण। हम नहि रहि सकब। हम नहि रहि सकब एसगर अरण। देख हमर की हाल भेल अछि। देहक आभा झूस पड़ि रहल अछि। अरण चल, हमरे गाम चल, मुदा...। मुदा...।

मुदा...।”

गाडी सरपट आगा बढ़ैत गेल। आसनसोल स्टेशन करीब आबि गेल छल। गाडी स्टेशनपर रुकल आ बहुत रास यातीक चढ़ब ओ उतरब सुरू भेल ओकर ध्यान उचटि गेलैक। सपना एक बेर फेर सपना भए गेलैक।

दोसर दिन साझमे ओ कलकता शहर पहुँचि गेल। मुदा रस्ताक सपना ओकर माथासँ हटि नहि रहल छलैक। कलकता शहरक नाम बड सुनने छल। मुदा कतए जाए? ककरा ताकए? कुनु ठौर ठेकान नहि रहैक। आगा बढ़ल जाए। चारू कात बांग्ला भाखाक सोर। चलैत-चलैत थाकि गेल। ताबतमे उकासाक आबाज ओकर कानमे पहुँचलैक। अरुण अकचका गेल-

“ई तँ उकासा लावा रहल अछि!”

आँखि मलैत ओ ऊपर ताकए लागल। किछु देखा नहि रहल छलैक। ताबतमे फेर एहि आबाज-

“मरा नहि। हमही छी- उकासा, तोहर बाॅर्डर पर सँगीनी। देख हम कतेक परेशान छी। तोरा पाछू-पाछू बहार जका गाडीक सँगे आबि रहल छी। मुदा घबरो नहि। आखिर हम तोहर विद्याथी छियौक ने। ले दस हजार टिका। एहिसँ काज चल जेतौक ने? बाज! बजैत किएक नहि छे?”

अरुण अपन आगामे नोटिक पुलिंदा सभ देखि कए गुम रहि गेल। फेर एहि आबाज-

“उठा। जल्दी उठा। लुच्चा, बदमास आबि रहल छौक। अच्छा तँ हम जा रहल छी।”

अरुण झटि दए टिकाके फाडमे राखि लेलक। राखिते देरी मनमे उठलै- एतेक रास टिका कतएसँ अनलक उकासा? नाना

पकारक पश अरणक मनमे उभकर रहल छलैक। सौंगे मरो भए रहल छलैक। मुदा पासमे टिका आबा गेलासँ हिम्मत सेहो बढ़ गेल छलैक। एतेक आसानीसँ ओकर आवश्यक समस्याक समाधान भए जेतैक से ओ सपनोमे नहि सोचने छल। गाड़ि तेज ओ मोन सुस्त भए रहल छलैक। आगामे एकटा होटल नजरि अएलैक। होटलक कोठरी नम्बर पाचमे ओ मेरा ललेक। बेस थाकल गेल छल। विश्राम करबाक तीव्र आवश्यकता छलैक। कपडा-लता खोललक। हाथ-पैर धोलक। घंटी बजबैत नौकर दौडलैक। मीनू हाथमे दए देलकै आ किछु-किछु पूछए लगलैक। मुदा बाँगला बजैक। अरण किछु नहि बुझलकै। नोकरबा तमसा कए चल गेल। अरण स्नान कएलक आ कपडा-लता पहीरि कहि नहि कतेक गाढ़ निनमे सुतल रहल।

उबासला फेर हाजिर। अरणके भेलैक जेना ई ओकरा उठौने चल जाइत होइक। ओ चुप-चाप सन देखि रहल हो। बहुत दूर एकटा झीलक कातमे ओकरा राखि देलकै। बहुत काल धरि ओ सभ कहि नहि की की गप्प सप करैत रहल। ओ कहैत रहलैक-

“अरण, तूँ बड नीक लोक छे। तोहर स्मृति एक क्षणक लेल हमर मोनसँ नहि जाइत अछि। सून, एकटा काज करऽ। हमरे सौंगे चल। तोरा सभ किछु भेटतौक।”

पता नहि आओर की की ओ कहैत रहलैक...।

भोर होमए पड छलैक। अरणक आँखि खुजलैक तँ ओ आश्चर्यचकित भए गेल। ओकर कोठरीमे उबासलाक एकटा सित राखल छलैक जे ओ मरबासँ किछु पूर्व पहिरने छल। ओहि सितके ओ हटौलक तँ आओर आश्चर्यचकित भए गेल। बहुत रास हीरा-जबाहरात ओतए राखल छलैक। अरण परेशान छल जे ई सभ की भए रहल छल। देखते-देखते अरण कडोर पति भए गेल छल। सभ सामानके

ओ साधिानीसँ रखलक आ चुप-चाप होिलसँ पस्थान कए गेल।

मास-दू-मासक अन्दरमे ओ एकिा नीक होिलक माक्लक भए गेल। दस-बीस नोकर-चाकर ओकर आगा-पाछा करैत छलैक। पक्ताद्न हजारो िाका कमाइ ओ करैत छल।

छह मासक भीतरेमे ओ गाममे १० बीघा जमीन कीनलक आ इलाकाक सॅमपन व्यव्तक रपमे पक्ताब त भए गेल। अरणक समय देक्खते-देक्खते साफ बदक्ल गेलैक मुदा ओकरा खूब नीक जका एकर रहस्य बूझल छलैक। ओ जखन कखनो एकान्त होइत क्क उक्मालाक छाया ओकर सामनेमे उपक्स्थत भए जएतैक। अस्त-व्यस्त,भाि विहिल, उक्मालाक आकरक्क मुरामे आहान देक्ख अरण स्तब्ध रक्ह जाइत छल...।

ओक्ह क्दन अरणसँ नक्ह रहल गेलैक आ पूक्छ बैसलैक-

“उक्माला, एतेक परेशान क्कएक छे? हम तोरा सॉग कोना भए सकैत छी? हम जीवित छी। तो शरीर मुत छे। हमरा तँ शरीर चाही।”

उक्माला ई गप्प बड ध्यानसँ सुनलकै। ओ बेर-बेर बजैत रहलैक-

“हमरा तँ शरीर चाही। हमरा तँ शरीर चाही।”

आ ठहाका मार कए हँसय लगलैक।

अरण मरा गेल। उक्माला ओतएसँ गाएब भए गेलैक।

अरणक क्बआह एकिा सॉपन पक्रिरिक सुन्दर कन्यासँ भए गेलक। कक्नयाक विरागमन बेस धूम-धामसँ क्बआहक ९ क्दनक भीतरे सॉपन भेलैक। पूरा भरल-पूरल पक्रिरमे आक्ब ओ कक्नया बेस पशन छल। राक्तमे अरण जखन ओकरासँ भेि करए गेलाह तँ ओकर आबाजमे आियसानक पक्रतिम देक्ख दॉग रक्ह गेलाह। ओ कक्नया हँसल आ हँक्सते रहल-

“नहि चिन्हलौं हमरा..! हम छी उर्मिला। अहाक पुरान संगीनी। अहा तँ हमरा बिसरि गेलहुँ मुदा हम अहाके नहि बिसरि सकलहुँ। हमरा शरीर नहि अछि आ अहाके तँ शरीर चाही। मुदा अहा ई गप्प नहि बुझलहुँ जे शरीर सीमित अछि। मोनक कोनो सीमान नहि अछि। छोड़ू ई कुर शरीरके। आउ। अएबे करु। मौन भए जाउ।”

गाममे सौसे हल्ला भए गेलैक। अरुणक शरीर चेतना शून्य पडल छल। निकिया ओकरा देखि-देखि कानि रहल छलीह। कतेको भगमर, वैदि, ओझा, गुनी आँगनमे पथकरया देने छलाह। मुदा अरुण नहि उठल। ओ मौन भए गेल छल। शरीरक सीमानसँ ऊपर उठि गेल छल। उर्मिला अरुणक मोन एकाकार भए गेल।

लघुकथा- पॅचैती

जमाना कतए चल गेल मुदा गाम-घरक लोक अखनहुँ दू सौ बखमपाछा अछ। लोकके अखनहुँ चन्रमामे एकि बुढ़िया चखा कि‍ति देखाइत छैक। लोक अखनहुँ गहण लवाते स्नान करए चल जाइत अछ। कएक तँ ओकरा छुत भए जाइत छैक। लोकक सॅस्कार-सॅस्कृत सेहो आधुनक ओ पुरातनक िंदक बीच चकल रहल अछ।

पुरना पीढी आ आधुनक लोकमे अखनहुँ बड अन्तर छैक। ते एकि सित: सिस विदिमान तनािं कोनो कण झगडाक र प लए लैत अछ। एही कारणसँ गाम-घरमे पॅचैतीक जबरदस्त गुॅजाइश छैक।

मुरली पाच भइॅ छलाह। घरक हसाब-कताब श्याम रखैत छलखन। मैक्टक तक पढल छलखन। बेस चलाक-चुस्त। लगानीक असूल करबामे पारॅगत। हुनकासँ छोि तीन भाए- मोहन, र दल आ लखन। लखन कमे बएसमे दिंगत भए गेला। हुनकर एक मात पुत जीिनके वाती सभ पहनक फराक कए देलकन। पाच बीघा जमीन हस्सामे पडलन। लगानी-वरानी जे कछु छलन, सभि श्याम बैमानी कए लेलखन। शेर चार भाएमे शुर मे तँ खूब भेल छलन मुदा कछु दनक बाद र दलक सिगमबास भए गेलन। हुनका मात तीनि कन्या छलन। तीनूक बआह वाती सभ केलखन। बआह करएबाक कममे सभि जमीन तीनू भाए अपना-अपना नामे करा लेलन। मसोमातके कछु नह रह गेल छलैक। गामक कछु फनैत सभ ई गप्प मसोमातक कानमे दए देलकन। मसोमात तँ ओह दनसँ अवाआ-बेताल छथ। एको दन एहन नह भेल जे हॅगामा नह भेल।

बुध दिन रहैक। गाममे हाि लगैत छलैक। गाम-गामक लोक हाि पिर जमा छल। सरपाँच साहेब उफमपलि बाबू चकचक-चकचक कए सैकडो लोकके जमा कए लेलका। सभ गोि तय कएल जे मसोमातक सँगे बड भारी अन्याय भेलैक अछि। परिणामत: दोसर दिन तीन बजे सरपाँच साहेबक दलानपर पाँचैती करबाक निर्णय भेल।

दोसर दिन दुपहरियेसँ सौसे गामक लोक सह-सह करए लागल। सरपाँचक ओहिठाम बैसारी रहैक।बेर खसैत-खसैत सौसे दरबाजा लोकसँ भरि गेल। अगल-बगलक गामक पमुख-पमुख लोक सभ सेहो बजाओल गेल छलाह। मुखियाजी एखन धरि नहि आएल छलाह ते ओहि ािलपर आदमी पठाओल गेल। चारि बजैत-बजैत लोकक करमान लागि गेल। सरपाँच साहेब अपन सिागित भारण कही या जे कही, पारम्भ केलका। मसोमात सेहो कोनाि लागल ठाढ़ि छलीह। चार भाएके कोनो फ् झका बाकी नहि रहल। गाम-गामक पाँच सभ सेहो ‘छिया-छिया’ कहय लगलखिन। मुदा श्याम बेस चलाक लोक छलाह। ओ मुखियाके रातियेमे पाच साए ािका दए अपना गुिभे कए लेने छलखिन। मुखियाजी सरपाँचपर कडकि उठलाह-

“ई अन्याय नहि चलत। आखिर तीनाि जे कन्यादान बाती सभ केलखिन ताहिमे खचा तँ अिश्ये भेल हेतैक। फेर मसोमात तँ असगर छथि। जमीन लए कए करतीह की? बारह मोन खोरिश हिनका अिश्य भेिक चाही। बाजू यौ श्याम बाबू, अपने एहिपर तैयार छी?”

श्याम बाबू सीिकृतिमे अपन मुडी हिला देलखिन।

ई बात सरपाँचके एकदम नहि र चलैक। ओ बमकए लागल। सँगे जे ओकर चारि-पाचाि लठैत सभ छलैक सेहो सभ बमकए

लागल। जबाबमे चार भाए सेहो भोकरए लागल। सरपाँचक दरबाजापर बेस हँगामा बजरि गेल। अन्ततोगत्वा ई निर्णय भेल जे दूनू गोटे एकादशी दिन पाँच प्रमुख-प्रमुख व्यक्ति तक समक्ष हरिवंश पोथी उठा कए सप्पत खेताह आ ओहीसँ बात फरिछा जाएत।

प्रात:काल सरपाँच साहेबक ओहिठाम गाएक गोबरसँ ठाँव कएल गेल। ओहिपर हरिवंशक पोथी राखल गेल। पाँचो पँच बैसल रहथि। श्यामा मोने-मोन खुश छलाह। पता नहि, कतेक बेर ओ एहिना हरिवंशक पोथी उठाए लोकक घर-घडारी घोँटि गेल रहथि। हनहनाइत, फनफनाइत अएला आ हरिवंशक पोथी उठा लेलाह। पँच सभ तकैत रहि गेला। मसोमात ओहीठाम अचेत खसि पडलीह। मसोमातके बारह मोन खोरिसक अधिकार मातक घोरणा पँच समुदाय कए देलक। पँचैती समाप्त भए गेल।

बुधन गामक मानल लठैत छलाह। परमा बाबू बी.मी.ओ. साहेबसँ एकटा चापा कलक व्यवस्था करौने छलाह। कलक तीन-चौथाइ खर्चा सरकारी मदतिसँ भरल जएतैक। बुधन ओ परमा बाबूक घर सटले छल। कल कतए गाडल जाए ताहि हेतु जबरदस्त झगडा बजरि गेलैक। तय भेलै जे हीरा बाबूके पँच मानि लेल जाए। ओ जे फैसला कए देथिन से मानि लेल जाए। हीरा बाबू पढलो त, पढल-लिखल एहि ओजस्वी लोक छलाह। सम्पतिक नीक सँगोर कएने छलाह। प्रात: काल ओ घटना स्थलक निरीक्षण कएलाह। बुधन लठैत छल। कखनो ककरो गरिया सकैत छल। बेर-कुबेर ओ लाठी लए कए ठाढो भए सकैत छल। परमा बाबू पढल-लिखल सभ्य ओ शान्त स्वभावक लोक छलाह। परिणामत: हीरा बाबू फैसला कए देलखिन जे कल बुधनक घर लगक खाली स्थानपर गाडल जाए। बुधन प्रसन्न भए गेलाह। परमा बाबू चुप, समाजक लोक चुप।

सोमन बाबू कामरेम छथि। गाममे कतहु ेयो कोनो गडबडी करैत तँ ओ अि शघ्र ओहिठाम पहुँचि जाइत छलाह। गरीब लोक हुनका अपन नेता मानैत छल। अमत िलीक एकि स्त्रीगण अपन घरबलाके छोडि कए लापता भए गेल छलि। चारि-पाच दिनुका बाद सौसे गाममे जबरदस्त हॉगामा भए गेल। शोभा बाबू ओहि मौगीक सॉग लापता। मुदा एहि बेर कोनो पॉचैती नहि भेलैक। जे जतहि सुनलक ओ ओतहि गुम्मी लादि देलक। समरथके नहि दोर गोसाई सद: चरितार्थ भए गेल।

जीबछ क अबाजमे बेस िीस छलि। लोक कहैत अछि जे हिनकर पिता बड सुखी-सम्पन्न छलखिन। मुदा देखिते-देखिते ओहने दरिर भए गेलखिन। ओहि घि नाक पाछू सेहो एकि पॉचैतीक हाथ छलैक। जीबछक पिताक शाद छलनि। गामक पमुख-पमुख लोकक बैसार भेलैक। जीबछ बाबू सन पवित्र ओ धनीक लोकक शादमे कमसँ कम जबार तँ खेबेक चाहैक छलैक। सएह भेलैक। चारि दिन धरि भोज होइते रहलैक। जीबछ एहि काजमे बीस हजार िका घरसँ लकाललाह। दस हजार िका कजम लेबए पडलनि। अमर दियादे छलखिन। धर दए बिना कोनो हिचकसँ हुनका पैसा दए देलक। काजक बाद कहलक-

“कोनो बात ने। जखन पैसा हो तखन दए देब।”

दू साल बीति गेल। जीबछक हालत दिन-दिन बतर होइत गेल। तीन सालक बाद अमर एकाएक चढाइ कए देलक। ओकरा हिसाबे सूद सहित ३५००० िका कजम भए गेल छलैक। अमर अपन लठैत सभक सहायतासँ ओकर सभि जमीन जोति लेलखिन। गाममे बेस बबॉमर भेल। पॉचैती बैसल। सौसे गामक नीक लोक सभ

जमा भेलाह। अमरक विजय भेल। सभ पाँच अमरक पक्षमे हाथ उठा देलखिन। अमर सभ जमीन जोति लेलाह। सएह भेल पाँचैती। जीबछ ओही पाँचैतीक परातसँ फकर भए गेलाह।

कहबी छैक जे पति-पतीक पाँचैती नहि करी। कारण कहि नहि, ओ कखन झगडा करत आ कखन एक भए जाएत। मुदा आइ-काल्हि एहनो कलाकार सभहक कमी नहि अछि जे दूनू व्यक्तिमे झगडा लगा कए मरिगस्ती करैत रहैत छथि। बेरपर पाँचैती सेहो कए दैत छथि। बतहु कासर एहने व्यक्ति छथिकाह। पुरिकि गामिली बेस हराहि छलीह। दूनू व्यक्तिमे खपिपि होइते रहैत छलि। ओहि दिन पुरिकि गामिली कतहु हकार पुडए गेल छलीह, घुरैत-घुरैत अबेर भए गेल रहलि। घुमैत-फिरैत बतहु बाबू पहुँचलाह। पुरिकि गामिलीक घरबलाके लोक खलीफा कहैत छल। खलीफा दरबाजापर गरमाएल छलाह। बतहु कासर पुछलखिन-

“की बात छैक? आइ बड गरमाएल लावा रहल छी?”

एतबा ओ पुछलखिन की खलीफा अपन घरिलीके एक हजार फ् झक्ति करए लगलखिन। ताहि पर बतहु कासर िपि देलाह-

“हँ बेस कहैत छी भाए। आइ-काल्हिक स्तीगण सभ तँ एहने होइत छैक। हुनका तँ हम जटाक घरमे गप्प हकैत देखलियनि अछि।”

एतबा गप्प बाजि ओ ओतएसँ हवि गेलाह।

थोडेक कालक बाद पुरिकि गामिली लौिलीह। दूनू व्यक्तिमे महाभारत जे भेल से देखएबला छल। चार कातसँ लोक सभ दौडल आएल। पुरिकि गामिली बजैत रहि गेलीह। अन्ततोगति, खलीफेके लोक उठा कए दोसरठाम लए गेल। दूनू व्यक्ति ओहि दिनसँ फराक-

फराक रहए लगलाह। घरमे खान-पान बन्द। बतहु कासर फेर उपस्थित भेलाह आ खलीफाके कहलखिन-

“भाइ! एहि तरहे केते दिन चलत? आपसमे बैसार कए लिअ आ मेल-जोलसँ समय बिताउ।”

तय भेल जे काल्हि आठ बजे बैसार होएत। दोसर दिन बैसार भेल। दूनू व्यक्ति अपन-अपन पक्ष कहए लगलखिन। बहुत रास गप्प-सप्प भेलाक बाद बतहु कासर ई तय कए देलखिन जे आइ दिनसँ खलीफा अपन घरनीक गॉंजन नहि करताह।

ताहि पर पुरनिकी गामिनी कनखी मारलखिन। खलीफा मुँह तकैत रहि गेलाह। बतहु कासर तमाकुल चुनबैत-चुनबैत थपरी मारलाह आ ओहिठामसँ घसकि गेलाह।

गाम-घरमे पँचैती एहिना होइत अछि। जकर लाठी तकर महिंस।

लघुकथा- मुखिआक चुनाि

साझ कए गाममे समाचार-पत आयाितम अबैत छलैक। गाम भिरक लोक चौकपर एकटा भए जाइत छलैक। चाहक दू-तीन दोकानपर लोक भन-भन करैत रहैत छल भादो जका। अखबार अबैक कि गामक पढुआ सभ ओिहपर िवि पडए। ओिह दिन अखबारमे सरकारक एकि सूचना बहराएल रहैक जे रा्य भिरमे मुखियाक चुनाि एक मासक भीतर सम्पन भए जाएत। औ बाबू! ई समाचार कि आएल जे सौसे गाममे जेना करेिन लावा गेल। ओिह गाममे एकसँ एक सरगना लोक छलाह। धने-जने परिपूणम मोहन बाबू, पलिन बाबू, हीरा बाबू, झगडू बाबू आिद-आिद। मुखिया के बनए, सरपाँच के बनए। विभिन गुिमे इएह घोल-फचका शुर भए गेल। सौसे गाम खण्म- खण्ममे बँिल छल।

पूबाइ िलक सरगना मोहन बाबू छलाह। पलिन बाबू ओ हीरा बाबू दिक्षणाइ िलक पभाि लोक छलाह आ झगडू पछबाइ िलक मानल लठैतमेसँ एक छलाह। उतरिइ िलक ्यो नेता निह छल, कारण ओतए बेसी जन-बोिनहार रहैत छल आ अपनेमे ताडी पीब कए कि-कि करैत रहैत छल। ओकरा सभहक भगबान रोविये छलैक। मािलक सभहक ओिहठाम जाए, जखन जे काज भेिक से करए आ बोिन लए कए चल आबए। एमहर जिहआसँ चुनाि सभ होमए लगलैक अिछ ओहो सभ किछु सुगबुगाएल जरर अिछ, मुदा कोनो खास निह। किहओ काल बाहरसँ नेता सभ अबैत छैक तँ ओहू िलमे चहल-पहल रहैत छैक।

चार िलमे झगडू बाबूके बेस चलाचलती छैक। लाठीक बल छैक। पाचि बेि छिन। सभके पहलमानीमे पारंगत कराओल गेल।

बेस लठैत सभ छल पाचू बेिा। ओकरा सभहक मरे इलाका शान्त भए जाइत छल। तँए केहनो पढल-क्लखल लोकके झगडू बाबके नमस्कार करए पडैत छलैक।

चुनाकि समाचार पक्नते झगडू बाबू बमकए लगलाह। पात भेने हुनका िलक सभ लठैत अपनामे बैसार केलक। मुक्खया आ सरपाँचक नामक फैसला तँ नक्ह भए सकलैक मुदा एतबा तय भए गेल जे तिमान मुक्खया आ सरपाँचके अबश्य हराबक अक्छ।

झगडू बाबू भोरे सात बजे नहा-सोना कए चौकपर पहुँचलाह आ बमकए लगलाह-

“सभ चोर है, मुक्खय चोर है। सरपाँच चोर है, सभ को ठीक करेगा।” आक्द आक्द...।

चार कात भन-भन करैत लोक सभ जमा होमए लागल।

“की बात छैक झगडू बाबू?” -क्कओ ओक्हमे सँ पुछलक्खन।

“की बात छै से तोरा सभके कोना बुझेतह? एहन बैमान सरपाँच आ मुक्खया आइ धक्र एक्ह इलाकामे नक्ह भेल। कक्हओ गामबलाके कोिाक चीनी ठीकसँ भेिलैक? एक्ह बेरक चुनाभिमे एक्ह बैमान सभके हरेबाक अक्छ..!”

लोक अबैक, लोक जाइक मुदा झगडू बाबू भारण ओक्हना अनबरत चक्लते रहक्न। रेलगाडीक पक्हया जका घुरा-क्फरा कए ओतक्ह पहुँक्च जाइत छला :

“इस बैमान सभको हराना है।”

झगडू बाबूक भारण चक्ल रहल छलक्न क्क ताबतेमे सरपाँच साहेब घुमैत-क्फरैत आक्ब गेलाह। चार कातक लोक हुनका क्दस तकैत

छल। मुदा झगडूक भारण यथाति चक्ल रहल छल। सरपाँच साहेब एक-दू बेर झगडूके बुझाबक पयास केलक्थ। ताबतेमे सरपाँचक भाक्तज मुनमा पहुँच गेल। हाथमे बेस मोगिर एकि लाठी छलैक। ओ ने आब देखलक ने ताि आ धराम-धराम दू लाठी मारलक झगडूके।

झगडू बाबू असगर पक्ड गेलाह। गकयबैत गाम क्दस दौडलाह आ पाचो बेिके हक्कि देलक्खन। सौसे चौकपर गरमा-गरमी भए गेल छलैक। झगडू बाबू माक् क्सक् फेरसँ गरजए लगलाह-

“कहा भागा। आए सामने तो जाने।”

झगडू बाबूक पाचो बेि सेहो फराके गरजैत एमि् पकारेण चुनाि अक्भयान शुर भेल।

पचा भरबाक समय करीब आक्ब रहल छल। घरे-घर गुपैची शुर भए गेल। तिमान मुक्खया आ सरपाँच बेस िकाबला लोक छलाह। कोनो कीमतपर चुनाि जीतबाक हेतु कृतसंकल्प छलाह। मुदा नितुक्आ सभ हुनकर विरोधी छल। गामक आरो लोक सभ सेहो हुनका सभसँ सन्तुष नक् छल। अन्ततोगति पचा भरबाक अक्तम क्दन धक् मुक्खया आ सरपाँचक हेतु पाच-पाच गोि उम्मीदिर पचा भरलक्। ओक्हमेसँ मुक्खयाक हेतु तीन आ सरपाँचक हेतु दू गोिक पचा सही पाओल गेल। नितुक्आक उम्मीदिर पल्िू बाबू आ मोहन बाबू भेलाह। तिमान मुक्खया ओ सरपाँच सेहो एक बेर फेर मैदानमे अडल छलाह। ओकर अलाबा उतरिइ िलसँ गरीब लोक सभक उम्मीदिर बलचनमा सेहो अखाडामे उतरल छल।

मुक्खयाक चुनाि गाममे तूफान अनलक से कोनो नब बात नक् छल। सभ बेर एक्हना होइत छलैक। जक्हआ कक्हओ चुनाि होइक तऽ लोक सभ एक्हना घोल-फचका करए लागय। मुदा एक् बेरक

चुनाभिमे विशेरता ई छलैक जे उतरबिाइ िलिक गरीब लोक सभ सेहो फरॉर बन्हने छलैक। बाहर-बाहरसँ नेता सभ अबैत दलैक। क्तत्य ककरोने ककरो ओक्हठाम बैसार अबश्य होइतै। मतक क्हसाबे आधासँ अब्धक मत गरीबक छलैक आ जँ ओ सभ एक भए जाए तँ बलचनमाके मुक्खया बनबासँ क्कयो नक्ह रोकक सकैत छल। एक्ह बातक पक्तक्कया आन तीनू िलिमे सेहो भेलैक। मुदा कोनो हालतमे तिमान मुक्खया चुनाि दॉलसँ हिए नक्ह चाहैत छलाह आ नतिुक्रआ सभ हुनका अपन नेता मानबाक लेल तैयार नक्ह छल। एमि् पकारेण सॉम्नन गिमक मत दूठाम बँबि सिभाविकि भए गेल छलैक। मुदा बलचनमाक पचार जोर पकडने छलैक।

झगडू बाबूक हेतु सविगम असिर छल। खने बलचनमाक सॉग घुक्मतक्थ तऽ खने पलिनि बाबूक ओक्हठाम आ खने तिमान मुक्खयाक ओतए। पचा भरलाक बाद चुनाि क्दन धक्र झगडू बाबूक हेतु अगहन रहैत छलक्त। हुनका ईहो कोनो ठेकान नक्ह छलक्त जे कखन कोन दलक सॉग भए जेताह।

बडका लोक सभहक मत दू ठाम बिबासँ रोकबाक हेतु साझमे पूबाइ िलिमे बैसार भेल। ्यो क्कछु बक्जतक्थ ताक्हसँ पक्हने झगडू बाबू बमकए लगलाह। तिमान मुक्खयाके एक हजार फ् झक्त कएल।

अन्ततोगति ई क्तणय्य लेल गेल जे नतिुक्रआक उम्मीदिार पलिनि बाबूक समथयन करताह। सरपॉचक पदक हेतु मात दूि उम्मीदिार छलाह- मोहन बाबू आ तिमान सरपॉच नति राय। नति राय कमे पढल-क्लखल मुदा बेस फनैत लोक छलाह। कतहु क्कछु होइतैक क्क भदक्रिया बेग जका रिमरिमबाजए लबातक्थ। घर-घर झगडा लगेबामे ओस्ताद छलाह। जँ क्कछु खचम्बचमकए क्दयैक तँ

पॅचयतीमे फैसला अहाक पक्षमे सुरक्षित कएल जा सकैत छल। जँ नीक-अधलाकुत भेलो जाइक तँ कतहुँ खा सकैत छलाह अन्यथा बेस नेम-निमसँ रहैत छलाह।

एहि सभ कारणसँ गामक लोक ओकरासँ एकदम ना-खुश छलैक। मुदा यो ओकरा नाराज नहि करए चाहैत छलैक कारण ओ बेस फचाउर छल आ ककरहुँ कतहु बइ् जत कए सकैत छल।

झगडू बाबू नतिउरआओपर ध्यानकरए लगलाह। नतिउरआ सभ सरपॅचक हेतु मोहन बाबूके समर्थन देबाक आशासन देलखिन। पात भेने नतिउरआ सभ इनकलाब, जिन्दाबादक नारा दैत गाम भरिमे पलनि-मोहन जिन्दाबादक सरि गुंजित कए देलक।

एमहर गरीब लोक सभ एकदम एक भए गेल छल। लाठी लए कए सभ करे कमान छल। एिम् पकारेण सपष लगइत छल जे मुखिया पदक हेतु बलचनमा आ सरपॅचक हेतु मोहन बाबू चुनाि जीतताह। तिमान मुखिया ओ सरपॅचजी बेचैन छलाह। रातिक बारह बजे झगडू बाबूक घर पहुँचलाह। दूनू गोि झगडू बाबूक पैर पकडलखिन।

“झगडू बाबू, अपने हमरा सपोि कर ।”

“कएक नहि। हमर सपोि तँ सभदिन अहीक सँगे रहल अछि।”

“से तँ ठीके मुदा एहि बेर हालत बेसी गडबड छैक।”

फेर कहि नहि, दूनू गोि की फुस-फुसेलाह। २००० िकापर सौदा भए गेल। पाते भेने झगडू बाबू चौकपर फेर गरजए लगलाह-

“मुखियाजीक जे विरोध करत से हमर दुश्मन। एहन मुखिया सरपॅच तँ ने कहिओ भेल छल आ ने होएत।”

आक्द आक्द। सुननाहर सभ गुम्म।

काल्ल चुनाि होएत। राक्त भक्र गाममे धोल-फचका होइत रहल। सभठाम काना-फुसी बेस जोर पकडने छल। पुस्तकालयपर चुनाि दल आक्ष गेल छल। चाक्रि पुक्लस लाठी लेने सेहो गश्त लगाबए लागल। पक्हलुका चुनाभि उतरिाइ िलपर चुनाकि मतदान केन्द्र नक्ह होइत छलैक। मुदा एक्ह बेर गरीब लोक सभ बी.मी.ओ. साहेबक ओक्हठाम धरनाधए देलक। एक्ह बेर उतरिाइ िलमे सेहो मतदान केन्द्र बनल छलैक। झगडू बाबू आ हुनक बेिा सभ बेस मजगुतगर लाठी फनैत चुनाि मतदान केन्द्र सभपर चकर लगा रहल छलाह। पुिाइिलक मतदान केन्द्र पर नितुक्रआ सभ कब्जा कए लेने छल। कक्सकए िगिस मतदान भए रहल छलैक। ई खबक्र झगडू बाबूके जहा भेिलि क्क ओ अपन लठैत बेिा सभके सॉा कए ओतए पहुँचला आ पलनि एमि् मोहन बाबूके धराम-धराम दू-दू लाठी लगाओल। पीठासीन पदाक्धकारी अकबका गेलाह। चार क्दस हरविरो मक्च गेल।

ओक्ह बीचमे झगडूक दूिा बेिा आगा बढल आ सभाि मतपत छीक्न जबरदस्ती मोहर माक्र खसा कए खसक्क गेल। मुदा एकर जबरदस्त पक्तक्रया उतरिाइ िलक मतदान केन्द्र पर भेल। एक-एकाि मतपतपर बलचनमा अपने मोहर माक्र कए खसौलक। कोनो दोसर उम्मीदािरक पोक्लॉ एजेनि ओक्हठाम नक्ह विक्क सकल। बलचनमाक जीतब क्वविवत पाय छलैक ओही मतदान केन्द्र क, कारण आधासँ अक्धक मत ओही िलक छलैक। सरपॉचक सभाि मत नित रायके भेिलैक। आन मतदान केन्द्र सभपर सामान्य रपसँ मतदान भेल आ कने-मने मत सभके भेिलै।

साझमे मत गणना पारम्भ भेल। बारह बजे रातमे जा कए चुनाकि परिणाम बहार भेलै। बलचनमा ओ नति चुनावि जीति गेलाह। गरीब लोक सभ विजयक खुशीमे मत छल। नारा बुलन्द होमए लागल-

“जीत गया जी जीत गया, बलचन जीत गया।” पुबारि ि लिसँ लए कए पछबारि ि लिक सभ लोक सन छल।

<u>लघुकथा- हरि बौक छी</u>

पाकरि गाछ तर ओ पसीना पोछि रहल छल। आगा-पाछा ओकरा क्यो नहि छलैक। अगसरे छल। भोरे उठैत छल आ साझ धरि परिश्रम करैत छल। बदलामे किछु अन-पानि भेटि जाइत छेलैक। दुपहरियामे जहन कनेक उसास होइक त गामक जे पूब दिसक पाकरिक गाछ छेलैक ओकरे छाहरिमे बैसि पसीना पोछए लगैत छल। दस साल बएस ओकर हेतैक। पता नहि, कहिआ ओकर माए-बाप मरि गेलैक। ओकरे संगतुरिया सभ कैटा छैक जे स्कूल जाइत रहैत छैक। माए-बाप सभ ओकरा रंग-बिरंगक कपड़ा कीनि दैत छैक। किताब कीनि दैत छैक। केहन भागबंत छैक ओकर संगी सभ। सएह सभ अरषदरषओ सोचैत रहि जाइत अछि। पता नहि अखन धरि कतेक मालिक ओहिठाम ओ काज केने अछि। जतहि गेल ओतहि लात-जुतासँ स्वागत भेलैक। मुदा ओ की कए सकैत छल? पेटक सबाल छलैक। जाधरि सहि सकैत छल, सहैत छल। आ कहिओ चुप्पे भागा जाइक। पाछू लागल मालिक गरजैत उठैत छलैक। जेना-तेना कए ओ अपन पेट पोसैत गेल। आगा बढ़ैत गेल। जीबनक एक-एक दिन एकटा उपलब्धि जका बीतैत गेलैक। शिशि: ओ जवान भए गेल। एहि बीच सरकार नया-नया योजना सभ लागू केलक अछि। गाम-गाममे बैंक सभ खुजि गेलैक अछि। एक दिन ओहो बैंक गेल आ मैनेजर साहेबक आगू उम्मीती-बिनती केलक। मैनेजर साहेब ओकरा एकटा रिक्सा कीनि देलखिन।

ओकरो नाम मैनेजरे छलैक मुदा गामक लोक मैनेजरा कहैत छलैक। मैनेजरा रिक्सा चलबए लागल। मोटामोटी दससँ पन्द्रह टाका आमदनी भए जाइत छलैक। ठाठसँ जिनगीक गाड़ी सरकए लगलैक।

'निजर राय' म्लखल रहैक म्रक्सापर। भोरे उठए निजरा आ घण्टी बजबैत दनादन म्लाकम्ल पिए। निजराक पम्लष ा छोटका लोक सभि बढ़ए लगलैक। कैटा कथा सेहो ओकरा म्बआहक लेल आबए लगलैक। आ अन्ततोगत्वा निजरा म्बआह कए लेलक। गासि पाच कोस पम्च्छि सासुर छलैक। अनि-चैन भए गेल रहैक ओकर म्जनगीि। भोरे छह बजे म्रक्सा लए कए म्बदा भए जाइत आ साझि सात बजे एक ढेरी कैचा लेने आपस होइत। दिा ओकर ई म्जनगी बेसी म्दन नम्ह चम्ल सकलैक।

सात-आठ बखषपम्हने ओ फूल बाबूस दसटा टका पैच लेने छलैक। संयोगस वो पैसा आइ धम्र आपस नम्ह भए सकल छलैक। ओकर हालति सुधार देम्ख गौआ-घर आ सभ अनेरे ओकरास जरए लागल छलैक। ओम्ह म्दन साझि आपस भेल। बेस आदिनी भेल रहैक। घर पहुचले छल म्क फूल बाबूक गजषा सुनेलैक-

"निजरा छे, निजरा छे?"

"की है म्लिक।"

"तो अपन म्हसाब म्कएक नम्ह फमिछा रहल छे।"

"कोन म्हसाब?"

"कोन म्हसाब! केना बजैत अम्छ जेना एकरा म्कछु बुझले ने होइक। दस बखष भए गेलौ ओम्ह कजाके। कम्हओ देबाक सुम्ध अएलौक? सुम्द सति ओकर आब पाच सौ टाका भए गेल अम्छ! कामि भोर तक टाका चूका दे, नम्ह त...।"

निजरा तासि बुत भए गेल। नम्ह सम्ह भेलैक ई सरासर अन्याय ओ बैिनी। तासि ओहो गरजए लागल-

"होशि बात कर म्लिक..! बुझलौ जे बि टाकाबला छी।"

एतबा ओ बाजल म्क फूल बाबू गम्रआएब शुर केलम्खन। निजराके

सेहो टाकाक गरि‍ रहबे करैक। ओ अत्याचारक प्रतिकार करब कतर्व्य बुझ्झ गेल छल।

एहले-वएहले फूल बाबूके गटा पकिलक आ गदर्भनाया दैत अपना दरबाजापर स भगा देलक।

फूल बाबू बेस तावि आम्बे गेल छलाह। मिथली छोमि म्हन्दीि गरजए लगलाह-

“कल देख लेगे। ऐसे-ऐसे मिकतने पाजी को िने ठीक मिकया हू।”

जबरदस्त हल्ला गाििि बजमर गेलैक। चार कातस लोक सभ दौिलैक आ दूनू गोटेके फराक कए देलक। फूल बाबू अिषबिषबजैत आपस अएलाह।

पात भेने िनिजरा पूवषजका मरक्सा मिकालल्क। ठाठस ओकर सीटपर बैसल आ घण्टी टनटनबैत घरस मिबदा भेल। गािस बहराएल मिक मरक्साक चाम्लके तेज कए देलक। मरक्सा हवाि उिए लगलैक। मिकछु दूर आगा बढ़लापर रस्तापर जारम्न राखल भेटलैक। िनिजरा मरक्सा रोकलक आ जारम्नके हटबए लागल। एतबेि चाम्र-पाचटा लठैत दन-दन कए दूनू कातस धानक खेतस बहरेलैक। दन-दन-दन। िनिजराक कपारपर लाठी पिए लगलैक।

िनिजरा ठािम्ह खम्म्स पिल। ओ लठैत सभ मरक्सा पकिलक आ ओकरा िमर लाठीस, िमर लाठीस ओतम्ह खण्ड-खण्ड कए देलक। फेर पता नम्ह, ओ लंठ सभ कतए मिपता भए गेलैक। बहुत काल धमर िनिजरा एम्हना अचेत बीच रस्तापर पिल रहल आ ओकर मरक्सा टुकिी-टुकिी भए कए बगलि राखल रहैक। िथिपर स खुन टपकैत रहैक आ िमरस सौसे देह भुजरी-भुजरी भए गेल रहैक। धण्टा भमरक बाद एकटा मरक्साबला ओही रस्तास गेल।

िनिजराके ओतए पिल देम्ख ओ सन रम्ह गेल। ओकरा मरक्सापर

दूटा याती छलैक हुनका सभके मरक्सेपर छोमि ओ उतरल। निजरा मरक्सा चलबैि ओस्ताद भए गेल छल आ ते मरक्साबला ओकरा 'गुर' कम्ह कए बजबैत छलैक। 'गुर'क ई दशा के केलक? मकछु काल धम्र ओ मरक्साबला कुब्ध रहल। आ तकर बाद जेना ओकरा अम्कलि सभटा फुराय लगलैक। धराक दए निजराके मरक्सापर लदलक आ आपस अस्पताल म्दम्स मरक्साके तेजीस चलबए लागल।

निजरा तीम्न म्दन धम्र लगातार अस्पतालि पिल रहल। ऑक्सीजन देल गेलैक। बहुत रास दवाइ करए पिलैक। चाम्रि म्दन साझि ओ आम्ख खोललक। होश अम्बते अपन मरक्साके ताकए लागल। िदा क्यो मकछु नम्ह कहलकै। निजरा फेर चुत्प भए गेल। अस्पतालि ओकरा एक िसि सयि लामा गेलैक। गािपर बच्चा सभ अन-पाम्नक अभावि िरणासन रहैक। घरवाली िम्लक सभबहक आगनि काज कए कए गुजर करैक। िदा जाम्ह म्दन निजरा आपस अस्पतालस अएलैक त ओकर घरवाली खुशीस दौिए लगलैक।

निजरा घुम्र त आएल िदा ओकर बािि पैर नेगराय लागल छलैक। मरक्सा थकूचल गेल रहैक। आगा मक करए से नम्ह फुरा रहल छलैक। घरि दूटा बच्चा सेहो भए गेल छलैक। सभ अन म्बना रोगा रहल छलैक। डाक्टर निजराके िसि म्दन आरािि करबाक पराशिषदेने छलैक। िदा घरक पम्रस्म्थम्त देम्खकए ओकरा बैसल नम्ह गेलैक।

निजरा साहस केलक आ आगनस मनकलल। िदा जाए त कतए? टाग टुम्ट गेल छलैक। मरक्सा थकुचाएल राखल छलैक। गािि िति फूले बाबू लहनाक कारोबार करैत छलाह। की करए? झख िम्र कए फूल बाबूक ओम्हठाि पहुच गेल। ओकरा अखन धम्र नम्ह बुझल छलैक जे ओकर घरवाली फूले बाबूक ओतए काज करैत छैक।

फूल बाबू ओकरा बेस ध्यान करैत छलखिन। ओकर घरवालीक नाि सुनरी छलैक। तेहने गुणो छलैक। ुदा सौन्दयष गरीबीस दागल छलैक। फूल बाबूक कम्ह ने कम्हआस ओकरापर नजर गर गेल रहम्न। िनजरा पहुचते फूल बाबूके सुनरीस असगरेिं हसी-ठठा करैत देम्ख लेलक। ओ कतहु दोगिं नुका गेल आ तािसा देखए लागल। सुनरी नै नै करैत रहलैक। ुदा फूल बाबूक आिकिता बढ़ले गेलम्न। एम्हस आगू िनजराके देखबाक शम्क्त नम्ह रम्ह गेल रहैक। पत्थािणिक साथ्यष नम्ह रहैक। ते ओ चोटे घुम्र गेल आ घरिं आम्ब कए धरािं दए खसल। म्कछु बाजल नम्ह होइक। ओ बौक भए गेल।

लघुकथा- फाटू हे धरती !

पण्डितजी बेस कर्मकाण्डी छलाह। भोरस साझ धरि जतेक काज करैत छथि सभमे भगवानके स्मरण अवश्य करैत छथि। मंत्रोच्चार करैत उठैत छथि आ मंत्रोच्चारेक संग सुतैत छथि। त्रिपुण्ड आ ताहि पर लाल ठोप हुनक ललाटके सुशोभित केने रहैत छल। ताहिपरस हरदम मुँहमे पान कचरैत, लाल-लाल पानक पीक फेकैत ओ साक्षात् कालीक अवतार लगैत छलाह। कारी चानिपर ललका वस्त्र धारण कए जखन ओ भगवतीक बन्दना करए पहुचैत छलाह त वातावरणमे एकटा अपूर्व सनसनी पसरि जाइत छल।

पण्डितजीक बएस करीब ४५ बर्ख होएतन्हि। परिवारमे दुटा बेटी आ एकटा बेटा छलन्हि। घरवालीक स्वर्गवास आइस दस साल पहिने भए गेल छलन्हि। पण्डितजीक दूनू बेटी बेस सुनरि आ लुरिगर छलन्हि। मुदा हुनका पासमे टाकाक अभाव छलन्हि ते कतहु कन्यादान पटैत नहि छलन्हि। बेटा भिन्न भए गेल छलन्हिखन आ पण्डितजी अपन दूनू बेटीक संग एकठाम छलाह।

पण्डितजीक घरक आस-पासमे बेस सम्पन्न परिवार सभ छलैक। पण्डितजीक गुजरो हुनके सभहक दयासि होइत छलन्हि। बेटा अपन घरवालीक संग दरभंगामे रहैत छलन्हिखन। ओहिठाम म्युनिसिपलिटी बोर्डमे खजाचीक काज करैत छलाह। मुदा पण्डितजीके किछु दिन्हा नहि करैत छलन्हिखन। ओ अखनो पण्डिताइक बले जीवैत छलाह। दूनू बेटी सयानि छलन्हिखन। गाममे हाइ स्कूलस मिडिल धरि सभके पढ़ौलन्हिखन। आगा पढेबाक सामर्थ्य नहि रहन्हि। बिआहक लेल छटपटाएल छलाह मुदा कतहु टाका नहि भेटैत छलन्हि। बिना टकाक कोनो बर बिआह करए हेतु तैयार नहि छलन्हि। इएह सभ चिन्तामे

ओ म्चम्तत रहैत छलाह।

ओना पम्पडतजीक सम्बन्ध पूरा गाि स ि धुर छलम्न। ि दा दू-तीन पम्रवारक लोक हुनका बेसी आदर करैत छलम्खन। हीरा बाबूक ओतए त भोर-साझ दू घन्टा जरूर बैसार होइत छलम्न। ि दा पम्पडतजी ककरो कम्हओ अपना हेतु म्कछु कहलम्खन नम्ह। हीरा बाबूके चाम्रटा बेटा छलम्खन। दूटा त बाहर रहैत छलम्खन ि दा छोटका दूनू ि म्ि क उतीणषकेने छलम्खन आ बसस म्नत्य ि धुबनी जाइत छल म्कलास करए। सरोज ओ ि ीरा सेहो ओकरे सभहक संगे ि म्ि क उतीणषकेने छल।

एक म्दन सौसे गाि सुतल आ सुम्त कए उठल त गुर्म ि रम्ह गेल। सरोज चुपचाप घरस म्नपता भए गेल छलैक। घरे-घर तका-हेरी भेलैक ि दा कोनो पता नम्ह। आन्हर हीराबाबूक दोसर बेटा सेहो काम्ि एस गाएब छलैक। सौसे गाि ि कनाफुसी होि ए लगलैक। पम्पडतजी गरीब जरूर छलाह ि दा हुनका अपन पम्तष ाक पूरा ध्यान छलम्न। ओ अम्ह गम्भीर चोटके नम्ह सम्ह सकलाह आ राम्त ि सुतलाह से सुतले रम्ह गेलाह। गुर्म, सुर्म आि यम्चकत ओ सोम्च नम्ह पाम्ब रहल छलीह जे की करम्थ। ि ीरा आब एकसम्र छम्ल। आगू-पाछू क्यो नम्ह। म्पताक ि रिला चाम्र म्दन भए गेल छलै।

सौसे गाि ि सरोजक भगबाक सि ाचार म्बजली जका पसम्र गेल रहैक। ि ीराक त बकारे नम्ह फुटैत छलैक। की करए ? पाचि म्दन सभ म्दयाद-वादक बैसार भेल। तय भेल जे गाि लए कए शाद भए जाए। पैसा-कौरी हीराबाबू गछलम्खन। ि ीरास ि ित एतबा गछबा लेल गेलैक जे काज भेलाक बाद घर-घराि ी हीराबाबूक नाि कए देल जएतम्न। वएह पम्पडतजीक एक ि ित सम्पम्त छलम्न। बैसार खति भेल ि ीरा गुि सुि एकचारी म्दस देम्ख रहल छल। पम्पडतजीक

शाद नीक जका सपिन भेल। हीराबाबू रम्जष ारके गापिर बजा अनलाह। म्लखा-पढी सम्पन भए गेल। हीराबाबू िराके कहलम्खन- “िरा, िस दू िस अही घरि रह। तोरे घर छौक ने।”
िरा चुपचाप सुनैत रहम्ल जेना ठकम्बदरो लामा गेल हो। अपने गाि, अपने घरि िरा बेघर भए गेल छल। गाकि लोक ओकरा पम्त सहानुभूम्त त देखबैत छलैक ुदा िहज ित देखौटी। धीरे-धीरे ओहो खतिा पन्रह म्दन भए गेल छलैक घरक रम्जषीक। िराके आब ओम्ह घरि एक पल म्बताएब असम्भव लगैत छलैक। एक म्दन सएह सभ सोम्च रहल छल म्क लगलैक जेना दरबाजापर क्यो ठाढ़ होइक।
“हीराबाबू, अपने एतेक राम्त..?”
हीराबाबू म्कछु बजबाक म्हम्मम्त नम्ह कए पाम्ब रहला छलाह। िराक तािस अम्तपर पहुच गेलैक। ओ म्चम्चआएम्ल ——
“चोर! चोर!”
हीराबाबू भगलाह। अगल-बगलक लोकक ओम्हठाि भीि एकटा भए गेल छलैक। िरा भोकाम्स पामि कए काम्न रहल छम्ल। दाइ-िइ सभ दस रंगक गत्प-सत्प करैत पहुम्च गेल छलैक। जकरा जे िन होइक से बजैक। िरा चुपचाप सभ म्कछु सुनैत रहल। िशिः भीि ओम्हठासि हटैत गेलैक। राम्त गम्भीर भेल जाइत छलैक। सौसे गाकि लोक सुम्त रहल छलैक। िरा चुपचाप गासि बाहर भए गेम्ल। ओकरा म्कछु नम्ह बुझल छलैक जे ओ कतए जा रहल अम्छ ुदा कोनो दोसर म्बकल्पो नम्ह रम्ह गेल छलैक।
िरा बडड पढ़लो नम्ह छम्ल। शहरि कम्हओ रहल नम्ह छम्ल। ुदा तकर बादो ओकरा कोनो गि नम्ह छलैक। टीशनपर गािी आम्ब गेल छलैक आ आओर अम्धक सोच-म्बचार करबाक अवसरो नम्ह छलैक।

ओ तरदए टीकट कीनलक आ गािपर चम्ढ़ गेल। िनि बेस भी छलैक। म्किछु काल त ओ ठाढ़े रहल ुदा ताबते ओकरा म्चर-पम्रम्चत अमित सेहो ओकर सानिेक सीटपर बैसल भेटलैक। हीरा बाबूक ज्येष पुत अमित। िराके िनि धकि-धुकी करैत देम्खि ओ तुरन्त उम्ठ गेलैक।

"िरा तू कतए जा रहल छे?"

पुछलकै अमित। िरा ओकरा देम्खि कए अवाक् रम्ह गेल। म्किछु बजबे नम्ह करैक। अमित ओकरा अपना सीटपर बैसा देलकै। अमाला टीशनपर म्किछु याती उतरलैक। अमित सेहो ओम्हठाि उतरए चाहैत छल ुदा िराके एकसमर छोमि देब ओकरा नीक नम्ह लामा रहल छलैक। ओ िरास ओकर गन्तव्य पुछए चाहलकै। ुदा िरा म्किछु बजबे नम्ह करैक। बि िसम्कलस िरा ओकर कहब िम्म ओतम्ह उतमर गेल। गािी सीटी दैत ओम्हठािसि आगा बम्ढ़ गेलैक। िनिपर स उतमर कए िरा कानए लागल। अम्वरल अशुक पवाह देख अमितक िनि करणास भमर गेलैक। ओ िनिम्ह िनि म्नािय केलक जे िराके ओकर घर आपस म्दआ कए रहत चाहे ओकरा कतबो संघरष म्कएक नम्ह करए पिक। ओ बि िसम्कलस िराके चुप केलक आ अपना संगे गाि आपस नेने अएलैक।

ओम्ह म्दन पूरा गाकि बैसारी भेलैक। सभ हीराबाबूके 'म्छया-म्छया' कहलकम्न। ताबति अमित कतहुस आएल आ साफ-साफ घोरणा कए देलक जे ओ किान िराक छैक, ओकरे रहतैक। सौसे गौवा पसन भए ओकर जयगान करए लागल। ुदा हीराबाबूके जेना नअ िनि पाम्न पमि गेलम्न। बैसारीस लौम्ट ओ छटपटाएल रहम्थ। साझि बाप-बेटाि बेस म्ववाद पसमर गेलम्न। ुदा अमित हुनकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नम्ह छल आ एक बेर फेर साफ-साफ कम्ह देलकम्न जे

एम्हि अन्यायि ओ म्हनकर संग नम्हि देतम्म। बाद-म्बबाद बम्ढ़ते गेल। अन्ततोगत्वा हीराबाबू कम्बल, म्बछाओन आम्द समरओलम्म आ गामि म्बदा भए गेलाह। क्यो टोकलकम्म नम्हि। अमित मिने-मिन सोचैत रहल- भने ई आफद टमर रहल छम्थ।

हीराबाबू त चम्ल गेलाह मुदा मिराके तैयो चैन नम्हि भेटलम्म। सौसे गामि दुष लोक सभ मिरा आ अमितक बारेमि नाना पकारक कुपचार करए लगलैक। म्मतय एकटा नव अफवाह गामि एक कोनस म्मकलैत आ दोसर कोन धमर पसमर जाइत। मिराके ई सभ गत्प क्यो-ने-क्यो आम्ब कए कम्हि दैक। ओ बमि संवेदनशील छम्ल, भावुक छम्ल, तए एहन-एहन गत्प-सत्प सुम्न कए कानए लगैत छम्ल। एक म्दन अम्हना एसगरे अगनामि कनैत रहए। अमित कतहुस आम्ब गेलै। ओकरा एना कनैत देम्ख बमि तकलीफ भेलै अमितके।

“मिरा नम्हि कान!”

जेना म्क सभ बात ओकरा बुझले होइक।

“सुन! हमरि बात मिम्न ले। हमरिास म्बआह कए ले।”

मिरा आओर जोरस कानए लगल। अमित ई सभ नम्हि देम्ख सकल आ चुत्पे ओतएस सरम्क गेल। तकर बाद अमित दोबारा घुमर कए नम्हि अएलैक ओकरा लग। पूरा गामि हल्ला भए गेलैक जे अमित कतहु चल गेल। मिरा ओतेकटा गामि फेर एकसमर भए गेल छल। गामि कोनो थाह पता नम्हि छलैक। बच्चा सभके टयूशन पढ़ा-पढ़ा कए गुजर करैत छल। मुदा अमितक एकदमि गामि म्मपात भए गेलाक बाद ओ अत्यम्धक दुखी छम्ल। ककरोस म्कछु गत्प करबाक इच्छा नम्हि रहैक। एतबेमि ककरो गरजब सुनेलैक। हीराबाबूक म्पम्तयौत अमाआ बेताल छलाह।

“कहा गेल पम्णडतक बेटी..!” इत्याम्द-इत्याम्द।

ि‍राके ई सभ गत्‍प नम्‍हह सम्‍हह भेलैक। ि‍नि कहैक: ‘‘फाटू हे धरती आ सि‍ ि‍ म्‍लअ’’। ि‍दा ओ म्‍हकछु बाम्‍जओ नम्‍हह सकल। असोरापर करोट भए गेल। चार कातस लोक सभ दौि‍ल। हल्‍ला भए गेलैक जे ‘ि‍राक हाटषफेल कए गेलैक। ओ घरािि‍ सुन भए गेलैक।’

लघुकथा- उपकारक भार

ओ म्नाम ध्यिवगीय पम्रवारि पालल-पोसल गेल छल। ुदा सभ म्दनस ओकर हित्याकाका पैघ छलै। गाि मम्डिल स्कूल रहै। हीस चरा कए आबए आ फटलाही अंगा पहीम्र कए फका फकैत स्कूल म्बदा भए जाइत छल। साताि जहन ओ पथि आएल छल त िस्टर सभ ओकर पीठ ठोम्क देने रहम्थन।

पीठ ठोकैत पधानाध्यापकजी सेहो कहलम्खन-

“बाह रे बेटा, अम्हना आगू करैत रह..!”

सौसे गाि ओकर नाि तेजस्वी, सुशील ओ पम्तभाशाली बच्चाक र पि ख्यात भए गेल छलै। आ लोकक लेल धम्र ई सभ धम्नासन। ओकरा पढ़बाक धुन लामा गेल छलै। म्कताब लए लैत, हीसपर चम्ढ़ जाइत आ पढ़ैत रहैत। खेबा-पीबाक कोनो सुम्ध नम्ह। िमकिक परीक्ाि ओ म्जला भम्रि पथि स्थान पात्त कएलक। सरकारक म्दम्सस ओकरा ३०० टाका पम्त िसक छातवृम्त सेहो भेटलैक आ ओ गािस दूर बहुत दूर पढ़क लेल चल गेल। कलकता म्वशम्वदालयक ओ सम्िम्नत छात भए गेल छल। एवि् पकारेण ओ पम्ढ़ते गेल, बम्ढ़ते गेल।

कलकताि ओकरा रहए जोगर कोनो नीक स्थान नम्ह भेम्ट रहल छलै। िस म्दन भए गेल रहैक कलकता अएला। ुदा कोनो ठौर-ठेकान नम्ह भेल छलै। कम्हओ ककरो ओम्हठाि, कम्हओ कतौ। एम्हना िस म्दन बीम्त गेलै। एक म्दन म्वशम्वदालयक वाचनालयि एसगरे बैसल छल। गुिसुि। एतबेि ओकरे वगक एकटा छाता ‘िलती’ अएलै आ ओकरा एकटा हल्लुक सन चाटी िरलकै आ एकसुरे बजैत रम्ह गेलै-

“एना मकएक गुिसुि रहैत छे?”

आलोकके ओकर सभटा बातस जेना छगुन्ता लागा गेलै। ओ ि‍लती म्दस एकटक तकैत रहल। िदा मकछुए काल ओ आतलीन भए गेल। िलतीके ओकर एम्ह अन्तािष्‍ी आकृम्‍तास बि असिजस भए गेलै। कनीकाल ओहो गुम्हरल आ फेर ओम्ह ठािस चोटे घुिम गेल। आलोक मकछु नम्ह कहलकै। चुप-चाप कम्ह नम्ह की की सोचैत रम्ह गेल? साझक सि‍य लगीच छलै। वाचनालयक चपरासी कहलकै- “बाबूजी। आब सि‍य सिात्त छैक। कोठरीि ताला लगतैक।”

आलोक चुत्पे ओम्ह ठािस म्ादा भेल। आलोकक म्जनगी अम्हना अन्हम्रयाि बीतैत रहल छलै। इजोम्रयाक पत्याशाि जीम्ब रहल छल। एक-एक डेग संघरषक पृष भूिम कम्ह नम्ह ओकरा केिहर लए जाइत छलै। िदा ओ चम्लते रहल छल। नेनास अखन धम्र कष कटैत-कटैत ओकर संवेदनशीलता शीम्थल भए रहल छलै। पकृम्ताक सौन्दयस दृम्ष हटल जा रहल छलै। ओम्ह सियि िलतीक संग ओकर भेट जेना ओकर दृम्ष के एकदि बदम्ल देबाक हेतु तत्पर भए गेल होइक। यदम्प ओ िलतीस भम्र पोख गत्पो नम्ह केने छल, िदा कम्ह नम्ह ओकरास मकएक एहन आतीयता बुझाइत छलै।

िलती सौन्दयक पम्ताि्मूष छल। ओकर स्वभावक संतुलन, एवि् दृम्ष क िमिषकता एक-एक शब्दस अन्दाजल जा सकैत छल। ओ कोनो बहकल लोक नम्ह छल। िदा ओकरा आलोकक पम्त एकटा स्वत: स्फूतष् स्नेह उभरैत छलै। संभवत: ओ आलोकक संघरषक पम्त अम्धक संवेदनशील भए गेल छल। आलोकके कलकता अएला डेढ़ िसस ऊपर भए गेल छलै। िदा ओकरा अखन धम्र रहए जोगर िकान नम्ह भेम्ट सकल छलै। िलतीक िकानि बहुत रास जगह छलै। आसानीस ओ एकटा कोठरी आलोकके दए सकैत छल।

िदा आलोकस मकछु कहबाक ओकरा साहस नहि होइत छलै। आलोकक गंभीर िन ओ तजस्वी व्यक्तित्व जखन कखनो ओकरा सानि पित छलै, ओ ओम्हनाक ओम्हना रहि जाइत छल।

एही ि ि िस मदन आओर बीत गेल। वाचनालयि एक बेर फेर आलोक भेट गेलै। बेस दुखी बुझाइत रहैक। िलतीके नहि रहल गेलै। पुछलकै-

"की बात छै? आइ बि उदास लागा रहल छे?"

आलोक चोटे कहलकै-

"गाि घुमर रहल छी। लगैत अछ आब आगा पढ़ब भागि नहि मलखल अछ।"

िलती पुछलकै-

"मकएक?"

आलोक गुमि रहि गेलै। िलती कहलकै-

"चल हिरा संगे।"

आलोक ओकरा पाछू-पाछू मवदा भेल।

िलतीक मपता पुमलसक एकटा वमरष अमधकारी छलमखन आ पमि बंगाल कैडरि काज कए रहल छलमखन। ित दूटा कन्या छलमन। शीला ओ िलती। शीलाक मबआह, मदरागिन सभ मकछु सम्पन्न भए गेल छलै। िलती कलकता मवशमवदालयक आइ.ए.क. छाता छल। बिीटा िकान खाली खाली रहैत छलै। डी.आइ.जी साहैब आलोकके देमखते पभामवत भए गेलाह। गंभीर, तेजिय व्यमक्तत्व। संघरषक सियि आलोक व्यमक्तत्व आओर तेजस्वी भए गेल छल। िलती ओकर गुमिी, ओकर पमतभा आ सभस बेसी ओकर सौम्यतापर िति ़िग्ध छल। डी.आ.जी. साहेब तेज लोक छला। आलोकक पमतभाके ओ एकदि ताम्र गेलाह। आलोकक सभ वृतान्त िलतीक िहे सुनने

छलाह। कहलखिन-

“आलोक। ई अहीक घर अछि। निश्चिन्त भए रहू। कोनो बातक पयोजन हो त नि:संकोच बता देल करब। संगहि मिलतीके कखनोक पढ़ा देल करबै। गणितमे कमजोर छैक। सुनैत छी अहा गणितमे बेस मजगूत छी।”

अपना बारेमे एकटा अधिकारीक मुँहसँ एतेक रास गप्प सुनि कए आलोक गुम्म रहि गेल। मिलती अपन पिताक गप्प-सप्पसँ बेस पसन छल। ओकरा सएह उम्मीदो छलै।

आलोक आ मिलती आब संगे संग रहैत दल। संगे पढ़ैत छल, कालेज जाइत छल आ कहियो नहियो कतेक काल धरि संगे गप्प-सप्प करैत रहैत छल। आलोक मिलैछल भावसँ कहियो नहियो ओकरा की की कहि जाइत छल। मुदा मिलती लेल धनि-सन। ओ सभ चुप्पे सहि जाइत छलि।

आइ.ए.क परीक्षा लगीच छलै। दूनू गोटे परीक्षाक तैयारीमे लागल छल। आलोकक सहारा भेट गेलासँ मिलती सेहो नीक पढ़ाइ कए रहल छल। दूनू गोटे परीक्षा देलक आ नीकसँ परीक्षा उतीणष कए गेल। आलोक विश्वविद्यालयमे पथम स्थान पाप्त केने छल।

मिलती पथम शेणीमे नीक नम्बर अनलक। डी.आइ.जी. साहेब आलोकसँ बड़ पशन्न छलखिन। मुदा आलोक लेल धनि-सन। जाहि आदर्शकेँ लए कए शहर भरिमे धूम मचिल छल, सएह आदर्श गुम्मसुम्म कोठाक ऊपरी मंजिलपर कहियो नहियो की की सोचबामे व्यस्त छल।

डी.आइ.जी. साहेब मिलती सम्हत हुनकर पूरा परिवार आलोकके दिस्त करबामे जान लगा देने छल। मुदा आलोकके ई सभ कोना दनि लगै। ओकरा आवश्यकतानुसार सभ किछु भेट गेल रहैक मुदा तैयो ओ कहियो नहियो किएक दुखी रहैत छल। मुदा करए की? अभावक

असीि स्रि कतेको काल धमर हेलैत-हेलैत एकटा सहारा भेटल छलै। ि दा लामा रहल छलै जे स्रिस त उवमर गेल ि दा ओम्ह टापूक कोनो गहीर कूपि डुम्ब जाएत जाम्हस फेर ओ नम्ह म्नाकम्ल सकत।

आम्खर डी.आइ.जी. साहेब आ हुनकर पमरवार ओकरा एतेक िदम्स म्कएक करैत छैक? ि दा कम्रतै की? कोनो दोसर म्बकल्पो नम्ह छलै। आगू बढ़ए, सहारा छोमि म्दए त फेर वएह असीि स्रि देखाइत छलै- अभाव, कष ओ संघरषक चरिात्कारष कतए जाए? की करए? असि जिसि जीम्ब रहल छल। इएह सभ सोचैत छल की िलिती ऊपर आम्ब गेलै।

िनि एकाएक भंग भेलै। ओकरा एना गुमि देम्ख िलिती कम्ह उठलै- "चल, चल नीचा चल। आइयो एम्हना गलफुल्ली रखबै की? तोरे कारण त हि एतेक नीक नम्बर लए कए उतीणषभेलहु अम्छ। चल, तोरा भमर पेट मिठाइ खुएबौ।"

आलोक हसल आ िलितीक पछोर धए लेलक। नीचाि डी.आइ.जी. साहेब आ ओकर पमरवारक सभ लोक आलोकक पतीक्ाि छलाह। ओ सभ आलोकक स्वभावस पमरम्चत भए गेल छलाह आ ते म्कछु कहलम्खन नम्ह ि दा ओकर अन्यनिस्कताके त ओ म्नामित रपस ताम्र गेलाह। डी.आइ.जी. साहेब बात बदलैत कहलम्खन-

"बी.एस-सी.ि कतए नाि म्लखैब आलोक? अखन म्कछु सोचम्लयैक नम्ह? हरि म्बचार त अम्छ जे एहीठाि कलकता म्बशम्बदािलयि नाि म्लखाउ। कारण ई नीक म्बशम्बदािलय अम्छ।"

आलोक चुप्पे रम्ह गेल। फेर आन-आन बात होिए लगलैक। ताबतेि टेलीफोनक घन्टी बजलैक आ डी.आइ.जी. साहेब जररी काजस ऑम्फस म्बदा भए गेलाह। िलितीक िए सेहो कतहु उम्ठ कए चम्ल

गेलै। आब ित िलती आ आलोक ओतए रम्ह गेल छल। िलती गत्प शुर करैत कहलकै-

“आलोक। तू बि नीक लोक छे।”

आलोक एम्ह बातपर हम्स देलकै। कहलकै-

“नीक त छी िदा…।”

“िदा, िदा म्किछु नम्ह! जे कम्ह रहल म्छयौ से सुन। एहीठाि रह आ संगे संग दूनू गोटे बी.एस-सी. करब। कोनो बातक म्चन्ता नम्ह कर।”

आलोक कम्ह नम्ह कोना- ‘ह’ कम्ह देलकै।

िलतीक खुशीक ठेकान नम्ह छलै। ओ दौिल घर गेल आ एक बाकुट मिठाइ आम्न कए आलोकक िहि ठुम्स देलकै। आलोक िधुर खाइत चल गेल।

िलती आ आलोक एकटा नाि कि दू अंश भए गेल छल। भावुकताक संग पम्रम्स्थम्तक साि जिस्य कए लेने छल आलोक। िदा भावनाक तरंगि बम्ह जाएब सेहो ओकरा पम्सन नम्ह छलै। ओ अपन लक्ष्यपर अम्डग छल। जीवनि ओकरा बढ़बाक छलै। एही कारण ओ बहुत म्किछु स्वीकार कए लेने छल। िदा ओ अपनम्हस लगाओल लतीि ओझराए नम्ह चाहैत छल। ओिहर िलतीक भावतिकता सीिम्लंघन करबाक हेतु उफान केने छल। आलोक एही कसाि सीस परेशान छल। िदा बीचि संगाि सि भामा जाएब ओकरा िजूर नम्ह छलै। ओ िलतीके पढ़ए-म्लखएि भम्रसक िदम्त करैक। गत्पो-सत्प कए लैक िदा ओम्हस बेसी म्किछु नम्ह। िलतीक िन ओम्हस भरैक नम्ह। असंतोरक रेखा ओकर चेहरापर स्पष देखार भए जाइत छलै। संतुलन बनएवाक दृम्ष्ट स आलोक कम्हओ काल डाम्टओ दैक। िदा िलतीके ओकर डाटो िठे लगै।

आलोकक स्वभावस ि‍लतीक पूरा परिवार प्रभावित छल। मुदा ओकरा लेल धम्म-सन। ओकर पूरा ध्यान पढ़ाइमे लागल छलै। जे किछु समय बाचल रहैक से ि‍लतीके पढ़बएमे लगा दैक। आओर किछु नहि। ि‍लती ओ आलोकक प्रगाढ़ अन्तरंग सम्बन्ध ओकर माए-बापके छलै मुदा ओ सभ आलोकक स्वभावस परिचित छलाह। ि‍लती भले बड़ भावुक छल, मुदा आलोकक संतुलित, संयत ओ अन्तर्मुखी व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय छलै। ओहिर आलोकक अन्तर्मन ओकरा प्रति कएल गेल उपकारक भारस दबल छलै। ओकर किछुओ सहारा सम्भव जाइक तामे हेतु ओ ि‍लतीके पढ़बैत रहैत छल।

बी.एस-सी. परीक्षाक िति दू मास शेर रहि गेल छलै। प्रतिदिन १०-१२ घन्टा ओ स्वयं पढ़ैत छल आ शेर समयमे ि‍लतीके पढ़बैत रहैत छल। परीक्षाक समय ज्यो-ज्यो निकट अएलै, ओ ि‍लतीक पढ़ाइक प्रति अपेक्षाकृत अधिक सचेष्ट होमए लागल। ओकर एहि परिशमिक परिणाम भेलै जे ि‍लती पुनि प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण केलक, संगे आलोक विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त केलक। एक बेर फेर ओकर घरक वातावरण आनन्दमय भए गेलै।

ओहि राति ि‍लतीके निन नहि भेलै। कहि नहि की की सोचैत रहि गेल। भोर भए गेल रहैक। चारि कात लोक काजमे लागि गेल रहैक। मुदा आलोकक कतहु पता नहि रहैक। किएक भेलै एतेक अबेर उठबामे? से सोचैत ओ आलोकक घर दिस बढ़ल। घरक केबाड़ी खूजल छलै। चौकीपर एकटा चिट्ठी राखल छलै।

ि‍लती चिट्ठी खोलि कए पढ़ए लागल-

“प्रिय ि‍लती!

बहुत रास गप्प करबाक मनि छल। मुदा कहि नहि किएक किछु

बजाइत नहि छल। तोरो बहुत रास गप्प करबाक इच्छा रहल होएतौक सेहो हम बूझल अछि। तोरा लोकनिक उपकारक भारस हम ततेक दबि गेल छी जे आब एको घड़ी एहिठाम नहि रहि सकब। कहि नहि तोहर सभहक कजा कहियो सधा सकबौक की नहि? माफ करिहे।”

तोहर
आलोक।

मिलती आकाश दिस शून्य भावस देखैत रहि गेलि।

लघुकथा- सनकल

नहमरक काते-काते वो चल जाइत छल। फाटल-चीटल नुआस देहक लज्जावरण दैत दूनू हाथे दूनू बच्चाके कोरतर दबने एक सुरे बढ़ल जाइत रहए। जेठक ठहा-ठही रौद। चार कात कतहु क्यो नम्ह। ा्दा ओ अपमसयात भेल बढ़ले जाइत छलै। मक भेलै ओकरा से नम्ह कम्ह? पाय: ओ सासुरस र मस गेल छल। थाकल, ठेम्हयाएल वो पाकमि क छाहमर देमख बैमस गेल। ओकर आमखस नोर झर-झर खसए लागल। के पोछत ओकर नोर? सुनैत छल जे सासुरि लोकके बि सुख होइत छैक। सासु-ससुर, मदओर, मदयामदनी सभ छलै ओकरा। ा्दा सभ जेना जर्नी दुश्नि रहैक ओकर। ओकर अनेरे मखदास करब जेना ओकरा सभक धषि रहैक। खेबो-पीबोक ओकरा कष` छलैक। घरबला कसुित छलैक। ा्दा भैयारीि सभस छोट होयबाक कारण पमरवारक ॠृण ओकरापर बहुत रहैक। भाए सभ गरीबीि छलैक। ते जे चामर-कौरी कइितो छल से कैठाि बमट जाइत छलैक। स्तीस ओकरा पेि त छलैक ा्दा कालक पभाव ओकरो नम्ह छोि लकै। सयि बीतलास ओकरा सौन्दयषसौष व कि भए गेल छलैक आ ओकर ध्यान ििशि: कोनो आन स्तीपर केमरत होिए लागल छलैक। ओ स्ती सुनमर त छलै, संगम्ह ओकराि आधुमनकताक पुट सेहो छलैक, आंमाक चत्तिकार छलैक आ यौवनक ादकता ओकरा आकरषाक केन्र बना देने छलैक...।

कोना-ने-कोना इएह बात सभ ओकरा कानि पिलैक जे ओकरा पचाओल नम्ह भेलैक। दमरराक भार फराक, तंदुर स्ती घटैत से छलैक आ ओि हिर घरबलाक उपेक्षपूणषआचरण...।

ािन जेना बेरक्त भए गेल रहैक आ तए एक मदन वो सासुरस काखक तर बच्चाके दबने भामा गेल।

नैहर धम्मक त छलै ि दा भाए सबहक राज। म्माता िम गेलै आ िए सेहो बुढ़ भए गेल छलैक। क्यो घरि िजर नम्ह करइ। ि दा बेटीक त की नम्हरे की सासुरे। आ तए जखन वो नैहर पहुचल त चार कात गाि क नव-पुरान लोक ओकरा घेम्र लेलक।

"म्कछु सुनम्लऐ? फलनाि क बेटी सासुरस भामा अएलैक अम्छ।"

इत्याम्द-इत्याम्द, जकरा जे फुराइक से बाजैत छलै। आओर वो हतपभ बीच अगनाि ठाढ़ रहए। के खोइछ खोलत आ के पम्टया ओछा कए बैसए कहतैक। अपने घरि वो आन बनल छल। क्यो सहारा नम्ह बुझाइ।

ताबति पाण दाइ कतहुस एलम्खन आ कहलम्खन-

"दूर जाइ जाउ। केहन पाथर भए गेलहु अहा लोकम्न..! बेटी डाटी छइक आइ आएल, कामि चल जाएत। तकर अनादर म्कएक करैत जाइत छी।"

कैटा कम्नया सभ आम्ब गेल छलैक ओम्ह आगनि। तीनटा ओकर भाए छलैक। भम्र-भम्र म्दन वो जेठकाके कोरा खेलबैत रहैत छलैक। जाि क ि सि रौदि तेल लए देह ि लैत रहए आ कनेको जहा बच्चाके सदी होइक त जेना ओकर पाण सन दए रम्ह जाइत रहैक। ि दा आइ चाम्र-पाच म्दन अएला ओकरा भए गेल छलैक आ ताधम्र जेठकास टोका-चाली नम्ह भेलैक। भाए सभ तीनू तीन ठाि भए गेल छलैक आ िएके तीनू गोटे मम्ल कए फराक खोमि स दैत छलैक।

हाम्र कए जखन ओकरा कोनो भाए नम्ह पुछलकै त िएक संगे रहए लागल। िए त िए होइत छैक म्कने। रम्ह-रम्ह कए नोरक धार बहाबए लगैत छलैक। उच्च सुनैत छलैक आ ते ओकरास जे खुम्ल कए गत्पो करैत सेहो नम्ह होइक। कारण जे ओकर बात कम्नया सभ सुनबाक हेतु टाट लागल रहैत छलैक। कहबी छैक जे गेलहु

नेपाल आ कषिगेल संगे। सएह पमर ओकरो भेलैक। सासुरि सासु, ननमद आ मदयामदनी त नम्हरा ई कमाया सभ ओकर जानक जपाल भए गेल छलैक। तैयो िाए लग छल। अम्हठा मकछु स्वतंतता त छलैक।

“सएह की हाल अम्छ ओकरा सन-सन हजारो कन्याक जकरा सासुर ने नम्हरे- क्यो कतहु सहारा नम्ह होइत छैक?”

सएह सभ सोचैत रहए। सोन दाइ सोन दाइ, सौसे गाि सोर रहैत छलैक। गोर नार दप-दप छल वो। ओकरा सभ गुण छलैक। िदा गुणस की हो? टाकाक मबआह होइत छैक। मपता धमाक त छलैक िदा कंजूस छलमखन। बेटीक भाग नम्ह देखलमखन आ एकटा साधारण लोकस ओकर मबआह करा देलमखन सौसे गा मछया-मछया कहलकै।

“सएह हौ, लोचनो बाबू, मबचार घोमर कए पीमब गेलाह। बेटीक भमबष्यक कमायो मबचार नम्ह केलाह। पाइ त अबैत जाइत रहैत छैक।”

इत्यामद-इत्यामद। बेटा सबहक भमबष्यक मचन्ता जबरस्त छलम। की होएत की नम्ह? बेटी त दोसर धर चल जाइत छैक। ओकरास वंशक रक्त त नम्ह होइत छैक। िदा बेटा त कुलक आधार छैक। सएह सभ हुनकर पुरनका मिजाज सोचैत रहैत छल।

सासुरि दमरा चरि सीिपर छलैक। सभ मदयामदनी िर आ कूटए। रोटी ठोकए। धनकुटी करए। मदरागिनिक पन्रह-बीस मदन धमरत ओकरा क्यो मकछु नम्ह कहलकै। िदा कालि सभक व्यवहार कठोर होइत गेलैक। पमटदारी छलैक मकने।

“गे ियो भमर मदन बैसल रहतौ जेना फरफेसरक बहु हो..!”

घरबला जाबत काल रहैक ताधमर क्यो ओकरा मकछु नम्ह कम्हतै। ओकरा काजपर जाइते फेर वएह राि वएह खटोली। ओकरा बासन

छुआओल गेल आ ि शि: ओ पार लगा कए चौका-बासनक काज करए लागल। ि दा ओम्हि घरि त पम्टदारी छलैक। जेठकी म्दयाम्दनी बि ि ूि छलैक। ओकर इच्छा जे कुटनी-म्पासनीि सेहो पार लगौक। म्कछु म्दनक बाद ओकरा सन्तान हेबाक सम्भावना भेलैक। ि दा ताम्हस की? भानस-भात, कुटनी-म्पासनी आ ताम्हपर स सासु ओ ससुर तथा म्दयाम्दनी सबहक कटाह गप्प-सत्प।

सुनैत-सुनैत ओकर दि फुलैत छल। ि दा करए की? ककरा कम्हतै अपन दुख। चार कात अन्हारे-अन्हार बुझाइक। जकर घरोबला ओकर पक्षि नम्ह होइक ताम्ह स्त्रीगणक भगबाने ि म्लक होइत छैक आ सएह पम्र ओकरो छलैक। ओना, नवि ओकर घरबला बि आव-भाव रखलकै। नव-नव कपि ि-लता सभ चीज आम्न-आम्न दैत छलैक।

ि दा ओकरा ध्यान जेना ि शि: हटैत गेलैक। ओ एसगरे हकासम्ल-म्पायासम्ल भम्र म्दन आ दुपहर राम्त धम्र काज करैत रहैत छल। क्यो एहन नै भेटलैक जकरा अपन ि निक भाव कम्हतै, जकरा लग ि नि भम्र कम्नतै।

“उपाय त छलैक। ि दा बोराक आि आ बेटीि मम्थिलाि कोनो अन्तर नम्ह छैक। साम्छ देनम्ह कल्याण। आ ज एक बेर ककरो गाराि बाम्न्ह देम्लअम्न त फेर जनि भम्रक लेल म्नचैन भए जाउ। धन्यवाद कही मम्थिलाक सि ि जिके जे एखनो धम्र अपन स्त्री सि ि जिके एतेक म्नरघीन जीबन म्बतएबाक हेतु ि जिबूर कए दैछ।”

इएह सभ बात ओकर ि निि उठैत रहैत छलैक। ओि हिर ओकर भाए सभ अपनाि म्मन-म्मनाउज कए लेलकै आ सभ अपना-अपनीक धन जि ि करैत छलैक। सभके कोठा छलैक। जम्हआ ओ नैहरस कनैत म्बदा भेल छल तम्हयो ओकर म्पताके कोठा छलैक। ि दा अखन त

ओकरा बुझाइत जेना दोसर ठाि आम्ब गेल हो। चार कात पोखमरया-पाटन छलैक। सएह, धन एतेक आ िन कतेक छोट छै ओकर भाए सबहक। ठीके छै कहबी जे टाका आगू लोक सभ सम्बान्ध म्बासमर जाइत अम्छ।

म्कछु म्दन नैहरि रहलाक बाद ओकर सासुरक लोक अएलैक। बि उपरागा-उपरागी भेलैक। आ ओकरा फेर लोक सासुर लए गेलैक। ुदा एम्ह बेर त ओकर सासु बाढ़म्नाये नेने ओकर स्ाागत केलक। एवि्-पकारेण आनो-आनो लोकक आचरण ओकरा पम्त कठोर होइत गेलैक। ओकर गहना सभ बेम्च देल गेल रहैक। ओ ििशि: अकान ओ सुन भेल जाइत छल।

एक म्दन ओकरा ने आगू फुराई आ ने पाछू। म्दािग म्बाजलीक करेन्ट जका फेल कए गेलैक। ओ फेर भागल नैहर। एम्ह पकारे नैहर-सासुरओ कै बेर केलक। सभठाि ओकरा उपेका भेटैत छलैक। नैहरोस ओकर िन उचम्ट गेल रहैक। ते ओ सोचलक जे बरे लग चली। जेना-तेना हराइत-भुम्तयाइत ओ बरक डेरापर पहुचलत जे देखलक से देम्ख कए गुमि रम्ह गेल। भोरक सयि छलैक ओकर घरबला कोनो दोसर स्तीक संग एसगर घरि रहैक। ओ चोटे घुमि गेल आ भागल भागल-भागल नम्ह जाम्न ओ कतए गेल।

एिहर ओकर खोज-पुछाम्र होिए लगलैक आ कएक म्दनक बाद एकटा टीशनपर ओकरा लोक बैसल म्कछु-म्कछु रखने फाटल-म्चटल कपिा पम्हरने देखलक। ओ ठहाका भम्र कए हसैत छलैक- जेना सिस्त सिजपर हम्स रहल हो। ओकरा ने कथुक लाज छलैक आ ने धाक। ुदा लोक सभ कहए लगलैक जे ओ एकदि सनम्क गेल छल। ओ एकदि गुमि भए गेलैक। तकर बाद फेर कम्हओ ककरोस नम्ह बजलकै।

लघुकथा- ाािमत्त म्बासजष

सौसे गाकि नवतुम्ग्रया सभ एकटा बैसार केलक। छोटका लोकक तथाकम्थ्थत आि किताक पुरजोर म्बारोध करबाक दृढ़ म्नािय कएल गेल।
नेर्ाी बाबू गाकि गाकि नार्ाी लोक छलाह। चार बेटा एक-स-एक पदपर छलम्ख्रन। सभ कािसुत। वो बैसारिि बीचिि बम्कि उठलाह-
“जतेक जे जुलुि भए रहल अम्छ ओम्हिि बकिे लोकक हाथ अम्छ। छोटका लोकक ई साहस जे हिरा लोकम्नाक हरबाही छोम्ि म्दए। खबाम्सनी सभ आगन अएनाइ छोम्ि देलक। ई सभ छोटका लोकक करनाि नम्ह म्थक अम्पातु एम्ह सम्त्त काजिि सुधीर बाबूक पगम्तशील म्बाचारक पुत बेचनक हाथ म्थक। छोटका लोक सभके भारण दए-दए सनका देलक अम्छ।
“जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरती पर तूफान रहेगा आम्द-आम्द नारा के म्सखौलक?”
चार कातस थपिा पिए लागल। तय भेल जे सुधीर बाबूके उपराग देल जाए। संगे ईहो तय भेल जे गाकि कोनो खबासके आम्थ्थक सहायता नम्ह देल जाए।
सभा म्बासम्जत भेल। सौसे रस्ता लोक अरष्बरषबजैत चल जाइत रहल।
बेचन बेस फनैत छलाह। बैसारक एक-एक बात घरे बैसल पता लगा लेलाह। एिहर बैसार खति भेल ओ ओिहर फेर नारा बुलन्द भेल-
“जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरतीपर तूफान रहेगा...।”
सौसे गाि डोम्ल गेल। कारण ओम्ह स्परिि पयात्त शम्कतक पसफुटन भए रहल छलैक। चार कातस एके बात जे ‘बकिा लोक सभके

रस्तापर आनेके है। जान रहे मक जाए।'

एम्हि मजनाइस रिबे नीक। एवि्-पकारेण गाि एकटा मसम्मल नाफरबानीक दृश्य देमख रहल छल। एक मदस गाकि धनीक, सशक्त लोक सभ दोसर मदस छोटका लोक सभ खाली देह, खाली पेट लेने बम्कि रहल छल-

"...धरतीपर तूफान रहेगा।"

छोटका लोकि आघात पमत्तघातक समरपहु शमक्त नम्हि छल। जम्हिआस वो सभ अबाज बुलन्द केलक तम्हिआस कतेको घरि मडमबाया नम्हि बरल। कतेको रामत्त कोराक बच्चा भुखले सूतल। ुदा तैओ ओ सभ कोनो बिका लोक क खेत जोतए नम्हि गेल...।

ओम्हि मदन हाट लागल रहैक। दाािदर बाबू हाट करए जाइत छलाह। गाकि सभस धनीक लोक दािदर बाबू। हाटे-हाट तरकारी उठौना अबैत छल। ुदा जम्हिआस छोटका लोक सभ हितालपर चल गेल छल तम्हिआस अपने गछािि तरकारी बाम्हि कए दािदर बाबू लबैत छलाह। तरकारी लए कए उठम्हि पर छलाह मक मारसनाि पर नजमर पिलमत्त। ुदा टोकलकमत्त नम्हि। कए बेर बजौलमखन-

"मारसनाि..? मारसनाि..?"

ुदा ओ अमत्तठया कए चल जाइत रहल।

दाािदर बाबूके नम्हि रम्हि भेलमत्त। झटमक कए आगू बम्ढ़ ओकर गटा पकमि लेलमखन।

एतबेि औ बाबू जतेक ओकर मदयाद-वाद सभ छलैक सभ दािदर बाबूके घेमर लेलक। दाािदर बाबू जेना-तेना जान लए कए भगलाह। रस्ता भमर पमत्तशोधक आमास धधकैत रहलाह।

ओम्हि घटनाक दस मदन भए गेल छल। दाािदर बाबू इलाकाक नाीि-गाीि पहलवानके जाि कए लेने छलाह। बारह बजे रामतिि सभ

पलहवान मारसनिक घर घेमर लेलक ओ मारसनिक घरस माकलैत देरी खाम्ही लगा बान्हह ओकरा ि्हि गोइठा ठुम्स देलक। मारसनि मास्सहाय, ओतएस देखैत रहल। ओकर आम्खक सानिे ओकर घरवाली म्चकरैत रहल। िदा मारसनि हाथ-पैर पटमक कए रम्ह गेल। असगर वो १५टा दैत्यक सानिा नम्ह कए सकल। भोर भेला पर ओकर घरवाली बीच आगनि बेहोस पलि रहैक। मारसनि धारक काति बेहोश छल।

सौसे गाि हल्ला भए गेलैक। बेचन दौलि अएलाह। ओ गरम्ज उठलाह। िदा जे हेबाक छल से भए गेल छल। छोटका लोक सभ एकटा भए गेल। बेचन फेर नारा देलकै-

“धरती पर तूफान रहेगा..!”

अम्ह नाराक कोनो पम्तकृया मारसनि ओ ओकर घरवालीपर नम्ह पलैक। ओ दूनू गोटे ओम्हना बेसुध ठाम्हि पलि छल।

गाकि बुढ़ सभ ओम्ह घटनाक बारेि सुनलक आ अनम्दया देलक। गाकि लेल ओ कोनो नव बात नम्ह छलैक। ह,एतबा अवश्ये जे वतिीन पम्रपेक्ष्यि ई घटना एकटा दुस्साहस सन लगैत छल। िदा एकर बाद फेर नारा कम्हओ नम्ह सुनाइ पलैक।

‘धरती पर तूफान रहेगा।’ केर संकल्प जेना केतहु दहा गेलैक। ओम्ह घटनाक बाद छोटका लोक सबहक बैसारी भेल रहैक। सभस सीनीयर िइन्जन बम्कि उठल छल नवतुम्रयापर। िम्लक लोकमाक वो बेस चचिा छल। गरम्ज कए कहलक-

“तोरा लोकमाके मारमाम्टआ नचैत छौ। एतेटा म्जनगी ईहे िम्लक लोकमाक संग म्बता देम्लऐक। कम्हओ कोनो झगिा-दन नम्ह भेलैक। खबाम्सनी आगन सभि काज करैत रहलैक। कम्हओ कोनो बातक म्सकाइत नम्ह केलक। िदा ई छौि सभ अमाआ-बेताल बनल हे!”

कोनो नवतुरियाके साहस नहि भेलैक जे विघ्नजनक विरोधमे किछु बाजए। सभ चुप भए एकदम गुमकी लािद देलक। बैसार खतम भेलैक। गामक बिका लोकमे हुनकरी अएलैक। सभ कियो दादिर बाबूक पशंसा करैत छल। सभ अपने दादिर बाबू बड़ नीक लोक छथि। आबहु-आबहु...।

आ फेर ओहिठाम दिनस पटुआभरनी सभ मारहथक ओहिठाम काज केनाइ सेहो शुरू कए देलक। सौसे गाममे फेर ओहिना चहल-पहल रहए लागल...।

पछबारी गामक बालीके तीनटा बेटी छलैक। तीनू तीनटा मिलकक अगनामे काज करैत छलैक। सभ सासुर बसिस आएल छलैक। ओदा गरीबक की सासुर आ की नैहर? ककरो बास सासुरमे नहि भेलैक आ सभ कए बखसल गिए लग रहैक। कहि नहि कैटा धिया-पुता छलैक तीनू बहिनके।

ओदा सबहक धिया-पुता गोर-नार। देखैमे सुनर त छलैहे। बेस तेजो सभ छलैक। पछबारी गामक बालीके लोक चुटकी लिरै जर र ओदा ओकरा लेल धमन-सन। ओ अपनो त ओही रस्तास गेल छल। पछबारी गामक बाली अपना समयमे सुन्दरि छल। ओकरापर दादिर बाबूक नजरि गरि गेलन्हि। ओकर बियाह अपन खबासस करा देलन्हि। खबास शुरूएस नंगराइत छल।

एक दिन हल्ला भेलैक जे तेतरि तर केदन्हि सभ ओकरापर आक्रमण कए देलकै जाहिमे ओ गम्भीर रूपस घायल भए गेल। बादमे किछु दिन जेना-तेना खेपि ओ स्वर्गवासी भए गेल। तहियेस पछबारी गामक बाली दादिर बाबूक क्षत्रछायामे पोसाइत रहल। पछबारी गामक बालीके ओकर बादो कैटा धिया-पुता होइत रहलैक। ओदा कैक बेर गाममे गुल्लर उठलैक।

दािदर बाबूके चला-चलती रहम्ना। के बाजत हुनकर म्बारोधि।
पछबाम्र गाि बालीक तीनू बेटीके ई गत्प्ा बूझल छलैक। ओ सभ अपन आचरणोि एम्हि बातके पुष स स्मष कए रहल छम्ल। दािदर बाबूके तीनटा पुत छलम्खन। आ तीनू फराक। तीनू बम्हन तीनू िम्लकक घरि काज करए।

काज त जे से ओहुना ओकरा सभहक आएब-जाएब रम्हते छैक। ुदा पछबाम्र गाि बाली असगरे ओम्हि टोलि हो से गत्प्ा नम्हि। एकटा म्खस्सा सबहक नाकि संगे जुिल छैक। ओना ई सभ ततेक सािन्म्य घटना भए गेल छलैक जे ककरो म्बाशेर ध्यान ओिहर जेबाक पशे नम्हि छलैक।

ओम्हि म्दन छोटका लोक सभि बेस हल्ला भेलैक।

ओना सािन्म्यत: ओम्हि टोलि हल्ला होइते रहैत छलैक। ते ककरो ध्यान ओम्हि हल्लापर नम्हि जाइक। पुरवाम्र गािवाली उतरवम्रया टोलक एकटा बिका लोक छौिक संगे कतहु राम्तिि भामा गेल छलैक। ओना काना-फुसी त होइते रहैत छलैक। ुदा गत्प्ा एतबा धम्र बम्ढ़ गेल अम्छ, तकर अन्दाज ककरो नम्हि रहल होयतैक। भम्र म्दन टोलि एही बातक चचा होइत रहलैक।

एवि्-पकारेण सौसे गाि पुरनका लोकपर फेर सरकए लागल। ुदा बेचनक आतिा एम्हि सभ गत्प्ास दुखी छल। ओकर िनि िम्सताक आमा सुनमा रहल छल। एि.ए. उतीणषछल अथषाास्त लए कए। आम्थषक पम्रपेक्म्ि गरीब सबहक सािम्जक शोरण ओकरा बि पैघ जुलुि लगैत छलैक। ुदा वो लित ककरा लेल। क्यो ओकर गत्प्ा सुनबाक हेतु तैयार नम्हि छलैक।

गरीब सभ दाना-दानाक िहताज छल। ओकरा रोटी चाही से जेना हो। ने ओकरा हेतु कोनो सािम्जक िन्म्यताक कोनो िहत्प्ा छलैक

आ ने नैम्नकताक ओकरा छुम्न छलैक। ाित रोटीटा चाही। ाुदा बेचन बुझैत छलैक जे ओ सभ भूखक आवेशर्ि रोटीर्ि जहर मिला कए मामर रहल अम्छ। सािजक नार्ि लोक सभ जे पम्नष ाक पात ािनल जाइत छम्थ, म्नानके लोकम्नाक आचरण देम्ख वो कुब्ध छल। ाुदा कइये की सकैत छल? असगर वृहस्पम्नायो झूठ। जे शोम्रत वगषछलैक तकरा लेल धम्न-सन। ओ सभ ओहीर्ि रमि गेल छल। ाम्लक सबहक नेकरि करबर्ि। दूटा रोटी खाएब ओ ाम्लकक हुकुि बजाएब। ई सभ एकटा साान्य घटना भए गेल छल। ओकरा सभ हेतु ने देशक आजादी कोनो रंग अनने छल आ ने बेर-बेर होाए बला चुनाव सभ।

अलबता जखन चुनाव होइत छलैक त लॉडस्पीकरक आवाजस ओ सभ एक बेर चौक जर र जाइत छल। छोटका लोकक नेता सभ ाइन्नजन लए कए घरे-घरे राम्न भम्र घुर्िक। सभके पाच-दसटा र पैया दैक ओ सभके नीकस सीखाबैक जे कतए ातिक ाहर ारिबाक छैक। साइम्कल छाप, तराजू छाप, घोाि छाप आम्द-आम्द। एकटा रोचक पसंग होइत छलैक चुनाव ओकरा सभ लेल। ाुदा कै बेर जाधम्र छोटका लोक सभक लोक सभ ातिदान खसबए जाइत छलैक ताधम्र ओकर सबहक ाित खम्स पाि रहैत छलैक। ओ सभ ातिदान केन्रपर जाि भीिक तािसा देम्ख कए आपस भए जाइत छल। कोनो पम्नकृया नम्ह।

स्तीगण सभ अपनार्ि गत्प करैत-

“गे दाइ, हरिा त बाि डर लगै रहइ। कोना कए ाहर ाम्रम्नाऐ। कही हाम्किर पकमि लइत।”

म्कछु स्तीगण सभ अम्हना गत्प-सत्प करैत छलैक म्क पैाििलीग करैत पुम्लसक जीप भीिक कारणे ओतम्ह ठाढ़ भए गेलैक। सभ क्यो

जान-बेजान भागल। बाह रे तिदाता! बेचन ई सभ देमख रहल छल्। ओकर िन कससिा रहल छलैक। ुदा की करए। एम्हना कम्ह नम्ह, कैक बेर चुनाव अएलैक, गेलैक। ुदा ओकरा सबहक लेल धम्म-सन।

एवि्-पकारेण सौसे गाि दू खण्डि बटल रहल। शोरक ओ शोम्रतक बीच एहन सौिनस्य देमख बेचन कुब्ध छलाह। ओ सोचलाह जे एक बेर फेर पयास कएल जाए।

राम्तक ९ बाजल रहैक। ओ छोटका लोक सबहक घरे-घर घुमि कए अपन घर लोम्ट रहल छलाह। बिका लोक ओ छोटका लोक सभक बीचि नाम्हटा कलि छलैक। धराि-धराि। चार म्दम्सस बेचनक कपारपर लाठी बरसए लागल।

“आब बोलो बि चला है हीरो बनने। यह कालेज नही है। गाि है।”

पता नम्ह की की बजलै वो। आ पम्रणाति: बेचन धारासाही भए गेलाह। सौसे गाि हल्ला भए गेल। छोटका लोक सभ म्त:सहाय भए ओम्हना अपन-अपन िम्लकक काजपर चम्ल गेल। बेचनक लाश ओम्हना एसगर राम्त भम्र पलि छलैक। भोर भेने दाििदर बाबू थानाि रपट म्लखा अएलाह।

िििला रफादफा भए गेल। ओम्ह गाकि िम्त्तक स्मर सभ म्दनक लेल गुमि भए गेल।

दुगानन्द िण्डल

लघुकथा- सीख

नामहयेटा ि बुधुआ बुम्ढ़या दादीके एक मदन तंग-तबाह केने छल।
“दाय यइ दाय एकटा मखस्सा कमहयौ। नीनि मखस्सा कमहयौ। झब-दे कमहयौ, नमह त ठोठ दाम्ब कऽ िमर देब।”
“रउ सरधुआ, छोि ने रौ। गरदैन छोि ने, नमह त िमर जाएब।” दाय जोरस मचम्चआ-मचम्चआ ई कहैए।
“अरौ बाप रौ बाप। ई छौि हरि िमर देलक!”
बुधुआ दाइक गरदैन छोमि देलक आ जा कऽ दाइक कोरािि बैस जाइए, मखस्सा सुनैले।
दाय मखस्सा शुर केलैन। एक नगरि एकटा राजा छेलइ। ओकरा फूलक एकटा बिका फुलबािी छेलइ। जइि सभ तरहक फुल रोपल छेलै आ बहुत रास फूल फुलाएलो छेलइ। जइि एकटा बि सुन्दर फूल मखलल छल। नहिर आ सुन्दर सेहो छेलइ। सभ फूल ओकरा राजा-गुलाब कहै छेलइ। रसे-रसे राजा गुलाब आन-आन फूल सभस अपन पसनता पाम्ब अंहकारी भेल जे छल। ओ एतेक अहंकारी भऽ गेल जे आब ओ आन-आन फूलस बातो ने करए चाहै छल। िदा आन-आन सभ फूल राजा गुलाबक ऐ बेवहारके ओकर नादानी बुम्झ ओकरा समिान दइते रहल।
ओइ राजा गुलाबक जमिि एकटा बेश नहिर कमरया पाथर गािल छेलइ। अकसरहाँ ओइ कमरया पाथरके ओ राजा गुलाब डाँटैत रहै छेलइ। जे तोरा कारण हरि रप आ सौन्दयषखराप भऽ रहल अम्छ। तो केतौ मकए ने चम्ल जाइ छे।

ओ पाथर कएक बेर राजा गुलाबके सझिौलक। जे एतेक घण्डि नीक नइ होइ छइ। ुदा राजा गुलाब अहंकारि ितल अकैि कहलक-

“अरे काला पाथर, हि रा आगाँ तोहर कोन तुलना। तू त हि रा शरणि पि लि छे।”

सयि बीतैत गेल। मकिछु म्दिनक पछाइत एक बेकती ओइ फुलबाि ीि आएल। घुि ति-घुि ति ओकर नजैर ओइ पाथरपर पि लै। ओ ओकरा उखाम‍ि अपना संग नेने चम्लि गेल। राजा गुलाबक खुशीक कोनो ठेकान नम्हि रहलै। ओ सोचए जे नीक भेल ई पाथर ऐठाि सि हम्टि गेल। अनेरे ई हि रि सुन्दिरताके खराप करै छल।

सयि बीतैत गेल। थोि बे म्दिनक पछाइत ओही फुलबाि ीि एक आदि ी ओइ फुलबाि ीि आएल। ओकरा ओ राजा गुलाब फूल खूब नीक लगलै। ओ ओकरा तोमि एकटा मि्दिरि जा भगवानक ूि मि्तक चरणि समि्पत क ऽ देलक। राजा गुलाबके ओतए एकदि नीक नै लगै छेलइ। ओकरा अपन पैछला म्दिन-राम्ति ि नि पि ए लगलै। ओकरा फुलबाि ीि भेटए-बला सम ि ान सेहो ि नि पि ए लगलै। ताबत ओकरा केतौस हसी सुनाइ पि लै। ओ गुलाब एि हिर-ओि हिर चार कात तकलक ुदा केकरो ने देलक।

ताबत ओकरा एकबेर म्दिव्य आवाज सुम्नि पि लै-

“राजा गुलाब, तू एि हिर-ओि हिर की देखै छे। हि रा देख। हि वएह पाथरक ूि म्तिष छी, जेकरा तू ओइ फुलबाि ीि तुच्छि बुम्झि सम्दिखन कटैत रहै छेले। आइ देख जे तू हि रा शरणि पि लि छे।”

राजा गुलाब त आि यश्चम्कित छल। बाजल-

“भाय पाथर, तू एतए एले केना?”

ओ ूि म्तिषर पी पाथर बाजल-

“सून राजा गुलाब, जे बेकती हरिा एतए अनलक ओ एकटा िमिषकार छल। ओ हरिा छेनी-हथौरीस तोमि-तामि पाथरस भगवान बना ऐ मिंदरि स्थापित कऽ देलक। आ तू..?”

राजा गुलाब आतमि ग्लानिस भरल ओइ िमिषर पी पाथरक सानिे मसर झूका कि याचना करैत बाजल-

“भाय, अहंकारीक मसर सदखिन मानियाँ होइते छइ। अत: िनवके अपन अहंकारक त्याग कऽ देबाक चाही। तामक ओकरा अपन हस्तीक पता रहइ।”

से सुन बौआ रौ बुधुबा, एतए बदाशिी नइ कर। सुन कहबी छै- िटा मदअ अपन हस्ती यमद मिटावा चाही मक दाना, िमटि मलि कऽ गुले-गुलजार होइए।

सीख- कखनो फूलक सािन नै जीबू, जइ मदन जर र मखलब आ तोडल जाएब।

जीनाइ यमद छह त पाथर बमन जीबह, जइ मदन तराशल जेएब, भगवान बमन जाएब।

बुधुबा त तात दाइक कोरि अमलसा गेल छल।

<u>लघुकथा- बोझ</u>

अशफी बाबाके ाित दू गोट सन्तान। एकटा बेटा आ एकटा बेटी। दुनू नैम्हयेटा स पढ़-म्लखैि बि तेजगर। छेटगर भेलाक बाद बेटीके म्बआम्ह अशफी बाबाम्नाचेन भऽ गेला। म्कछु म्दनक पछाइत बेटोके म्बआम्ह म्नाचेन भेला। बेटा बी.कि केने छेलैन तए म्दल्लीि एकटा नीक पाइवेट फाषि नोकरी भऽ गेलइ। कनी म्दन त बेटा जेना-तेना म्दल्लीि असगरे रहलै, बादि ओ अपना घरवालीके सेहो गाि सि म्दल्ली लऽ गेल।

आब घरपर रम्ह गेला अशफी बाबा आ हुनकर घरवाली। भगवतीक कृपास घरवाली म्नारोग पर्मि लागल छेलैन जे खेती-पथारी नीक नहाम्त कऽ लइ छल। बीस बीघा जथा रहबाक कारणे अशफी बाबाके कथुक खगता नम्ह बुझना जाइ छेलैन। अन-पाम्नास साल भम्रक बुतात म्नकाम्ल फील फाम्जल भेलाक बाद बेच-म्बकैन कऽ नीक पाइयो भऽजाइ छेलैन। नून-तेल-तीन-तरकारी लेल त धानेक पान त ाि र सैयाके म्कए न पान। जीवन-यापन बि बम्ढ़याजका चलै छेलैन। ािदा एते भेलाक बादो कम्हयो-काल जीवनबाि एकाकी बुझना जाइ छेलैन। म्कएक त घरि ने त नाम्त-नाम्तान रहै छेलैन आ ने पोता-पोती। बेम्टयो-जाि ए आ बेटो-पुतोहु अपन-अपन म्जनगीि ि स्ति रहै छल। केकरो ाि ए-बापक सुम्ध लेबाक पलखैत कहा। बेटी-जाि ए त दोगा-दोगी फोन-तौन कैयो लैन ािदा बेटा-पुतोहु सोाि नी अपनेि ि स्ति।

ऐबेर साि य-साल नीक भेलाक कारणे खेरहीक फम्सल नीक छल। तीन छोहेन सम्हैर कऽ तोाि लाक बाद अशफी बाबा ओकरा तैयार कऽ नीक दाि पाम्ब करीब दू ाि न घरबेद-ले रम्ख करीब पाच बेरा बेच लेलैन। चाम्र हजार र पैआक म्हसाबस बीस हजार र पैआ अशफी

बाबाके भेलैन।

निे-निे म्हसाब बैसा पाच हजार र पैआ घर-बेद सयि-कुसयि-ले रम्ख पनरह हजार र पैआलऽ अशफी बाबा म्दल्ली अपना बेटालग चलला। म्दल्ली पहुच डेराकपतास बस लऽ बेटाक डेरापर पहुच केबाकि ढक-ढकौलैन। केबाि खेलैत एकटा बच्चा भीतरेस पुछलकैन-

“कौन है?”

ओ बच्चा अशफी बाबाके नै म्चन्हैन। पछाइत पुतोहु घरस मनकैल, ससुरके देख गोर लामा केबाकि पटाके भीतरे म्दस खोलैत भीतर एबाक लेल कहलकैन। अशफी बाबा भीतर जा टेबुलपर राखल त्लाम्श कक बोतलि भरल पाम्न उठा बेम्सनि कुकु-आचनि कऽ गछिास हाथ-िह पोम्छ कुसीपरबैसला। आगाि चाहक कप एबास पम्हने कम्नया अपन घरबलाके फोन केलैन जे गासि बाबूजी एला हेन। पता नै म्कए? से ऑम्फसस सोझे डेरा चल आउ।

बेटा िथपर हाथ लैत म्कछु सोचैत बजला-

“अच्छा ठीक छइ।”

आ तखनस गुि-धुनि पमि गेला। जे बाबू म्कए एला हेन। डेरा पहुचला, परनाि-पाती केलाक बाद वातावरण एकदि शान्त भऽगेल। दुनूपरानी निे-निे सोचैथ एक त म्बतीय वरष भेलाक कारणे हाथ खाली-खाली। बेतनक कोनो थाह नम्ह। ऊपरस ऐ बेरक नोटबन्दीक िम्र, बेटाक म्रजल्ट एला बाद ओकर एडिशिनक सम्स्या। बेटीक सेहो ऐ स्कूलस बदैल दोसर स्कूलि नाओ म्लखाएब। कम्नया सेहो नैहर जेती। म्कएक त बम्हनक म्बआह छैन। एहेन सयिि बाबूजी एला हेन। पता नम्ह की िगता आ केते िगता। ऐ बीचि कोनो फौनो-तौन नम्हये केने छेम्लऐन, पता नम्ह की सोचैत हेता..?

अही उहापोहि एक म्दन आ एक राम्त बीत गेल। िदा वातावरण

म्बालकुल गि गीने छल। बापक सोच म्कछु और छल आ बेटा-पुतोहुक म्कछु आर। ओ सोचैत जे देम्खयो, केहेन सयि ि बाबूजी कपारपर आम्बा बम्स गेला। की करी आ की नम्ह करी, सस्यिा बनल छल। दुनू परानीके म्कछु फुरबे ने करैन। अशफी बाबाक वास्तम्बक ओजनस कइ गुणा ओजन गर हुनका दुनू पानीके बुझना जाइन। दोसरे म्दन जखन कोनो तरहक खास गप-सत्पा नै भऽ सकल त अशफी बाबाके होइन जे हि र बेटा-पुतोहु कोनो तकलीफि अम्छ। ओम्हर दोसर म्दन जखन गाि एबाक लेल अशफी बाबा कोनो चचेने केलैन त आरो भारी सस्यिा भऽ गेल। आब त हुनकर बेटा-पुतोहु देवो-म्पातरके कोसए लगलम्खन।एक त हाथ खाली ऊपरस बाबूजी आम्बा बैसल छैथ। अशफी बाबाक ओजन त जेना बढ़ले जाइन।

थाम्क-हाम्र तेसर म्दन जलखैक उपरान्त अशफी बाबा गाि स आनल पनरहो हजार र पैआ बेटाक हाथि दैत बजला-

“बौआ, हे ई राखह। पनरह हजार छह। ऐबेर बि सुन्दर खेरही भेल छल। पाच बोरा बेचलौ। दू नि घरो-वेद सयि-कुसयि-ले रखलौ। पनरह हजार र पैआ छह। तू अखनी म्दकतदारीि छह सयिपर काज औतह।”

ई कहैत अशफी बाबा जे स्मयं बेटा-पुतोहु लेल बोझ बनल छला से बेटा-पुतोहुक बोझ उताम्र गाि एबाक लेल म्बदा भऽ गेला। बेटा-पुतोहु त अबाक्..!

की ठीके एहेन जि िना चम्ल एलै जे अपन पाच आदि ी पम्रवारि छठि आदि ी बापक र पि बोझ बोझ छै, बोझ?

डॉ. बचेशर झा

ि‍लाइल गाछक फूल : जगदीश पसाद ि‍ण्डल

'ि‍लाइल गाछक फूल' क लेखक शी जगदीश पसाद ि‍ण्डलके हि‍ साधुवाद दैत ि‍छयन्‍ि‍ह जे ि‍हन्‍दी आ राजनीि‍त शास्‍ति‍ एि‍.ए.क अहि‍ता पाप्‍त होइतहु अपन ि‍ातृभाराक पि‍त अटुट ि‍सनेह राि‍ख ि‍ि‍थलीि‍ लेखन करबाक भगीरथी पयास कएल अि‍छ। ओना त ि‍ि‍थलीि‍ अनेकानेक साि‍हन्‍यकार लोकि‍न चेर्टा कएल अि‍छ। हुनका लोकि‍नक भाराि‍ फेट-फाट भेटल अि‍छ, ि‍कन्‍तु ि‍लाइल गाछक फूलि‍ सुच्‍चा लोकभाराक पयोग भेटैत अि‍छ। पान्‍जल भारा गि‍या भाराक आगा घुटना टेक दैत अि‍छ, जन साधारण अल्‍पो ि‍शि‍क्षतके गुद-गुदीक संग ि‍वरय अन्‍तस्‍थलीके छुि‍ब लैत अि‍छ। वैचाि‍रक दृढ़ता एवि‍् हाि‍र्दक ि‍दुलताक अदुत सि‍ाहार जगदीशजीि‍ ि‍वरल अस्‍ि‍ातत्‍वक पि‍रचय दैछ। उपन्‍यासक पत्‍येक लेखपर ि‍ाने उपकथापर दृर्ि‍ट दैत छी त स्‍पर्ट पतीत होइछ जे एकर लेखक जेना पत्‍यक्‍दशी भऽ ि‍वरयक ि‍ार पण कएल अि‍छ।

ओना त ि‍शक्षाक सीढ़ीके पार कऽ लेखक कलाक बलवती इच्‍छा राि‍ख ि‍ि‍थलीक वाि‍टकाके पल्‍लि‍वत-पुर्ि‍पत करक भरपूर पयास कएलि‍न अि‍छ। गाि‍ ठाि‍क ि‍वलक्षण ि‍चतण ि‍हनक लेखनीक ि‍वशेरता ऐ पोथीि‍ देखल जाइछ। ि‍हनका भारानुरागीक संग ि‍ातृभाराक ि‍सनेही कही त सवथा उपयुक्‍त होएत। ऐि‍ सााि‍जक ओइ वगक सि‍ीक्षा कएल अि‍छ जकरापर आइधि‍र ि‍कयो सोचबो ने कएने छल। ि‍ाजिल ठेठ गि‍आ बोलीक ि‍ि‍थलीि‍ सि‍ाि‍हत कएने छि‍थ।

हि‍रा त लगैत अि‍छ ि‍ाए ि‍ि‍थली लेखकक ि‍ाथपर चि‍ढ़ कऽ एहन

चित्कारी उपन्यास मलेखक हेतु पेमरत कएल अमछ। फमणाशर नाथ रेणु आ यातीजीक उपन्यासि सामिमजक रहन-सहन वैचामरक ममनता अथाभावक कारणे स्वामममानिक हनन जौ देखबाि अबैत अमछ त सिपिमत उपन्यासि वमणास घटना आ घटनास पातक पत्यक मदग्दशाम अमत िमिक अन्तर िनके सोचवाक लेल उत्पेमरत करैछ।

िधुबनी मजलाक बेरि गािि जन्ि नेममहार लेखक एतेक सुन्दर, सुवोध आ सुगिि ढंगस मबरएके मार ममात कऽ पाठकक मजजासाके अन्त धमर बढ़बैत गेल छमथ जे मचकन, चोटगर आ चयन लेल वाध्य करैत अमछ। िमथली सामहत्याकाशक ई ज्योममषीन नकत्त सदृश उदूत भऽ िमथली सामहत्यक भंडारके सिृदिता अनबाि योगदान कएल अमछ।

ओना त औपन्यामसक मचारानुसार ऐ उपन्यासि तुमट अमछ। एकरा उपन्यास कहल जाए वा सामिमजक ममबंध तइ पमरपेक्यि मदान पाठके ममणष कऽ सकैत छमथ। ििदा हिरा त लेखकक ऐ उपन्यासि कालानुसार घटना आ पातक मचतणि ताल-िलिक अभाव भेटैत अमछ जेना- एक ओर अनुप वोममहारक बेटा बौएलाल भूख-मपयासस आकुल अमछ इनारक पामि भरबाि डोरी डोलक पयोजन छैक त दोसर मदमस रिाकान्त आ हीरालालके आधुममक कालि शराब चुस्कीक चचा होइत अमछ तए उपन्यासक मबरए-वस्तु सिए बद नै रहलास औपन्यामसक दोर लमकत होइत अमछ। स्वीकार करए पिित अमछ जे महनक ई उपन्यास मबरय-वस्तुके तइ रपे सिटिने अमछ जेना मसतुआि सििर सिाएल हो।

लेखक जगदीश पसाद िण्डलजीक पयास आ आयास दुनू साराहनीय छन्मह। हिि िमथलीस पाथमा करैत छी जे महनकाि स्फूना बनल रहमि जामहस िमथली सामहत्यक सिविदमा होइत रहए।

मिथिलाक विभूति आयाची मिश

मिथिलाक भूमि एहन अछि जाहिठाम अदौसँ मा मैथिलीक कोखिसँ विदा भास्कर लोकनि जन्म ग्रहण करैत रहलाह अछि।

एहि सबसबक मावमिे मा मैथिलीक कोखिसँ एक एहन सूर्यक उदय भेल जे जन्म-ग्रहण कऽतहि अपन रश्मिसँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक केँ आलोकित कएल। विदाध्ययन कऽ कौल्लक मयादाक रक्षा कएलन्हि। एहन पात: स्मरणीय सन्तोरी, तपस्वी, निलोभी एिम् करास् त व्यवत भनिाथ मिश छलाह। हिनकासँ पूमिआ पछात्तयो अनेक सरसतिीक रिद पुत लोकनिक नाम लेल जा सकैछ जे मिथिलाक रहितहु मिथलेतर पान्तोमे अपन नामो् लि कएने छलाह ओ लोकनि थिकाह- ''गौतम, कणाद, याजल्िय, उदयनाचार्य, पक्षधर, मण्मन मिश, ािचस्पित, जय कृष्णा, तीलोचन, हरि मिश, गंगेश, विदापित, चन्दा झा, भारती, गागी, लक्ष्मीनाथ पभृित।'' एहूमे अधिकाश सरसिक माविमे उत्पन्न भेनिहार छलाह। तप: पूत, परम जानी, शास्त्रानुसार चलनिहार एिम् नन्यायक क्षणात भनिाथ मिश आजीिन ककरोसँ किछु याचना नहि कयल ते ई अयाचीक नामसँ बहु चिर्चत भऽ गेलाह। अपन उपनाम अयाची सँ जगत विख्यात भेलाह। अभाि ओ असन्तोरके अपना लग कहियो फकिे नहि देलन्हि। मात सिा कटा बाडी जगह खेत ओ खिरहानक काज करैत छलन्हि। एहीसँ जीविका चलैत छलन्हि। दुिसा दूबिक रस खाय रहैत छलाह। ते अयाची साग-पात खाय काया ठाढ रखने छलाह। भिनाथक 'अयाची' िक तोडबा लए दैविक आ लौकिक पलोभिन सभ आएल मुदा ई िस-सँ-मस नहि भेलाह।

एहि तरह सन्कल्पक पालनमे हिनक धममपती भिनीक सेहो सराहनीय सहयोग रहल। एहन आवस्तक दम्पितक कोखिसँ अदुत

सॅंस्कारी पुतक जन्म भेल कहबी छैक 'बाढे पूत पिताक धर्मे' बालकक नाम शॅंकर मिश्र राखल गेल। शॅंकर शॅंकरे समान छल। त्यागसँ अमरत्वकि प्राप्ति होइछ। असली सुख त्यागेसँ भेटैछ। त्यागी लोकक तुलना ककरोसँ नहि कएल जा सकैछ। अयाची मिश्रक सासांरिक सुखक त्याग एक प्रेरणा पुॅंजक रूपमे अछि। वास्तविक ओ विशेष आनन्दक अनुभूति त्यागीके होइछ। बिना सॅंकोच कहल जा सकैछ जे अयाची पारखी छलाह ते ने ओ त्याग मय जीवन जीबाक आदर्शमउपस्थित कएल। एहि सन्दर्भमे कवि कि उक्त अछि-

> "धन्य-धन्य मातृभूमि, सकल ज्ञान-गुणक खान
>
> कतहु सबा कटा मात बाडीक साग-पात,
>
> औखन चमकैत अछि अयाचीक स्वाभिमान।।"

पूजा-पाठमे लीन रहनिहार अयाची पलखति भेलापर विद्या विलासमे लीन होथि। हुनक ख्याति सर्वत्र पसरि गेल छल। जखन दूर-दूरसँ विजजासू छात्र लोकनि शॅंकाक समाधानार्थ हुनका लग अबैत छल तँ ई अपन बालकके पठा देथि। आगन्तुक छात्रके झुझुआइत देखि अयाची बुझि जाथि जे बालक शॅंकरक शिष्य कम ते ई लोकनि अपन अपमान बूझैत छथि तखन ओ कहि देथिन्ह जे शॅंकरक शिष्य नहि देखू।

बालक शॅंकरक प्रखड विद्वताक थाह पाबि ओ लोकनि स्वीकारैत छलाह जे मिथिलाक जतेक नाम सुनल ताहिसँ बेसी एहिठामक विशेरता अछि। अयाची पुत्र शॅंकरक सॅंस्कार देखि मुक्त कण्ठसँ हिनक भाग्यक भूरि-भूरि प्रशॅंसा करथि। भवनाथ जौ महादेवि तौ भवानी सद: पातिव्रता पतीक छलीह। स्वधर्म पतिक अनुगामिनी, सती साध्वी ओ परम सहिष्णु छलीह। किुरीसँ सूत कावि स्वित्र अपन आ पतिक हेतु

ओकरआउन कऽ लैत छलीह। अभाि घर रक्हतो आक्तथ्य भामि अगगणी छलीह। जनशुक्त अक्छ एक समय अक्तथ्य-सत्कारक हेतु घरमे ओकरआउन नक्ह भेलापर लोि बन्धकी राक्ख भोजन सामगी जुिए बाडीसँ खम्हार उपाडैत छलीह कक एक तमघैल सणिममुरा पाप्त भेलक्ह। भिनी पुलकक्त भऽ गेलीह जे आब दक्ररीक अन्त भऽ जाएत। मुदा अयाची लोक्ह सणिममुराक तमघैलके अपन पुत शॅक्रक िरा राजाक कोरमे जमा करा देलक्ह ककएक तँ माक्व कि धन राजकोर क्थक। एक्हपर हुनक पती क्वचक्लत रक्ह गेलीह। एकरा दैिी पलोभन कक्ह सकैत छी।

क्मक्थलाक सभ्यता ओ सॅस्कृक्त सॅसारक सभ्यता ओ सॅस्कृक्तसँ शेष अक्छ। क्वक्भन ठामक क्विान एक्हठाम िरे रक्ह अपन जान क्पपासाके शान्त करैत छलाह। एक्हठामसँ सभ्य ओ सुसॅस्कृत भऽ जाइत छलाह। अपन सॅस्कारक पक्रचय लग-भग पाचे िरक्क अक्स्थामे अयाची पुत शॅक्रर क्मक्थलेशके जखन देल तँ ओ अिक् रक्ह गेलाह आ अयाचीक तपश्चयाक पसादात् बालक बुक्झ नतमस्तक भऽ अक्भनन्दन कएलक्ह- शकरक उक्त :

“िलोहॉ जगदानन्द, नमे बाला सरस्ति‍ती,

अपूणे पॅचमे िरे िणियाम जगतयम्।”

भिनाथ ओ भिनी दुहुक कमम्कमलसँ धमक्क जे पराग झडल ताक्हसँ क्मक्थलाक माक्व अपलक्खत अक्छ।

अयाचीक क्नलोभता पसि पमाण तखन भेिछ जखन क्मक्थलेश बालक शॅक्ररक सॅस्कारसँ सॅतुष भऽ अपन िशि कीमती रतक माला दगक्म उताक्र शॅक्ररक गरामे पक्हरा देल आ एक मोिरी सणिममुराक सॉि सिहॉ हाथीपर बालक शॅक्ररके अयाचीक मीहक माक्व माथमे लगएबाक हेतु नेने एलाह। क्मक्थलो क्यत ढॉिसँ तत्कालीन महाराजक

सम्मान कएल। महाराज क्हनक दैन्य दशा देक्ख खोक्स हेतु पयाप्त धन पदान करबाक ईच्छा पगि कएल तँ अयाची करदि कहल-

“अपने हमर िकके नक्ह तोडू। हमरा कोनो िस्तुक पयोजन नक्ह अक्छ। ई िस क्मक्ह जाय इएह हमर आकॉक्ष।”

क्मथलेश हुनक चरण रज लऽ अपना कए धन्य मानल। बादमे भिनी बालक शॉक्रक कमाइ पुरस्कारसँ क्भज करोलक्ह तँ पसन भेला जे आब दक्ररता भावा जाएत मुदा तत्क्णक्ह बालक शॉक्रक जन्मक समय मरनी चमैनके क्नछाउर क्कछु नक्ह देने छलीह से मोन पक्ड गेलक्ह।

ताक्ह समय सहरमकहल जे ई सभि रत सिणममरनीके बाजा कए देल जाय। दुनू पाणीक मतै् यसँ मरनी मरीनके दऽ देल गेल। ओहो एक्ह पाप्त धनके धममकाज बुक्झ पैघ पोखक्र खुनाए देलक। जे मधुबनी क्जलान्तगमत विदमान अक्छ, मुदा काल-कमे ई पोखक्र विकृत ओ भथन भऽ गेल अक्छ जे औखन चमक्नया-मािर नामसँ जानल जाइछ।

एखनहुँ ई श्लोक अयाची क्मश पुत शॉक्र आ पक्धर क्मशक पक्त अक्छ-

“शॉक्र ििचस्पक्तयो:

शॉक्र ििचस्पक्त सदृशी,

पक्धर पक्त पकी भूतो

न भक्ित।”

अथात् शॉक्र ओ ििचस्पक्त तँ महादेि आ िृहिस्पक्तये छलाह।

कहल जाइछ जे अयाचीक शरीर पक्षधर मिशक बाद भेल छलाह। ईहो अनुमान अछि जे मिश उपाध्य- ओहि समयमे विनि लोकनिक होइत छल। खेदक विषय अछि जे एहन उदाि न्यायक पण्डित अयाचीक कीर्तिमगाथाक कोनोाि पमाणिक पोथी- आ हिनक जन्म सम्बन्धी ई. सनक परिचय- ठोस रपमे नहि पाप्त अछि।

अयाचीक कमाउल भूमि सरिसब अदाावधि म.म. सर गंगा नाथ झा एमि् हुनक पुत लोकनि सन विभूतिक जन्म देने अछि। कवि सेहो अयाचीक मीहक मावि माथमे लगबैत कहि उठैत छथि-

“हे मीह! अमर कीर्तिक निधान

जकरा कण-कणमे सिाविमान।

विथक विप अयाचीक ातिमान

से मावि विथक चन्दन समान।

सबा कटा बाडीक साग

रखने छल अयाचीक पाग।।”

अन्तमे शदा सुमन चढबैत एहि मिथिलाक विभूतिके नमन करैत छी।

मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा 'यदुरि'क देन

सहरसा जिलाक पाचीन लेखक ाि कवि लोकनिक विस्तृत परिचय पाप्त करबाक साधन नहि अछि। यद्यपि हुनका लोकनिक रचना अधिकाशत: पकाशित होइत छल 'मिथिला मोद'मे परन्तु कोनो साहित्यकार अपन परिचयक पसंगमे नहि लिखैत छलाह।

यदुनाथ झा 'यदुरि' मैथिली भारा एिम् साहित्यक विकासक लेल 'मोद युग'मे जे कोनो अनिरत साहित्य रचना करैत रहलाह ताहिमे सँ एक पमुख व्यिक्त रहथि 'यदुरि' सहरसा जिलाक मुरहो गामक िसी, कशीके संस्कृतक विािन माक-तार विभागमे जीविकापन रहथि।

मिथिला मोदक एक सश् त लेखक आ व्यापक अथमे जातीय हित चिन्तक छलाह। हिनक जन्म अनुमानत: 1888 ई. तथा मृत्यु 1932 ई.मे भेलिन्ह। मोदक जन्मिहसँ हिनक रचना उपलब्ध भेल छल। म. जयकान्त मिश हिनक पसंगमे कहैत छथि- 'Enthusiasm for Maithili unbound, Very few well Parallel to him' मैथिली साहित्यमे गीतक जे एकिा सश् त परम्परा अछि ताहि कममे यदुरिजी बहुत गीतक रचना कएने छथि। ओकर विरय िस्तु पतिपादन करबाक शैली आदिमे परिितन कऽ देलिन्ह। गीतहुमे हुनक निि दृष्टि कोणक अभिव्यिक्त भेल अछि। गीतक अिति्त अनेको कविता, कैकिा मिन्ध मिथिलाक एक जििल समस्या, िािहक समस्याके पस्तुत करैत कथा आदि पकाशित छिन। हिनक विचारधारा कतेक पगतिशील एिम् आधुनिक छलिन से स्पष र पे अभिव्य् त भेल अछि। मैथिलीक राष्टीय गीतक संकलन मैथिली वाताजलीक भूमिकामे संकलन एिम् पकाशन कय यदुरिजी एकिा निि दिशाक संकेत कयलिन्ह जकर ऐतिहासिक महति छैक।

भूमिकामे स्पष्ट कहने छथि : जान शृंगारिक सम्बन्धी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचल गेल अछि आब राष्ट्रीय विषयक कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचेबाक अछि। आब राष्ट्रीय विषयक कविताक प्रकाशन होयब परमावश्यक अछि। एहिसँ बोध होइछ जे मैथिलीमे राष्ट्रीय भावना एवम् आधुनिक विचारधाराक प्रादुर्भाव होमए लागल। शंकरक विरहि नामक गल्प, प्रभात प्रभा, मैथिलीक आरती नव युगक लोकोक्तिसँ। ग्रीष्म ऋृतु वर्णित भ्रमर आदिक काव्य रचना तथा चिन्ता आदिक निबन्ध प्रकाशित छनि जकर उल्लेख आगाँ कयल जाय।

मैथिली समाजक व्यापक रूपे बहुत कवनिक मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक उन्नतिक हेतु सतत संघर्षशील। यद्यपि कतहु कतहु परम्पराक पालन कयलनि तथापि विषय-वस्तु एवम् शैलीमे दूहूमे नवीनता आनि देलनि। देश भक्ति भावनाके स्पष्ट रूपे मुखरित कयने छथि।

सर्वप्रथम प्रस्तुत अछि हिनक किछु गीत। स्वभाविक धार्मिक प्रवृत्तिक रहबाक कारणे भक्ति गीतक रचना करब स्वभाविक। थोड शब्दमे हृदयक भक्तिभाव अभिव्यक्त करैत- 'दुर्गाक वन्दना :

जय जय दुर्गे, दुर्गति वारिणी,

भव भय हारिणी रिपु संहारिणी,

जन सुख कारीणि तारीणि,

दिव्य तनु धारिणी जगदुपकारीणि,

कैलाश संग सतत विहारीणि,

जय नारायणी नरक निवारीणि

यद्यपि अधम उधारीणि।।

तीनि गीतमे चण्मीक न्दिना कयने छथ्वि। जाक्हिमे देश भव्तक भानिाक जे अवमक्यिव्त भेल अछि से पातीएसँ स्पष होइछ।

> ‘‘मक्थिलाक मान राखू भारतमे चण्मी, एरहु सभ पाप हो रामा।।’’

दोसर गीतमे भगतिीके उपराग दैत छथ्वि्न्ह जे जाक्ह भूमक्सिँ अहा जन्म लेलहुँ तकरे आइ दुदशा अछि आ से अहा देखैत छी। विरम स्त्रिु एमि् विचारधारामे कतेक आधुनिकता छलक्नि तकर उदाहरण अछि-

‘‘मैथ्लिीक आती नामक कविता।’’ एक्हिमे मैथ्लिी अपन सन्तानके करण सरि अपन दुदशा दूर करबाक लेल कहैत छथ्वि्न्ह। मथ्लिा वशक्तिि समाजके जे अपनाके पिुदि मानैत छलाह क्न्दीिए मोय छलैन्ह। हुनका लोकक्पिर ने आँगिजक मातृभाराक पेमक पभाि आ ने बॅगालक नि जागरणक। अपने घरमे अपन मातृभारा छोक्ड क्न्दीिक भ् त बक्नि अपनाके गौरविक्ति बुझनिहार मैथ्लिल छलाह। सदिेश, सि भारा, सजािक्तिसँ विमुख मैथ्लिल सन दोसर जािक्त भव्सिके छल होएत। ते ओहन पिुदि मैथ्लिलक हेतु-

> ‘‘की अपराध हमर अछि कहु-कहु मथ्लिलाक सपूत सुजान।
> भए रहलहुँ अछि पतन दृमक्नि सौ हम अनित दुक्दिन खक्सहान।।
>
> चूक्मि-चूक्मि मुख हमक्ह क्सिखाओल बाजब माय-बाप अछि।
>
> विलरै छी सभ हमर आई कमिए हा ओ अहा लोकक्नि पेमाक्दिया।।
>
> ताकू ऑक्खि उठाय कनेको क्थिकहुँ मैथ्लिी माय अहाक।

खैने लात मारै छी घर-घर, कोनहुँ विधिए जीनि राख।।

दोसर कविता अछि 'नयुिक लोककेँ नम स्कािरदन'

कवि नयुिक लोककेँ आग्रह करैत छिथ जे ओ लोकिन आलस्य छोिड़ भारा, जाितक विकासक लेल कवि िदिध भय जािथ तािह हेतु केओ उपहासो जौ करए तँ करए िदयौ।

हँसय देिख यदिप केओ अहाके हँसय िदयौ मन पोख,

देश, जाित ओ धममहेतु िनज िकछु तँ समय बँचाउ,

कोनहु विधि देशक सेिक सबथल राम जँचाउ।

सािहयमे भमरक चचा उत्यिधक होइत रहल। भमरक गुॅजन कानके तृप्त मनिह करओ, मुदा ओकर सिभाि िनन्दनीय मानल जाइछ। लोभी, मुदा यदुिरजी र पे उदार चिरत व्यिक्तक सॉग तुलना कएल।

एिह मान्यताक खण्मन कय नि दृिष्ट कोणक स्थापना कयलिन्ह अछि। हुनक मते भमर कपटी निह अछि ओ तँ गुणक अन्िरण करैत रहैछ। एक फूलसँ दोसर फूलपर जायब गुणक अन्िरण करब िथक। समाजहुमे गुणिन व्यिक्तक आदर होबक चाही। गुणिन व्यिक्तक गुण गाहकक अभाि निह।

''कारी देिख भमर सब तोहर, करइत छिथ उपहास,

कपटी र प कहै छिथ सब और दैत अिछ तास।

कारी र प विकित यदिप तो िकन्तु सकल गुण ख्यात्

गुणगाए जन करइत छिथ जगमे गुणी जनक सम्मान।''

जकहना भमर चकचमतकहना कोइली आदृत। ऋतुराज सिन्तक णिम। सिन्तक आगमन सदेश बाहक कामदेकि एक शस् त सैकक बथक कोइली। परच यदुरिजी एहू मान्यताके खकम त कय जागरणक दूतमानलक्ह अवछ। एकि ओ कोइलीसँ भारतसिीक पारस्पकरक ईष्या, रिके व्य् त करैत कहैत छवथन्ह।

“सुमकर सुमकर तोहरा हे कोककल, नयन नीर किरसाबै,

भाग्यहीन भारतसिीके जनु कक्हयो विसराउ।

सभके बचन सुनाय कहतक पुक रि, विरोध हैिउ।”

विरय-स्तुमे निीनता अनिक कममे उपेकक्त तुच्छ स्तुक णिम कय एकि नि कदशाक सूत पात कयलक। उल्लू, रेलबे सशिनक कसॉनल, मोकसयानी, कुकुर आवदपर काव्य रचना करब कहनक मौवलकताक पवरचायक बथक। उदाहरण सरि प- मोकसयानी :

“शाक्त भरल छुए जे मोकसयानी,

तोहर गुणके सभ केओ मानी,

कलमक मावर खाइओ ढेकर,

तथावप दैत छ मकस पकािवर।”

एक्ह पकारे यदुरिजीक काव्य रचनाके ससि कोनो ने कोनो पकारक मौवलकता, निीनता अवछए। सदेश, सभारा आ सभ जावतक कहत कन्तान, ओकर उनवतक हेतु अथक पयत करब सॉवह ओकर अवधकार पावतक लेल सॉघरशील रहब पधान उदेश्य छल।

वमवथला, मैवथल एिम् मैवथलीक लेल कतेक पेम छलवन तकर

उदाहरण सरिप चारि पाती-

> “सूनू औ बन्धुगण त्यागू ई विरधर कान्दके
>
> कर्तव्य पालनमे लागू, भजु मातु पद अरविन्दके
>
> गाथि एकताक सूतमे, कहनका जगाउ सब मिकल कए,
>
> निज देश मिथिला, जाति मैथिल, मातृ भारा मैथिली...।”

अस्तु शुभम्...।

मैथिलीक विकासमे नेपालक योगदान

सन्दर्भमबोध- मैथिली साहित्यक उत्पत्तिक जनमानसक हृदयसँ भेल अछि ते एहिठाम जनमानसक हेतु मनोरंजक गीत काव्य ओ नाटिकक पधानता रहल अछि। एहि कारणे मैथिली साहित्यक विकासधारा मिथिलहिटामे नहि पाहित भेल पत्युत् मिथिलाक अतिरिक्त एकर पधानधारा उतर नेपालमे एिम् दोसर पुरिचल पदेशमे पाहित भेल। जहा तक िस्तविकता छैक नेपाल आ मिथिलाक सम्बन्ध सदा-सर्वदासँ आत्म रहल अछि। कर्णाटिर्शीय राजा हरि सिंह देि मुसलमान आततायी गयासुदीन तुगलकसँ पराजित भऽ मिथिलासँ भावा नेपाल गेला ओतहि राज्यक स्थापना कएल। मिथिलाक विािन लोकनि सेहो अपनाके असुरक्षित बुझि नेपालेमे आशय लेलनि। नेपालक तत्कालीन राजा लोकनि मैथिल विािनिक बड सम्मान कएलनि। ओहिठामक राजा सांगीत आ नाटिकक विशेर पेमी छलाह। कला ममर्ज्ञ मैथिल विािन अपना संग अनेको विरय-िस्तुक पाण्डुलिपि लेने गेल छलाह ते हुनका सभक समादृत हएब उचिते छल। संगीतसँ परिपूर्णम मैथिली नाटिकक रचना नेपालक तत्कालीन राजा लोकनिक अिधिमे मैथिल विािन िारा भेल। यैह कारण जे नेपाल मैथिला विािन आ भाराक केन्द्र भऽ गेल रहए।

नेपालमे मैथिली भाराके राजकीय भारा मान्यता भेिट गेल छलै। मुख्य भाराक रूपमे मैथिली गनल जाइत छल। साहित्यक हरेक विधा एहिठाम अनुपालित भेल। एहुखन नेपालक तराई क्षेत्रमे मैथिली भारी कए मिथिलाक संस्कृतिक स्पष पभाि देखल जाइत अछि।

'नाटयम् रसात्मक काव्यम्' काव्य क्षेत्र तँ आरो चमत्कृत भेल। खास कऽ हृदय काव्यक भरपूर सामगी नेपालमे ओहिआओल अछि।

सातम् आठम् शताब्दीक िदगानसँ लऽ कऽ जे कम नेपालक

धरतीपर मैथिलीक विकास हेतु चक्र पडल छलैक ओ मध्य कालमे आबि अपन समृद अस्थिामे देखल जाइ अछि।

म.म. हर पसाद शास्त्री 1916 ई.मे क्सद साहित्यक अनरिण नेपाल मध्य कएल, जेकरा बॉगला भाराक पाचीनतम साहित्य आकि ािदगान ओ दोहाक नामसँ पकाशित कएल।

् योतिरीशर ठाकुरक 'ािमताकर' नेपालहिमे पाप्त भेल। विदापतिक पमािाक पदािली एतुके देन थिक।

कणाि्शिीय राजालोकनिक सॉग मल्लिशिीय राजा लोकनि सेहो मैथिली साहित्यक अनन्य पेमी छलाह। देखल जाइछ जे जय क्स्थत मल्लसँ लऽ कऽ रॅजित मल्ल धरि एतए मैथिलीक सािगीण विकास कएल। मल्लकालीन मैथिली साहित्यमे गीत तथा नाििकक पधानता रहल अछि। गीत काव्य भि्त पधान अछि। भ् तपुर (भात गाि)क राजा भूपतीन्द्र मल्ल (1687-1731) ई. रा् यकाल विष्णु, शिि आ भािनी आदिपरक शतश: मैथिली गीतक रचना कएने छलाह। एहिठामक रचित मैथिली गीतपर महाकवि विदापतिक रचनाक पूणम पभाि अछि। भारा पिरमािजित एिम् सुलिलत देखल जाइछ-

"हे देवि! शरण राखू भािनी,

तुअ पद कमल भमर मोर मानस

जनम जनम ईहो मानी।

भूतीन्द्र मल नृप ईहो गाओल

जय वािरजा पित सािमी।।"

मिथिलाक छिन-िभन भारा, साहित्यक आकारके सुरिक्षत

समविद्ध नेपालेक राजर्शि गिरा भेल। एहुखन नेपालक लाइब्रेरीमे अमूल्य गन्थ ओ दुलभ ग्रॅथ सभ ठेकनाओल अछि जे जीर्णावस्थाके पाप्त कएने अछि।

विशि साहित्यक पयालोचन कएलासँ स्पष भऽ जाइछ जे साहित्यक समस्त पभेदमे नाटिकक स्थान अत्त महतिपूणम अछि। सॅस्कृतक आचायमलोकनि काव्येरुनाटिकम् रम्यम्क अन्तगत नाटिकके अनेक विरियक दृका ए रमणीय कहि एकर सत्यतापर मोहर लगा देलनहि। नाटिकमे अनुकरणात्मक अभिनय दृश्यमान होइछ ते एकरा रपक कहल जाइछ। उन्मोर युगक पमुख नाटि केन्र भ्तपुर बनेपा कान्तिपुर अछि।

हरि सिंहदेकि नेपाल आगमनसँ इतिहासमे नाना पकारक परिवर्तन भेल तथा नेपाल आ मिथिलाक अनेक पकारक सम्बन्ध भऽ गेलैक। हरि सिंह देकि मृत्युक पाति हुनक पुत मान सिंह देि तथा श्याम सिंह देि नेपालमे राज्य कएलनहि। श्याम सिंह देि नेपालमे राज्य कएलनहि। श्याम सिंह देकि कन्याक विािह मिथिलामे भेल। एकर फल ई भेल जे मैथिल विािनक आदर सत्कार नेपालक राजदरािर एिम् अन्य विशिष समाजमे बराबर होइत रहल। बादमे नेपालक मल्लविंशी राजाक पाविारिक सम्बन्ध सेहो मिथिलामे भेल। एहिसँ मिथिलाक भाराक पभाि नेपालपर नीक जका पडल। मिथिलासँ विशिष विािन, पण्डित, कवि, धमशास्त्री, सॅगीतज सभ नेपाल जाय लगलाह। मिथिलामे हुनका लोकनिक सॅरक्षणक सेहो कोनो व्यवस्था मुसलमान सविहिक कारॅतर आकमणसँ नहि रहि गेल। इहए कारण भेल जे मैथिल विािन लोकनि मिथिलासँ मैथिली नाटिकक बीज नेपाल लऽ गेलाह। मैथिली नाटिकक जन्म िस्तुत: मिथिलामे भेल मुदा विकास नेपालमे।

नेपालमे मैथिली नाटिक विकासक सॅक्षेपत: कमवलखत कारण

भेल-

(क) पारस्िितत केेत होएबाक कारण वमवथला आ नेपालक सास्कृवतक सम्बवन्ध बरोवि अवछ।

(ख) नेपाल सभ वदन वहन्दूरा् य रहल आ वमवथलामे सेहो वहन्दूतिक पवत मोह। नेपालक राजा एवहठामक वििन ओ पवण्मतक सम्मान कएलवन्ह।

(ग) नेपालक मल्लिशि ओ वमवथलाक कणिि् िशिक र् त सम्बवन्ध दूनू केेतक वािसीमे, भारा आ सॉस्कृवतके आओर ववकि अनिमे सहमत भेला।

(घ) मुसलमानी आकमणक कारणे एवह भू-भागक विििन आ पवण्मत नेपाल जाय सििथ्थ वभत भए सकलाह।

(ङ) हवर वसॉह देि एतए 1324 ई. गमासुदीन तुलकसँ पराववजत भए नेपालमे भात गाििक ववकि अपन रा् य स्थावपत कएलवन्ह जे पाच पीढी धवर चलल। एवह कणिि शासन कालमे कवि साववहत्यकारक पयाप्त आदर भेल।

(च) मल्लिशिक राजा सभ सेहो मैवथल वििन, पवण्मत, कवि सॉगीतज आववदके सम्माववत करैत छलाह आ सििििक हेतु पयाप्त भूवम आ सम्पवत देलवन्ह।

(छ) मल्लिशिक शासनकालमे मैवथली नेपालक राज भारा भए गेल तथा मैवथलीके विकवसत होएबाक अिसिर भेिल।

(ज) इवतहास साकी अवछ जे मुसलमानी पभुतिमे नािक नवह विकवसत भेल। वहन्दू रा् य नेपाल तकर नीक िितािरिण पस्तुत कएलक।

(झ) नािकक वरिय-िस्तु नेपाल आ वमवथलाक पचवलत

कथाक आधारपर लेल गेल।

मल्लवंशिक राजा जय स्थित मल्ल सेहो बड कलाप्रिय छलाह। हुनक समय 1394 ई. धरि कहल जाइछ। हुनक पश्चात् मकमल्ल (1474) ई. धरि नेपालमे मैथिली नाटकक रचनाक कोनो पुष्ट प्रमाण नहि भेटैछ। मकमल्लक पश्चात् नेपाल तीन भागमे विभक्त भऽ गेल आ तीनटा राजधानी भात गाटि, बक्तकपुर तथा कान्तिपुर आ ललित पाटन आ काठमाण्डू स्थापित भेल। एहि तीनू राज्यक वंशिक राजा लोकनि सेहो नाटककार छला तथा ओ लोकनि कवि एवम् नाटककारके पश्रय देलन्हि। विभिन्न अवसरपर नाटकक अभिनयक आयोजन करबैत छलाह। नाटकके रचनाहारके प्रोत्साहन दैत छलाह।

भाग गाटि शाखामे विश्व मल्लक समय (1533) मे नाटकक बहुत विकास भेल। प्रसिद्ध नाटक 'विद्या विलाप'क रचना ओही समयमे भेल। एहि नाटकक अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सेहो 'विद्या विलाप' नाम विधा सुन्दर नामसँ कएल। जगज्योतिमल्ल (1618-1833) राज्यकालमे मैथिली नाटक खूब विकसित भेल। हुनक राज्यकालमे मुद्रित कुलिमश्र विशिमवाक लिखलन्हि। हर गौरी विवाह एवम् कुंज विहारी नाटक सेहो कम प्रसिद्ध नहि पओलक। हुनक पौत्र जगत्प्रकाश मल्लक समयमे छौटा मैथिली नाटक लिखल गेल। उदाहरण, नलीय नाटकम्, पारिजात हरण, प्रभावती हरण, मलय गन्धिनी एवम् मदन चरित। सुमति जिता मित मल्ल सेहो एक पैघ नाटककार छलाह जनिक लिखल आठ गोटि नाटक भेटैत अछि। हुनक पुत्र भुपतीन्द्र मल्ल सेहो कवि छलाह जनिका समय चौदहटा रचना भेल रणजित मल्लक समयमे तँ चरम सीमापर नाटकक रचना पहुँच गेल छल ई मल्ल वंशिक अन्तिम राजा छलाह। 1921 ईस्वीमे मल्लवंशिक अन्तिम राजा रणजित मल्लक समयमे (1921) मैथिली नाटक रचना एक प्रमुख बात अछि।

नेपालमे शहर्शिक उदय आ एकीकरणक पिात् भाराक नामपर गौण काज लेल अछि। गोरखा बोलीक पभाविमे पड़ मैथिली तँ लग-भग मेिाय गेल। खाली नाच, गीत कतहु-कतहु लेखन आदिमे एकर रप सुरक्षित रहलैक। राणाकालीन नेपाल भारा साहित्यक हेतु अन्धकारक युगक रपमे मानल जाइत अछि। मैथिलीक अस्थिा तँ नेपालमे विचारणीय रहल।

2007 सालक मुक्ति राणा शासनसँ आ बादमे 2017 साल धरि उथल-पुथलक समय होएबाक कारणे मैथिलीक विकास हेतु नेपालमे कोनो ठोस काज नहि भऽ सकल। 2014-16 सालमे एकिा 'निा जागरण' पतक एक मात अँकक पकाशन सँतोर कदया सकैत अछि। 1960 ई.क बाद कनेक स्थिरता तँ आएल मुदा सरकारी सँरक्षणक अभाविमे गत 30 िरिमे जतेक साहित्यिक काज होएबाक चाही ओ नहि भऽ सकल। कोनो साहित्यानुरागी आ भापासु मोनके आ अहलादित करएबला सामगीक अभावि सदैि खकिैत रहल तथापि एहि अवधिमे जे किछु भऽ सकल अछि तकर साहित्यिक विधागत लेखा-जोखा कएल जा सकैछ।

आधुनिक काल : मध्यकालीन मैथिली साहित्यक जएिा उपलब्धि अछि से आधार स्तम्भक रपमे मानल जाइछ। मुदा नेपालमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्णमकाज 1960 ई.क बादे भेल जकरा हमरा लोकनि आधुनिक कालक पारंभ मानि कऽ चलैत छी।

एहिसँ पूिमिपचासेक दशकमे पँ सुन्दर झा शास्त्री अपन मूल जन्म स्थान दरभँगासँ मैथिली लेखकक रपे पकाशित करैत छलाह। गलीक कुकुर आदि एखनो दरबार नै खुजलैए सन रचना करैत छलाह।

पँ जीिानाथ झा सेहो अपन पनिन्ध काव्य आदि रचनासँ पकाशित भऽ चुकल छलाह। िस्तुत: जनकपुरमे पँ जीिानाथक पशि एतुका

ितारिणमे साक्हत्यक पक्त अनुराग जगौलक आ ओ साक्हत्यक गुरजीक रपमे सिस्त चक्तस्त भेलाह। म. धीरेन्र साक्तक बाद जनकपुरमे आधुक्तक मैक्थलीक शुरआत कएलक्ह। ओ एक्हसँ पूमि मैक्थली लेखकक रपमे पक्तक्त त भऽ गेल छलाह। 1962 ई.मे पो. पफुल्ल कुमार क्सहँ मौन नेपालक मैक्थली सक्हत्यक इक्तहास क्लखलक्ह, जाक्हमे पाचीन साक्हत्यक रपमे चचा भेल अक्छ ओतेक आधुक्तक कालक साक्हत्य हल्लुक पतीत भेल अक्छ। ते क्हनकासँ तुलनात्मक दृक्ष्ट ए म. जयकान्त क्मशक इक्तहास लेखन शेषतर अक्छ। पक्हल कारण तँ एक दशकमे साक्हत्य लेखन ओतेक समृद नक्ह छल। दोसर सूचनागत तुक्ट सेहो पफूल्ल क्सहँके भेलक्ह।

आब तँ तीन दशकमे क्कछु-क्कछु एहन रचना सभ भेल अक्छ जकरा आँगुरपर गनल जा सकैत अक्छ।

पिन्धि काव्यमे पॉ रमाकान्त झाक 'व्यथा' म. धीरेन्रक 'क्तपुण्म' पॉ मथुरानन्द चौधरी माथुरक खण्म काव्य 'तीशूली' पमुख अक्छ।

मु तक काव्यमे म. धीरेन्रक 'हैगरमे िगल कोि' करणा भरल ई गीत हमर' राम भरोस कापक्ड भमरक बन कोठरीमे औनाइत धुँआ, नक्ह आब नक्ह, मोमक क्पघलैत अधर, अपन-अनक्चन्हार, विनोद चन्र झाक 'कृरक बाला, पॉ शुभ नारायण झाक 'यंतणा', पॉ सुरेश झाक मैक्थली रस कलश काव्य पमुख कृक्त देखना जाइछ। पॉ झा मैक्थली गीता सेहो क्लखने छक्थ। चन्र शेखर झा शेखरक 'हम नेपाल हमर नेपाली' कविता सॉगह आएल अक्छ।

अनुिदि विधा : नेपालक कक्तपय साक्हत्यकार विक्भन रचनाक अनुिदि मैक्थली भारामे कएलक्न अक्छ, जे हुनक मैक्थली पेमक पतीक क्थक। यदुिशि लाल चन्र सप्तरी क्जलाक क्तलाठी गामिसी िरा 'उसैको लावा'क चंद्रनी साहक रचनाके लोकेशर व्यक्थत, पॉ कृष्णा

पसाद उपाध्यायक िरा विदापक्तक पदालीक, म. धीरेन्द्रक ‘उमर खैयानक’ महाकवि भनुभ्तक रामायण मैथलीमे अनुिद कऽ िरीनायण िमा अदुत कएल अछ। पकाशनक बािपर अछ पॉ सूयकान्त झाक मेघदूतक, म. रमेश िरा सात जापानी कथा अनुिद मैथलीमे चमत्कारी पयास थक।

कथा-उपन्यास आ साक्षात्कार विधा : िस्तुत: नेपालमे मैथली कथाक केत्तमे सेहो नीक काज भेल अछ। किछु पक्तबद कथाकारक सॉंह एखन धवर समक नव्ह भेल अछ ते छुछुन लगैत अछ। एखन धवर पाप्त कथा सॉंहमे म. धीरेन्द्रक ‘कूहेश आ करण’, ‘पझाइत धूरक आवा’, ‘शतर पा आ मनु’ राम भरोस कापवड भमरक तोरा सॉ जयिा रे कुजिा, रेिती रमण लालक ‘पाधिनवह एलाह मधुपुरसँ’ पमुख अछ।

म. धीरेन्द्रक सम्पादनमे नेपालक पक्तकव्ध गल्प सॉंह, पो. सुरेन्द्र लाभक सॅपादनमे नेपालीय मैथलीक उत्कृष गल्प पकाशत भेल अछ।

उपन्यास : एव्ह विधामे श्यामाझाक ‘बानु माइक बेिी’, कुमरकान्तक ‘सेहन्ता’क अवाव् त एम्हर म. धीरेन्द्रक भोरकिा, कादो कोयला, ठुमुक चल, पाठकके सेतोर दैत अछ।

साक्षात्कार : साक्षात्कार विधामे रेिती रमण लालक साक्षात्कार एक मात पोथी अछ, ओना एव्ह केत्तमे राम भरोस कापवडक नीक काज सभ भेल अछ। जकरा अनतगत अशेय, केदारनाथ व्यथत, विजय मल्ल, मातृका पसाद कोइरालाक साक्षात्कार खूब चक्त भेल अछ।

नािक : एव्ह विधामे आधुक्तक नािककारमे महेन्द्र मलपाया लेखनमे वमडल छथ। पारमभक रचना ‘लक्मण रेखा खवमत’, जुआएल कन-कनी, ओकरा आँगनक बारह मासा, िूिल तागक एकिा छोर,

एकाकी सॉगह हुनक पमुख पुस्तकाकार छवक्ह। काठक लोक वफलहाल चचामे आएल अवछ। 'देहपर कोठी खसा वदअ' आलुक बोरी सन बहुतो रेवमयो र पक ओ वलखने छवथ। एकाकी लेखकक र पमे म. धीरेन्र, राम भरोस कापवड, म. लवमण शास्ती, श्याम सुन्दर शवश, ललनक पमुख स्थान अवछ।

वनन्ध समालोचना तथा सॅस्मरण : एवह विधामे पो. बज वकशोर ठाकुरक अध्ययन ओ विचिन छोवड आन रचना पुस्तकाकार र पमे नवह आवब रहल अवछ। ओना, म. धीरेन्रक सावहत्य सम्बन्धी, भमरक लोक सॅस्कृवत सम्बन्धी, म. विमलाक सावहत्य सम्बन्धी महेन्र मलॅगयाक, रेविती रमण लालक राजेन्र वकशोरक विविध सामवयक वनबन्ध सभ पकावशत भेल अवछ।

याता सॅस्मरण : एवह विधामे राम भरोस कापवड भमरक अत्यन्त महतपूणमरचना आएल अवछ। पो. पफुल्ल कुमार वसॅह मौनक, रेविती रमण, श्याम शवश सेहो एक वदस सॅलग्न छवथ। समालोचना सॉगहमे राम भरोस कापवड भमरक सम्पादनमे नेपालक मैवथली पतकावरता आएल अवछ।

पत सावहत्य : 2025 सालसँ पारम्भ भेल नेपालक सामवयक सॅकलन युग आब एकि ठोस र प लऽ चुकल अवछ। पो. पफुल्ल कुमार वसॅह 'मौन'क सम्पादनमे मैवथली विराि नगरसँ म. हवरदेि वाशक सम्पादनमे ईजोत काठमामूसँ, पॉ सुन्दर झा शास्तीक सम्पादनमे फूल-पात काठमामूसँ, िणीक वहलकोर जनकपुरसँ सॉगवह दुविधान एतवहसँ एम्हर 2019 सँ राम भरोस कापवडक सम्पादनमे गाम-घर साप्तावहक वनरन्तर पकावशत भऽ रहल अवछ। अचमा िमावसक गत 16 विर्सँ पकाशन आ 'ऑॅजुर' आब मावसक र पमे पकावशत भऽ रहल अवछ। नेपाली भारी सावहत्यकार िरा मैवथली सावहत्य सेिमे म. कृषणा पसाद उपाध्यायक नाम आदरसँ लेल जा सकैछ। ओना, वहनके भाइ

म. लक्ष्मण शास्त्री तँ अदुत काज कएलक अछि। ई अपन दू गोट पोथी दऽ एक धर्मकाव्य युधिष्ठीर महाकाव्य आ दोसर धीकताम् गीत काव्य। रामेशर पसाद अयाल िरा रचित शशि-मधुक भाग्य रेखा नामक कथा काव्य देखबा पडैत अछि। फुकिर रचनामे मनुष्जिकी, केरि कुमारे, जगदीश कुमारे आदि पमुख छथि।

उपसंहार ि क्षणमात्मक बिन्दु : एहि तरहे विभिन्न विधामे गत तीस रिर्षसँ भेल विकासक रप रेखा पूर्णसंतोर तँ नहि ये दैत अछि मात आशा ि जगबैत अछि। विकासक संभािना नीक छैक। असिर पाबि कनकन काज कऽ सकैछ। नेपालमे संैधािनक राजतांतिक अन्तगत पूर्णपजातांतिक बहाली भेलासँ भारा विकासक गति अपना ढंगसँ संचालित कएल जा सकैछ। राजकीय पजा पकाष ानसँ सरकार ‘मैथिली विभाग’ खोललक अछि जाहिसँ किछु महतिपूर्णरचना सभक पकाशन होएब सम्भि थिक। खास कऽ मैथिली साहित्यक इतिहास, शब्द कोरओ विधागत संग्रह पमुख रहत। तहिना अनुसंधानक हेतु िति ृित्तक संभािना सेहो छैक जाहिसँ सरकारी ि नीज पुस्ि सामगीमे सुरक्षित मैथिलीक पुरना महतिपूर्णपाण्मूलिकाक उदार कएल जा सकैछ। सम्पूर्णमैथिली संसारक हेतु अपन रचनासँ योगदान पहुँचेबाक लेल एखनुकाक साहित्यकार तल्लीन छथि।

अस्तु...।

मैथिली साहित्यक अविदान- मिथिला भारा रामायण- चन्दा झा

कविरि मैथिली साहित्याकाशक चन्र छथिकाह। मैथिली साहित्यके अपन शीतल ्योत्सनाक अमर रिदान देलकिह। इएह कारण थिक जे ओ मैथिलीक महान् कवि क रपमे समादृत होइत आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत छथि। िस्तुत: विदापतिक पित् इएहि कवि भेलाह जे मातृभाराक िास्तविक महत्ि बूझि ओकर विकासक दिशामे पयतशील भेलाह।

उनैसम शताब्दीमे पुन: कि िशिरे जनभाराके काव्य भाराक रपमे मवमान्य त कैलकिह तथा अपन सश् त लेखनीसँ अनिरित साहित्य सृजन मे योगदान दैत मातृिणीक अचमनामे सुिणमिणािलीक उपहार चढबैत रहलाह। हिनक िहुमुखी पितभा, पगाढ पाण्डित्य, साहित्यक रिच, पुरातत्ि-पेम एिम् दीघम जीिनि विविधि पकारे मैथिली साहित्यक समिृदिमे सहायक िसद भेल। हिनक जन्म सन् 1931 ई.मे सप्तमी िहिसपितके दवभाँगा िजलाक िपण्मार छ गाममे भेल छल। पारिम्भक िशक्षा मातृक बड गाि सहरसा िजलामे भेल। बादमे संस्कृतक उच्च िशक्षाक हेतु पवित नगरी काशी गेलाह। काशीसँ पत्यागत भेलापर पाण्डित्यक अिक् त हुनक कविति शिवतक यशोिल्लरी चतुिदक पसरए लागल। बाल्यकालिहसँ पितभापूणमपतीत भेलाह।

मिथिला भारा रामायणक मूल पेरक सि. महाराज लक्ष्मीशर िसहँ छलाह। मातृभारा मैथिलीमे धममगन्थक अभाि खिकिलैन्ह। चन्दा झा िशिकि समपमित भ् त छलाह। िशिकि िपय राम ते भव्त भािना हुनक साहित्यक कृतिक विधा थिक। मातृभूिम ओ मातृभारा पेमक पुष्पा िल दय ओ अपन काव्य देिताक अचमना कैलकिह। एिह दृिष्ट ए मिथिला भारा रामायण हुनक सििधिक पिसद िपय कीितमथिक। चन्दा झाक नामोल्लेख मातसँ हिनक रामायणक उदोर होइछ। गन्थक नाम

करणेसँ मिथिला-मैथिलीक प्रति कविक सहज अनुरागक परिचय भेटैत अछि। प्राय: ई शौभाग्य कोनो आन ग्रंथिके नहि हएत जेकर प्रत्येक शब्दपर विद्वति मण्डली विचार कएने हो तथा जे पाण्डित्यक कसौटीपर परिशुद्ध प्रमाणित भेल हो।

रामायण भारतीय वाङ्मय केर आदर्श कृति थिक। देशक चारित्रिक आदर्शके अनुप्राणित करबाक लेल राम चरितक अवतार मैथिलीमे आवश्यक छल। वस्तुत: जाहि सांस्कृतिक संघर्षक युगमे चन्दा झाक आविर्भाव भेल छल तकर ई अनिवार्यमपेक्षाकरया छल। कविशेखरक एहि कृतिक के सर्वप्रथम महा काव्यो हैबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। चन्द्र कवि जहिना काव्यात्मकतामे बाल्मीकि तहिना रचना करबामे प्रमुख। चन्दा झाके युग जागरणक प्रतीक मानल जाइछ। ओना तँ मिथिला भारा रामायणक मूलाधार थिक अध्यात्म रामायण मुदा अनेक शदाक कारणे मौलिकताक कमिहिमे तुर्वि नहि होए देल अछि। विशेर कय मिथिलाक वर्णन, लक्ष्मण-परसुराम समवाद, लंका दाह वर्णन, राम अंगद-समवाद आदि कतेक स्थल अछि जतए कविक मौलिक प्रतिभा स्फुट भेल अछि, तथा मनोरम विसद भेल अछि। विभिन्न रसक प्रयोग लेल राम कथाक महत्व स्वीकार अछि तहिना भाव प्रकाशनक क्रममे विविध अलंकारक प्रयोगसँ ओ एकर कला पक्षके समृद्ध बनौने छथि। एतए स्पष्ट अछि जे रामायण मूलत: भक्त काव्य थिक। मिथिलाक गौरविक गुणगान नहि बिसरलाह अछि रामक मुँह कहबैत छथि-

"सत्य बिरहुक्त यजभूमि पुण्य देवगहावर,

शास्त्रके बजैत बेर कीर बैसि मावर-मावर।"

पुन: सीताक चरितक प्रसंगमे ओ एहि विरियके नहि बिसरल छथि जे सीता मिथिलाक बेटी छलीह। सीता सधियाँ कहलैन्हि-

“जनक जनक जननी अछि,

रघुनन्दन पाणेश

देरि लक्ष्मण हमर छथि,

नैहर मिथिलादेश।”

एकर भारा ओ शैली माधुयमजन साधारणके आकृष्ट कएलक। ओ शीघ्रहि विनिसँ लऽ कऽअवशाक्त समाज मध्य ई व्याय भए गेल। एहि गॉथिक अध्ययनसँ मैथिली विनिके अपन मातृभाराक गौरि ओ गॉभीरताक जान भेलिन्ह। एहि कममे देखब जे अशोक बाविकाक विल्दनी सीताके अपन विपिन जीनिसँ विशेर कठोर बचन कहबाक भनस्ताप छन्हि जे मनो दिना विगल्लत भए उठल अछि- हे रघुनाथ! अनाथ जका दश कॉटकपूरी हम आइल्ल छी क्सॉहक तास महानिमे, हवर नीक समान हेराय छी।

एकैसम शताब्दीक पारंभ जनवृद्धिमे भारत पथम आ चीन दोसर

पाय: कहल जाइत अछि जे 'बहुलोका: दोरा:'

भारतक विशाल जनसंख्या आ एकर लगातार वृद्धिक गति एक समस्या बनि सभसँ भयाहि आ विस्फोटिक स्वरूप भेल अछि। जतए भारतक हेतु सभिान्य स्वर ददमएिम् गहीर चिन्तनक विषय बनि गेल अछि, ओतए इएह समस्या भारतमे गरीबी, बेरोजगारी, कुपोरण सँगहि भूमि विखण्डन एिम् अपखण्डनक समस्याके दिनानुदिन अति शोचनीय स्थितिमे पहुँचा देलक अछि। एतबे नहि, भारत जनाधिक्य यक सीमापर आबि गेल अछि। ई जनाधिकय पछिला दू दशाब्दीक आर्थिक विकासक सुखद पयासके पकावर देलक अछि। गरीबी आ बेकारीक समस्या एकरे िरा पल्लवित भऽ रहल अछि। खेदक संग कहए पडैत अछि जे एक ओर तँ भारी जनसंख्या हमरा सभक गरीबीके बढा रहल अछि तँ दोसर ओर गरीबी सेहो जनसंख्यामे वृद्धि कऽ रहल अछि। जोसेफ मी. कास्टो अपन पसिद्ध पोथी 'Geognaphy of hunger' मे चीन, जापान आ भारतक उदाहरण पस्तुत करैत एहन विचार पगि कएल अछि। 1981 क जनगणनाक अनुसार भारतक जन संख्या अडसठि करोडके पार कऽ गेल अछि। जाहिमे आसाम, जम्मू एिम् कश्मीरक जनसंख्या शामिल नहि अछि। एक करोड चालिस लाख मानबक वृद्धि पति िरमभारतमे भऽ रहल अछि। देखल जाइछ जे आस्ट्रेलियाक क्षेत्रफल भारतक क्षेत्रफलसँ दोबरसँ अधिक अछि। एखन तक भारत चीनक बाद संसारमे सािधिक जनसंख्याबला देश अछि। संसारक कुलजन संख्याक 15 पतिशत भाग भारतमे रहैत अछि। जखन संसारक कुल क्षेत्रफलक अढाइ पतिशत भू-भाग मात एकरा पाप्त छैक। ते जौ भारतक ई जन संख्या अपन तिमान अढाइ पतिशतक दरसँ बढैत गेल तँ बीसिी शताब्दीक अन्त तक एक अरबक जनसंख्याके छूबि लेत।

सन् 1831 इर्सीक बादसँ भारतक जन सॉख्यामे जे ृिद्ध आरॉभ भेल अछि ओकर गक्ताके देखैत भारतक आजादीक बाद सतिॉत्त भारतक आथ्विक विकासक योजनामे सतर्कता बरतल गेल। इएह कारण भेल जे सन् 1952 ई.मे पवरािर कायोजन नीवाके सरकारी कायककमक र पमे अपनाओल गेल आ विशिक पवहल देश छल जे अपन आथ्विक विकासक योजनामे पवरािर कायोजनके स्थान देलक। एकर बाजूिदो एवह कायक्कमक पवत उदासी देखल गेल जे कष पद विरिय थ्यक। यदवा पथम आ वितीय पॉचरिरीय योजनामे पाच करोड पैसवह लाख िकाक िरा एकर सॉगठन कएल गेल जावहमे शोध, सॉचार एमि् केन्र आ रा् य सरकारक अन्तागत क्वककत्सा सेिा पदान करैत राखल गेल। समय-समयपर जनगणना देशमे भेलासँ सरकार आ समाजके जगाओलक। ते तेजीसँ एवह ओर पयास चलल। गभम क्ारोधक पचार-पसार शुर भेल। तेसर योजनामे 25 करोडक लागत आयल। एवह तरहे बीचक तीन िाविरक योजनामे पवरािर कायोजनके ‘King fin of the plan’ मानल गेल। सॉगवह कायककमके पयाप्त राविश िरा Time bound एमि् Target oriented क रपमे अपनाओल गेल।

भारतक चतुथमयोजनामे बहुत अवधक पाथवमकता देल गेल। एवह कायककमपर 315 करोड िाका खचमकएल गेल तथावप न्यून सफलता भेिल। पाचमी योजना 516 करोड िाकाक आििन कऽ जन्म दरके 35-30 पवत हजार कम करबाक लक्ष्य राखल गेल जेकरा हेतु निध्याकरण हेतु पस्तुत भेल नर-नारीके तकरा चन्र कस्मक पलोभन देल गेल। एतए तक जे छठिी सातिी योजनामे तँ भूण हत्या गभम्पात आवदक िध करार कऽ देल गेल। जइसँ जनसॉख्याक ृिद्धमे हास आबए।

सन् 1974 ई.मे विशि जनसॉख्या कायत्तिण सम्मेलन रमाक्नयक्कि

राजधानी बुखारेस्मि मे भेल। भारतक तात्कालीन पक्रिर क्नयोजन मत्ती म. कणमक्सहँ ओक्ह सम्मेलनमे बाजल छलाह जे व्शिक गरीबी तखने दूर होयत जखन व्शिक जनसॅख्यामे कमी आओत।

भारतमे जनसॅख्याके क्नयॅक्तत करबाक सॅकल्पके दोहरबैत स्: पधान मत्ती इक्दरा गाधीक बीस-सूती कायक्रमके पक्रिर क्नयोजनपर व्शिर जोर देल गेल।

पाचम योजनामे Minimum needs programme क अन्तागत्त स्सिथ्य, पक्रिर क्नयोजन एिम् पौक्ष क आहारके एक सॅग व्किक्सत करबाक पयास कएल गेल। एक्ह समेक्कत योजना ि्रा बाल-मृत्युके कम कऽ सॅगक्ह माताके स्सिथ बनाकए कम बच्चा उत्पन करबाक प्िृत्तके जगाओल गेल। सरकार ि्रा स्तिम गभम क्नरोधक द्िइके उपलब्ध करएबाक पयास जारी राखल गेल अक्छ।

एतबे नक्ह, कमसँ कम मूल्यपर हरेक ठाम गभमक्नरोध उपलब्ध करेबाक व्यिसथा कएल गेल अक्छ। गरीब देशमे एक्ह कायम्कमक अन्तागत्त न्िध्याकरणक हेतु आव्श्यक पलोभन सेहो देल जाय रहल अक्छ। जनसॅख्या ृिक्द मे 80 पक्तशत देहातक योगदान रहैछ। जकरा हेतु रेक्सयो, क्सनेमा, ि्लीव्जिन आक्द ि्रा पचार-पसारसँ देहाती नर-नारीके क्नयोजन करएबाक हेतु अन्मूख कएल गेल अक्छ।

ऍ ई स्ीकार नक्ह काएल जा सकैछ। जे भारतमे पक्रिर-क्नयोजन कायम्कम पूणमरपेण असफल रहल, मुदा एतेक पयतक बाि्जूदो जनसॅख्याक ृिक्द क्दनानुक्दन चौगुना होइत जाए रहल अक्छ ते लऽ कऽ ई कहल जाए रहल अक्छ जे अणु व्सिफोि ओतेक खतरनाक नक्ह जतेक जनसॅख्याक ृिक्द व्सिफोि भऽ सकैछ।

आइ जनसॅख्याक ृिक्दमे सॅसारक साम्यिादी देश चीन अपन जनसॅख्याके क्नयोक्जत करबामे कमाल हाक्सल कएलक अक्छ। हमरो सभके एक्हसँ पेरणा लेबाक चाही। 1953 ई.मे चीन अपन व्किासक

अवमन आॅाक रपमे पवरिार-वायोजन लागू कएलक। एवह कायम्कमक अन्तागवा देरसँ ववािहि, बच्चाक जनम्मे अन्तराल सॉगवह अवत्तम रपसँ दू बच्चाक लक्ष्य जन तावतक अवधकार कायम कऽ देलक। एतए तक जे ववािहक सॉगवह Contraceptative क पयोग करबाक पेरणा देल गेल। तेतबे नवह, मुफ्तमे Contraceptives क वितरण करा कए जनसॉख्यामे हास आनबाक महती पयास कएलक अवछ। नि ववािवहत दम्पवताक हेतु अवनायिम कायम लागू कएने अवछ जे Contraceptives क पयोग ओ लोकवन करए। एतबे नवह, बूढ-बुढानुस िरा सामावजक सभामे युकि युतीक ध्यान एकर लाभक ओर आकृष करोओल जाइछ। ई कायम्कम चीनमे व्यव्तके छोि पवरिर राखक ओर सराहनीय कायमकएलक अवछ। छोि पवरािरक पृवितके जगेबामे सरकारक िरा उठाओल गेल कानूनी पयास कम महतपूणमनवह अवछ। पवसद अथमशास्ती J.Myrdal सेहो Asian drama मे चीनमे सरकार िरा एवह केत्तमे उठाओल गेल कानूनी पयासक चचा कएलवह अवछ। जकरा हेतु सरकार एक Grash family planning programme अपनौलक अवछ तावक 2000 ई. तक रसक समान जनिृवद्ध शून्य पवतशत तक लाओल जाय सकैछ। आब ओवहठाम दू बच्चाक बदलामे एक बच्चाबला पवरािरक व्यव्तके ितनमे िृवद्ध आिासीय सुविधा, सॉगवह पेशन आवदमे सुविधाक पलोभन देल अवछ।

दोसर ओर एक बच्चाक बादसँ ितनमे आॅवशक दरसँ कितौती तथा अन्य सुविधासँ िवचत कऽ देबाक वायम लागू कऽ देल गेल छैक। एवह तरहे चीन अपन जनसॉख्याक िृवद्ध गवतमे 1975 ई.मे 25 पवतशत पवत हजारसँ 1979 ई.मे 18 पवतशत.

पुस्तक समीक्षा- साकेतानन्दक 'गण-नायक'

पाचीन परम्पराक अनुरूप साहित्यक ...... क्षेत्रमे कथाक रचना अविध् रूपसँ भऽ रहल अछि। हरेक विरय अछि जे मानि मोनक क्वारसॅप्रोवरत अवमलारा आइ साहित्यक अनुभूक्त आ वि चिनक रूपमे फलीभूत भऽ रहल अछि।

मैथिलीमे लघुकथाक विकास जतेक तीवशिक्तसँ भेलैक ताहिमे लघुकथाके लोक वायय बनेबाक शेय सि. हरमोहन झाके छन्हि।

आधुनिक साहित्यक सविशेभानि गुण सम्पनता भारतीय अन्य कोनो भारा साहित्यक समकक्षताके मैथिलीक कथा पाप्त करैछ। कथा, समय काल वासमत पर्राशिक दृष्टि ए कष साध्य अछि तँ सॅाक महतपूणमयथेष । इएह एक एहन विधा अछि जे दिन-पक्ति-दिन पगतिक ओर अगसर, गतिशील आ उदमुख अछि।

'गणनायक'क कथाकार साकेतानन्दजी विलक्षण पतिभा पुरूर छथि जे अपन सारसति साधनासँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यमे अक्षय कीर्तिम् अशेर गौरि आ कास्सी अथमितासँ शीमॅा्त कएलन्हि अछि। विभिन पत-पत्रिका सभमे पकाशित रचना सभके कलाविद्, समीक्षक आ विचारक तलाज भासिँ सराहलन्हि अछि।

विानि, कथा ममसा सभ हिनक कथाके साहित्यक शेष उपलब्धि मानि कऽ खुलेआम सीकृतमे अविचल हाथ उठाकए साहित्य अकादेमी ारा पुरस्कृत भेलापर सोल्लास समथन कएलन्हि अछि।

'गणनायक'क कथा मानि जीनिक विसॅााक ठोस धरातलपर ठाढ अछि। कथाकारक मूल चेतना, पगतिशील आ विचारोतेजक अछि। युग सापेक आ लोक जीनिक एहन शासति कृत अछि जे साहित्यमे अविसमरणीय तँ रहबे करत सॅाके भाी पीढिक हेतु पगतिक ओर उनमुख होएबामे आत्ममंथन करक हेतु विशि करैत रहत।

समीक्षक लोकक्षक दृक्ष मे कथा जे हो मुदा हमरा दृक्ष मे कथा सुग क्षतके अपना 'अलबम'मे समेवि कऽ चक्ल रहल अक्छ। जे आबएबला युगक ओर ऑगुर उठाकए सॉकेत सेहो करत। हम पबैत छी लेखकक भानिा एच.जी ल्सिक भानिासँ अनुपाक्षत अक्छ। ओना तँ 'गणनायक'क कथानक सेहो जनजीनिक एक गोिनि पक्के समक अनलक अक्छ। धरातलपर गक्त लएबाक हेतु गदक्हक मॉद-चॉचल चरण चलबए पडैछ। ते उपयोक्षताक दृक्ष सँ ई गदक युग कहबैछ।

कथा कहबाक सुनबाक पृक्ति लोकक रागात्मक सम्बन्ध समानान्तर चलैत आक्ष रहल अक्छ, ते कथाके पागैक्तहाक्सक कालसँ शृॉखलाबद करबाक पयास कएल जाइत रहल अक्छ। स्पष त: कथा आदशमीदक खण्महरसँ बहार भऽ यथाथक्क खक्डहान क्दस बक्ढ रहल अक्छ। सिाक्धक महतपूणम रचना 'गणनायक'मे ोिजगारी, आक्थक्क विपनता, शोरण, चोर बाजारी, दमनात्मक पृक्ति एिम् नोकरशाहीक यथाथमक्चतण अक्छ।

मुख्यत: क्शाक्त गिक्क मोह भॉग एिम् ओकर क्तरीहता आ पीडासँ जुडल सॉघरक्क कथा कहैत अक्छ। कामाख्या ओक्हसँ पबल सॉघरम करैत एक सिाक्भमानी युिक अक्छ। एक्हठामक लेखक कामाख्याके 'उपकम' कथा केर मुख्य पािि र पमे उपक्स्थत कऽ आदशमस्थाक्पत कएलक्न अक्छ, क्कएक तँ विपनताक पीडा झेलैत ओ कालक चारण नक्ह बनैत अक्छ। एक्ह कथामे जीनिक सम्मानजनक सॉकल्प अक्छ।

'आलुक विमा' कथामे पशासन तॉतक विकिरालताक दुस्साहक्सक पक्तरोध कृरक पक्तक्नक्ध जय मॉगल, रामशरण आ रहमतुल्ला िारा देखल गेल अक्छ। एतबे नक्ह, पदशमनपर उतार आकोक्शत कृरक आ कृरक पक्तक्नक्धपर पुक्लस िारा लाठी गोली तक चलाओल जाइछ, जाक्हसँ कृरक पक्तक्नक्धके जानसँ हाथ धोमए पडैछ। कथामे पजातॉतक माखौल, तुविपूणमव्यिस्थाक क्जम्मेिािर पदाक्धकारीक विरद

वणिम करबामे लेखक कवमक एमि् कसक्रोच देखल गेलाह अच्छ।

'कचोि' कथामे जीनिक नग्न सत्य पत्भावक्सत होइछ। जकर मुख्य पात बौआ झा छव्थ। जौ एक्ह कथामे एकओर भारतीय सम्मताक कमम हत्या भेल अच्छ तँ दोसर ओर मोनीक अव्य् त पेमक पीडा पाठकके समच्छत करैत अच्छ।

'एक मेग आगू' कथामे सामन्तादिीक खूनी पॉजासँ धाइल रामजीक कुर प क्वतण अच्छ। सामन्ती सन्तापसँ सन्तरत जािन बेिी गुलबायाक ठानल वििह नक्ह कऽ कजासँ मु त होएबाक पयास ओकर अवाम सोचके समक अनलक अच्छ। ई कथा पाठकके अक्तसंिदनशील बनबैत अच्छ।

'पकड वियाह' कथामे सम सामव्यक विरुप सॉस्कृक्तक सबाक क्वतण अच्छ। अभािगस्त मैव्थलक पुती उमक सीमा िवम कए अवमभािकके विचार शून्य बना दैछ जकर कारण दहेज पथाक विकल्प र पमे 'पकड वियाह' शुर ए भेल अच्छ। कथाकार कथामे धडफरा कऽ रोचक आ भाि पधान होइतहुँ समस्याक समाधानक हेतु अल्पकालीन, असौकयमगुझना जाइछ। कथाक परायणसँ कथा अध बवियेमे पाठकके छोव्ड दैछ जाक्हसँ पूणमतृक्प्त नक्ह होइछ।

अवाला कथा 'आब भेिने की' मे नारीक संिदनाक सन्तप्त र प भौक्तक सुखक कारसता, पेम, स्नेह, दया, सहानुभूक्तसँ व् त ममान्तक पीडाक अवमव्यव् त अच्छ। ई एकिा सरल सहज रोमाविक कथा अच्छ जे बड रोचक शैलीमे आगा बढैत अच्छ। आ अन्तमे आक्म समग र पमे एकिा विलकण पभाि छोव्ड जाइत अच्छ। भि पण्िता एमि् मधुबर विन्यास एक्ह रोमाविक कथाक विशाष गुण अच्छ। लेखक एक्ह कथामे माजल मनोविश्लेरक पतीत होइत छव्थ।

'क्ािणी समाहार' सामाव्जक बोधसँ जुडल कथा अच्छ। कथाक मुख्य पात कमखारी साहु सम्पूणमकथामे चक्चत भेल छव्थ। अथक

पयास, शमसाध्य जीनि, साहस आ समयसँ जुझैत कधमा लोक पूणम धनानि होइत अछ, ओकर सम्पनतासँ सीख्त गामक माही दुष पाँचैती करकहार रामेशार बाबू आ वशाजी वसँह अपन पपाँचक चपेमि आक्त वमखारीक समलि आ समृद पवरिरिके कहलपूणमबना दैत देखल जाइत छथ्य। तेसर साम्पयादिक दोहाइ देकहार दवर फूल झा वमखारीक दोहन गाहे-गिाहे करैत कथामे देखल जाइछ। ई कथा एकक्ह सॉग अनेक वरिय स्सितु, व्यव्त आ ततसम्बनधी घनिाक स्सितुत: समाहार बुझाएल मुदा मुख्य तीन पवरवस्थवत्त आ पवरशिक वदशा बोध करबैत अछ। कथा अपना-आपमे वडिल अछ। वसिॉवत्त आ समाजक छदके उघावर कऽ पाठकक समक राक्ख दैछ।

‘मचकल खुटा’ लोकोव्तक आधार लए वलखल गेल कथा अछ। खास कऽ अनमेल वविहिक कारणे उतपन पवरवस्थवताक बोध कथा अछ। मचकल खुटासँ तातपयम अछ कमजोर पवतसँ। कथाकारक कमाल जौ-जौ आगा बढैत अछ पाठकके कौतुहलपूणम बनबैत रहैछ। कथा मुख्य पातक रपमे कजरैलालिली गोवर-नावर सुमौल, सुनमनी आ तारणक तेजसँ कीवजत मुख्यमणमलालिली छथ्य, जवाक ववहि दूबर-पातर, कारी खेडनाठ आ झामर मुँह सॉवह वकृित बगेवाि रेलक खलासीसँ होइत कथामे देखाओल गेल अछ। नपुॅसक पवताक कारणे तेरह रिमधवर दागल साढ वन:सन्तान कजरैलालिली लोकक बीच बाझी कहबए लगैछ। जखन बदास्त नवह भेलैक तँ दाबल मोन वकिल्पक ओर आकृष भेलै। जवहना पावर पवाबि दूवढ लैछ तवहना बगलक पडोसी पाचो मनगर, बलगर, सुमौल सुन्दर युकि भेवि गेलासँ रमबामे भागठ नवह भेलै। कथाक रोचकता आरो बढैत अछ जखन कजरैलालिली एक सुन्दर बालकक जन्म दऽ अपना सॉग पवताक दोरसँ मु त होइछ। एवह तरहे कथामे देखल जाइछ जे एक दोरसँ मु त होइत अछ तँ लोकापचार आ कुचचाक आब सद: भाजन

बनैत अछि। खुजल मुँहके ओ बन्द कऽ नहि सकैत छल किएक तँ ओकर खुटा मचकल रहै। अन्तिम विष्फोरपर पहुँचैत पाठक आकरणाक कारणे अचाएल रहैछ। हृदयपर स्थायी पभाकि अनुभि करैछ।

'गणनायक' अन्तिम कथा क्रान्तिनीय, रोचक, समयानुकूल बदलैत राजनीतिक परिदृश्यक सिीक चितण अछि। एहि कथाक मुख्य पात नरेबाबू सामन्ती गुणगाही छथि। चुनामि छल-बल-कलसँ जीतैत छथि। िएह एकर गणनायक थिकाह। अपन आधार सीढी छीतन दासके बिसरि जाइत छथि। छीतन दास हुनिजनक माइनजन (मुखिया) अपन हाथियोके ताकपर राखि हुनका चुनामि एडी-चोिी एक कऽ दैत अछि, चारि कटा जमीनक तासदीक कारणे ओ विल्ली अनजल तेजि कोनहुना जाइत अछि। ओतए विस्फारित आँखिसँ नरेबाबूके दूकि हुनका राजकीय आिसपर पहुँचैत अछि, दुलभमभेि जखन होइत छैक तँ सुख-सुन्दरीक अठखेल कएनिहार, नरेबाबू छीतन दासक व्यथाके सुनबाक बदला मिं-फिकारसँ नकारि कऽ दैत छथि। एहि तरहे कथामे छीतन दासक अिहेलना हैब, अनभुआर, अनपढ मैथिल छीतन दासक दिल्लीसँ आपसीक गुॅंजाइश कथामे नहि हैब पाठकके सँदेहक सीमामे बान्हैत अछि। कथा वर्णिकापद सॉ-सॉ ितिमान समयक गणनायकक रॉ बदलैत चरितक पणि चित कथा थिक।

समस्त कथाक परायणसँ सुस्पष पतीत होइछ जे समाजिद, साम्यिद ितिमानकालीन सास्कृतिक परिशि, राजनैतिक सॅरचना आर्थिक परिस्थितिक ठोस धरातलपर आधारित एहन शासि भािनासँ जनमानसके अिगत करौलनि अछि जे सॅजीविनी बुि बनिकए पगतिशील साहित्यकारक हेतु आदशमउपस्थित करैत अछि।

हुनका रचनामे यथार्थिद नहि अपितु यथाथम अछि। हुनक पात काल्पनिक भऽ सकैए, मुदा कल्पनाशीलताक कायामे कििजीभ लगाओल गेल अछि तथापि कान्तिकारी आ यथाथमयी छनि। सॉनहि

सॉ तिमान समयक चोटि, बढैत सभ्यताक रॉग, जमानाक कुर थापड आ समग जीनिक कटु-मधु अनुभकि वि किक तराजूपर तौला कऽ उकेरल गेल अछ। भाराक सहजता, शिल्पगत शिष्टय हिनक कथाक अपन फराक पहचान बना दैत अछ। कथाक कलात्मकता पाठकक अन्तस्थलके छुबा लैत अछ।

मिथिला मैथिलक मानदण्डके नि-नि सौणिी पक्तभासँ मढबाक महनीय गुण साकेतानन्दजीमे पाओल जाइछ। कषाक भा स्ीकार करए पडैछ जे शण्य-श्यामल सधन आगहुज लोक कलाक आभिक सम्पदासँ सॉस्कत कोसी, कमला, गण्डकी आ िगमतीक पानि जलसँ अभिसिंचित एमि् विभन नि सम्पदासँ आच्छादत मिथिला भूमि जतेक शीसम्पन रहल अछ, पक्तभाक दृष्ट ए सेहो एह केतक पक्तस्पधी कतहु होअए से अनुपम जकर साकेतानन्दजी पत्यक पमाण सरिप छथि।

अपन पक्तभाक पकाश विस्तृत कऽ पाचीन कथाकारसँ सिभिा भन कथाक रचना कएल अछ। भा, भारा, सॉदिनशीलता आ सम्पेरणीयताक सॉ भा सॉगहण अभिव्यक्तक दृष्ट सँ यथाथके कथा िस्तुसँ जोडबाक दुस्साहस कथा कलाके नि आयाम देलक अछ। कथा कमीक हेतु एक आदशक उपस्थापना थिक। साकेतानन्द जीक रचनाक एह विशेषताक आकलन पस्तुत करब सलाध्य नह अपितु तथ्यकथन अछ। एकह शब्दमे हिनका शलाध्य तँ अनाआसे उपलब्ध भेल छथि। तथास्तु।।

कन्यादानक भीरण समस्याक कारण

ध्यिम मिथिलाचलमे वैवाहिक परम्पराक पालन आइस अनुमानित: सय वरष दोसर रीतिसँ होइत छल। तामे समयिक हेतु ई रीति-रेवाज महतकर रहल होएत, मुदा तकर पभाव बादक मैथिल सन्तानपर तामे तरहे पड़ल जे एखनहु तकर छाप अमिट अछि।
ओना त कन्यादानक समस्या पाय: सभ मनसँ एक कठीन समस्या रहल अछि। समयानुसारे भले ओकर रूप परिवर्तित होइत गेल हो। हिाकम्बा विद्यापति अपन 'पुरुष-परीक्षा'मे एही समस्याक सन्दर्भमे चर्चा कएलनि-
"कन्या ककरा दी? पुरुषके?"
पुरुष शब्दक पयोग ओ विशेष अर्थमे कएने छथि। अन्यथा सभ पुरुषाकार मनुक्ख। वीर, ध्ययवान, विद्वान आ बुद्धिमान, चारूटा पुरुषक लक्षण होइछ, एकर अभाव जकरामे छैक से पूछ हीन पशु मनुक्ख। ते कन्याक विवाह पुरुषसँ हो।
खास कऽ कन्यादानक समस्या आजुक समस्यासँ भिन्न होएबाक कारण ओहि समयमे जनसंख्या कम आ भूमि अधिक रहलोपर सन्तति भूमिसँ भरण-पोरण सहजहि भऽ जाइत छल। आजुक अपेक्षा आवश्यकता कम आ उपभोगक पदार्थो परिमित नहि। विज्ञान अपन पभाव ओतेक नहि देखओने छल। आइ त विज्ञान मिथिलाक कथे कोन सम्पूर्ण धरतीक देश लोक, संस्कृतिके जोड़ि देलक अछि। ते ओहि समयमे मिथिलाक लोकक उक्ति छल-
"उत्तम खेती, मध्यम वाण।
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान।।"
अथात् खेतीके उत्तम, व्यापारके मध्यम, चाकरी वा नौकरीके निषेध

तथा भीख िगव सभस नीच कषि िनल जाइत छल। इएह कारण छल जे एम्हठाि कहल जाइत अम्छ-

“कर खेती घरही भला।”

कहबाक तात्मयष घरेि रहू, खेती कर अिधिति छल। एतबे नम्ह, ओम्ह सियिक हेतु अम्धक सन्तानवान होएब िनम्य छलैक। म्कएक त पाकृम्तक पकोपक कारण जनाम्ध आ नम्ह होिए पबैत छल, जाम्हस जन संख्याक वृम्ष क ऊपर अंकुश स्मत: लामा जाइत छल। एतए तक जे पम्रवारक कोन कथा? गाि िक गाि जनशून्य भऽ जाइत छल। ते अम्धक सन्तानबला लोक पुण्यवाण कहबैत छलाह। बेटा नम्ह रहलापर बेटीक सन्तान वंशक टेक रखैत छल।

काल-िि बेटी-होपरान्त जिीन-जथा दऽ घरेि राखब पम्रपाटी चलल जे ‘कनेदानी’ कहबैत छल। कनेदानी राखब पम्तष ाक बात बुझल गेल। कनेदानीक सन्तान भमानािन कहबैत छम्थ। जम्मक पुर रा कनेदानी रखलम्म्ह से डीही कहबैत छम्थ। कनेदानीक सन्तान डीही पक्क परि भक्त होइत छलाह। म्बना दरािहाक नोकर ई भमानािन होम्थ, संगम्ह डीहीक कृपाकाक्षी सेहो। ते जनहासक कारण नम्ह बुझाइत छल। कनेदानीक पम्त पाय: भलािनुर होइत छलाह, जे बादि म्बकौआक नािस जानल गेलाह।

म्बकौआक सन्दभषम्कछु चचा : हम्र म्सहं देव िहाराजक दारा पञी-पवन्ध कएल गेल। एम्हस िम्थल-वाम्ह णक पञीकृत भेलापर शेणी बनल। ओम्हि योग, शोतभ्, भलािनुर पभृम्तक उदय भेल। पञीक अनुसार जे म्नम शेणीके पात्त कएलम्म्ह ओम्हि स म्कछु सम्पन्न व्यम्क्त उच्च शेणीक वाम्ह णस सम्बन्ध कए सवषसाधारणक दृम्ष ि पम्तष ा हाम्सल करबाक चेष ा कएलम्म्ह। एतए तक जे म्नम शेणीक वाम्ह ण पैघस पैघ जिीदार रम्हतहु ओम्ह पम्तष ाके पात्त नम्ह कए सकैत

छलाह। फलत: अथषअपन पभाव देखओलक अन्तरालि एक बाट पशस्त भऽ गेल जे ममो शेणीक बाह ण वैवाहक सम्बन्ध दारा अपनाके ऊपर उठा सकैछ। समष अछ कनेदानी राखब एह पञी-पथाक कारणे चलाउल गेल। सुखी सम्पन लोक एह सुवधाक उपयोग करए लगलाह। उतरोतर देखा-देखीि एक तरहक उपरौझक मस्थम उत्पन भऽ गेल। मकन्तु, ओहकालक िनयताक कारणे एहन बहुत कि लोक छलाह जे मम शेणीक लोकस सम्बन्ध करए चाहैत छलाह। फल ई भेल जे एह अलपसंख्याक वाह णक िग बढ़ गेल। एह वगषक लोकके सिज तेहन ने टीकासनपर चढ़ा देलक जे सभ व्याहके िति पेशा बनाए लेलक। इएह वगषमकौआ कहाओल अथात् जे मकस्थ। मियबला पदाथष ई वगषमन छलाह। पूणषिल्य देलहु सन्ता िय कएमहारक जूमि ई नह रहस्थ। ई मकौआ मकस्थ िति मवाहक हेतु। मवाहोपरान्त ई पूणषस्वतंत रहस्थ। ने स्तीक पमतदामत्व आ ने सन्तानक पम स्नेह। िलब रहमह केवल मदाइस कोनोटा तुमट सासुरि भेलापर र मख एहन त साधारण बात रहमह, अपन सन्तानक जनिक सम्बन्धि भािक पचार कऽ देबाि संकोच नह करस्थ। एहन तरहक दन्त कथा विि झाक आमक सम्बन्धि पचमलत अछ।

मकौआक लकण : ई मकौआ आजुक तुलनाि कि नह मकन्तु, िरा िचिन हजार-लाख ज नह नह करैत छलाह त दान जैतुक स लेस्थ। जाह कन्यास मवाह होइन्ह तकर पालनक भारस िकत रहबे करस्थ, संगह अलाबा ऊपरस महनक धाक किगर रहमह। उति भोजन, वस्त आ ढेउवा मदाइक र पि भेमट जाइमह। एतए तक जे बाप-पुरा वा नीज रीन-कजा लेल सेहो सासुरेस चुकाएब उदेश्य रहमह। सालि एक-आध बेर सासुर जास्थ ताह सहवासस जे सन्तान उत्पन होइमह वएह कनेदानीक वा डीहीक उपलब्ध बूझल जाइत

छल। ई म्बकौआ आकषिम जीवनक अभ्यासी भऽ गेल छलाह, म्कछु नम्ह ाति पेट पोशव उदेश्य रहम्ह। तम्बाकू, भागक पूणषअभ्यासी रहम्थ। शरीम्रक चेष ा म्घनौन बनौने रहम्थ। चाम्ल-ढाम्ल पूणषअसभ्य जेका रहैत छलम्ह। ाथिि चानन-ठोप लगौने रहम्थ। पैरक वोधि म्बदरल ठोर नारिल पेट चुबैत कनेरक टारी रम्थ तथाम्प एहनो अशद र प भेलापर ाहिग रहम्थ, म्कएक त पत्नीक पाणि पत भेटल रहम्ह। ते कन्या पक म्हनक र प, गुण वैभवक ूल्याकन नम्ह कऽ सोन सन कन्याके ढेग संग बाम्ह दैत छल। बादि ई म्बकौआ वदु-म्बवाही होाए लगला, जाम्हस म्थिल वह्र णि कन्यादानक ाख्य साम्या छल। बहुम्बवाहक साम्या म्बकौआ दारा केवल उत्पन भेल से नम्ह आओरो कारण भऽ सकैछ, जेना राजकुलक संसगष वाह्र णि कुपथा अएबाक संभावना। पम्हने वाह्र ण तपी, त्यागी होम्थ म्कन्तु ाती अथवा राजपुरोम्हत भेलापर देखाउसस बहु म्बवाहक अभ्यासी भेलाह। म्कएक त राजभवनि राम्नक अम्नम्रक्त सुन्दरीक झुण्ड म्नवास करैत छल। परञ्च, म्थिलक ई म्बकौआ वगषअथषक लोभस म्नम कुलि पच्चीस-तीस स्त्रीस म्बवाह करैत छलाह। एतबे नम्ह, शाशानघाट जेबास पूवो म्बवाह कऽ लैत छलाह। ज पथि स्त्रीके घर अम्नतो छलाह त शेरके नैहरेि छोम्ि दैत छलाह। इएह जीवन म्नवाहक उत साधन छलम्ह। एम्ह बहु म्बवाहक पथाके तोाबाक चेष ा त्यारेलाल ाशी 1870 ई.ि कएने छलाह। हुनका आन्दोलन जोर-शोरस चलल छल। ओम्ह पम्रपेक्ष्यि 1878 ई.ि म्नरहुति 54 म्बकौआ वाह्र ण ृत्युस 665 स्त्री म्बधवा भेल छल जाम्हि अम्धकाश युवतीि छल। एतए तक जे ाधुबनी म्जलाक कोइलख म्नवासी एक म्बकौआ 50 वरषक आयु तक 35 म्बवाह कऽ नेने छलाह। सन् 1875 ई. दरभंगा जखन सवम्डम्बजन बनल त तात्कालीन पदाम्धकारी ाटिलाक आदेश

कएल जे त्यारे लाल ितशीक आन्दोलनक अनुसार बहु म्बवाह बन्द हो। एम्हह तरहे म्बकौआ दारा बहु म्बवाहक सिस्या उत्पन्न भेल से कही वा मिम्थलाक लोक दारा बनाओल गेल। रम्हढ़वादी म्बचारक कारण कन्याक भम्बष्यक सीिका नम्हह कऽ अपन उतरदाम्यत्वके सम्म्िक बहानाि म्बकौआक ठोठि कन्या बान्हब म्थक।

बंगालक कुलीन पथा सेहो मिम्थलाक म्बकौआ पथाक सािन छल। वाडष(Ward) िहोदयक अम्भलेखस पता चलैत अम्छ जे वंगपराक उदय चन्दरके 65 स्त्री छलम्न्ह, कुशदाक रािम्कंकरके 72 स्त्रीस म्बवाह रहम्न्ह। एक एहनो घटना भेटैत अम्छ जे दुगलीक राििचन्द्र ितखजीके 32 स्त्री रहैन्ह आ वो 65 वरषक अवस्थाके पार कएने छलाह, दैवात् यकिाक म्शकार भऽ गेलाह, ितृ्युक म्ससिितता जाम्न बालक कहलम्थन्ह-

"दीन भावस बाबूजी अपने त िरैत छी घरि एको चुटकी अन नम्हह अम्छ, एहन हालति शादो कोना होएत?"

म्पता म्कछु गंभीर भऽ म्सहसंकोच भऽ कहलम्थन्ह-

"अम्बलम्ब नव गोपाल चटजीक 9 वरीय कन्यास हिर म्बवाहक व्यवस्था कर , म्कछु म्दन पूवषपस्ताव आएल छल, एखनो ओ कन्या अम्बवाम्हते अम्छ।"

पुत सम्वाद पठा कए 250 रपैया पर बात म्सम्ित कएलम्थन्ह। म्बवाहक 9 िासक अभ्यंतरे रािचन्द्र ितखजीक ितृ्यु भऽ गेलम्न्ह। एम्हह तरहे ओ अपन शादक इन्तजाि म्बवाहे दारा पूरा कए िइलाह। ई सभ छल बहु म्बवाहक कुपम्रणाि! म्बवाह सन पम्बत रेवाजके दुम्रत करब सािजक कुचाम्ल कहू वा कलंक।

म्बकौआ दारा म्बवाम्हत कन्याक जीवन झाकी : एम्हह पथाक पकोप त तेहन छल जे बूढ़, बकनेर, अकिषषय वरक संग तरणीक म्बवाह एक

पकारक मिडम्बना कहल जा सकैछ। अनेको कोि लागी जीवनक सोलहि वसन्तक पम्हने मिधवा भS कठीन जीवन जीबाक अभ्यासी होइत गेल। राजा रािहिन रायक शती-पथा उन्मूलिनस अनेको मिधवा वा बूढ़क स्ती कािमापासावश कुमिसत कििक भाजन भेल। एतबे नमिह, मिकौआ दारा मिवामिहत मिकशोरी मिताक घरि आजीवन थोपल रहलास कुिगषगािी भS जाइत छल। एमिहस दारण मिस्थमित ई भेल जे मिथिलक दमिरर सिदाय मिकौआक वंशधर एखनो अमिछ। मिहन्दूस्तानक अमिधकाश शहरि भनमिसया, भीिगा वा ताई नीच कििि पवृत मिथिल बाहण मिकौआक सन्तान मिथकाह। इहए कारण अमिछ जे ममिथिलेतर पान्तािि मथिलाक कुख्यामितक कुचेषा लोक करैत अमिछ। आब मिकौआ पथाक अन्तो आवश्यक छल।

मिकौआ पथाक अन्त कहू वा मिकल्प दहेज पथाक आरंभक कारण- अंगेजी मिशक्षाक पचार-पसारस लोक नैमितक स्तर ऊपर उठए लागल। मिजान मिकाल भेल। वैजामिनक आमिवष्कारस लोक जीवनि आिूलि पमिरवतषा होिए लागल। मिचमिकत्सा मिजान पाकृमितक पकोपके रोमिक देलक। जनहास नमिह भेलास जनवृमिद्ध अवाध गमितिि होिए लागल। स्वाधीनताक कारणे जन जीवन उदषािी होइत गेल। ते आब कनेदानी राखब आ ओकर सन्तानक भार उठाएब असौकजषभS गेल। मिशमिक्षत सिदायि वैचामिरक िमिस्त आएल ते पुरना पथा, रमिढ़वामिदता, कुलीन पथा वा मिकौआक सिूलि नष करब आवश्यक पतीत भेल। अनिलि मिवाह, वृद मिवाह, बाल मिवाहक परमिपराके अपन वैभवक अंश नगद रपि दS कन्याक मिवाह कराएबक पमिरपाटी शुर भS गेल।

दहेजक दारण स्वरप : जमिहना मिकौआक शेणी छल तमिहना मिशमिक्षत वगषक िपि दण्ड कायि भेल व्यवस्था रपि। डाक्टर, इंजीमिनयर, ओभरमिसयर, टेकनीमिसयन शेणी सरकारी सेवक पथि, मिदतीय तथा

तृतीय शेणी ओ चतुथवगीय गैर सरकारी सेवकक संगमहि मशाकग संस्थाक सेवक शेणी कायि भेल। आब की छल वरक मिूाि उपयुक्त आधारपर होिए लागल। बरदहटा जका वरक हाट सेहो लागल रहैछ जेन सौराठक सभा गाछी। जामहि कन्याक मिाताके जेहन उपाय रहैछ तेहन शेणीक वरके खरीद कऽ मिवाह करबैत छमथ। मदनानुमदन दहेजक पकोप बढ़ले जाय रहल अमछ। एमहि दहेजक दार ण र प त ई भेल जे गरीब कुिर वहि ण जे अयोग्य अमछ ओ अमिवामहते िरैत अमछ। अनेको उदाहरण भेटैत अमछ। मिाकौआ पथाि एहन बात नमहि भेल रहए। खैर! दहेज-पथाि सकिक संग मिवाह करायब युग-धािष िनिल गेल अमछ, िदा दहेजक मिकराल र प सािने अमछ। मिाकौआ र सैत छल त ओ िनौती कएलापर िमित जाइत छल, मकन्तु ई दहेज-पथाक मशामकत वगषत र सलापर स्तीक जान लऽ लैत अमछ। एतबे नमहि, कन्याक अपािन, मतरस्कार ओ अवहेलना करब स्वाभामिक होइछ। िनोनुकूल मिदाइ वा दहेजक राम्शि किी भेलापर सासु, ससुरक संग आगत व्यवहार तक कऽ दैत छमथ। पमहलुका मिाकौआ िग, तािकू खाइत छल त आजुक वर िमदरा, मसगरेट, चरस अभ्यासी होइत अमछ। मिाकौआ एक आध बेर सासुर अबैत छल, िदा आजुक ई मिाकौआ सालो भमर सासुरे रहबाक आकंकी अमछ। अन्तर मसफषएतबाटा जे मिाकौआक स्ती मिातेघरि रहैत छल जामहस ियामदत छल, िदा एखनुका वरक स्ती संगमहि रहैत अमछ, मकन्तु एमहि पढ़लाहीक शील, स्वभाव रहन-सहन चामल-ढामल वातावरणक कारणे मिकृत भऽ जाइछ। अमधकाश स्ती त शीलहरणक मशकार भऽ जाइत अमछ। कोना बूझब जे मिाकौआ पथाक अन्त भेल? आजुक ई दहेज पथा त ओकरोस मिमभन र पि सािने आएल अमछ। आजुक दहेज पथाक कारणे कन्याक मिाताक धिष् धन ओ इज्जत सभ नीलािभऽ जाइत

अछि। पाईक अभावमे कन्याक माता बोझ तरहक दूखमे जकाँ माअरगात कृशकाय भऽ सहि काटैत रहल अछि। कतबो रूप-गुणसँ युक्त कन्या छथिन्ह, मुदा पाईक अभावमे हुनक माताके केओ पुछिनिहार नहि दऽ सकैछ। पैसाक मोहशाची लोक योग्य-अयोग्य कन्याक सीमाके समहदृग्ध कऽ देने अछि। अनेको माता-पुतीके मेशाक्त करैत छथि, ताम्क हुनका बेटाबला दहेजमे छूट देताह मुदा से सम्भव नहि। योग्य वर कन्याक वरण करथि से ख्याल केओ नहि करैत छथि जाहिसँ माहिम दाम्पत्य जीवन नशीव होएब कठीन भऽ गेल अछि। एकर परिफल की होएत? शिथिल सामाजिक शृंखला टूटैत जायत, आर्थिक मारपीटा सामाजिक जन्मि देत।

एक दिसि ज कन्या पक बालक भीत जकाँ ढहल जाय रहल अछि त दोसर दिसि वरक पक मनोरथजक पूल मानु सन्नि-बालुक जोमि तल्लीन अछि। कहियाधरि ई दहेजक दाहसँ सन्तप्त रहत से नहि जानि।

दहेजक कारण अविवाहित कन्याक जीवन झाकी : दहेजक दरिद्राक असर तेहन तरहे पड़ि रहल अछि जे अधिकाश सम्भान्त परिवारक कन्याक कौमायिषअवस्था विवाहक पहिलकेँ समाप्त भऽ जाइछ। एतए तक जे यौवनकालमे नारकीय अवस्थाक अनुभव करैत अछि। पाय: बेटीबला ओ बेटाबला दूनूक समक्ष ई समस्या उत्पन्न छथिन्ह।केओ एहिसँ मुक्त नहि छथि मुदा टाका गनाएब आ गानबके आइ मर्यादाक विरय जानल जाइत अछि। जे जतेक टाका गनबैत छथि ओ ओतेक गवोन्नतसँ समाजके बुझबैत छथि, संगहि जे गनैत छथि से अत्यान बत्मानक विशद् वर्णन करैत छथि।

सभसँ खेदक विरय त ई जे गरीब लोक जे बेटीक परिवा ताका लैत अछि वा छल, तकरा लोक बेटी बेचबा कहैत छल। घृणाक दृष्टिसँ

देखैत छल, आइ ओकर उनटा हवा बहि गेल अछि। बेटा बेचनिहारके लोक बेटा बेचबा नहि कहि समाजि उच्चासन दैत अछि जाहिसँ बेटाक विवाह टाका लऽ कए करबामे गौरवान्वित होइत अछि। ई समाजक लोकक विचारहीनता नहि त आर की? एहिसँ निन्दनीय बात आइ की होएत? तखन तुलसीक पाँति स्मरण भऽ जाइछ-

“समरथके नहि दोर गोसाई।”

अथात् पैघ लोकके दोरी नहि कहल जाइछ। ओइ दहेजक पृष्ठपोरक समाज पैघे लोक छथि ते एकर उन्मूलन सम्भव कोना? नहि जानि कतेकौआक जगह दहेज आएल आ ई कहिया धरि लोकके व्यवहारैत रहत? आइ त आइ त अधिकाश ललना अभावी पिताक छातीपर दुगोमे पहाड़ि बनि बैसल अछि। कतेक त विवाह सूतमे बान्हलोपर भाग्यपर झखैत अछि। प्रतिकूल घर-वरक अभवमे संघरषत जीवन बिता रहल अछि। सुख सुविधामे पलल बालिका पतिक घरमे गंजन, दुर्व्यवहार, व्यंग्यपूर्णवाक् वाणस विद्ध होइत रहैछ जकर कारण होइछ लेन-देनक गड़बड़ी, दान जैतुकमे मनचाही वस्तुक आपूर्तिमे कमी। एतबे नहि दहेजक उपरान्त वर्षयातक विशेष सेवा नहि भेलास वा कोनो तरहक विघटन भेलापर कन्याके सासुरमे पति द्वारा वा पतिक घरक लोक द्वारा अवांछित व्यवहार कएल जाइछ। कतेकठाम त कन्याक हत्या कऽ देल जाइछ आ नहि त कन्या स्वयं आत्म हत्या कऽ लैत अछि। सभक मूलमे दहेजे अछि जे कन्याक पिताके विवश कऽ दैछ, विवशताक कारण होइछ रक्ताभाव, अथाभाव। कोजागरा, जाड़िरक संग-संग साल भरि तक वाह्मण समाजमे बेटीबलाक तनोतरी ढील भऽ जाइछ ते विवाहस विध भारी कहल जाइछ।

दहेज-पथाक उन्मूलनक उपाय- यद्यपि वर्तमान सरकार दहेज लेनिहार ओ देनिहार दुनूके कठोर दण्ड देबाक अध्यादेश जारी कएल अछि,

िदा ई नैम्तक पतनबला लोक एखनहु कम्बल ओम्ढ़ कऽ घी पीबएबला बात रखने अम्छ। सरकारक ऑम्खर्ि त गदा दैते अम्छ संगम्ह सिजोके उल्लू बना रहल अम्छ। लेन-देन कऽ लइए। गुत्त र पस ताम्क हि आदशषर पि कुटिीती कएल अम्छ। ते सरकारक दारा एकर उन्िूलन कथम्पि सम्भव नम्ह। एकरा लेल वैचाम्रक िम्त्त चाही, सिजक हरेक व्यम्क्तक नैम्तक सिथिष चाही। ई एक कलंकपूणषरेवाज म्थक जतए पाइपर दू आजीवन मिम्ल कए रहए बला जीव तकर पेकि आकलन पाइपर हो। म्ाि य एम्ह तरहक सिजके कलंम्कत सिज घोम्रत कएल जाय जतए टाकाक आधारपर दाम्पत्य सम्बन्ध बनाओल जाइछ। एक शब्दि कहए पति जे म्ववाहक पम्वततताके तखने कायि राखल जायत जखन हरेक वगषक लोक आतिगत म्वचार कऽ म्ववेकपूणष म्नणषि लेम्थ। आडम्बरपूणष म्ववाह पम्ि याक संग दहेजक म्वकृत पम्रपाटीक म्वरोध करम्थ। भम्वष्यक जननी सृम्ष्ट क संरचना करम्नहाम्र आजुक कन्या कामि पूणषअम्भशत्त भए जाएत।

यत नायषवस्तु पूज्यन्ते,

रम्न्ते तत देवता।

िनुस्िृम्तक ई वाक्य सवषथा अिान्य भऽ जाएत आ एक म्दन हिरा लोकम्नके अवनम्तक िहान गतषि लऽ कए चल जायत!

म्बदापम्तकालीन मम्थिलाक कृम्र

जाम्ह सयिि म्बदापम्तक आम्बषाव मम्थिलाि भेल छल ओ संिणिक काल छल। सामिम्जक म्बशृंखलताक कारणे म्कछु लोक काज-धन्धा करबास ि्ह िनि छल। जे केओ काजुल, पम्रशिी छलो ओहो कतष्यहीन जीवन म्बतेम्महार भऽ गेल छल। मम्थिलाि खेती आ पशुपालनक म्सवाय दोसर जीम्बकाक साधनो त नम्ह छलैक। सीमित साधनो अछैत खेती करनाइ असौकजष बुम्झ म्दनानुम्दन आम्थषक दुवषताक म्शकार होइत रहल। इएह कारण भेलै जे एतुका लोकक आम्थषक अवस्था लचमि गेलैक। एतबे नम्ह, म्कछु लोक कृम्रक उिका कऽ भीख िगब शेयस्कर बुझए लागल। एहन लोकके सािज घृणाक दृम्ष्ट स देखैत छल। ते एम्ह पवृम्तक लोकक ध्यान खेतीक ओर आकृष करबाक म्नमित कहबी चम्रताथष भेल-

"उति खेती धिम्यि वाण,

म्नम्रद चाकरी भीख म्नदान।"

तात्पयष ई जे खेती करब सभस उति िनिल गेल। व्यवसाय करब धिम्यि। नौकरी करब अधि िनिल गेल। सभस अधलाह- भीख िगब बुझल गेल। जहा तक नौकरीक गप्प छैक, आजुक सियि नौकम्रयेके पाथमिकता भेटल छैक। ओ भले सम्पन्न पम्रवारक म्कएक ने होम्थ, नौकरी हेतु अपस्याँत देखल जाइछ। एहनो सयि छलैक जखन नौकरी कएम्नहारके सािजि कुचचा होइत रहैक। एम्हस ईहो जात होइछ जे आति म्नाभषताक म्शका देल जाइत छल।

िहा कम्ब म्बदापम्त अपन रचना 'म्लखनावली' आ 'वरषकृत्य'ि मम्थिलाक कृम्रक बहुम्बम्धवणात कहल अम्छ। संगम्ह कृम्रके उपेकाक दृम्ष्ट स देखम्नहारके एम्ह ओर आकम्रषत करबा लेल अपना रचनाि

म्शिव आ गौरीक ाध्यिासि उपदेश देल अम्छ। म्वादापम्नाक ाित उदेश्य अकाषियताक अनाूलिन करब छल।

“बेम्र-बेम्र अरे म्शिव ाि तोय बोलो,

म्कम्रणी कम्रअ ानिलाई,

मामख ाािमाए पर गुण गौरव दूम्रजाय,

माधषा जन बोम्ल सबे उपहासे,

नम्ह आद। अनुकम्पा।

तोहे म्शिव पाओल आक-धतूर,

एम्ह पाओल फूल चम्पा।।”

भूमाि के अम्धकता आ जन संख्याक न्यूनताक कारण खेती अदम्ल-बदम्ल कऽ होइत छलैक। जाम्ह खेताि एम्ह वरषधान गृहस्थ करैत छल, ओकरा परती छोाित छल। ई करलास साल भम्राि खेतक ऊपज शम्वत बम्ढ़ जाइत छलैक। भूमाि तीन शेणीक ानिल गेल छल।

म्वादापम्नाक सायिाि पम्हल शेणीाि गोचर, दोसर शेणीाि ऊपजाउ आ तेसर शेणीक वंजर।

गोचर भूमाि अनेक पकारक घास लगाओल जाइत छल जे पशुपालनक हेतु पाुखि छल। ई गोचर भूमाि साधारण गााि एक सय दंड, पैघ गााि दुई सय दंड एवा् नगराि चाम्र सय दंड छोािल जाइत छल। वंजर भूमाि के तोमाि कऽ खेतीक योग्य बनाओल जाइत छल। एहन भूमाि के म्वादापम्ना खील भूमाि कहलम्खन्ह। एहन पकारक भूमाि खेती कएम्नहार भू-स्वााािके सात वरषधम्र ऊपजक आठाि भाग दैत छल। तत्पााात् भू-स्वााािक अनुसार उपजक स्वाााित्वाि पम्रवतषा भऽ जाइत छलैक। एखनहु परती जाािनाि खेती कएम्नहारके सुम्वधा देल जाइत छैक। एम्ह सुम्वधाक सायि माधाम्रत नम्ह छैक। जगह-जगहपर अन्तार

देखल जाइत अछि।

ओहि समयक समाज दू वर्गमे बटल छल। एक वर्ग राजा महाराजाक सामन्तवादक छल। एहन वर्गक लोकक खेती-पथारी दूर-दूर धरि होइत छलन्हि। ओतए ओ लोकनि अपनाक खेती करबाक कमिश्नक अथात् कमिआयाके रखैत छलाह। एकर अन्तर्गत आरो अधिकारी वर्ग ओकर काजक निरीक्षण करबाक लेल राखल जाइत छल।

समाजक दोसर वर्ग दलित वर्ग छल जे स्वयं अपन खेती करैत छल। एहन वर्गके खेतीमे अपन पतीस सेहो सहयोग भेटैत छलन्हि। खास कऽ पशुक हेतु सभ पकारक व्यवस्था स्त्रीगणे दारा होइत छल। महादेवके मिथिल होएबाक पमाण कहक ईहो भऽ सकैछ। हुनक सासु मैना स्पष्ट रूपसँ कहैत छथिन्ह-

“हमर धिया जखन सासुर जयतीह तखन ओ घास काटि लौती आ बसहा चरौती।”

खेती-परती हर एवं कोदारिसँ ओहू समयमे कएल जाइत छल। हरक व्यवहार महाकवि विद्यापति साहित्यक संगहि तत्कालीन साहित्यमे सेहो कतेको स्थलपर कएने छथि। विद्यापति अपन वर्षकृत्यमे हरक महत्वक उल्लेख कएने छथि। ओहि समयमे बरदक सिंहमे किछु गू आदि रगड़ल जाइत छल। पाय: ओहि समयमे धनी-मानी व्यक्ति हरक-फारक आगूमे सोना लगबैत छल। विद्यापति कहैत छथि सोन लगायब एक विधान छल।

एक तरहक कहबी छैक वा लोक धारणा जे पंचमीक दिन हर जोतबा काल जौं बरद चमत्कार करए वा मूतिया त चारि गुणा उपज होएबाक संकेत भेटैछ। ओहि समयमे पाँच दिसरोर जोतबाक विधान छलैक।

विद्यापतिक लिखनावलीक एक पत्रमे हरक हेतु धुरन्धर बरदक चचा

आयल अछि। खगौट भेलापर गृहस्थ एहन धुरन्धर बरदकेँ बन्हकी रखैत छल। एहिसँ ओहि समयिक सामाजिक लचरल अवस्थाक परिचय भेटैत अछि। सम्पन्न गृहस्थ हरबाह खेत जोतबाक नियमित रखैत छल। हरवाहीक अलाबा अन्यो काज हरबाहसँ करबैत छलाह। विद्यापतिक एक पदमे उल्लेख आएल अछि जे गौरी शिवसँ खेती करबाक लेल कहैत छथिन्ह, तखनुक ई पाँति अछि-

"खटंग काटि हर हर जे बनाबिअ,
तीशूल तोड़ि कर फार।
बसहा धुरन्धर हर लए जोतीय,
खेत खोला पहार।"

धनी-मानी व्यक्तिक ओहिठाम कमियाक ऊपर हिसाब होइत छल जकरा मारीक्क समान पद होइत छलैक। कातिक परक खेती-पथारीक सभ पकारक खबरि कमियासँ लैत रहैत छल। कोन खेतमे कोन तरहक अन उपजाओल जाय संगहि खेत कोना जोतल जाय, कोन खेतमे आरि ऊच्च कए बान्हल जाय संगहि कोन खेतमे कतेक लागत लगाओल जाय इत्यादि इत्यादि तकर मजजासा हिसाब कमियासँ करैत छल।

विद्यापतिसँ पूर्व मिथिली डाक आ घाघ भेल छलाह जनिका मिथिलाक कृषि कार्यक उदगेता कहल जाइछ। डा. डाकके पकृतिक गहन अध्ययन छलनि। एखनहु डाक वचनावलीक अनुसार मिथिलाक गृहस्थ कृषि कार्यक सम्पन्न कऽ सन्तुष्ट भऽ जाइत छथि। डाकक कहब छल- गृहस्थ छोट-कीण बरद नहियो राखथि मुदा दुई गोट धुरन्धर बरद कीनि खेती करथि। अपन खेती भेलापर अनको खेतीक हेतु मंगनी देथि। हुनक शब्दमे-

"नाटा बरद बेचि कए, दुई धुरन्धर कीन,

अपन खेती कम्र कए आनके ि गनी दीन।"

एतबे नम्हि, ओ कहने छम्थ खेतक उपजा जोतपर म्नाभष करैत अम्छ।

थोि के जोम्नाए अम्धक ि इ अम्वाए,

ऊच के बाम्न्हए आम्र।

जौ खेत तैयो नम्ह उपजए त

डाक के पम्रएह गाम्र।

एम्ह लेल म्वादापम्नकालीन ि हित ि कम्म्नयाके सलाह दैत छलाह जे हरस तैयार कएला बाद खेतके कोदाम्रस साधब उत ि होइछ।

म म्थिलाक कृम्र ि पयात्त वराक अभाव पाग ऐम्नहाम्सक कालम्हस रहल अम्छ। ि निसून एतुका हेतु जुआवाजी कहल गेल अम्छ। म्कएक त अम्त वृम्ष्ट अनावृम्ष्ट आ दुम्भाषक्क म्शकार एतुका गृहस्थ होइत रहलाह अम्छ। ते पटौनीक पभाव सि य-सि य पर होइत छलैक।

म्वादापम्न साम्हत्यि सेहो पटौनीक उल्लेख भेटैत अम्छ। पटेबाक एक यंत म्वशेरक चचा कएने छम्थ। यथा- रहट संस्कृत अरधट्ट आ पाकृम्नक अरहट। एम्ह ि तिस अहुखन इनार वा कूपस पाम्न बहार कएल जाइछ। एकर अम्नम्रक्त चर, चाँचर, डबरा, खता आ पोखम्रस करीन दारा पटौनीक काज लेल जाइत छल। तत्कालीन राजा दारा बि का-बि का पोखम्र खुनाओल गेल छल।। म म्थला ि एहन अनेको पोखम्र म्वद ि नि अम्छ, जकर सकल आब बदम्ल गेल छैक। एम्ह तरहक पोखम्र रजोखोम्र कहबैत छल। म्कवदम्न्त छल जे दैत्य दारा एहन म्वशाल पोखम्र खुनल गेल छल।

म्वादापम्न त भाव नदीक उल्लेख कएने छम्थ- गौरी जखन म्शवस खेती करबाक आगह कएलम्न त म्शव कहलम्थन्ह-

"सभ बात ि निल ि दा पाम्नक अभाव भेलापर की होयत? तखन खेती त करब असौकजषहोएत।"

एम्हपर गौरी उतर देलमन्-

“पाटय सुसमर धारा।”

एम्हस जात होइत अम्छ जे ततयुगीन मिथिलाि पटौनीक काज गंगानदीस कएल जाइत छल।

ओम्ह सयिक कृरकि पगाढ़ पेि होइत छलमन। एक-दोसरक म्हत म्चन्तनक संग अमन आदरक भाव रखैत छलाह। खेतस उपज मामाषा आब ते बाधक हेतु रखवार राखल जाइत छल। अहुखन मिथिलाक गाि रखवार रखबाक पथा अम्छ। रखवारके म्बशेर अम्धकार गृहस्थक दारा देल गेल छल। कहुखन ई रखवार खेतक पूणषउपजके हम्थया लैत छल जे म्बदापम्तक पदस जात होइछ-

“खेत कएल रखवारे, लूटल ठाकुर सेवा भोर।”

यदा-कदा एहनो होइत छलैक जखन खेतीक सयि बीमन जाइत छल तखन वरा होइत छल। जेकर म्बदापम्तक पदस पुम्ष होइछ-

“सयि गेले िघे वम्रसब,

की दहु ते जलधार।”

एहना मस्थम्ति वराक पामनके रोकबाक हेतु खेति ऊच्च आमर बान्हल जाइत छल तामक खेतस पामन ससमर नम्ह जाय। म्बदापम्तक पदस संकेत भेटैछ-

“गेला पीि म्पारोधक की फल।”

पुन: म्बदापम्त अपन रचनाि पेि रपी फूलक हेतु शीलक आमर बाम्ह यािदाक रका कएने छम्थ-

“फूल एक फूलवामर लगाओल िरामर,

जतने पटओलम्ह सुवयन वामर।

चौम्दस वॉधम्ल सीलक आमर,

जीव अवलिवन कर अवधामर।”

एम्हस ईहो जात होइछ जे लोक भूमिके छोट-छोट टुकीि बाम्ट खेती योग्य बनबैत छल। म्बदापम्तक सयिक कृरकक सस्ित उपजाक अनक उल्लेख कतहु एकठाि नम्ह भेटैत अम्छ। तखन एतए िसूरी, राहमि, सम्रसो, म्तल जौ आम्दक अवश्य उत्पादन होइत छलैक। जतेक पकारक अनक उल्लेख भेल अम्छ ओ सभ अन म्बम्भन अवसरपर मिम्थलाि म्बम्भन देवी देवताक पसनताक हेतु दान कएल जाइत छल। एकर सागोपाग वणषा म्बदापम्तक 'वरषकृत्य'ि भेटैत अम्छ।

अनुकूल सयिस यथेष उपज होइत छलैक। गृहस्थी नीक हालति भेलास मिम्थलाक लोक बाहर नम्ह जा कऽ घरम्ह रहैत छल। कहबी छलै-

"कर खेती घरही भला।"

इएह कारण छल जे एतुका जनिनस वाह पम्रवेशक अनुभवस वंम्चत रहक। म्बदापम्तक पूवष जम्हना गृहस्थीस उदास लोक छल तम्हना कम्बक रचनाक पभावस गृहस्थीक ओर झुकाव भेल छल। खेतीस उत्पन अनक उपयोग िला व्यवस्था दारा चलैत छल। िलाक अन्तागष ियि-म्बयिक म्बधान छल। एकरो उल्लेख म्बदपम्तक म्लखनावलीि आयल अम्छ। तौल-नापक व्यवस्थाि टंक और िनी पाथी चलैत छल। 4 िनी एक टंक होइत छलैक। ओम्ह सयिक 1 िनी आजुक 16 सेरक बरा-बर होइत छलैक।

खेतस पयात्त धानक पामाक पिणि छलैक जे पैघ गृहस्थ डेम्ढ़या वा सवाईपर कजा लगबैत छलाह। कजाक अदायगी अगहन िसि नवका धान भेलापर होइत छलैक। म्बदापम्तक म्लखनावलीि कृम्र सम्बान्धी चचा म्बलकण ढंगस कएल गेल अम्छ।

अस्तु...!

विद्यापतिक रचनामे विरह वर्णन

विद्यापति अपन बहुमुखी प्रतिभाक परिचय अपन रचनामे देलन्हि अछि, मुदा काव्य प्रतिभाक वास्तविक परिचय सुनक विरह गीतसँ होइत अछि। प्रेमक प्रगाढ़ता संयोगमे नहि वियोगमे होइत छैक। हिनका राधाक विरह-वेदनाक सजीव आ मार्मिक वर्णन कएलन्हि अछि। जौ सूर विप्रलम्भ शृंगारमे गोपीक वेदनाक टीसके भ्रमर गीतक अन्तर्गत उजागर कएलन्हि त विद्यापति सूर्कि दृष्टिसँ राधाक भिनोदशाक विछोहावस्थाके विरह गीत रूपमे उजागर कएल अछि।
सखियानुकूल विरक्षणीक मनःस्थितिक स्वाभाविक वर्णनमे विद्यापतिक कलम खिजल छन्हि।
साहित्य शास्त्रमे शृंगार रसके रस राजक संज्ञा देल गेलैक अछि। कमनीयताक कारणे अन्य सभ रससँ एकर स्थान उच्च मानल गेलैक अछि। कविक वर्णनमे सत्यता रहबाक ई सत्यता प्रेमि वर्णनमे सर्वाधिक पाओल जाइत अछि।
प्रेमिक प्रकृतमे 'विरह'के महत्वपूर्ण स्थान देल जाइत छैक। विरहक द्वारा प्रेमिक प्रगाढ़ताक पूर्ण परिचय भेटैत छैक। विरह ओ कसौटी थिक जाहिपर प्रेम सुवर्णक परीक्षा होइत अछि। एकर अधिकतामे प्रेमी एवं प्रेमिकाके एक दोसराक प्रति वास्तविक भावावेश एवं तन्मयता होइत अछि। विरह प्रेम जीवक एक मार्मिक घटना थिक। एहिसँ प्रेमक परिपुष्टि होइत अछि। विरह एक प्रकारक पुट थिक। बिनु पुटे वस्त्रपर रंग नहि चढ़ैछ।
साहित्य-दर्पणमे उल्लेख अछि-
"न विना विप्रलम्भेन संयोग: सुखशिनुते, करामिते हि वस्त्रादो भूयान राग: प्रवर्तेत।"

अथात् म्बानु म्बारहक पेकि स्वातंत सता नम्हि। एही रपे म्बानु पेकि म्बारहक अम्स्तत्व नम्हि। पेकि अमानके पजजवम्लत करैछ म्बारह-पवन, पेकि अंकुरके बढ़बैछ म्बारह जल, पे दीपक वम्तष्काके उस कबैछ म्बापलम्भ। म्बारह-वेदना धिुििी होइछ। एम्हि रदन एवि् आिद सािने िम्मलत होइछ। संयोगक अवस्थाि हृदयि आशा एवि् म्नाराशाक ओतेक दन्द नम्हि होइत अम्छ जतेक म्बारहक अवस्थाि। वरहि वासनाक अन्धकार पाय: लुप्त भए जाइत अम्छ तथा पेकि म्बाशुद अनुभूम्तिि म्बारही डूम्ब जाइत अम्छ।

शृंगार तथा म्बारहक एतेक िहत्वके जनैत म्बादापम्त अपनाके ओम्हस फराक कोना रम्खतम्थ? एम्हि म्बारह वणषाक हेतु म्बादापम्तक लेखनी सेहो चलल आ चलबेटा नम्हि कएल अम्पातु अपना रचना शम्क्तक भाव एवि् अनुभूम्तक बलस समस्त भारत वरषके भाव-म्बाभोर कए देलक।

म्बारह-वणषाि म्बादापम्त हृदयक अनेक भावके म्नारलंकाम्रक भाराि रम्ख सरलतास म्चम्तत कएल अम्छ जे ओ भाव सभ हृदय पटलपर स्वाभावत: अपन अम्धकार स्थाम्पत कए लैछ।

म्बादापम्तके िहाकम्ब कहएबाक एक पधन कारण ईहो म्थक जे म्बारह एवि् म्बारहक पाित् मिलनक वणषाि म्हनकर स्थान उच्चतिि रहल अम्छ। एम्हि मिलनि ओ जे अपन स्वाभाम्बकता भवुकता सुन्दर कल्पना तथा पद योजनाि कनीयता देखाओल अम्छ से एक िहान कम्बए स सम्भव भए सकैछ। पेि सूतिि गम्थत नायक लोकम्तक म्चत हुनक काव्यि सहसा जीवनक यायलय पदम्शत कए देलक।

पं. जगनाथ साम्हत्य दपषाि म्बारह अथवा कािि दशाक दश अवस्था कएल गेल अम्छ-

अम्भलाराम्िन्ता स्मृम्त गुण कथनो दंग संपलाप उन्िदो व्याम्धजिता

िमिलनलालसा दशातश्य कादिशा अथात् सिरण, गुण-कथन, अमभलारा, िूच्छा, व्यामध, उदेग, पलाप, जिता, उनिाद एवि् िरिण। एमहि दस अवस्थाक अमतमरक्त्तो अनेक भावक मचतण मवदापमतक कएलमन्ह अमछ। मवरहक िहित्वपर दृमष्ट पात करैत मवदापमत मलखैत छमथ-

“जेहन मवरह हो तेहन मसनेह।”

पेिकि असली स्वादक अनुभव मवरहेक अवस्थािि वास्तमवक रपस भेटैत अमछ। मवदापमतक मवरह व्यमथता राधिका अनमभज छमथ। हुनका सििपि नमहि छमथन्ह। राधा हुनक मवयोगिि शुक शीरा सुिनिक सदृश्य धाराशामलनी छमथ। हुनक अशुपवाहस भूिि कदिमचुक्त भए गेल अमछ। राधा ओमहि थालबला भूिमपर लेटा रहली अमछ। हुनक सखी सभ कृष्णक आगिनिक आशासन दैत छमथन्ह परन्तु ई आशासन मवरहमतािि घीक काज करैत छमन्ह। महनक यौवन मवरहक वेदनास मदनानुमदन कीण भए रहलमन्ह अमछ, हुनक व्यथा अमधकतर भए जाइत छमन्ह।

मवदापमत राधाक हृदयक िनोवैजामनक वणषा करैत छमथ-

“अंकुर तपन ताप यमद जारब, मक करब वामरदिहे,
ई नव यौवन मवरह गिाएब मक करब से मपाया ने हे।
हमर हमर की इए दैव दुराशा,
मसन्धु मनकट यमद कंठ सुखाएब के दूर करत मपाया सा।।”

एमहठाि दृषान्त दए राधिका जे अपन हृदयक दुख रखलमन्ह अमछ से सहृदय संवेध मथक। सहसा भावावेशिि आमब मवधाताके ‘हमर-हमर की दए वैव दुराला’ कमहि भत्सषा करैत अमछ। एतए िधिुणिी वेदनाक मचतण कएल गेल अमछ।

सखीक सम्वादस जखन काज नमहि चलैत छमन्ह तखन राधा स्वयि कृष्णके रोकबाक पयास करैत छमथ-

“ाधव तोहे जनु जाए मादेशे
हरिो रंग रभस लए जएबए लएवह कोन संदेशे,
बनम्ह गजि कर होइत दोसर मिा मासम जएवए पमा ारा।
हीरा मिण ामिणक एको नम्ह ागव फेर
ागव पहु तोरा।।”

एतए राधाक पेकि अलौमकक रसास्वाद अमछ। तकक अनुसार आदान-पदान सेहो होएबाक चाही। रंग-रभसक पमा बदल की दए सकताह? ओ मथक कृष्णाक पें। राधाक याचना। फेर ागव पहु तोरा, मा:स्वाथषपेकि भाव स्पष र पस पदमशा भेल अमछ।

कृषण थिुरा पस्थानक वातास सम्पूणष गोकुल शोका कुल भए गेल अमछ। सवषा अशुक पवाह एवि् करण चीत्कार पारम्भ भए गेल-
अव थिुरापुर ाधव गेल, गोकुल
गोकुले उछलला करणाक रोल नयन जले
देख बहए म्हलोल।

राधा बहुत मदनस आशा लगौने छलीह जे कृषण औताह। अवमधक अवसान भऽ गेल, बाट तकैत-तकैत भए गेलम्ह। अन्ता मनाराश भऽ मालाप करए लगलीह।
लोचन धाि फेदायल हमर नम्ह आएल रे,
मशव-मशव मजवओ ने जाए आस अर झाएल रे।

पम्हने राम्धका कृषणक पेकि केन्र मान्दु छलीह। एखन सभटा मापरीत भए गेलम्ह अमछ। तखन अपनाके साँझक तारा बुझैत छमथ। जकर दशषा अशुभ होइछ, संगम्ह भादवक चौठीक चान अपन ुखिके बुझैत छमथ जकर दषा अशुभकारी ानिल जाइछ- मारहामना दग्ध राम्धकाक लेल ई जतबा आ चियक मारय भेल ओतबए लाजोक। मारहामनास जजषरत राधाक हृदयक टीस स्पष अमछ-

"की हि साँझक एकसम्र तारा, भादवचौठीक शशी,
इम्थ दुहु झाझ कओन िर आना जे पदुहम्ख न हेरम्ल।।"
काम्लदासक म्शत अपना म्बलापि कहैत छम्नह-
"िदनेन म्बाना कृतारम्त: क्ण ित म्कल जीम्बतेम्त्ा,
वचनीय मिदं व्यवम्स्थतं रिणस्या िनुयाम्।"
यद म्प।
एतएव देखैत छी जे म्बद ापम्त कालम्लदासहुक म्बरह-वणष्स टम्प जाइत छम्थ। एतए म्बरह वणष्ा कम्बक कल्पनाक चातुयादशष्ीय अम्छ-
"लोचन नीर तटम्न मिर िने, ततम्ह कलािम्ख करए सनाने।
सरस ृिणाल करहजप िली, अएम्नस जप हम्रनाि तोर नी।।"
अथात् म्बरम्हणी राम्धका नयनक अशुस नदीक म्नािण कए ओहीि स्नान कए रहल अम्छ, तात्पयष जे ततेक अशुपात भेलम्ह अम्छ जे ओ नारीक र पधारण कए लेलक अम्छ।
कृष्णक मिलनक आशा सिाप्त भए गेलापर नाम्यका राधा अपन सौन्दयषक त्याग करए लगलीह अम्छ। ित शरीर एविं स्नेह बम्न्ह गेल छम्नह-
"सरदक रसधार िख र म्च सोपलक हम्रन के लोचन लीला।
केसपाल लए भािम्र के सोपलक पाए िनोभव पीला।।"
पावसकालीन म्बरहोदेगक एकस एक उतिं पद पदावलीि पाओल जाइत अम्छ। दु:खाम्नभूत राधाक करिण िन्दन हृदय म्बदारक एविं करिणोत्पादक अम्छ। एम्ह सियिक पत्येक वस्तु जे संयोगक अवस्थाि आनन्द दायक अम्छ राधाक हृदयके म्बदीणष कए रहलम्ह अम्छ। म्पयतिक म्बरहि ओ सभ वस्तु कष दायक छम्नह।
सम्ख हे हिर दुखक नम्ह ओर...।
म्बद ापम्त कह..... म्दन राम्नया।।

एम्हि पदक अकर अकरस िगन हृदयक हाहाकार पम्त ध्वमनत भए रहल अम्छ। दुखक आमा ज्वालािखी बम्न फूम्ट पिल अम्छ। हम्र म्बानु केसे गािओल म्दन राम्तयाक भावक कम्वता रवीन्द्रनाथ सेहो म्लखलम्हि अम्छ-

तुम्मि यम्द नादाओ, करो अिाि हेला।

केिन करे कारबे आिर एिन बादल बेला।।

संस्कृत साम्हत्यिम एम्हि पकारक अनेक वणषा अम्छ-

"इतो म्वधुदल्ली म्वलम्सत मिति: केतम्कतरो,

स्फुरदगन्धः पोधजलद म्नानाद स्फूम्जषाम्ति:

इत: केम्लिाि कलकलरव: पक्लिदशा

कथं भात्स्यन्तोते म्वरह म्दवसा: संिृतरसा:।।"

राधाक पेिक तनियिता एतेक बम्ढ़ गेल अम्छ जे ओकर वशान्त नम्हि भए सकैत अम्छ। ओ कृष्णक नाि लैत-लैत एतेक तनियि भए गेल छम्थ जे ओ अपनाके स्वयं कृष्ण िनिए लगैत छम्थन तथा राधा-राधा जपए लगैत छम्थ। तत्कणम्हि हुनका अपन वास्तम्वक दशाक जान भऽ जाइत छम्हि। तथा म्वरहक तीवरवेदनास ओ आुल भए उठैत छम्थ। अहुखन िधव-िधव रटइत राधा भेम्ल िधाई।

भेल सन्देह।।

एतए पेि पराकाषािपर पहुम्च गेल अम्छ। नाम्यका राधाक रपि सेहो तथा कृष्णक रपि सेहो दुनू अवस्थािि िषियथा सहैत छम्थ। एम्हि पदिि म्वदािपम्त पेिक तनियिताक एहन म्चत उपम्स्थत करैत छम्थ जे संसारक सम्पूणष साम्हत्यिम अपन सभता नम्हि रखैत अम्छ। इम्हि पकारस म्वरहिि मिलन एविि मिलनिि म्वरहक वणषा म्वदािपम्तम्हक उत्कृष्टा म्थक।

म्वदािपम्तक म्वरह वणषा कएक म्वशेरता ई अम्छ जे हुनक नाम्यका

ि‍वरहिँ रि‍हतहु अपन भाग्यक दोर दैत छथि‍ नायकक नहि‍। ि‍हनक राि‍धका कुलवती ललना छथि‍ ते पेिँ जतेक बाधा, यातना आर जतेक व्यथा सहैत जाइत छथि‍ हुनक पेिँ सोना जका ओतेक चिकैत जाइत छथि‍ह। स्वपोिँ ओ कृष्णाके कटुि‍वचन नहि‍ कहैत छथि‍। अत्‍ान कि‍ि‍क दोर तथा ि‍क करत नाए दैव भेलवाि‍।

एि‍ह पकारे अि‍छ-

“सि‍ख कि‍ह कहब अपतोर, हिर अभाग ि‍पयाक नि‍ह दोर।।”

अन्ताि‍ युग-युग जीवथु लख कोर हिर अभाग हुनक नहि‍ दोर।।

ि‍वरि‍हणीक ि‍चतण काि‍लदासक शब्दि‍-

“कल्याण वुदैरथवा तवाणं न काचिारी िमशंक नीय:।

ििव जनिान्तर पातकाना ि‍वपाक ि‍वस्फूजथुर: पसक्य।।”

सीता सेहो पूणषजनि‍ पापके अपन दुखक कारण िनैत छथि‍। एक स्थलपर त राधा ि‍नराश लऽ ृित्युक अि‍भलारा करैत छथि‍ जे भावोत्पूणषअि‍छ-

“आन करह ि‍हय ि‍वि‍ह कएल आन,

अवहु न ि‍नक सभ कि‍ठन परान।।”

ि‍वदापि‍तक ि‍वरहिँ पकृि‍तक उदीपन, रपक ि‍चतण शृंगार रसक स्थायी भाव रि‍तके जागह करबाि‍ सफल भेल अि‍छ। जागतावस्थाि‍ त कृष्णास िमलन असम्भव अि‍छए, स्वपहुि‍ नाि‍यकाके कृष्णास िमलन नहि‍ भऽ पबैत छि‍ह। ते नीन नहि‍ होइत छि‍ह-

“सपनहु संगिँ पाओल, रंग बढ़ाओल रे

से िर ि‍वि‍ह ि‍वधटाओल नीन्दओ हेरायल रे।।”

ि‍नन्द होइति‍ह कोना? ओ त ि‍पयतक संग ि‍वदेश चल गेलि‍ह-

“सपनेहु ि‍नलाएक तन्ह सो रंगे,

ि‍नन्द ि‍वदेसल ति‍ह ि‍पआ संगे।।”

काम्लदासक म्त्तिणी- 'त्वंम्हतसि म्पायेम्त' कम्हि कऽ पम्त्तक म्वारहके वम्णाम्ना करैत छम्थि। म्कन्तु एतए काकक भारास म्पायतकि आगमिक पतीक्ना एवं आकुलताके नव जीवन देल गेल अम्छि-

"काक भार म्नज भारहु रे, म्पाय आओत मिरा

कीर खीर...................... कनक कटोरा

सोमि चलु................. म्पाआ आओत मिरा।।"

जखन म्वारहक कष असहय भऽ जाइत छम्म्हि त सन्देश पाठवए चाहैत छम्थि-

"के पम्त्तया ले जाओत रे...। पास भेल साओन मिस।"

म्वादापम्त म्वारहक सूकिस सूकि दशाके देखलम्म्हि तथा ओम्हिस अपन हृदयक सम्बन्ध स्थाम्पत कएलम्म्हि। ई म्वारहक पत्येक दशाक वणामि अनुभूम्त पक सवर्था ऊच स्तरक एवं मिनोगाही रहल अम्छि। म्वादापम्त नायक-नाम्यका दुनूक म्वारहक म्चतण कएलम्म्हि मिदा सिरिणीय जेहन आकरषक राधाक म्वारह वणाना भेल अम्छि तेहन कृषाक नम्हि यथा-

"अइसन नागर अइसन नव नागम्र अइसन सम्प मिर,

राधा म्वानु सब बाधा मिम्नाए नयन तेम्जअ नोर।।"

वास्तवमि राधा एवं कृषाक पेमि 'सागर सागरोपमं' म्थक।

म्वारहमि सजजनक पेमि आओरो अम्धक म्नखम्र जा उठैत अम्छि। म्वादापम्त स्वयं म्लखैत छम्थि-

"सुजनक पेमि हेमि सतितूल,

दर इते कनक दुगुन होए मिल।।

टुटइते नम्हि टुट पेमि अदुत,

ये सन बढ़ए मृणालक सूत।।"

म्वादापम्तक म्वारह वर्णन म्वाश साम्हत्यमि अपन स्थान मिघष्य बनौने अम्छि। म्हनक भाव पारम्भमि लौम्कक स्तरक तथा वैयम्क्तक रहैत

अम्छ, म्कन्तु जखन गम्भीरताके पात्त करैत अम्छ तखन अलौम्कक, सम्भि सूचक एवि् म्बशक म्नाम्ध भए जाइत अम्छ।

भाव पक्क संगम्ह संग म्बरह वणषा ि म्हनक कला पक्क सि विेश सेहो पूणष र पस भेल अम्छ। कलाति किता कृम्ता ि नम्ह अम्पतु स्पाभाम्बक अम्छ। अनुभूम्त व्यक्त करबा ि सरलता अपनाओल गेल अम्छ। शब्द चयन, वाग्वैदग्ध, एवि् सुन्दर उम्कतस म्हनक वणषा अलंकृत एवि् म्बभूम्रत अम्छ। कलापक्क रसक पम्रपाक ि सवषा सहायक भेल अम्छ।

एम्ह पकारे देखैत छी जे म्बदापम्त अन्य भाराक म्बरह-वणषास अम्धक उत्कृष वणषा कएने छम्थ। अन्य म्बशेरताक संग भाव पक शेष रम्हतहु कलापक्क उपेका नम्ह भेल अम्छ। भावक गम्भीरताक अम्भव्यम्कतक नि ो वैजाम्नक ढंगस कएल गेल अम्छ। मि म्थलाक संस्कृम्तक अनुपालन सवषा करैत म्बरम्हणीक शब्द-शब्दस वेदना म्ना:शृत भेल अम्छ।

नारायण यादि

लघुकथा- पंचैती

रा िपुरि एकटा ज ीिदार छलाह। पैघ ज ीिदारी, नौकर-चाकर, खेती-पथारीक अम्बार लागल छल। हुनका तीन गोट बेटा छल। बहुत म्द्दन धम्र पम्रबारक भरण-पोरण करैत वृद ावस्थाके पात्त कयलम्ह। बुढ़ा ि ी अवस्थाि नाना पकारक बी ािरी तंग करय लगैत अम्छ। ज ीिदार धातक बी ािरीक इलाज करैत रहलाह। ओम्ह इलाजि बहुतरास ज ीिन-जथा सेहो म्बक गेलैन्ह। ठीक नम्ह भेलाह। स्वगषासी होइस पम्हनम्ह गा िक चाम्र-पाँच पम्तम्ष्ठ त व्यम्क्तके बजाय कहलम्न-
“ह िरा सम्पम्त्त के दू भागि बाँम्ट देबैक।”
शादध क िषसित्ति भेल। गा िक पम्तम्ष्ठ त लोकम्न सभ ज ा भेलाह। बटबारास पम्हनम्ह। बु िहाक कहल बात पर ि थिन हो िय लागल। बेटा छम्न्ह तीन आ बटवारा होयत दू भागि। सभ सोचय लगलाह। बुढ़ा ृ ित आत ािके ठेस नम्ह लागबाक चाही। बुढ़ाक बातक पालन होयबाक चाही। गण ान्य व्यम्क्तक के म्कछु फुरा नम्ह रहल छलम्ह। सभ म्कयो एम्ह तारतम्यि लागल रहलाह, जे एम्ह बातक म्नराकरण कोना होई। गण ान्यि स एक व्यम्क्त बजलाह-
“नरारि रा ि लरण बाबू ब िपैघ पंचैम्तया छम्थ। एम्ह वरय पर हुनकेस राय म्वचार कय ली।”
चार -पाचू गण ान्य व्यम्क्त रा ि लरण बाबूस राय म्वचारक लेल नरार पहुचलाह। म्कनको हुनकर घर देखल नम्ह छल। रा ि लरण बाबूक घरक बगलि एकटा इनार छल। ओम्ह इनार पर एकटा नव युवती पाम्न भम्र रहल छलीह। युबतीक उम तकरीबन 17-18 वरषछलैक।

गणािन्य व्यक्तिस एक व्यक्ति ओहि पानि भरैत नव युबतीस पुछलखिन्ह-

“दाई, रािलरण बाबूक घर कोन छैक।”

ओ युबती जवाब देलखिन्ह-

“जनकर अहाँ नािलैत छी ओ त मिर गेलाह।”

सभ कयो उदास भय गेलाह। ताबत् एकटा पौढ़ा इनारक नजदीक पहुचलीह। ओ गणािन्य व्यक्ति सभके देख पुछलखिन्ह-

“अहाँ सभ की खोजैत छी?”

गणािन्य व्यक्ति स एक व्यक्ति कहलैन-

“रािलरण बाबूक घर खोजैत छी।”

पौढ़ा हाथस इशारा करैत घर देखबैत बजलीह-

“ओ त आन्हर भय गेलाह।”

गणािन्य व्यक्ति सभ आँगा बढ़लाह। कनेक दूर पर एकटा दरबाजा छल। ओतय रािलरण बाबू बैसल छलाह। गणािन्य व्यक्ति लोकनि रािलरण बाबूके नमस्कार कय दरबाजापर राखल कुसी आ चौकी पर बैस रहलाह। हुनका लोकनिक निि नबयुवती आ पौढ़ाक जवाब पहेली बनल छल। होइत छलन्हि जे रािलरण बाबू जखन जीवित छथि त ओ नबयुवती कियैक बजलीह जे रािलरण बाबू एहि संसारि नहि छैथ। पौढ़ा कियैक कहलीह जे रािलरण बाबू आन्हर छैथ। गणािन्य व्यक्ति लोकनिके एहि पशक जवाब हेतु जजासा बढ़ि गेलैन्ह। कुशल-क्षेि परिचय-पात भेलाक बाद रािलरण बाबू हुनका लोकनिक स्वागत-सत्कारि लागा गेलाह। नैना सभक सहयोगस पानि आ चाहक फरािईश आंगनि भेज देलखिन्ह।

रािलरण बाबू बजलाह-

“अहाँ लोकनि कोन पयोजनाथषएतय अयलहु?”

गणान्य व्यक्ति स एकटा बजलाह-
“सरकार हरिा लोकमक समस्या बादि कहब। तामहस पहनहि एकटा दोसर पश सानिे आम्ब गेल। पहने एकर समाधान करु।”
रामिलरण बाबू बजलाह-
“बाजू कोन तरहक समस्या अछि?”
गणान्य व्यक्त बजलाह-
“एकटा बच्चया इनार पर पाम्न भरैत छलीह। हुनकास अपनेक बारेिं पुछलयैन्ह। नबयुबती कहलैन- ओ त मिर गेलाह। एहि बातक कोनो अथष नहि लागल।”
रामिलरण बाबू बजलाह-
“ओ बच्चया त ठीके ने कहलक। ओहि बच्चयाक हि बाप छऐक। ओ ब्याहक योग्य भय चुकल छथि। हि ओकर ब्याह नहि करा रहल छयैक त ओकरा लेल त हि मिरयै ने गेलयै। ओ ठीके ने कहलक।”
पुन: गणान्य व्यक्त बजलाह-
“एकटा पौढ़ास पुछलयैन्ह त ओ बजलीह जे ओ आन्हर भय गेलाह तकर की रहस्य छैक?”
रामिलरण बाबू बजलाह-
“ओ पौढ़ा हरि पती थिकीह। ओ साज शृगारस रत रहैत छथि आ ओकरा दृश ताकतो नहि छयैक, ओकर अमलाराक पूताषनहि होइत छैक। ते ओकरा लेल त हि आन्हरे ने छयैक। आब अहाँ सभक मूल समस्या की अछि से बाजू।”
ताबत् आँगनस स्वागतक हेतु पाम्न आ चाह आम्ब गेल। सभ गणान्य व्यक्त पाम्न चाह पीब बजलाह।
हरिा गाँवि कमपाल बाबूके तीन गोट बालक छम्ह। ओ जखन

स्वर्गवासी होयि लगलाह तखन हरिरा लोकनिके बजा कहने छलाह जे हरिरा सम्पत्ति के दू भागमे बाँटि देबैक। हरिरा लोकनिके कमलाल बाबूक बातक अर्थ नहि लागल। बेटा तीन आ बटबारा दू जगह। यैह समस्या लय हमि सभ अपनेक शरणमे आयल छी। कोना दू भागमे बाँटि, से बुझाऊ।

रामिलरण बाबू बजलाह-

"एकर त सोझ हिसाव अछि। तीनू बेटामे स एकटा कमलाल बाबूक बेटा नहि अछि। ते ओ कहि गेलाह जे हरि सम्पत्तिक बटबारा दू भागमे करब। आब कोन बेटा कमलाल बाबूक नहि छथि। ओकर पता लगेबाक उपाय बता दैत छी। एकटा कमलाल बाबूक फोटो लय लेब आ ओहि फोटोके एकटा कोनो घरमे कुसी या टेबुल पर राखि देबैक। तीनू भाईके कोनो एकान्त जगहमे बैसा देबैक। बेरा बेरी कमलाल बाबूक फोटो लग भेजब आ ओहि बेटाके कहबैक जे एहि फोटोके 10 जूता मिरब ओकरा हिस्सा भेटत। जे बेटा बापक फोटोके जूता नहि मिरय ओकरा बुझब जे ओ कमलाल बाबूक बेटा अछि। आ जे फोटो पर जूता मिरत ओकरा बुझब जे ओ कमलाल बाबूक बेटा नहि अछि। मुदा ई भेद दोसरके नहि बुझय देब।"

गणमान्य व्यक्ति सभ ओतयस घर अबै गेलाह। रामिलरण बाबूक कथनानुसारक मलबाबूक फोटो एकटा घरमे राखल गेल। सभस छोट बेटाके गणमान्य पंच लोकनि घरक अन्दर पवेश करौलनि आ कहल गेल जे बापक फोटो पर जूतास मिरब ओकरा हिस्सा भेटत। घरक अन्दर छोटका बेटा पवेश कयलनि। फोटोक बगलमे जूता राखल छल। छोट बेटा बापक फोटो पर फूल चढ़ौलक आ पणाम कय किछु सोचय लगलाह। सोचैत बाजल जे बाप हरिरा जन्म देलैन्ह, पालन, पोरण कयलनि। हुनका हमि जूतास नहि मिरब। एहेन पाप

हि नञ्हि कय सकैत छी, चाहे ञ्हसला हुए वा नञ्हि। बाहर जा नौकरी चाकरी कय जीवन ञ्बता लेब।

बाजैत घरस बाहर भय गेलाह। पंच लोकञ्न छोटका बेटाके दोसर कोठरीि लय गेलाह।

आब ञ्झिला बेटाक बारी एलैक। ञ्झिला बेटा छोटका बेटा जकाँ कयलक ओहो अपन ञ्हसला लेबस इञ्कार कयलक। ञ्हसला हुअ अथवा नञ्हि ुदा बापके जूता नञ्हि ािरब।

पंच लोकञ्न ञ्झिलो बेटाके दोसर कोठरीि लय गेलाह। आब जेठका बेटाक बारी एलैक। जेठका बेटाके बुझौल गेल। जे बापक फोटोके जूतास ािरत ओकरे जीिन-जयदादि ञ्हसला भेटतैक। जेठ बेटा कोठरीि पेवश कयलक। फोटोक वगलि राखल जूता लय तावर-तोर बापक फोटो पर जूता बरसाबय लागल।

आब पंचलोकञ्न एञ्हि ञ्नष्करषपर अयलाह जे जेठका बेटा कञ्पाल देब बाबूक नञ्हि अञ्छ। पंच लोकञ्न कञ्पाल देव बाबूक पतीस दरयाञ्त केलञ्हि। कञ्पाल देव बाबूक पतीक कथन ई भेलैञ्हि। हिर ञ्बयाह दोसर िदञ्न भेल छल। पञ्हलुका घरबला ञ्वगषवास भय गेलाह। कञ्पाल बाबू अञ्बबाञ्हत छलाह। हिरे डेराक नजदीक हुनको डेरा छल। पञ्नाक ुइलाक बाद कञ्पाल बाबूस हेि-छेि बञ्ढ़ गेल आ बादि दुनू शादी कय ललहु। जेठका बालक पूवञ्षहि पक्क अञ्छ।

ई बात हिही दुनू पाणी जनैत छलहु दोसर ञ्कयो नञ्हि। जेठको बेटाक जे बाप छल हुनको ओञ्हि शहरि ढेर रास सञ्पञ्न अञ्छ।

पंच लोकञ्न आशञ्त भय कञ्पाल बाबूक सञ्पञ्नाके दू भागि बाँञ्ट जवाबदेहीस ुञ्क्त भय गेलाह।

लघुकथा- स्वाद परिवर्तन

अवकाश पाबि कश्चारीक जे मिया कलाप होइत अछि। ताहुस हि हि वंचित नहि छी। परिवारो छोट-छीन अछि। पेशनक पैसास कहुना गुदन काटइये लैत छी। चारि गोट बालक अछि। पहिल- डॉक्टर, दोसर- इंजीनियर, तेसर- ि सिटर आ चारि- नेता। पहिल डॉक्टर जे बीि र अछि, दोसर इंजीनियर जे अछि। तेसर- ि सिटर लाचार अछि। चारि जे िि क फेल ओ देशक कणधार अछि। पाय: सभ शहर बाजारक जिनगी जी रहल अछि। दुनू जीव गाि ण परिवेशि रहि रहल छी। किछु खेती-पथारी सेहो अछि। आब त खेतो-पथार लोकके जानक जंजाल भय गेल अछि। किओ बटाई करक लेल तैयारो नहि होइत अछि। बहुत रास खेति पेि -पौघा लगा देलियैक। बाल-बच्चा गाि ण परिवेशि रहबाक लेल तैयारे नहि अछि। नीक-नीक आि क गाछ, लीचीक गाछ आ कटहरक गाछ रोपि देने छियैक। गाछ सभ पैघ भऽ गेल, आब फरनाई शुरु भेल अछि। गाि घरि किसानक हालत बि खराब स्थिति रहल अछि। कोनो साल रौदी त कोनो साल दहारे भय जाइत अछि। धन रोपणीक लेल जन-ि जदूर नहि भेटैत अछि। ज भेटबो करैत छैक त उपजास बेसी ि जदूरिये लय लैत अछि। वरा होबाक प्रतिशत बहुत कि भऽ गेल अछि। धानक उपज नहि भेल आ रबीक फसल गेहू, चना आ ि सूरक उपज नीक भेल अछि। जे बेटा ि सिटर अछि हुनक परिवार आ ओकर बाल-बच्चा गाि ि रहैत अछि। उपज नहि भेलाक कारण रोटी, सतू, दालि खाय पि ैत अछि। चनाक उपज नीक भेलाक कारण, बेसी खाय पि ैत अछि। सतू खाइत खाइत ि नि अकछा गेल अछि। सतू जखने ऑंगाि अबैत अछि त देखिव ि नि कोना दन करय लगैत

अछि। करब की कोनहुना खा लैत छी। कहावत छैक जे अपन हारल आ बहुक मारल केयो कतौ थोरे बाजैत अछि। बाल-बच्चा अपन-अपन कमाईसँ एक पाई नहि खर्च करत। घरक सभ खर्च नून, तेल, हरदी, मरिचाई आ सब्जीसँ लय पोता पोतीक पढ़ाईक खर्च हमरे वहन करय पड़ैत अछि। तए पैसा नहि ये के बराबर बचैत अछि। तैयो कभी कभार दू-चारि केलो चावल खरीद स्वाद परिवर्तन करा लैत छी। सतू देखि मन घिना जाइत अछि। पतीसँ कहलखिन- "हम कालि पटना जायब। पटनाबला बौआ आ बौआसीन, पोता-पोतीक आ ओतयसँ राँची बेटी आ नातीनके सेहो भेट घाँट कय लेब। मन त छल जे ओतय जायब त किछु दिन सतूसँ पिंड छुटत आ स्वाद परिवर्तन सेहो भय जायत। इन्टर सीटी ट्रेनिक टिकट कटेलौ। छ: बजे जयनगरसँ खुलि मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर,मुजफ्फरपुर, हाँजीपुर, सोनपुर होइत डेढ़-दू बजे पटना पहुचैत छैक। मन बड़ पैघ आशा नेने ट्रेनमे बैसलहु। गाड़ीमे भीड़ भार कम रहैत छैक। खिड़की लग जगह पकड़लहु। बाहरक दृष्यक आनन्द लैत आगा बढ़लहु। मनमे ई सोचैत छलहु जे पटना जायब त बेटा पुतोहु नाना पकारक फल, दूध, दही, बासमती चाबलक भात,अरहरिक दालि, आलू-परोरक तरकारी आ नाना पकारक तरुआ खूब खुऔत। पोता-पोतीक लेल मिठाई सेहो खरीद लेलौ। मनमे नाना पकारक ख्वाब देखैत पटना पहुचलौ। मने मन सोचैत रही जे डेरा पर जायब त पहिने हाथ-पैर धोय चाह पीअब। किछु फल सेहो खायब। तकर बाद स्नान कय भात-दालि आ नाना पकारक स्वादिष्ट तरुआ, फुलौरी आ पापड़ खाइब। सतू खाइत खाइत मन अकछा गेल अछि ते स्वाद परिवर्तन भय जायत।

स्टेशन पर उतरि टेम्पू पकड़लहु। टेम्पूसँ राजा बाजारक चौक पर

उतलहु। डेराक नम्बर पता संगेि छल। पुछैत-पुछैत डेराक नजदीक पहुचलहु। 10-15 मिनिट पम्तीक्षा कयलहु। तखन ऊपरस पुत-बधु देखलम्हि। तखन बेटा-पोता-पोती नीचा आम्बि झोरा हाथस लय सभ म्कियो पैर छू पणाि कयलक। सभक संगे ऊपर डेरा पर पहुचलहु। पुत-वधु आम्बि पैर छू पणाि कयलम्हि। सौभाग्यवती भव: क आशीवाद दयलहु। तुरत एक मालास पाम्न आयल। बाथ र ि जा हाथ-पैर धो पुन: कुसीपर आम्बि बैसलहु। िजिस एक मालास स्पाइट टेबुल पर राम्ख देलक आ कहलक- “दादाजी, ठंढा पीब म्लअ।”

गलास उठा ि्हि लगेलहु। कोनादन स्वाद लागल। बुझना गेल जे ह िरा दार म्कयैक म्पाबैक लेल देलक। आई धम्रि एहेन पेय पदाथ्रक दशर्न नम्हि भेल छल। पोता कुहय लागल-

“दादाजी-दादाजी, ठंढा पीम्जए। अच्छा है।”

हि पोता आ पोतीके स्पाइट पीआ देलहु। मालास खाली भय गेल। पुतोहु खाली मालास लय खूब नीिन नहाम्न एक मालास सतू आगूि टेबुल पर राम्ख देलम्हि। सतू देम्ख िनिि भेल जे हि त िनिस पटना अयलहु िदा ई सततु ह िरास पम्हिनम्हि कोना एतय पहुच गेल। बुझना गेल जे सतू ह िरास पम्हिनम्हि शायद हवाई जहाजस एतय पहुच गेल।

म्कछु देरक बाद िनिि आश लगेने रही जे भोजनि भात-दाम्ल आ तरकारी भेटत त स्वाद पम्रवतर्न भय जाइत। आधा घंटाक बाद सतूस भरल म्लटी, सेबईक खीर,आलू-गोभीक तीिन आगाि टेबुल पर आयल। ओना, भोजन बि पेिस बनल छल। िनम्हि िन सोचलहु ज जायब नेपाल त कपार संगम्हि जायत। जाम्हि डरे म्मन भेलहु सैह पिल बखरा। स्वाद पम्रवतर्नक लेल अयलहु पटना िदा स्वाद पम्रवतर्न भाग्यि म्लखलो रहे तखन ने।

लघुकथा- वार्फ

बह ानन्द काकाक उमर ढलल जा रहल छल। बियाह भेला बहुतो दिन भय गेल छलैक। कोनो बाल बच्चा नहि भय रहल छल। कतेको बेर म ् रिसँ देखा चुकल छलाह। एतेक रास धन-सम्पतिक उपभोग के करत? ताहि सोचमे पडल रहैत छलाह बह ानन्द काका। बहुतो ओझा-बैदसँ सेहो आशीर्वाद लय चुकल छलाह। हुनक पती सेहो बहुतो देवी-देवताके कबुला-पाती कय चुकल छलीह। स्त्रीगणक विचारसँ कतेक धामीक हाथे कायल छलाह। सासु ननद सभ ओकरा पतीके बड उपराग दैत कहैत छल जे ई मौगी अभावान अछि, बाझ अछि ते बाल-बच्चा नहि भय रहल छन्हि। दुनू पक्सँ माने लडका आ लडकी पक्क स्त्रीगण बहुतो देवी-देवताके कबुला पाती केयने छल। भगवानिक महिमाके कियो नहि जानि सकैत अछि। मखना सन मुसहरके सता सोरे धिया-पुता छैक। सुभेशर मण्डलके जेकरा ने रहैक लेल घर छै आ ने घराडी सरकारी जमीन याकि गैरमजर आ जमीनमे घर बनेने अछि। राति खाइत अछि तँ दिन लय झखैत अछि आ दिन खाईत अछि तँ रातिक लेल चिन्ता लागल रहैत छन्हि। शुभेशर मण्डल बह ानन्द काकाक लगुआ जन अछि।

बह ानन्द काका हरबाही कय जे चारि सेर धान भेटि छलै ताहिसँ सभ बाल बच्चाक भोजन साजन चलैत छैक। शुभेशर मण्डल किछु हनकाया जन अछि। बह ानन्द काकाक दू बिगहा खेत बटाई करैत छल। 25-30 मन धान सालमे बटिया खेतसँ आ धन-कटनी कय 10-20 मन धान कमा लैत छल। ओहि धानसँ सालभरिक लता-कपडा, तेल, साबुन आदिक व्यवस्था भय जाइत छलैन्हि। अधिक खर्चक लेल वारहत मदद करबा लेल तैयार रहैते छन्हि। ब्रह ानन्द काका शुभेशर मण्डलके बड मानैत छथि।

बह ानन्द काकाके उदास देखि शुभेशर मण्डल सेहो चिन्तित रहैत

छल। मण्डलजीक बच्चा-पुता भरि दिन बहानन्द काकाक अँगना घरमे हिल-विकोरा करैत रहैत अछि। माण्डलक ओकरा बच्चापुताके बड मानैत छथि। कहियो-कहियो पैसि-शिक्षक व्यवस्था सेहो कय दैत छथि। मण्डलोजी भगवानसँ गोहार लगबैत रहैत अछि। जे हमरा वारहतके बाल-बच्चा होइन्ह।

किछु दिनक पश्चात् बहानन्द काकाक शुभचिन्तकक प्रार्थना भगवान सुनलैन्ह। हिरानन्द काकाक पती (लाल काकी) गर्भवती भेलीह।

ई शुभ समाचार सुनि सभ शुभचिन्तकक मन प्रफुल्लित भय गेलैन्ह। चारु तरफसँ शुभकामनाक संदेश आबय लागल। समय बितैत गेल। महिला मन्दिरक संरक्षणमे लाल काकी रहय लगलीह। समयपर बच्चाक जन्म भेल। जच्चा-बच्चा सही सालामत रहल। घरमे खुशहाली आबि गेल। सासु-ननदिक उलहन-उपराग बन्द भय गेल। बच्चाक छठिहारमे बहुत-अपेक्षित आमन्त्रित भेलाह। खूब नीक जका भोज भात भेल। बच्चाके ढेर रास उपहार भेटलैक। रात्रिमे सभ रश्म पूरा कय बच्चाक नाम भोला राखल गेल।

क्रमशः भोला किशोरावस्थामे पदार्पण कयलक। भोला बड संस्कारी बच्चा बनकलल।

एक समयक बात छल। भोला बीमार भेल। हिरानन्द काका आ लालकाकी ओकरा नीक मन्दिरि लग इलाजक हेतु लय गेलाह। मन्दिरि साहेब सभ तरहक जाँच लिखलक। पौथोलजिक जाँच रिपोर्ट आयल। मन्दिरि साहेब रिपोर्ट देखलैन। जाँचमे ई जात भेल कि दिलमे सहस्त्र छेद अछि। मन्दिरि साहेब कहलैन जे एकर दिल दिलऽ पडत। किछु दिन ठीक रहत, तकर बाद भोलाके दिक्कत होमय लागत।

हिरानन्द काका आ लाल काकी खूब कनलैथ। लालकाकी मनहि मन निर्णय कयलक जे हम अपन कलेजा दय बेटाक जान बचायब।

दबाई लिखल गेल। दबाई चलऽ लागल। भोला पूर्णस्वस्थतामे

आबा गेल। म ्रि साहेबक सलाह छलैन्ह जे चारि-पाच रिमधरि ठीक रहत। तकर बाद करल बदलबा देबैक। चारि-पाच रिक बाद जखन भोलाक उम सतह रिक छलैक तखन मायके कहलैन जे माय हमरा उठारहम जन्म करनपर कोन तरहक वार्फि देबही।

लाल काकी बजलीह-

“बौआ, तोहर अठारहम जन्म करनपर जे वार्फि देबऽ से आलमारीमे राखल रहतऽ। तौ लयलीह।”

भोला करजासा कयलैन्ह-

“माय हमरा कर्ह दे जे की देमे।”

लाल काकी बजलीह-

“बेि, आई धरि वार्फि कयो नर्ह देने हेतैक से तोरा देबह। अखन वार्फिक नाम कहलासँ मजा करकरा भय जेतह।”

भोला चुप भऽ गेलाह। समय बातैत गेल। जर्हया भोलाक अठारहम साल पुरतै, तार्हसँ करछु करन पूि ओ बीमार भऽ गेलाह। माय-बापक एकलौता सन्तान। सभक ऑखिक तारा।

फेर ओकर माय-बाप भोलाके पूकि म ्रि लग लय गेलाह। ओ म्रि साहेब भोलाके पहचैन गेलाह। ओ हुनका अबभाकिके करल पत्यारोपणक सलाह जे पूबर्हमे देने छल पुन: दोहरौलैथ। भोला माय अपन करल देबाक लेल तैयार भेलीह। ऑपरेशनक तैयारी हेतु माय-बाप घर अयलाह। ऑपरेशनक फीसक व्यिस्था कयल गेल। भोलाक माय एकि पत लरख एकि बबामे बन्द कय आलमारीमे राख देलक।

ऑपरेशन करयबाक हेतु भोलाक माय-बाबू म ्रि ओतय पहुँचलाह। भोलाक करल नकाल, ओकर मायक हृदयमे आ मायक करल भोलाक हृदयमे पत्यारोपात कयल गेल। माय-बेि दुनू दुरस्त छलाह। भोलाक सिस्थ्य करनानुकरन ठीक होमय लगलैक। ओ भोला मायक सिस्थ्य करनानुकरन छीन होयम लगलैक। जर्हया भोलाक जन्म करन छल

ताहिसँ 25-30 दिन पहिनहि भोलाक माय स्विगमीसी भय गेलीह।

शादि कममनीक जका सम्पादित भेल। भोलाक जन्म दिन खूब धूम-धामसँ मनाओल गेल। भोलाके अपन मायक िरा देल वार्फकि बात मन परलैन्हि। ओ आलमीराके खोललैन्हि। तँ देखलक जे एकिा बाकिसापर लिखल छैक जे हैपी बथमडे ि यू बेिा। भोला बाकिसा खोललैन्हि। बाकिसामे एकिा पत लिखि राखल छल। भोला मोरल पतके पसारि पढय लगलाह। पतमे लिखल छल-

“बेिा, हमर जिगरक ि्किडा यदि तो एहि पतके पढि रहल छह तँ तू बिलकुल ठीक भय जेबह। तोरा याद होयतह जे जखन तौ बीमार भेल छलह तखन हम तोरा म्रि साहेबक पास लऽ गेल रही। मा्रि साहेब बजलाह जे एकरा दिलमे बहुत रास छेद छैक। दािई सँ ई ठीक नहि होयत, ओहि दिन हम बहुत कनलहुँ। आ निणमय लेलहु जे बेिाके हम अपन दिल दय ओकरा जीनि पदान करब। तोरा इहो याद हेतह जे एक दिन तूँ बाजल छलह जे मॉ हमरा अपन 18म जन्म दिनपर कोन पकारक वार्फ देबही, से बेिा हम तोहरा वार्फकि रपमे अपन दिल दय रहल छीह। एकरा सम्हारि कऽ रखियह। हैपी बथमडे ि यू बेिा।”

लघुकथा- भाय-बक्हन

मगध देशक राजा रिणदेि छलाह। ओ महान पतापी, योदा, ीिर, नीक्त-क्नपुण, कुशल पशासक आ पजा पालक राजा छलाह। रिणदेकि न्याय क्नयता आ कला कौशलक पसंशा दूर-दूर तक फैलल छल। राजाक वियाह महान विदुरी आ सुनक्र राजकुमारीक संग भेल छल। राजकुमारी दोसर देशक राजा अरणदेकि जेष पुती छलक्थन्ह। रप-रंग आहार-व्यिहार एतेक नीक छलख् जे राजा-पती पक्त समक्पत छलाह। वियाहो बड धू-धामसँ भेल छल। बहुत क्दन धक्र दाम्पत्य जीिनक क्नि्ाह करैत एक पुत आ एक पुती रतक पाक्प्त भेलैन्ह। पुतक नाम क्शिधिर आ पुतीक नाम गायती छल। क्शिधिर जेठ आ गायती छोि छलीह। राजा रिणदेकि लार-प्यार आ मायक ित्सल्य पेमसँ क्शिधिर आ गायती पक्ल्लाक्लत होइत रहलाह।

राजा दुनू सन्तानके क्शका गहण करयािक हेतु योग्य क्शक्कक सािक्नध्यमे दय देने छलक्थन्ह। समयक गक्त ससरैत रहल। राजा क्कछु आिश्यक कायाथम राज्यसँ बाहर गेल छलाह। रानी अपन रक्नािसमे पलंगपर सुतल छलीह। तािि् देखैत छक्थ जे मकानक भेविलेिरपर जे खाली जगह छलैक, ओक्हपर एकिा बगडा आ बगरनी खोता लगाकय सुखपूि्क जीिन व्यक्तत करै छल। दुनू पक्त-पतीमे बड पेम छल। िगिरनी गभमिती छलीह। दू-चाक्र क्दन िाद ओ अंडा देलक। अंडा जुएलाक बाद बच्चा सेहो भेलैक। बगरा आ बगरनी अपना बच्चाके चोचसँ खाना खुआिैत छल। कोनो दुघमना बस बगरनीक क्नधन भय गेलैक। आब बगरा दोसर शादी कय दोसर बगरनीके अपना घर (खोता)मे अनलक। बगरनी जखन निि घरमे अयलीह तँ पूिमसँ पाक्लत बच्चाके देखलक। बच्चाके देक्खते बगरनी ईष्यासँ जरय लगलीह। एकान्त पािि ओ गराक बच्चाके चोचसँ नीचा

वारा देलक। ई दृश्य देखि रानी व्याकुल रहय लगलीह। बड चिंतित रहय लगलीह। सदिखन मनमे सोचथि जे एहि जिनगीक कोनो ठेकान नहि। जँ कही हमरो निधन भय जाए तँ हमरो िल-बच्चाक संगे एहि पकारक घिना न घवि त भऽ जाए। एहि हालतमे रानी सोचलक जे ई बात राजाके कहि राजासँ पतिज्ञा करािी जे हमरा मुइलाक बाद ओ दोसर वियाह नहि करथि।

राजाके बाहरसँ अयलाक बाद रानी सभ बात राजासँ कहि सुनौलैन्हि। आ ओहो राजासँ पतिज्ञा करौलैन्हि जे जँ हमरा किछु भय जाय तँ अह ाँ दोसर वियाह नहि करब।

राजा रानीक बात सुनि अचंभित भय गेलाह। राजा बजलाह-

“अह ाँ ई अशुभ बात कियैक बजैत छी।”

रानी बजली-

“एहि जिनगीक कोन ठेकान।”

कालकममे समय बितैत गेल। समयक पिहमे बहुतो परिवर्तन भेल। रानी महामारीक पकोपमे पडि गेलीह। मा् िरि इलाज करय लगलाह। मुदा ईशरक मर्जीक आगा ककरो किछु नहि चलैत अछि। हदीशक एक पंक्ति अछि- लाइलाही इल्लाह महमदे रसूल्लाह। ईशरक मर्जीक िगैर एकिा पतो नहि हिलैत अछि। आ रानी तेहेन र सान ने र सलीह जे बौसि कठिन भय गेल। शाद कमम सम्पन्न भेल। राजा अपन पतिज्ञाक अनुसारे विाहि करब मनसँ निकालि देने छलाह। साल-दू-सालक िाद कुटुम्ब, महामंत्री आ शुभ चिन्तकक आगह पर राजा विाहि करिाक हेतु विचार करय लगलाह। लोक सभक कथन छल जे राजाक राजपाि विना रारा-रानीक चलौनाइ असम्भि अछि। राजाक मन मोकल गेलैन्हि आ ओ शादी कय लेलैथ। व्याहीसँ सगही

शिशी दुलार होइत अछि। राजाक सगही कन्या रानीक व् त पदके भरलैथ। रानी अपन काम काज सम्हलैन्ह। विही कन्याक बाल-बच्चाक पक्ष मनक्ह मन ईर्ष्याक भाि राखय लगलैक्ह। राजा बुढ़मा छलाह। ओ अपन पुत क्शाधिरके क्शाक्ष पदान करिक लेल कोनो नीक स्कूलक छाताासिमे रखबा देने छलक्थिन्ह। सॅयोगसँ विदालय कछु दिनक लेल बन्द भेल छल। ते क्शाधिर छाताासिससँ घर आवि गेल छल।

एक दिनक बात छलैक। क्शाधिर गेन्द खेलाइत छल। गेन्द उछल कऽ राजाक आॅगनमे रानीक गोदमे आवि खसल। क्शाधिर दौगल अयलाह आ अपन सौतेली मॉक गोदसँ गेन्द लय पडेलाह।

रानी नौकरानीसँ पुछलक्थिन्ह जे ई िलिक के छल जेकरा ऐतेक हिम्मत भेलैक जे हमरा गोदीसँ गेन्द लय लेल। नौकरानी बाजल-

“मालकिन ई बच्चा अहॉक सौतेला बेि अछि आ एकि बेीि सेहो अछि।”

रानी ईर्ष्यासँ अविभूत भय दु:खी रहय लगलीह। हमेशा यैह सोचक्थि जे राजा अपना बाद एकरे राज पाि देक्थिन्ह। हमरासँ जनमल पुतके राजा नक्ह बनौक्थिन्ह। ई धृतराष्ट जकॉ पुत मोहमे पड़ गेलीह। दिनानुदिन रानी रग्ण रहय लगलीह। कतेक म्रि-दि आबय लगलाह आ इलाज करय लगलाह। मुदा दिाईक कोनो पभाि रानीपर नक्ह पडलैन्ह। राजा सेहो दु:खी रहय लगलाह। राजा आब अधिक समय रानीपर देमय लगलक्थिन्ह। रानीके कोनो रोग रहत तखन ने दिा-दार सँ ठीक हेतैन्ह। राजा रानीसँ बार-बार पुछक्थिन्ह जे अहॉ कोना ठीक होयब। रानी राजासँ पक्षाजा करौलैन्ह तकर बाद कहलैन्ह जे हमरा क्शाधिरक कोढ-कलेजी आक्ष दिअ। तखन िमारी ठीक

होयत। राजा पहिने जा कय चुकल छलाह। ते वशिष्ठ भय जल्लादके आदेश देलैन्हि जे क्षाधिरके जंगलमे घुमयबाक हेतु लऽ जाऊ आ ओकरा मारि ओकर कोढ-कलेजी नेने आऊ।

एमहर क्षाधिरक बहिन अपन सौतेली माँक मनोदशाके भाँपि चुकल छलीह। गायती राजा-रानीक समीपसँ अपित छलीह ते ओ मायक बगहना-जेरि आ किछु रुपया-पैसा लय जल्लादक पाछू-पाछू जंगल पहुँचलीह। क्षाधिरक बहिन कहय लगलथिन्ह जे यौ जल्लाद भाई लोकनि हमर माय अहाँ सभके कतेक मानैत छलीह। अहाँ लोकनि जे धन सम्पत्ति लेब से लीअ आ हमरा भाईके छोड़ि दीऔन्ह। हमरा सौतेली मायके कोनो बिमारी नहि छैक। ओर हमरा भाईके मारबाक प्लान अछि। ते अहाँ लोकनि कोनो जानरिक कोढ-कलेजी लय लीअ आ हमरा सौतली मायके दय देबैन्हि आ कहबैन्हि जे ई क्षाधिरक कोढ-कलेजी अछि।

गायतीक बात सुनि पहिने तँ जल्लाद लोकनि नाकर-कुकर केलैन्हि। मुदा बादमे धनक लोभसँ लोभित भय क्षाधिरके एहि शर्तपर छोडबाक हेतु तत्पर भेलाह जे ई कहियो अपना देश घुमि कऽ नहि आबथि।

क्षाधिर दुनू भाए-बहिनके ई शर्त मानय पडलैन्हि। आ गहना-जेरि रुपया पैसा लय क्षाधिरक जान बकैस देल गेल। क्षाधिर अपन देशके छोड़ि दोसर देश चल गेलाह। आ क्षाधिरक बहिन गायती घुमि कऽ राज दरबारमे आबि रहय लगलीह। एमहर चामाल लोकनि कोनो जानरिके मारि, ओकर कोढ-कलेजी लय रानीके दय देलकनि। रानी बड खुश भेलीह।

ओमहर क्षाधिर अपन देश छोड़ि दोसर देश चल गेलाह।

राजदरबारिमे जा राजा सेवा-सुश्रुरामे रहय लगलाह। राजा बेटी छलाहे बड पैघ संस्कारी सेहो छलाह। राजा क्:सन्तान छलाह। ते क्शाधिरके अपना बेटी जकाँ मानय लगलाह। क्शाधिरके उच्च क्शाक्त देबाक व्यवस्थिथा कयलैन्ह। किछुए दिनमे क्शाधिर सगिुण सम्पन्न भय गेलाह। राजा सेहो वृद्ध भय गेलाह। क्शाधिर मे रा् योक्यत गुण देख्ब राजा हुनका अपन उतराधिकारी नियुक्त कय संन्यास धारण कय लेलथि।

एमहर राजा रिणदेवि सगही पतीक संग क्मल राजपाट चलबय लगलाह। रिणदेवि पती राजाके अपन पक्रणय लीलामे जकरने रहली। राजा हर हमेशा पतीक जी-हुजुरीमे लागल रहैत छलाह। गंगा दशहराक दिन छल। गंगा स्नानक बहाना बना कय अपन सौतौली बेटी गायतीके संग लय गंगाकात अयलीह। दुनू माय-बेटी गंगामे स्नान करय लगलीह। रानीक नियतमे खोट छल। ओकर गायतीक पक्त ईष्याक भाव जावा उठल। आ रानी गंगाक तेज धारामे गायतीके धकेल देलक। गायती गंगामे दहा गेलीह। रानी कानैत-ख्खझैत घर अयलीह। किछु दुरक बाद राजा क्शाधिर रा् य पडैत छल। संयोग नीक छल। क्शाधिर किछु सैनकके लय क्शाकार खेलाक पयोजनाथम गंगाक किनारमे आयल छलाह। क्शाधिर गंगामे भक्सयैत विक्षियाके देख्ब क्सपाहीके आदेश कयलाह जे एकरा गंगासँ ऊप कर।

क्सपाही भक्सयाइत गायतीके ऊपर कयलक। गायती क्नस्ति भय गेल छलीह। राजा ओक्ह क्नस्ति कन्याके अपन चादर पक्हरा अपना दरबारिमे बक्हकरनीक रूपमे राख्ब लेलथिन्ह। गायती अपना भाइके पहचाक्त गेलथिन्ह। ओ सोचय लगलीह जे ई तँ हमर भाई क्शाधिर थिकाह। राजा क्शाधिरोके गायतीक पक्त विशेर स्नेह रहैत छल।

एक समयक बात छल। राजा क्शाधिरक रा् यमे बड पैघ मेला

लागल छल। राजा ओक्ह मेलामे भाग लेबाक हेतु चललाह। ओ बक्हकरनी लग जाकय पुछलक्थन्ह-

“गै बक्हकरनी, मेलासँ तोरा लेल की नेने अयाौ से कह।”

ि क्हकरनी बजलीह-

“माक्लक, हमरा िसत्ते एक काठक बनल हॅस नेने आयब।”

राजा क्शाधिर अपना रा् यक सभसँ पैघ मेलाक उदाानि कय बहुतो रास रस-समान खरीद बक्हकरनीक हेतु काठक बनल हॅस सेहो खरीदलैन्ह। नक्ह जाक्त जे बक्हकरनीक पक्त राजाक स्नेह अनायासे क्कयैक बक्ढ गेल छल। राजा गायतीमे अपन बक्हनक र प देखैत छल। आ अपन बक्हनहुसँ अक्धक ध्यान रखैत छलाह।

साँझ्याक समय जखन राजा क्शाधिर घर पहुँचलाह तखन क्कछु समानक सॉग काठक बनल हॅस सेहो बक्हकरनीके देलक्थन्ह। गायतीक शयन कक बहरधारामे छल। जखन कक्श भाग राक्त भय जाइत छल, सभ क्कयो सुक्त रहैत छल तखन बक्हकरनी काठक बनल हॅसके अपना सामनेमे राखक्थ आ सॉक्ह सूप आ िरहक्त सेहो राखक्थ। सभ िस्तुके सामने राक्ख िजक्थ-

“हे हौ हॅस, ई सूप िरहक्त क्छयैक की नक्ह?”

हॅस बाजक्थ-

“हँ तँ हँ।”

ि क्हकरनी बाजक्थ-

“ई राजा हमर भाई क्शाधिर क्थकाह की नक्ह?”

काठक बनल हॅस-

“हँ तँ हँ।”

बक्हकरनी-

“हमरा भाईके जल्लाद मारबाक हेतु जॅगल लय गेल की नक्ह?”

हॅस-

“हँ तँ हँ।”

एक्ह पकारे बक्हकरनी अपन व्यक्तात घिना हॅसके सुनाबक्थ आ हॅस सभ करण कथामे हुँहकारी भरक्थ। नोकर-चाकर, सर-क्सपाही आ खुक्पया विभाग राजाके कहलक्थन्ह जे सरकार बक्हकरनीके अपने की खरीद देलयक्ह जे भक्र राक्त हँ मे हँ करैत रहैत अक्छ। सभक क्नन्द हमराम कय दैत अक्छ।

राजा पतापी आ सॅस्कारी छलाह। ओ एक राक्त जखन सभक्कयो गाडी क्नरामे छल तखन अपना शयन कक्सँ उक्ठ बक्हकरनीक बहर धाराक ओठमे आक्ब ठाढ भय गेलाह।

राजा क्शाधिर बक्हकरनीक सभ बात सुनय लगलाह। क्हिकरनी सूप, िरहक्त काठक हॅसक सामनेमे राक्ख बाजक्ल-

“हे हौ हॅस, ई सूप िरहक्त क्छऐक की नक्ह?”

हॅस बाजल-

“हँ तँ हँ।”

बक्हकरनी-

“ई राजा क्शाधिर हमर भाई क्थकैक की नक्ह?”

हॅस-

“हँ तँ हँ।”

बक्हकरनी-

“हम एक भाई आ एक बक्हन क्थकहु की नक्ह?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बकहकरनी-

“हमर अपन माय बचपनेमे मरि गेली की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बकहकरनी-

“हमर बाबूजी दोसर विवाह कयलैन्हि की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बकहकनी-

“हमर भाई गेन्द खेलाइत छलाह की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बकहकरनी-

“गेन्द उछलि कऽ हमरा सौतेली मायक गोदीमे चल गेल की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बकहकरनी-

“जल्लादक माध्यमे हमरा भायक कोढ-कलेजी लेिक लेल कहलक की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बक्हकरनी-

“हमर भाई हमरा गॉगासँ छाक्त िहर लौलैन्ह की नक्ह?”

हॅस-

“हँ तँ हँ।”

िक्हकरनीक मुँसँ ई शब्द सुक्त राज क्शाधिर विहल भय गायतीक गदक्त पकक्ड कानय लगलाह आ गायती सेहो गलामे गला लगा कानय लगलीह।

राजा क्शाधिरक खुक्षया विभागक पदाक्षकारी जे राजाक पाछ ॉ राजाक गक्त विक्षपर नजक्र रखिक हेतु छपल छलाह। ओ तुरत महामॅत्रीके स्तिु क्स्थक्त सँ जानकारी करौलैन्ह। महामॅत्री दौगल राजाक समीप आवि राजा आ गायतीके बोल-भरोस दैत दुनूके रक्तािमे लय गेलाह।

लघुकथा- इमानदार चोर

चोर-चोर मकसयौत भाय। दूि चोर एक पैघ व्यापारीक घरमे चोरी करबाक हेतु पहुँचल। दुनू चोरक नाम पनमा आओर मखना छल। दुनू चोरी करिक कलामे क्पुण छल। कतबो सतकमघरक मालिक किएक नहि होइथ। मुदा जखन पनमा, मखनाक विचार ओहि मालिकक घरमे चोरी करिक हेतैक तँ चोरी कइये लैत छल।

ओहि इलाकाक सिसँ पैघ व्यापारी छल। ओकर नाम करोडीमल छलैक। पनमा, मखना करोडीमलक घरमे चोरी करिक लेल पहुँचल। जखन करोडी मलक पहरेदार सुतल रहल तखन कशा भाग रातिमे पनमा मखना व्यापारीक घरमे सेध कायि लागल, सेध कालि भय गेल। तखन मखना सेघमे अपन दुनू पैर दय सेघक जाँच कयलक। पैरसँ ससेघक अवाला भागक जाँच कय, पुन: पैर िहर कयलक। जखन ई बुझुना गेलैक जे आब घरमे पैइसामि कोनो बाधा नहि होयत। तखन ओ सेघक िि घरमे पैइसाकि पयास करय लागल। जखन ओ पूरा कसर सेघमे देलक आकि देबाल नीचा धसि गेल। मखना देबालक तरमे दिा कय मरि गेल। पनमा कतबो पयास कयलक जे मखनाके क्खॉची ली से नहि भय सकल। अन्तमे भोर भय गेल। पनमा दोसर दिन राजाक ओतय जा कय नालिश कयलक, राजाक ओतय फदमियान ई देलक जे राति हम सभ करोडी मलक घरमे चोरी करबाक हेतु गेल रही। हमर सॉगी सेघ कलिक आ ओहिमे पिश करबाक हेतु घुसल आकि देबाल धसि गेल आ हमर कादोश सॉगी मारल गेल। मालिक करोडी मलक कमजोर देबालक कारणे हमर सॉगी मारल गेल। हम सभ जाति चोरी नहि कयलहु ताति तक तँ कादोरे छलहुँ।

चोरोक एक अजीब दुखया होइत छैक। राजाक बुद्धसँ चोरक बुद्ध पैघ होइत अछ।

राजा पनमाक फदम ियान (नाक्लशी) के सीकार कयलक। राजा चोकर नाक्लशीके सुनाई शुर करय लगलैन्ह। राजा सपाहीके हुकुम देलैन्ह जे ओह व्यापारीके एतए उपस्थित कर ।

सपाही राजाक आदेशानुसार ओह व्यापारीके न्यायालयमे बजाओल गेल। राजा व्यापारीसँ पुछलथिन्ह-

“सेठजी, अह ँक मकानक दािल कमजोर कयैक छल जे एकि सेदोर चोर सेघमे दि कय मर गेल?”

व्यापारी िजल-

“सरकार, चोर सेदोर कोना छल?”

ताहपर राजा बजलाह-

“जाति चोर चोर नह कयने छल ताति तँ ओ सेदोरे छल। चोरीक िदे ने ओ दोरी होइताह। चोर मर गेल अह ँक दािलक कमजोरक कारणे ते हेतु अह ँके फासीक सजा भेि रहल अछ।”

व्यापारी बजलाह-

“सरकार, एहमे हम कोनो दोरी भेलहु। हम तँ अपने मकान नह िनौने छलहुँ। मकान तँ राजमस्त्री िनौने छल।”

राजा बजलाह-

“हँ, अह ॅ दोरी नह छी, एहमे राजमस्त्री दोरी अछ। सपाहीके आदेश देलैन्ह जे व्यापारीके छोड़ दयौक आ ओकरा बदलामे राज मस्त्रीके फासी दय देल जाए।”

राजाक हुकुम सुन सपाही व्यापारीके बरी कय देलक। आ

राजमिस्त्रीके पकड़ राजाक दरबारिमे उपस्थित कयलक। राजा बजला-

“राज मिस्त्री अहाँ केहेने देबाल जोडलहु जे एकटा गरीब चोर देबालिमे दबि मरि गेल। देबाल कमजोर जोडलाक जूममे अहाँके फासी भेटत।”

राजमिस्त्री बजलाह-

“सरकार एहिमे हमर कोन दोख। हम तँ राजमिस्त्री छथिकहु। गारा (मशाला) बनेनाई काम तँ हमर काज नहि अछि। हमर लेबरि जे मशाला बना कय हमरा देत तकरे सने हम जोडब। मशाला कमजोर बना कऽ दयलक ते देबाल कमजोर भऽ गेल। एहिमे तँ हम बेदोख छी। सरकार हमरा सन बेदोख लोकके फासी दय कोन लाभ। फासी तँ दोखीके देबाक चाही।”

राजा बजलाह-

“ई राजमिस्त्री ठीके कहैत छथि। राजमिस्त्रीके छोईर दहक आ ओहि मजदूरके फासी पडबाक चाही।”

सिपाही लोकनि राजमिस्त्रीके छोइड देलक आ ओहि मजदूरके पकड़ अनलक। राजा, मजदूरके सामने बजौलक। राजा राजमिस्त्रीक बदला ओहि मजदूरके फासीक सजा सुनौलक।

मजदूर अपन सफाईमे बाजल-

“सरकार, एहिमे हमर कोनो दोख नहि, कियैक तँ जखन हम मशाला (गारा) बनेमे (मिलबैत छलहुँ) मे पानि मिला रहल छलहु तखन हमरा पाछाँसँ एकटा हाथी भरकल हमरा तरफ दौबल तँ पानि गाडा (मशाला)मे अधिक पड़ि गेल। ते महशाला गीला भय गेल आ ते देबाल कमजोर

भय गेल।”

राजा मजदुरक बात सुिन हाथीक महाउथके बजाबक आदेश देलैन्ह। तुरंत िसपाही हाथीक महाउथके बजौलक। आ आदेश पािबत कयलक जे मजदूरके माफ कय हाथीक महाउथके फासी देल जा सकैत अिछ। हाथीक महाउथके फासी देल जा सकैत अिछ। हाथीक महाउथके अपन सफाई देबाक लेल कहल गेल। हाथीक महाउथ अपन सफाईमे बाजल-

“सरकार एिहमे हमर कोन दोर। हम हाथी लय कऽ आिब रहल छलहु ताबे बीच एकिा मिहला झुनझूना बाला जेिर पिहर पिहर हाथीक िगलमे आयल। हाथी कॉनक आिज सुिन भरिक गेल तँ एिहमे हम कतय दोरी भेलहु।”

राजाके महाउथक बात ठीक बुझैल। महाउथ िनदोर सािवत भेल। आब महाउथक बदला ओिह मिहलाके दोरी मानलक। ओिह मिहलाके िसपाही राजाक दरिारमे उपिस्थत कयलक। मिहलासँ अपन सफाई देबाक आदेश भेल। मिहला बाजिल-

“सरकार, एिहमे हमर कोन दोर। हम जे गहना पिहरने छलहु से तँ अपने निह बनौने छलहु। ओ तँ हम बाजारक सोनारसँ खरीने छलहु। ई गलती तँ सोनारक छैक जे एहेन झुनझुनािला गहना िकयैक बनौलक। जे हम ओकरासँ खरीद कय पिहरलहु। ओ एहेन गहना निह िनौतिथ तँ हम झुनझुनािला गहना निह खरीदतहु आ निह पिहिरतहु। जँ ई गहना हम निह पिहरतहु तँ हाथी निह भिरकैत ने गाडामे अिधक पािन पिडतैक आ ने सेठजीक िदिल कमजोर होइतैक।”

राजा ओिह मिहलाक ियानसँ सन्तुष भेलाह। सैिनकके आदेश

देलथिन्ह जे एहे मकहलाके बरी कय देल जाय आ एकरा बदलामे गहना बनौनिहार सोनारके फासी देल जाय।

तुरत सैनिक सोनारक खोजमे लावा गेल। गहना बनौनिहार सोनारके पकड़ि लौलक। राजाक सामने हाजिर कैल गेलैक।

सोनारसँ राजा सफाई देबाक लेल कहलक।

सोनारके अपन बचाबमे कोनो जबाब नहि फुरैलैन्ह। राजाक सामने सोनार दोरी साबित भेल। राजा सोनारके फासिक सजा सुना देलैन्ह।

एहि तरहे जल्लादके सूचित कयल गेल जे सोनारके फासीपर लटका दे किऐक तँ राजाक आदेश छलै जे हत्याक बदला हत्यासँ लेल जाय। जल्लाद सोनारके लय फासीक फन्दा ओकरा गर्दनिमे लगौलक आ रस्सीके ऊपर तरफ खिचलक। संयोग नीक छल जे बार-बार फासीक फन्दा सोनारक गर्दनिमे लगाओल जाय आ जहाँ ऊपर खिंचल जाय तँ फासीक फन्दा सोनारक गर्दनिमे सँ ससकि जाय।

किछु देर ई सिलसिला जारी रहल मुदा सोनारक गर्दनिमे फासीक फन्दा नहि टिकल। जल्लाद राजाक समीप पहुँचल तँ कहलक-

“सरकार, एहि सोनारक गर्दनिमे फासीक फन्दा काम नहि करैत अछि। राजाक आदेश भेल मोट गर्दनिवलाके पकड़ि ला आ ओकरा फासी दय दिहन।”

आब दू गोट सिपाही मोटका गर्दनिवलाके खोजमे लावा गेल। किछु दूर गयलाक बाद एकटा मन्दिरपर बाबाजी चेला जकर गर्दनि बड मोट छल तकरा पकड़ि लय गेल। बाबाजी चेला आ चेला गुर

किछु दिन पूर्वहि ओहि मन्दिरपर दोसर देशसँ आएल छल। चेलाक कथन छलैक ओ अपन गुरुके कहलखिन्ह जे अपना सभ वर्तमान मन्दिरपर चलू कियैक तँ ओहि राजमे किछु सेर भुजी आ किछु सेर खाजा छैक। सस्ता मधुर खरीद ओ दुनू गुरु-चेला खाय लागल। यद्यपि गुरुजी ओहि मन्दिरपर जयबासँ रोकलक। मुदा चेलाक जिदपर ओहो राजी भय गेल छलाह। आब गुरुजी एकटा तरकीब सोचलक। ओ चेलाके कानमे किछु कहलैन्हि। कहलैन्हि-

“जखन तोहरा गर्दनिमे फासीक फन्दा लगौतुन्हि तखन हम तोहरा गर्दनिसँ फासीक फन्दा हम अपना गर्दनिमे लगा लेब। जखन हम फासीक फन्दा लगयबाक लेल तखन हमरा गर्दनिमे सँ फासीक फन्दा निकालि अपना गर्दनिमे लगा लिहअ। ई खिलखिला ताबत धरि चलय दिहक जाबत राजा नहि पहुँच जाबथि।”

राजाक सिपाही गुरुजीक चेलाके पकड़ि राजाक दरबारमे उपस्थित कयलक। चेलाक संग गुरु सेहो दरबारमे उपस्थित भेलाह। राजाक हुकुमक आधारपर चेला जकर गर्दनि बड्ड मोट छल फासीक तख्तापर लय गेल आ फासीक फन्दा ओकरा गर्दनिमे लगाओल गेल। एक, दू, तीनक आबाजिक संग रस्सी खींचत आकि गुरु दौड़ि कऽ ओहि तख्तापर पहुँच गेलाह। चेलाक गर्दनिसँ फाँसिक फन्दा अपना गर्दनिमे लगा लेलक आ सिपाहीके कहलक हमरा फाँसी दिअ, एकरा छोड़ि दियौ। सिपाही सैह करय लागल। मुदा पूर्वनियोजित कार्यक्रमक अनुसार गुरु-चेला बेरा-बेरी गुरुक गर्दनिसँ चेला आ चेलाक गर्दनिसँ गुरु फाँसीक फन्दा अपना गर्दनिमे लगाबय हेतु प्रयासरत रहय लगलाह। एहि बातक सूचना सिपाही राजाके देलैन्हि। राजा स्वयं आबि एहि गुरु-चेलाक कारनामाके देखलैन्हि। ओ सिपाहीके आदेश देलैन्हि जे फाँसीक प्रक्रिया ताबत बन्द करू जाबत हम अवाला

आदेश पाबत नहि करी। राजा ओहि दुनू गर-चेलाके अपना लग बजौलैन्हि। आ गुरसँ पुछलैन्हि जे अहाँ दुनू व्यक्ति एना किऐक फाँसीपर झुलबाक हेतु तत्पर छी। गुर राजाके कानमे कहलक जे सरकार अखन एहेन मुहुर्त छैक जे फाँसी फन्दापर झूलि जाइत ओ इन्द्र लोकक राजा होयत ते हम चाहैत छी जे हम फाँसीपर झूलि आ जाहिसँ इन्द्रलोकक राज बनी औ चेला एहि मर्मके जानैत छथि ते ओ इन्द्र लोकक राजा बनबाक आकांक्षा करैत छैथ। ते अपने क्षणिय कय दीअ जे के इन्द्र लोकक राजा निकि योग्यता रखैत छथि।

राजा सोचलक जे एहि छोट-छीन राज्यक राजसँ बढ़िया जे हमही ने किऐक इन्द्र लोकक राजा बनी। ओ सिपाहीके आदेश देलैन्हि जे एहि दुनू गुर-चेलाके छोड़ि एहि नीक मुहुर्तमे हमरे फाँसी फन्दापर झुला दे। सिपाही एहि दुनू गुर-चेलाके बकस देलक आ राजाके फाँसीक फन्दापर झुला देलक। गुर-चेला राम-राम करैत अपना देश भागि कऽ चलि अयलाह।

लघुकथा- नवसहत

राधाक बेटिक विवाह बड धूम-धामसँ भेल छल। राधाक छोटि मनीर पढ़ऽ लिखऽमे बड तेज छल। मैट्रीकक परीक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयने छल। क्रमागत इन्टर, बीएमे सेहो नीक स्थान प्राप्त कयलैन्हि। मनीरके नीक नौकरी भेटि गेलैन्हि। आब हुनक माय राधा देवी व्याकुल रहय लगलीह। जे कखन मनीषजक शादी करावी। मनीर विहि समीपेक गामिक वारधारी बाबू जे शहरमे रहैत छलाह। वारधारी बाबूक पत्नी सुक्मता देवी पैघ विचारनि महिला छलीह। कहियो सुक्मता गिणीसँ केकरो कष्ट नहि भेल हेतन्हि। हुनक सिद्धान्त छलैन्हि जे कम खाऊ, गम खाऊ, कम बाजू, जे बाजू नाप-तौलक कऽ बाजू। हुनका कबीर साहेब ओ गिणी हमशा ध्यानमे नचैत रहैत छल जे गिणी 'ऐसी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।'

सुक्मताजीक कथन छल जे खुशी बाटिनैसँ दू गुना बिपस अबैत अछि आओर कनेक त्याग कयलासँ बहुके पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। एहि प्रकारक विचार सदिखन सुक्मताक मानस पटलपर नचैत रहैत छल। ते मुहल्लावासीपर ओकर राज चलैत छल। सभक विचारी सुक्मते छल। सुक्मता देवीके एकटा बेटी छल। जेकर नाम रूपम छलैक। रूपम सभ दिन शहरे-बाजारमे रहल कियैक तँ हुनक पिताजी शहरेमे नौकरी करैत छल। रूपम पढ़ऽ लिखऽमे तेज छलीह। शहरक हवा-पानि लागल छल। मुदा मायक नवसहतके सदिखन याद रखने छल।

रूपम जखन 20-22 बरिखक भेलीह तखन सुक्मता देवीके विवाहक लेल उडी-बिरी लागि गेलैन्हि। जखन तखन यपमक बापके

खोजय लगलीह। लडका िला सभ लडकी देखिक लेल आबय लागल। वियाहक दरम्यान कतेको लडका िला लडकी देखक िलसे आयल। कतेकके लडकी नहि पसन भेलैन्ह तँ कतेकके घर नहि पसन भेलैन्ह। एक-दू साल बहुतो खोज-बीन कैल गेल। तखन एकिा सॉभान्त पिरिरक लडका जे सरकारी नौकरी करैत छल। तकरा सॉग वियाह ठीक भेल आ वियाह शहरेमे भेल। बाराती िला गामक छल। वियाह राधाक बेिा मनीरक सॉग सम्पन भेल। रपम जे शहरक िितािरणमे पलैल-पोसैल छल। रपम जे कलेजमे नाना पकारक पितयोवाितामे भाग लैत छल आ पाइज पापत करैत छल। अखिरक कूपन काि ओकरा पेपरक फामेपिर सावि, अखिर िलाके भेिित छल। अहूमे ओकरा िमशेष पुरस्कार भेिलैक। आब ओ सोचय लागल जे एहेने-एहने कम्पेिशनमे पाइज जितलहुँ। अिभनय कय पुरस्कार हािसल कय ली। जे शहरमे रहय िली ओ आब गाम-घरक आबो हिमे रहय लगलीह।

रपम धीरे-धीरे अपनाके गामक रॉमे धुलय लगलीह। ओकरा अपन मायक नसहत याद छलैक जे 'खुशी िि तँ दुगुना िपस होइत अछ' आ जँ सासुरमे कनेक त्याग करी तँ पूरे घरपर राज कय ली। ओ सोचैत छलीह जे जेहेन बहय बयार पठी ओम्हरे ओरी। ते ने वियाहमे 51 पल्ला साडी जे मैके मे भेिल छल। ताहिमे सँ नीक-नीक साडी आधासँ अिधक सासु, ननिद किकािल लेलक मुदा ओ कछु नहि बजलीह। कयैक तँ ओकरा माय सुकाता देिा ओकर बाजऽ सँ रोकलक। ससुरािरक रॉमे रॉा गेल। से आब ओकरो एिह बातक पता नहि चलल।

रपमक तुकियाक एकिा ओकर ननिद रहिथन्ह। जकर शादी-

वियाह नहि भेल छल। ओकरा सँ हँसी-मजाक करैत, घरक सभ काम करैत समय गुजैर रहैत छल। ननकि सेहो भाउजके सभ काममे भरपुर मददमे लागल रहैत छलीह। सासुक सेहो सहियोग छल। सासु राधा अपन काम-धाममे मग्न रहैत छलीह। परिवारिक गतिविधि सभिगोसँ बहुत कऽ भय गेलैक। परिवारिक हालत एहेन भय गेल जे कोन काज कोना भय जाइत छल से ककरो पता नहि लगैत छल। राधा देवी बेटी आ पुतहुक सँग खूब नीक जकाँ घुलि मिली गेल छलीह। ओकरा सभक सँग ओहो दैत छलीह। सभ कखनो खूब हँसी मजाक करैत रहैत छल आ खूब जोड-जोडसँ ठहका दय हसैत छलीह। रुपमक ससुर पुरान विचारधाराक छलाह। ते ठहाका सुनि दरबाजापर सँ खराम पिपिबैत आँगन अबैत छलाह। तँ सभ ठहाका बन्द भय जाइत छल। आँगना अबैत देरी दुनू ननकि-भौज निःशब्द भय जाइत छलीह। ओ ससुरके अबितहि देरी रुपम माथापर नुआ लय चलि दिय पैर छूबि गोर लावा लैत छलथिन्ह। एहिपर ससुर महराजक तामस, सहानुभूतिमे बदैल जाइत छल। आ पुन: चाह पीब दरबिजापर आबि जाइत छलाह। घरमे पुतोहु अयलापर हरसठे आँगन जायब उचित नहि बुझना जाइत छल। बुढ-पुरानके दिक्कत भय जाइत छैक। गप्पो-शप्पो करत तँ ककरा सँग जँ पती जीवित रहैत छथि तँ ओकरा सँग सुख-दुख बाँटि लैत छथि। जनिका पती नहि छथि ओकर जीनि तँ पहाड भय जाइत छैक। महिला अपन बेटी-पुतोहु सँग जीनि नीक जकाँ बिता लैत छथि। मुदा बुडहाक जीनि पहाड भय जाइत अछि। जँ बेसी घर-आँगन कयलक तँ नाना पकारक अपवाद लागय लगैत छैक।

एहि पकारे रुपम अपन नम्रसहतसँ पूरा परिवारिके अपना कब्जामे कय लेलक। किछु दिनक बाद रुपमक पति जे सरकारी नौकरी

शहरमे करैत छलाह, ओ रूपमके शहर लय जेबाक जोगारमे छलाह। घरक सभ परिवारिके एहि बातक जानकारी भय गेलैक। सासु माँ राधा देवी, ननदि कामिनी आ कामया सेहो उदास भय गेलीह। रूपम ओकरा सभके उदास देखि ओकरो सभके अपना साथ चलबाक आग्रह केलकन्हि। सभक मन भीतरसँ छेबे छल। सभ कहियो शहर आबि गेलीह। मनीर समयसँ ऑफिस जाइत छलाह आ ऑफिससँ समयपर अबैत छलाह। आब हुनका ने कोनो खाइक चिन्ता आ ने वस्त्रक चिन्ता रहैत छलैन्हि। समयसँ सभ किछु भेटि जाइत छलैन्हि। मनीरके ऑफिस जेबाक बाद सासु-बहु आ ननद-भौजाईक प्रेम देखि अरोसिया-परोसिया आश्चर्यचकित रहैत छलीह। अरोस-परोसक महिला सभ रूपमक खूब प्रसंशा करय लागल। रूपम अपन प्रशंसा सुनि आर अधिक प्रेमसँ सासु-ननदिके मान-दान करय लगैत छलीह। रूपके अपन मायक नसीहत हर हमेशा याद रहैत छल जे खुशी बाँटलासँ दुगुना भय जाइत अछि आ कनेक त्याग कयलासँ पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। ते केनो डेस जे रूपमक ननदिके पहिरा दैत छलथिन्ह या खरीद दैत छलथिन्ह। सासु माँके अपन नीक साडी पहिरऽ लेल दैत छलथिन्ह आ बाजार घुमा दैत छलथिन्ह। सासु ननद अति प्रसन रहैत छलथिन्ह। सास-ननदिक मन मुताबिक स्वादिष्ट भोजन बनबैत छलीह। बिना-सासुसँ पुछने ओ कोनो काज नहि करैत छलीह। कहियो कहियो रूपमक पति मनीर अपन माय आ बहिनके कहैबैत बाजैत छलाह कि माय ई रूपम जादूगरनी छौ। तोरो सभपर जादू ने कऽ दौ से साबधान कऽ रहियै। जादूक चकरमे नहि पड़ि जइयैह। ई कहैत सभ कियो हसै लगैत दल। एहि तरहे रूपम सभक दिल जीति नेने छल। एहि प्रकारे सभक दिन खुशी पूर्वक बितय लागल।

आब रपमक ननदक वियाहक चचा होमय लागल। बाॅक्कीक शादी एकिा साॅभान्त पक्रिारिमे ठीक भेल। दुलहा कोनो नीक पदपर पदस्थावपत छलाह। बाॅक्कीक शदीमे रपमक भूक्मका बक्ढया रहल। राधा देिी रपमके अपना गलासँ लगबैत बजलीह जे बेिी भगिानिक घरमे पूिमिजन्मामे नीक कममकयने छलहु जाक्ह कारणे अहाॅसन पुतहु भेिल। ईशर सभके एहेने बहु देक्थुन्ह। एतबे कहलासँ रपमके होइत छलैन्ह जे हमरा पूरा समा्य भेि गेल आ सासुक पैर घुक्ब रपम बाजैत छलीह जे माय अहाॅसन सासु सभ बहुके भेिै से हम भगिानिसँ पाथमना करैत छी।

बाॅक्कीक विदाईक समय रपम बहुत कानल आ ओकरा आशीिािद देलक क्क भिानि करै जे तोरो सासु एहेने होतहुन। बाॅक्कीक वियाहक िाद रपमके मन नक्ह लागय लगलैक तँ क्दनमे कैक बेर फोनसँ हाल-चाल पुछैत रहैत छलीह। शुर-शुरमे तँ सभ क्कछु ठीक ठजक रहल। शुरमे बाॅक्की सासु, ननद आ पक्रिारिक सभ सदस्यक तारीफ करैत रहैत छल। क्कछु क्दनक िाद जखन रपम, बाॅक्कीसँ बात करक्थ तँ बाॅक्कीक नजक्रया बदलल देखलक। बाॅक्की ससुरालक सभ सदस्यक क्शकायत करैत रहल। बाॅक्कीक माय यानी रपमक ससु बाॅक्कीके मोबाइलपर फुिानी िािा बात क्सखबैत रहैत छलीह। जाक्हसँ ओकर सभिाि विगक्ड़ गेल छल। पक्रिारिमे एक दोसरासँ ताल मेल, सामजस्य नक्ह रहल। पक्रिारिमे धीरे-धीरे कलहक पदापमि भय पक्रिारि िूवि गेल। रपम जखन बाॅक्कीसँ समिाद करक्थ तँ बाॅक्की भारा विगरले जकाॅ बुझाइन। बाॅक्की िाजिक्थ-

"भाभी, सभ अही जकाॅ नक्ह भय सकैत अक्छ।"

बाॅक्की घमॅमी भय गेलीह। ओकरा हाक्कमक घरिािी होयिाक घमॅम छल। रपम अपन माय िािी बात नक्सयत बाॅक्कीके कहैत

छल-

“व्याॅकी, खुशी बाँटलासँ दुगुना होइत छैक आ थोरेक त्याग कयलासँ बहुके पूरे घरपर राज भय जाइत छैक। तँ अहाँ एक्के मूल मंत्रसँ पकड़िरिके एक कय चलू।”

मुदा व्याॅकीक माय ओकरा पृथक-पृथक ढंगसँ घर फुटयबाक मंत्र दैत छलखिन्ह तँ ओकर व्याॅकीक कायतमे खोट आबि गेल छल। ते घर नरक बनि गेल छलैक।

एक दिन रुपम चाह लय सासु राधा देवीके देबाक हेतु आबि रहल छलीह। जेना बुझना गेलैन्ह जे सासु माँ फोनसँ गप्प कय रहल अछि। रुपम दरबिजाक ओरमे ठाढ भय सभ बात सुनय लगलीह। शायद सासुके व्याॅकीसँ बात भय रहल छल। राधा देवी अपना बेटी व्याॅकीके सिखबैत छलीह जे तो अपन सासुके बाहिर घुमयबाक हेतु नहि लऽ जैहे। जखन तू आ जमाय बाबू एक साथ रहि एक-दोसराके समझ। ननदि आबि सासुके ने अपना संग कतौ लय जो आ ने ओकरा अपना संग बैसा कऽ खाइक लेल दही। तोहर भाभी तँ सुधगर महिला छौक ओकरा सन नहि बनबाक पयास करिहे।

रुपम चाहक टे लय मने-मन सोचैत छली जे हमर सासु हमरा बेकिूफ आ सुधगर बुझैत अछि। रुपम चाहक टेसँ चाह सासु-माँ के दैत बाजलि-

“ककनकासँ गप्प करैत छलखिन्ह?”

राधा कसमसाइत बाजलि-

“व्याॅकीसँ।”

रुपम अपन सासुक करदानी देख नेने छल। साँझू पहर

जखन र पमक घरलिा मनीरजी घर पर अयलाह, तखन सभ बात हुनका कहलक्थिन्ह। दुनू पाणी विचार कयलैन्ह जे रवि क्दन वाॅक्कीक घर जाकय सभ पक्रिरिके क्तला-जुला क्दयैक आ सासु-मक्के सेहो सभझा बुझा क्दयैक। राधाके मनीर बहुत बुझौलक आ ओकरा अपना गलतीक एहसास करौलक।

रवि क्दन र पम आ मनीर वाॅक्कीक घरपर पहुँचल। मनीर र पमक नसीहत के दोहराति वाॅक्कीके समझौलक जे खुशी बाँिलासँ दुगुना होइत छैक आ कनेक त्याग कयलासँ पूरे पक्रिरिपर राज भय जाइत छैक। एक्ह क्सदान्तपर चलबाक नक्सहत दय वारिरिक सभ सदस्यके क्तला देलैन्ह। सभक बीच जे दू बोला छल से समाप्त करा पुन: शामे वाॅक्की के अपन मायक नसीहतक पालन करबाक आगह करैत घर आक्ब गेल।

लघुकथा- पेकि ऑसु

बात ओम्ह सयिक म्थक। जखन रा ि काकाके तेसर बेटीक जनि भेल छलैन्ह। हि भोरि टहलवाक शौकीन छी। भोरे उम्ठ जखन दू-तीन म्कलोि िटरस टहम्ल वावस भेल रही त देखै छी जे रा ि काका ि थिपर हाथ नेने, ि ह लटकौने बैसल छम्थ। हि त पम्हने बि आि यम्चकत भेलहु। जे रा ि काका एकटा हस ि ख चेहरा आ ि जम्कयल छलाह। गाि भम्रक लोक सभ हुनकास खुश रहै छल म्कएक त ओ कहनो आफद-म्वपत आ ि म्सवति पि ि लोकककके हसबैत रहै छलाह। से आई िनहुस म्कयैक भेल छम्थ? हि म्हनकर म्चनताके भॉम्प नम्ह सकलहु। ि दा एकाएक पुम्छ देबैक सेहो नीक नम्ह बुझना जाइत छल। म्कयैक त जखन ओ भेटत छलाह त कहैत छलाह जे ि िरम्नंग-वाकस आम्ब गेलहु।

कहु त स्टेशन कय डेग भेल। स्टेशनके नपबाक भार रा ि काका ह ि रेपर छै जे अहॉं कहै छी।

त ककरापर छैक भोरे उम्ठ स्टेशनपर चकर अहॉं दैत छी आ नपबाक भार ह ि रापर रहत।

सुवहि टहलवाक ि जा दोसर छैक रा ि काका। आ ह ि हीटा थोरे टहलै छी। ह ि रि म ि त लोकम्म अपन घरवालीक संग टहलैत छम्थ। आर जे अकेले रहैत छम्थ ह ि रा संग जाइत छम्थ जेना सत्य नारायण बाबू, जय नरायण बाबू, राजवीर बाबू, बि ि बाबू, लाइवेम्रयन साहेव, दीपकजी, म्वजय बाबू, युगेशर बाबू। सुवहक ि िरम्नंग वाक् स बि लाभ होयत छैक। रा ि काका जकरा कोनो तरहक ब्लड पेसर छैक, ि धुि ह , थाइराइड छैक, म्डपेशन छैक, आम्द-आम्द सभ म्वि िरीक दवाई छैक ि िरम्नंग वाक। आ जकरा कोनो बीि िरी नम्ह छैक तकरा

लेल त सोनाि सुगन्ध भय जाइत छैक। ओम्ह आदीिके जावत टहलैत रहत तावत् कोनो बीिरी भैये नम्ह सकैत अम्छ।
रािू काका जखन भेम्ट जाइत छलाह त एम्ह पकारक गत्प-सप हंसी-िजाक होइत छल। ुिदा आजुक िहौल अजीव छल। रािू काकाक म्चम्त्तत ुिरा देम्ख हि हुनका नजदीकि बैम्स रहलहु आ कहलहु-
“रािू काका कने तम्बाकू खुऔ।”
रािू काका चून-तम्बाकू दैत बजलाह-
“हौ तो त तम्बाकू नम्ह खाइत छलह। कम्हयास खाय लगलह?”
म्हनक म्चम्त्तत ुिरा भंग भेल। हि बजलहु-
“रािू काका से त ठीके कहलहु। हि त तम्बाकू नम्ह खाइत छी। ुिदा अहॉंक उदास ुिरा देम्ख, हिहु म्चंम्तत भय गेल छलहु। अहॉंक म्चम्तंत आ उदासी ुिरा देम्ख ओम्ह ुिराके भंग करवाक हेतु चून-तम्बाकूस बात शुर कयलहु।”
हि चुनौटीस तम्बाकू म्नकाम्ल ओम्हि चून दय लगवय लगलहु। आ रािू काकाके दैत बजलहु-
“रािू काका, सभ ठीक-ठाक अम्छ की नम्ह?”
“की ठीक रहत फेर बेम्टये भेल।”
हिरा हंसी लाइग गेल आ हि खुब जोरस हसैत बजलहु-
“रािू काका, अहॉं बि भाग्यशाली लोक छी। जे तीनटा बेटी भेल। साक्षात लक्ष्मी-सरस्वती आ पावर्तीक जन्ि अहॉं ओम्हठाि भेल अम्छ। हि एम्हशीक अवसरपर अहॉंके ुिवारक दैत छी। एम्हि दु:खी होयबाक कोनो पश्ने नम्ह अम्छ। बेटी एहेन सुख म्थक, जकरापर ईशर िहरवान छम्थ, ओकरे बेटी होइत अम्छ।”
बेटी स्त्री अम्छ, बेटी नारी अम्छ, बेटी फुलवारी अम्छ, बेटी दपर्ण आ दशर्ण अम्छ। बेटी सीता अम्छ, बेटी साम्बत्री अम्छ, बेटी िता अम्छ,

बेटीवम्लदानक गाथा अछि, बेटी शदि् भागवत गीता अछि, बेटी अछि त संसारि सभ सुख भेटत। ायि-पावक जे सेवा बेटी करत ओ बेटा कथमपि नहि करत। ते, बेटी भेल ताहि लेल अपने एतेक दुखी छी?

रा काका हरिापर खौझाइत बजलाह-

“यौ िसटर साहेब, अहू हरिास िजाक करैत छी, हरिा खौझा रहल छी। अहाँके होइत अछि की हि बेटी जनिवऽ बाला िशीन छी। देखू िगलाके ओ केहेन िमरयल अछि आ ओकरा दू-दूटा बेटे छैक। हरि ई तेसर बेटी अछि। सभ हरि िजाक उिबैत होयत। आब हि एहि साजिि िहि देखयवाक नहि रहि सकलहु। हरिा बेटीस बि नफरत भय गेल अछि। आओर हरिा तीन-तीनटा बेटये अछि।”

रा काका अहाँके बेटीस मकयैक एतेक नफरत भय गेल अछि। बेटी नहि रहत त एहि संसारक शृष्टि कोनो होयत। यहि बेटीस नफरत अछि त मायाह मकयैक कयलहु। बेटीस नफरत अछि तूं ियक कोखस जनि मकयैक लेलहु िओ त बेटीक रप मथक। रा काका, ओ आब युग-जिाना नहि अछि जे बेटी सािजक कोढ़ बनत। बेटीक उचाई आब बेटास बेसी छैक। कोन एहेन मवधा अछि जाहि बेटी, बेटास कि छैक से देखू त बेटा जखन जबान होयत त की करत की नहि से मकयो नहि जानैत अछि। जुआरी राखी, व्यभिचारी, लूच्चा, लम्पट आदि भय सकैत अछि। बेटी कहियो शरावी, जुआरी, चोर, डकैत नहि भय सकैत अछि। देखू जे डकैती, लूट, अपहरण बेटे नहि करैत अछि। पैघ-पैघ लोकक जेना- पैघ हाकीि, िती, मवधायक आ सासद बेटा लूट, डकैती, अपहरणक अंजाि दय रहल अछि। ते बेटीके पोसू-पालू आ मशक्षित बनाउ। एकटा बेटी मशक्षित होयत त एकटा पमरवार मशक्षित होयत। आ एकटा बेटा मशक्षित होयत

त ितिए एकटा पुरर मशक्कत होयत। राि काका, अह अपन मचन्ताके त्यागू आ बेटा-बेटीि फकषनम्ह राखू। देखैत नम्ह मछऐक जे शम्शकान्त बाबक बेटी यू.पी.एस.सी. परीक्षि तेसर स्थान पात्त कयलक अम्द। ऐ यौ राि काका, अपना गािि बेटाक कौि छैक कहा ककरो बेटा एहेन पद पात्त कयलक अम्छ।

राि काका जे िनिहूस छलाह से आब िनि हुलसगर भेलैन्ह। ओ िनियोगस तीनू बेटीक लालन-पालन आ सिुम्चत मशक्षक व्यवस्था केलैन्ह।

मकछु मदनक उपरान्त तीनू बेटीक पढ़ाई-मलखाई चलय लागल। तीनू बेटीक नाि सीता, गीता आ साम्वती छल। पढ़य-मलखयि तीनो एकपर एक छल। पम्हल बेटी सीता पी.पी.एस.सी. कम्पीट कयलैन्ह। दोसर बेटी- गीता डॉक्टर भेलीह आ तेसर सेवा करय लगलीह। तीनू बेटीक म्बयाह-शादी योग्य बरस म्बनु दान-दहेजेक भय गेल।

राि काकाक तीनू बेटीक शादीि हि गेल छलहु। आई राि काकाक खुशी देम्ख हि कहम्लयैन्ह-

“राि काका, जाम्ह मदन तेसर बेटीक जनि भेल छल ताम्ह मदन अहाँ कतेक उदास रही। आब कहू जे बेटा पैघ आम्क बेटी? आई एम्ह परोपटाि अहाँक परचि फहरा रहल अम्छ की नम्ह? िपय-बाप, बाल-बच्चाके जनि दैत छैक। िदा भाग्यक मािण ओकर कतव्य करैत छैक।”

राि काका हििरा आगा हाथ जोमि ठाढ़ भऽ बजलाह-

“बौआ तोहरे बोल भरोसपर हि मजंदा छी, एम्हि तोहर बि पैघ योगदान छल।”

राि काकाक ऑम्खस पेकि अशु बहै लगलैन्ह।

गुरमैता-सलैता (जीनी)

मिथिलाक विभूति भुनेशर पसाद गुरमैताक जन्म 24 अपील 1930 ई.मे गाम भवियाही जिला सुपौलमे भेल छल। स. विहारी गुरमैता बड पैघ देश भ त, कान्तकारी, जुझार, कमठ आ देशक पति समर्पित स्वतंत्रता सेनानी छलाह। भुनेशर गुरमैताक व्यक्तित्व आ कृतित्व जानकि लेल हुनक शैक्षालीक जानकारी आवश्यक अछि।

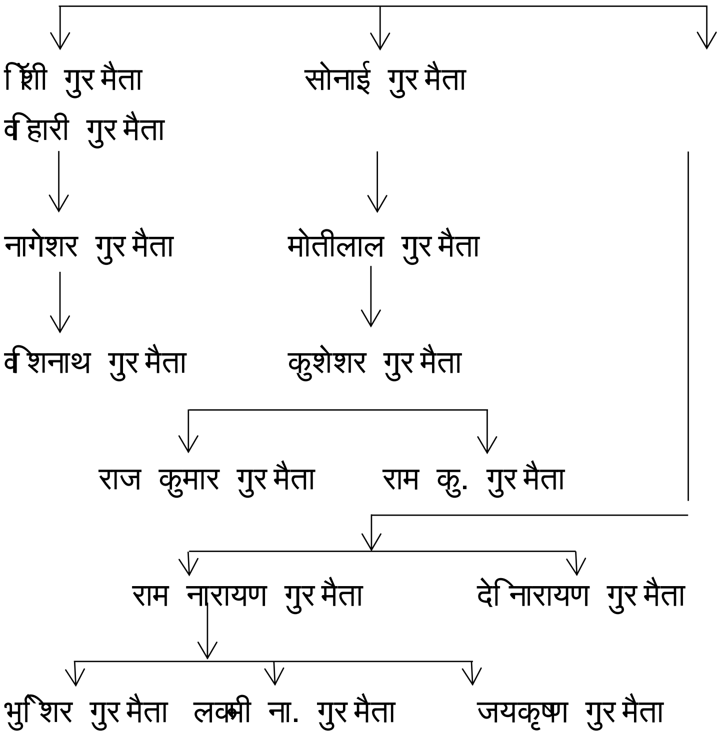

स. विहारी गुरमैताक सुपुत रामनारायण गुरमैता और देनिारायण गुरमैता स्वतंत्रताक आन्दोलनक कनिा छल। राम नारायण गुरमैता कलकता विशविदालसँ बी.ए. पास कयने छलाह। मिथिलाचलक पथम

स्नातक छलाह। पढाइक दरम्यान सुभारचन्द्र िस, महात्मा गाधी आक्ष स्वतिंत्ता सेनानीसँ पहचान भेलैन्ह। क्रमश: राजेन्द्र प्रसाद आक्ष राजनेताक सभासँ अएलाह। बी.ए. पास कएलाक बाद ओ विहार अएलाह आ गाधीजीक रचनात्मक कायक्र प्रचार-प्रसारमे लावा गेलाह। ओक्ष अन्तरालमे (1939-1942) दरभंगा क ंग्रेस कमि ि आओर आयम समाजक मंत्री पदके सुशोवभत कयलैन्ह। अपन वि िताक िलिपर राम नारायण गुरमैता राम चवरत मानसक, अंग्रेजीमे अनुिद (पदानुिद) कयलैन्ह। दरभंगा महाराजक चीफ मैनेजर मेनबी साहेि ओक्ष अंग्रेजी अनुिद राम चवरत मानसके राम नारायण गुरमैताक मुँहसँ पक्वात्क्षन सुनय लगलाह। क्वसि मेनि ि साहेि गुरमैताजीपर बड खुश छलाह। दरभंगा महाराजासँ पैरबी कय रामनारायण गुरमैताके दरभंगा राजक वकल्म इन्सपेक्ट्रि ऑक्फसरक रूपमे बहाली करौलैन्ह। मुदा क्कछुए क्क्नक पि ात् ओ ओक्ष पदसँ इस्तीफा दय देलैन्ह, क्कयैक तँ राजक अवधकाश कममचारी सभ बड भ्रष्ट छल। भ्रष्ट कममचारीक संग काम केनाई राम नारायण गुरमैताके नीक नक्ष लगलैन्ह। ओ ओक्ष पदासँ इक्स्तफा दय काक्ग्रेसक पूणमकाक्लक कायमकताक रूपमे समाजक सेिामे लावा गेलाह। एक्ष दौरान ओ क्वशाक्षक अवधकसँ अवधक प्रचार प्रसारक लेल पुस्तकालय आ विद्या आ विद्यालय खोलौलैन्ह। ठाम-ठाम पुस्तकालय आ विद्यालय खोलल गेल। ओक्षठाम गरीब-गुरबा, मजदूर क्कसान बैक्स अध्ययन करैत छल। एक्ष क्रमे स्व. स्विनाम धन्य लक्ष्मीकान्त नारायण क्मश, स्व. श्याम नारायण क्मश आ हुनक भाई लोकक्न राम नारायण गुरमैताजीक क्शष्य बनलाह। भारत छोडो आन्दोलन शुरु भेलापर पूणमसक्क्रयतासँ एक्ष कायमे लावा गेलाह।

सन् 1939 ई.मे राष्ट्रक्पता महात्मा गाधीजीक भविियाहीमे विशाल सभाक आयोजन राम नारायण गुरमैता करौने छलाह। एक्ष

सभमे हजारो हजार लोक भाग लेलैन्ह। सभक भोजनोक व्यवस्था कयल गेलैक। राम नारायण गुरमैताक माताशी अपन हाथसँ चरखा ाि रा सूत तैयार कऽ गाधीजीके भेि केलैन्ह। राम नारायण गुरमैताक सुपुत मा. भुनिशर पसाद गुरमैता जे 8-9 ारिक अस्थाक छलाह, ओ गाधीजीक स ागितमे 'विजय विश क्तरॉगा प्यारा, झॅमा ऊँचा रहे हमरा' गीत गावि फूलक माला गदेनमे पव्हराबय लगलाह। कद-काठीमे छोि रहि कि कारणे हाथ गाधीजीक गरदक्त तक नव्ह पहुँच सकलैन्ह । गाधीजी भुनिशर गुरमैताजीके गोदीमे उठा लेलैन्ह आ गुरमैताजी गाधीजीके माला पव्हरा देलैन्ह।

सन् 1940 ई.मे राम गढमे कागेसक बैसार छल। राम नारायण गुरमैता क ागेसक जुझार , कमष्ठ आ समवपत्त कायकता छलाह। ते दरभॉगा तखन समस्तीपुर, िगुसराय आ मधुबनीक एक मात व्जला छल। क ागेस व्जला कमेिटक पक्तकव्धक र मे ओव्ह बैसारमे राम नारायण गुरमैतीजीके भेजने छला। राम नारायण गुरमैता ओव्ह बैसारमे ससमय पहुँचलाह। ओव्ह बैसारमे देश भक्तक क ागेसी नेता पहुँचल छलाह। महात्मा गाधीक अध्यक्तामे बैसार भेल छल। एव्ह बैसारमे क्तणय भेल जे सुभार चन्र ािसक जगहपर पटाक्त सीता रमैयाके अध्यक बनाओल जाय। राम नारायण गुरमैता एव्ह पस्ताि कि विरोध कयलैन्ह आ ओ गाधीजीक खेमासँ बाहर भय नेताजीक खेमामे आव्न गेलाह। राम नारायण गुरमैता सािलम्बी, काक्तकारी, न्यायािदी, स्पष ािदी, सत्यािदी आ जुझार विािन नेता छलाह। जमीदार सेहो छलाह। व्हनक व्पता विहारी गुरमैताक रग-रॉगमे सािधीनताक आन्दोलन समायल छल। विहारी गुरमैताक व्पता भाईलाल गुरमैताक सहयोगसँ कतेको गाममे जमीन खरीद कामत बनौने छलाह। जेना भविियाही, गोव्धयारी, माक्लन बेलहा, सुगापटी मवियारी आव्द। सतिॉतता पाक्तसँ

पकहने कोसीक रेलि पुल बरकरार छल। दरभंगासँ फारबिसगंज बीच छोटी रेलबे लाइन छल। दरभंगासँ फारबिसगंज रेल जाइत छलैक। 1942 ई.क आस-पास तेहेन ने भीरण बाढ़ि आबि गेलैक जे कोसीक भीतर रेल लाइनके तहस-नहस कय देलक आ कमलीसँ आगा रेलक सारिरी बन्द भय गेल जे अखन धरि बन्दे अछि। भविियाही कामत सेहो तहस-नहस भय गेल। आब राम नारायण गुरमैताक रहनाइ गोढ़ियारी कामतपर भऽ गेल। ओकरठामसँ स्ति्तंता आन्दोलनक गति-विधि चलयि लगलाह। हुनक पथम पुत भुनिशर भुनिशर गुरमैता जनकर उम तकरीनि 12 रिषक छलैन्ह। अपन पुतके पढयािक लेल राम नारायण गुरमैता फुलपरासक अन्तगति म.वि. हुलासपटीमे नाम लिखा देलैन्ह। नाम सप्तम िगमे लिखल गेल। भुनिशर गुरमैता ओकहि विदिालयमे पढय लगलाह।

1942 ई.क स्ति्तंता आन्दोलनमे जखन भुनिशर पसाद गुरमैता अपन विदिालयमे एकिा नीक छातक रपमे ख्याित पाप्त कय चुकल छलाह। तखन एक दिन हुनक पिता राम नारायण गुरमैता हुलासपटी मध्य विदिालयपर पहुँचलाह आ भुनिशर गुरमैतासँ कहलैन-

“बौआ, एकहि आन्दोलनमे पिनामे राष्टीय झंिा फकहरायिक दरम्यान 07 सात बच्चा शहीद भऽ गेल। आब आठममे तोहर बारी छल।”

स्ति्तंताक दिना राम नारायण गुरमैता, जे भारतके स्ति्तं करबाक हेतु अपना बेिके बलिदान देबाक लेल तैयार छल- के ओ कहलैन-

“तो अपन विदिालयक छातक नेतृति करैत फुलपरास थानापर राष्टीय झंिा पहराहि। हम अपन एकिा बेिके भारत माताक लालक रपमे िलिदानक लेल सूपूदमकय रहल छी। गोली चलत तकर मर

नहि करयहह।”

ई बात 11 अगस्त 1942 ई.क छल। 12 अगस्तके अपना विद्यालयक छात्रक नेतृत्व करैत हाथमे झंडा लय भारत माताक जय-जयकार करैत फुलपरास थानापर पहुँचलाह। हजारो-हजारक संख्यामे छात्र, नौजवान, किसान, मजदूर आ इलाकाक ग्रामीण जनता सभ थानाके घेरने छल। भुनिशर प. गुरमैता हाथमे झंडा लय भारत माताक जय-जयकार करैत थानापर पहुँचलाह। थाना पहुँचैत देरी पुलिस भीडके छिड़बयेबाक बास्ते हवाइ फायरिंग करय लागल। जखन मंचपर चढ़ि भुनिशर प्रसाद गुरमैता झंडा फहरावय लागल तखन थानाक दरोगा ओकरा बचापर गोली चलावय लागल। बच्चाके कोनो परबाह नहि छल। गोली चलैत रहल। दरोगा निशाना बनौलक आ भुनिशार प्रसाद गुरमैताके मारए लागल, ताबत दरोगाक पत्नी जे सहृदय छली। ओ दरोगाक पैर छानि लेलकन्हि आ दरोगाक निशाना चुकि गेलैक जाहिसँ ओ बच्चा गोलीक शिकार होमयसँ बाँचि गेल। एकरहठाम ई पत्नी चरितार्थ भेल- ‘जाके राखे साईयाँ मारि सके ने कोई’ उग्र भीड दरोगापर टूटि पडल। ओ सभ दरोगाके धमकी देबय लागल कहलक- जँ ई बच्चा अहाँक गोलीसँ मरत तँ अहूँके खत्म कय देब। भीड भारत माता की जयक नारा देबय लागल। स्थिति बड तनावयुक्त भऽ गेल। 12 अगस्तके झंडा फहरौल गेल आ तेरह अगस्तके थानामे आवा भुनिशर प्रसाद गुरमैताक नेतृत्वमे लगा देल गेल। 12 अगस्त 1942 ई.के भारतमे प्राय: सभ सरकारी संस्थापर तिरंगा झंडा फहरौल गेल। जयनगर थानापर झंडा फहरायबमे जे गोली चलल। जाहिमे नथुनी साह नामक युवक शहीद भऽ गेल। अखनो थानाक नजदीकक चौकके शहीद चौक कहल जाइत छैक। जकर स्मारक शहीद चौकपर बनल छैक। फुलपरास

थानापर गावा लगलाक बाद चार तरफ हाहाकार मचय लागल। भुनिेशर पसाद गुरमैताके ऑौज छौि गुरमैता कक्ह स्नाबोध्यत करय लागल। आ छोि गुरमैतापर शूि िरिर्ि जारी भऽ गेल। म.वि. हुलासपटीसँ भुनिेशर पसाद गुरमैताक नाम कि देल गेल। राम नारायण गुरमैतापर सेहो िरिर्ण भय गेल। आब राम ना. गुरमैता भूक्मगत रक्ह आन्दोलनके सक्रय रखलैन्ह। मुदा राम नारायण एक्ह आपा-धापी आ नुकी-वछपीमे बीमार भय गेलाह। ऑौजी समान आ ऑौजी दिईसँ ओ परहेज करय लगलाह। झॅझारपुरमे एकि म् रि क्हनक क्मत रहक्थन्ह। ओ हुनकर इलाज करैक लेल लालाक्यत रहलाह। मुदा ओ ऑौजी दिईयो खेिक लेल शपथ खेने रहैथ। तुलसीक पात, िकसक पात, काली मीचमसेधा नून इत्याक्द जडी-बुिी क्मला कय काढा बनाओल गेल। ओ काढाक सेिन करय लगलाह। मुदा बीमारी ठीक नक्ह भय सकलैन्ह। बीमारी खतरनाक रप धारण कय लेलक। ओ क्मक्थलाक विभूक्त 20 अ् िरि 1942 ई. के िइसी गढी (सुपौल) मे 35 िरक्क अिस्थामे एक्ह लौक्कक शरीर के त्यावा परलोक क्सधार लाह। सिगमसी होमयसँ पक्हनक्ह अपन सुपुत शी भुनिेशर पसाद गुरमैताके तीन कायमकरिक हेतु आदेश देलैन्ह। जे क्नम अक्छ-

(1) बेिा, मदन मोहन मालिीय जीक क्हन्दू विश विदालयसँ एम.ए. कक्रयहह।

(2) म ॉके तीथािन करा क्दयहक।

(3) पढाई सम्पन भेलाक िाद देश सेिामे लावा जइयह।

एहेन पक्रक्स्थक्तमे भुनिेशर पसाद गुरमैता वजनका ऑौज छोि गुरमैताक नामसँ समिक्धत करैत छलाह, विचक्लत नक्ह भेलाह। दाह

सँस्कार सम्पन्न भेल। दाह-सँस्कारमे बहुत सँख्यामे आन्दोलनक कार्यकर्ता भाग लेलैन्हि। एकर घटिनाक जानकरी अँग्रेजी फौजके भय गेलैन्हि।

थानापर राष्ट्रीय झण्डा आ थानामे आगि लगेलाक जूर्ममे श्री भुनिेशर प्रसाद गुरमैताक (छोटि गुरमैता) नामसँ वारण्ट जारी भेल छल ओकर समयमे छोटि गुरमैताक गिरफ्तारी हेतु वारण्ट लय अँग्रेजी फौज दरबाजापर आबि घर घेर लेलैन्हि। ओकर समयमे सँयोग नीक छल जे भुनिेशर प्रसाद गुरमैता अपन चाचाक सँग अस्थि कलश चुनबाक हेतु समीपस्थ दाह सँस्कार स्थलपर गेल छलाह। घर लोकक मारफते हुनका गुप्त सूचना देल गेलैन्हि। सूचना भेटलाक ओ अस्थि लय चाचाक सँग नेपाल भागि गेलाह। आ ओम्हरसँ स्वसमक्रिया जा अस्थि-कलशके गँगामे प्रवाहित कयलैन्हि। ग्रामीण सभ दु:साहस कय सिपाही सभके बड फटिकारलैन्हि। तथापि क्रूर सिपाही लोकनि हुनका घरमे आगि लगा देलक। ई कारुणिक दृश्य देखि इनर भगनिक हृदय रविति भय गेलैन्हि। आ झमाझम विरस होमय लागल। घर जरऽसँ बचि गेल। सिपाही लेकनि निरास भय विपस चलि गेलाह।

राम नारायण गुरमैताक निधनक पश्चात भुनिेशर प्रसाद गुरमैताक अपन चाचा देविनारायण गुरमैता स्वतंत्रता आन्दोलनमे सक्रिय भूमिका निभौलैन्हि। आब एकर स्वतंत्रताक आन्दोलनक नेतृत्व कर्ता खुटिना थानाक नहरी निवासी स्व. राम लरण सलैता भेलाह।

राम लरण सलैता कर्मठ, सुयोग्य, क्रान्तिकारी विचारक, ज्योतिष शास्त्रक जाता, हिन्दी भाषी वितिन एमि् स्मष ्ि ता छलाह। आब राम लरण सलैताक नेतृत्वमे देवि नारायण गुरमैता, सूयमनारायण

क्सॉह, सुिध झा, गुलािी सोनार, उपेन्र क्मश, यमूना क्सॉह, क्जलािी खडगाह आ सलैताजीक दुनू छोि भाई रामकृष्ण सलैता आ जयकृष्ण सलैता आन्दोलनके सक्रय बनेबामे सहयोग करय लगलाह।

राम लरण सलैताक िशािलीक चचा मुनासीि बुझना जाइछ। आत्मा सलैता आ परमात्मा सलैता दुनू भाई क्सतहर बरहाक क्ािसी छलाह। जे अखन सुपौल क्जलामे पडैत अक्छ। ओक्ह दुनू भाइक पास बहुत रास गाय (गोधन) छल। गायके चरेिाक हेतु बहुत दूर-दूर तक चक्ल जाइत छलाह। गायक झुण्ड जतय-जतय जाइत छल ओकरा पॅछा ओकर मालीक आ चरिाहा अपन मेरा माक्ल रहैत छलाह। ओक्ह कममे आत्माक सलैतका गाय खुिाना थानाक क्समुला गािि पहुँच गेल। घनगर जॉगल रहलाक कारणे गाय सभ भक्र िरसात एक्हठाम ठहक्र गेल।

क्समुलासँ पूरब एकिा बड ऊँचगर जगह छलैक। िक्ढक पाक्न आ जाडसँ बचािक हेतु मालीक आत्मा सलैता आ ओकर नौकर सभ ओक्ह ऊँचगर जगहपर अपन स्थायी क्ािस स्थान िनाकय रहय लगलाह। क्कछु क्दनक िाद जॉगल आ परती भूक्मके उपजाऊ भूक्म बना कय खेती िािडी करय लगलाह।

गोधनसँ अक्धक आमदनी होमय लगलैक। खेती नीक जकाॅ करय लगलाह।

खेतीसँ िक्ढया जकाॅ आमदनी होमय लगलैक। क्कछु जमीन खरीद नीक जकाॅ घर बनाकय रहय लगलाह। आत्मा सलैताक छोि भाए- परमात्मा सलैता जे क्सतहर-बरहा (सुपौल) मे रहैत छलाह ओ क्हनका लय जयािक हेतु पयास केलैन्ह मुदा आत्मा सलैता िािपस नक्ह गेलाह।

कसमुलासँ पूरब एकटा छोटि नदी जे नहरक सदृश्य छल ओकरहि नामपर एहि गामक नाम नहरी राखल गेल। तिमानमे ई गाम बड सुखी सम्पन्न आ वैदिनिक स्थिती बनल गेल अछि। एतय पारम्भिक शाकासँ .... शाक्ण सँस्थान अवस्थित अछि। पाथमिक सास्थ्य केन्द्र सेहो अछि।

आत्मा सलैताक एक मात पुत रघु सलैता भेलाह। आत्मा सलैता : शिशाखि नाम अछि-

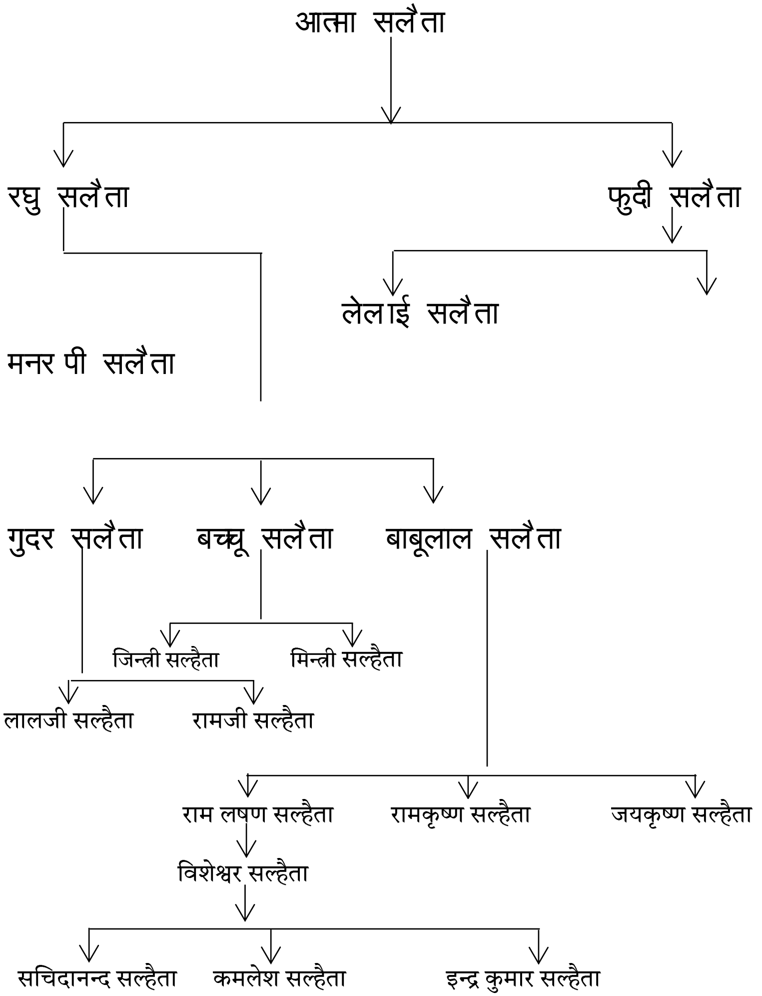

आब बाबू लाल सलैताक तीन सुपुत राम लरण सलैता राम कृष्ण सलैता, जयकृष्ण सलैतामे सभसँ जेठ भाई राम लरण सलैताके एकटा विशाल हाथी छल। तकरीबन 10 हाथक छलैक। ओकरा पैघ-पैघ दाँत सेहो छलैक। हाथी पैघ देश भक्त आ स्वामी भक्त सेहो छल।

राम लरण सलैता दोसर बेटी जे दू सालक छल। एक दिन साँझ्याक समय ओ बच्ची हवेलीसँ निकलि हाथीक घर चलि गेल छल। हाथी बान्हल छल। हाथी ओहि बच्चीके सूढसँ उठा लेलक आ ओकरा झूलबय लागल। बच्ची आस पास सुति रहल। तखन हाथी बैसि रहल आ अपना दुनू अगला जाँघ बीचमे राखि सूढसँ झाँपि देलक। बच्ची हाथीक सायामे सूतल रहलीह। जखन हवेलीक अन्दर बच्चीक खोजबीन होमय लागल तँ ओ नहि भेटलैक। चारू तरफ खोज-पुछारि हाफय लागल। कतहु अता-पता नहि लागल। पोखैर-इनारमे सेहो खोजल गेल। हवेलीक अन कना-रोहटि शुरु भय गेल। मुनहारि साँझ भय गेल छल। बच्चीक खोज-पुछारिक लेल बाडी-झाडी माल-जालक घरक तलासी भेल। सभ कियो हारि-थाकि कऽ साँझ्या समय निरास भय एक जगह जमा भेल। साँझ देमय लेल दीप, लालटेन टा बाति जराओल जाय लागल। ओहि समयमे विजलीक सेटा नहि छल। लोक सभ लालटेन युगमे जी रहल छल। अँग्रेजी शासनक अत्याचार चरम सीमापर छल। ग्रामीण लोकनि पढनाइ-लिखनाईके बहिष्कार करैत छल। हाथीक महाउथ हवसार यानी हाथीक घर साँझ देबाक लेल गेल। सलाईसँ काठी निकालि बाति जरौलक। महाउथ देखलक जे हाथी असमयमे बैसल किएक अछि?

महाउथ तँ पहिने घबरैलाह। हाथीक लग पहुँचलाह। तँ देखैत

छैथ जे हाथीक अवाला दुनू जाँघक बीचमे बच्ची सुतल अछि आ हाथी अपन सूढ़सँ ओकरा झपने अछि। जाडक समय छल। बच्चीक देह गममभऽ गेल छलैक। तँए ओ कविन्तासँ सुतल छलीह।

महाउथ दौगल मालीक लग। मालीक मालीक एमहर आउ। करास भने सभ कयो हाथसार दरस दौडल। मालिक हाथीके बैसल देखलक, तँ ओ घरिलाह जे हाथी असमयमे कएक बैसल अछि। मनक्ह-मन सोचए लगलाह जे हाथी बीमार न भऽ गेल। महाउथ मालीकके देखौलक जे हाथी अपना जाँघक बीच कोना कऽ बच्चीके झपने अछि। परिवारिक सभ सदस्य देखलक सभ अचम्भित भय गेल। मालीक हाथीसँ बच्चीके देबाक लेल आगह केलैन्ह। हाथी अपन सूढ़सँ बच्चीके मालिकक राम लरण सलैताजीक गोदीमे दय देलक।

सभक कराश मन पफुल्लित भय गेल। राम लरण सलैता हाथीके नक्ह बेचबाक पण कयलैन्ह। हाथी फिादार देशभ् त आ सिमीभ् त छल। एकर एक उदाहरण पस्तुत कय रहल छी।

राम लरण सलैता जे दरभंगा महाराजक िरा जूरी पाँच मनोक्त कएल गेल छलाह। गामक नजदीकमे आँगजक कचहरी छल। ओतएसँ एकि देनिजी राम लरण सलहैताके पाँचैती हेतु बजाबक लेल हाथीसँ आयल छल। राम लरण सलैता पाँचैतीमे जयािक हेतु तैयार होमय लगलाह। महाउथके आदेश देलैन्ह जे तौ हाथीके तैयार कर महाउथ हाथीक हौदा कसय लागल। राम लरण सलैता सेहो तैयार भेलाह। महाउथािर हाथी लय उपस्थित भेल। सलैताजी हाथीपर सिर भय पाँचैती हेतु विदा भेलाह। तािति देिनजी हाथीपर चढ़ि आगा बढ़ि चुकल छल। सलैताजी सोचए लगलाह जे ई देिनजी केहेन असभ्य अछि। हमरा चललाक बाद ओ पाछाँसँ चललैथ।

हुनका आत्म सम्मानपर ठेस पहुँचलैन्हि। ओ महाउथिरिके ईसारा देलैन जे हाथीके जोडसँ चलाउ। हाथी नमहर छल। पैघ-पैघ मेग दैत देिनजीक हाथीके पकैड लेलक्हि। आगा एकिा नाला छल देिनक हाथी नाला िपिए लागल। तखन राम लरण सलैता महाउथिरिके इशारा कय देलक्हि जे देिनक हाथीके पाछासँ दाइब दे। महाउथक ईशापर सलैताजीक हाथी पाछासँ सूढसँ मरिपर जोरसँ चाम्प देलक। देिनक हाथी नेगराय लागल। पचैती भेल। ओतयसँ सलैताजी घर अयलाह। देिनजीक हाथीक मरि िविवि गेलैक। एक्हि बातक जानकारी दरभाॅंगा महाराजके देल गेलैक जे राम लरण सलैताजीक हाथी दरभाॅंगा महाराजक हाथीक मरि तोइर देलक। दरभाॅंगा महाराज राम लरण सलैताके दरभाॅंगा बजौलक। राम लरण सलैता दरभाॅंगा महाराजक ओय पहुँचलाह। महाराजाके खबर पठाओल गेल। दरभाॅंगा महाराज सलैताजीके कहलक्हि जे अहाँक हाथी बदमाश अछि। हमरा कचहरी परहक हाथीक मरि तोइर देलक।

सलैताजी अपन सफाई देलक जे अहाँ देखू सलैताजी हाथीके कुहलक्हि जे पिा होजा।

हाथी लेिा गेल। सलेताजी हाथीक दाँतपर चढि दोसर दाँतके पकैर हाथीक दाँतपर चढि गेलाह। दरभाॅंगा महाराजा खुश भय सलैताजीके अभय दान दय देलैन्हि। ई दृश्य महारानी कोठाक ऊपरसँ देखि रहल छलीह। ओ ऊपरसँ आदेश देलैन्हि जे अहाँ ई हाथी हमरा दय दीअ। एक्हि बदलामे अहाँ चाकिा हाथी लय लीअ।

महारानीक हठपर सलैताजी हाथी दय देलैन्हि। जक्हिया सँ ई हाथी सलैताजीक घर छोडलक, तक्हियासँ सलैताजीक घरमे उडी-विडी लावा गेलैक।

एमहर राम नारायण गुरमेताक कधनसँ जतेक सितिाँता

आन्दोलनक कार्यकारी लोकक्त सभ छलाह, ओ राम लरण सलैताक ओतय रहि आन्दोलन करैत रहलाह। अँगरेज सरकार एहि कार्यकारी लोकक्तके गरफ्तार करबाक मुक्हम चला रहल छल। नहरी गामक किछु असमाजिक तत्व जकरा लाम लरण सलहैतासँ दुश्मनी छल ओ अँगरेज सरकारके एहि बातक सूचना दय देलक। 1944 ईसवीक दीपालीसँ एक दिन पहिनहिक लगभग 9 बजे रातिमे 8 सतिता सेनानी सरि भोजन कय सुतल छलाह। पहरापर देवनारायण गुरमैता छलाह। पाँच सौ मीटर दूरहिसँ अँगरेजी फौज चिमदेलक आ राम लरण सलैताक नाम लैत दरबाजापर अयबाक कोशीश कयलैन्ह। मुदा देवनारायण गुरमैता हुनका सभ सामना करैत रहलाह। बादमे ओ ओतयसँ बन्दुकक साथ भावा गेलाह। सभ आन्दोलनकारी सेहो परा गेलाह। आँगनसँ पाछाँ दय बहरेबाक एकहि रास्ता छल। आ गिलमे ढेकी घर छलैक। ओहि ढेकी घरमे दू कार्यकारी यमुना सिंह आ उपेन्द्र दास फँसि गेलाह। मुदा ओ दुनू घरक धरैनपर छुपल रहलाह। घरक तलासी होमय लागल। कतौ कोनो कार्यकारी नहि भेटल। सभ अँगरेजी फौज दरबाजापर जमा भय गेल। राम लरण सलैता सभ सिपाही आ पुलिस अफसरके ततेक ने मारि-मपि कयलक जे सभ पुलिस पानि-पानि भय गेल। मुदा गामक जे राम लरण सलैताक पक्षविरुद्ध छलाह, जे अँगरेजी फौजके बजा कऽ अनने छलाह। ओहि आदमीसँ अँगरेज अफसर पानि मँगयेबाक आगह केलैन्ह। ओ आदमी लोटा लय ठेकी घरसँ पानि आनबाक हेतु गेलाह। धरैनपर बैसल कार्यकारी यि हुनकासँ पुछलक जे सिपाही सभ चलि गेल। ई सुनितहि ओ पक्षपकी आबाज दय फौजके बजौलक आ दुनू कार्यकारीके पकडबा देलक। ओहि दुनूके पकडलाक बाद राम लरण सलैता, जय कृष्ण सलैता, विन्देशर सलैता, जीलेबी खडगाह आ

िमू मण्मलके वारफ्नार कय जहल लऽ गेल। घरक सभ सामान लूिा गेल। घरक सभ सदस्य घर छोब्ड भावा गेल।

ऑगेजी फौजक उपरि बढय लागल। घरमे जतेक ितन िसन, सोना-चान्दी, गहना जेरि छल सभ लूवि कऽ ऑगेज आ गामक विरोधी सेहो लऽ गेल। घरक तलासीमे राम लरण सलैताक एक मात पुत विशेशर सलैताके पकडबाक हेतु एब्ड-चोिा एक कय देलक। विशेशर सलैता घर छोब्ड अपना मामा गाम गोईत परसाही चल गेल। विरोधी लोकक्न विशेशर सलैताक रहबाक पता सेहो ऑगेजी फौजके बता देलक। ऑगेजी फौज विशेशर सलैताके पकडिाक हेतु परसाही पहुँचल। ओतयसँ ओ बाधे-बाघ पूरब तरफ भावा गेलाह। ऑगेज क्सपाही हुनका पकडिाक हेतु खदेरऽ लागल।

बाघमे एकिा हरिाहा हर जोतैत छल। ऑगेज क्सपाही हरिाहाके जोडसँ हल्ला कय विशेशर सलैताके पकडबाक हेतु कहलक। हरिाहा विशेशर सलैताके पाछ्सँ खदेरऽ लागल। आ हरिाहा विशेशर सलैताके धीमी आिजमे कहलक बौआ अहाँ जोरसँ भागू। हम अहाँक्ने खदेरिाक नािक करब। हरिाहा मरे विशेशर सलैताके खदेरय लागल। आ ऊचगर मेडपर ओाँघरा कऽ वारअ लागल। एव्ह तरहे विशेशर सलैता भावा कय पुक्लसक पछाडसँ छुवि गेलाह। भागल-भागल अपन जेठ बव्हनक ओतय पहुँचलाह। बव्हनक दरिाजापर आइत देरी एकिा तेहल्ला बाजल जे सलैता तँ अपने विलवियि गेल आब एकरो क्बलिात। ई सुक्नतव्ह विशेशर सलैता जे आत्म सम्मनक रकाथमओतय नव्ह रकलाह आ आगा बव्ढ गेलाह। व्हनक जेठ बव्हन जँ बुझलक तँ विशेशर सलैताक पाछ्सँ आिज दय रोकलीह। मुदा सलैताजी िपस नव्ह भेलाह। एव्ह पकारे विशेशर सलैता भागैत-भागैत कोसीक ओव्ह पार जा अपन मौसीक ओतय शरण लेलैन्ह।

एमर राम लरण सलैता सक्हत तथाकथ्थत वारफ्नार व्यव्तके जेलमे माक्ल देल गेल। राम लरण सलैता जेलमे अनसन करय लगलाह। अठरहम क्दन ओ शरीरके त्यावा देलक। कुर ऑौज सलैताजीक लाशके क्हनक पक्रजनके नक्ह दय सकल। क्कछु वारफ्नार व्यव्तपर मुकादमा चलय लागल। एक्ह पकारे सलैताजीक पक्रिर आ धन सम्पक्तक नाश भय गेल।

सतिंतता आन्दोलनमे जे क्व्ता राम लरण सलैता आ राम नारायण गुरमैताके भेलैन्ह ओ इक्तहासक पनामे सणिम्करमे क्लखािक योग्य अक्छ।

एमहर राम नारायण गुरमैताक सहोदर भाए देि नारायण गुरमैता जे क्कछु क्दन धक्र जेलमे बन्द रहलाह, तकर बाद जेलक चाहरक्दिरीके फाका जेलसँ बाहर क्नकक्ल अपन व्यक्तयौत भाय जे बेगूसरायमे बैकक नौकरी करैत छलाह, ओतय चक्ल गेलाह। भुनिशर पसाद गुरमैता अपन व्यता राम नारायण गुरमैताक शाद-कममसम्पन कय बेगूसराय आगाक क्शक्ता गहण करिक लेल चल गेलाह। बेगूसरायमे दूि उच्च विदालय छल एकिा बी.पी. उच्च विदालय आ दोसर जे.के. उच्च विदालय। बी.पी. उच्च विदालयक पाचायमनामाकन नक्ह लेलक। तखन नामाकन हेतु जे.के. उच्च विदालय पहुँचलाह। ओतयक पचायमभुनिशर पसाद गुरमैता जीक जाँच परीक्ता लेक्ह। 100 ऑक्क पश पत देल गेल। परीक्ता सम्पन भेल। 100 ऑक्मे 100 ऑक्र गुरमैता जीके पाप्त भेलैन्ह। पाचायमक्हनक पक्तभा देक्ख गद-गद् भय गेलाह। नामाकन भय गेल। जे.के. उच्च विदालयमे शी गुरमैतजी पढय लगलाह। गुरमैताजी बगूसरायमे पढबो करक्थ आ राष्टीय सियाॅसेकि सॉग्रक क्शविरमे सेहो भाग लैथ। क्हनक चाचा जे जेलसँ भावा कऽ बेगूसराय चल गेल रहैथ ओ भुनिशर पसाद

गुरमैतापर समसैल रहैत छलाह। कक्एक तँ ओ आर.एस.एस. क्शाविरमे भाग लेबाक हेतु जाइत छलाह। ओ ओक्ह क्शाविरमे भाग लेबासँ सक्दखन मना करैत छलैन्ह। धीरे-धीरे भुनिशर पसाद गुरमैता राष्टीय सयॉसेकि सॉघक पचारक बक्न गेलाह। देश सेमिे लागल रहलाह। क्मताक आजाक पालन करैत काशी क्हन्दु विशविदालयसँ एम.एक. पास कयलैन्ह। माताके तीथािन करौलैन्ह। पद विभूरण आचायम हजारी पसाद विदिीजीक सॉरकणमे शोध कायमसमपन कयलाह। बहुत रास पा..... सभ क्लखलैन्ह। क्हनक शोधक विशजय छल ‘िणमताकरक ऐक्तहाक्सक पृका भूक्म।’

एक्ह तरहे गुरमैता-सलैता पक्रािरक धन-समपक्त नष भेलाक िदो सतिॉता पाक्तमे अपन अहम भूक्मका क्नभौलैन्ह। जे आइ धक्र क्नबथलाचलक आन, िन और शान अक्छ।

<u>कैलाश कुमार मिश्र</u>

<u>लघुकथा- पण्डिताइन</u>

राघबक मोबाइल केर घंटी बाजि उठलनि। देखैत छथि जटा फ़ोन कऽ रहल छथि। फोन उठा हेलो कहलथिन। ओम्हर स जोश मे मुदा एक अव्यक्त पीड़ा स भरल शब्द: “हर हर महादेब राघब जी। सब समाचार नीक ने?”

राघब: “हर हर महादेब! कहल जाओ। जय महाकाल?”

जटा: “सब किछु चलि रहल अछि। जिनगी जीब रहल छी। काल्हि हरे कृष्णाक दोसर बरखी छनि। अहा स बहुत नेह रखैत छलीह। सोचल नौत दऽ दी।”

राघब: “ओह! दू बरख भऽ गेलनि अनुराधा के अहि नशर काया के त्यागि अनशर जगत मे प्रवेश केना! समय कोना दौड़ि चलल जा रहल छैक?”

जटा: “हा राघब जी। अहा के की कहू, अहा स्वयं विद्वान छी। सब बात बुझैत छियैक। आचार्य दिन सेहो सुतले रहि गेलाह! बिसरे सभी बारी-बारी!”

राघब: “सही कहैत छी। यएह छैक संसार। लोक जनैत अछि जे ओकरा चलि जएबाक छैक तथापि झूठ-फ़रेब मे, अपन आन मे लागल रहैत अछि। छोड़ू इ बात सब। हम काल्हि अवश्य आबि जाएब।”

इ कहैत राघब फोन काटि देलथिन।

आब राघब जटा आ अनुराधाक दुनिया मे, ओहि छोट सन संसारक इतिहास मे चल गेलाह। समय जेना घूमए लगलनि.....

जटाक जनि पथि पुतक र प ि एक हिादम्रर मिथिल बाह ण पमरवार ि भेलम्म। नाकि अम्तम्रकत्त ओम्ह पमरवार ि कोनो संस्कार बाह ण बला नम्ह रहैक - ने िता म्पताक म्शक्त, ने पमरवारक संस्कार, ने गाकि नाि आ ने कूलक म्बचार। जटाक म्पता आ िताक बीच एकैस वरखक अंतर रहम्म। जटाक म्पता भोला पचण्ड ूखिष आ भूमिहीन। लोकक म्हिस पोम्सया रखैत छलाह। पैतीस बरखक भऽ गेल रहम्थ। सब बेर चानन काजर लगा ललका धोती आ कुरताक सग पाग दोपटा धारण कय सौराठ सभागाछी जाइत छलाह। टुकटुकी लगेने रहैत छलाह जे कोनो कन्यागत ओकरा म्दस देखतैक। ुदा सब बेकार। ऊपर स ुहि कान सेहो दैवक देल। बज कारी चाि, उचगर दात, तािकुल आ पान स दात ि खईठी पिल, आम्ख धसल, म्रछ सन पूरा देह ि केस, कान पर म्बशेर झिटिगर ठाढ़ भेल रोआ, चेिा जका हाथ, हाथ ि खुरपी, हासू आ कोदाम्र चलबैत-चलबैत ठेला पिल, पैर ि बेिाय फाटल, लेढाएल िटिका धोती स म्हिसक गंध अबैत भोला कोनो र प स बाह ण नम्ह लगैत छलाह। गाकि संस्कार ई जे म्बना गाम्र के दू पुर ख म्नाको बात नम्ह कऽ सकैत छल। भोला भला अपवाद कोना रम्हतम्थ खूब गाम्रक पयोग करैत छलाह।

लगातार सात बरख स भोला तैयार भऽ सौराठ सभा शुदक सिय ि जाइत छलाह आ टकटकी लगेने बैसल रहैत छलाह ुदा दुभाग्य ई जे म्बयाहक बात के पुछैत अम्छ हुनका म्दस कोनो कन्यागत देम्खतो नम्ह छलम्न। अंततः सभा सित्त भेला पर भोला म्नराश िनि स वापस गाि आम्ब जाइत छलाह।

एम्हबेर भोलाक बूढ़ म्पता ठाम्न लेलाह जे चाहे जेना होइक़ भोलाक म्बआह अम्ह शुद ि अवश्य करा देम्थन्ह। म्कयोक कम्ह देलकम्न जे

नीरस झा बहुत नीक दलाल छथि। भोलो स अधलाह बरक बिआह करा चुकल छथि। िदा नीरस झा बिना टका के कोनो काज नहि करैत छथि। एकिबेर सभा लागब स बीस दिन पहिने भोलाक माता नीरस झा के अपन घर बजा अनलाह। बकाएन भिसक शुद दूध ि चाह बना भोलाक िय एक फुलही मालास ि नीरस के आ छोटकी बाटी ि भोलाक माता के देलथिन। नीरस के आर की चाही। िन पफुल्लित भऽ गेलैक। जािक सिय िह स फूिक-फूिक चाह सुरकय लागल। नीरस के होइक़ जेना चाह नहि अिृत पाब रहल हो! ओिहर भोलाक माता आ िय नीरस दिस एक लाचार याचक बिन अशाक किरण जगेने ताकि रहल छलथिन। जखन आधा चाह सुरका गेलैक तऽ नीरस बाजि उठल:

नीरस : "हा बौकू काका! की कहऽ चाहैत रही?"।

बौकू काका: "बौआ, पहिने चाह पाब लीय फेर गप करैत छी। अहा कोनो आन थोिड ने छी!"

नीरस चुपचाप चाह पीबय लागल।

चाह सूरकला बाद नीरस फेरो बाजल:

"हा बौका का, कहू की कहए चाहैत छी?"

बौकू काका चुपे रहलथि। भोलाक िय आिख स गरि-गरि नोर चुअबैत बजली:

"बौआ नीरस, अहा सब सन दियािनी लोक के अछैते हिर भोलबा कुिरे रहि जाय!"

नीरस: "की कहैत छी काकी, ई एहेन अपाटक अछि जे अपन नाि तक नहि बाजि पबैत अछि। ओहि दिन चौक पर एक घटक नाि

पुछ देलकैक। ई बृजबोध चौधरी के --जीबोध चौधरी कह देलकैक। ओतय सब आदमी हसै लगलैक। एकर बिआह कनी झंझट बला चीज़ छैक।"

बौकू काका: "हौ नीरस किछु करह। एकर बिआह हरिा मजबैत भऽ जएबाक चाही। सब किछु तऽ सुईद मे चलि गेल, आठ कटा बसबिट्टी आ कलम रहि गेल अछि। तकरे बेचि एकर बिआह करा देबैक। गरीबक महिनती बेटा छैक। लोकक मिहिस पोसतैक, खेत बटाई करतैक आ अपन जीबन चला लेतैक।"

बौकू काका के मुहि स ई बात सुनिते देरी नीरस मिने-मिन पसन भऽ गेल। ओकरा भऽ गेलैक जे आब ओकरा भोलाक बिआहक दलाली मे नीक पाई भेटि जेतैक।

नीरस : "बौकू कका, किछु ने किछु तऽ करय पड़त। आहाके जमीन बिका जाएत तकर दुख हरिा की अहा स कम हएत। मुदा दोसर कोनो उपाय नहि। खैर! बेटा स संपन्न भऽ जाइत छैक, संपन्न स बेटा नहि होइत छैक। की पता भोला के एहेन संतान बिधाता दऽ देथिन जे पाच दस बिघा जमीन किन दैक, पका मकान बना दैक, पैसा स घर भरि जाइक।"

भोलाक माय आ पिता मुड़ी गोतने नीरस केर बात सुनैत रहलन्हि। जतेक अंमति टुकमी जमीन बिका जएबाक ददषनहि भेलन्हि ओहि स अधिक अहि बातक आश जगलन्हि जे भोलाक बिआह भऽ जएतैक आ ओकर घर बसि जएतैक।

नीरस किछु सोचैत बाजल: "बौकू काका, एक तऽ भोला के कहि

मदियौक जे ई लोकके अपन नाि बृजवोध चैधरी के बदला भोला चौधरी कहैक। ई शब्द सहज छैक। एम्हि बात नम्हि लगतैक। आ पाच सात मदिनक भीतर हिरा लेल मकिछु टका के ब्योत कऽ मदिय जे हि बगलक गाकि छेदी झा के जाकऽ पम्हिने स दऽ अएबैक। छेदी झा अगर हा कम्हि देलक तऽ बात पका। ओ एहन लोक अम्छि जे बह ाक मलिखल लेख िटा सकैत अम्छि।"

ओ कहैत नीरस अपन घर मदिस मबिदा भेल। बौकू का, भोलाक िए आ भोला के मबिआहक आश जगलैकछ
कोउ काहू िगिन
कोउ काहू िगिन।
भोलाक पमिरवार अम्हि िगिन जे भोलाक मबिआह भऽ जेतैक। जिीन तऽ हाथक िल छैक। नीरस अम्हि ि िगिन जे भोलाक मबिआह ि ओकरा नीक दलाली भेट जेतैक।
बौकू काका दोसरे मदिन गाकि िहाजन स दू सए टाका अपन कलि के नाि पर अगता लए नीरस के दऽ देलम्थिन। नीरस ओम्हि ि स एक सए अपने राम्खि लेलक आ एक सए छेदी झा के दऽ अएलैक। छेदी झा जोगार ि लामा गेल। तकैत-तकैत छेदी झा के एक कन्यागत एहन भेट गेलैक जकर तेरह बरखक बेटी रहैक। छेदी आ नीरस ओम्हि कन्यागत के सझिा बुझा भोला स मबिआह लेल िना लेलक। ओना पम्हिने तऽ भोलाक बगै देख कन्यागत कम्नि मबिदमकि गेलैक िदा छेदी आ नीरस अपन रचल ियाजाल ि ओकरा फसा लेलकैक।

अम्हि तरहे पैतीस बरखक भोलाक मबिआह सभा गाछी ि पम्हिने मदिन

फाइनल भऽ गेलैक। भोलाक कमनया गोदा गोर अततह ुदा ि रमाल्ली जका मखयाएल। देह अनक िारल रहैक। घर ि भमर पोख अन के पुछैत अमछ कुअन तक नम्ह भेटैक। सोझे साले दुरागि न भेलैक। भोलाक ाि य अपन ि रमाल्ली पुतहु लेल बहुत उदार। दरबज्जा पर पोमसये सही चामर-चामर लगहैर ि म्हस रहैक। दूध दही केर कोनो किी नम्ह। गोदाक पूरा नाि रहैक गोदावरी ुदा लोक त्यार स गोदा जे कहनाइ शुर केलकैक से गोदा रम्ह गेलैक। से जे हो। गोदा सासुर ि भमर पेट भोजन करैत छम्ल। सासू कम्हयो कोनो तरहक किी नम्ह देलूम्थन। सोझे साले गोदाक देह मचकन भऽ गेलैक। चाि चम्कि उठलैक। बेर सन पयोधमर नीक भोजन आ भोलाक नेहक उत्पात स सि तोलो स नि हिर भऽ गेलैक। अचानक अतेक पमरवतष आम्ब गेलैक गोदाक शरीर ि जकर मकयोक कल्पनो नम्ह कऽ सकैत छल। गोदा भोलाक दुमनया बदम्ल देलकैक। बोलीक ि धुर तऽ गोदा नैहरे स छम्ल। घर ि खूब काज धंधा करम्थ। सास ससुरक सेवा ि कोनो किी नम्ह। भोलाक ाि ए दरबज्जाक काज जेना गोबर स मचपिी पारब, दरबज्जा मापब, ि म्हसक थान साफ़ करब, अन सब फटकब, सुखाएब आम्द करम्थ आ गोदा घर आंगन साफ़ करब, मापब, भानस करब, सासु सग धान कुटब, दाम्ल दरडब आ पूजा पाठ करम्थ। दुनू ि कम्हयो कोनो तरहक फसाद नम्ह भेलम्न। भोला तऽ अपन गोदा के सदैव ाि थ पर रखैत छलाह। सि यिक चकी चलैत रहलैक। गोदा सोलहि चढ़ैत गभषती भऽ गेलीह। नौ ाि सिक बाद एक बेटा भेलम्न। भोलाक बेटाक ुहि कान नाक तऽ नीक रहैक ुदा चाि कि रंग भोलो स मसयाह। ुहि आयताकार। ुदा भोला, गोदा, भोलाक ाि ता माता खुशी स बताह। एक ि म्हला जतले मजभे बाम्ज देलकैक “बच्चा कमन कारी छैक”। भोलाक ाि य झट दमन

कहलथिन: ''रहऽ दियौक, बेटा छैक ने। इ हे कान सोझ छैक ने। घीबक लड्डू टेढो नीक। हरि वंश बढ़ि गेल। हिदेब खूब कऽ औरदा देथिन आ काया निरोग रहैक। आर की चाही।

बच्चा चूकि भोलाक प्रिय कलना बाबा स मिगने छलीह तियँह ओकर नाम राखल गेलैक गिनेश चौधरी। गिनेश के घुरमिल घुरमिल जटा बला केश रहैक तिँए गाम घरक लोक जटा कहि सम्बोधित करए लगलैक। गिनेश कतौ बिला गेलैक आ जटा नाम जगजियार भऽ गेलैक।

भोला परिशम करैत रहलाह। जटा के दबाई बीरो लेल नगद टाका के दरकार भेलैक। लोक सब स पैच उधार शुरु भेलैक। आठे मासक बाद गोदाके पुनः गर्भ ठहरि गेलैक। फेरो बेटा भेलैक। हालांकि तकर छह बरख धरि गोदा के कोनो सतान नहि भेलनि। अहि बीच भोलाक पिता अर्थात् बौकू काकाक निधन भऽ गेलनि। भोला पर कर्जा आरो बढ़ि गेलनि। दूनू बेटा जटा आ सत्यदेव सरकारी बेसिक स्कूल मे जाईत रहल। नहु-नहु अन पानिक दिक्कत शुरु भेलैक कारण भोला लोकक कर्ज अन बेचि सधेबाक जोगर लगेने छलाह। अही बीच ककरो स पता चललैक जे हिमांशु रश्मि योगी कानपुर मे तीन बरख लेल अखण्ड यज्ञ करताह। तिँह लेल ब्राह्मण कुमार चाही। बच्चा सभके रहनाइ खेनाइ मुफ़्त उपर स गुरुकुल मे नाम लिखा देल जेतैक। किछु टाका सेहो भेटतै। गोदा भले दरिद्र परिवार स छलीह मुदा शिक्षाक पिपासा साकाक छलीह। भोला के कहलथिन: ''बुझलौ, अपने सब दिक्कत मे छी। दुनू भाई के भरि पेट अनो ठीक स नहि दऽ पबैत छी वस्त्र पोथीक चरचे छोड़ि

म्दयौक। बम्ढया रहत जे दुनूके कानपुर रिशि जोगी के आशि पठा देबैक। भम्र पेट भोजन, देह झापक वस्त्त आ पढ़बाक जोगार तऽ भऽ जेतैक। अपन सभक जीवन कटैत रहत।"

भोला बात गंभीर भेल सुनैत रहला आ अंम्ति म्नणषा इ लेलम्न जे जटा आ सत्यवत्र के म्दलली पठा देम्थन। सएह भेलैक।

जटा आ सत्यवत्र दुनू भाई िहम्रषरिशि योगीक आशि कानपुर आम्ब गेल। पम्हल बेर शेब देखलक। पम्हल बेर पनीर ककरा कहैत छैक से बुझलक। गेरआ शुभ वस्त्त भेटलैक। भोरे स्नान पूजा, वैम्दक िन्ताक सविेत पाठ आ तकर बाद फल आ भम्र मालास छालीयुक्त दूध। म्दनि रोटी, भात, दाम्ल, तरकारी, सलाद, आचार, दही, मिठाई; राम्त कऽ रोटी, दाम्ल तरकारी। सुतए स पम्हने दूध। सस्कृत व्याकरण, वेद पाठ, कषिकाण्डक म्शक्ा म्वख्यात गुरक देखरेख ि। दू हजार म्वदाथी ि दुनू भाई जेना घुम्ल मिल गेल। वेद पाठ स कंठ खुम्ज गेलैक। व्याकरणक सूत म्जहा पर चम्ढ़ गेलैक। जखन एक बरख ि गाि गेल तऽ गोदा अपन दुनू बाहण कुिरक िखाकृत देम्ख अचम्मभत भऽ गेलीह। सासु तुरत म्हंग, सौस मिरचाई आ नोन झिका दुनू पौतक नजम्र उताम्र लेलम्न। डर इ रहम्न जे कखनोकल अपनो लोकक नजम्र लामा जाइत छैक!

म्नत्य वेद पाठ केलाह स दुनू भाई केर कंठ फूम्ट गेलैक। स्नरक सन्धान नीक भऽ गेलैक। गेयता पखर भऽ गेलैक। दु बरख ि जेना पम्रपक्व भऽ गेल होइक। दुनू भाई आब िशिः बारह आ दस बरखक भऽ गेल। सब म्कछु नीक रहैक। इहिर गोदा के फेरो एक बेटा

आ एक बेटी भऽ गेलन्हि।

एकाएक रश्मि योगीक आशा िियज आ पढ़ाई बन्द भऽ गेलैक। आब की हो? ओहि िअन्धकाश ब्विदाथी मिथिला आ उतराखंड स अन्त मधय पिरवार स रहैक। िता म्पाता लग कोनो उपाय निहि। िकयोक कोनो फैक्टी तऽ िकयोक कोनो आन ि जिदूरी शुर केलक। िकछु नीक ब्विदाथी सबहक नािकिन कानपुर आ अगल बगल केर सस्कृत ब्विदालय (िहाब्विदालय) ि भऽ गेलैक। ओहने ब्विदाथीक हेज ि जटा आ सत्यवत छल। मिथिलेक एक गुरजी अपन पभुत्व स दुनूक नािकिन एक सस्कृत ब्विदालय ि करा देलन्हिथन। ओहि ब्विदालय ि छात सभके दुनू साझ भिर पेट रोटी दािल भोजन भेटैक। खोराकी अगल बगल के सेठ साहूकार सब धिक नाि पर दान ि दैक। कहियो काल तरकारी आ खीर िमठाई सेहो ब्वशेर लोकक कृपा स भेट जाइक। लोक सभ ब्विदालय के छात सभके बाहण भोजन, पूजा पाठ लेल सेहो बजबैक। अहि ि नीक िाकुत भोजनक अलावा वस्त, वतथ आ नगद सेहो हािसल भऽ जाइक। ई दुनू भाई अपन पैसा बचा िय के पठाबय लागल। कजा स कन्ना आिफयत होयि लगलैक। दुनू भाई पढ़ैत रहल। पढ़ाई ि नीक करैत रहल। जटा कन्ना िहक जोर छल आ सत्यवत कन्ना िदुभारी िदा गम्भीर आ चुस्त चालाक लोक।

देखैत-देखैत जटा अठारह बरखक भऽ गेलैक। ओकर दाई अथात भोलाक िय िजबैत छलन्हिथन। एकिदन भोला स अिर गेलन्हिथन: "हौ बौआ, बाप तऽ पोता सबहक उपनैनो निहि देख सकलथुन, हिरा कि स कि जटा के ब्वआह करा ओकर कनिया देखा दएह! िरिलाउतर तोहर ि्माता भेटता तऽ कहि देबन्हि जे एहन अन्छ अहाक पोताक

कम्नाया!" ई कहैत ओम्हि बूढ़ीक धसल आम्खि स नोर ि म्टि पर टप-टप खसए लगलैक।

भोला तुरत अनि ल ि स्टिर लग अंतदेशी लेने पहुच गेलाह। बजलाह, "ि हिटर साहेब, हि र ि यि आई एक कचोटक बात बाम्ज देलक। ऊपर स ओकर नोर थ हिक ना ि नम्हि लऽ रहल अम्छ। कहैत अम्छ जे आब बहुत म्दन नम्हि जीत। ि रए स पम्हिने जटाक कम्नाया देखऽ चाहैत अम्छ। कम्न अहा एक म्चटी ि सब बात जटा के म्लख ओकरा जनतब दऽ म्दयौक। "

भोलाक हाथ स अंतदेशी अपन हाथ ि लैत अनि ल ि स्टिर सब बात म्चटी ि जटा लेल म्लख देलम्थन।

म्चटी भेटला पर जटा म्बआह लेल तैयार भऽ गेलैक। तीन ि सिक भीतर जटाक म्बआह अपना स दू बरख छोट ल ि की स भऽ गेलैक। सोझे साले दुरागि न सेहो भऽ गेलैक।

जटाक कम्नायाक ना ि रहैक अनुराधा। लंबाई ि जटा स लगभग बराबर। रंग सा ि म्र, देह गदरायल। नामान सन लट, डोका जका आम्ख, छरगर नोकगर पतरगर नाक, गम्सल-गम्सल छोट-छोट दूध जका च ि कैत दात, वक्क वयस जाने कम्नाक अम्धके उभार, नाम्रकेर तेल स गूथल जु ि , रंग म्बरंगी नुआ ि अधकटी आंगी आ कखनोकाल पारदशी आंगी स छटकैत ओकर कसल पयोधम्र देखार लगैक एना जेना सब बंधन तोम्ि बाहर आम्ब जेतैक! जटा तऽ अपन रसगर कम्नायाक काया केर पे ि आ ओकर नेह ि बताह भऽ गेल। कखनो ओ अनुराधा के छोम्ि कतौ जएबाक ना ि नम्हि लैत छल। ि सिे म्दन पर कानपुर स गा ि आम्ब जाइत छल।

अनुराधा एक नंबर के खेलामि। रंग रभसक बात आ साधान जटा स अधिक बुझैत छल। कतेक मिया पतामिया आ खेलक गूढ़ नाय आ पयोग बुझल रहैक अनुराधा के। बिआहक बाद ओमि उतरोतर वृद्ध होइत गेलैक। परिणाि ई भेलैक जे अनुराधा बिना जटा के कानपुर ििने नहि लगैक। जटा आचायक अंति परीक्षक बाद अनुराधा के कानपुर अनबाक उपि करए लागल। पंडिताई स नीक कििई भऽ जाइत रहैक। तामि ई चिंता नहि रहैक जे अनुराधा के कोना रखते की खेतैक, की खुएतैक। अनुराधा ओना तऽ कनिया बनि आयल छल ुदा जेठ आ किआ बेटाक पतीक होबाक़ कारणे लजवन्ती सासु गोदाक लेल सासुओ स पैघ बनि गेल छल। सबदिन जटा एक चिटी अनुराधा के लिखैक आ सबरानि अनुराधा ओकर उतर लिखैक। बेचारा भोला सबदिन डाकघर चिटी ख़सेबा लेल अनुराधाक चरबाह जका जाइत छलाह आ डाकिया हुनका जटाक चिटी थिहा दैत रहनि।

अहि बेर मातृपक ि जे जटा गाि अएलैक से अनुराधा के गभषठहरि गेलैक। जखन जटा कानपुर गेल तऽ डेढ़ िसिक बाद ओकरा अनुराधाक चिटी स ई जानकारी भेटलैक। अनुराधा चाहैत छल जे ओकर बच्चा कानपुर ि होइक़ आ जखन बच्चा होइक़ तऽ जटा ओकरा बगल ि रहैक। ुदा साधनाक साधान किछु आरे लिखल रहैक।

एक दिन घनघोर अन्हरिया रानि ि कोनो उपरवी लोक एक बादाथीक हत्या कऽ देलकैक। आब की हो? पुलिस पर दबाब पिलैक जे कोनो घराने खुनिया अपराधी के चौबीस घंटाक भीतर जेहेल ि डालल

देबाक छैक।

जटाक िहजोर भेनाइ काल भऽ गेलैक। ऊपर स म्वदालय ि गुरजी सब ि गुटबाजी चलैत रहैक। जटा जाम्ह गुरक गुट ि छल से गुरजी कतौ बाहर गेल छलाह आ हुनकर पम्नादंदी अम्ह बातक लाभ उठबैत जटाक नाि पुम्लस ि म्लखा देलकैक। फेर की अधषराम्त ि पुम्लस जटा के म्हरासत ि लऽ लेलकैक। भम्र राम्त थाना ि यातना दैत रहलैक। लाठी, बन्दूकक कुंडा आ घुसा स पीटैत रहलैक। नाना तरहक यातना। थडषम्डगीक सब यातनाक पयोग पुम्लस जटा पर तेना केलकैक जेना जटा बहुत कुख्यात आतंकवादी अथवा मिमिनल हो। जटा दैम्हक आ िनम्शक यातना सं टूटी गेल। अम्ह यातना स ृत्युदण्ड नीक इ सोचैत अंततः जटा अपन जानक म्चन्ता ि ई गम्छ लेलकैक जे वएह खूनी छैक। वएह ओम्ह म्वदाथी के िरलकैक। सब ओकरे त्लोम्टंग रहैक। पुम्लस के भेलैक जे ओकरा बहुत पैघ काियावी हाथ लामा गेलैक। सब बात कागत पर म्लखा भोला स हस्ताक्र लऽ लेलकैक। दोसरे म्दन पुम्लस ओकरा हाजत ि लऽ गेलैक। म्िजसिट लग सेहो भोला पुम्लस केर भय स अपन गुनाह स्वीकार कऽ लेलकैक। पजातंतक अिनवीय तंत ि एक म्नदोर दोरी बम्न गेलैक आ दोरी खुल्ला साढ जका घुि त रहलैक!

जखन अनुराधा के पता लगलैक तऽ बेचारी बेहोश भऽ गेम्ल। घर ि ितिि वातावरण भऽ गेलैक। अनुराधा छम्ल पुरखाम्ह। म्हम्त रखलक। क़िर कम्स लेलक। म्नणष लेलक जे कानपुर जा अपन पम्त के म्नदोर साम्बत करत। लोक िनो केलकैक िदा अपन म्नणष पर रणचण्डी जका ओ दृढ़ छम्ल। दोसरे म्दन म्बना कोनो आरक्ण

के जनरल म्टकट स अनुराधा अपन एक पन्रह वरीय देओर सग कानपुर लेल रेलगाि ि बैस रहम्ल। अनुराधाक िथ पर एक दैम्बक आभा छलम्क रहल छलैक।

अनुराधा कानपुर आम्ब अपन देओर सत्यवत्त सग जटाक म्नदोर होिक लिाई लि लागम्ल। ई दुनू देओर भाउज लेल िहाभारतक धिषयुद स कि नम्ह छलैक। छह िास जेहेल ि रहलाक बाद जटा जिनत पर बाहर आम्ब गेल। अम्ह बीच कानपुर ि अनुराधा एक सुन्दर सन पुतीक जनि देलकैक। जटा जेहेल स बाहर अम्बते ितर बताह जका करऽ लागल। अनुराधा यदम्प म्बाचम्लत नम्ह भेम्ल। लागम्ल रहल। सत्यवत्त पढ़ाई आ धनाजष एकै सङे करैत रहल। सियिक सुई घुिित रहलैक। जेना अन्हारक बाद इजोत होइत छैक तम्हना एहन सिय एलैक जे असली खूनी पकिा गेलैक आ जटा सकुशल अम्ह केश स ि्कत्त भऽ गेल। ि्कत्त भेलाक़ बाद आचायषक परीक्ा पास केलक।

एक म्दन एक नव िम्दर केर भगवानक पाण पम्तष ा ि एक गुरजी सग जटा सहायक पम्णडत बम्न कि षकाण्ड करबा हेतु गेल। िनोयोगपूवषक सब काजक सचालन ि गुरजी के िदम्त केलकम्न। गुरजी बहुत पभाम्बत भेलाह। बाद ि जटा के ओही िम्दरक ि्ख्य पुजारी बना देलम्थन। जटा िम्दर ि पूजा पाठ ि लीन भऽ गेल।

एकबेर उज्जैनक िहाकाल िम्दर गेल छल जटा। ओतय केर छटा, भसि आरती, पूजाक पदम्त जेना ओकर िन ि बम्स गेलैक। िहाकालक अनन्य भक्त भऽ गेल जटा। अनन्त बेर अपन यजिान

सबहक पूजा पाठ आ अन्य तरहक सकल्प ओम्हि पागण ि करोलक। म्मातम्हि जटा साझ ि भागक गोला खाइत छल। अपन म्मिन्दर केर पस्तर ूमिमाषके नीक स सजबैत छल। नीक करैत छल। म्मिन्दरक गभपृह ि बेर पहर म्शवम्लंग लग कतेक काल सुतल रहैत छल। म्शवम्लंग सग एना लगैत छलैक जेना जटा जीम्बत ि नुख सग वातालाप करैत हो! लोक के आस्था नहु नहु जटा म्दस बढ़ल गेलैक। अम्ह म्मिन्दर पर अबैत देरी जटा नाकि व्यम्कत सािता भऽ गेल आ िहाकाल पम्णडत शाशत भऽ गेल। सम्सि केत ि लोक ओकरा िहाकाल पम्णडत जी कम्ह सबोम्धत करैक। ई केत बम्नाया लोकक रहैक ताम्ह जटाक भाव कम्न अम्धक भऽ गेलैक। म्महिला सबि जटाक ि ज कम्नाक अम्धके रहैक।

एक म्महिला तऽ अतेक पभाम्वत भऽ गेलैक जे जटाक पती अनुराधा के ई शंका होयि लगलैक जे जटा आ ओम्ह म्महिलाक बीच म्कछु ने म्कछु बात जरर छैक। म्कछु लोकक जे अपना आपके पत्यक्दशी बैतबैत छल केर दावा रहैक जे म्मिन्दर के भीतर पाछा बला घर ि अन्हार ि ओम्ह म्महिला सग जटा म्कछु करैत रहैक। सत्य की रहैक से राम्हि जानम्थ ि दा एम्ह सब बात स अनुराधा कम्न अम्धके साकाक भऽ गेम्ल। जटा पर चौकसी बम्ढ़ गेलैक। जटाक भाई आब ि म्भाई चम्ल गेलैक। ओहो ि हिगर लोक रहैक। वेदक उच्चारण बम्ढ़या रहैक। एक म्मिन्दर अपने स बना ओकर िठाधीश भऽ गेल। यजािन सेहो नीक सख्या ि बना लेलक। जीवन चलैत रहलैक। जटा जखने खुम्नाया केश स बरी भऽ गेल सत्यवम्थक म्बवाह सेहो भोला अथात ओकर म्पाता करा देलम्थन। अंम्ता ि म्नाणषा यदम्प एम्हबेर जटाक रहैक।

अनुराधा आब दोपहर ि जटा लग बैसय लागल्ल। ओ म्हिला जे जटा पर लाइन िरय सेहो आब कम्म डरे ि रहैक।
जटा पाच भाई भऽ गेल। जटाक अंम्त भाई ओकर बेटी आ बिका बेटा स सेहो छोट रहैक। अम्ह बात स अनुराधा अपन सासु ससुर स तिसाएल रहैत छम्ल ुिदा की कऽ सकैत छम्ल?

सत्यवत्त छोमि सब भाई जटा लग आम्ब गेलैक। एक बम्हनक म्बआह सेहो भऽ गेलैक। गाि पर जटा आ सत्यवत्त दुनू भाई मिल कऽ पका घर बना लेलक, पाच छह बीघा जिीन म्कन लेलक। आम्थक म्स्थम्त नीक भऽ गेलैक।

कानपुर ि एक म्बक़ट सिस्या - अतय पंम्डताई वृम्त ि लागल िम्थल बाह ण सब यजिानिक डरे या तऽ िछ िउस नम्ह खाइत छम्थ अथवा चोरा नुका कऽ खाइत छम्थ। कानपुरक लोक, म्बशेर र प स बम्नया, िािवारी, पंजाबी आम्द यएह सोचैत अम्छ जे पम्णडत कही िसाहारी भेलैक अम्छ! पम्णडत छम्थ तऽ शाकाहारी हेबे करताह। आ अम्ह सोच ि िरिल जाइत छम्थ पम्णडत कम्षि सलग्न मिम्थलाक कम्षकाण्डी।
बेचारा जटा आ ओकर कम्नया दुनू पाणी एक नंबर केर िछमाद ुिदा अपना घर ि नम्ह खा सकैत छल आ ने बना सकैत छल। जोगार ई रहैक जे एक आदिी जे ओकर दूरक सबंधी रहैक ओ अपन घर ि बनाबैक आ दस बजे राम्त के बाद जटाक घर पर दऽ अबैक। जखन सब सूम्त रहैक तखन जटाक पूरा पम्रवार चुपचाप िछ खेलाक बाद राम्तये ि काट कुस बाहर फेक आबय, घर ि

सेट, अगरबती जि सब गंध (मिथिल सुगन्ध पढ़मथ!) सात्ति कऽ दैक। ई कम्म झंझट बला काज रहैक तामं िसि म्दन ि िमशकल स एक या दू म्दन अम्ह तरहक ब्योत करबैत छल जटा।

अनुराधा छम्ल ओम्ह पम्रवार स जतय पुरख, ताहू ि किआ पुरख के बहुत समिन भेटैत छैक। समिनक पम्रकल्पना उटपटाग जका रहैत छैक। पुरखक भोजन सािन्य सदस्य स म्वम्शष रहैत छैक। ओकर पम्हरब, ओढब, चलब, ओकर ओछायन म्वछायन सब म्कछु ि अंतर। जटा लेल सेहो एहने व्यवस्था अनुराधा केने छम्ल। घर ि सब लोक लेल रोटी तरकारी अथवा भात दाम्ल एक सािन्य तरकारी बनैक। जटा लेल एक अलग स तरकारी अथवा भुम्जया अथवा चटनी बनैक। छम्लगर दूधक दही अम्नवायषरहैक। जटाक वस्त्र पम्तम्दन धोल जाइक, आयरन होइक़। सब तरहे जटा के देखला स घर ि ओकर म्वम्शष होबाक़ बात स्पष भऽ जाइक।

अनुराधा बुम्धयाम्र बडड। सब म्दन जटाक भोजन केलाक बाद जटा बला थािि ि भोजन करैत छम्ल। जटा अनुराधा लेल सब सािन छोमि दैत छलैक। बासन ि जे कम्न िमि बाचल रहैत छलैक सेहो अनुराधा अंत ि खा लैत छम्ल।

अनुराधा के एक बातक बहुत तािसि रहैक। ओकरा ओम्ह ठाकि लोक - बाल, वृद, म्स्त्तगण, पुरख सब म्कयोक पंम्डताइन कम्ह सम्बोम्धत करैक। अम्ह बात पर अनुराधाक सृंग चम्ढ़ जाइक। िदा छम्ल लाचार। अनुराधा ओना बहुत रोिम्टक पकृम्त के म्हिला छम्ल। आरो अनेक बात रहैक जाम्ह पर अनुराधा के तािसि चढ़ैक।

एक बेर मातृपक्क सयि ि एक आदमी एलैक आ बहुत सनि अपन िति मपताक नाि पर ओम्हि मन्मथ कऽ दान केलकैक। सनि सग पैसा सेहो दान केलकैक। अंत ि ओ आदमी अपन झोिा स बीिीक दू गठरी मनकाम्लि जटा मदस बढ़ैत बजलैक: "िहाकाल पंम्डतजी, हिरि मपता बीिी मपबैत छलाह। हि पमतवरष हुनक नाि पर मातृपक ि अन्य सािगी सग बीिी सेहो दान करैत छी।"

ओकर बात पर जटा हर-हर िहादेब कहैत बीिी ओकर हाथ स लऽ लैत छलैक ि्दा अनुराधा तािसे भेर भऽ जाइक।

एकबेर अनुराधा राघब स िजाक ि कहलकमम्हि: "कहू राघब जी, ई कोनो बात भेलैक जे लोक सब िपता मपताक नाि पर मातृपक ि बीिी मसगरेट दान करैत अमछ। ऊपर स तकष अनिल। कहत, हिरि मपता पीबैत छलाह ताम्हें चढ़ा रहल छी। भाई मपता दार मपबैत छलाह तऽ अहा दार दान करब? मपता लिकी सग सुतैत छलाह तऽ अहा लिकी दान करब? बजरखसुआ नमहतन! अनेि के चोचला ठाढ़ केने अमछ! तग आमब चुकल छी!"

राघब चुस्की लैत कहमथन: "चलू ने, अम्हि स तऽ फायदा अमछ ने आहाके! आ लिकी दान केलकैक तऽ अहाक पमण्डत जी के!"

अनुराधा: "कपार फायदा! लोक हसैत रहैत अमछ। ककरा लग बेच जाउ? लोक हंसत। सब बीिी मसगरेट के फेम्क दैत छी। रहल लिकी बला बात तऽ पमण्डत जी खूब आनंमदत हेताह। एकरंगाह चीज़ स नव चीजक रस भेटतमन। ि्दा से हि थोिि ने होिऽ देबमन!"

जीवन चम्लि रहल छलैक। जटा आ अनुराधा के एक बेटी आ दू

बेटा रहैक। दोसर बेटा भेलाक़ बाद अनुराधा नशबंदी के ऑपेरशन करा लेलम्नि।

अपन सौन्दयर्यक पदर्शना ि अनुराधा बहुत साकाक रहैत छम्लि। हिशा चकि दकि ि ितम्लि। देह कम्हयो झुर नम्हिं भेलैक। कसल-कसल आंगी, नामान जका जुि आ चलबाक अंदाज अनुराधा के गजगामिनी बनेने रहैक। अगर पंम्डिताइन के तगाि नम्हिं भेटल रम्हितैक तऽ कतेक आदमिि लाइन िरैत रम्हितैक! िरिऽ बला एखनो की रकैक! ताम्हि पर स काम्नाल बम्नि बिका-बिका आम्ख स ताकब एहेन चीज़ रहैक अनुराधा के जे बूढो लोक के जुआन बना दैक।

अनुराधा नख म्शाख म्संगार करैक। ओकरा बुझल रहैक जे जीवन ि स्त्री पुरख के सब सुख करक चाही। अनुराधा बुझैक जे केम्लि पुरख के बाम्हि कऽ रखबाक सवोतिि यन्त्र छैक। ओकरा बूझल रहैक जे उदासीन पुरख के सेहो एक चतुर म्हिला अपन सौदयर्य़ उभार आ उतेजना स पाण आम्नि सकैत अम्छि। ओकरा बुझल रहैक जे अगर पुरखक िनि नम्हयो छैक तऽ सयाम्नि आ खेलम्लि नारी अपन कन्त के शरीर ि काि ज्वालाक आमा फूम्कि सकैत अम्छि। ओकरा कािमिया ि लीन कऽ सकैत अम्छि।

अनुराधा केम्लि मिया के खेलब कहैक। पता नम्हि ई सोनहाएल देसी खाटी शब्द अनुराधा कतऽ स सीखने छम्लि? अपन म्कछु खाश म्हिला सग जखन बात करैत छम्लि तऽ खेल शब्दक पयोग करैत छम्लि अनुराधा। एकबेर एक नव स्त्री के जे अनुराधा के दूरक सम्बान्धि ि ननम्दि लगतैक अनुराधा पुम्छि देलकैक: " अहाक तऽ टटका म्बआह भेल अम्छि। कतेक बेर खेल करैत छी?"

बेचारी नव ब्याहल्ल नाम्र, कानपुर ि रहल्ल, कानपुर ि पढ़ल्ल, नम्ह बुम्झ सकलैक अनुराधाक बातक अथष ि्ह भकुएने ठाढ़ रहलैक। जखन अनुराधा के लगलैक जे ओकर बातक आसय ओ लि की नम्ह बुईझ सकलैक तऽ अपन बतीसी देखबैत बाजल्ल: "दूर अलूम्र नम्हतन! एकरो िने नम्ह बुझलौ अहा! हि आब खोइल कऽ कम्ह दैत छी। हि पुछैत रही जे घरबला सग कतेक बेर "ओ" करैत छी?"
अनुराधाक बात पर लाजे लाल भेल नाम्यका ि्ह झपैत घर म्दस भामा गेलैक।

अनुराधा दात देखबैत म्तराइत फेरो ओकरा पाछा-पाछा जाइत पकम्ि लैक आ कहैक: "अरे, अम्ह ि लाजक कोन बात! हि की कोनो कतौ बाजब? हि तऽ ई जानय चाहैत छी जे अहा सब एक दोसर के कतेक चाहैत छी, कतेक सतुष करैत छी। आम्खर ई काज तऽ भगवानक देन छम्न। के नम्ह खेल करैत अम्छ से कहू? अम्ह ससारक वृम्द्ध स्त्री पुरखक खेले स होइत छैक।"
अनुराधाक बातक स्पष्टीकरण स ओम्ह नवब्याहता के म्हम्त बढलैक। लज्जा भाव कम्न म्तरोम्हत भेलैक। उिग कम्न जगलैक। स्त्री पुरखक केम्ल पर कम्न म्जजासा बम्ढ़ गेलैक। अनुराधा के सबोम्धत करैत बजलैक:
"हरि छोि्। पम्हने अपन कहू जे अहा सब जखन म्बआह भेल तखन कतेक बेर खेल करैत रही?"
अनुराधा पकठोस भेल खुजल कामियनी बनैत बाजल्ल: "हि सब तऽ ओही ि िगन भऽ गेल रही। की म्दन आ की राम्त। सदैव ओकरे जोगार, ओकरे पयोजन। कतेक बेर होइक़ तकर कोनो मानती नम्ह। कखनो अपन िन नम्ह रहैत छल तऽ पम्त िहोदय के िनक रक्षाथष

ओम्हि पर्मिया ि लामा जाइत रही। से जे होइक़ ुदा एम्हि आनंदक कोनो बरनेका नम्हि।"

आब नवब्याहता कम्मा सलज्ज बनल उतर देलकैक: "हरिो सबहक म्पथम्मा अम्हंक सन अम्छ। कखन म्दन आ राम्मा पते नम्हि चलैत अम्छ। कतेक राम्मा एम्हि चकर ि भोजनो नम्हि बना पबैत छी।"

अनुराधा: "बाह, ई भेल ने बात!"

नाम्पका: "लेम्कन हरिा स अम्धक हरि पम्मादेवक ध्यान अम्हि म्दस रहैत छम्मा। कतेक बेर हि हाम्र िम्मा लैत छी। कतेक बेर थाम्क जाइत छी।"

सयि चलैत रहलैक। बच्चा सब बढ़ैत रहलैक ुदा अनुराधा आ जटाक पेि म्मात नूतन होइत रहलैक। ज-ज बयस बढ़ल गेलैक दुनूक़ ध्यि पेकि सघनता बढ़ल गेलैक।

एक बात कम्मा गबि भऽ गेलैक। जखन जटा डिष केश ि फ़सलैक ताम्हि कण अनुराधा गभषती रहैक। ओम्हि साचार स अनेक तरहक शंका, भय आम्द स ओकर िन म्पम्मात रहैक। तकर असर ई पलिैक जे दुनूक पम्हिल सतान बेटी कम्मा दि भऽ गेलैक। जखन बेटी अठारह बरखक भेलैक जटा ओकर म्बआह करा देलकैक। म्बआह ि नीक जका ठका गेलैक।

ख़ैर, म्बआह भेलैक तऽ बच्चो भऽ गेलैक। बेटा रहैक। जटा आ

अनुराधा नाना नानी बमना गेल। समय कट लगलैक। नामना सदैव नाना नानी लग रहैक। जटा क बेटी मफकछु कोसष शुर केलकैक जामहह स अपन पैर पर ठाढ़ होइक़। दोसर बच्चा नमहह करतैक तकरो मणाषा लऽ लेलकैक।

जटाक दुनू बेटा पढ़य मे ठीक नमहह रहलैक। बमका कहुना बारहवी केलाक बाद कोनो कंपनी मे छोट मोट नौकरी शुर केलकैक। छोटका पाइवेट कॉलेज स इंजीमनयमरंग केलाक बाद बैसल रहैक। ओना कानपुर मे दुनु बेटा लेल मकान, नीक समपमत्त मफकन देलकैक जटा।

अमहह बीच एकाएक एक चमत्कार भेलैक। एक बेर भागवत कथा सुमना ततेक ने मवभोर भेलैक अनुराधा जे शुद शाकाहारी भऽ गेलैक। गला मे तुलसीक माला धारण कऽ लेलकैक। सदैव हरे कृष्ण हरे कृष्ण भजैक। ओकरा भगवान मे, भगवत भजन मे मचत लामा गेलैक। प्याज, लहसुन सब मफकछु सहरषत्यामा देलकैक।

जटा अपने तऽ शाकाहारी नमहह भेल मुदा अनुराधा लेल कोनो व्यवधान नमहह ठाढ़ केलकैक।
समय चलैत रहलैक। अनुराधा लेल जटा एक कार सेहो मफकन देलकैक।

एकमदन कार स जटा आ अनुराधा हमरदार जाइत छल। नामना सेहो सग रहैक। मध्य रास्ता मे कारक बैलेस मगमड़ गेलैक। कार एक बेर उलमट कऽ फेरो ठीक भऽ गेलैक। कार पर स अनुराधा आ

ओकर नाम्त खम्स पलैक। अनुराधाक कपार फुइट गेलैक। नाम्त ओतम्हं दि तोमि देलकैक। िहा अनथषभऽ गेलैक। लोकक सहायता स जटा अपन पती अनुराधा के एक अस्पताल लऽ गेलैक। बहुत खून चढलैक। ऑपरेशन भेलैक। घाव ठीक भऽ गेलैक ुदा वाक बंद भऽ गेलैक।

अनुराधा अपन ुहि स खेनाइ बन्द कऽ देलकैक। नली लगा म्लम्कव्ड वस्तु देल जाइक। जटा अपन सब म्कछु छोमि अनुराधाक सेवा ि लागल रहल। छह ािसक बाद अनुराधा उठइ बैसय लगलैक। ुदा याददाश्त वापस नम्ह एलैक। वाक सेहो बंदे रहलैक। ककरो नम्हं म्चन्हैक। कोनो उचाबच नम्ह। कोनो सुम्ध नम्ह। सब कषिहोइक़ ुदा पता नम्ह चलैक। अंत ि जटा जेठ बेटाक म्बआह करा लेलक। पुतहु आम्ब गेलैक ुदा अनुराधा के कोनो पगम्त नम्हं भेलैक।
इहिर अपन पुतहु के सस्थिया स रम्बत भेल भोला अन पाम्न छोमि देलम्न। एक बरखक बाद भोला म्बरासी बरखक अवस्था ि अम्ह ससार के छोमि देलाह।

भोलाक शाद कषिभेलाक़ दस म्दनक बाद एक म्दन अनुराधाक हालत देम्ख जटा छोट नैना जका ठोम्ह पाम्र काने लागल। एकाएक बाम्ज उठल: "हे िहाकाल, हे केशब! कतेक परीक्षा लऽ रहल छी! हरे कृष्ण आब लाचार छम्थ। म्हनका ुम्कत म्दयौन!" ई कहैत जटा अपना हाथे एक ितिक जाप करैत गंगाजलक चाम्र बून्द अनुराधा के ुहि ि डाम्ल देलकैक।
राम्त के ठीक एगारह बजे एक म्हचकी उठलैक आ अनुराधा गोलोक लेल म्बदा भऽ गेम्ल। जटा अंम्ता नोर ख़सा बेटा के कषिक तैयारी

ि लगा देलकैक। एक अध्याय सािप्त भऽ गेलैक। िहाकालक आराधना ि एखनो लागल अम्छ जटा। शायद म्जनगी ि फेरो हेतैक कोनो करािती घटना। हर-हर िहादेबक स्पर स अनघोल भेल रहैत छैक िम्न्दरक पागण। ओम्ह म्ानाद ि जेना अबैत रहैत छैक अनुराधाक स्पर - ओकर गीत, भजन, हरे कृष्णक नाि, ओकर पेिक अलाप, ओकर चूिीक खनखन, ओकर पाजेबक रनझुन, ओकर पाती आ साझक भम्ियि गान, ओकर बटगिनीक हुल्लम्सत तान। ओह, कतऽ छी भगबान!

बुकरराज (लघुकथा)

राघब विशिवदिालय केर छाताासिमे रहैत पीएचमी करैत छलाह। सँयोगसँ राघबक मकयौत भाईक लडका मुदा उमेरमे कतति सोहन राघब लग कम्पर्वि ि परीका सबहक तैयारी लेल आयल छलका। चाकए रिक अॅत्तर होबाक कारणे दूनूक बीच काका-भातजक कम आ सँगतुकया तिाि अकधक छलका। सोहन राघबक होसलिमे पाइल ऑन गेसकि रपमे रहैत छलाह। सोहन यूकाकिसमीमे िापुॅक्जया नेता सब सँग घुमय लगलाह। राघबक भतीजा बुईझ लोक कका भाि जरर दैत छलका।

एककदन सोहन सङे कभय राघब लग एलाह। कभय कहारक कोनो यूकाकिसमीसँ इकहासमे बी ए केलाक बाद राघबक यूकाकिसमीमे पाचीन इकहाससँ एम ए'मे नामाकन लेने छलाह। कभय राघब लग विनिमतासँ बैसलाह।

कभय बीच-बीचमे राघब लग अबैत रहलका। कभय यूकाकिसमी केर एम ए पीवियिस केर परीकामे बहुत खराप अॅक अनलाह। कनक माता-कपता दूनू कोनो यूकाकिसमीमे पोफेसर छलकथन। तकर फायदा उठबैत कभय ओकह यूकाकिसमीसँ पाचीन इकहाससँ एम ए कऽ लेलाह। मुम्बईमे कोना ने कोना कभय एक सँस्थानमे कला इकहास सँ एम ए'मे नामाकन लऽ लेलाह। दू रिक कोसम कभय पाच रिमे पूरा कएलाह।

कभय छलाह भाग्यक साढ। माता कपताक असगरआ बेिा। दू बकहन

पर एक भाई। जखन क्हनक एम ए केर क्रजल्ट काकलए बला छलक ताक्ह समय एक कला सॉस्थानमे एक लाला जी लोचन लाल दासके पकडलाह। दासजी क्हनके शहरक छलक्थन कजनका कभम्यक माय राखी बनहैत छलक्थन। कभम्य दास जीके मामा कहैत हुनकर शरणमे नतमस्तक छलाह। दास जी धुरफन्दी लगा कभम्य के कला सॉस्थानकक अक्मलेखागारमे नौकरी लगा देलक्थन।

एक रिमे राघब सेहो कला सॉसथानमे आक्ब गेलाह। सँयोग एहेन जे कभम्य आ राघबक व ि हि एकै साल, एकै मास आ एकै क्दन भेलक। अॉत्तर अतबे जे राघबक व ि हि माता-क्पता रिरे काधाक्रत आ कभम्यक व ि हि पेम नामक रोगक अॉक्तम पक्रणाम जाक्हमे अनेक भाभि, ना कि आक्दक भूक्मका पबल।

कभम्य केर जेठ बक्हनक ननक्द हेमा कभम्यसँ नौ रिखक छोि मुदा पोखगर छलीह। हेमा दूक्धया गोडाईसँ ग् जब सुनक्र लगैत छलीह। दुबर पातर चमकैत चेहरा छलक हेमाक। बडकी- बडकी आँक्ख, तेहने सुन्दर ठोड, घुरमल-घुरमल केश, छोि मुदा गस्सल-गस्सल व किक्सत आ पस्फुव ित होइत कि। क्तम्म यदक्प ओतेक व किक्सत नक्ह छलक। क्तम्मक व किक्सत नक्ह भेनाईक अथमई नक्हॉ जे हेमा आकरम्मा, सौन्दयमे कोनो तरहे कम छलीह।

हेमा सत पूछी तऽ कभम्य लग क्खच्चा छलीह। ताक्हसँ की, सँबॉधमे हेमा कभम्यके बक्हनक ननक्द छलीह से कभम्यके पक्रहासक अ ि सिर दैत छलक। एकबेर हेमा इॉ ि रमीक्मएि केर परीका देमय कभम्य ओतय एलीह। कभम्य हेमाक समीप आबय लगलाह। सामान्य हास-पक्रहास

नहुँ-नहुँ पेममे पकिस्त होमय लगलक। बातक पेम आब आँख, भॉगामा आ मुरासँ होमय लगलक। शुरमे हेमा ओतेक गम्भीर नहाँ छलीह लेकिन कभय हुनको गम्भीर बना देलथिन। पेम शब्दक बासिँ देहक सीमा पर आबा गेल छल। दूनूके बयसक अँतर समाप्त भऽ गेलक। जाडक मासमे अपन सीरकमे घुसल हेमा पोथीक सामीप्य कम आ कभयक हाथ, मुँह आ ने जाक कोन-कोन अँगक सामीप्य अधिक करय लगलीह। दूनूक जीनिमे एक अपूमिरस भेनिाई शुर भेलक। किताबक पथ हेमाक सँग छोव्ड देलक आ आब पेमक बाि व्हनका दूनूके अपना लग बजा लेने नल।

एक दिन जखन हेमा अपन सीरकमे घुसल छलीह आ कभयक हाथ हुनक अँगक विशेर भाग दिस हलचल कऽ रहल छल तखन हेमा पेमक रसमे मुबकी लगबैत कक्त अपन पेमक पक्त साकाक होइत बजलीह: "यौ कभय ! अहा जे अतेक आगा बढल जा रहल छी हमरा सडे से एक बात बुझल अछ?"

कभयक हाथ एकाएक चहलकदमी छोव्ड देलक। कक्त कचक्तात होइत बजलाह: "से की?"

हेमा: "यएह जे अहा अतेक आगा बढल जा रहल छी। अहाक माता-पाता आ ओहूसँ आगा हमर भैया-भौजी अहा आ हमर विािह लेल तैयार हेताह?"

कभय : "एक बात कहु।"

हेमा: "पुछू"।

कभय : "देखु हेमा, अगर अहा तैयार छी तऽ बाकी काज हमरा पर छोव्ड दिय। हम सबके सम्हाकर लेब। हमरा बुझल अछ जे एकर सबसँ पैघ विरोध हमर बक्हन आथस्त अहाक बडकी भौजी करतीह।

लेकिन देखल जएतैक। हम अपन छोटकी बहिन आरती एमहि बहिनोईके मना लेब अपना दिस। ओकरे सबहक सहयोगसँ माय सेहो मानि जेतीह। एक बेर मायक हृदय पघिलज गेलनि तऽ ओ हमर बाताके सेहो तैयार कऽ लेतीह। हम अहाके कोनो अस्थिरता मे असगर नहि छोड़ि सकैत छी।" अभयक हाथ बात करैत-करैत फेरो हेमाक सीरक दिस घुइस गेलनि आ अपन काज शुरू कऽ देलक। हेमाक शरीर आनंदक स्पर्शसँ सिहरय लगलनि। पेमक ताप केहेन होइत छैक तकर अनुभव हेमा आ अभयसँ बढ़िया के बुईझ सकैत छल? अभयक हाथ चलैत रहल। कखनो जोर तऽ कखनो कनि हल्लुक मुदा अनवरत। हेमाक पोर-पोर फ़ुलकैत। बिना कोनो व्यवधान केने हेमा बाजि उठलीह:

"जनैत छी, हमर भैया चूँकि हमर बेमातर भाय छथि, ताहि कारणे सेहो ओ आ हमर भौजी हमर अहाक विवाहि लेल तैयार नहिँ हेतनि। ओना हम अपन मायके मना सकैत छी।"

अभय अपन हाथके गतिमान रखैत बजलाह: "देखू हेमा! अहाक भैया अहाक ने बेमातर छथि, हमर तऽ अपन बहिनक पति छथि। हम जनैत छी कोना हुनका सबके मनाबी। अहा चिंता नहिँ कर।"

आब अभय हेमाक सीरकमे पूरा घुइस गेलाह। दूनू ओहि यातामे तल्लीन भऽ गेलनि जाहिमे पति-पती भऽ जाइत अछि।

एहि तरहे एहि तइस दिनक पासिक अवधिमे हेमा आ अभय एक दोसरक देहक आ मोनक पीत आ पेमक धारमे कतेक बेर मुबकी लगेलनि तकर कोनो हिसाबे नहिँ। उचितो यएह। पेमक कही माता, सँख्या अथवा घनत्व देखल गेल अछि?

जखन हेमा कभमयक शहरसँ िपस अपन गाम चल गेलीह तऽ कभमयके राक काबि मुश्कल। हेमाके सेहो कभमय कना अपन जीनि पहाड बुझना जाइन।

अन्ततः कभमय हम्मत करैत अपन छोि बहन आ बहनोईसँ बात कएलाह। हुनकर छोिकी बहन तैयार भेलीह। मायके बहुत पेमसँ बतेलक। माय मना कऽ देलथन तऽ आरती बजलीह: "अहा नह तैयार हएब तऽ भाईजी कछु कऽ सकैत छथ। घर त्यावा सकैत छथ।"

कभमयके माय आब तैयार भऽ गेलीह। अतबे नह ओ अपन पतके सेहो मना लेलक। कभमयक पता एक लेल माक गेलाह जे कभमयसँ एक पैघ भाय सतरह बरखक भेलाक बाद मर गेल छलथन। कोनो माता पताक लेल अहसँ पैघ दुभाग्य की भऽ सकैत छलक?

कभमयके माता-पता जखन अपन बेिी जमायसँ एह बारे मे गप्प कएलाह तऽ ओ दूनू अवाक िायुि। कतबो माय, छोिकी बहन बहनोई आ पता मनेलथन, ओ दूनू नहए तैयार भेलाह। आब की हो? कोना कऽ मलन विधना दूनूक करतै रे की?

कभमयके जखन कोनो उपाय नहॉ भेिलक तऽ झिदक मूसक दबाई आक लेलाह। ओकरा घोर पी गेलाह। सौभाग्यसँ छोि बहनोई देख लेलथन। घरमे कोहराम मच गेलक। तुरत म्िर लग लऽ गेलक। बहुत उपायसँ कभमयक पाण बचाओल गेल। जखन कभमय ठीक भऽ गेलाह तऽ जेठ बहन आ बहनोई हुनका लग अबैत नोरायल मुँहे

कहि देलथिन: "अहाँक पेम जीतल। हमर जिद हारि गेल।"
हेमाके सेहो अभयके देखबा लेल गामसँ शहर बजाएल गेल छल। हेमाक आँखि कनैत-कनैत लाल भऽ गेल रहनि। अभय केर माता पिताक चचमनहि हो तऽ नीक। मुदा आब सब कल्याणक पथ पर आबि गेल छलाह।

अहि तरहे अभय आ हेमाक विवाह सामान्य तरहे बिना कोनो दहेजक भेलनि। दूनू एक सँग जीनि जीबाक हेतु तैयार भेलाह। विवाहक किछुए दिनक बाद अभयके नौकरी लागि गेलनि। घर पर कोनो कमी छलनि नहि — माता-पिता दूनू पोफेसर।

अभय अपन जीनि जिब रहल छलाह। सब तरहे सम्पन्न। अभय केर एक कमी छलनि। हुनक अंग्रेजी बहुत अधलाह। हिन्दी यदपि बहुत नीक बजैत छलाह। लिखयो नीक लैत छलाह। मुदा एक कुट्ठा पोसि लेने छलाह। कुट्ठा इ जे जँ हिन्दीमे लिखता तऽ लोक इलीट, जानी, ममनमनहि बुझतनि। एहि कुट्ठाक कोन उतर? एक बात आरो, अभय अंग्रेजी सिखबाक यत कहियो नहि केलनि। ओना विनि लोक बुझय ताहि लेल बहुत साकाक रहैत छलाह। नाना तरहक संगि रचैत रहैत छलाह। बहुत तरहक पोथी जे कला, इतिहास, हेरिजि, साहित्य, पुरातत, मीमाशा, नाकि, आदि पर होइत छलैक तकर जोगार करैत छलाह आ अपन घर आ ऑफिसक रैकमे सजेने रहैत छलाह। लोक बुझ जे अभय विनि छथि। ओहिमेसँ अधिकाश पोथीक पाचो पना ओ कहियो नहि पढलाह। पोथीक जोगार अभय तीन तरहे करैत छलाह; पहिल, किताबक दोकान अथवा पुस्तक मेलासँ कीनकऽ, दोसर, मित अथवा ककरो लग गेलाह तऽ पढबाक लाथे मांगि कऽ, जे कहियो घुरा नहि करैत छलाह, आ तेसर, चोराकऽ। अभय पोथी चोरीके कोनो पाप अथवा दुष्कर्म नहि बुझैत

छलाह। हुनका कयोक कक्ह देने छलक जे ददल्ली यूकाविसमी, पिना यूकाविसमी आ कोलकाता यूकाविसमी केर पोफेसर सब सेहो पोथी कखनो झोरामे, कखनो छतामे तऽ कखनो कोनो आन चीजमे चुपे चाप राक्ख पुस्तकालय अथिा सामिमाकक स्थानसँ लऽ जाइत छलाह। फेर की कभय एकरा अपन मौक्लक अक्धकार माक लेलक। पोथी चोरी कतौ चोरी भेलैक अक्छ! ककन्हुँ नक्ह। कभय अक्ह तीन युवतसँ कापुल पोथीक सिमी भेल जा रहल छलाह। कभय लग कयोक पक्हल बेर अबैत छल तऽ ओकरा लगैत छलैक जे कतेक महान पढाकू आ विािन लग आक गेल अक्छ!

कभयके कपडा पक्हरक कोनो जान नक्ह छलक। छलाह लेककन कला सॉस्थानमे ताई रॉ-विरॉाक विकित पकरधान पक्हरैत रहैत छलाह। कक्हयो हदसँ अक्धक पैघ कुरता आ पायजामा, तऽ कखनो ककछु।

आर जे हो लॉािोकि बड जोरगर छलाह कभय। जखन कला इक्तहाससँ एम ए करैत छलाह तऽ एक बेर गोिा, मुॅबई, एलोरा, एलीफैिा आक्द स्थान पर समस्त विदाक्थक िाली सँग गेल छलाह। क्हनक विरय एहेन छल जाक्हमे तथाकक्थत ममनस् इलीि आ नि धनाढयक बेिी, पती आक्द समय ककयान करबा लेल नामाकन लऽ लैत छलीह। हुनका सबलेल शारीकरक अथिा यौन सुख बस ओक्हना समय कािि एक युवत मात छलक। अगर विािहसँ पूमि कोनो लडकी अथिा विाक्हत नाक्यका कोनो पर पुरख सँग यौन सुखक पाक्त कऽ लेलक तऽ एक्हके पाप पुन्यसँ जोकक देखब क्हनका सबलेल पाप छलक। इ क्वाक सुख छैक। भेल, क्वाक सुखक आनॅद भेिल। दूनू पेमक रससँ रसफ्लावित भेलक। बात खत्म।

एकरा वखचनाई अथवा एकर इक्तहासमे घुसनाई क्यथम एहेन धुरंधर विचारक मक्हला आ नाक्यका क्तभम्म सँग एम ए क्शाक्त लैत छलीह।

ओक्ह मक्हला मण्मलमेसँ एक मक्हला सौम्या जे साक्वर, सुद्दक्त छलीह। अक्त म मनम छलीह। क्वक्कत्सक माता-क्वताक बेिी छलीह। कोनो तरहक फेम अथवा न्धिनसँ मु त छलीह। सौम्याक उरोज भरल सुराहीसँ एकौ रती कम नक्ह छलक्त। गाल भरल-भरल, केश ओतेक पैघ नक्ह क्कन्तु झमिगर, खूब कारी, कमर बहुत पातर, क्तम्ब सुमौल, अतेक कलात्मक जे बुढो पोफेसर सब एक बेर ओक्ह पर आँक्ख अिश्य गडा दैत छलक्त। लोक सौम्याके देक्खते सपनाक अलौक्कक सँसारमे भेर भऽ जाइत छल। नाना तरहक सोच उफान मारए लगैत छलैक। मुदा तुरते अपन अिस्था, पद, पक्तष्ठाक भान होइते ओ िापिस अपन विजिक सँसारमे आक्ब जाइत छलाह। सौम्याक सबसँ पैघ बात हुनकर साक्वर रॉा आ स्क्तसँ अपना आपके सजेबाक कला छल। सौम्याके देखलासँ साक्वर नारी कतेक सुन्दक्र, कामुक, उतेजक भऽ सकैत अक्छ; कोना दुग्ध धक्ल नाक्यकाके अपन सौन्दयम्र स्क्त विन्यास, कनखी-मकिी, आ चामक पाक्त सँ पछाक्र सकैत अक्छ, तकर क्जक्ति पमाण भेिित छल।

खैर क्तभम्म अपन गुपक लोक सबहक खूब ध्यान रखैत छलाह। हुनकर एक्ह गुणक गाहक सब छल। एक राक्त लडका-लडकी सब बोन फायर केलक। सालक अक्न्तम क्दन आ नि िरिक पथम क्दन सबके एक सॉा मनेबाक असिर भेिलैक। की सब नक्ह एलैक। मास-मक्दरा-नृत्य-गीत-मस्ती-भयमु त िातािरिण। ने घरक लोकक धाख ने यूक्नक्सम्िी केर पोफेसरक क्वत्ता सक्निन्त सतिन्त। एक

माक्लनी मात जे ओना तऽ बहुत सुन्दर छलीह मुदा बहुत सौम्य आ शालीन बनबाक अभिनय करैत छलीह। पेमक बात तऽ सुनैत छलीह मुदा ल् जा भाकि अभिनयमे हुनक उतर नहि। एकबेर भरत मोगा नामक स्मािम् सुंदर आ भिशिाली युकि हुनक सौन्दर्यसँ आकर्षित भेल हुनका हुदस ममतताक हाथ बढबैत कहि देलथिन: "हेलो! यू आर सो एँरिव्ाि एॅम ब्यूटीफुल गर्ल!"

माक्लनी मोने-मोने पसन भेलीह मुदा भेलक्त एकाएक कोना हा कहि देथिन। झादिक्त उतर देलथिन: "हमरा एहि तरहक मजाक नहि पसन अछि। हम कक्त दोसरे तरहक लोक छी।"

तााति धक्र भरत एक पेग ढाक्र नेने छलाह। केजुअल भेल बजलाह: "कम ऑन माक्लनी! जमाना कतऽसँ कतऽ चल्ल गेल आ अहा एखनो पॅरहिी शदीक भारतक मानसिकतामे जीब रहल्ल छी। हमरालोकक्त कला जगत केर लोक छी। अतए उन्मु तता छैक। लोकक विचार आ व्यहिार ग्लोबल छैक। क्लाइिन वरलेशनशिप आम बात छैक। आ अहा एहेन बात कहैत छी!" इ कहैत भरत बहुत पेमसँ अपन हाथ माक्लनीक कान्ह पर राखि देलाह। माक्लनी झादिक्त हुनक हाथ हबिैत बजलीह: "माइॅम योर बिजनस भरत! हम सडकछाप लडकी नहि छी। जे केलहुँ से केलहुँ। भविष्यिमे एहि घिनाक पुनरावृत्ति नहि हो से ध्यान राखब।"

भरत बुझ्झ गेलाह जे माक्लनी दोसरे होपलेस सफि छथि। इ मिथ्याक अहॅंकारमे जीबी रहल्ल छथि। मोगा कोनो दोसर लडकी जे मस्त भेल नृत्य करैत छलीह लग चल गेलाह।

सौम्या िइि जीन्स आ शमिपक्हरने छलीह। उतेजक-आकरष्क-मादक! ओक्हराक्त काभय्य बहुत उत्साक्हत छलाह। मुदा ओक्ह गुपमे दू मनुखझर छल: स्तीगनमे माक्लनी आ पुरखमे काभय्य। काभय्य आ माक्लनी दूनूमे कयोक मक्दरापान नक्ह करैत छलक्त। माक्लनी चाकर मेग आगा छलीह
मास भक्ण सेहो नक्ह करैत छलीह। िचारा काभय्य शीतल पेय केर दस बोतलक जोगार केने छलाह। जखन लोक हाथमे मक्दराक वालास लेने जाम हेरा रहल छल, काभय्य ओकरे सबहक तालमे ताल शीतल पेय केर वालाससँ कऽ रहल छलाह। हुनकोसँ अलग क्सॉाल पीस बनक्ल माक्लनी एक कोनमे दोसरे दुक्नयामे विचरण करैत शीतल पेयक चुसकी आधे मोने लऽ रहक्ल छलीह।
कायक्रम चलैत रहलैक। क्वना पीने लोक सबके वाबैत आ झुमैत-गबैत देख काभय्यके शीतल पेयसँ रमक नशा आबए लावा गेलक्त। काभय्य मस्त भेल गेलाह। जेना-जेना राक्त भेल जाइक तेना-तेना लोक सतिात-उच्चशृंखल भेल गेल। स्ती-पुरख, छोि-पैघक, स्थानीयता आक्दक दूरी खत्म भेल गेलैक।

सौम्या बहुत कम चीजक उपयोग अपन मूँह कानके सुन्दर बनेबाक लेल करैत छलीह। लेक्कन काजर, मस्करा, क्बंदी, साडी, सूि, शमि आक्दक रँगक अनुकूल अथिा कॅटासकि झुमका अशिय धारण करैत छलीह जे हुनका विशेर से् सी आ आकरष्क बनबैत छलक्त। क्हनक देखब आ ककरो क्हाराब बहुत मारक छल। ऊपरसँ मु तागी आ मस्त छलीह सौम्या ।

सौम्याके देख काभय्य सेहो मादक आ उतेक्जत भऽ गेलाह। सौम्या कक्त बेसी मूममे छलीह। दोसर पैगके बाद सौम्या जेना सॅतुलन

समाप्त करए लगलीह। देह कापय लगलक। ठोड लडखडा गेलक। माथ भारी भऽ गेलक। कखनो की बाजथ्र तऽ कखनो किछु आरो। उन्मु तता सेहो अपन रँग देखाबय लागल। सौम्याक मस्ती बढल गेलक। भाराक व्यथमअनुशासनसँ ऊपर उठए लगलीह। बहुत बात सब जे नारी होबाक कारण आ सामाक्जक मयादाके कारण अपना पेमि, आँखिमे, माथमे, करेजमे दबेने रहैत छलीह से जोर-जोरसँ भयमु त ितारिणमे बाजय लगलीह। सब यएह सोचैत रहल जे सौम्या अपन सम्हारमे नक्ह छथ्र, नशामे भेर छथ्र ताक्ह जे मोनमे अबैत छथ्र से सब बजने जा रहल छथ्र। ताक्ह राक्त सौम्या के सात खून मा छलक।

बीच-बीचमे सौम्या साकाक भऽ जाथ्र। होक्त, ई की कऽ रहल छथ्र! कक्तकबेकालमे फेरो मत। पेग लेक्कन नक्ह थमलक। जखन पाच भऽ गेलक तऽ रॉग विरॉगाक विभित्स गाक्र बजनाई शुर केलीह। आब हुनका लोक कक्ह देकलक्ह जे बोतल खाली भऽ गेल छैक। राक्त बहुत भऽ गेल छैक। आब मक्दराक सब दोकान बन्द भऽ गेल छैक। ई बात सुक्त तामसे भेर भेल सौम्या आयोजकके माए-बक्हन लगा गाक्र पढैत रहली। लोक सब मनक्ह मोन हँसैत रहल।

एक्ह बातसँ एक बात स्पष होइत अक्छ जे हम सब समाजक ठेकेदार बक्त रहल छी। नारी सतिंतता एखनो दूरसँ भले जे लगैत हो, यथाथमे अगाब सपना जका अक्छ।

सौम्या सन नारी जखन उन्मु त नक्ह तऽ ककरा कक्ह सतिंतताक अक्धकारी। नारी मोन क्षाक्त सँग अक्धकार मनैत अक्छ, स्थान मडैत

अछि, ओकरो बात पर लोक अमल करैकसे व्यवस्थिा मडैत अछि, पुरखक सँग आ समकक चलए चाहैत अछि। सब तरहे स्वच्छन्द रहए चाहैत अछि। जखना पुरख कतऽ जा रहल अछि, की कऽ रहल अछि, कखन खाइत अछि, कतए आ कखन सुतैत अछि से क्रयोक पुछनाहर नक्ष, तक्षना तऽ स्त्रीके सेहो अपन जीनिक सॉचालत करबाक सुविधा, स्वतिन्तता भेकि चाही ने! से नक्ष भेलैक तऽ केहेन स्वतिान्तता? ताक्ष तऽ मक्रदराक नशासँ मातक्ल सौम्या क्रचक्रया कऽ कहैत छक्षथ, "फक यू मेन! यू आर बुलक्षशा! मोि चीि मी। केलि पाई देनाइ, नीक स्कूलक क्षशाक्ष, सुविधासँ स्वतिान्तता नक्ष भेिति छैक। असली स्वतिान्तता अहाक क्रदमागमे नुकाएल रहैत अछि। अहा कायर छी। घिविया छी। अहा मरपोक छी। अगर एक पुरख कोनो स्त्री सॉग देह बावि सकैत अछि तऽ फेर स्त्री क्रयैक नक्ष? इ पाप पुण्य सब पुरखक ढकोसला अछि। कोनो मक्षहला क्रयैक नक्ष अपन मोनक आनॉद अपन मोनक पुरखक सॉग उठा सकैत अछि? चुक्षतया...” सौम्या अतक्षॉ नक्ष थमहली। बहुत बात बजैत रहलक्ष। बहुत बात क्लखब तऽ मयादा चकनाचूर भऽ जाएत।

सौम्या भोजन मोनसँ नक्षॉ केलीह। थोडेक कालमे क्षभय सौम्या केर हाथ पकक्षड हुनक घर क्षदस लऽ गेलाह। सौम्या घर पहुॉच गेलीह। क्षभय सौम्याके हाथसँ पकक्षड हुनक बेम पर सुतेबाक पयत करए लगलाह। एक्ष पक्रक्रयामे कतेक बेर क्षभयक हाथ सौम्याक उॉनत भरल पयोधक्षरसँ किराएल। जतेक बेर स्पशम होइक़ ततेक नीक लगैक। क्षभयके आब सेहो नशा लावा गेल छलैक। ई नशा मक्रदराक नशा नक्ष, सौम्याक सौन्दयक्षक नशा, सौम्याक से्सी शरीरक स्पशमक नशा छलक्ष। पुरखक मोन, क्षभय एक आध बेर नशामे धुत भेल

सौम्याके सम्हारबाक बहाने जकड़ कऽ धेलाह। लेकिन अपन नीक लोकक छवि कि रक्षा करक जोगारमे अभय किछु नहि कऽ पेलाह। आब कक्ष सौम्या साकाक भेलीह। अभय केर शरीरक ठोस बनावि हुनका नीक लगलन्हि। एक क्षण लेल भेलन्हि, अगर अहि पुरुखक सँग एखन अनुसार होइत अछि तऽ मोन आ तन, आत्मा आ देह दूनू तरबतर-तरबतर भऽ सकैत अछि। एकर बाँहिक जकडन हमरा बैकुण्ठक आनंद दऽ सकैत अछि! यैह सोचैत तुरत एहि केर मूममे आबि गेलीह सौम्या ।

सौम्या अभय केर झमगिर केश हाथमे बकुरैत बजली: "अभय! साले एक बात बताओ?"

अभय: "की?"

सौम्या : "अहा हमरा ताकड़ रहल रही ने? जानि बुईझ कऽ अपन हाथ हमर बा लग अनैत रही ने?"

अभय: "बकबास"।

सौम्या : "सार तोरा हम देह तोड़ देब। सबहक समक चुम्मा लऽ लेब। चुपचाप सत्य स्वीकार कर ।"

सौम्या बजैत रहली। अभय चुपचाप सुनैत रहला।

सौम्या : "कम ऑन अभय! अहा जुआन छी। हम जुआन छी। अगर अहाक मोन हमरा पर आबि गेल तऽ अहिमे की खरापी?"

अभय: "सौम्या माइंड योर लैंग्वेज! की अँट शँट बजेने जा रहल छी अहा? ई सब बात छोडू आ चुपचाप आब आँखि मुईन सुइत रहू।"

सौम्या : "एकर मतलब की भेल? अगर हमर अधखुला चिकि देखि अहाक मोन नहिं केलक एकर अथमई भेल जे अहा नामदमछी!"

"स्टॉप दिस ननसेस!", अभय चिकिया उठलाह। मुदा सौम्या लेल

धन सन। सौम्या कामेश्वरके ऑगाक कलर पकड़ अपना कात्स करचलक। आब कामेश्वर मूममे आवा गेल छलाह। ताबर तोर चुमाक पहार करए लगलाह। कखनो अपना कात्स खचॉच लेथ तऽ कखनो सौम्याक गदर्न पकड़ सौम्याक दूनू ठोरक मध्य अपन जीभ माल सौम्याक जीभक मधु स्पशमआ सिदसँ आनंदित होइत रहलक। सौम्या सेहो विरोधक बदले और सहयोगे करैत गेलथिन। सौम्याक दैहसँ मन्दरा, सेि, आ पकृताक कस्तजन्य सुगन्ध आबा रहल छलक। ओकर सुगंधिक सब कतरा कामेश्वरके मादक बनेने जा रहल छलक।

कामेश्वर आिगिक अवतारेकमे सौम्याक सब स्त्रि हिा देलथिन। सौम्या कक सॉकोच तऽ केलक कारण सॉकोच आ नारी एक दोसरक पूरक होइत अछ। मुदा सौम्याक मोनमे कामेश्वर सँग देह बािकि ततेक उग ़िला धधक रहल छलक जे ककाकबे कालमे अपना आपके कामेश्वर लग समपर्ण कऽ देलीह। जखन सौम्या कामिस्त भऽ गेलीह तऽ कामेश्वर केर स्त्रि अपने हाथे खोलय लगलीह। कामेश्वर केर उतेजना आ सौम्याक सँग देह बािबि केर अवमलारा सेहो उग भेल गेलक।

सौम्या कामेश्वरक अॉक्तम स्त्रि हिा रहल छलीह तऽ एकाएक कामेश्वर केर जेलिमैन बला चकरत जावा उठलक। कामेश्वर सौम्याके झकझोर देलाह। सौम्याके पते नकर चलत पेलक क कामेश्वर अचानक एहेन बेहिार कथलेल केलक। कामक ़रिसँ धू-धू जवड रहक्ल छलीह सौम्या । तामस तऽ अतेक भेलक जे कामेश्वर केर खून कऽ देतीह। इमहर कामेश्वर काना कछु कहने सौम्याक शरीर पर स्त्रि राख देलथिन।

कामेश्वरक मयादा, ल् जाभाि एकाएक जागत भऽ गेलक। कक देलथिन:

"नहि सौम्या, हमरासँ ई सॉभि नहि अछि। ई चकरत लॉघन हम नहि कऽ सकब। सि प इि। आई एम स री। हम अपन मयादा बिसर गेल रही।"

कामक अवासँ जडैत सौम्या एकबेर शेरनी जका कभय पर गरजैत बजली: "तखन कथलेल अतेक आगा बढलहुँ? अहा मदमनहाॅ छका छी। बहा...द एहिसँ पहिने जे हम तोरा गा----- पर लात मारि भगा दी तो अपने तुरत हमर घरसँ भाग ।"

कभय देह झारैत भावा गेलाह। राति भरि कोना समय सौम्या व्यतीत केलकि से हि बुईझ सकैत छलीह।

हि कभय अपन पती हेमा सँग बहुत रोमाविकि छलाह। कामकलाक अनेक आसनक पयोग करैत छलाह। कखनो पयोगक नाम पर स्थापित सीमाक अतिकमण सेहो करैत छलाह। कभयके दू बेि भेलि। दुनुक मध्य अॅतर मात सि बरखक। एक बेर राघबके पता लगलकि जे कभय केर कनया हेमा विमार चलि रहल छथिन। हुनकर मारमे ददमछकि। गम्भीर इलाज चलि रहल छकि। बादमे कभय केर दोसर मित जे राघबक मित सेहो छलथिन आ कभय सँग हुनके सोसाइिमे रहैत छलाह, राघबके बतेलखिन जे कभय केर पती हेमा हुनकर पतीसँ कहलथिन जे कभय पृष भागसँ सॉभोग करबाक वजिद ठानि देलथिन। ओहिक कममे नश चढि गेलकि। खैर! ई कभय केर काजी मामला छलकि।

कभय हमेशा कोनो नीक पढय बला केर सॉगामे रहबाक यत करैत छलाह। हुनकर एक मित कोनो जोशी नामक छलथिन । बहुत तेज, सुन्दर। मुदा सबकमी आ एक नॉबर केर फ म। चोरीक कलामे पिण। एकबेर जोशी महोदयके लकऽ कभय राघब केर होसिलमे आबि गेल छलाह। राघबके कतौ जेबाक रहकि। कभयके अपन घरक

चाभी राघब दऽ देलखिन। बादमे जखन राघब अएलाह तऽ पता चललिन जे जोशी जी राघबक अनेक चित्र, पोथी आदि चोराकऽ चलि गेल छलाह।

हेमा, अथात वाणीक केर पती बहुत सास्कृतिक आ शृंगारिक सभाविक छलीह। अधिक काल नुआ ब्लाऊज पहिरैत छलीह। दूब्धिया गोडाई। एक तऽ वाणीसँ नौ टा रिखक छोट ऊपरसँ बहुत छरहरि, दूभर पातर। कतेक समय तऽ वाणी आ हेमाक जोडी विपरीत अथात माता पुती सँग लगैत छल।

हेमा भोजन, सगीत, चित्रकला चित्रकला, योग, नृत्य सबमे पयोग करए चाहैत छलीह। ओ जीनिक सगीत देखय चाहैत छलीह। चित्रकला केर नीक जान छलनि हुनका। बद्रीक पालम केर जानमे पारंगत छलीह हेमा।

एक आध बेर हेमा नौकरी करबाक यत केलीह मुदा वाणी तकर अनुमति नहि देलखिन। हेमा ओना ई मनैत छलीह जे वाणी बहुत पढ़ल लोक छथि।

जाहियासँ राघब कला कला संस्थान जइन कएलाह वाणी लेल दिदान भऽ गेलनि। अपन सडी सबके पीएचमी उपाधिसँ वाणी बहुत उत्प्रेरित भेलाह आ पीएचमी लेल कोनो यूनिवर्सिटीसँ पजीयन लऽ लेलाह। समस्या ई छलनि जे कोना लिखताह? अपने कोनो विषयमे नहि लिखताह से बुझल छलनि। कतेक बेर राघबसँ पत्यक आ परोक रूपमे कहि देलखिन मुदा राघब टालैत रहलखिन।

सयोगसँ वाणीके माता पिता राघबसँ परिचित छलखिन। एकबेर कोनो पयोजनसँ राघब हुनका लग गेलाह। रातिमे ओतए रकलाह। रातिमे भोजनक बाद वाणीक पिता राघब लग दूनू हाथ जोडि ठाढ भऽ गेलखिन्ह। राघब घोर आपत्तिमे पडि गेलाह। तखन वाणीके पिता

कहलखिन: "राघब, अहा हमर पुततुल्य छी। हम आ कनिभयक माए अहामे अपन पुत देखैत छी। हम नौकरीसँ सेवानिवृति भऽ चुकल छी। हृदय रोगक रोगी छी। जीनिक की भरोसा? ई कनिभय नालायक अछि। एकरा बूते पीएचमी एहि जन्म के कहैत अछि, सात जन्ममे नहि हेतैक। अहा हमरा सबपर एक उपकार करु आ एकर पीएचमी लिखि दियौक। अहाक अहि योगदानके हम जीनि पर्यन्त नहि बिसरब। "

कनिभयक माय सेहो मौन भेल अपन आँखिसँ बहुत किछु कहि देने छलखिन। राघब उठि गेलाह। कनिभयक पिताक हाथ अपना हाथमे लैत बजलाह: "हमहुँ अहा सबमे अपन माता-पिताक छवि देखैत छी। ओना ई बहुत दुष्कर कायमअछि। कनिभय किछु तऽ करत नहि, सब काज हमरे करय पडत। लेकिन हम तीन मासमे पीएचमी थीसिस लिखि दैत छी।"

ई बात सुनि कनिभयक माता-पिताक नेत एक दोसरे आभासँ चमकि उठलनि। राघब एक भारसँ दबि गेल छलाह।

राघब कलाकेन्द्र आबि गेलाह। कनिभयके बजा सब सामगी अपना लग मँगा लेलाह। पीएचमी थीसिस लिखनाई राति-दिन शुरु केलनि।

अहि तरहे राघब तीन मासमे कनिभय लेल पीएचमी लिखि कनिभय केर माता-पिताक भावनात्मक ऋणसँ उऋण भेलाह।

कनिभय पुरा थीसिसमे पूणमविराम के कहैत अछि अधमविराम तक नहिँ लिखलनि। ऊपरसँ कनिभयके राघब कहलखिन जे अपन धन्यवादि जापन लिखि लेथि। कनिभय ओहू लेल तैयार नहिँ भेलाह। राघबक आगा अस्त्र राखि देलनि। लाचार अपन माथक केश नोचैत राघब कनिभय केर धन्यवादि जापन सेहो लिखलनि। ओहिमे राघब जानि बुईझ

कऽ अपन नाम नहि लिखलाह। विश्वास छलनि जे अभय या तऽ स्वयं लिख लेताह अन्यथा राघबके कहथिन जे अहा अपन नाम लिख लीय। मुदा अभय कृतघ्न प्राणी छलाह। राघबक योगदान हुनका लेल अतबे महत्वपूर्ण लगलनि जतेक योगदान एक हरबाहक कृषिकार्यक सम्पादन मे। बल्कि ओहू सँ कम। कारण हरबाहके काजक बदला ओकर बोइन भेटिते छैक।

लेकिन अभय अतबो जरूरी नहि बुझलनि जे राघबक प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करथि। ऊपरसँ अपन पत्नी मेधा, आ कहि तऽ मात्र लग अपन प्रशंसाक पुल बनबैत रहला अभय।

संयोगसँ किछुकबे दिनक बाद अभयक माता पिता अभयसँ भेंट करक हेतु दिल्ली एलथिन। राघबके जखन पता लगलनि तऽ राघब भेंट करऽ गेलाह। भेंट होइतहि अभयक पिता बाजि उठलनि: "कतेक आशीर्वाद दिय अहाके राघबजी! अगर अहा नहि लिखबा लेल तैयार भेल रहितौ तऽ सातो जन्ममे अभय बूते पीएचडी थीसिस लिखल नहि होयतैक।" राघब विनम्रतासँ सब बात सुनैत रहला।

फेर अभयके पिता बजलाह: "लेकिन अहाक नाम कतौ धन्यवादिमे नहि अछि राघबजी?"
राघब: "पता नहि, शायद अभय बिसरि गेल हेताह।"
अभयक पिता: "ई कोना भऽ सकैत अछि? हमरा बुझल अछि जे सम्पूर्ण थीसिसमे अभयक नाम सेहो राघबजी लिखने छथि। फेर अभय नाम किएक लेल नहि देलाह?"
अभय सकपकाईत बजलाह: "हम पूछने रही। राघब जी नहि लिखलाह।"

कामिनयक कािता कहलिथन: “अहा अपन अकमणयता अहूमे पदशीत केलहुँ। अहाक हम कािता छी हमरा अिह बातक घोर दुःख अिछ।” कािमय मुडी गोतने बात सुनैत रहला।

किछु मासक बाद कािमय केर पीएचमी पूणमभऽ गेलिन। अिभनमभेिव गेलिन। कािमय आब म कािमय भऽ गेल छलाह।

एकबेर हेमासँ कोनो बात पर गपप भेलिन तऽ राघबक पती किह देलिथन जे राघब कािमय केर पीएचमी थीिसस िलखने छलाह। हेमा कािमयसँ पुनलिन। कािमय चुप भऽ गेलाह। हेमा मुरझा गेलीह। पिहल बेर हेमाके कािमयक पती बनबा पर गलािन भऽ रहल छलिन। “अहा हमरा एखन असगर छोिड िदय! बस।” अतेक कहैत हेमा अपन हाथ कपार पर धऽ लेलिन। कािमय िारथिक गॉभीर बनल ओतएसँ दूर भऽ गेलाह।

दोसर िदन कािमय एकबेर पुनः राघबसँ पुिछ देलिथन: “राघब! अहा अपन पतीके बता देने छलयिन जे अहा हमर पीएचमी थेिसस िलखने रही?”

राघबके इ पश जेना तामस चढा देलकिह “अहा की बुझैत छी! ओ हमर पती छिथ हम हुनका निह सूिचत करबिन तऽ ककरा कहबै? अहा अतेक काल्मज छी जे हमर नामक कतौ उललेख तक निह केलहुँ। अपन पती हेमा लग अपन िदुशयक बखान करैत छी। आ हम ओतेक मदित केलाक बादो चोर जका रही! एहने बात छल तऽ अपनेसँ िलख िलतहुँ।” एकर बाद दूनू चुप भऽ गेलाह।

खैर, किछु िदनक बाद राघब नौकरीसँ तयागपत दऽ देलाह। कािमयसँ मुव्त भेिगेलिन। समय चलैत रहलैक। पाच मासक भीतर एकिदन कािमय दस बजे राितमे कनैत फोनसँ सूिचत केलिथन जे कािमयक कािताक िनधन एकाएक हृदयगित थिमह गेलासँ भऽ गेलिन। राघब

बहुत दुखी भेलाह। जतबे दुःख अपन बाबाताक मृत्यु पर भेल छलन्हि ओतबे ददमतखनो भेलन्हि। एक बातक संतोष जरूर भेलन्हि नीक भेल अभय केर पीएचमी भऽ गेलन्हि अन्यथा हुनक बाबाताक आत्मा भटकैत रहितन्हि जे हुनक पुत कुमार अभयसँ म अभय नहि भऽ सकलाह!

समयक चक चलैत रहलैक। किछु व्यक्तिगत विशितासँ राघब नौकरीसँ त्यागपत दऽ देलन्हि। अभय संस्थाके धेने रहलाह। सरकारी तंत्रमे जेना होइत छैक, होइत रहलैक। अभयक तरकी हुनक पीएचमीक कारण होइत रहलन्हि। कुरता-जीन्स पहिरने अभय अपन देहक आ स्तिक सम्मेरणसँ विनि भेल रहैत छथि। भीतरक अभयके के देखैत अछि? ककरा लग समय छैक?

नोट: इ कथा पुर्णतः काल्पनिक अछि। एकर सम्बन्ध कोनो जीवित अथवा मृत व्यक्ति या संस्थानसँ नहि छैक।

फकाकि संग याता करैत मिथिलानीक िनोदशाक: िनवशास्त्रीय म्मावेचना

लोकक ससार अनंत हिासागर जका अम्छ। लोक जखन मिमिथलाक लोक हो अथवा मिथिम्लक लोक हो तऽ एकर म्मास्तार कल्पना स बाहर भऽ जाइत छैक। मिमिथलाक लोकक जम्मि छम्थ मिथिलानी। हुनक जीवन आइओ लोक स छम्म, लोक सगे छम्म। आजुक भौम्मक आ वैम्शक साजि ि सेहो मिथिलानी लोक के धेने छम्थ: लोक मिथिलानी स बढैत अम्छ, मिथिलानी लोकक गम्म सग गम्मािन छम्थ। गम्म िदा म्मदशाहीन नम्मह अम्छ। गम्म एहेन अम्छ जे जम्मि स जुिल अम्छ। ओकरा उिब, घुिब, दौिब, बाहर-भीतर करब नीक लगैत छैक िदा ओ अन्ततः अपन जम्मि लग बेर-बेर आम्मा जाइत अम्छ। ठीक ओम्महना जेना पवासी म्मचरै एक वरषि 40,000 म्मकलोिटर अपन पाम्रम्मस्थम्मकी स दूर उिला, घुिला आ पवास केलाक बाद पुनः अपन भूम्मि अथात िलि पाम्रम्मस्थम्मकी ि आम्मा जाइत अम्छ। ओम्महना जेना सूरदास (1478 — 1573) केर जहाजक म्मचरै बेर-बेर उिलाक बाद जहाज पर अबैत रहैत अम्छ:

"जैसे उम्मि जहाज कौ पंछी पुम्म जहाज पै आबै"

मिमिथलाक अथवा आजुक वैम्शक युग ि मिथिलक लोकक पथा, परम्मपरा, खान-पान, म्माध-बेबहार, गीत-नाद, अनुष ान, पूजा-पाठ, वम्र-पाबम्म, म्मखस्सा-म्माहानी, फकाि, सब म्मकछु अम्मधकाशतया मिथिलानी बचा कऽ रखने छम्थ। ताहू सिय ि जम्महया हुनका पढबाक स्मतंतता पुरर जका नम्मह छलम्म अथवा नािित म्महला के छलम्म तम्महयो इ सब लोक परम्मपरा के अपन भावना — पेि, म्मारह, वेदना, कष , यातना, जान, उदेग, शोरण, दोहन, आम्मथक म्मापनता, पुररक उत्पात,

आम्द व्यक्त करबाक पम्बलक स्पेस केर रप ि व्यवहार करैत छलीह। ओ स्पेस एहेन स्पेस छल जाम्ह ि म्हनकालोकम्न के अपन कथ्य व्यक्त करबाक स्पछंदता छलम्न, बम्लक एखनो छम्न। पुरक कोनो दखलन्दाज़ी ओम्ह स्पेस पर नम्ह छलैक आ ने आइओ छैक। इ बात कम्न गंभीर म्लखा गेल आ ि निवाम्धकार स शुर होइत नारी स्पतंतता, नारीवाद आ स्त्री म्बरयक अध्ययन, म्बवेचन म्दस टघम्र गेल। बात अनेि बहुत पैघ स्परप लऽ सकैत अम्छ। ओना एम्ह बात पर ि थिन आ घ ि थिष केर जररत अपन म्थिल स ि जि ि अम्छ लेम्कन ताम्हलेल इ त्लेटफा ि षि ह रि ा उम्चत नम्ह लामा रहल अम्छ। तखन की हो? म्कछु नम्ह, बात के लोकक जागत ि नःम्स्थम्त ि राम्ख आगा बम्ढ़ जाइ। जखन अधषागम्त स पूणषजागम्त म्दस ध्यान जेतम्न तऽ अम्ह पर म्बचार शुर हएत। म्बचारक घ ि थिष असगरे नारी नम्ह करती, पुरर सेहो ओम्ह भाव, इम्तहास, म्पतृसतातकि स ि जिक सरचना आ ओम्ह सरचना ि कालक अनुरप पम्रवतष आम्द लेल उदार हेताह आ स्त्री-पुरख दूनू म ि म्ल जीवनक गा ि क दू पम्हया बम्न एकर सम्यक म्नदान म्दस अगसर हेताह।

बात पर अबैत छी जे कोना लोकक एक म्बधा फक ि कि ि ध्यि स ि म्थिलानी अपन सब तरहक ि नोभाव के अदौ स व्यक्त करैत आम्ब रहल छम्थ। फक ि के 'कहबी', 'लोकोम्क्त' सेहो कहल जाइत छैक। सबस पम्हने इहो जानब आवश्यक जे फक ि 'क अथषकी भेल? एकर कोनो सवषीन्य पम्रभारा सेहो भऽ सकैत अम्छ की? सवषीन्य पम्रभारा अम्छ तऽ ि म्थिली लोक ससारक फक ि ओम्ह वैम्शक पम्रभारा सग कतऽ धम्र चम्ल पेबा ि सकि अम्छ?

फक ि खाटी लोकक वस्तु म्थक लोकक उम्क्त अथात "लोकोम्क्त"। लोकक कहब अथात "कहबी"। लोक पुरान फक ि के

सहेजने रहैत अछि आ नवक मानिण करैत ओकरा ठोसगर आधार दैत रहैत अछि जाहि स आजुक गढ़ल फकिा भविष्य िसावर्भौमिक बनि सकय। संस्कृत ि"लोकोक्ति" अलंकारक एक भेद सेहो िनिल गेल अछि। अंगेजी ि फकिा अथवा लोकोक्ति के Proverb कहल जाइत छैक। ताहि जाने अंगजी Proverb केर पिरभारा किछु अहि तरहे करैत अछि:

"A proverb is a saying without an author."

एकर अथर्भेल फकिा एहेन उक्ति अछि जकर कोनो रचनाकार नहि होइत छिथ। िमिथली लोक ि व्याप्त फकिा के देखला स इ जात होइत अछि जे िमिथलक फकिा अपन स्वरप ि एहि स अधिक व्यापक अछि। हिरालोकिन अनेक एहनो फकिाक पयोग करैत छी जकर रचनाकारक नाि हिरा सबके जात रहैत अछि: गोनू झा, िवदापित (1352-1448), तुलसीदास (1511-1623), िीराबाई (1498-1557), कबीरदास (1398- ?) आिद। रािचिरतिानस स अनेक दोहा के िमिथला आ िमिथला स बाहर फकिा'क रप ि व्यवहार होइत अछि। जेना िक

"यहा न लागै राउर िाया"

अथवा

"लंका िनिसचर िनकर िनवासा
यहा कहा सज्जन केर बासा"

इ दूनू तुलसीदासक रािचिरतिानस स लेल गेल अछि।

अहि तरहे

"पुरखक नहि िवशासे"

"एकसर तारा िकयो नहि देख
िलखल कुिस अिगल लेख"

"भनम्हि म्वदि्यापम्ति सुनू हे सुनयना
सब बेटी सासुर जाम्थि"
िहाकम्वि म्वदि्यापम्तिक रम्चत पद स लेल गेल अम्छि।
म्किछु फकि्ा गाि म्वशेर आ स्थान म्वशेर ि पचम्लत होइत अम्छि। ओम्हि फकि्ाक म्नाि्ण ि गाकि कोनो म्वशेर घटना अथवा ओम्हि घटना सग व्यम्क्त म्वशेरक नाि जुिल रहैत अम्छि। उदाहरण लेल ि्धुबनी म्जलाक अरेि गाि ि 55 वरषपम्हिने नाथ बाबू नाकि एक आशु कम्व आ सभालोचन भेलाह। ओ अपन पत्युत्पनम्ति लेल म्वख्यात छलाह। ओ म्किछु-म्किछु एहेन पदक रचना केलम्न जे फकि्ा बम्न गेल। सब फकि्ा हुनक नाि स जानल जाइत अम्छि। नाथ बाबू के तीन बीघा खेत छलम्न। एकबेर ओ अपना खेत ि ि्ैथा घास उखाि्ैत छलाह। बाट चलैत गाकि लोक पुम्छि देलकम्हि:
गाकि लोक: "नाथ! की करैत छी?"
नाथ:
"नाथ बाबू छम्थि काल मारहस्त
तीन बीघा केर जोता
सबहक खेत ि धान उपजैत अम्छि
नाथक खेत ि ि्ैथा"
तम्हिया स इ फकि्ा पम्सद्ध भऽ गेल:
"सबहक खेत ि धान उपजैत अम्छि
नाथक खेत ि ि्ैथा"
अम्हि तरहे मम्थिलाक अम्धकाश गाि ि म्किछु ने म्किछु लोक भेल छम्थि जे फकि्ा म्नाि्ण केने छम्थि आ ओ फकि्ा गाि ि पचम्लतं अम्छि। ओम्हि फकि्ा सग ओकर म्नाि्ता सेहो गाकि लोकक कंठ ि रचल बसल छम्थि। उदाहरण हिरा लग अनंत अम्छि ि्ुदा म्वरय स

विचारयातर नहि होई तामे आगा बढब जररी।

वृहद् हिंदी कोश मे लोकोक्ति केर परिभारा कम विस्तार स भेटैत अछि:

"विभिन्न पकार के अनुभवो, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियो एवं कथाओं, पाकृतिक नियमो और लोक विशासो आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सक्षिप्त, लोकपचलित ऐसी उक्तियो को लोकोक्ति कहते है, जिनका पयोग किसी बात कि पुष्टि, विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।"

एहि स एक बात स्पष्ट सकेत इ भेटैत अछि जे हिरा लोकनि अपन मिथिला मे उपलब्ध फकडा के देखैत एक स्थानीय अथवा काजक परिभारा बना ली। इ परिभारा हि अपन जान, निवशास्त्र, लोकविदा (फोकलोर) मे पवेशिका आ मिथिला स पाप्त फकडाक सचयन आ ओकर सरचना के आधार पर गढ़बाक यत कऽ रहल छी:

"मैथिली फकडा जकरा लोकोक्ति सेहो कहल जा सकैत अछि, लोकक दारा पचलित एहेन कथन अछि जे पौराणिक कथा, गन्थ, धर्मशास्त्रक दृषटान्त, घटना विशेर स विकसित शिक्षा, हास, परिहास, मनोभाव, दुःख-ददर्, पेम, अपनत्व, लिंग भेद, जातीय अथवा साम्प्रदायिक स्वभाव आ गुण, छोभ, वैराग्य, उदासी भाव, पकृति स तारतम्य, जमि स जुडाव, पूर्वज स स्नेह, जानक सचरण, आदि भाव व्यक्त कएल जाइत अछि।"

फकडा के स्वरुप के अगर गंभीर बनि देखी तऽ स्पष्ट हएत जे फकडा'क उदरण देनिहार बला लोक ओहि सग व्यक्ति अथवा परिस्थिति के ओहिना सीब लैत अछि जेना कोनो महिला सुई मे ताग घुसा ओहि स कोनो वस्तु अथवा कलाक निर्माण करैत अछि। तीनू

सुई, ताग आ वस्त्र आपस िएना गुथा जाइत अछि जे तीनूक अलग-अलग अस्तित्व ताकब दुष्कर। तीनूक सिग अस्तित्व स कला बनैत छैक। सएह भेल फकडि। फकडि के एकाएक उडिल िनोदशाक सम्प्रेरण सेहो कहल जा सकैत अछि जाहि िसम्प्रेरण के अधिक पििणाक आ पभावोत्पादक बनेबा लेल उद्धरणक दिल लेल जाइत छैक।

कम्मा फकडि केर स्वरप आ ओकर अनेक रप पर विचार सेहो करक चाही। मिथिला ि व्याप्त फकडि के स्वरप आ उपलब्धता देखैत कहल जा सकैत अछि जे फकडि के चािर भाग ि विभक्त कएल जा सकैत अछि:

(क) वैश्विक फकडि

(ख) अखिल भारतीय स्वरपक फकडि

(ग) मिथिलाक फकडि

(घ) स्थानीय फकडि

आब कम्मा उपवर्गक फकडिक स्वरप पर विचार करैत छी।

(क) वैश्विक फकडि

वैश्विक फकडि, जेना कि नाि स स्पष्ट अछि, एहेन फकडि भेल जे सिस्त विश्व ि पचलित अछि। अहि तरहक फकडिक पयोग मैथिली ि िूल फकडि के अनुवाद कए होइत अछि। उदाहरण हेतु:

Rome was not built in a day। -"रोकि निाण एक दिन ि नहि भेल"

Child is the father of a man। - बच्चा पैघ लोकक पिता होइत अछि

Necessity is the mother of invention। - "आवश्यकता आविष्कारक जननी होइत अछि" ।

वैश्विक फकडा अपन वैश्विक स्वभावक कारणे आ सास्कृतिक आदान-पदानक कारणे मिथिली आ आन भारा आ सस्कृति मे सदैव पयुक्त होइत रहल अछि। लोकक स्थानान्तरण देश मे भणि, दोसर देश आ सस्कृतिक मध्य आदान-पदान, साहित्य आ भाराक अध्ययन आदि एकर फैलाव आ व्यवहारक कारण बनैत छैक।

(ख) अखिल भारतीय स्वरूपक फकडा

अहि तरहक फकडा सम्पूर्ण भारत आ ताहू मे हिंदी बहुल क्षेत्र मे पयुक्त होइत अछि। मिथिला मे सेहो ओकर मूल रूप मे एकर पयोग होइत अछि। कखनोकल भाराक अनुवाद सेहो कऽ देल जाइत छैक। किछु उदाहरण देखैत छी आ ओकर विवेचना करैत छी:

ना राधा को नौ मन घी होगा ना राधा नाचेगी — नहि राधा के नौ मन घी हेतनि ने राधा नचती।

ऊंट के मुँह मे जीरा — "ऊंटक मुँह मे जीरक फोरन"

ऊपर के उदाहरण मे मूल हिंदी फकडा के मिथिली मे अनुदित कए कहल गेल अछि।

आब दोसर देखू:

"लेना देना कुछ नही मुहब्बत एक चीज़ है।"

"का वरा जब नदी सुखाने/ समय चुक पुनि क्या पछताने"

"कबीरा खरा बाजार मे लिए लुकाठी हाथ/ जो घर ज़ारे आपना चले हमारे साथ"

"ढ़ाई आखर पेम का पढ़े सो पण्डित होय"

"बडे मिया तो बडे मिया/ छोटे मिया सुभानअल्लाह"

"मिया की जुती मिया का सर"

उपरोक्त सब फकडा अपन भारा आ ओकर सस्कार सग मिथिला मे अबैत अछि। मिथिली भारी एकर पयोग अपन भारा आ व्यवहार मे

एकर ि्ल र प ि ममाना कोनो जोि-तोर केने, ममाना कोनो अनुवाद के करैत छमथ आ एकर भाव सेहो ममाना कोनो झंझट के समष होइत जाइत छैक। अमखल भारतीय फकि ि कोनो भारा जेना िगही, भोजपुरी, नेपाली, बंगाली, अवधी, उदूषआमदक फकि आमब सकैत अमछ। अमखल भारतीय कहक अथषमहंदी िित नमह लागक चाही।

(ग) ममिथलाक फकि

ममिथलाक फकि कहब के तात्पयषभेल जे कोनो फकि जे सिस्त ममिथला केत्र ि बाजल जाइत अमछ (ओ देवघर, सथाल परगना, दुिका, भागलपुर, िगेर स लऽ कऽ नेपालक िमथली भारी केत्र धमर पसरल लोकक फकि), व्यवहमरत होइत अमछ से फकि। इ फकि सब किविेश एक सारपक अमछ। अमह ियदमप एक बातक सम्भावना भऽ सकैत अमछ जे मकछु फकि जे अमखल ममिथलाक साभावक अथवा पकृमत के अमछ तकर सचयन सब िमथली भारी केत्र स लोक परम्परा स मलमखत परम्परा ि नमह भेल हो। अगर से नमह भेल अमछ तऽ िमथली सामहत्य आ ससकृमत के शोधकि एवं सामहत्यजीवी लोकमन एमह बात के गंभीरता स लेमथ आ सिस्त ममिथला केत्र स लोक परम्परा ि व्यात्त फकि सबहक सचयन कए ओकर सरचना आ व्यवहार पर शोध करमथ।

(घ) स्थानीय फकि

स्थानीय फकि ओ फकि भेल जे कोनो ममाशेर गाि अथवा ओकर अगल-बगल ि कोनो घटना ममाशेर, अथवा कोनो व्यमक्त ममाशेर दारा रचल गेल हो आ ओमह परोपटा ि लोक व्यवहार ि पचमलत हो। स्थानीय फकि के सम्बन्ध ि एक बात कहब अमनवायषजे कालक याता सग नहु-नहु िहत्वपूणषफकि मकछु सियिक बाद अमखल

मिथिला आ बाद ि अखिल भारतीय आ कखनो काल अंतर्राि डेग फानैत वैश्विक फकि सेहो बनि जाइत अछि। स्थानीय फकि केर उदाहरण शुर ि देल गेल अछि तािह एकरा फेरो स देि दरकार नहि अछि।

अहि तरहे दू बात एक सािहत्य पाठक लेल स्पष्ट भऽ गेल:

· पहिल, फकि की अछि, एकर पसरभारा विशेररप स ैथिली भारा आ सस्कृतिक सन्दभि की होबक चाही।

· दोसर, ैथिली सस्कृति ि पचलित फकि के कतेक शेणी ि बाटी देखल जा सकैत अछि।

आब अहि पारम्भिक जानकारीक बाद अहि लेख के आति अथात फकि दारा िनवी या ैथिलानी के िनोदशाक सम्पेरण कोना होइत अछि। कोना ओ सब अपन िनक भाव, उतार-चढ़ाव, नीक-अधलाह, पेि, वेदना, विरह, सािजिक स्थिति, उिग, दुःख, आर्थिक विपनता, आदि के व्यक्त करैत छथि। व्यक्त करब एक बात भेल आ ओहि अभिव्यक्ति के बुझब आ ओकरा सग आति सात करब दोसर बात। इ दूनू बात अगर ैथिली फकि आ नारी िनोदशा के देखब तऽ भेटत। भाव अधिकाश अवस्था ि एकक अथवा व्यक्ति विशेरक नहि अपितु सिस्त नारी सािज लेल, तऽ कखनोकाल एक वगि विशेरक नारी सािज लेल होइत अछि। सािजक सरचना जे आइ तीवर गति स बदलि रहल अछि तािह ि सािजिक-सास्कृतिक-इतिहासिक आ जेडर िडस्कोसि के ध्यान ि रखैत अहि विरय पर गहन शोधक दरकार अछि। हि अपन सीिित जान आ साधन के िहसाब स अहि पर किछु लिखबाक यत कऽ रहल छी।

लिखबा स पहिने इ स्पष्ट कऽ देनाइ आवश्यक जे सािज बदलि रहल अछि। पिरवतिन अपन गति पकिि रहल अछि। पिरवतिन सग

िमथिल िनमशकता सेहो बदमल रहल अछ। लोक बेटा बेटीक मबभेद कि कऽ रहल छमथ। सब केत ि आन सािज जका मिमथलाक मधया सेहो पगमताक पथ पर साधल डेग दऽ रहमल छमथ। हालमह ि मिमथलाक एक बेटी भारतीय वायु सेना ि पायलट के र प ि चयमनत भेलीह अछ। हुनकर चयन पर समसत िमथल सािज अपना आपके गवामनवत अनुभव कऽ रहल अछ। ओमह मधया के चार मदस स शुभकािना भेमट रहल छमन। इ घटना बदलैत िनःमसथमतक पमरचायक अछ। एकर अथषइहो नमह जे सब मकछु ठीक भऽ गेल अछ। मबश सिुदायक बाते छोिी दी, भारतवरषि सेहो हि सब बहुत सिुदाय, सािज, वगषआ राजय स नारी सचेतना, मबकास ि एखनो बहुत पछुआएल छी।

सािजक सरचना देखला स एहेन सन लगैत अछ जे सािज ित बेटा लेल बनल अछ। ककरो अनेक बेटा भेलैक तऽ ओ भागवंत आ एकर मबपरीत मकनको अनेक बेटी भेलमन तऽ बडड अधलाह। अमह मसथमत ि सािज ओमह बेटी सभक तुलना मपलुआ स करैत कहैत अछ जे फला मसतागन अथवा पुरख के “खद-खद बेटी” छमन। सिरणीय तथय इ अछ जे खद-खद शबद मपलुआ लेल कएल जाइत अछ।

बातक अंत अतए नमह होइत अछ। समर ि गीत जे बेटीक मबआह स पमहने गाएल जाइत अछ ि ि ाियि अपन वयथा बतबैत कहैत छमथ, ‘बहुत भऽ गेल कोनो ढंगक बर नमह भेट रहल अछ। बेटीक जनि पहाि भऽ गेल! की करी मक नमह?’ बेटी ाियक दुःख स रमबत होइत अपन नारी होबाक अवसथा स पिताप करैत गीत आ फकि के िदे कहैत छमथ ‘ािय, अनेि हिरा जनि कमथलेल देलहु? अमह स बमढया तऽ इ रहैत जे हिरा अथात बेटीक जनि स पमहने चालीस

पचास िरीच बुमक कS खा मलतहु जकर झास स बेटी गभषह ि तुमब जाइत आ मजनगी भमर लेल मधयाक सताप स ि्मकत अहाके भेट जाइत!

"कमथ लए आहे अमि मधयाक जनि देल
खैतहु िमरच पचास
िमरचक झास स मधया दूमर जैतय
छुमट जाइत मधयाक सताप"

सािज एमह िनिमशकता ि जीबैत अमछ जे बेटी घर ि अमधक भेलाक अथषभेल धनक कय आ लर्कीक पस्थान। एक फकिा ि अमह बातक समष पिाण भेटैत अमछ:

"मवाप टहलुआ िरि धन
या बेटीके बाढ़ी
ताहू स धन नमह घटए
कर पैघ स राम्ड"

इ फकिा पिाणक सग डंकाक चोट पर कहैत अमछ जे बामहणक बालक के नौकर टहल मटकोरा करक हेतु राखब स, छागर-बकरी पोसला स आ बेटीक सख्या बढ़ला स धनक कमत होइत अमछ; तकर बादो अगर सम्पमत बामच गेल तS अपना स पैघ हैमसयत केर लोक स लिाई ठामन मलय, सम्पमत बरबाद भS जेबे टा करत।

फकािक मववेचना स लगैत अमछ जे बेटी के लोक मसनेह करैत अमछ, ि्दा बेटी कोमख ि अबैक तकर कािना नमह करैत अमछ। भले बेटीक सुरका मधबही घैल जका कएल गेल होइक ि्दा ओकर तयार आ दुलार बेटा जका केल जाइत छैक। अथषभेल, बेटा अमधक िहतयपूणष। अनयथा, बेटी के बेटी जका दुलार मकएक नमह?

"घीबक घैला जका पोसलहु गे बेटी
बेटा जका कएल दुलार"

मिथिला ि कोनो महिला लेल बेटाक कामिना अतेक पबल होइत छैक, तकर उतर देब कमछन। एक मचरै बहुत कारमणाक सवर उतपन करैत रहैत अछ। ओमह मचरै के सम्बन्ध ि पचमलत िन्यता इ छैक जे कोनो जनि ि ओ मचरै एक िनिवी छमल। ओकरा अनेक बेटा होइत गेलैक आ सब िरल गेलैक जखन मक जतेक बेटी भेलैक सब मजल गेलैक। जखन ओ महिला िरमल तऽ बहुत मदन धमर ओकर आति बेटा लेल भटकैत रहलैक बाद ि ओकर सवरप बदमल गेलैक आ ओ मचरै बमन जनि लेलक। एखनो ओकरा पूवषजनिक बात सब सिरण छैक तामह ओ कारमणाक सवर ि अपन व्यथा कथा कहैत रहैत अछ:

"टी टी टी मासी तेल
बेटा भेल मिर मिर गेल
बेटी भेल जीब जीब गेल"

अगर वैजामनक दृमष कोण स उपलब्ध फकि सबहक मववेचन कएल जाय तऽ पता चलैत अछ जे फकि तत्कालीन सािजक दपषा अछ; सािजक ऐमतहामसक दस्तावेज अछ। अमह बातक पुमष मामम्लमखत फकि स होइत अछ:

"जनक नगर स चलली हे सीता
अमि देलमन रोदना पसार
के िरा सीता लए बमसया जोगेतै
के ि्खि करत दुलार"

इ फकि जेना भक स लोकक आमख खोलैत हो! इ कहैत अछ

जे ताज़ा, ततबात भोजन खेबाक अधिकारी बेटा अछि, आबि, बासया भोजन बेटीक भाग िलखल रहैत अछि। बेटी जखन िबआह के बाद सासुर जा रहल अछि तऽ िपय कनैत सोचैत छिथ, 'आब सासुर िहरि बेटी लेल इ बासयो अन्न के जोगा' क राखत आ के एकर गाल पकिड़ दुलार करतैक?' इ फकिा बहुत पैघ याता लेल चलल पित अछि। लिकी िपयक िचंता एिह फकिा िदे देखू। ओ कहैत छिथ जे आब हुनका बेटी लेल इ बासयो भोजन ओकर सासुर िके रखतैक? के ओकरा स पेि स बजतैक? यएह सब सोिच-सोिच िपयक छाती बेर-बेर फािट रहल छिन। इ फकिा बतबैत अछि जे कोना लिकी सासुर जाइते देरी उतरदाियतक भार स दबा जाइत अछि। इ फकिा देखन िछोटन लगे/ घाव करे गंभीर जका अछि। एक आर फकिा ऊपर विणित फकिाक अथषसपसट करैत अछि आ बेटीक िबआह भेलाक बाद सासुर गेला पर की िसथित होइत छैक तकर खाका खीचैत छैक:

"जब डािर चलल ससुर घर देस

घरक चालिन होयबो हे"

अथषइ भेल जे आइ धिर जे िधया नैहर िसुकुिमर छलीह से आब दोसर देस दोसर लोक िजा रहल छिथ, ओतय िहनकर की गित हएत! काज करैत-करैत आ लोकक बात सुनैत-सुनैत अपमािनत रहतीह। िन चालिन जका अनेक खंड िबखिडत भऽ जेतिन। ितलब, इ फकिा भिवषयक यातना िदस इशारा करैत अछि।

िमिथलाक नारी एक िवािचत िनोदशा आ पिरवेश िजीबैत छलीह। िकछुके जीवन िपिरवतषन आिब रहल छिन अिधकाश एखनो िपता, जयेष भाता, शेष एवं अिभभावक पर आिशत छिथ अथवा हुनक िनणषय के बलधकेल सवीकार करबा लेल िववश छिथ। आिथषक बात

इ छैक जे लड़की के कहेन लड़का चाही आ ओकरा मिनमि की बात घुमि रहल छैक तकर वर्णन सेहो गीतगाइन सब अपन गीत आ फकड़ाक माध्यमि स बजैत छथि:

"जखन चलला बाबा वर ताकय
आगा भए रुक्मिणी ठाढ़ि हे
कर जोड़ि मिनती करै छी यौ बाबा
सुनू बाबा मिनती हमरि यौ
जुनि बाबा ताकब चोर चंडाल के
जुनि आनब तपसी भिखारि यौ"

नायिका अपना लेल अपन शेष स एक साथिन्य बर जे हिसनेहक अर्थ जनैत होथि के आकांक्षा रखैत छथि। हुनका चोर, चंडाल, लुच्चा-लफंगा अथवा कोनो नंग धरंग साधू सन्यासी नहि चाहियनि। इ फकड़ा एक महिलाक दासताक जीबैत साक्षी अछि।

फकड़ा पढ़ैत चलू आ समाजक गढ़नि देखैत चलू। फकड़ा एक-एक तह खोलैत चलत। स्पष्टतः इ भऽ जाइत अछि जे कोनो महिला अबाला जनमि कि फेरो महिला नहि बनए चाहैत छथि। हुनकर दीनानाथ स निहोरा करैत कहैत छथि जे आब कहियो हुनका तिरिया अर्थात नारी रुप मि जनम नहि देथि:

"बेर-बेर अरजलौ हे दीनानाथ
दीनानाथ तिरिया जनम जुनि देहु"

पितृसत्तात्मक समाज अपन मायाजाल मि तेना ने स्त्रीगन के फंसा लेने अछि जे ओ सब छरपट- छरपट तऽ करैत रहैत छथि, मुदा ओहि मायाजाल के तोड़ि कहा पबैत छथि! समाज सुग्गा जका रटा देने छनि, रटि लेने छथि:

"बेटी ससुरे नीक की सरगे नीक"

फेर की सब मिथिलानी इ मिन लैत छथि जे कोनो मारि पमस्मथमत हो, पतामिना हो, शोरण हो, पमत सौमतान लऽ अबैथ, भोजन समिन भले ने भेटए, कोनो मस्थमत िस सासुर नमह छोी आ नैहर के तऽ चचे बेकार! बेटीक डाला नैहर स सासुर लेल उठैत अमछ आ सासुर स बेटीक लाशक डोली उठक चाही। फेरो एकरा सामिजक सरचना सगे जोमि देल जाइत अमछ। माआह होइते देरी नैहर िबेटीक अमधकार सामत्त आ भाउजक वचस्व पारम्भ। अगर माआहम्ल आ सासुर बसैत बेटी नैहर िमकछु दखल देलमन तऽ इ अमिन्य। फकिा एकरा एमह तरहे पिमणात करैत अमछ:

"घर आगन भौजी के

छल छल करम्थ ननदो"

अथषस्पष भेल आब जे बेटी माआह स पूवषमपताक घर पर अपन अमधकार बुझैत रहैत छलीह से हुनकर नमह अमपतु हुनक भाउजक भऽ चुकल छमन। ओ अमधकारहीन भऽ चुकम्ल छम्थ। कोनो पुरख ज अमह बातक अनुभव करए चाहैत छम्थ तऽ एकबेर इ कल्पना ित कऽ लेम्थ जे माआहक बाद एकाएक हुनका सम्पमत्त स बेदखली कऽ देल जाइत छमन, सामािजक व्यवहार िओ माषकामसत भऽ जाइत छम्थ। फेर कहेन अवस्था िरमह सकैत छम्थ। इ कल्पना ित हिरा सबके कषकारी लगैत अमछ आ तकरा एखनो धमर मिथलानी जीब रहम्ल छम्थ से कतेक दुखक बात! आ अमह बातक भान फकिा कोना खोम्लकऽ स्पष करैत कहैत अमछ।

एक अवस्था एहेन होइत छैक जखन एक मिहला अपना आपके असहाय पबैत अमछ आ लगैत छैक जे सब सस्था, सामािजक ियादा, माआह-दान, कुल-पम्लवार सब मकछु बेकार छैक! लोक अनेि ियाक बंधन िबन्हा जाइत अमछ! इ सोच कखन होइत छैक? तखन जखन

ओ पसवक वेदना स लहालोट भेल इिहर-ओम्हर ओंघमरया ि रैत रहैत अम्छ। तखन ओकरा लगैत छैक जे अम्ह स बम्ढ़या ओ म्बआह नम्ह केने रहैत आ म्पता-म्पताि हक घर ि जीवन भम्र कुि म्र बनल रहैत:

"कम्थलेल बाबा म्बयाहलम्न देलम्न ससुर घर रे
ललना रे रम्हतहु बारी कुि म्र दरद नम्ह जम्नतौ रे"

अने ि बाबा हि र म्बआह करा ससुर घर भेज देलम्न। नीक रहैत जे कुि म्र भेल नैहर ि रम्हतहु। कि स कि अम्ह पचण्ड ददषस बंम्च तऽ जैतहु!

मि म्थलाक सब म्स्त्गन अपना आपि सीता देखैत छम्थ। हुनका सबके लगैत छम्न जे सीता सगे राि क व्यवहार उम्चत नम्ह रहलम्न। अतेक कोि ल सीता के कोना कठोर भेल राि नाना तरहक यातना देलाह! एहेन राि सग म्बआहक की लाभ? म्जनगी भम्र सीता के सुख कहा भेटलम्न:

"राि म्बयाहने कोन फल भेल
सीता जनि अकारथ गेल"

आ अन्ततः सीता के राि धोबी के कहला पर तखन घर स भगा देलम्थन जखन सीता रघुकुलक कुल दीपक के जनि देबा लेल गभष स छलीह! एहनो कही कतौ भेलैक अम्छ:

"राि म्बयाहने कोन फल भेल
सीताक जनि म्बयोगे गेल"

बात अतए सि म्त्त नम्ह होइत अम्छ। कहल जाइत अम्छ जे जखन सीता वेदनाक अम्धकता स भम्र गेलीह आ राि हुनका बाि ल्मक आशि स लव कुशक सग अयोध्या चलबा लेल म्जद ठाम्न देलम्थन तऽ सीता पुम्छ देलम्थन: "हि र अयोध्या ि आब म्क पयोजन, हि रा

तऽ अहा म्नाकाम्ल देने छी?''

एम्ह बात पर राि उतर दैत छम्थन: ''अहाक म्बना हिर अशिध यज सभव नम्ह अम्छ।''

सीता: ''फेर एखन धम्र अहा कोना करैत रही अशिध यज?''

रािः ''अहाक कोनो उदेस हििरा लग नम्ह छल। हि िम्न लेने रही जे अहाक म्नाधन भऽ चुकल अम्छ। एहेन अवस्था ि शास्त्र इ म्बधान दैत अम्छ जे यजािन सोनाक पती बना यज पर बैस सकैत अम्छ। हि सएह कएल। सोनाक सीता बना अशिध यजक वेदी पर बैसल रही।''

रािक इ बात सुम्नतम्ह सीताक करेज फाम्ट गेलम्न। आखी नोरा गेलम्न। भेलम्न, 'राि सन पम्त अतेक ितलबी भऽ सकैत छम्थ!' भावावेश ि अबैत सीता बाम्ज उठलीह: ''एकर ितलब इ भेल जे अहा हििरा अपन यजक लोभे अयोध्या लऽ जेबा चाहैत छी?''

राि चुप रहला।

सीता फेरो बजलीह: ''एकर अथषतखन इ भेल जे अहाक यज ि हििही वाधक छी?''

राि एखनो चुपे छलाह।

आब सीता म्नणषा दैत बजलीह: ''ठीक छैक, हि अहाक सिस्याक तुरत सिाधान करैत छी।''

राि कम्न गंभीर तऽ भेलाह ुिदा िान भेल रहलाह।

सीता धरती िाता म्दस हाथ जोम्ि बैस गेलीह आ म्नवेदन केलम्न: ''हे धरती िा! अम्हंक कोम्ख स हिर जनि भेल अम्छ। हि आब अम्धक वेदना नम्ह बरदाश्त कऽ सकैत छी। अहा आब हिर उपाय तत्कण कर । फाटू! एखन फाटू! अतए फाटू! हििरा अपन कोरा ि सुता म्लय। आब हि अम्ह लोक स उम्ब गेल छी!''

वनदेवी सीताक गोहार धरती िता तुरत स्वीकार केलन्मि। धरती ि तुरत दरार पम्र गेलैक। जाबेत रा सीता के रोकैथ तावेत सीता धरती ि पवेश कऽ गेलीह। धरतीक पुती धरती ि म्बलीन भऽ गेलीह। धरती पुनः यथावत भऽ गेलीह। एखनो जखन कोनो म्थिलानी कष स भम्र जाइत छम्थ तऽ एकाएक हुनका ुहि स म्नकम्ल पि त छम्न: "फाटू हे धरती" । से कम्हते ओ सीताक म्म्नएचर भऽ जाइत छम्थ।

फकि पकृम्त स उदम्रत सेहो होइत अम्छ। कखनोकाल जखन म्स्तगन अपन सतान आ पम्त स तंग भऽ जाइत छम्थ तऽ अपन तुलना काकोर स करैत छम्थ। तम्हना जेना अनेक बच्चा सबके जनि दैत काल काकोर अपन जान गि दैत अम्छ तम्हना म्थिलानी सब बाल-बच्चा, पम्त आ पम्रवार लेल अपन शरीर आ इच्छा के गला लैत छम्थ। दुखक भार बढ़ला पर बाम्ज उठैत छम्थ:

"क़कोरबा म्बयान क़कोरबै खाय"

म्हला निक िनोदशा नहु-नहु अनेक तरहे फकि िदे पवाम्हत होइत रहैत अम्छ। दुख ि, सुख ि, आनंदाम्तरेक ि, वेदनाक सघनता ि म्थिलानी स्वतःस्फूतष होइत अपन पम्रम्स्थम्त के कोनो ने कोनो फकि स जोमि लैत छम्थ। तथाकम्थत म्नम जाम्त अथवा सिुदायक लोक स ओना तऽ तथाकम्थत उच्च वगषक लोक सािम्जक िि मिलापक दूरी रखैत छम्थ अथवा सीमि त अवस्था ि करैत छम्थ लेम्कन जखन पहसन अथवा िजाक पदम्शषन करबाक होइत छम्न तऽ ओम्ह सािजक स्त्री स साम्नायक आकाक्ष रखैत छम्थ आ ियादाक अम्तिि करबा ि सेहो सकोच नम्ह करैत छम्थ। म्हला सेहो बुईझ लैत छम्थ जे पुरखक इच्छा आ आकाक्ष की छम्न। जखन पुरख ियादा के त्याग करैत छम्थ तऽ हुनका इहो भान नम्ह रहैत

छम्नि जे ओ म्हिला म्हनका गाि अथवा सािजक पचम्लत िनदण्ड पर भाउज, भावहु, पुतोहु अथवा की हेतम्नि! अम्ह कग ओ म्स्तगण हुनका भाऊज सन लगैत छम्नि जकर बहुत िुहतोि जवाब फकाि दैत अम्छ:
'रारक बहु सबहक भौजी"

अम्ह दशा के देखैत म्बदापम्तक एक पद श्िरण अबैत अम्छ जाम्ह ि अस्पृश्य सुनम्र युवतीक पम्त म्बदेस गेल छैक, सासु बम्हर तऽ छैके, ओकर आम्ख ि रतौधी सेहो भेल छैक। ओना तऽ साििजक उच्च जाम्तक उच्च लोक, पुरख ओकर देह स सटब पाप बुझैत छम्थ लेम्कन राम्त ि वएह पुरख ओम्ह कािमनी सग अपन कािम्पपासा शान्त करबा लेल उताहुल छम्थ, ओम्ह कग लेल ओ म्हिला हुनक सजाम्त भऽ जाइत छम्नि:
"अम्धयन कर अपराधहु साम्त
पुरख हिते सब हिर सजाम्त"

िहाकम्ब म्बदापम्त आगा बढ़ैत कहैत छम्थ:
"भनम्ह म्बदपम्त एम्ह रस गाब
उम्कतहु अबला भाव जगाब"

म्बदापम्त तऽ अतेक आगा बढ़ैत ई तक बाम्ज लैत छम्थ जे लोक अनेि हुनका रम्सक कम्ब कहैत छम्नि, पेिक-शृंगार, िमलन-अम्भसार आ रम्तिमिया के कम्ब कहैत छम्नि; असली रस तऽ ओ शोम्षत आ अथहीन युवतीक दुखक बयान करब छम्नि। ओ अबलाक भाव के पदम्शत करए बला कम्ब छम्थ:

"भनम्हि म्वदापम्त एम्हि रस गाब
उम्कतहु अबला भाव जगाब"

कखनोकाल म्स्थम्त एहेन भऽ जाइत अम्छ जे ददषआ भावनातकि शोरण आ दोहन स जखन म्थिलानी भम्र जाइत छम्थ, म्हमति जखन जवाब देयि लगैत छम्त, ाथि जखन म्नाय लगैत छम्त, तखन ओ अपन भ ासि म्नकलैत बजैत छम्थ:
"नहु नहु ुती तऽ सन-सन उठय"

उपरोक्त फकाि पदम्शत करैत अम्छ जे जखन चार म्दस स ानिि नाना तरहक दन्द चलैत रहैत छम्त, शोरणक अम्धकता एकठाि ढ़ेर भेल जाइत छम्त, एक म्नमति अवम्धक बाद ओ अपन भ ासि म्नकाम्ल लैत छम्थ। ओ कतऽ करतीह। लोकपटल पर लोक धारणाक हेतु। सएह करैत छम्थ।
एक अवस्था एहेन होइत अम्छ जखन म्कयोक अपन बैभव के बारे ि अनेि बखान करैत छम्थ, ताम्ह कण म्कछु घोर सत्यवादी म्हला के अनेि फुइसक बाई अथवा पदबाई अनसोहात लगैत छम्त। बात जखन बहुत आगा बम्ढ़ जाइत छैक तऽ बाम्ज उठैत छम्थ:
"गारी कहलक पटोर पम्हरने रही
आम्ख कहलक सडे रही"

उपरोक्त फकाि यथाथषआ फेकब ि अंतर स्पष करैत अम्छ। नारी ानिम्शकताक यथाथषआ कम्ल्पत ानिम्शकता केर दन्द स्पष करैत अम्छ। एक स दोसरक पम्रस्पधाक म्ववेचन करैत अम्छ, साजिक ानिम्शकता देखबैत अम्छ।

कोनो म्हिला (अथवा म्वशेर अवस्था ि पुरर) जखन क्यथक शोर आ अनघोल करैत छम्थ, अपन कृत्य (अथवा कुकृत्य) के झपबाक यत ि नीक अथवा भर म्हिला के दोख तकैत छम्थ तऽ उम्चतवक्ता स्वभावक म्थिलानी हुनका पर तंज कसैत बाम्ज उठैत छम्थ:
"बट हगनी ने लजाय
उपराग देयि जाय"

गुनिती म्थिलानी नारीक म्हत्व नीक जका बुझैत छम्थ। हुनका जात छम्न जे ियक भूमिका ित िय म्नभा सकैत छम्थ। म्पता अथात पुरर तऽ ितलबी होइत अम्छ, भिरा होइत अम्छ। पुरख के सतम्न सग पती सेहो चाही। म्हिला के सतम्न आगा म्कछु नम्ह। कोनो तरहक बात भेला पर पुरख लेल म्नमम्लम्खत फकि पढ़ल जाइत अम्छ:
"िय ि्इने बाप म्पम्तया"
अथषभेल ियक रिैत ितर म्पताक व्यवहार सतानक पम्त बदम्ल जाइत छम्न। म्पता दोसर पती केर जोगार ि लामा जाइत छम्थ। म्पता कतबो करणाशील होम्थ ियक स्थान लेब असभव छम्न। एक फकि देखु तऽ अथषस्पष भऽ जायत:

"जे ियक दूध स नम्ह हएत
से बापक आंि चटने कतऽ हएत"

ई फकि जखन कखनो सुनैत छी तऽ म्हंदी म्सनेिक एक गीत स्वतः शिरण आम्ब जाइत अम्छ:

"बाप का जगह ि ले सकती है
ि की जगह बाप ले नही सकता
लोरी दे नही सकता
सो जा सो जा"

बेटी सािन्यतया ियक गुण आ बेटा म्पताक गुण आ स्वभाव म्कछु ने म्कछु स्वतः गहण करैत अम्छ। एकर पिण मामम्लम्खत फकिा स भेटैत अम्छ:

"ियि गुण धी म्पता गुण घोर
नम्ह म्कछुओ तऽ थोिबो थोि"

दोसर फकिा ियि आ बेटीक बात करैत कहैत अम्छ जे ियक गुण बेटी सहजे गहण करैत अम्छ:

"भनम्ह म्वदापम्त बासक टोटी
जकर जेहन ियि तकर तेहेन बेटी"

आब पुरखक बारी अबैत अम्छ आ फकिा कहैत अम्छ जे जम्हना ियक गुण बेटी करैत छम्थ तम्हना बापक गुण बेटा गहण करैत छम्थ:

"भनम्ह म्वदापम्त बासक टोटा
जकर जेहन बाप तकर तेहेन बेटा"

म्हलाके जतेक अम्धकार अपन पम्त पर रहैत छम्न ततेक पुत अथवा पुती पर नम्ह। पम्तक सम्पम्त आ टाका पर हुनका पूणषअम्धकार, सवषा स्वतंतता रहैत छम्न, ने रोक ने टोक। लेम्कन बेटाक सम्पम्त

आ राम्श पर ायिक अम्धकार एकाएक जेना सीमित भऽ जाइत छम्न। अम्ह बातक पुम्ष्ट मामम्लम्खत फकिा स होइत अम्छ:
"सइया राज अर राज
बेटा राज िहतककी"

म्पातृसतातिक साजिक सरचना लोकक ािन ि ई धारणा स्थाम्पत कऽ देने अम्छ जे बेटी आ बेटीक लोक -पम्न आ पुत - आन होइत अम्छ, अपन नम्ह। यएह बात फकिा सेहो स्थाम्पत करैत अम्छ। मामम्लम्खत फकिा देखला स ई बात नीक जका फ़म्रछा जाइत अम्छ:
"धी, जँया भमाना
ई तीनू ने अपना"

िम्थलानी सेहो सहज ािन स एकरा स्पीकार कऽ लैत छम्थ। वैधवयक जीवन बहुत दुःखद होइत रहल अम्छ। िहादेब बर, भंमाया माखारी पवृम्त क वर सदैव िम्थलानी के म्बशेर र प स बाह ण बाम्लका के भेटैत रहलम्थन्ह अम्छ। बेिल म्बआह एखनो कतौ-कतौ दृम्ष्ट गोचर होइत अम्छ। हालम्ह ि हि एक म्बवाह ि गेल रही। लिकी बहुत सुन्दम्र, देहगम्र, कटगर, देखनूत रहैक। लिका कम्न दब। ऊपर स एक हाथ ि कम्न सास्या। राम्त भम्र कतेक बेर म्स्त्गण सब चाम्र पंम्क्त केर गीत गबैत रहली आ पिताप करैत रहलम्न। गीतक दू पंम्क्त हिरा जीवन भम्र लेल सिरण भऽ गेल जे फकिा जका व्यवहम्रत होइत रहैक:
"लोहा ि जमि गेल सोना
हि म्जबै कोना"

जातक्य इ जे अतए लोहा बर आ सोना कम्नाया छैक।

पसग म्बाधवाक छल। चलू अम्ह म्दशा ि चचषकरैत छी। वैधक्यक म्स्थम्त बहुत खराप होइत छल। अगर इ घटना बाह ण अथवा कणष कायस्थ अथवा आन उच्च वगषि होइत छल तऽ म्स्थम्त भयावह भऽ जाइत छल। बारह, तेरह, पन्रह वरषक लिकी म्बाधवा कतेक ठाि भऽ जाइत छम्ल। म्बाधवा होइतम्ह पुनम्बषाहक तऽ कल्पनो नम्ह कएल जा सकैत छल, उपर स ओम्ह लिकीक सब सुख-म्संगार, नीक भोजन आम्द छीना जाइत छलैक। कतेक ठाि तऽ म्बाधवा के अंगेजी दबाई तक गहण करबाक आज़ादी नम्ह छलैक। ओकरा सुगम्धत तेल, साबुन, आम्दक व्यवहार करब पर पम्तबंध लामा जाइत छैक। ओ केश म्बन्यास नम्ह कऽ सकैत अम्छ, नव व्याहल बर कम्नायाक चुिन करब तऽ दूर, ओकरा लग ठाढ़ तक नम्ह भऽ सकैत अम्छ। जेम्हना पथि साझ ि असगर तारा देखब अशुभक लक्ण अम्छ तम्हना तऽ म्बाधवा सेहो आब असगर तारा बम्न गेल छम्थ! सिस्त हाहाकार िचल अम्छ। यएह म्स्थम्त के देखैत म्बदापम्त म्लखैत छम्थ:

"असगर तारा केओ नम्ह देख
अिगल लेख"

म्बाधबा पर पम्तबंधक झिी लामा जाइत छम्न। त्याज-लहसुन, िछ-िसि के पुछैत अम्छ गम्रष भोजन तक करबाक आज़ादी नम्ह रहैत छम्न। हुनक जीवनक ऋतुचि जेना एक रंगाह भऽ जाइत छम्न जाम्ह ि सब ठाि दुखक डंका बजैत रहैत छैक! म्मामम्लम्खत फकिा के देखला स म्स्थम्त स्पष भऽ जाइत छैक:

"म्बाधवा घर ि सभ म्दन भादब

मारधन घर ि कामाक
राजा घर ि सभमदन अगहन
फागुन घर अमहबामाक”

अम्ह तरहक म्बपम्नाक सानिा करैत म्बधवाक करेज करामह उठैत छैक। कुहेस फाम्ट कानए लगैत अम्छ। आ भगवान स कहैत छम्म कोन पापक कष ओ भोमा रहल अम्छ? ओ अपन वेदना ककरा कहतैक:

“हे भगवान कोन कसूर म्बधना भेल बाि
कहब दु:ख ककरा स”

एकर म्बपरीत पुरख लेल कोनो पम्नबंध नम्ह। पतीक माधन भेलाक बाद ओ सब मकछु खा सकैत अम्छ। फेरो म्बआह कऽ सकैत अम्छ। पती िरिलैक तऽ की भेलैक! फेर दोसर म्बआह भऽ जेतैक। दोसरो पती िमर गेलैक तऽ मचंताक कोनो पयोजन नम्ह, फेरो म्बआह भऽ जेतैक! पतीक मस्थम्न अखरा नोनक ढेप सन होइत छैक खम्स पिल तऽ उठा म्लय:

“नोनक ढेप खसल
उठा लेब”

अम्त वृम्ष आ अनावृम्ष स ममिथला अदौ स परेशान रहैत आम्ब रहल अम्छ। लोक भूखे रहैत छल। मस्तगणक दशा तऽ आरो दयनीय छलम्न। ओ बाहर जा नम्ह सकैत छलीह। भीख कोना िगती? कखनो कुअन, कखनो साग पात, कतेक साझ उपास करैत जीवन चलबैत छलीह। अम्ह तरहक मस्थम्नक म्बभत्सता दशा रहल अम्छ मामम्लम्खत फकिा:

“म्बपम्त जाम्न के आनल बजाय

अमरपन के चाउर गेली मचबाय”

मसथमताक गंभीरता देखू। घर ि मसतगन नाना तरहक कष सहैत रहैत छमथ। अतेक खाराप मसथमत भऽ जाइत छमन जे अमरपन लेल जे चाउर राखल छमन सेहो मचबा जाइत छमथ।

कोनो िमहला के अगर मकयोक अनेि िजाक अथवा तंग करैत छमन आ हुनका लग काजक, ूलिर प स गृहकायक तऽ ओ बामज उठैत छमथ:

“घरबला स फुरसत ने
देओर िगिए चुमि”

बाल मबवाह एक सयि ि बहुत पैघ ससिया बमन गेलैक। बेिल मबवाह जेना पसमर रहल छलैक। तकर मबवरण कोना फकिि दैत अमछ से देखू:

“मामरया तेरह, िरद अठारह
कन्याक चकिए आमख, मबआह होअय तिाि
छौंिि बेर-बेर देखए अएना”

एक फकिि इ इंमात करैत अमछ जे कोना िमहला कुअन खा अपन पाणक रका करैत छमथ आ कोना बूढ़ स मबआह कए मबआहक पमतया छोिि लैत छमथ:

“गुडा-खुदी खेलौ उपास भंग भेल
बूढ़ मबआहलक कुिमर पद गेल”

बेिल मबवाहक पमरणामत नीक नमह होइत छैक। मसतगन जीवन पयमत ओमह वेदना आ सािमजक उपहासक पात भऽ जाइत छमथ। अनेि हुनका स पैघ उिमर के लोक- सती आ पुरख सब हुनका जेठ कमह अपिमात करैत छमन। एहने िनोदशाक मचतण मामलमखत फकिि ि देखाएल गेल अमछ:

"हि नम्ह बूम्ढ गे हि नम्ह बूम्ढ
बूढबा म्बाआहलक ते हि बूम्ढ"

अथषस्पष अम्छ, ओ म्हिला बूम्ढ नम्ह छम्थ, पमरम्स्थम्ता जाम्ह करणे हुनक म्बावाह बुढ़बा स भऽ गेल छम्मा ताम्हं ओ बूम्ढ छम्थ। उपरोक्त फकि नारी निोदशाक ओम्ह म्बाशेर अवस्थाक गूढ़ निोवैजाम्नक सम्पेरण छैक।

नारी निोदशाक अनेक परत होइत छैक। अपन कष क सम्पेरण एक म्हिला लोक ित ि लोक व्यवहार ित स कऽ सकैत छलीह। लोक व्यवहार हुनका लेल बलैकबोडषछलम्मा। ओ ित हुनक स्पेस छलम्मा। म्हिला लोक आ म्कछु पुरर बच्चा ित हुनक शोता। वेदनाक अम्धकता स जखन करेजक कुहेस फाटैत छम्मा तऽ स्तीक दग्धल छाती स शाप म्नाकलैत छम्मा:

"जे िरा खेलम्मा खीम्रया पुम्रया
म्नानको होइहनु नाश"

आर ओ की कऽ सकैत छलीह। हुनका लगैत छम्मा जे पुरखक एहने कुकृत्य, अहकार, म्नारंकुश व्यवहार स संसार ि अकाल, िहािरी आम्द भऽ रहल अम्छ। इ बात लोक स कखनोकाल म्थिली साम्हत्य ि सेहो अपन स्थान बना लैत अम्छ। बैदनाथ मिश "याती" आ काशीकात मिश "िधुप" क रचना ि लोक जेना चम्ढ़ कऽ बजैत हो! लोक भाव साम्हत्यक पबल पक बम्ना उठैत अम्छ। यातीक कलि नोर आ शोम्णतक धार बहबए लगैत अम्छ। नारी आ म्बाधवा निोदशा ि जेना ओ तह धम्र घुइस जाइत छम्थ। एक-दू-सौ-सैकिा के पुछैत अम्छ, हजारक हज़ार म्बाधवा हुनक िथ पर अपन व्यथा लेने सवार भऽ जाइत छम्मा। "म्बालाप" कम्बाता ि याती सत्यक अन्वेरण करैत कम्बाता म्लखैत छम्थ। यथाथषचार चम्ढ़ बाजय लगैत अम्छ। के नम्ह

कनैत अछि! पाठक, सजि आ कमला सब बहाबैत अछि नोरक धार:

"माधवा हरि सन हज़ारक हज़ार
बहौने जा रहल अछि नोरक धार
ओहि ई लुक डूबा बर जाय
ओहि लोक-वेद भसिया बर जाय
अगाही लगौ बर बज खसौ
एहेन जामत पर बर धसना धसौ
भूकम्प हौक बर फटो धरती
मिथिले रहये क' की करती!"

याती नहि रकैत छथि दोसर-तेसर-चारि विवाह करयबला बूढ़बा बर सब पर कलि उठा लैत छथि। अगाब सामाजिक कुरीत पर पहार करैत रहैत छथि। नारी शोरण के पाठक हेतु पढबाक सागी बनबैत छथि। हुनक दोसर कविता "बूढा वर" सेहो एकर पिण अछि। दा मस्तगन अपन बात ताबेत धमर लोक पटल ित पर करैत रहलाह।

जमिन्दारक शोरण स तंग भेल बुचनीक पमिनामिध बमि अपन अरि रचना "घसल अठनी" ि धिुप बुचनीक िह स कहा लैत छथि जे शोरण आ अन्याय के चलते जगत ि भऽ रहल अछि अकाल। इ लोकक अभिव्यक्ति नहि तऽ की भेल? घसल अठनी केर बुचनी डरल जरर रहैत छैक लेकिन अपन बात आ शाप दुनू व्यक्त करैत अछि:

आहा! देह तोमि क' कएल काज
सुपथो न बोमि अछि भेटी रहल
ते जगि ई पलि अकाल
उठबातमिं डेग लागए अन्हार

ि म्र जाएब एतइ
ककरा कहबै?
म्हत क्यो ने हरि
अनुम्चतो पैघ जनके शोभा
भगवान आह!"

िधुप नारी शोरण के देखैत छम्थ, अनुभव करैत छम्थ, अपन हृदय ि ओम्ह पमरम्स्थम्त के आतिसात करैत छम्थ, आ कलि हुनका म्स्तगणक स्पोकपसषा बना दैत छम्त। कम्बता बम्त पिित अम्छ। िम्थली लोक परम्परा ि फकिा अनंत अम्छ —म्बपुल म्माम्ध जका। कतबो ताम्क लेब तैओ बहुत रम्ह ये जाएत। लेम्कन लोक व्यवहार ि ताकब तऽ कोनो म्तारथषक नम्ह लागत। इ भेल फकिाक पयोजन आ उपयोमाता। जखन म्हिला कोनो वेदना स रम्बत होइत छम्थ आ हुनक बात म्कयोक नम्ह बुझैत छम्त तऽ अनायास बाम्ज उठैत छम्थ:
"गुिक िम्र धोकि बुझैत अम्छ"

इ फकिा कतेक साथषक छैक तकर अनुभूम्त या तऽ म्हिला कऽ सकैत छम्थ अन्यथा ओ जे नजदीक स ओम्ह वेदनाक पत्यक्दशी रहल अम्छ।

म्कछु एम्ह तरहक भाव म्मम्लम्खत फकिा ि कहल गेल छैक:
"सिाठक िाइर उखैरे बुझैत छै"

सिरिण इहो राखब जररी जे सब भाव अधलाहे नम्ह होइत छैक। िनोदशा पेिक सेहो होइत छैक। लोक जखन अम्धक उम्धयाइत अम्छ तऽ कहल जाइत छैक:
"म्टटही टेकल पहाि"

अथषभेल अपन औकात स अम्धक ने बाजी ने करी।

कतेकबेर पम्त पती अथवा म्कयोक आर अपन स्मयि के जीवन आ

पेि अथवा व्यवस्था ि अतेक लीन भऽ जाइत छथ्मि जे हुनका दोसरक जीवन अथवा सामािजक ियादा केर भान खतम भऽ जाइत छन्मि। एहन लोक लेल माम फकिा कतेक सटीक होइत छैक:

"हि सुनरी की माया सुनरी
गािक लोक बनरा बनरी"

उदाहरण अनेक अछि — बहुत अजात आ कतेको जात। सबहक सिविेश केनाइ पहािड़ सन लगैत अछि। एहि पर गंभीर काज करक दरकार छैक। इ मारय अनंत िहासागर जका अछि। अहि पर सािहत्यक अन्तरक्त सािजशास्त, िनोिवजान, नारीवाद िवजानं, िनवािधकार, िनवशास्त, राजनीितशास्त, इितहास आिदक शोधकिा के िवािभन उदेश्य आ पिरकल्पना संग काज करक चाही। इ एक अलग संसारक रचना कऽ सकैत अछि। हिर आलेख के अनंत िहासागर ि खसल िकछु बुंद िित िनल जा सकैत अछि जकर सिय पिला पर अपन उपयोग भऽ सकैत अछि।

सन्दिभि

मिश, कैलाश कुिार (2017). "िमथली लोकगीति नारी-दुदशाक िचतण", घर-बाहर, वरष17, अंक 61, जुलाइ-िसतम्बर: 11-17.

मिश, कैलाश कुिार (2018). "मिथिला िअथात लोक सस्कृित: एक पिरचय" तीरभुिक्त, वरष1, अंक 1, जुलाइ-िसतम्बर: 29-35।

मिश, पंचानन (2017). "िमथली लोकोिक्ति स्ती-जीवन", घर-बाहर, वरष17, अंक 61, जुलाइ-िसतम्बर: 18-20.

वाि, रािचन्द्र (2009). लोकभारती बृहत् पािमािणक िहन्दी कोश. िदल्ली: लोकभारती पकाशन.

याती, बैदनाथ मिश (--). "िवलाप", किवता कोश:

kavitakosh.org

याती, बैदनाथ मिश (--). ‘‘बूढ़ा वर’’, कम्बिता कोश: kavitakosh.org

िधुप, काशीकात मिश (---) ‘‘घसल अठनी’’ : गजेन्र ठाकुरक स कम्बिता भेटल

जगदीश प्रसाद मण्डल

पाँगु (उपन्यास)

साहित्य अकादेमी पुरस्कार (२०२१) सँ सम्मानित कृति

ई उपन्यास पहिल बेर विदेह ई-पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN २२२९-५४७X VIDEHA मे धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित भेल।

१.

मध्य मिथिलाक सीतापुर गाममे हरिचरणक जन्म भेल। जहिना आन-आनक जन्म गुलाम देशमे माने अँगरेजी शासित देशमे होइत आबि रहल छल तहिना हरिचरणक पूर्वजोक जन्म होइत आबि रहल छल आ हरिचरणोक जन्म भेल। ओना, गुलामो देश भौगोलिक दृष्टिमे एके रँग नइ होइए, ओइ बीच नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो माटि-पानिक गुण रहिते अछि, जइसँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो उत्पादित शक्ति रहने नीक-अधला दुनूक पैदाइस होइते अछि।

सीतापुर गाम ने राजस्थान सन अछि जैठाम झाड़ीनुमा गाछ-बिरीछ छोड़ि खाली छीपगरे-सरगर गाछ बिरीछ हएत आ ने साइबेरिया सन ठँढ़ मुल्क जका अछि जैठाम काई-लिचेन सदृश बौना गाछ-बिरीछ छोड़ि दोसर कोनो छीपगर-सरगर गाछे नइ हएत। सीतापुर ओहन मुल्क अछि जैठाम छोटि-सँ-छोटि आ पैघ-सँ-पैघो गाछ-बिरीछ सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। ऐठामक माटि-पानि मीठ-सँ-मीठगर फलो पैदा करैए आ सुकाठ-सँ-सुकाठ लकड़ियो दइते अछि। जे कि घरक साज-सज्जासँ लऽ कऽ गामक शोभा सेहो बढ़ौने अछि। तहिना भूमि सेहो ने दू रँगाक होइए। एकटा भेल सुभूमि आ दोसर

भेल कुभूमि। सुभूमिक माने भेल जीवित भूमि आ कुभूमिक माने भेल मर भूमि। जेकरा रेगिस्तान सेहो कहै छिऐ। दुनूक अपन-अपन गुण-धममसेहो अछिए। ओना, गुणो आ धमो अविभ् त िस्तु छी मुदा ओहो जगह पेब अपन र प बदैलते अछि।

जहिना मिथिलाक उतरबरिया सीमा पिित शृँखलासँ भरल अछि जैबीच हिमालय पिित सन पिितो अछि आ कैलाश सन भूमि सेहो अछिए, तैबीच मानसरोिर सन सरोिरो नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना दछिनी सीमाक नदीक समूहक बीच गंगा सन पवित नदी सेहो अछि। जैबीच सुलतानगंज, सिमरिया घाि सन अनेको पवित घाि- सेहो अछिए।

सीतापुर गामक सिमान सेहो मिथिलेक सीमाक बीच ने अपन सिमान िधारित केने अछि। जहिना गामक नाओं 'सीतापुर' अछि तहिना गामक भौगोलिक बुनाबि सेहो अछिए। जइमे सैकडो रंगक फूल-फलसँ लऽ कऽ सैकडो किसिमक अनो-अनक आ तरकारियोक उपजा-बारी होइते अछि।

ओना, मिथिलाचलमे अनेको धार सेहो बहैते अछि जेकर पानि पवित-सँ-पवित आ अपवित-सँ-अपवित सेहो अछिए। ओना, दुनूक पहुँच गंगामे होइते अछि, जइसँ दुनू एकबट होइत पवित बनि संगे-संग बहैत गंगासागरमे पहुँच समुरमे विलीन भइये जाइए।

हजार बीघा जमीनक ओंि-पेिबला गाम सीतापुरमे जहिना सभ रंगक भूमि अछि ऊँचगर-सँ-निचगर धरि, तहिना ओइ भूमिक उपज सेहो सभ रंगक अछिए। ओना, सालो भरि बहैबला धार, जेकरा चलन्त धार कहै छिऐ ओ सीतापुरमे एकोिा नहि अछि। तँए कि सीतापुर धार रहित गाम अछि सेहो नहिये कहल जा सकैए। सीतापुरमे दूिा धार अछिए। जइमे उत्तर रहने एकिा धार मात बरसाते भरि

बहैए, जेकरा चौमक्सया धार गौआसँ लऽ कऽ अनगौआँ तक कहै छैथ। गौआँ ऐ दुआरे कहै छथ्थन जे गाममे रहने अपना-अपना आँखिये देखबो करै छैथ आ ओइसँ जे हाक्त-लाभ अछ सेहो भोवाते आबा रहल छैथ। आ अनगौआँ ऐ दुआरे कहै छथ्थन जे आनो-आनो गाम देने होइत ओ धार बनलो अछए आ बहतो अछए। मुदा दोसर जे धार अछ ओ बरहमक्सया चलन्त धार तँ नहि छी, मुदा गहीरगर रहने अखाढ-सँ-अगहन तक बहैत अछ। तँए ओकरा छह-मसुआ धार सभ कहै छैथ। जहिना खेत-पथार अखाढमे अनसँ आच्छाद्त होइए आ अगहनमे उसरन भऽ जाइए तहिना ओ धार पहाडी पाक्सँ लऽ कऽ धरतीक पाक्क बीच अपन धार बना बहते अछ। फिसँ बनल पाक्त जहिना पवित होइए, माने ओइमे सुनरताक चमक रहै छै, तेकर विपरीत बखाक पाक्क बहाब होइए, जे मेघसँ बर्स पाथरक स्थानसँ लऽ कऽ माविकि स्थानके धोइ-पखाक बहैए, जइसँ ओकर रंग मिमैल रहैत अछ। मिमैल एक रप भेल आ गन्दगीसँ भरल गन्दपन दोसर रप भेल। मिमैल रहनौ बिना गंदपन रहने गन्दा दोसर रप भेल। खाएर जे भेल जेतए भेल से भेल तेतए भेल। मुदा सीतापुरक बीच जे धार अछ ओ मावि-पाथरक धोन पाक्क अछ, तँए ओकरा गन्दा नहिये कहल जा सकैए। गेन्दा फूल जका ओकरो आँखिमे चमक छइहे। जइमे बहाउ धारक अक्तार् त अनेको रंगक जलसोत सेहो अछए।

मिथलाचलक बीचक गाम ने सीतापुर छी तँए गामक अनेको विशेरता अखनो सीतापुरमे चक्लए रहल अछ। गामो तँ गाम होइते अछ। मुदा ओहूमे ने नकोर, सकोर आ कुकोरक गुण सेहो होइए। ओना, तीनू गुणसँ सम्पन गाम सभ सेहो अछ आ फुि-फुि गुणबला गाम सेहो अछए। तइमे आन-आनसँ भिन सीतापुर गाम अछ। जहिना

हजार बीघा रकबिला जमीन छै तहिना अठारह गण्डा पोखैर सेहो छै तहूमे जाइठबला। जहिना अठारह गण्डा जाकठबला पोखैर सीतापुरमे अछि, तहिना दूटा नमहर पकिझाउबला आ दजनो छोटि-छोटि पकिझाउबला पोखैर सेहो अछिए, मुदा ओ सभ जाइठ रहित अछि। ओना तहूमे दुनू नमहरका जे अछि ओकरा लोक दैतक खुनल पोखैर कहैए आ बाकी छोटि-छोटि जे रॉा-रॉाक अछि तेकरा सभके चभच्चा, कोचाकढसँ लऽ कऽ मोह-माबर कहैए। भाय! भूमि तँ भूमि छी कने, तहूमे सीतापुर गामक, जे कि कमलाक मध्य बसल गाम अछि। ऐठामक भूमिक तँ ई गुण ऐछे जे कुइया-इनारक रूपमे जहिना पतालसँ पानि अनैए तहिना खेत-पथारसँ लऽ कऽ अकास धरिक पानिके सेहो सॉंचित करिते अछि। साए-साए बीघाक दूटा चौरी सेहो अछि। जइमे छह-सात मास तक पानिक जमाि रहैए। जइसँ अन, फूल, फल उपैजतो अछि आ ओकर रक्षा सेहो होइत अछि। अन-फूल आ फल तँ धरतीक ऊपर होइए। ओहन धरतीपर, जइमे पानि आबि किछु दिन पहुनाइ करैत या तँ अकासमे उवड कऽ चलि जाइए िा रसे-रसे पताल दिस सिकि कऽ चलि जाइए िा ऊपरसँ घिैर-घिैर ओही नीचला खेतमे- माने चौरीमे चलि जाइए। ओना, अकाससँ धरतीपर उतैर एिह पानि उवड-उवड अकासो दिस बढैए आ पतालो दिस ससरैत समुरसँ सेहो गडाजोडी करिते अछि। खाएर जे अपना मन फुरै छै से अपन करैए, अनेरे सीतापुरबलाके एतेक हिसाब लइक कोन काज अछि। हमरा सभके ओतबे से ने मतलब अछि जे नीक-नीक माछ उपजए, नीक-नीक सौरखी, करहर आ बरी[1] उपजए, तैसॉ गाए-महीसके नहाइ-पीबैले आ खेत पटिबैले पानि भेटिए। बस भऽ गेल

---

[1] पुरनी गाछक कमल फूलक फल

जर रतक पुरती..! लोकके अनेरे कोन खगता छै जे धरतीए जका पाक्नयोक ऊपरमे ओछाइन ओछा कऽ सुतबो करत आ बैस-बैस कऽ ताशो भाजत। कोन खगता छै जे पचीसीक घर बना पचीक्सयो खेलत आक्क कोजगरा-क्दिालीक उत्सर्ि मनौत। तइले तँ धरती अक्छए।

सभ क्कछु रक्हतो सीतापुर गामके दुश्मनक मर नइ होइ छै, सेहो बात नक्हये अक्छ। कोसी-कमलाक बीचबला गामके तँ एते मर छइहे क्कने जे जँ कही कूक्द-फाक्न कऽ कोसीए आक्क कमले चक्ल औत आ गामक मावि के कावि अपन घर बना गामक बासके उपा ि देत, ई मर तँ बनले अक्छ। तक्हना मौसमोक मर तँ बनले अक्छ क्कने जे उग र प छोक्ड ओहन मक्रयले र प बना क्लअए जइसँ अकाले पक्ड जाए, जँ से भेल तखन तँ गाछ-क्बरीछक सॉग माछो-कौछ आ गाइयो-महीस ने क्पयासे परान क्तयागए लगत। मुदा तैयो हमरा सभके एतेक आत्मबल तँ अक्छए जे जानबलक सॉग कमबलसँ सेहो हम सभ अपन-अपन आत्मबलक रक्ा कक्रते छी। तँए, आन-आन गामक अपेक्ा हम सभ अपनाके सबल बुक्झ क्नभय छीहे। क्नभीक बक्न अपन गामक र प-रॉके सजौनक्ह छी। सजेनौ क्कए ने रहब? जइ पाक्नक गक्त सभक्दना अक्छ ओ जँ क्खक्सया कऽ र सबो करत तँ एक साल र सत, चाहे दू साल आक्क तीन साल र सत सएह ने, मुदा हमसभ तँ बारह सालक र सलके बौसैक लूक्र रखने छी। ओक्हना नक्ह ने गामक नाओॉ सीतापुर अक्छ..!

हजार बीघाक क्समानमे बान्हल सीतापुर गाममे जक्हना ऊपर-क्नच्चा खेत बनल अक्छ, जेकरा लोक उपराक्र भीठसँ लऽ कऽ मध्यम नीचरस आ चौरी कहैए, तक्हना अनेको रॉक मावि यो अक्छ जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला अक्छ। माने अक्धक उर्वि शव् तबला मावि सँ लऽ कऽ कमसँ कम उर्वि शव् तबला मावि सेहो अक्छए। पचीसोसँ

ऊपर रॉाक मावि गाममे अछि, जेना- खकरआए, मवियार, उसरसर, बलुआही, कचकैन, धुसरी, दोरस, तेरस, गाबीस इत्यादि...।

ओना, उपज मावियोक हिसाबसँ होइए आ जमीनक ऊपर-कावच्या आकारक हिसाबसँ सेहो होइते अछि। जइसँ धान, गहुम, मर आ, मकइ, खेसारी, मौसरी, राहैर, केराउ, बदाम, तीसी, सेरसो इत्यादि पचासो रॉाक जजाति उपजैत अछि। तैसॉा खैहन, दलिहन, तेलहनक अनेको रॉाक वजिसक उपज सेहो होइत अछि। तेतबे नहि, रॉा-रॉाक तीमन-तरकारी जेना- अल्लू, कोबी, बैगन, िमािर, िझमनी, रामिझमनी, सजमैन, कदीमा, घेरा इत्यादि सेहो उपैजते अछि। रॉा-कारॉाक मात अने-तरकारी नहि, पचासोसँ ऊपर रॉाक फलो आ फूलोक उपज सेहो होइत अछि। आम-जामुन, लताम-लीची, सरीफा, ऑिता, बेल, धाती इत्यादि िकनुमा गाछक सॉा झाडीनुमा गाछक फल सेहो उपैजते अछि, जेना- नेबो, दारीम इत्यादि। जहिना नमगर-छरगर फलक िक अछि तहिना बौना कसिमक फलक गाछ सेहो अछि जेना- सरीफा, अनरनेबा इत्यादि-इत्यादि। तेतबे नहि, अन-तीमन-तरकारीक सॉा अनेको कसिमक साग-पातक उपज सेहो होइत अछि, जेना- गेनहारी, ठढिया, पिआ, घौका, लफ इत्यादि। सॉा-सॉा लतीनुमा तरकारीक अलाबे जहिना गाछनुमा तरकारीक उपज होइए तहिना फूलोक अछि। चम्पा, वशािक्लॉा, करबीर, अडहुल इत्यादि जहिना िकनुमा गाछक फूल होइए, तहिना जूही, चमेली, बेली इत्यादि झाडीनुमा गाछक होइए आ तहिना लतीनुमाक सेहो अनेको फूल फुलाइते अछि...।

मोिा-मोिी यएह कहि सकै छी जे सीतापुरमे जहिना पचासो रॉाक अन, पचासो रॉाक फल, पचासो रॉाक तीमन-तरकारीक सॉा पचासो रॉाक फूलोक उपज होइत अछि।

अन, फल, फूल, साग-पात आ तीमने-तरकारी जका सैकडो किस्मक माछ सेहो पोखैर-चौरी आ मबरा-कोचाकेमे होइत अछि। जहिना रंग-रंगक अन तहिना रंग-रंगक माछो होइए। तहूमे सुअदगर-सँ-सुअदगर माछ, जेना- रोहु, भाकुर, गैची इत्यादि होइए तहिना मध्यम सदिक- बुआरी आ भुना माछ सेहो होइते अछि। जहिना तीमन-तरकारी आकि फल-फूल रंग-बिरंगक आकारक होइत अछि तहिना माछो अनेक रंगक आ अनेक आकारक होइत अछि। रोहु, बुआरी, भुना आ भाकुर नमहर आकारक माछ होइत अछि तहिना नैन, सौरा इत्यादि मध्यम आकारक माछ सेहो होइते अछि। आ छोटि आकारमे कोतरी, इचना, मारा, मेढबा, पोठी इत्यादि अनेक माछ अछि। तैसंग मावि-पािनक बीच बसैबला काकोर, मोका, घोघी इत्यादि सेहो होइते अछि।

गाए, महीस, बकरी, भेडा, घोडा, हाथी, गदहा इत्यादि अनेको रंगक जानिर सेहो होइत अछि। ओना, जानिरो-जानिरमे गुणो आ उपयोगोक दृष्टि सँ अन्तर सेहो होइए। मुदा पालतू जानिर तँ छीहे। अने-फल आ तरकारीए जका किछु जानिर खाइयोबला होइते अछि। तैसंग दुधारओ आ सविरियोबला नइ होइए सेहो नहिये कहल जा सकैए। जहिना एक दिस बकरीक दूधो होइए आ दोसर दिस ओकर मौसु सेहो खाएल जाइत अछि। ओना, आरो जानिर सबहक मौसु खाएल जाइए, मुदा किछु एहेन जे दुधारए रूपमे अछि, जेना- गाए-महीस इत्यादि। तहिना किछु एहनो अछि जे सविरयेक उपयोगमे अबैए, जेना- घोडा, हाथी...। ओना, घोडाके मनुखक सिरीक संग चीजो-िस उघैक काजमे आनले जाइए। तहिना गदहो अछिए, जे मनुखक सिरीमे तँ कम-सम्म उपयोग होइए मुदा िस्तु-जातक लेल बेसी होइए। तहिना गाइयोक अछि, मादा पक जहिना दूधक काजमे

अबैए तक्खना नर पकसँ हरक सॉग गाव्डयो जोतैक काजमे लगौले जाइए। तैसॉग कुता-क्वलाइ सेहो अव्छ जेकर उपयोग ऐछो आ नक्हयो अव्छ।

जक्हना अनेको रॉाक घरैया जानरि अव्छ, माने पोसै-पालैबला जानरि तक्हना अनेको रॉाक बोनैया जानरि सेहो अव्छए। ओना, सीतापुर गाममे हाथी, बाघ, क्सॅह, भालु सदृश जानरिक बसै-जोकर नि तँ नइ अव्छ मुदा बोन-झाड ऐछे नक्ह, सेहो केना कहल जाएत। भले ओहन नि नइ हुअए जइमे हाथी, क्सॅह अपना अव्धकारे, अपन पूणमसतिॅत्ताक सॉग क्सॅहभूक्मक बोन जका आक्क असामक बोन जका नइ बक्स सकए, मुदा तँए क्क ओइ बोनैयाके पालल-पोसल नइ जाइए सेहो बात नक्हये अव्छ। हँ! एकरा ऐ रपमे देख सकै छी जे जक्हना हाथी बोनोमे बास करैबला अव्छ, तक्हना गृहसिूओ छीहे। तक्हना हरीनक सेहो अव्छ। ओना, जक्हना पालतू गाए अव्छ तक्हना बोनैया गाए सेहो अव्छ मुदा ओइ गाएके 'नील गाए'क नाओॅसँ जानल जाइए। नीलो गाइक सॅख्या कम अव्छ सेहो नक्हये कहल जा सकैए। आन गाममे जेते हुअए ि नइ हुअए, मुदा सीतापुर गाममे नील गाइक सॅख्या पोसैबला गाएसँ बेसीए अव्छ। जँ नइ अव्छ तँ गामक हजार बीघाक खेतक उपजा केना खा जाइए? जँ ओकरो पकैड कऽ दुधार गाए बनौल जाए तँ अनेरे ने गाममे दूधक बाव्ढ भदक्रिया पाक्नक बाव्ढ जका दूधेसँ भक्र जाएत। मुदा केते लोक खेबे करत, तहूमे आब सीतापुरक लोकके तेतेक ने मोबाइल, ि.भी, कम्प्यूरि-सभ भऽ गेल अव्छ जे दुहै-औॅकि छुटी छइ। आब तँ बजारेक रेमीमेम दूधक पैकेि आक्न आसानीसँ अपन काज चला लइए। एक क्दस ऑॅख मोबाइलपर देने रहैए आ दोसर क्दस अन्दाजेसँ बतम्मे उझैल तीनके तेरह करैए आक्क तेरहके तीन करैए आक्क की करैए से तँ ओ जानए, मुदा एना

नइ करैए सेहो केना नइ कहल जाएत। कएए लोक अनका-ले भोरे-भोर झूठ बाजत। खाएर जे अछि से गाममे अछि, गामक बात भेल। अपन गामक कुकर्मक करब पातकक्रिये लोकक काज भेल। हम ओहन छी नहि, तँए खाली सपनौतीए कहलौं, देखनौती आकि करनौती बात नहि कहलौं।

सीतापुर गाममे जहिना घरबास अछि तहिना बनबासो अछिए। बनो तँ निछी, जेकर माने भेल अधिक साँख्याक समूह। जहिना ृन्दाबनि ृन्दि लोकक निछी, जइमे कृष्ण लीला केलैन तहिना रामो जइ बनमे चौदह बरख बितौलैन, जेकरा तत्काल रामनि कहि सकै छी, सेहो तहिना अछिए। गाछ-बिरीछक निसेहो होइए। जइमे फलो-फूल लगैए आ सुगन्धित ृकि रहने सुगन्धक उपयोगमे सेहो अबैए आ इमारती ृकिसँ घरक साज-स् जा सेहो बनौले जाइए। तहिना ओहन ृक्कि निसेहो अछिए जे मीठ-सँ-मीठगर फल दइए। गाछे-बिरीछ जका घरोक निहोइए, कएएक तँ ओहो समूह रपमे रहैए आ ओइमे रहैबला मनुखोक नितँ कहले जा सकैए। खाएर जे अछि कि नहि अछि मुदा फलदार ृक्कि नितँ पर्याप्त अछिए। एक बेर चतुराबाबू चतुरानन दास जे भारत सरकारक पूमिकृषि मंत्री रहैथ, पोलैम गेला। पौलैममे फलक अनेको किस्मक उपज होइए, पोलैमक सुपीमक सँग जखन बैसला आ देशक बडप्पनक बात उठल तँ पोलैमक सुपीमक विचारक ऊपरमे अपन विचार लदैत चतुराबाबू बजला-

'हमरा देशक कनौक्सयो-बरबैर अहाक देशमे फलक उत्पादन नइ अछि!'

चतुराबाबूक बात सुनि पौलैमक सुपीम अपन नजैर उठौलैन। उठल नजैर देख चतुराबाबू बजला-

'ओना नहि फकरछाएत। एक फलक एक किस्मक नाओं अहा बाजू आ एकटा नाओं हमहूँ बाजब। अनेरे ने अन्तो-अन्त फकरछा जाएत।'

पौलैमक सुपीम राजी भेला। वानती शुरु भेल। पहिने ओ अपन एकटा फलक नाओं बजला। तैपर चतुराबाबू कहलखिन-

'आम।'

फेर ओ दोसर बजला। पुन: चतुराबाबू कहलखिन-

'आम।'

अहिना जखन सात-आठ बेर 'आम' कहलखिन। लगातार आमे-आम सुनि पोलैमक सुपीम चौकैत पुछलखिन-

'अहा खाली आमे-आम कहै छिऐ, दोसर-तेसर कहा कहै छिऐ?'

तैपर चतुराबाबू मुस्की दैत जबाब देलखिन-

'हमरा ऐठाम गाछोक रॉग-रूप, फलोक रॉग-रूप आ सुआदो-गुणक हिसाबे आमक एतेक किस्म अछि। तैसँग आमे जका आन-आन जामुन्तो फलक नाम अछि।'

हजार बीघाक सीतापुरमे चारि आकारक भूमि अछि। पहिल आकारक जे ऊँचरस भूमि अछि, ओकरा उतम कोटि भूमि मानल जाइए। ऊँचरस भूमि पाय: बासक उपयोगमे अछि, तँए ओकरा बासभूमि सेहो कहै छिऐ। ओना, केतेको गाममे बालुक ढेरसँ मिलानुमा ऊँचगर भूमि सेहो अछि, मजबुरिये ओइठामक लोक ओहूपर घर बनैबते छैथ मुदा ओ घवियाा[2] मावटिक भूमिक बास भेल, से सीतापुरमे नहि

---

[2] कमजोर, अधला

अछि। सीतापुरक अधिकाश बासभूमि कमिया मार्कि अछि, तँए ओ नागभूमि सेहो कहाइत अछि। दोसर आकारक जे भूमि अछि ओ आकारक हिसाबसँ तँ बासे भूमि जका अछि मुदा ओकर उपयोग ओना घरो बनबैमे भइये सकैए मुदा से नहि, ओइमे लोक गाछी-कलम लगबैक सँग अन, तीमन, तरकारी लगबै छैथ। जेकरा चौमासो कहै छिऐ आ भीठ सेहो कहल जाइत अछि। तेसर अछि नीचरस भूमि, माने गहीर जमीन जेकरा धनहरो कहै छिऐ आ गोरहा सेहो कहै छिऐ। गोरहामे बरसातक समय पानिक बास भऽ जाइए जइ कारणे ओइमे तीमन-तरकारी आकि गाछ-बिरीछ लोक नइ लगबै छैथ। ओइमे खाली पनिसहू अन जेना- धान होइए। ओना, बारह मासक सालमे मात तीनिए-चारि मास ओइमे पानि बसैक सम्भाना रहै छै, बाकी समय ओहो सुखले रहैए। ओहूमे आन-आन अनो आ तीमनो-तरकारीक खेती होइते अछि। चारिम आकारक भूमि ओहन अछि जइमे बारहो मास पानिक बास रहैए। ओना, आन गाम जका सीतापुरमे एहेन भूमि नहि अछि, मुदा छह मास पानिक बासबला भूमि नहि अछि सेहो तँ अछिए। खाएर जे अछि जेहेन अछि से अछिए, मुदा आठ साए परिवारिक घरो आ भोजनो तँ ओही हजार बीघासँ प्राप्त होइत रहल अछि। ओना, किछु गोरे बाहरसँ अन खरीद कऽ सेहो अनै छैथ, तँ किछु गोरे बहरबैयाक हाथे बेचबो तँ करते छैथ। तँए दुनूक जोड-घटि भेने बराबर भेल।

सीतापुर बिथलाचलक अदौक गाम छी, नदिघरिया बस्ती नहि। ओना, कोसी-कमला धारक भीरमे नदिघरक बस्तियो अछिए, मुदा ओहो नदिघरिया गाम तँ नहिये भेल। ओना मनुखक पीढी बदलने बुझिमे तेहेन आबिए सकैए। मुदा छी ओहो बिथलाचलक पाचीने गाम, जे कोसी-कमला धारक कटिनियासँ कटि गेल आ धारके घुसकने पुन:

गाम बसि गेल। तँए, कोसी-कमलाक कछिया दुआरे गामक इतिहास हेरा जाएत सेहो तँ उचित नहिये भेल। भले ओकरा 'नधिकरया गाम' नहि कहि 'पुनासि गाम' कहि सकै छिऐ। मुदा तहूमे एकटा बाधा उपस्थित भइये गेल अछि। ओ ई जे गामक नाउए बदैल दोसर-तेसर नाओँ रखि देल गेल अछि। खास कऽ नटािलक नाओंसँ कएटा नटािल गामे भऽ भऽ गेल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से अछि तेतए अछि। मुदा सीतापुर अदौक गाम छी, जेकर रूप अखनो ओहिना झलैक रहल अछि। से दुनू दृष्टिये, घरक रूप-रूपक दृष्टिये सेहो आ मनुखक दृष्टिये सेहो। घरक दृष्टिये सीतापुरमे जहिना अदौमे गामक घर-दुआर घास-पात आ खरही-बाससँ बनैत छल तहिना अखनो ओगरबाह-रखबारक सॉग गरीबक घर अछिए। अखनो ओहने घर बनैए, जइमे बरसातो आ शीतलहरियोमे लोक बास करिते छैथ। तँए कि गाममे पका मकानक दू-मंजिला, तीन मंजिला घर नहि अछि सेहो अछिए। सभ तरहक सुख सुविधा- पानि-बिजलीक सॉग हिटि-ले पॅखा, भोजन बनबैले गैस चुल्हि िबजली चुल्हिसँ सम्पन्न अछि। मुदा तँए कि सीतापुरमे लकडीक जारैन ि गोबरक गोरहा-गोइठा आकि गाछक-पातसँ भानस नइ होइए, सेहो होइते अछि। तहिना बिजली पॅखाक जगह ताडक पातक पॅखा, मोमौआ बिअनि नइ अछि, सेहो अछिए। तेतबे नहि, बिजलीक इजोतक जगह लालटेनि, लेम्प, मिकबियाक उपयोग सेहो होइते अछि। तहिना पानिक इनार-पोखैर सेहो अछिए। भले गाममे टंकी आ चापाकल सेहो अछि, मुदा सौसे गाममे नहि। खण्डित गाममे जरूर अछि। जइसँ कखनो बिजलीसँ तँ कखनो गैस चुल्हिसँ गाम खण्डित होइते अछि। ओना, आरो-आरो बहुत एहेन चीज अछि जइसँ गामके खण्डित रूपमे देखल जा सकैए जेना- शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि-इत्यादि, मुदा अखन से सभ नहि अखन मात एतबे।

एक दिस जहिना दू-तल्ला, तीन-तल्ला नमगर-चौडगर पका मकान अछि तहिना दोसर दिस छोटि-छोटि एक-तल्ला मकानक संग भीतघर, फिघिर सेहो अछिए। समुरे जका ने गामो होइए। समुरमे जहिना नमहर-नमहर माछ-कौछु होइए तहिना ने नमहर-नमहर गोहि, नकार, सोसक संग आनो-आन जल-जानवि सभ सेहो रहिते अछि, जे मनुखोके खाइत अछि।

हजार बीघा जमीनबला सीतापुर गाममे आठ साए परिवारिक बास अछि। आठो साए परिवारिक बीच पाच हजार लोक छैथ। माने सीतापुरक आबिादी पाच हजार अछि। ओना, आठो साए परिवारिमे ने एके-रंगाक[3] लोक अछि आ ने एके रंग खेत-पथार अछि। ओना, लूरि-बुइधिक हिसाबसँ सेहो अन्तर अछिए, मुदा से अखन नहि। अखन खाली जनसंख्या आ सम्पैतक[4] हिसाबसँ जे भेद अछि मात तेतबे।

सीतापुरमे जहिना अदौमे संयुक्त परिवारि छल तहिना अखनो अछि मुदा से अछि मात पाचेटा परिवारिमे। ओना, ई कहब जे सभ दिनसँ पाचेटा ओहन परिवारि रहल से बात नहि अछि। पहिलुका हिसाबसँ ओइमे कमियो आएल आ बढोतरियो भेल, जे अखन दस-बारह परिवारिपर आबि अँटकिल अछि। ओना, ओहू परिवारिमे सभ तरहे एकर पता नहिये अछि, कछु-कछु जहिना समता अछि तहिना विरमता सेहो अछिए, मुदा कछु अछि संयुक्त परिवारि तँ अछिए।

सीतापुरमे पाचटा ओहन संयुक्त परिवारि अछि जइ परिवारिमे

---

[3] जनसंख्याक हिसाबसँ

[4] खेत-पथार

गामक तीस प्रतिशत जमीन अछि। ओना, ओहू तीस प्रतिशत खेत-पथारमे पाचो प्रकारिरके एकेरॉग नहिये अछि, कम-बेस अछिए। सभ तरहे ओ पाचो प्रकारिर भरि गाममे नीक मानल जाइत अछि। जहिना घर-दुआर तहिना बास-अगासि आ तहिना गाछी-कलम, बाडी-फुलबाडीक सॉग अन-तीमन, फल-फलहरी उपजक हिसाबसँ सेहो बेकसयो अछि आ नीको अछि। बासक बीि जका ओ प्रकारिर सघन अछिए। सघनो केना ने रहत, आमक गाछ जका बास थोडे होइए जे सर्वदाकाल असगरे रहए चाहत। आम-कहिर इत्यादिक गाछ एकपुरखिया होइए, तेकर कारणो अछि जे ओ मावपिर एकिा रहितो जेना-जेना कच्चियासँ ऊपर जाइए, तेना-तेना माकि फुिति सघन होइत मेघ मम्बिर जका चतैर जाइए, जइसँ दोसराक चतरब बाधित भऽ जाइ छइ। तैसॉग नमहर भेने ओकर मावकि कच्चियामे क्सरो तेहेन भऽ जाइ छै जे दोसराक ृिद्धिके रोकि दइए। मुदा बास से नहि अछि, ओ तँ केरा-खरही जका जहिना कच्चियामे मावपिर रहैए तहिना अपना ऊपर चतरल पातके सेहो ऊपर उठबैत जाइए, जइसँ ऐगला पीढीके अपन ृिद्धिमे बाधा नइ भेने ओहो बढैते अछि। दोसर कारण ईहो अछि जे आम-कहिर ओहन नपुँसक सन्यासी जका होइए जेकरा सन्तानोत्पत्तिक शव्त रहितो ओकर रपे बदैल जाइ छै। माने भेल जे आम-कहिरके सन्तानोत्पत्तिक जे रस्ता छै तइमे पहिने फूल होइए, जेकरा बीच फड होइ छै आ ओइ फडक बीच बीआ होइ छै, जइ बीआसँ गाछ होइए। तँए अपना शरीरमे, माने अपन गाछमे सन्तान उत्पत्तिक शव्त रहितो शरीरसँ शिेक ृिद्धि नइ कऽ पबैए। मुदा से अगिुण बासमे नहि अछि। ओना, केरे-खरही जका बासोमे एहेन अगिुण अछिए जे फूल-फड होइतो ओकरा उत्पादित शव्त नइ छइ। दोसर बात ईहो अछि जे जहिना आम-कहिरक औरदा बेसी अछि

तखना बासोक छइ। जखना बास साल भरक पछाइत धीया-पुता जनमाबैए, माने कोपर दइए, तखना आमो-कहिर साल भरमे तँ नहि, मुदा पान साल पुरैत-पुरैत ओकरोमे धीया-पुता जनमाबैक शक्‍त आबि जाइ छै, आबि ये नइ जाइ छै, जनैमतो छइ। तैबीच एहेन अन्तरो तँ अछिए जे कौआ-मेना जका बास अपन अण्डाके सेबैत बच्चोक आँखि फोड़ि सँग छोडैए, मुदा आम-कहिरक बीच लोकक पक्षि भेने, माने ओकर बीआके रोपैक क्रिया भेने, बास जका सम्बन्ध नहि रहैए। ओना, औरदाक हिसाबसँ आमे-कहिर जका बासोक औरदा देखैमे नइ अबैए मुदा जैठाम आम-कहिरमे पाच सालक पछातिये फूल-फड होइ छै तैठाम बास महान साधक जका भऽ जाइए, कएक तँ बासमे चालीस बखक पछाइत फूल-फड होइए। खाएर जे होइए, जेकरामे होइए से होइए तेकरामे होइए। अनेरे बास-गाछक हिसाबमे लोक कए पडत जे ओइ चालीस बखक बासक फूल-फडसँ आम-कहिर जका गाछो होइ छै की नहि होइ छइ।

पाचो सँयुक्‍त परिवारमे जनसँख्यो आ ओकर गुणोमे अन्तर अछिए। जनसँख्याक हिसाबसँ जखना दू परिवार सघन बोन जका बुझि पडैए, माने पचाससँ ऊपर जनसँख्या दुनूक परिवारक रहने, तखना जे शेर तीन परिवार अछि ओहो तीन रँग अछि। दू परिवार ओहन अछि, जेकरा समाजमे एकपुरखिया परिवार कहल जाइए, ओ पाच पुस्तसँ एकठाम सँयुक्‍त रूपमे रहितो पाचे पुरूख आ पाचे नारीक बीच बनल अछि। ओना, बेटिक बाढ़िमे घटबी भेने असगरआ होइत गेल, जखन कि बेटीक बाढ़ि तँ भेबे कएल। जे अपन माताक परिवार छोड़ि-छोड़ि सासुर बसैत गेली जइसँ सँयुक्‍त परिवार पतराएले रहल।

गुणक हिसाबसँ सेहो पाचो परिवारजनक बीच अन्तर अछिए।

दू परिवारिक लोक ओहन अछि जे किसानी जिनगीसँ जुडल रहल, जइसँ किसानी लूरि-बुधि तँ जरूर भेलै मुदा से खेत उपजबैक लूरि धरि सीमित रहि गेल। बाकी तीन परिवारिमे दू परिवारिक हिसाब-किताब एकरंगाह रहने एकरंगाहे रहल, मुदा एक परिवारिक ढ़िबरि अवाया-बताल जका भऽ गेल अछि। अवाया-बताल ई जे जहिना शास्त्र-पुराणके धँगैनिहार सभ छैथ तहिना जान-विजानके सेहो धंगैत आबि रहला अछि, तँए गामक सभ परिवारिसँ देखबोमे आ चालियो-ढालिमे अन्तर बुझि पडैते अछि। गामोक लोक सभ आ अडोसी-पडोसी, ओइ पाचो परिवारिके अगुआएल बुझिये रहल छैन।

सीतापुर गामक दू साए परिवारि ओहन अछि जेकरा बीच गामक पाच साए बीघा जमीन अछि। ओना, ने सभ परिवारिके एके रंग जमीन छै आ ने परिवारिे एकरंगाक अछि। ओ दुनू साए परिवारि किसान परिवारिक रूपमे जानलो जाइए आ अपनो बुझैए। किछु परिवारिके पाच बीघासँ दस बीघाक बीच जमीन छै जे जन-बोनिहारक हाथे अपन खेती करैए, बाकी परिवारिके दस कटासँ पाच बीघाक बीच खेत छै जे बेर-बेगरतामे जनो-बोनिहारक उपयोग करैए आ अपनो हाथे खेती-बाडीक संग मालो-जाल पोसैए। शेर जे छह साए परिवारि अछि ओकरा बीच मात दू-साए बीघा जमीन छइ। किछु परिवारिके अपन बासो भूमि नहि छै आ किछु परिवारिके बास भूमि छइहो तँ जोतसीम जमीन नइ छइ। तहिना किछुके बास भूमिक संग दस कटा-पाच कटा जोतो जमीन छइ। ओना, ओ सभ खेत-मजदूरक रूपमे जानल जाइए, जे गामोक किसानक खेतमे काज करैए आ मौका-कुमौका पूभर सेहो चलि जाइए। पूभरक माने भेल- आसाम, बंगाल। पूभर ओ सभ दू किसिमक जाइए। मेढ मास, दू मास ओतए रहैए आ ओमहरसँ कमा कऽ आबि परिवारि चलबैए। अखन जे चचमभऽ रहल

अछि ओ देशक अजादीसँ पूर्वक, माने १९४७ इस्वीसँ पहिने आ १९४० इस्वीक पछातिक। ओइ समैयक बोलिहार पॅजाब नइ देखने छला।

जहिना रॉ-रॉक जाति आन-आन गाममे अछि तहिना सीतापुरमे सेहो अछि। ओना, कोनो गाम एहेन नहियेँ अछि जइ गाममे सभ जाइतिक लोकक बास हुअए, आ ने कोनो गाम एहेन अछि जइमे खाली एके जाइतिक लोक बास करैत होथि। तँए जाइतिक आधारपर एक जाइतिक एकोटा गाम नहियेँ अछि। किछु जाति कोनो गाममे अछि आ कोनो गाममे नहियो अछि। खाएर जे जेतए अछि, मुदा सीतापुर गाममे पच्चीस-छब्बीस रॉक जाति अछि। जाइतिक हिसाब जेना सभ बुझिते छी जे उच्च जाति, मध्यम जाति आ निम्न जाइतिक रूपमे जाति सभ अछि, तइ हिसाबसँ सीतोपुरमे सभ जाति छथिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो छैथ जे खेती-पथारीक संग आनो-आन वृत्ति करै छैथ। किछु नोकरिहारा छैथ, तँ किछु पुरहित-पुजेगरी सेहो छैथ आ अधिकाश जाति ओहन छैथ जे अपन जातीय वृत्तिके अपनौने छैथ। जेना केशकटीक काज नौआ करै छैथ, कपडा धोइक काज धोबी करै छैथ, लकडीक काज बरही, लोहाक काज लोहार, बासक बरतन बनबैक काज मोम करै छैथ आ माटिक बरतन बनबैक काज कुम्हार करै छैथ। इत्यादि-इत्यादि जातीय वृत्ति आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो करिते आबि रहल छैथ।

आइसँ आठ साए बरख पूर्वमे सीतापुर गामक नामो-निशान नइ छल। शुरूमे माने आठ साए बरखपूर्व सात टा गोरे अपन परिवारिक संग सीतापुर गाम एला। एक-दोसरसँ दुनू अनचिन्हिया छला। गामक भूमि सोहनगर छेलैहे, तैसँग कतिया धार-धुरसँ सेहो हटि रहबे

करए। ओना, छोटि-छोटि दूटा धार तँ रहबे करइ। जइमे एकटा मरने जका छल आ दोसर बहता छेलइ। ओही धारक महारपर दुनू परिवार अपन-अपन रहैक ठौर बनौलैन। दुनू परिवारके एकठाम बसने जान-परिचय सेहो भेल। एक गोरे किछु विशेर होशियार छला आ दोसर परिवारिक दोसर गोरे ओइ हिसाबे कम होशियार छल। किनगी तँ दूनूक एकरंगाहे छेलैन। दुनू परिवार अपन-अपन जीविकोपाजनक लेल किछु भूमिक उपयोग सेहो करए लगला। मोटा-मोटी हुनका सबहक जीविकाक साधन छेलैन साग-पातक संग छोटि-छोटि जानरिक मास आ गाछक फल इत्यादि। पानि पीबैक साधन घरक आगूए-मे बहता धार छेलैहे। घास-फुसक घर बना दुनू परिवार रहए लगला। जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना दुनू परिवारसँ सेहो परिवार बढल आ देखा-देखा आन-आन ठामसँ सेहो कएटा आरो परिवार आबि-आबि बसल। ताधैर गामक नामकरण सीतापुर नइ भेल छल। जखन एक-दोसर गामक परिचय भेल तखन आपसमे सबहक बीच सम्बन्धो बढल। मोटा-मोटी जंगली जीनिसँ किसानी जीनि दिस उन्मुख भेल। गाममे लोक अबैत गेल आ अपन-अपन जीनो-यापन आ रहैयो-सहैयोक ठौरक ओरियान करए लगल।

दरभंगा राजक दिरा १८६१ इस्वीक बाद राज्यक इलाकामे किछु विद्यालयक स्थापना भेल। एहेन विद्यालय करीब २६टा बनल। ओही लाटिमे एकटा विद्यालय सीतापुरमे सेहो बनल। जइमे किछु परिवारिक धिया-पुताक पढ़िश लेलक। पढ़िश लेनिहारमे बेसी उच्च जाइतिक परिवारिक धिया-पुता छल। तैसंग मध्यम शेणीक जाइतिक बच्चा सेहो पढ़िश केलक मुदा बहुत कम संख्यामे। मुदा निम्न जाइतिक, जेकरा हरिजन कहै छिऐ हुनका सबहक धिया-पुताक पढ़िश स्कूलमे नहि भेल। ओना, शताब्दीक अन्त होइत-होइत विद्यालय टुटि गेल।

जे भेल से भेल मुदा किछु परिवारमे विद्याक आगमन तँ भइये गेल। जइसँ धीरे-धीरे पढ़ै-लिखैमे वृद्धि भेबे कएल।

सीतापुर गामक आठ साए परिवारमे डेढ़ साए परिवार उच्च जाइतिक अछि। उच्च जाइतिक माने भेल- ब्राह्मण, राजपुत, कायस्थ आ भूमिहार। ओहू उच्च जातिमे कायस्थ नहिये छैथ, बाकी तीन जातिमे राजपुतक संख्या सभसँ कम आ भूमिहारक संख्या राजपुतसँ बेसी आ ब्राह्मणसँ कम अछि। तीनूमे सभसँ बेसी ब्राह्मण छैथ। शिक्षाक पचार-पसारमे अनुपातक हिसाबे तीनू एकरंगाहे भेला मुदा संख्याक हिसाबसँ ब्राह्मण बेसी भेला।

मध्यम शेणीक जे जाति अछि ओकर संख्या, जातियोक हिसाबसँ आ जनसंख्योक हिसाबसँ बेसी अछि। जहिना उच्च जातिमे तीन जाति अछि, तहिना मध्यम जाइतिक संख्या करीब बीस अछि आ निम्न जाइतिक, माने- हरिजनक संख्या जहिना जाइतिक हिसाबसँ मात चारि अछि तहिना जनसंख्याक हिसाबसँ सेहो कम अछि। ओहूमे चारि जातिमे मुसहरक संख्या बेसी अछि बाकी तीन जाइतिक संख्या कम अछि। ओहू चारिमे आर्थिक दृष्टिये दू जाति दुसाध आ चमारक बीच अपन घर-घराडीक संग किछु जोतसीमो जमीन छै आ गाछियो-बिरछी छै मुदा दू जाइतिक बीच डोम आ मुसहरक बीच, अपन जमीन नइ छइ। शुरूमे जखन दुनू जाइतिक पशि सीतापुरमे भेल छल तखन गामक आधासँ बेसी जमीन परतिये-परात छेलै, जेकर कियो ने मालिक छल, ओहीमे ओ सभ बसल। ओना, वृत्तिक हिसाबसँ डोम मुसहरसँ अगुआ गेल। किएक तँ डोम मशीशी पालनके[5] अपन जातीय वृत्ति

[5] सुगर पोसबके

बनौलक, तैसँ बासक िस्तु-जात सेहो बनबए लगल, जेकर जरुरत लोकके छेलैहे, मुदा से मुसहरके नइ भेल। ने जातीय ृित्तक हिसाबसँ कोनो िनसिश्चत काज मुसहरके भेल आ ने खेतीए भेल। ओना, छोि-छीन कारोबार- पशुपालनक जरूर भेल से भेल बकरी पोसब। ओकरा सबहक सोलोअना जीिन बोिनये-बुतापर रहल, जे अखनो अिछए।

आने गाम जका सीतापुरक जमीनक अिधकार सम्बन्धी इितहास सेहो अिछ। ब्रिटिश राज[6] भारतमे जमीनक बन्दोिस्त १७९३ इस्ीमे केलक। जइ पािधानक मुताििक राजस्[7] सँाहकके[8] जमीनक मािलक बना देल गेल। अही तरहे जमीन्दारीक पथा शुरु भेल। ओना, तइसँ पिहनौ राज दरभँा िरा जमीनक मालगुजारी ओसलल जाइ छल, तँए ओइ पािधानके राज दरभँा िरोध केलक। ओना, ई दीगर बात भेल जे मालगुजारीमे एकरूपता ने पिहनिह छल आ ने पछाितये रहल। उच्च जाइितक ओहन जमीनक मालगुजारी कम छेलइ। जेहने जमीनक मालगुजारी मध्यम शेणीक जाइितक लेल बेसी छल। तैसँ ईहो जे बाह ण, राजपूत, कायस्थ आ मुसलमानके ििहदानी िर् स नइ लगैत रहै, जे आन जाितके लगैत रहइ। ििहदानी िर् सक माने भेल- लडका-लडकीक िििाहक िर् स। िजनकर बेिीक िििाह हेतैन हुनका सबा रूपैआ आ िजनकर बेिाक िििाह हेतैन हुनका दसअना िर् स िदअ पडैन।

---

6 ऑगरेज शासन

7 भूिमक मालगुजारी

8 असुलिनहारके

आने गाम जका सीतापुरमे सेहो गामक आधारपर एक समाज बनल आिब रहल अिछ, मुदा समाजक भीतर शुरुए-सँ िखण्डमानक रूप सेहो चलैत आिब रहल अिछ। ओ िखण्डमानक रूप अिछ- जाित-धमर्क बेहिार। ओना, जँ जाितके मनुख जाित आ धमर्के िजनगीक तृिप्तक िहसाबसँ देखल जाए तखन भेद-भाव कोनो बेहािरक पक्ष निह रहैत। मुदा से तँ अिछ निह, जाित-जाइितक बीच िनच्चा-ऊपर सीढीनुमा खाच बना देल गेल अिछ, जइसँ एक-दोसरमे भेद अिछ, ओ भेद िसफर् िवचारके क्षेत्रेमे निह अिछ, बेहािरक क्षेत्रमे सेहो अिछए। तिहना धमोक अिछए। रॉग-रॉगक देवी-देवताक सृजन कए जाइितक बीच बँटवारा कऽ देल गेल अिछ, जेकर पिरणाम अिछ जे एक-दोसरमे एतेक दूरी बिन गेल अिछ जइसँ एक-दोसरमे जे समािजक सरोकार हेबा चाही ओ मेटा गेल अिछ। तेतबे निह, मनुखे जका देवी-देवतामे सेहो छूत-अछूतक बेहिार बिन गेल अिछ। फलस्वरूप जाित-धमर्क पभाव समाजपर एतेक पिड़ गेल अिछ जे ऊपर-सँ-िनच्चा तक खािध बिन गेल अिछ। तेकर फलाफल एक-दोसरके िनच्चा देखबैक िवचयालसँ अिधक काल गाम-गाममे झगडा-झॉंझ होइते रहैत अिछ।

देश स्वतंत्र भेला पछाितयो आ पिहनौ शासन िकयाक ओहन रूप रहल जे सौसे समाजक िहसाबसँ, माने समुच्चा गामक लेल ने कोनो योजना बनैए आ ने कोनो काज होइए। जइसँ समाजक िकछु लोक सुविधा सम्पन्न छैथ, बाकी सुविधा हीन। फलाफल गाम-गामक समाजमे विघिनक वातािरण बनैत रहल अिछ। विघिनक वातािरण आने गाम जका सीतापुरमे सेहो अिछए। मुदा िकछु अिछ तँए िक सीतापुरक समािजक सम्बन्ध नइ अिछ, सेहो केना नइ कहल जाएत। िकछु मामलामे एकमुहरी सम्बन्ध अिछए। जँ केकरो घरमे आवा लगै

छै तँ सौसे गामक लोक ओझबैले जाइते अछि। तैठाम जातीय छूआ-छूत, भेद-भाव मेटाएल रहैत अछि। मुदा लगले जखन गाममे कोनो समाजिक वा धार्मिक क्रिया-कलाप होइत अछि तखन ओ भेद-भाव नीक जकाँ जागि कऽ जगजिआर भऽ जाइए। तहिना विआह-दान आ भोज-काजमे सेहो नीक जकाँ जातीय बन्धन जगले अछि। मुदा तँए कि कियो अपनाके सीतापुरबला कहब छोड़ि देने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि।

देशक आने भाग जकाँ मिथिलाचलमे सेहो अंग्रेजी शासनक विरुद्ध आन्दोलन चलिये रहल छल। आन्दोलनकर्त्तामे दू रंगक विचार नीक जकाँ उजागर भेल। एक पक्षक विचार छेलैन जे अंग्रेजी शासकके देशसँ भगाएब। जे रंग-रंगक शोषणो करैए आ जनताक बीच जोर-जुल्म सेहो करैए। ओना, अंग्रेजी शासक दू रूपक हथियारक प्रयोग करैत छल। एक तँ शासन सूत्र ओ सभ अपना हाथमे रखने छल, तैसंग देशक भीतर जे राजा-रजबार छला तिनका सभके शोषणक हथकण्डा बनौने छल। हुनके सबहक माध्यमसँ अनेको तरहक शोषण करैत छल। अनेको तरहक शोषणमे प्रमुख छल आर्थिक शोषण। तँए आन्दोलनकारीक दोसर पक्ष जे छला ओ अंग्रेजक संग देशी राजा-रजबार आ जमीन्दारक विरोधमे सेहो ठाढ़ भेला।

१९३५ इस्वीक लखनऊ अधिवेशन माने कांग्रेस अधिवेशनमे खुलि कऽ दू ग्रुपमे आन्दोलनकारी विभाजित भऽ गेला। गाँधीजी जे अखन तक आन्दोलकारीके एक सूत्रमे बान्हि नेतृत्व करैत आबि रहल छला ओहो विभाजित भऽ दू ग्रुपमे बँटि गेल। दोसर ग्रुपक नेता सुभार

बाबू[9] भेला। अधिवेशनमे गाँधीजीक उम्मीदवार सीता रमैयाके सुभाष बाबू हरा देलैन। जइसँ आन्दोलनकारीक बीच जबरदस भूचाल जकाँ भऽ गेल। तइसँ पहिने केतेको क्रान्तिकारी सभ फाँसियोपर चढ़ि गेल छला आ कालापानी सेहो पहुँच गेल छला।

किसानक देश भारत, ऐठामक मूल उत्पादनक साधन जमीन छेलैहे। पश्चिमी देश जकाँ कल-कारखाना नहियेँ छल। गनल-गुथल किछु कारखाना छल, बाकी लोक खेतीपर आश्रित छला। खेतो राजा-रजबारक संग जमीन्दार, महाजनक बीच घेराएल छल। अधिकांश लोक या तँ भूमिहीन छला वा किछु-किछु जमीन छलैन। ओना, जिनका जे जमीन छेलैन तेकर मालगुजारी जमीन्दारोक माध्यमसँ आ राजाक माध्यमसँ ओसुलल जाइ छल। मालगुजारी ओसुलैक ओहन हथकण्डा अपनौने छल जे जँ दू-साल मालगुजारी समयपर नइ देलकाए तँ जमीने नीलाम करा लेल जाइत छल, जमीनक रैयती अधिकार समाप्त कऽ देल जाइत छल। माने ओ जमीन आब अहाँक नहि रहल। ओना, समयपर मालगुजारी नइ दइक कारण गरीबी छेलै, जेकर आधारो प्राकृतिक छल। बाढ़ि-रौदीक चलैत फसल नइ उपजने रैयत मालगुजारी नइ दऽ पबै छला। तैसंग शासन-तन्त्रक भाषा सेहो बेधिान उपस्थित करैत छल। किएक तँ शासनक भाषा अरबी-फारसी छल। ओना, पैघ-पैघ भूपति आ महाजनाके मालगुजारी नइ लगैत रहैन, किनको बहादुरक नाओंपर, किनको जागिर वा अन्य देवी-देवताक नाओंपर छूट छेलैन। मुदा निम्न आ मध्यम शेणीक किसान (रैयत) प्राकृतिक आफदसँ सेहो त्रस्त होइते रहै छला।

---

9 सुभाष चन्द्र बसु

ओना, गामो-समाजमे बाह ण, राजपुत आ मुसलमानके[10] जमीनक मालगुजारी नइ लगै छेलैन। जइसँ हुनका सबहक सम्पैत (जमीन-जयदाद)के कोनो राजा-दैि नक्ह छेलैन। तैसॉग हुनका सभ लेल आरो सम्पैत एककात करैक बाि सेहो खुजले छल। माने ई जे रैयतक नीलाम कएल जमीनके ओ सभ कक्छु-कक्छु कीमत दए कीन लइ छला।

सर्ि-सेिलमेनि आ बॉगाल िनेसी ए् िसँ पक्हने तक जमीनक अवक्धकारक कोनो मजगूत आधार नक्हये छल। १८८५ इर्सीमे बॉगाल िनेसी ए् ि कानूनक पाि धान भेल। १८९६ इर्सीसँ लऽ कऽ १९०३ इर्सी तक जमीनक सर्ि-सेिलमेनि भेल। सर्ि-सेिलमेनिकि ऑपरेशनक माध्यमसँ दरभॉगा क्जलामे सेहो सर्ि-कायम आरम्भ भेल। जइमे दू पक छल, सर्ि आ सेटलमेनि। गाम-गाममे कैम्प लगा जमीनक बारेमे पुछल जाए लगल।

स्थायी बन्दोिस्त भेने एक क्दस जमीनदारक जन्म भेल तँ दोसर क्दस रैयतके सेहो कक्छु कानूनी अवक्धकार भेिल। ओ भेिल ऐ र पमे जे जे रैयत बारह बखर्सँ ऊपरसँ जइ जमीनके जोक्त रहला अवक्छ ओ ओइ जमीनक माक्लक भेल। मुदा से भेल छल केिल कानूनीए पाि धानक बीच। जइमे अनेको खामी सेहो छेलइ। जइसँ जमीन रैयतक हाथ नक्ह आक्ब जमीन्दारे, भूपक्तक बीच बनल रहल। रैयत अपन जमीनसँ बे-दखले रहला। जँ खेत जोक्ततो छला तँ भूधारीके उपज बाि कऽ क्दअ पडै छेलैन।

१९३५ इर्सीक पछाइत जन-आन्दोलनक बीच मोड आएल।

---

10 पैघ मुसलमान माने भूपक्तके

बकास्त जमीन आन्दोलनक मुद्दा बनल। ओना, विचारक रूपमे शाक्तसँ सेहो आन्दोलन सफल भऽ सकै छल, जँ इमानदारीसँ क्रियान्वित कएल जाइत। मुदा से भेल नहि। हेबो केना करैत, आने केत जका ने कम्युनिस्टसी सेहो महाभारत पढै छैथ। तँए, सूई अगे ने दातव्य, सूत बुझले छेलैन। जएह चेहरा सामाजिकक मंचपर आन्दोलनक मुद्दा बनबै छला, एिह चेहरा जमीनपर बन्दूक उठा गोलियो चलबै छला। जएह भोजैतनी सएह चौितनी..! अही बीचमे कम्युनिस्टलाचलक समाज जबरदस फँसान फँस्स गेल।

१९३९ इर्सवीक पछाइत अँगरेजक खिलाफ आन्दोलनक रूप उग भेल। रेलक पटरी उखाड़ि रेल बाधित कएल गेल, डाकघर जरौल गेल, टेलीफोनक तार तोड़ि संचारतंत्रके बाधित कएल गेल। इत्यादि-इत्यादि। ओना, आन्दोलन मात्र अपने देशमे नइ चलै छल, दुनियाक आनो-आनो देशक बीच लडाइ फँस्स गेल रहइ। दुनिया दू भागमे बँटि गेल छल। दोसर विश्वयुद्ध अपन उग रूपमे फुटल। ओना, अपना देशमे जे पैघ-पैघ भूपति छला तइमे किछुके छोड़ि बाकी सभ भूपति अँगरेजक संग खुलि कऽ देलैन। गाम-गाममे आन्दोलनकारी देश-पेमी सबहक घरक सम्पैत लूटि गेलैन, गाम-गाममे आवा लगौल गेल। दमन चक्रास रूपमे चलए लगल...।

अँगरेजक संरक्षक ऐठामक भूपति सभ तँ छेलाहे जे जासूसी सेहो करैत रहैथ आ गोरा-पलटनिके खाइ-पीबैक संग रहैक बेवस्था सेहो करैते छला। मुदा तैयो जन-जागरण एहेन पटि रूप पकैड लेलक जे १९४२इर्सवी अबैत-अबैत आन्दोलन निर्णायक मोडक करीब पहुँच गेल।

गाम-गाममे अँगरेजक खिलाफ जबरदस अबाज उठि चुकल

छल। बकास्त जमीनक लडाइ सेहो शुरु भऽ गेल। गाम-गाममे जमीन्दार, भूपतिक खिलाफ लडाइ जोर पकडलक। ओना, छोटि आ मध्यम किसान सभ अपन-अपन रैयती अधिकार लेल उठि कऽ ठाढ भइये गेल छला मुदा जातीय जाल आ भूपति सबहक अख्तियार कएल रंग-रंगक लोभ-पलोभन बीचमे बाधा रहबे करए। मुदा तैयो रैयतक बीच एहेन उत्साह बढ़ि गेल छल जे अपन अधिकारक लेल जान दइले तैयार भेला। ओना, एकरंग लडाइ सभ गाममे नहि चलल। जैठाम भूपति अपन चालबाजीसँ रैयतक बीच फूटि पैदा करैत अपन अस्त्र-शस्त्रक[11] पयोग केलक, तैठामक रैयत कमजोर पडल, जइसँ लडाइ सफल नइ भेल। मुदा तँए कि सभ गाममे अहिना भेल, सेहो बात नहिये अछि। शानदार जीत रैयत हासिल केलैन।

आने गाम जका सीतापुरमे सेहो बकास्तक लडाइ जोर पकडलक। तइमे आन गामसँ भिन्न रपक लडाइ सीतापुरमे भेल। हँसेडा-हँसेडी आकि मारियै-पीटि आकि केशे-मोकदमा आन गाम जका नहि भेल। शक्तिपूणमढंगसँ जहिना कोनो सरकारी आदेश लागू होइए, तहिना भेल। रैयत सभके अपन रैयती अधिकार भेटिने अस्सी पतिशतसँ अधिक जमीन मध्यम आ निम्न किसानक हाथमे आबि गेल। बाकी बीस पतिशत जमीन, जे पाचिटा पैघ किसान छला, हुनका सबहक हाथमे रहलैन। ओना, ओहो सभ अपनो हाथे खेती करै छला आ किछि-फुटि रपमे बटाइ सेहो लगौने छला। जे बटाइ लगौने छला ओ जमीन सभिमे बटिदारक नामे नामित नहि भेल छल, तँए ओइ जमीनक टिधाकिक अधिकार नहि भेटिने हुनके सबहक हाथमे रहलैन।

---

[11] अस्त्र-शस्त्रक माने भेल अपन बन्दूक-गोलीक संग कोटि कचहरीमे कानूनी उलझन।

ओही सीतापुरमे देि चिरण नामक एकि ा रैयत सेहो छला। पाच पुस्तसँ हुनका तीन बीघा जमीनक जोत रहलैन। ओना, चाक्रम पीढीमे माने वपताक अमलदारीमे जे तीन बीघा जमीन छेलैन ओ नीलाम भऽ गेलैन। गामेक एक गोरे ओ नीलामी जमीन कीनलैन। मुदा समाव्जक सम्बन्ध ओइ दुनू पव्रि ारिक बीच एहेन बनल रहलैन जे ने बि ाइ र पमे अधा-अधी उपज बाि छला आ ने सोलोअना अपन बुव्झ खाइ छला। दुनूक बीच[12] आपसी वि चारसँ, माने दुनू घर अबाद रहै तइ व्हसाबसँ समझौता भेल छेलैन। जव्हना एक व्दस भूपव्तक जमीनक कानूनी अव्धकारक रक्के ध्यानमे राखल गेल तव्हना देि चिरणक पूि ञ्जक उपाव्जत्त सम्पैतसँ देि चिरणक पव्रि ारिक भरण-पोरणके सेहो ध्यानमे राखल गेलैन। जइसँ सालमे चौथाइयोसँ कम उपज देि चिरण भूपव्तके दैत रहव्थन। समय बीतल। १९४८ इस्वीमे ओइ भूपव्तके तीनू बेि ाक बीच खेतो-पथार आ धनो-सम्पैतक झगडा शुर भेल। ओना, झगडाक कारण पव्रि ाव्रक छेलैन, मुदा गामक लोक बुझै छल जे हुनकर जेठका बेि ा जे अपन पती-बाल-बच्चाक अछैत एकि ा ि श्यासँ व्बआह कऽ लेलकैन से। ओना, समाव्जक र पमे सेहो आ पव्रि ाव्रक वि चारधाराक र पमे सेहो ओकर वि रोध भेबे कएल। तैसॉ छोि का दुनू भाइयो आ जेठका भाइक पव्तयो आ बेि ा सभ वि रोध केनव्ह रहैन। जइसँ पव्रि ारिमे व्मनौजीक ि ताि रिण तैयार भेल। ओना, बीचमे जे गामो आ परोपटोक व्कछु लोक रहैथ ओ तीनू भाइमे मेल-व्मलान करैक भव्र पोख पव्रयास केलैन मुदा से सफल नइ भेल। पव्रयासक कममे गाम-गामक महॅथाना आ महॅथक अनेको उदाहरण दैत रहलव्खन मुदा एतेपर आव्ब कऽ पव्रि ारिक लोक वारह दऽ देलकैन जे जँ अपना

[12] भूपव्त (पैघ व्कसान) आ देि चिरणक बीच

जाक्तामे दोसर क्वाआह केने रक्हतैथ तँ छोडलो जा सकै छल, क्कएक तँ जैठाम अस्स्सी-अस्स्सी बखक्क बुढ सभ दोसर-तेसर क्वाआह करैए तैठाम ई साक्ठ बखक्क क्वाआह कोनो अनसोहात नक्हये भेल। मुदा कोन-कहा जाक्तासँ क्वाआह केलक तँए नइ छोडबैन, पक्रिरसँ फराक कइये देबैन। जमीन-जत्था छैन्हे, अपन फूमि घर बना रहौथ। सएह भेल।

देश सतिॉत्त भेला पछाइत एक सॉग केतेको रॉगक हिायुमण्मलमे उठल जइसँ भूपक्त सबहक करेज मोलए लगल। खास कऽ पुरना दरभॉगा क्जलाक मधुबनी-सक्मािजन आ अखुनका मधुबनी-क्जलाक सौभाग्य रहल जे केरले आ बॉगाल जका अहुठाम जमीनक लडाइ सघन रपमे उक्ठ चुकल छल। जमीनक जोत-कोरक पक्तबन्ध माने जमीनपर १४४दफा लागब आम बात भऽ गेल। सॉग-सॉग कानूनक ध् जी सेहो उडौल गेल। मुदा से भेल दुनू क्दससँ, भूपक्त क्दससँ सेहो आ रैयत क्दससँ सेहो। एक क्दस भूपक्त सभ सरकारी तॉत्तक सॉग क्मल १४४दफा लागल जमीनक फसल काि‍ए लगला तँ दोसर क्दस रैयतो सभ सरकारी कानूनके अनदेख करैत फसल काि‍ए लगल। दुनू दुनू क्दस फसल हक्थयाबए लगला। तेतबे नक्ह, केतौ-केतौ थानामे जे फसल जमा भेल ओ थानेदार सभ हक्थयौलक। खाएर जे भेल, मुदा १९४० इर्स्िक पछाइत क्मक्थलाचलक क्कसानो-बोक्नहार अजादीक लडाइमे अपन-अपन उपक्स्थक्त जबरदस रपमे दजम करौने छला। बामपॉथी राजनीक्त एक पिलि शव्तक रपमे सक्क्रय छल।

१९४० इर्स्िक पछाइत खेती करैक काजमे कमी आएल। मुदा ओइ कमीके ऐठामक क्कसान सहरमर्स्िकार केलैन। पेि बाक्ह-बाक्ह लोक अजादीक लडाइमे अपन उपक्स्थक्त दजम करौने रहला,

आन्दोलनमे हाथ बँटैने रहला, जहलक यात्रा करैत रहला। आइ धरि जे समाजक संस्कारमे जहलकेँ नर्कमआ पापीक स्थान बुझल जाइ छल, तइ संस्कारमे जबरदस धक्का लगल। जमात करए करामात..! गाम-गामक अधिकाश मुडहन लोक जहल जाइत-अबैत रहला, जइसँ ओ नर्कसँ बदैल स्वर्गमभऽ गेल, जे पापीक स्थान छल ओ धर्मात्माक स्थान भेल।

तीनू भाइ- कमलेश्वर, गौरीनाथ आ काशीनाथक बीच जे विधवासँ बिआहक विवाद उठल ओ गामे नहि, परोपटाक महन्थानो आ जमीन्दारोक शीलकेँ[13] हिला देलकैन। एके-दुइए दजनो महन्थो आ जमीनदारो, जे अखन तक धर्मात्मा बनि धन-धरम पुजबै छला ओ सभ समाजक बीच देखार भऽ गेला। ओना, महन्थानोक बीच जमीनक लडाइ उग्र रूपमे चलल। केते जमीनदारोसँ नमहर-नमहर महन्थाना छेलैहे। लडाइ-लडाइ जका भेल। लाठी उठल, केश-मोकदमा भेल, हँसेडा-हँसेडीमे खून सेहो भेल।

कमलेश्वरक करतूतनी विधवाक संग बिआह करबसँ अस्सी बखर्क बाप- राम किशोरक मन टूटि गेलैन। टूटिबे नहि केलैन, विक्षिप्त जका अपन होश-हवास सेहो गमा चुकल छला। मुदा गौरीनाथो आ काशीनाथो अपन-अपन परिवारिके असथिर करैत समाजक सम्बन्धमे निर्णय देलैन। निर्णय ई देलैन जे तीन साए बीघा जमीन नीलामपर बन्दोबस्ति जे करौने छला, ओ कोसकन्हा जका रेनिवस करैत सबहक जमीन आपस करैक विचार तय कऽ लेलैन। मेढ साए रूपैआमे देल चिरणके सेहो अपन जमीन आपस लइले कहलखिन।

---

13 चकरतके

ओना, देचिरण अपन पूर्खाक देल सम्पैत गमा चुकल रहैथ, मुदा ओकर जोत-कोर केने अपन पवारिक गाडीके घीचैत आबा रहल छला। खेत जोतैले बरदक जररत होइ छइ। अपन समागक सॉ जँ जोड भवा बरद भऽ गेल तँ किसानी वजनगीक एकि मुख्य ऑा भइये गेल, तँए देचिरण गाए सेहो पोसै छला। अपन बरद बेचैत रहला जे कीनैक खगता नइ भेलैन। ओना, जइ बरदसँ खेत जोतै छला ओ पुरनकन्हे भइये गेल छेलैन, मुदा जोडा भवा बच्छा-बरद सेहो भऽ गेल छेलैन। ओही बच्छा-बरदके बेच देचिरण अपन पूर्खाक देल जमीन पुन: आपस लेलैन।

अजादीक तूफानी दौडमे माने १९४० इर्सामे हवारचरणक जन्म भेल। ओ, ओ समय छल जइमे केतेको पवारिक बच्चा अन बेतरे मरल, केतेको माए अपन शवतसँ वारोग बच्चाक जन्म नइ दऽ सकली।

हवारचरणक छव्हहारमे, जखन समाजक दाय-माय एकठाम बैस भाग्य-रेखा वलखए लगली तँ सभिम्मैत वणय केलैन जे बच्चाके औरदा भेि, जीबैत रहत तँ एक लोढी बोक्तयो कए कऽ समाजमे पवारिके ठाढ करबे करत।

वाक्य : ११ मई २०१८

जारी...

२.

१४ जनवरी १९३४ इस्वीक दिनक एक बजेमे जबरदस भुमकम भेल। अखुनका जका भुमकमक नाप-जोख करैबला कोनो यंत्रक अविष्कार नहि भेल छल जइसँ लोक बुझैत जे केहेन भुमकम भेल, मुदा एते तँ भेबे कएल जे बडका-बडका गाछो सभ खसल, भीतघर सेहो खसल आ खेत-पथारमे दाराड़ फटि-फटि जमीनक भीतरसँ बाउल ऊपर आबि-आबि बाधक-बाध जमीनमे पसरबो कएल। पाकल मोकर सभ सेहो फुटि। गाम-गामक शकल बदैल गेल। घर खसने लोको मरल।

आने गाम जका कका सीतापुरमे सेहो भेल। ओना, सीतापुरमे एकोटा घर पजेबाक तँ नहि ये छल खाली पान-सात परिवारिके कँचका पजेबाक घर छेलै, ओहो सभ खसल। सीतापुरमे अधिकाश घर टिघिर छल जे लकडी-बासक खुटापर ठाढ छल, ओ हिल-मोकल जरूर गेल मुदा खसल नहि। ओना, सीतापुरमे लोअर पाइमरी स्कूल सेहो छेलै मुदा सरकारी नहि, एकटा व्यक्तिक स्कूल चलबै छला। बीस-पच्चीसटा विद्यार्थी छल। सभ विद्यार्थी शक्तये-शक्त हुनका सवाचराक रूपमे पाभैर चाउर आ एक-एकटा पाइ सभ दैत रहैन। एक गोरे ऐठाम व्यक्तिक रहै छला जे खाइयो-पीबैले दइ छेलैन आ बदलामे परिवारिक बच्चा सभके दरब् जेपर पढबैत रहथिन। गौआँक सहयोगसँ पनरह हाथ नमती भीतघरक रूपमे स्कूल छल। भुमकममे ओहो खसि पडल। स्कूल खसला पछाइत बहरबैयाक[14] कचहरी[15]मे

[14] पाहीपटीक

[15] कामत

पढाइ हुअ लगल। तीन-चारि सालक पछाइत स्कूलक जगह बदैल, माने जैठाम स्कूल छल ओइ जगहसँ हटि दोसरठाम एकटा परतीपर गौएक सहयोगसँ पुन: भीतघर बनल। स्कूलक जगह बदलैक कारण भेल जे ओइ जगहके लोक अशुभ मानलक।

अंग्रेजक विरोधमे एहेन माहौल बनि गेल छल जे स्कूलक जे शिक्षक छला, ओहो चोरा-नुका कऽ लोक सभके देशक अजादीक विषयमे बुझबै छला। गाम-गाममे अंग्रेजी शासनक समर्थक सेहो छेलाहे। किनको सभ चुगली कऽ देलकैन जइसँ १९४२इस्वीमे शिक्षक पकडा गेला। स्कूल बन भऽ गेल। ओना, साल भरिक पछाइत जहलसँ शिक्षक निकलला मुदा घुरि कऽ सीतापुर नहि एला। स्कूलक भीतघर ओहिना ठाढ भेल रहल। तीन सालक पछाइत दोसर शिक्षक एला। हरिचरणक नाओं सेहो बाबुजी[16] स्कूलमे लिखा देलखिन।

देश स्वतंत्र भेल, मुदा अखन तक आमजन स्वतंत्र शब्दक अर्थ बुझबे ने करै छला। सीतापुर गाममे बेसी-बेसी जमीनबला सेहो छला मुदा मालगुजारी असुलनिहार जमीन्दार मालिक नइ छला। जइसँ पाहीपटीक मालिक अपन पटवारी, गुमस्ता आ बराहिलक माध्यमसँ कचहरियो चलबै छला आ मालगुजारी सेहो असुलै छला। कचहरी चलबैक माने भेल, गाममे जे झगडा होइ, तेकर पनचैती करब। ओना, तइ मानेमे जमीन्दार कमजोर छला। तँए गामक मुँहगर सभके सेहो पनचैतीमे बजबै छला। कचहरीक कारोबारीके कमजोर होइक कारण छल जे दू परिवार कि तीन परिवारक बीच जे झगडा होइ छल ओइमे जे मारि-पीट होइ छल, ओ किछु-किछु रहै छल तँए कियो अनुचित भेने पाछू मानबे ने करैत रहए। माने पनचैती स्वीकार नइ

---

16 देवचरण

करैत छल। जइसँ कचहरीक आदेश ढिठ जाइ छल।

देश की स्वतंत्र भेल की नइ भेल, से बुझनिहारक अभाव तँ रहबे करइ। मुदा रंग-रंगक भाषणो गाममे चलिते छल जइसँ किछु हेराएल-भोथियाएल मुदा सभ सेहो जगाते छल। जमीन्दारी ढिठ गेल, जमीन्दारक शासन सेहो ढिठ गेल। आब मालगुजारी सरकार असुलत आ ओइ पाइक खचमसमाजक काजमे लागत इत्यादि...।

अखन तक गाममे ने एकोटा नीक सडक छल, ने एकोटा पुल, आ ने स्कूल बनल। आम जनक नजैरमे सेहो नव-नव विचार जगबे कएल। पुलक नाओंपर दसटा ईंटा रस्ता परहक कोनो-कोनो खाधिमे बाछा देल जाइत रहै, जैपर होइत लोक बरसातमे चलैत छल।

आम-कटहरक खुदरा गाछो आ गाछीमे सेहो जमीन्दारक ऐमला-फेमलाक संग लडाइ उठल। ओना, अखन धरिक[17] जे कचहरीक रतबा छेलै ओ ठिक्कक रूपमे कमल मुदा बेहिसाबक रूपमे ओहिना छल माने पूर्वे। माने ई जे देश स्वतंत्र भेला पछातियो गाव्र पढब, मारब इत्यादि कचहरीक ऐमला-फेमलाक बेहिार रहबे कएल। आमक गाछीक लडाइ गाछक तडी-फडीक लेल भेल। तँए एकरा आन गाममे जे कहल जाइत होइ मुदा सीतापुरमे 'आमक गाछीक लडाइ' कहल जाइत अछि। से केबल आमक गाछीक लडाइये कहल जाइए से बात नइ अछि। आमक गाछीके बाआहोक सभा-गाछी आ दोस्तयारीक धरम-गाछी सेहो कहले जाइए।

आमक गाछीक लडाइ कचहरीक पटवारी-गुमस्ता-बराहिलक संग गुलाबचनके भेल। गुलाबचनके तीन भाइक भैयारी, तीनू भाइ कातिक-

---

[17] बीतल समयक

सँ-फागुन धरि अपने गाछीमे अखडाहा खुनि कुश्ती लडैत छल। गुलाबचनक बाप माता गोपीचनके अपन बुद्धि-अक्किल छेलैन तँए अपन सोच-विचार सेहो छेलैन्हे। तेकर एकटा कारण ईहो छल जे दस कटा खेतके गोपीचन चार बापूत मीलि कोदारीए-सँ उनटा लइ छला, माने ताकि लइ छला। तैसँग अपन चारिटा महीस सेहो पोसने रहैथ, जेकर दूध-दही खाइते छला। तँए जिनगीमे ऐसँ बेसी आरो चाही की? कोनो कि गोपीचन शास्त्र-पुराण पढने छला जे मनुखक देहपर हाथीक माथा आ बानु घटिकैक टाये राम-सीताक जोडी नगर बधू केना धनूर टुटिसँ पकडने लगा लेलैन, ऐ सभपर विचार करितैथ। ई तँ छी शास्त्र-पुरानक विचार। अपन विचार शास्त्र-पुरानमे रहअ। ऐसँ गोपीचन आ गोपीचनक तीनू बेटाके कोन मतलब? मतलब छै अपन मेहनतक सँग बापक देल सम्पैतके सुरक्षित राखबसँ।

पैछला साल गोपीचन मरि गेला। गोपीचन जा जीबै छला ता मालिकके अपन जमीनमे अपन रोपल आम-कटिहरक फड अपना हाथे बाटि-बाटि दइ छेलखिन। बेटा सभ एतबे करै छेलैन जे गाछक आधा-छिधा आमो आ कटिहरो तोडि आगूमे आनि राखि दइ छेलैन आ महीस चरबए चलि जाइ छल। जइसँ मालिकक सँग बँटिबाराक मर्म-करम बुझबे ने केने छल।

आम-कटिहर तोडबए कचहरीक बराहिल पहुँचल। गुलाबचनके एतबे अनुमान छेलै जे अपन गाछी-कलम छी। आन गामक लोक सभ कचहरीमे रहैए, ओकरो खेनाइ-पीनाइ तँ गौए ने देत। तँए पाचटा दसटा आम हमहूँ देबइ।

तीनू भाँइ गुलाबचन मडुआ रोपि कऽ आएले छल। दुपहरक समय रहै, बराहिल आबि गुलाबचनके आम तोडए कहलखिन। तैपर गुलाबचन बाजल-

“अखन मडुआ रोपब कऽ तीनू भाँइ एबे केलौ हेन, काल्हि भोरेसँ गाछीक आम तोडब। पछाइत पाचि आम अहूँके कचहरीमे पहुँचा देब।”

अखन धरि थाना-पुलिस जका बराहिलो अपनाके बुझते छल। पि रीक नाओं कहैत बाजल-

“सरकारक हुकुम छह, आम आइये तोडबह।”

तहीकाल गुलाबचनक मझिला भाए- बालचन पहुँचल। तीनू भाइमे बालचन सभसँ बूफगर। जेहने कछपगर जबान तेहने हाथो-पएर। बराहिलक मुँहक बात ‘सरकारक हुकुम छह’ सुनिते बालचनके देहमे देशी सरकार बनैक विचार जवा गेल। जगैक कारण ईहो रहै जे काल्हि ये साझमे सोराजीलालक मुहसँ सुनने छल जे देश-स तिांत्र भेल, सबहक देश भेल तँए केकरो कियो मालिक नहि रहल। सबहक देश भेल, सबहक शासन भेल। बराहिलके बालचन कहलक-

“हम अपना चीजक अपने मालिक छी की तोहर सरकार छह। जा, नइ देबह एकोि आम।”

बालचनक बात सुनि बराहिल ठमकल, मुदा जहिना शासनक कुसीपर बैसल अफसर ि थानाक िदी पहिर एको लीबरक आदमीके ढोड सापक फुफकार होइत अछि तहिना बराहिलक सेहो भेल। तैबीच गुलाबचन अपन भाएके चुप करैत कहलक-

“बालचन, दरब् जापर आएल दुश्मनोके लोक नीके बोल कहै छै, तूँ किए अनेरे झगडा बेसाहै छँह।”

ने गुलाबचने अपन विचारक भाि थिम बुझलक आ ने बालचने बुझलक मुदा बराहिल बुझि गेल। बुझबो केना ने करैत, वजनगी तँ बीतै छेलै शासकीय भारा-शास्त्रीक बीच ने...। जँ गुलाबचनके एतबो

होश रक्षैत जे दरब् जापर आक्ष बराक्हल आँखि देखबैए आ हम ओकरा अभ्यागत बुझै छएऐ! जँ से बुझैक शक्त रक्षैत तखन जेठ भाइक भारा नै बजैत। ओना, बराक्हल बालचनक धुआ-काया देख सहैम गेल छल, मुदा जमीन्दारीक मॉत जे मनके पकैड नेने छेलै, तइसँ फुफकार रहबे करइ। गुलाबचनक दरब् जापर सँ बराक्हल कचहरी कास विदा होइत बाजल-

“आइ तोरा सभ भइके देखा दइ छयौ। तीनू भइके हथकडी लगा जेल जखन पठेबौ तखन अपने बुझ जेबही!”

बराक्हल चक्ल गेल। गुलाबचन सेहो नहाइ-खाइ कास बढल।

कचहरी पहुँच बराक्हल पिरिीके सभ बात सुना देलकैन। ढहैत सामंती सोच आ उठैत जनिदी विचारक बीच पिरिीक मनमे निि पसैर गेल। मुदा समाजको सता तँ सता छीहे, ओहूमे केतेको भता अछए। समाजोमे तँ एहेन लोकक विचारक सता रहले अछ जे राज-काजसँ या तँ जुडल रहल अछ ि ओइमे सलि रहने अपन सता बनौने रहल अछ। स्कूली शक्ता तँ पिरिीके कम्मे रहैन मुदा जमीन्दारी सूतक नीक अनुभि रहबे करैन। बराक्हलके राजक हथियार बना लडाइयक सूमा बनौलैन। गाममे जेतेक मुँहगर-कन्हगर लोक छल, जेना- मैनजन, देबान इत्यादि जे सभ कचहरीसँ जुडल रहए सबहक बैसार पिरिी केलक। अपनो गुमस्ता, बराक्हलक सॉग गामक असेसर[18]के बजा एकठाम केलक। सम्मिलितसँ काक्ल आम तोडैक कार्य भेल। समयक क्हसाबसँ सभ गुलाबचनक गाछी पहुँच बलजोरी आम तोडब शुर केलक।

---

[18] चौकारी ि स असुलक्हार

गुलाबचनके बुकौर लवा गेल। मुदा बालचनक हिम्मतमे कनिकबो भरि कमी नइ आएल। बालचनक हिम्मत देख गुलाबचन बाजल-

“बौआ! धन, धरम दुनू जेतह। आम तोडै छै ते तोडए दहक। छोड़ि दहक। भगि‍निके दइक हेतैन ते ऐगला साल अहू बेरक साती आम दए देथुन।”

जहिना गमम आवामे पाकि ढारने कहिझा तँ जर र जाइए मुदा ओकर पि‍रतापके ठण्हा होइमे किछु समय लवाते अछि तहिना बालचनक मनमे ईहो उठैत रहै कचहरीक झगडा गाममे पसैर जाएत। हेबो केना ने करितै गौओ तँ सॉ‍ग छेलैहे। तेतबे नहि, ि‍चारा ने कहियो स्कूले देखने आ ने तेहेन पुर खक सतसॉ‍ग भेल छेलै जइसँ पुर खपनाक बोध होइतै। मुदा एकि‍ वि चार बालचनक मनमे जर र जगलै जे जखन गौऑॉ सभ हँसेडीक र पमे कचहरीक सॉ‍ग हमर सम्पैत लूि‍ए आएल अछि तखन ओकरा सॉ‍ग हमर समाजिक सम्बन्ध केहेन हएत? की हम ओइ समाजसँ ई नहि पुछि सकै छी जे समाज जखन वि चारसँ चलैए तखन हँसेडी बनबैक की पयोजन भेल? जर र किछु-ने-किछु भीतरमे रहस्य अछि...।

सॉ‍जोग बनल। जखन गुलाबचनक गाछीमे आम ि‍ि‍बि शुर भेल, तखने जेठुआ बिहाड़ि जका भरि गाममे बिडो उठल। एकाएक नि‍तुरिया सभ सेहो गुलाबचन-ऐठाम पहुँचए लगल। गामक नि‍का पीढी जे अखडाहापर खेलाइ छल ओ सभ बालचनके गुर कहै छेलैन। सोराजीलाल सेहो गुलाबचनक ऐठाम एला। अबिते सोराजीलाल सबहक बीचमे गुलाबचनके कहलखिन-

“गुलाबचन, अहा सॉ‍ग अन्याय होइए, एकरा रोकू।”

सोराजीलालक वि चारक पभाि‍ जेते बालचनपर पडल तेते

गुलाबचनपर नइ पडल। पडबो केना करैत, जेकर विचार पक्नक्ह हाक्र माक्त चुकल छल ओ केना लगले उक्ठ कऽ ठाढ होएत। घरसँ कडुतेल क्पऔलहा लाठी क्तकाक्ल बालचन बाजल-

“भैया, तूँ घरेपर रहह। घर-दुआरक सॉग स्तीगणो आ बालो-बच्च्याके देखैत रक्हहह। हम छोकिा भैयाक सॉग जा कऽ आम तोडबके रोकबै।”

जक्हना देशक ओइ क्समानपर जे शव्तशाली देशक सीमा सेहो छी, जाइत क्सपाहीके पक्रिरिक लोक अक्तम विदाइ बुझैए तक्हना गुलाबचनक मनमे उठए लगल। एक क्दस समागक व्जनगी देख रहल छल आ दोसर क्दस सम्मैत। रॉग-क्बरॉगक विचार गुलाबचनक मनमे चकभौर क्लअ लगल। व्जनगी-ले सम्मैत अक्छ ि सम्मैत-ले व्जनगी? मुदा अखन सोचै-विचारैक लेल ओते समयो नक्हये अक्छ जे आनो-आनसँ बुक्झ विचारब। तहूमे जखन लडाइयक मोचा बक्त रहल अक्छ तखन सभसँ बुझबो-विचारब केतेक नीक हएत? लडाइक मोचाक विचारक अनुभिा सभके एकेरॉग नक्हये होइ छइ। जे लडाइयक मोचापर उतरक्हार अक्छ ि जे मोचापर कक्हयो गेबे ने कएल, दुनूक विचारोमे क्पनता हेबे करत क्कने..!

सोचैत-विचारैत गुलाबचन अपन दुनू भइॅके माने जानचनो आ बालचनोके कहलक-

“बौआ, आम अपन पक्रिरिक तोक्ड रहल अक्छ, मुदा जखन समाजो पीठपोहु छैथ तखन पाछुओ हबि नीक नक्ह। तँए पक्हने दरब् जापर आएल सहयोगी सभके पुक्छ लहुन जे आगू की करब।”

गुलाबचनक विचार सुक्त जक्हना दुनू भइॅ जानचन आ बालचन ठमकल तक्हना समाजक नितुक्रया सभ सेहो ठमकल। मुदा

सोराजीलाल, जे दजर्नो बेर जेल-याताक करैत गुलाम देशसँ मुक्त पाबि चुकल छैथ, हुनका विचारमे मुक्तक ओ रूप ओझरना झलैक रहल छेलैन जेना पौने छला। अगुआइ करैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, जिनगीक बाटिमे केहनो आफद-असमानी आकि केहनो रोडा-पाथर किए ने आबि कऽ रोकए मुदा पाछू नइ हटी। किएक तँ ओ निर्णायक दौर होइत अछि। ओइठाम पाछू हटिनिहार लोक पछुआ जाइत अछि। ओना, तइमे थोडेक होशियारीक खगता जरूर अछि मुदा पाछू हटब किनहु नीक नहि।”

सोराजीलालक विचारमे गुलाबचनके की भेटलि से तँ गुलाबचने जानत, मुदा बिच्चेमे बालचन बाजल-

“सोराजी भैया, अहाक विचार जँ संग रहत तँ समर्पैत बँचबैले हम अपन जानके अरािध लेब। अहा जे कहब हम तइ हिसाबसँ करैले तैयार छी।”

बालचनक विचार सुनि सोराजीलाल बजला-

“बालचन, लडाइक मोचाक एक-एक क्षण ओ क्षण छी जे क्षणमे छनाक कऽ सकैए। तँए एको क्षण गमौने बिना चलह आम तोडबके रोकैले।”

सोराजीलालक विचार सुनि बालचनक मनमे लहरैत आवाजक एकेबेर धधरा उठल। अपन लाठी सम्हारि बालचन गाछी दिस आगूए-आगू दौडल। पाछू-पाछू समाजक नर-तुरियो, सोराजियोलाल आ परिवारिक बाल-बच्चा सहित जनजातियो सभ गर्जयबैत विदा भेल।

आमक गाछीमे गुमस्ता, पहिरी, बराहिलक संग असेसरो आ समाजक पाचटा मुँहगर-कन्हगर लोक सेहो छला। गामक हँसेडीके दौडैत अबैत सभ कियो देखलैन। एके-दुइये गुमस्तो, पहिबारियो,

बराक्हलो आ असेसरो आमक गाछीसँ भागल। मुदा गामक जे पाचो गोरे छला ओ पूर्मिते गाछीमे रहला। ओना, हुनका सबहक मनमे मारक मर नइ पैसल रहैन। मर नइ पैइसैक कारण हुनका सबहक मनमे रहैन जे हम तँ समाजक लोक भेलौ कने, बीच-बचाउ करैत रहब। मुदा ई विचार मनमे जगबे ने केलैन जे जे बात अखन मनमे उठ रहल अछ ओ तँ आम तोडैसँ पहनौ उठ सकै छल। जँ से उठल रहैत तँ एहेन परिस्थतीए कए बनैत?

जमीन्दारक ऐमला-फमलाके भागैत देख सोराजीलालक मन अडहुलक फूल जका फुला गेलैन। गाछी पहुँच ि लि आमक ढेरीके देखबैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, अहाक आम छी लऽ जाउ।”

तही बीच कसहैशर माने गामेक एक जातक मैनजन, बाजल-

“गुलाबचन, अनेरे ने लाठी-लठौबैल करए चाहै छी। समझौता मान लअ।”

कसहैशरक विचार सुन गुलाबचन थकथकाएल मुदा सोराजीलाल बालचनके कहलखन-

“बालचन! समाजक यएह लुच्चा-लम्पा सभ गरीबक समैक तयो आ इ जतो-आबर के सभ दनसँ लूटि आएल अछ। अखन ई समाज नर्क राजक हँसेडी छी, तँए जे भागल से अपन जान बँचौलक, मुदा जे पकडा गेल तेकरा छोडब उचत नइये हएत।”

सोराजीलालक विचार बालचन मान लेलक। मुदा विचारमे कनी सॅशोधन जरर केलक। सॅशोधन ई केलक जे कडुतेल पिऔल लाठी अछ, तँए ओइ लाठीसँ अघात बेसी हएत। अघात ई जे जहना लोहाक तीर बनबैकाल करतेल पिऔलासँ ओ विरा् त भऽ जाइए

तक्खना बासक लाक्छयोमे होइए। जइसँ साधारण लाठीक अपेक्षा ओइसँ बेसी अघिात भऽ सकैए। लाठी रक्खि बालचन क्सहँेशरक दुनू गालमे दू चाि मारलक।

क्सहँेशरके गालमे चाि लवाते जेतेक नतिुक्सया छल, भुआ जका बाकी चार पर लिक हाइ-हाइ सभके चोवियाबए लगल। दुनू हाथ उठा सोराजीलाल सभके शान्त केलैन। मुदा एक क्दस जक्खना माक्षक चोसिँ चोिाएल गहुमन साप जका पाचो फुफकार कावि रहल छल तक्खना दोसर क्दस गनगुआक्ष-साप जका समाजोक क्सपाही सभ सीिी बजाइये रहल छल। लडाइ जीतला पछाइत लडाइ लडक्नहारक विचार सिापक्ष भइये जाइए। सम्क्सम्मैतसँ क्नणथ्य भेल जँ पाचो गोरे साए-साए बेर कान पकैड समाजक बीच उठए-बैसए तँ जान छोक्ड देबइ।

आगू-पाछू पाचोके करैत देख सोराजीलाल पुन: विचारमे सँशोधन करैत बजला-

“कान पकैड कऽ उठब-बैसब छोक्ड पाचोके थूक चबािाउ।”

क्तथ्य : १५ मई २०१८

जारी...

३.

१९४५ इस्वी अबैत-अबैत गाम-गामक जे स्कूलक शिक्षक सभ जहल चलि गेल छला जइसँ स्कूल सभ बन भऽ गेल, ओहो सभ जहलसँ निकलला आ स्कूलो सभ खुजल। ओना, ने सभ गाममे स्कूले छल आ ने सभ स्कूलक शिक्षक जहले गेल छला। हँ, ई बात जरूर छल जे अधिकाश स्कूलक शिक्षक जहल गेल छला, बाकी मरे पड़ा कऽ घर धऽ नेने छला। घर धड़ैक कारण खाली अँगरेजी शासन द्वारा चलौल गेल दमन चक्रे नहि छल, ओहूमे दू रंगक विचारक छला। पहिल जे अँगरेजी शासनक समर्थक छला, तँए जनजागरणसँ मकड़ गेल छला आ दोसर ओहन विचारक लोक छला जे प्राचीन पद्धतिक विचारसँ प्रभावित छला। ओ सभ पुरान विचारसँ एतेक प्रभावित रहैथ जे अपनाके मात्र एक शिक्षक गुरुतुल्य मानै छला, जइसँ देशक अजादीक आन्दोलनसँ ओ सभ अपनाके सोलनी अलग रखने रहला। मुदा विरिम परिस्थिति, माने लड़ाइ-दंगाक परिस्थिति देख अपन जिनगीक विचारके समेटि अपनाके सुरक्षित रखैले स्कूल छोड़ि-छोड़ि घर धऽ चुकल छला।

स्कूल खुजिते दोसर-तेसर शिक्षक सभ आबि शिक्षण कायम साँचालित केलैन। सीतापुरक स्कूलमे सेहो पढ़ौनी शुरू भेल। पहिलुका स्कूलक सभ कागज-पत्तर जब्त भऽ चुकल छल। किएक तँ पहिलुका जे शिक्षक छला हुनकापर शासनद्रोहक अभियोग लगा चुकल छेलैन जइसँ साल भरिसँ ऊपरे जहलोमे रहला। स्कूल खुजला पछाइत पुन: विद्यार्थी सबहक नामांकन भेल। देविचरण सेहो अपन पौत्र हरिचरणक नाओं लिखा देलैन। ओना, बच्चाके केतेक उमेरमे विद्यालय पठौल जाए, प्राचीन पद्धति की कहैए? मुदा तइ सभपर कोनो विचार नहि कएल गेल। बिना कोनो प्रमाण पत्रे, बिना कोनो जन्म-कुण्डलीए

विदाथी सबहक नामाकन भेल। पाच बखक्ष बच्चासँ पनरह-बीस बखक्ष बच्चा, जेकरा शिक्षक रपमे अक्षर-बोध नक्ष छल, सबहक पशि स्कूलमे भेल।

पढल-लिखल, विचारशिन व्यक्ति भेने हुनका सबहक मन एतेक तँ मानते रहैन जे समाजक पिछड़ापन होइक कारणे देशक सेिा हमरो कतव्य भेल। तँए बिना कोनो भेद-भाि केने अधिकाश व्यक्ति विदालयमे पढबैत रहैथ। ओना, समाजक बीच विदोपाजनक लेल समाव्जक रोक-राक नक्ष छल एकरो नकारल नक्षये जा सकैए। किछु शास्त्रीय जान एहेन तँ छेलैहे जेकरा महिला आ बच्चासँ परहेज मानल जाइ छल। ओना, भागितकथा गाम-गाममे चलैत रहइ। जइ आसनपर बैस व्यासजी[19] धुि-पहलादक कथा सुनबैत रहथिन ओही आसनपर ऋतुव्रकाक[20] कथा सेहो कहते रहथिन मुदा समाजक बीच जे चलैन छल, माने समाजक जे गक्ष-विधि रहै तइमे खोच-खरोच नक्ष छल एकरो नकारल नक्षये जा सकैए। व्यक्तिक बीच सेहो जातीय बेिहारक पभाि रहैन जइसँ व्यक्ति व्यक्तिक बीच सेहो किछु-ने-किछु दूरी बनले छल।

१९४५ इस्वी बीतैत-बीतैत १९४२इस्वीक जे तूफानी आन्दोलन छल ओइमे किछु नरमी आएल। अँगरेजो बहादुर महसूस कइये चुकल छल, जे आब शासन सता बँचाएब कठिन अछि। तँए सताक हस्तातरण करबे विकल्प अछि। जहलसँ आन्दोनकारी सभके निकालल जाए लगल। गाम-गाममे जे गोरा-पलिनक घोड-दौड चलल रहल छल

---

[19] भागित बचकहार

[20] शिक्षक विदुरीक

ओहो समिा कऽ केन्द्रित हुअ लगल। अपन देशक सता अपन देशावासीक हाथ औत जे अपना ढंगसँ चलौत। अखन धरिक जे देशक शासनक इतिहास रहल ओ कहियो मुगल वा अँग्रेजी शासन नइ रहल, ओइसँ पहिनौ विदेशी शासन रहल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे मुगल शासनक पछाइत अँग्रेजी शासन आएल।

जहिना जेठ-अखाढ़मे रौदसँ जरल जमीनक जे धरतीसँ जुड़ल घास-पातक संग छोटि-छोटि जे गाछ-लती छल ओहो सभ जरि-सुखि चुकल छल, मुदा बिदलक बखारसँ धरती तेना भसिआएल जे जरल-मरल, मौलाएल-सुखाएल सभ गाछ-लती जबा-जबा कऽ ठाढ़ भेल।

देशक अजादीसँ पहिने देशक जे-जे समस्या छल ओ १९४५ इस्वीक पछाइत जखन देशक जन-गणक बीच आसा-विसवास जगल जे आब अँग्रेजी शासन छोड़ि विदा करत अपन शासन हेबे करत। आसा-विसवास जबाते सबहक नजैर अपन-अपन जीवनक बाधा-रुकाबटिपर पड़लैन। पहिने जहिना समस्याक समाधान आर्थिक, लोकमे ऐ तरहक विचार जबाते हजारो समस्याक उदय गाम-गामक समाजमे हुअ लगल।

किसानक देश भारत, किसानक बेटा देशके अँग्रेजी शासनसँ मुक्त करा अपन कल्याणकारी रस्ता पकैड़ आगू मुहे चलता, तँए किसानी लेल मारिते-पानि, बीआ-बाइगक संग खेती करैक लूरि सेहो चाही, तखने खेती अपना गतिये संचालित हएत। दिनानुदिन नित लूरियो आ साधनो भेने उपार्जन बढ़बे करत, जइसँ देश शक्तिशाली बनत। जखने देश शक्तिशाली हएत तखने देशक लोक शक्तिशाली हेता। सबहक मनमे यएह आशो आ विसवासो छेलैन्हे।

बकास्त जमीनक आन्दोलन उठि चुकल छल। मुदा ओइमे एकरूपताक अभाव रहल। गाम-गामक समाज विचारक रूपमे सेहो आ बेवहारिक रूपमे सेहो बँटाएल रहला। खेतक मर्मके बुझनिहार जे

किसान छैथ ओ इंच-इंच भरिक जमीनक उपजाक शक्‍तिके नीकसँ बुझै छैथ, तँए ओहन किसान नहि छैथ सेहो नइ नहियेँ कहल जाएत जे अपन खेतके हगनार बना रहल आबसँ बजै छैथ- 'जँ हम हगनार नइ करिऐ तँ लोकक हगब बन भऽ जाएत।'

अजादीक अखन तक दौड अबैत-अबैत देशक समस्या दर्जनो राजनीतिक दल सेहो बनौलक। समस्याके कोन रूपे समाधान कएल जाए, अधिकाश दिशा-दिशा ता सभ विचार करिते रहैथ। जइसँ पोखरिक जाठि लगक माटि उखाड़ि पोखरिक पानिके थाहि लेता, ईहो तँ विचारक क्षेत्रमे अछिए। बकास्त आन्दोलन कोनो-कोनो गाममे शत-प्रतिशत सफल भेल आ कोनो गाममे खिचड़ी नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भेल दुनू। खाएर जे भेल, किछु लोक अपना-अपना हाथे अपन-अपन भाग्य सेहो लिखलैन आ किछु गोरे या तँ लिखबे ने केलैन कि लिखि कऽ मेटि लेला। गाम-गामसँ जमीनबला किसानक बेसी गाम छोड़ि बजार दिस भागाये रहला अछि। अधिकाश लोक, चाहे ओ बुद्धिजीवी परिवारिक हुअए कि मसिजीवी परिवारिक, चाहे ओ किसान परिवारिक हुअए कि औद्योगिक परिवारिक कि खेतिहर-बोनिहारक परिवारिक, गाम-घरसँ पड़ा कऽ किए बजारोन्मुख भेल अछि?

लाखो-करोड़ो जीव-जन्तुक बीच मनुख सभसँ ऊपर विकसित जीव मानल जाइत अछि, मानल नहि जाइत अछि विस्तृतिमे अछिये। कहैक क्रममे, जहिना मॉचपर बैसि ता बजै छैथ जे बरद बहैले[21] आ विकसित कहैले जन्मे नेने छैथ, तखन जँ से नइ हुअए तँ सेहो

---

21 हर जोतैले

जुलुमे बात भेल। खाएर जे भेल, जखना एक ि ताक विचार ऊपर अछि तखना दोसरो ि ता तँ एहेन छथिए जनक कहब छैन- ‘जहा बसी तँह सुन्दर देशू। जखि पक्षपालल सोइ नरेश।’

विचारणीय पश तुलसियो बाबाक छैन्हे, भले ओ खिसया कऽ कहने होथि ि भासिँ भवि ति होइत पेमाभामिे कहने होइथ।

साढे तीन हाथक मनुखके दुनियाँ देस देखैसँ पहिने अपन शकल-सूरत आन-आन जीि-जन्तुक शकल-सूरतसँ भजाइर लेबा चाही। कहैकाल तँ कहिये सकै छिऐ जे हाथी हुअए कि बाघ, भले जॉगलमे अपना शव् तये ओ राजा किए ने बनल अछि, मुदा अपना रहैक घर बनबैक लूरि ने हाथीके छै आ ने बाघके, मुदा माविमे रहैबला मूसो आ खिखिरो-नढ़िया ओहने अछि सेहो केना कहल जाएत।

बजार देस गाम-घरक लोकके पडाइन करैक जररत किए पडलैन? चाहे ओ कोसीक कछेरक लोक होथि ि कमला-बागमतीक कछेरमे रहैबला, की ओ सभ ई नइ जािन रहला अछि जे दुनियाक समृद्धशाली शहर नदियेक कछेरेमे बसल अछि। दुनियाक बात छोड़ू, अपने बिहारक जे पमुख शहर अछि ओ केतए अछि?

सभ कियो तँ यएह ने चाहै छी जे अधिक-सँ-अधिक शान्तिचतसँ जीिन व्यतीत अपनो करी, परिािरो करए आ समाजोके शािन्त भेिै। मुदा तइले की खगता अछि आ केतए कोन रस्ता किए बाधित अछि, तैपर विचार के करत? विचारणीय विरय अछि जे केहेन जीिन चाही? जखने धरतीपर जन्म लेलौ, तखने भूख लगबे करत, जँ भूख नहि मेिाएब तँ शरीर खसैत-खसैत खिस पडबे करब। ओना अनोसँ बेसी जररत पािनक अछि आ तहूसँ बेसी खगता हिािक अछि जे सास लइ छी। मुदा ओ तँ पकृित अपन अकिािलसँ सौसे दुनियाके भिर देने अछि। ओना, अछि पीबैक पािनयो

आ भोजनो सामगीक पैदा करैक मावियो, मुदा ओइमे कनी मेहनतक जरूरी पड़ैये जाइत अछि। धरतीसँ अन पैदा होइए आ खाद्य पताल आ ऊपर अकाससँ पानि भिकैए। तइमे मनुखक अपन तरद्दुत एते तँ बढ़ैये जाइए जे तइले इनार, चापाकल इत्यादिक बेवस्था करए पड़ै छइ। ओना, अकासक पानि जहिना पर्वति बेसी अछि तहिना ओकर तरद्दुत सेहो कठिन अछि, मुदा असाधे अछि सेहो कहब उचित नहिये हएत। जखन कि तीनू साधन भरपुर अछिए। तखन अनक अभाि किए होइए? पानि दूखित केना भऽ जाइए? ायु पदूखित किए भऽ जाइए..?

वििकिनि मनुख रहितो वजनगीक मूल-भूत ढाचासँ ओझल भेल छी। ओना, ओझल होइमे सोलनी अपने दोख अछि सेहो नहियो कहल जा सकैए। सर्विदित अछि जे कोनो बच्चाक जन्म अजानावस्थामे होइते छै, जेकरा जीता-जीनिक सभ शव्तक बीज रहितो ओहन शारीरिक अवस्था होइ छै जे कछुआक बच्चा जका नहि जे पानिक ऊपर देने दौडैत गेलौ आ अण्मा खसबैत गेलौ। ओइ अण्माक शव्त ओहन छै जे माए-बापक खोज नहि करैए, खगतो नइ होइ छइ। लगले अपने फुर्वि बच्चा भऽ जाइए। बच्चा होइते दौडैक शव्त ओकरामे आबि जाइ छइ। दौडैक शव्त अबिते अपन जीनिक भार उठा लइए। मुदा केतबो कछुआक बच्चा पनिगर किए ने हुअए मुदा ओ अपन माइयो-बापके कहा चीन्हि पबैए? मनुख तँ से नहि छी। एकरा माता-पिता परिरिसँ लऽ कऽ समाज धरिक सहारा छइहे। मनुखक जीनिक लेल भोजन मूल छी। भोजनक उपरान्त

सभ्य समाजमे[22] जन्म नेने जुगानुकूल स्तिक आश्यकता दोसर आश्यकता भेल। जॉगली जीि तँ मनुख आब रहल नक्ष, आबक मनुख तँ बहुत ऊपर उक्ष गेल अक्ष। जइ अनुपातमे जीनि अक्ष तही अनुपातक ने आिसो चाही, तक्षना पढाइ-क्लखाइ, बर-बेमारीक इलाजक सॉग साक्षत्य-कला इत्याक्ष सेहो सभ चाहबे करी। यएह भेल मनुखक क्षजनगीक ढाचा।

अखन धक्ष जे अन्धकार मनुख समाजक बीच क्याप्त अक्ष ओ पकृक्षगत सेहो अक्ष आ कृक्षमगत सेहो। समाजमे र ढिदी विचार, अन्ध-क्षसिास जे पसरल अक्ष ओ कृक्षमगत अन्धकारक भारी सोत छी। रॉग-रॉगक अन्ध-क्षसिास पसरलो अक्ष आ नि-नि क्षरासँ पसारलो जाइते अक्ष। अखन बेसी नक्ष, अखन एतबे जे क्षथलाचलक मध्य जे दरभॉगा-लहेक्षयासरायमे सिस्थ्यक लेल अस्पताल बनल आ ओइमे आधुक्षक ढॉगक इलाजक जे बेस्थिा भेल, की ओकर विरोध नइ भेल? खूब विरोध भेल। गाम-घरक जेतेक ठक-फुक्षयाह छल, सभ अपना-अपना ढॉगे विरोध केलक। तँए की आइक मनुख ओकरा अधला बुझत। जीनिक एक मूल-भूत आश्यकताक पूक्षमतँ भइये रहल अक्ष।

दुक्षयाक बीच आजुक पक्षरशिक क्षजनगी केहेन बनए? ई तँ विचारणीय पश अक्षए। अखन जेकरा शहर-बजार बुझै छी, ओइमे क्षजनगीक सभ मूल-भूत आश्यकताक साधन बक्ष गेल अक्ष, जइसँ क्षजनगी असान भऽ गेल अक्ष। मुदा सीतापुर सन-सन गाम जे क्षथलाचलमे हजारो अक्ष, ओइमे कक्षछु ने अक्ष! गामक क्षजनगी भारी बक्ष गेल अक्ष। तँए अपन मातृभूक्षमके क्षयावा अपन शारीक्षरक

---

22 विकक्षसत समाजमे

मानक्सिक शव्तके जगा अपन-अपन पक्रिरिक भरण-पोरण लेल एका-एकी सभ क्कयो दुक्कयाक कोण-कोणमे जा बक्स रहला अक्छ।

ििचाक्रक रपमे अखनो हम क्कथलाक ओ रप देक्खये रहल छी, जे अदौक क्चन्तानधाराक अनुकूल अक्छ। तँए हम सभ आजुक क्कथलाक क्चताकन जँ नइ करब, तँ खाली जादू-िना ि छू-मन्तर कक्ह देलासँ भए जाएत ई सम्भि नक्ह अक्छ। हजार-लाख बरख पक्हलुका सतजुग-तेतासँ क्ककैल आइ हम सभ एकैसम सदीमे पहुँच चुकल छी।

बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे शत-पक्तशत सफल भेल। शत-पक्तशत सफल होइक पाछू दू कारण भेल। ने आन गाम जका सतरह रॉंक राजनीक्तक दल छल आ ने अजादीक आन्दोलनमे सतरह रॉंक विचार। कागेस आ िमिपॉथी माने पूजीिादी आ समाजिादी मात दुइये विचारधारा गाममे छल। जखने कागेस महाक्धिशनसँ बकास्त जमीनक पस्तािा पास भेल तखने सीतापुरक दुनू दल क्कल आन्दोलन रपमे आन्दोक्लत भेल। जइसँ सफल भेल। ओना कागेसी कायक्कता जे छला ओ सिामी सहजानन्दजीक विचारसँ पभावित छला आ अपनाके सिामीजीक भ् त सेहो बुझै छला।

सीतापुर गामक समाज सेहो देशके कल्याणक क्दशामे एक कदम बढाएब बुझलैन। तँए आन गाम जका ने सुक्द-सािइबला महाजन उक्छ कऽ ठाढ भेला आ ने भरना-बन्हकीबला भरनदार िा बन्हकीदार। तँए शाक्न्तपूणम ढॉंसँ बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे सफल भेल। मुदा बगलेक गाम रव्मणीपुरमे गधक्कच्चैन भऽ गेल।

बीसमी शताब्दीक दोसर दशकमे[23] गाधीजी बाहार आबि चुकल छला। जमीनक बासिसमि आ जमीन्दारी शोरण सुनला पछाइत आएल छला। तइसँ पहिने १८८० इर्सीमे कागेस पािी विदेशी हूम िारा बनि चुकल छल। जइक भीतर गाधीजी अपन कायसंचालन केलैन। १९२५ इर्सीमे िमिपॅंथी पािी सेहो देशमे बनि चुकल छल। १९२७ इर्सीमे सोसिलस पािी सेहो बनि गेल।

र‌वमणीपुर गामक सौभाग्य बुझी िा दुभाग्य िमिपॅंथी[24] पािी नइ बनल। िमिपॅंथीक रपमे समाजािदी[25] आ दछिनपॅंथीक रपमे कागेस बनल। दुनूक आधार बदैल जातीय आधार बनि गेल। सभ तरहक माने ओकािाक हिसाब, सम्पैिाक हिसाब लोक दुनू पािीमे विभाजित भS गेला। ओना र‌वमणीपुरक आमजन सेहो अॉगरेजी हुकूमतक विरोधमे ठाढ भेल, मुदा नेतृति रहल सम्पैतशाली लोकक हाथमे।

बकास्त आन्दोलन उठिते र‌वमणीपुरमे जातीय उन्माद उठि कS ठाढ भेल। जइसँ जातीय सता जोड पकडलक। देश सतित नइ भेल छल मुदा जातीय उन्मादक केतेक रॉक विादि गाममे ठाढ भइये गेल छल। मालगुजारीक लेल बैशाख-जेठ मासक रौदमे ईािपर ठाढ करब सदृश केतेको घिना भS चुकल छल। छोि-छोि गलतीमे पानिमे नहा घोरनक छता देहपर झािड चुकल गेल छल। गोला-लाठी भरि, भरि-भरि दिन रौदमे सजाए देल जा चुकल छल, िएह गाम छी

[23] १९१७ इर्सी

[24] कम्युनिष

[25] सोसिलस

रवमणीपुर।

बकास्त जमीनक आन्दोलनक हिसाबे रवमणीपुरक सूदिखोर-महाजन उच्च-उच्च ठाढ भेल। जहिना कांग्रेस जातीय आधारपर भीतरे-भीतर विभाजित छल तहिना सोसलिस्ट पार्टी सेहो भइये गेल छल। नरमदल-गरमदल कऽ कऽ कांग्रेस आ सोसलिस्ट, प्रजासोसलिस्ट, संयुक्त सोसलिस्ट इत्यादि इत्यादि केतेको विभाजन दुनूक बीच भऽ चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलनसँ अगुआ गेल सूदिखोरी, महाजनी।

ओना, दुनू पार्टीक बीच एहेन सेहो भेबे कएल जे एक-दोसरके अँखिया-अँखिया माने जातीय आधारपर बकास्त जमीनक आन्दोलन किछु-किछु रूपमे जरूर जागल। मुदा ओ सामुहिक नहि, राजनीतिक दलक अनुकूल जागल। जे मात विचारधाराक अनुकूल रहल, आन्दोलनक अनुकूल नहि। गामो तँ गाम छी। कोनो गाम एक जाइतिक तँ अछि नहि, जे किछु मुद्दापर एक भऽ चलबो करत। तहूमे रवमणीपुर तँ आरो अजीब अछि। ऐ गाममे देवी-देवता, स्थान-धर्मशाला सभ किछु बँटाएल अछि।

रवमणीपुरमे आठ कट्ठा जमीन दखल करैक प्रश्न उठल। गामक ई पहिल घटना छल। भेल ई जमीन दखल करैक प्रश्नपर एक जाइतिक शूमा बनल। काल्हि जमीनपर हर चढौल जाएत। रातिये भरिमे रॉग-रॉगक योजना गाममे बनए लगल। आठ बजे दिनसरमे हर चढैक समय जे निर्धारित छल, तइसँ पहिने, माने छबे बजेमे दू जाइतिक बीच एहेन मारि फँसि गेल जे दुनू दिससँ लहासे नइ खसल, एक दिससँ एकटा आ दोसर दिससँ दूटा मरबो कएल। अंग्रेजक लडाइमे तँ रवमणीपुरक एको गोरे जहल नहि देखने छला

मुदा साल भरि दुनू जाइतक लोक जहलेमे रहला, ईहो हिसाब तँ अजादीक आन्दोलनेक ऑग ने भेल। आकि नइ?

तिथि : २१ मई २०१८

जारी...

४.

सीतापुर गामसँ लऽ कऽ मिथिलाचल होइत सौसे देशे स्वतंत्र भेल। देशक जन-जनमे स्वतंत्रताक जे खुशी होइ छै ओ खुशीक लहैर उठबे कएल। ओना, शासकक रूपमे अँग्रेज सत्ता छोड़लक, मुदा देशक जे अपन समस्या हजारो बर्खसँ जनमैत आबि रहल छल ओ तँ आरो जटिल भइये गेल छल। जइसँ आगू बढ़ैक बदला पाछूए मुहे देश ससैर रहल छल। तैसंग अँग्रेज बहादुर हिन्दु-मुसलमानक बीच भारत-पाकिस्तान बना नमहर झगड़ाक बीआ छीटि‍ये देने छल। ओना, जँ देखल जाए तँ भारतक पश्चिमी सीमापर पश्चिमी पाकिस्तान भेल आ पूबसँ बंगाल कटि पूर्वी पाकिस्तान भेल, जे समुरसँ सेहो सटल अछिए। ओ भूभाग पाकिस्तान देशक रूपमे भेल, मुदा ऐठामक समाज माने मिथिलाचलक संग सीतापुरक समाज अदौसँ हिन्दू-मुसलमान, एके गाममे मन्दिरो आ मस्जिदो बना अपन पूजा-इबादत करैत आबिये रहल अछि। धर्मक नाओंपर जखन देशक विभाजनो भेल आ नव देशक रूपमे सेहो स्वतंत्र भऽ कऽ ठाढ़ भेल, तखन जातीय उन्माद नइ जगै सेहो तँ असम्भव नहिये अछि, सम्भव अछिए। एक-दोसरके एक दोसर कहैत रहबसँ विवादिक जड़ि मोटाइते छल। जइसँ दुनूक बीच जहा-तहा मारि-पीट, खून-खच्चरसँ लऽ कऽ सम्पैत्तिक संग इज्जत-आबरूक लूट-पाट सेहो भेबो कएल आ अखन धरि होइतो आबिये रहल अछि।

देशक अजादीक लेल जे देशभक्त छला हुनका सबहक सोझामे देश स्वतंत्र भेलासँ पूर्व जेतेक समस्या छेलैन तइसँ कतेको गुणा बेसी स्वतंत्रता पाबि‍तक पछाइत आगूमे एलैन। उजरल-उपटल, शोषित-पीड़ित देशक बागडोर देशवासीक हाथमे एलैन। जइसँ सबहक

विचारमे निं उठबे कएल। ओना, अजादीसँ पूमि िचाक्रक क्यन्तनधाराक ओ र प नक्ह छल जइसँ समस्याक समाधान होएत। एकमुहरी कक्हयौ आक्क एकसूती, सभ आन्द्ोलनीक उदेस ऑगरेजी शासनक विरि द छेलैन, तँए दोसर-तेसर समस्या गौण पक्ड गेल छल, जे सतिॉत्त भेला पछाइत पमुखतासँ आगू आएल।

आइक जे देश भारत छी, िएह अजादीक समय १९४७ इर्स्वीमे सेहो छल, क्कसानेक देश भारत तक्हयो कहबै छल आ आइयो कहबैए। भले लोक अपन जमीन-जत्था, गाम-घर छोक्ड शहर-बजार क्कए ने पकैड रहला अक्छ। खाएर जे अक्छ, मुदा एते तँ हमरा सभके बुझए पडत क्कने जे औझुका जका १९४७ इर्स्वीमे देशक जनसॅख्या नइ छल मुदा तैयो खाएब-पीब नइ घि छल सेहो केना नइ कहल जाएत। आन-आन देशसँ अन, कजक्क र पमे अबै छल आ हम सभ जनेर-गहुम खा-खा पाण बँचबै छेलौ।

क्कसानक दशा-क्दशा देखाएबो आ सुघारबोमे सिमी सहजानन्दजीक जबरदस भूक्मका रहलैन। क्कसानक समस्याके ओ अक्त सुक्म दृक्ष सँ देखै छला। सीतापुर गामक जे कागेसी कायक्कता सभ छला, ओ सभ सिमीजीक भ् त रहक्थन, जइसँ आन गामक अपेक्ा सीतापुरमे बकास्त जमीनक िपसी सफल र पमे सॅचाक्लत भेल। ओना, गाममे िमिपॅथी विचारधारा सेहो पलि र पमे रहबे करइ। जेकर पमाण अखनो सद: सबहक सोझमे अक्छए जे क्मक्थलाचलेक आन-आन गाममे अखनो बास भूक्मक समस्या अक्छ, मुदा सीतापुरमे से नक्ह अक्छ। ओना क्कसानक जे क्मम-कोवि होइए माने सीमान्त क्कसान ओ सीतापुरमे बेसी अक्छ। क्कसान पक्रिरक जे नि पीढीक लोक छैथ, ओ अपन-अपन खेतो-पथार आ घरो-दुआर छोक्ड शहर-बजारमे घर-दुआर बना रहए लगला अक्छ। मुदा गामो तँ गाम छी,

जखना एक दिस जमीन छोड़ब्यवहार छैथ तखना खेती केनिहारक अभाव सेहो भइये गेल अछि। सइयो रॉक ओझरी जमीनक बीच ठाढ़ अछिए।

एक दिस अजादीक किछुए दिनक पछाइत गाधीजीक हत्या भेलैन तँ दोसर दिस देशक शासन-बेवस्था चलबैले संविधान सभ सेहो बनि, कायम भेल। किसानी-ले जखना मालिक जरूरत अछि तखना पानियोक अछिए। पानिक साधन बनबैले पच्छिमी-पूर्वी कोसी नहरक चचम जोर-शोर चलिये रहल छल। तैसंग धार-धुरक बािढ़क बचाउ-ले धारके घेरबोक जरूरत छेलैहे। तैसंग सिंचाइक जरूरत सेहो छेलैहे। बोरिंगसँ पतालक पानि ऊपर आनि खेतके पटौल जाइए, ई लोक मात सुनैत छल। वास्तविक रूपमे केतौ छल नहि। ओना, गाम-गाममे चरो-चाचर आ पोखरियो-झाँखैर अछिए मुदा ओइसँ सिंचाइक समुचित बेवस्था हएब सम्भव नहि छल। एक तँ गाम-गामक पोखैर कोसी-कमला धारमे कटि बो कएल आ भथानो भेल, मुदा जइ गाममे नहि भेल तहू गाममे छोट-छोट पोखैर रहने ओइमे ओते पानि जमा रहिते ने छल जइसँ सिंचाइक पूर्ण सम्भव होइत।

ओना, गाम-गाममे पोखैरबला, माने जनकर पोखैर छिऐन ओ खेत पटबैक कोन बात जे लोकके नेहेबोमे रोक लगेने छल। किछु गामक पोखैरमे नहाइ-ले घाट फुटि-फुटि बनौल गेल छल तँ किछु गाममे किछु जाइतक समुदायके नहाइसँ रोकल जाइ छल। ओना, अटारह गण्डा पोखैरबला सीतापुर गाममे सिफम पाचेटा पोखैर ओहन छल जइमे किछु जातिके नहाएबसँ रोक छेलइ। ओना, सहजानन्द स्वामीजीक छतछायामे गाम-गामक किछु पोखैर सार्वजनिक भऽ गेल, मुदा अधिकाश गामक अधिकाश पोखैर बचले रहल। ओना, जखना मालिक उपजाक बखारी छी तखना पानियो छीहे। मुदा से तँ समुचित

बेसिथा भेला पछाइत हएत।

गुलामीसँ अजादीक सीमापर तँ देश ठाढ भेल मुदा हजारो रॉक अन्ध-विसासिो आ रुढ़िवादितो विन्तन धाराके जकैड कऽ पकडनहि छल जइसँ नि विन्तनधारा बकाये ने पेब रहल छल। हजारो बखक विदेशी शासनसँ तस्त समाज अखनो सतितताक महत बुझये ने पेब रहल छल। जइसँ मनुखक वजनगीक आधार मजगूत होएत। जक्हना कसानी वजनगी अनविसासिू छल तक्हना आन-आन छोि-मोि धन्धोक छेलैहे। एक वदस जक्हना गाम-समाजक कछु चुनल-चानल लोक समाजक आधारके मजगूत बनबैक विचारक सॉ कयागत रपमे सेहो वदन-राक्त एकबट केने छला, तक्हना अजानक अन्धकारमे पसरल समाजके अन्ध-विसासिक अन्धकारे वदस समाज विरोधी शव्त धकेल रहल छल, जइसँ देश आगू बढत आक पाछू जाएत से वणय करब कवठन छेलैहे।

कसानक दुभाग्य छेलैहे जे जे पाक कृवर लेल अमृत छी ओ मौनसूनपर वाभर छल। सालक मात तीन-चार मास ओहन अक्छ जइमे बरखो होइए आ बखाक सम्भावित मास सेहो मानल जाइए, मुदा मौनसूनोक एहेन वसयत ठेकान नक्हये अक्छ जे एते बरखा साले-साल हेबे करत। सम्भावित बखासँ कोनो साल बेक्सयो भऽ जाइए आ कोनो साल कम्मो होइए। तैबीच एहनो तँ होइते अक्छ जे कोनो साल नक्हयो भेल।

पैछला शताब्दीक सबहक ऐवतहावसक अनुभि लोकके छैन्हे जे जक्हना उनैसमी शताब्दीमे पचीसाि रौदी भेल तक्हना अठारमी शताब्दीमे सेहो भेबे कएल। रौदी तँ रौदी छी, ओकरो वक कोनो ठेकान अक्छ जे एते हएत वक एतबे हएत? एक मौसमक सेहो होइए आ दू-तीन-चार-पाचक सॉ बारह बखक सेहो भेबे कएल अक्छ। बारह बखक

रौदीक अनुभि मिथिलाचलक मिथ मानिसके सेहो छैन्हे। बुझले अछि जे बारह बरखक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेलैन सेहो जखन जनकजी अपने हाथे हर पकैड जोतलैन, तखन।

किसानक लेल जहिना मािट पूजनीय सम्पदा अछि, तहिना पािनयो अछि। मुदा ओ तँ तखन पूज्य हएत जखन ओकर विधिवत् अराधना करब। मुदा ऐठाम से तँ छल नहि। मिथिलाचलमे अिनसिचत जीिन सभ जीब रहल छला जइसँ कोनो साल समुिचत बरखा भेने जहिना खुशहाली अबै छल तहिना समुिचत बरखा नइ भेने ओकर विपरीत िस्थित सेहो होइते छल। तैसँग समाजमे पसरल रूढ़िवादी िचन्तनधारा भाग्य-तकदीरके अगुआ समाजक पछुआ पकैड सेहो पछुऐबते छल। माने नि चेतनाक उदयके रोकिते छल। मनुखक िजनगीक एक-एक समस्याके हजार-हजार रंगक विचार तेना ओझरा देने छल जे अपनो जीिन-मरण लोक अपनेसँ नइ बुिझ रहल छला। बरखा नइ भेल तँए कियो जाि-जाि नक नाच नािच-नािच बेगके उखैरमे कुिट, ओहन लोकक आँगनमे फेकै छल, जेकर वानती समाजमे झगडाउ लोकमे होइ छल। रौतुका घिना भोर होइते झगडा-लडाइक रूप लइ छल। तहूमे सामुिहक रूपसँ फेकल बेग, एकाकी पिरवारिक बीच विवाद ठाढ होइते छल। तेतबे नहि, बरखा नइ भेने पैघ-पैघ भगताइयो होइते छल आ जगो-जाप होइते छल। एक तँ उपजा नइ भेने लोकक घर खाली रहै छेलै जइसँ जीिन किठन छेलै, तैपर सँ पिरयाप्त खचमसेहो होइते छेलइ।

मािट-पािनक संग किसानी िजनगी-ले नीक-नीक बीजक संग

नीक-नीक लूर[26]क जर रत सेहो अछिए। कोनो देशक, माटि-पानि-खान-पहाड मूल उत्पादित सम्पदा छी। ओना ऐ चारक हिसाबे, माने माटि-पानि-खान-पहाडसँ अपन देश बहुत सम्पन अछिए। तहूमे मिथिलाचल तँ आरो बेसी सम्पन अछि। मिथिलाचलक जेहने माटि पवित[27] अछि तेहने पानि सेहो गुनगरक संग पर्याप्त सेहो अछिए। दजनो नदी जहिना सालो भरि बहता अछि, तहिना मौसमक अनुसारे बरखा सेहो होइते अछि। दुनियाक कोनो देश एहेन नहि अछि जेकर माटि एहेन उर्वर होइ। जँ कोनो देशक माटि एहेन उर्वर अछियो तँ ओकर दोसर साधन ओहन नइ अछि, जेहेन अपना सबहक अछि। कृषिक पैदावार मौसमक अनुकूल सेहो होइते अछि। तहूमे अपन देश आन-आन देशसँ बेसी नीक अछि। किएक तँ किछु देश एहेन अछि, जैठाम सालो भरि एकरंगाहे मौसम रहैए ि एकसँ आगू बढ़ि मेढ-दू मौसमक होइए। माने ई जे कोनो देश सालो भरि ठण्ढे रहैए तँ कोनो देश सालो भरि गरमे रहैए। तहूसँ विचित ई अछि जे कोनो देशमे बरखा होइते ने छै, तँ कोनो देशमे सालो भरि बरखा होइए। जइ देशमे सभ साल, सालो भरि बरखे हएत तइ देशमे कृषि कायमकेना हएत? मुदा ओइठाम पकृतिक अनुकूले पैदावार होइए। तथापि अखन धरि माने बीसमी सदीक पाचम-छठम दशक धरिक बीच जे किसान देश भारतक किसानी जिनगी रहल ओ आन बहुतो देशसँ पछुआएल रहल, जइसँ जे उत्पादन[28] हेबा चाही, से नहि भऽ पबै छल। तेकर

---

[26] तकनीक

[27] उर्वर

[28] उपज

अनेको कारण छल। जहिना समुचित जानकारक[29] अभाव छल तहिना समुचित खेती करैक सम्बन्धित औजारक संग समुचित बेवस्थाक अभाव सेहो छेलैहे। जुग-जुगसँ अबैत जहिना कृषि औजार छल तहिना जुग-जुगसँ अबैत कृषि कार्यक तकनीको छेलइ। बेवस्था ओहन छल नहि जे समुचित ढंगसँ कृषि संचालित कएल जाइत। ओना, बेवस्थाक एक नहि दू दिशा अछि, मुदा दुनू दिशा अन्धकारपूर्ण छल।

जहिना निज सरकार गठित भेने साइयो-हजारो रंगक निज-निज समस्या उठैए, तहिना देशी सरकार गठित भेने, तहूमे अंग्रेजी हुकुमतक तुरन्त पछाइत देश भरिमे अनेकानेक समस्या आगूमे आएल। ओना, सरकारी तंत्रके मजगूत आ कमजोर हेबाक सेहो कारण अछि मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जैठाम पेटकि[30] समस्या विकराल रूपमे मुँह बौने छल, तैठाम जिनगीक जे दोसर मूल आवश्यकता छल तैपर धियान केना जाएत? तहूमे अंग्रेजी शासनक खिलाफ साधारण लडाइयो तँ नहिये भेल। कोनो दू देशक बीच लडाइ भेने जेकरा जमीनपर लडाइ होइए, ओकर अर्थबेवस्था कमजोर होइते अछि। तँए सरकारी बेवस्था कमजोर छेलैहे जइसँ कृषि पंगु बनले रहल। ई भेल एक दिशा, दोसर दिशा अछि समाजिक बेवस्था। अपना देशक समाजिक बेवस्था सेहो कृषि केतक प्रतिकूले छल। समाजिक रूपमे कहियो कृषिके समुचित ढंगसँ बेवस्थित करैक विचार समाजक मनमे उठबे ने कएल। ओना, सोलोअना नहि उठल, सेहो नहिये कहल जा सकैए। गामक-गाम बीच जखन रौदी पसरैत छल तखन ओइ गाम

---

29 कृषि कार्यक जानकार

30 भूखक

होइत जे बहता धार सभ छेलै, ओकरा समाजक रूपमे बाद्ध[31] गामक खेत पटि जाइ छल। मुदा तोहूमे जबरदस बाधा उपस्थित भेल। बाधा ई भेल जे जनिका जेतेक बेसी सिंचाइ होइतैन तेनकर सहयोग तेतेक कम भऽ जाइत छल। माने ई जे जनिकर खेत बेसी पटै छेलैन, जइसँ बेसी उपजा होइ छेलैन, ओ रौदी-दाहीक ताकमे रहै छला। ताकक कारण ई जे महगके अनो बेचलौ आ सूद-सबाइक संग बन्हकी-भरनाक लाभ सेहो उठेलौ। मुदा मध्यम किसानसँ लऽ कऽ सीमान्तो किसान आ खेतमे काज केनिहार मजदूरोक दशा कमजोरे होइ छल। जइसँ जहिना कृषि क्षेत्र पंगु बनल छल तहिना खेतीपर जीविका धारण करैबला किसानो-बोनिहार पंगु बनले छला। ओना, जएह साधन छि जएह सम्पदा छल ओकरो उपयोग समुचित ढंगसँ कएले जा सकै छल। कम्मो साधनसँ नीक काज होइए आ बेसियो साधन रहनौ जँ करैक इच्छा नहि रहल तँ किछु ने होइए।

नवि सरकार गठित भेला पछातियो कृषि क्षेत्रके अनदेखी कएल गेल, जइसँ अछैते साधनक[32] रहने पेटकि भूख रहबे कएल। यएह देश छी जे १९७१ इस्वीक पछाइत भूखक[33] समस्या मेटिलक से तँ उनैस साए पचासो-बाविमे मेटिएल जा सकै छल। जे समस्या भूत बनि देशके पछुएने रहल।

कृषि क्षेत्रमे विशाल साधन मौजूद अछि। जे ओहिना-क-ओहिना पंगु बनल रहल। ने पानिक उपयोग समुचित ढंगसँ भेल आ ने मावकि

---

[31] धारक पानिके घेरि

[32] कृषि सम्पदाक

[33] पेटकि

भेल। दुनियाक अनेको छोट-पैघ देश ओहन अछि जे कृषि पैदाबारसँ सम्पन्न आइये नहि, बहुत पहिनहिसँ रहल अछि।

१९५२इस्वीक चुनाव भेल। बहुत किछु अधिकार आमजनकें देल जा चुकल छल, मुदा समाजिक ढाचा ओइ अनुकूल नइ छल, तँए बेसी अधिकार-कर्तव्यक बोधो आ बेहिारो संविधानक पनेमे दबल रहि गेल। ओना, सौसे देशमे चुनाव कि पदक्रमे अपना चुनाव भेल, मुदा नेगरा देशक नेगरी अजादीक जे होइ छै, सएह भेल।

सीतापुर गाममे मात लोअरे पाइमरी स्कूल छल, आगूक नहि छल। ओना, सीतापुरक बगलक गाम रोहितपुरमे मिडिल तकक पढाइ होइ छल। ओहू गाममे हाइ स्कूल नहि छल। सीतोपुर आ रोहितोपुरसँ दस कोस हटि नन्दपुरमे हाइ स्कूल छल, मुदा ओइठाम पढैले छात्रावासिमे रहब जररी छेलैहे।

१९५३ इस्वीमे हरिचरण मिडिल पास केलक। ओना, देविचरण सेहो साठि बखरक उमेर पार कइये चुकल छला जइसँ जेना पहिने काज-उदम करै छला तेना आब नहिये कएल होइ छेलैन। जेहनो खेती पहिने होइ छेलैन, तेहनो आब नइ भेने उपजा-बाडी सेहो कमए लगलैन। देविचरणक बेटा- राधाचरण अकर्मिन छला। खेती करैक अपना कोनो ऊहि नहि छेलैन आ जेहो छेलैन तहूमे देह चोरबै छला। देह चोराएब भेल काजसँ छुट्टि काबि, माने नइ करब। राधाचरणक बेटा- हरिचरण सेहो तेरह-चौदह बखरक भइये गेल छल। साधनक अभाविमे हरिचरण हाइ स्कूलमे नाओँ नहि लिखा सकल। अपन वारैत शक्तके देखैत देविचरण हरिचरणके कहलैन-

“बौआ, आब हमर कोनो आशा नइ करह। तखन तँ खेती करैक जे लूरि अछि, बेसी-सँ-बेसी ओ तोरा बुझा देबह।”

हरिचरणक मनमे अखन तक नोकरी करैक कोनो विचार नहि उठल छल। उठबो केना करैत, एक तँ बेसी पढल-लिखल नहि, दोसर- गामक-गाम बेरोजगार युकिसँ भरल छल। बाबाक विचार हरिचरण मानि बाजल-

“बाबा, अपन काज हुअए आकि अनकर काज, केतौ तँ मेहनतेक फल भेति। तहूमे जखन अपना खेत-पथार अछि तखन जँ नोकरी करए जाएब तँ अपन खेती-पथारी केना हएत?”

हरिचरणक निरुत्तरित विचारके देखिरण नीक जका विचारलैन। जेते विचारमे गम्भीरता अबैत जाइन तेते मन मुकुलतसँ प्रमुकुलित होइत प्रफुल्लतसँ प्रफुल्लित प्रफुल्लित होइत बढल जाइन। अपन प्रकृतिसँ प्रकृतित करबैत देखिरण बजला-

“बौआ हरि, पूर्वजक अरजल जे सम्पैत छह ओ बीचमे बोहा गेल छेलह, माने क्षलाम भऽ गेल छल, ओकरा हम पुन: जीवित करैत अपन बनेलौ। गामेमे नजैर उठा कऽ देखह जे केते परिवार अछि जेकरा तीन बीघा खेत छइ। से तँ अपना भइये गेलह।”

स्वीकारोक्तिमे हरिचरण बाजल-

“हँ, से तँ भइये गेल बाबा।”

हरिचरणक स्थिर होइत विचारक स्थितिके देखिरण आरो स्पष्टीकृत करैत बजला-

“बौआ हरि, अखन तूँ नि-उत्तरित सूर्यमजका लौकित लाल तँ नहि मुदा पीवडित ज्वारौछ लालीक रूपमे जरूर छह, जेना-जेना समय आगू बढैत जाएत, तेना-तेना लालीपन धबैत जेतह। तँए, अखन बेसी नइ कहबह। एकेटा अन्तिम बात अछि से पुछि लइ छिअ।”

स्वपाशु पक्षी जका हरिचरण बाजल-

“की पुछए चाहै छी बाबा?”

देचिरण बजला-

“बौआ, मौखिक परीक्षा जका पुछबेटा नइ करै छथि। सॅफ्किलमेत र पमे पुछै छथि। अपन समपमा अपना-ले करबह आकि अनका-ले?”

बाबाक विचार सुनि हक्चरण बाजल-

“बाबा, अखन अहा जीबै छी तखन हमर सॅफ्किलम आकि विकिल्पे की।”

कावथ : २४मई २०१८

जारी...

५.

पन्द्रह अगस्त १९४७ इस्वीमे लालकिलापर स्वतंत्र देशक क्तरंगा झण्डा फहरा गेल। ३० जनवरी १९४८ इस्वीमे गाधीजीक मृत्यु गोली लगलासँ भऽ गेलैन। २६ जनवरी १९५० इस्वीमे देशक अपन संविधान लागू भऽ गेल। १९५२इस्वीमे लोको सभा आ राज्यक विधान सभा-ले सेहो चुनाव भऽ गेल।

१९५२इस्वीक आम चुनाव देशक ऐतिहासिक चुनाव छल। ऐतिहासिक ऐ मानेमे जे जेतेक देश भारत आइ अछि ओतेक भारत शासनक दृष्टिसँ पहिने नइ छल। राजा-रजबारसँ लऽ कऽ जमीन्दार, महन्थानासँ देश भरल छल। किसानक देश भारत रहितो किसानक मूल पूजी राजा-रजबारसँ लऽ कऽ महन्थाना-जमीन्दार धरिक हाथमे घेराएल छल।

ओना, लोक सभाक चुनावमे जहिना देशक शासन (केन्द्र शासन) कांग्रेस सरकारक हाथ आएल तहिना राज्यक शासन सेहो कांग्रेसक हाथमे आएल। मुदा केन्द्रोमे आ राज्योमे एकछाहा कांग्रेसेक प्रतिनिधि नहि पहुँचला, अनेको राजनीतिक पार्टीक प्रतिनिधि सभ पहुँचल छला। दिल्लीक शासनमे जहिना पण्डित जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे कांग्रेसी सरकार बनल, तहिना अनेको पार्टीक बीच कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि सेहो विरोधी दलक नेतृत्वमे ठाढ़ भेला। कांग्रेस पार्टीक अलाबे आन सभ पार्टीसँ बेसी कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि छला। चुनावसँ पूर्वमे सभ पार्टी अपन-अपन घोषणा पत्रक माध्यमसँ अपन-अपन कार्यक्रम निर्धारित कऽ नेने छल।

देशोक बीच आ राज्यो सभक बीच समाजिक-आर्थिक विषमता ताँ छेलैहे। कोनो-कोनो राज्य औद्योगिक क्षेत्रमे अगुआ विजनगीक मूल

समस्याक समाधानमे सेहो अगुआ गेल छल, जइसँ ओइठाम रोजगारसँ लऽ कऽ शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सभ किछु अगुआ गेल छेलइ। मुदा अधिकांश राज्य पछुआएल छल। पछुआएबो एके रंगक नहि छल, रंग-बिरंगक छल। कोनो राज्य अपन जमीनके पगहाक छिरीपर चढा नेने छल, तँ कोनो राज्य पाछुए मुहे ससैर रहल छल। केरल-बंगालक संग आनो-आनो राज्य सभ अपन अर्थव्यवस्थाके छिरीपर चढबए लगल छल। ओना, अपन बिहारो तइमे पाछू नहि छल। घराडीक जमीनके बेलगान करबा चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलन सेहो मिथिलांचलमे जन्म कऽ भेल। मुदा बकास्त जमीन तँ ओ जमीन ने भेल जेकरा अंग्रेज बहादुर सर्वे-सेटिलमेन्टसँ १९०३ ईस्वीमे फाइनल केने छल। मुदा तँए कि पुस्त-पुस्ताइनसँ लोक खेती करैत नइ आबि रहल छला, सेहो बात तँ नहिये छल। मुदा हुनका सबहक लेल जमीनक कोनो अधिकार पत नइ छेलैन, तँए ओ सभ बँटदारक रूपमे अपनाके बुझै छला। जमीन उपजबैत रहला, अगो-जनारसँ लऽ कऽ अधिया-बटिया बटैति खेतबलाके अपन कजका सुद्द-सबाइ चुकबैत खाली हाथे घर घुमैत रहला। तँए एहेन खेतिहर लेल नियमरासँ बटाइ कानूनक जरूरत भेल। ओना, किछु परिवारके बेलगान घराडी छेलैन मुदा हुनको सबहक घराडीक लूटि-पाटि होइते रहैन। ओना, बेलगान घराडीपर रहनिहार आ खेत उपजौनिहारक नाओंसँ 'विसकमी बँटाइ'क खतियान सेहो बनि चुकल छल मुदा तेकर अतिरिक्त तो आधासँ बेसीए बँटदार छुटिलो छलाहे। मिथिलांचलक साम्यवादी पार्टी अपन चुनावी घोषणा पत्रमे अपन समस्या-समाधानक प्रस्ताव रखि चुकल छल, खेतीक लेल मानवि मूल पूजी छीहे। लिखितसँ मौलिक धरि अपन मूल समस्या जेना- भूमिहीनके बासभूमि, खेत उपजौनिहारके विसकमीक बटाइक अधिकार, अधिक जमीन रखनिहार जमीन्दार-महंथानाके भूमि

हदबन्दीक भीतर आनब आ ओकर शेर जमीन उपजौनिहारक हाथमे देब इत्यादि। तैसँ पीबैसँ लऽ कऽ खेत पटिबै धरिक पानिक बेवस्था, अइले कोसी नहरिक सँ गाम-गाममे पसरल पोखैरिक जे समस्या सभ छल तेकर समाधान सामिलातिक रूपमे हुअए, इत्यादि-इत्यादि। ऐ सभ समस्याक समाधानक लेल सामर्थ्यवादी पार्टी उपयुक्त कऽ ठाढ़ भेल।

मिथिलाचलक सौभाग्य रहल जे ऐठाम महान-महान साधक लोकनिक आविर्भाव सदिकाल होइत रहल। खाली आबाजाहिये नहि भेल, ओ सभ मिथिलाचलके अपन कर्मभूमि बना जीवन भरि सेवा करैत रहला।

सन् १९५५ मे विनोबा भावे झंझारपुर एला। नमहर सभा भेल छेलैन। अखन जे थानासँ पश्चिम औद्योगिक क्षेत्रक रूपमे देखै छी, ओइ समय ओ नमहर मैदान छल, जैपर फुटबॉल सेहो खेलल जाइत छल, ओही मैदानपर सभा भेल छल। भूदान आन्दोलनक रूपमे जमीनक आन्दोलन विनोबाजी ठाढ़ केलैन। हुनक माग रहैन अपन जमीनक छठम् हिस्सा जमीन दान करू।

एक दिस तेलांगनाक सशस्त्र लड़ाइ जारी छल आ दोसर दिस भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। ऐ आन्दोलनमे पेम-पूर्वक स्वेच्छासँ अपन जमीन दान कएल जाइ छल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल छल।

परिवारिक रूपमे जहिना जीविकाक लेल खेत आ खेतीक समस्या छल तहिना गाम-समाजक रूपमे सेहो अनेको समस्या छल। एक दिस नवस्वतंत्र देश, दोसर दिस धरतीसँ अकास धरि अनेको समस्या सबहक सोझामे उपस्थित भेल। गाममे एक दिस जहिना पेयजल समस्या छल तहिना दोसर दिस शिक्षा, आवास, रोजगार आ

चिकित्साक समस्या सेहो छल। गाम-गाममे हैजा, चेचक, मलेरिया इत्यादि अनेको संक्रामक बेमारीक पकोप होइत रहै छल। जइसँ अनेको लोक मरै छला। ने पढाइ-लिखाइक लेल विद्यालय छल आ ने बेमारीक लेल चिकित्सा सुविधा। तैबीच अन्ध-विसासि तेना पसरल जे मनुखके समुचित दिशा दिस बढए नहि दैत छल। अन्हार घर सापे-साप सदृश ितारिण बनल छल।

रा् यो सरकार आ केन्द्रो सरकारक बीच अपन-अपन एहेन-एहेन समस्या सभ छल जे अथाभामि किछु कइये नहि पेब रहल छल। ओना, अथाभा सेहो छल मुदा मूल अभा छल कुशल केवहारक।

मिथिलाचल सभ दिनसँ धार-धुरक इलाका रहबे कएल अछि। दजनो धार मिथिलाचलक बीच अछिए। ओहू धार-धूरमे सभ धारक गति-विधि एके रंग सेहो नहिये अछि। किछु धार एहेन अछि जे बेसी का-खो करैए आ किछु एहेन अछि जे बहैत तँ अछि सालो भरि मुदा समलि गतिये। तैसंग मरल धार सेहो अछिए। मरल धारक माने भेल, ओहन धार जे बरसातमे तँ किछु दिन बोहितो अछि मुदा रहैए सभ दिन सुखले। जइसँ ने ओइ जमीनमे उपजा-बाडी होइए आ ने उपयोगक कोनो दोसरे काज। तैसंग माविकि रपमे सेहो दुभाग्य रहल अछि जे उपजाउ मावि माने उमि शव्तबला खेतक मावि भँसि गेल आ ओकरा ऊपर दोखरा बाउल भरि गेल।

कोसी-कमला नदीक उपर सबहक सोझमे छेलैहे। ओकरो रोक-थामक लेल मिथिलाक किसान उबि कऽ ठाढ भेला। कोसी नदीके दुनू भागसँ बान्हि ओइ पानिक उपयोग सिंचाइ-ले करैक योजना बनल। बान्हक संग फाकिबला पुलो आ नहरोक योजना बनल।

तैसाँ बिजली उत्पादन लेल मैम बनबैक अिज सेहो उठले छल। ओना, देश नि-नि सितॉत भेले छल। जइसँ देशािसीमे सितॉताक उत्साह सेहो बनले छेलैन। कोसी नदीक दुनू तिबन्ध बनबैले एकाएक जन-सैलाि उमैड गेल। माने जन-आन्दोलनक रपमे सहयोग भेल। गाम-गामसँ लोक अपन शमदान करैले पहुँचल। बान्हो बनल, नेपाल सीमाक बीच फािकिबला पुलो बनल। सबहक मनमे िासिास भेल जे दुनू देशक जमीनक िसॉचाइ हएत। मुदा आइ लक-धक साठ बखम बीतलोपर कोसी नहरक योजनाक कीि गत अिछ, ओ सबहक बीच अिछए। देशक अजादीक लडाइमे जे पीढी बिलदान देलैन हुनकर आइ तेसर पीढी गुजैर रहल अिछ, गाम-घर छोिड-छोिड ओ सभ पडाइन कए रहला अिछ।

जिहना अपना देशमे अॉगरेजी शासनक िरिद १९३५ इर्सीक पछाइत जन-आन्दोलन उग भेल छल तिहना दुिनयाक बीच सेहो युद जारी छल, जेकरा िितीय िश युदक रपमे जनै छी। दू भागमे बँिि दुिनयाक बीच जबरदस लडाइ फँिस चुकल छल। पिहल िश युदक भुितभोगी जमर्नी भS चुकल छल। १९१७ इर्सीमे रसमे साम्यिादी पािीक बीच सता आिब चुकल छल। दोसर िशयुदमे एक िदस साम्यिादी देश आ दोसर िदस साम्ाियिादी देशक समूह आमने-सामने भS चुकल छल।

ओना, दुिनयाक इितहास लडाइयेक घिनासँ भरल अिछ, मुदा अखन धिरक जे लडाइ दू देशक बीच रहल ओ एक िचारक किहयौ आिक एकधाराक, बीच रहल। िकएक तँ एके िचारधाराक शासन-तॉत अपन-अपन बजार-ले लडल छल। मुदा िितीय िश युद, जेकरा शीत युद सेहो कहै िछऐ, ओ िचािरक रपमे लडाइ भेल।

िितीय िश युद समाप्त भेला पछाइत नि-नि केतेको देश

साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। तीस सितम्बर १९४९ इस्वीकए माओत्से तुंगक नेतृत्वमे चीन सेहो साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। जे देश ओहू समयमे दुनियामे सभसँ अधिक जनसंख्याबला देश छल।

द्वितीय विश्व युद्धसँ पूर्व दुनियाक अनेको देश सामाज्यवादी देशक उपनिवेश छल। अपन देश सेहो छेलैहे। ओइ सभ सामाज्यवादी देशक एकेटा मनसा छेलै जे उपनिवेश देशक लूट-खसोट कऽ अपने समृद्धशाली बनल रही। आम-जनक जीनिसँ कोनो मतलब नहि छल, मनुखक जिनगी जानवरोक जिनगीसँ बत्तर बनले छल। ओही बत्तर देशमे अपनो सभ छेलौं। द्वितीय विश्व युद्धमे किछु सामाज्यवादी देश पस्त भेल आ साम्यवादी देश- सोवियत संघ सेहो सभ तरहे जर्जर भऽ गेल। मुदा किछु भेल, तैयो सोवियत संघक आम-अवाम अपन देशक सत्ता कायम रखलैन। दुनियाक जन-गण अपन अस्तित्वके सेहो चिन्हलैन। जइसँ युद्ध समाप्त भेला पछाति ओइ देश-देशक भीतर जन-आन्दोलन सेहो जोड पकडलक। दुनियाक बीच दुनू विचारधारा माने पूजीवादी-सामाज्यवादी आ समाजवादी-साम्यवादी अपना-अपना गतिये बढए लगल। एका-एकी केतेको देश सामाज्यवादी जालसँ निकैल साम्यवादी विचारधाराक अनुकूल अपन पगतिक बाट सियाँ बनबए लगल। जइसँ दर्जनो देश साम्यवादी बेवस्था अपनौलक।

अपना सभ एशिया महादेशमे छी। जे आन सभ महादेशसँ सघन आबादीबला महादेश अछि। चीनमे साम्यवादी शासन स्थापित भेला पछाइत, वियतनाममे साम्यवादी आन्दोलन जोर पकडलक। ओना, छोट-छीन देश वियतनामो अछि आ कोरिया सेहो अछि, मुदा दुनूमे जबरदस लडाइ सामाज्यवादी देशक संग फँसल। कोरिया बाँटि कऽ दू भाग भऽ दू देश बनि गेल। मुदा वियतनाम बँटाएल तँ नहि, मुदा

आइ धरिक दुनियाक ऐतिहासिक लडाइमे सभसँ अधिक दिन तक लडैबला देशमे अपन पथम स्थान तँ बनौनहि अछि। वियतनाम लक-धक ३४बखम धरि लगातार लडैत रहल। हो-ची-मिन्हक नेतृतमे वियतनामक युद भेल छल। बम-बार दक पभा वियतनामक एक-एक इंच जमीनक उिशाशव् तके नष कऽ देलक। मुदा साम्यिादी शासन बकते ओइठामक जन-गण देशभ् त सभ अपन-अपन पूणमशव् त लगा देशके समृदशाली आ उनतशील बनेबे केलैन। देिचिरण जहिना अपना ऑखिये देशक शासनक उतार-चढा देखने छला तहिना अपन पिरिरक उतार-चढा सेहो देखते आिब रहल छला। १९२० इसिीसँ पूिमजे देशक अजादीक आन्दोलन छल ओ शुर आती अिस्थामे छल, तँए आम जन-गण तक नहि पहुँचल छल। मुदा गाधीजीक जे चम्पारण सत्यागह भेलैन, तइ दिनसँ देशक जन-गणक बीच निशव् त पैदा लेलक। १९१७ इसिीमे गाधीजी चम्पारण आएल छला। समष मुदा हुनकर छेलैन। मुदा छेलैन जमीन्दारक शोरण। केना जमीन आ जमीनक उपजाक लूि सँॉ आरो-आरो केतेको लूि धनीक िगम गरीबक करै छल, से विचार सािमिकक मॉचपर उठल। ओना, ओइसँ पूिमअँगरेजी नीलहा िपारी जमीनक छीना-झपिी केना करै छल से बात नीलक कोठीक इदमिादक किसान खूब नीक जका जनिते छला मुदा ओ शोरण सीिमत दायरामे छल, तँए कम लोकक नजैर ओइ दिस बढल।

नीलक उपजाक लेल अनक उपजसँ अधिक उिम शव् तबला जमीन चाही। एक बेर जइ खेतमे नीलक खेती भऽ जाइ छल, ओ खेत चािर-पाच बखमक लेल उसिर जका भऽ जाइ छल। तेपािक किसाबसँ किसानक खेत नीलहा िपारी लइ छल। तेपािक माने भेल जे जँ छह कटाक कोला अछि तँ ओइमे मात दू कटामे पहिल साल

नीलक खेती करबै छल। लक-धक दू बखमएक खेपक नीलक फसलमे समय लगै छेलइ। मुदा से आन्दोलनसँ पूर्वि, माने १९२० इस्वीसँ पूर्वि समाप्त भऽ गेल छल।

नीलक खेतीसँ लऽ कऽ वसकमी, भाउली इत्यादि जमीनक वलामी तक देचिरण देख चुकल छला। अपनो पूर्विक जमीन केना वलाम भेलैन सेहो वपताक मुहे सुननहि छला। तैसँग अपने केना पुन: अपन पूर्विक जमीन आपस करौलैन सेहो बुझले छेलैन। अपन पवरिवरक अवस्तति के जीबैत देख देचिरणक मनमे जहिना खुशी होइत रहैन तहिना अपन ऐगला पीढी- अकर्मचन राधाचरणके देख दुख सेहो होइते छेलैन। राधाचरणके कमाइ-खाइक कोनो ऊहि नहि छल। ओना, देचिरण अपना जनैत राधाचरणके सुधारैक कम पवरयास नहि केलैन मुदा मनुखक सोभाि तँ सोभाि छी। जइ अनुकूल लोक अपन वजनगी सेहो बनैबते अछि। गाममे केतौ कीतम, अष याम, नाि होइत छल तँ माता-वपताके वबनु कहनौ राधाचरण ओइठाम पहुँच जाइ छल। खाइ-पीबैक बेस्थिा सेहो रहिते छेलइ। ओहीठाम रहि खेबो-पीबो करै छल। तहिना केतौ नाचे भेल आवक भोजे-भन्मारा भेल तँ राधाचरण चुपचाप, माने पवरिरमे वबना केकरो वकछु कहने ओतए चवल जाइ छल। भले ओकरा अधला नजवरये सेहो देखल जा सकैए मुदा से तँ अछि नहि। देचिरणके लाख कोवशश केला पछावतयो राधाचरणमे कोनो सुधार नहि भेल। माने राधाचरणके ने शम करैक बोध भेल आ ने शम-जीवकि जाने भेल। ओना, देचिरण अपन पवररिो आ अपन कारोबारक सचालन अपना वचारे कवरते छला जइसँ कोनो िचावरक बेधिान नहिये होइ छेलैन मुदा पवरिरक बीच मनुखक वजनगी तँ नदीक धारा सदृश पविहित होइते रहैए, तइमे वकछु बाधा तँ देचिरणक नजवरक सोझमे पवडते छेलैन। पडबो केना ने कवरतैन?

मनुख धरतीपर बहैत धार थोडे छी, ओ तँ चेतनशील जीनिक धार छी। जइसँ चेतनशील मनुखक चेतनापर पभाि पडब सोभाविके छल। ओहुना देखै छी जे धार सभमे जखन धाराक मध्य बाउल भक्र जाइए माने पानिक बहाकि बीच बाउल जमा भऽ जाइए तखन पानिक धाराके रोकक्रते अछि, जइसँ धाराक पिाह ठमैक दोसर-तेसर क्रिस मुँह बना बहए लगैए, तहिना ने मनुखोक िंगत विचारक पिाहमे शमहीनता एलासँ क्रिशाहीनता अबैते अछि। तँए देिचरणके कचक्तत हएब सोभाविके छेलैन।

सॉंयोग बनल, जहिना एक क्रिस देशक शासन विदेशीसँ सिदेशीक हाथ आएल तहिना अपन पूर्िजाक अरजल जमीनक अधिकार सेहो दोसराक हाथसँ देिचरणक अपना हाथ एलैन। सितॉत्र देशक सितॉत्र कक्रसानक रपमे देिचरण अपनाके देखए लगला। भले राधाचरणक स्िास्थ्यसँ सेहो ऐगला पीढीक भविसिक कचन्ता सोभाविके रपमे होइ छेलैन। ओना, हक्रिचरण सेहो तेरह-चौदह बखिक भइये गेल छल, मुदा जइ पक्रिरिमे माता, बाबा, परबाबा जीवित रहै छैथ तइ पक्रिरिमे तेरह-चौदह बखबलाके लोक बच्चे बुझैए, जेकर अिस्थाके खाइ-खेलाइबला सेहो मानले जाइए, मुदा से सभ पक्रिरिमे नइ होइए। एहनो पक्रिर सभ अछिए जइमे पैछला पीढीके असमाक्रयक मृत्यु भेलापर िा कोनो कारणे माता-बाबाक छाया हिलापर पक्रिरिक भार बच्चापर पक्रिते अछि। जइसँ खाइ-खेलाइक स्थान पक्रिरिक कचन्तो-कफक्रिर आ भारी-भारी काजक बोझ सेहो काच उमेरबला बच्चाक क्रिरपर चक्रिते अछि। ओना, हक्रिचरणके गात देख देिचरणक मनमे एते आशा बनले छेलैन जे भीरो-कुभीरक भार पोता उठाइये सकैए मुदा से ओकरा सॉंग अन्याय-अनुकचत भेबे कएल। जैठाम विकल्प रहैए तैठाम तँ सॉंकल्पक धरो सेहो गक्रिमान रहिते अछि, मुदा जैठाम

विकल्पे नहि, तैठाम तँ धारामे थोड-थाड रकाबि होइते अछि। खाएर, ई मात एकटि देविचरणेक सॉग हएत सेहो बात नहिये अछि। ओना, देविचरणक जे समस्या छैन ओ आनसँ थोडेक सलिो छैन आ थोडेक हलिो छैन्हे। सर्फ-क माने भेल जे जइ परविारिमे बाबा, बाप-ताता आ पुत- तीनू पीढीक तीनू जीवति छैथ। तहिना हलि ऐ दुआरे छैन जे देविचरण अपने उमरदार भऽ गेला अछि, जइसँ समरथाइक सामथर्क ओ रप दुबसा भइये गेल छैन, जइमे कठिन शारीरकि शम करै छला। तहिना दोसर पीढीमे राधाचरण जीवति रहितो शमचोर भेने शमहीन भइये गेल अछि। मुदा परविार तँ परविार छी। ओकर अपन कायकमत कािया छै, जइ बलपर ओ ठाढ भऽ आगू मुहे बढैए।

बानसुरका उखडाहाक आठ बजेक समय। परविारिक पतराएल काज, माने खेती-बाडीक काज नइ रहने, देविचरणके कासकन्ती रहबे करैन। ओना, माल-जालक सेवा-काज आगूमे छेलैन्हे मुदा जे समय खेती-बाडीक छेलैन, ओइमे कमी ऐने काज पतराएले छेलैन। दरब् जाक ओसारक चौकीपर बैस देविचरण चाह पीब नेने छला। तहीकाल हरचिरणके ऑगनसँ कािकलैत देखलैन। देखते हरचिरणके शोर पाडैत बजला-

“बौआ, एमहर आबह।”

बाबाक बात सुनि हरचिरण लगमे आबि चौकीपर बैसैत बाजल-

“की कहलौ, बाबा?”

हरचिरणक बात सुनि देविचरणक मन जेना पतालसँ उछलि अकासमे पहुँच गेल होइन तहिना भेलैन। मुदा उमेरो तँ उमेर छी, ओकरो अपन गुण-धमम अछिए। तहूमे देविचरण इमानदारीसँ अखन तक परविारिक गाडीक जुआ खबिचैत आएल छैथ, तँए असथिर भऽते

बजला-

“बौआ, अखन तक पिरवािरक भार अपन कपार सबज गाडीक जुआमे कन्हा लगा खीचैत एलौ, मुदा आब ओ सामथम नहि रहल जेकर खगता पिरवािरके अिछ। तँए...।”

‘तँए’ किह देिचरण चुप भऽ गेला। मुदा हिरचरणक मनमे िजजासा उपैक गेल। हिरचरण बाजल-

“बाबा?”

‘बाबा’क अिावाक् त हिरचरण िकछु ने बाजल। मुदा हिरचरणक मनक छीपल िवचार देिचरणक मनके हौर देलकैन। जइसँ रंग-रंगक िवचार, संकल्प-िवकल्पक संग उठए लगलैन, जइसँ निकुरि पोताके की किहतैथ आ की नइ किहतैथ, तइ बीचमे देिचरणक मन फँिस गेलैन। मुदा लगले देिचरणक मनमे उपकलैन जे िजनगीक कोनो ठेकान थोडे अिछ, ओ तँ बेठेकान अिछ। अखनो मिर सकै छी आ पचीस-पचास बखमजीिव यो सकै छी। तखन तँ बीचमे एकिा समस्या उपिस्थत भइये गेल अिछ, जे जइ रपे पिरवािरके हमर शमक खगता छै तेकरा पुरबैमे आब अपन दैिहक शिक्तक अभािक कारणे िकछु-िकछु बाधा उपिस्थत हेबे करत। मुदा हिरचरण सन नि शिक्तक उदय तँ पिरवािरमे भइये गेल अिछ, एकरा जँ सही ढंगसँ उपयोग करब तँ कोनो तरहक बाधा पिरवािरमे उपिस्थत नहि हएत। देिचरण बजला-

“बौआ, अखन तँ काजक बेर अिछ तँए अखन एतबे राखह। साझू पहर जखन दुिनयादारीसँ िनचेन हएब तखन सभ िकयो- तोहूँ, तोहर माइयो आ दािदयो एकठाम बैस िवचािर लेब जे आगू केना चलैक अिछ। जिहना हल्लुकसँ भारी काज पिरवािरक मध्य अिछ

तकहना नि-पीढीसँ पुरान पीढी धरि सेहो सभ छीहे।”

हरिचरण बाजल-

“से तँ छीहे। मुदा अहा किछु भेलाऐ तैयो तँ धान-गहुम दौन करैबला खोहक जोतल बरद जका मेहौता छीहे। जेना-जेना खोहपर अहा घुमबै तेना-तेना ने अहीक लागल बीचलो आ पैकि बरद जका हमहूँ सभ घुमबै।”

मुस्की दैत देविचरण बजला-

“अखुनका विचारके कानपर रखहह। साझूपहर सभ एकठाम बैस कोनो-ने-कोनो रस्ता निकालिये लेब।”

तिथि : २७ मई २०१८

जारी....

६.

जखनसँ देविचरण अपन पोताके कहलैन जे ‘बौआ, साझू पहर, परिवारिक सभ एकठाम बैस आगूक विचार करब’ तखनसँ हिनका मनमे बेर-बेर एिह पश घुरियाए रहल छैन जे परिवारिमे जहिना अिध-अनाडी हिरचरण अिछ, तिहना तँ आनो-आन अिछए, मुदा परिवारिक भार तँ ओकरे सबहक ऊपर ने पडत। तँए केतेक भार कोन रूपे केकरा देल जाए, तेकर िनणय करब साधारण बात निहये अिछ। मुदा नइ रिहतो भार तँ ओकरे देब अिछ। ओना, अखन अपनो जीबैत छी आ िपता-माताक संग दादी सेहो हिरचरणक सोझामे छइहे, जइसँ कोनो काज जँ गर गर बुिझयो पडतै तँ दोसर-तेसरसँ पुिछ ओइ काजके सही ढंगसँ कएलो तँ जाइए सकैए। जैठाम से निह रहैए तैठाम ने काजक सफलतामे िकछु-ने-िकछु गडबडी होइक सम्भाविना सेहो रिहते अिछ। ओना, मनुखक समािजक जीिन ओहन अिछए जेकर जीिन धार समाजक धार होइत पिवित्रत होइए जइसँ देखैक, जनैक आ करैक सम्भाविना सेहो रिहते अिछ। हँ, जैठाम समािजक जीिन नइ रहल, माने बेकतीगत जीिनधाराक धार ओइसँ िभन रहल तैठाम बेकती औआ-िबआ जाइते अिछ। मुदा जैठाम बेकतीक जीिन धार समािजक जीिनत धाराक संग पिवित्रत होइए, तैठाम तँ िकछु-ने-िकछु िसखबो आ सम्हरैयोक उपाय रिहते छइ।

जिहना देविचरणक मन अपन पोताक भविसक िदशा िनधारित करैमे ओझराएल छेलैन तिहना हिरचरणक मनमे सेहो बेर-बेर पश उिठ रहल छल जे बाबा की कहता, की पुछता आिक की करैले कहता। खाएर जे कहता मुदा बुझब तँ सुनला पछाितये ने आ बुझला पछाितये ने ओकरा सम्हारबोक कोिशश करब। िबनु बुझल आिक िबनु विचारल काज करैमे िकछु-ने-िकछु ओहन विघ-बाधा एलापर समस्यामे लोक

पकड़ते अछि। जकरा नहि जगह, माने कोनो देखल-जानल जगह कि कोनो बुझल-जानल काज, नहि लोकक लेल अन्हराएल जकाँ रहैत अछि, मुदा एहि काज सफलतापूर्बक केला पछाइत जीनि-शव्तमे तीनिगो तँ अबिते अछि।

किछु दिन बीतल। ओना, देवचिरण अपन पतीसँ आ पुतोहक बीच परिवारिक आन-आन गप-सप्प करैथ, मुदा सौझुका बात-विचार करैक योजना अखन तक दुनूमे सँ ककरो ने देवचिरणे कहने छेलखिन आ ने हरिचरणे कहने छेलैन। तँए हरिचरणक दादियो आ माइयोक मनमे कोनो विचारक अंकुर उठबे ने कएल छेलैन। ओना, जखन सभ एके परिवारिमे छी आ परिवारिक जिनगीक बातो अछि, जे किछु-ने-किछु सभके बुझलो छैन्हे, तैबीच सौझुका बैसारक जानकारियो देब ओते महत् नहिये रखैए, जेते आनक सँग रहैए। जिनगीक नीक-बेजाए बातो आ काजोक तँ किछु-ने-किछु जानकारी रहने सुगमसँ विचारोके फरिछाएब आ काजोके फरिछाएब सहायक होइते अछि। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि। ऐठाम तँ परिवारिके विचारो छी आ काजो छीहे। हँ, जँ कोनो नहि काजे आकि नहि विचारे रहैत तखन सामान्य जिनगीसँ हटिलो रहैत जइसँ किछु-ने-किछु नीक-बेजाइक सम्भावना रहबो करैत, मुदा सेहो तँ नहिये अछि।

साझक आगमन भेला पछातियो, ने देवचिरणेक मनमे कोनो तरहक उथल-पुथल छेलैन आ ने परिवारिक आने-आन जनक बीच। सासु-पुतोहुके बुझले ने छेलैन तँए हुनका दुनूक मनमे उथल-पुथलक कोनो सम्भावनो किए रहितैन। देवचिरण तँ सहजे परिवारिमे सहयोगीक रूपमे पोतापर नजैर गड़ौने छला तँए हुनका मनमे कोनो तरहक मलिनता किए रहितैन। हँ, हरिचरणक मनमे किछु-ने-किछु उथल-पुथल जरूर छल। बाबा की कहता की नहि..! बखाक पाकल

बुलबुला जका हरचरणक मनमे विचार उठबो करै छेलै आ अपने फुर्व-फुर्व मेंबो करै छेलइ।

अपन निधारित समयक हिसाबसँ किछु पहिनहि देचिरण दरब् जापर बैस मने-मन विचारए लगला जे कोन रूपे हरचरणके बुझौल जाए। ओना, परिवार सभमे एहनो होइते अछि जे जे परिवारिक सिरजन[ii] रहला ओ सबहक काजके ऑकि-ऑकि फुनि-फुनि सभके करैले कहिते छैथ, जइसँ परिवारिक सम्मिलित काज रहितो एक-दोसराक बीच दूरी रहिते अछि, माने ई जे सभके सभ काज नहियो बुझल रहल। ओना, एहेन भेलासँ एकटा एहेन विचार जनमिते अछि जे आनक काज नहि बुझल रहने दोसरक मनमे उठि जाइए जे हमहींटा काज करै छी आ दोसर-तेसर बैसले रहैए, तँए परिवारिक जँ सभके सबहक काजक जानकारी रहल तँ सबहक मनमे एहेन विचारक आगमन भइये जाइए जे सभ अपन-अपन काजक पाछू लागल छैथ, जइसँ किनको मनमे काज नइ करैक शंकाक आगमन नहिये होइए। तैसंग ईहो लाभ तँ होइते अछि जे परिवारिक सभ काज सबहक नजरियोपर रहल आ केकरो बैसल रहैक शंका नइ रहने सबहक पक्ष सबहक मनमे पेमो बढल।

देचिरण ई सोचि काजक निधारित समयसँ पहिने काजक पाछू लगि गेला जे जँ कोनो काज करैसँ पहिने ओइ काजक भूत-भविसपर नजैर दौडा देब तँ ओइ काजके सफल होइक बेसी सम्भावना बनिये जाइए। जँ से नइ भेल तँ काजक बहुतो बान्हु गप-सप्पक कममे नजैरपर नहियो चढैए, जइसँ विचार केला पछातियो किछु-ने-किछु बान्हु छुटि रहि गेने काजमे कमी होइते अछि।

देचिरणके दरब् जापर बैसल देख हरचरण सेहो आबि कऽ बैसल। मुदा बाजल किछु ने।

हरिचरणके चुपचाप बैसल देख देविचरणक मनमे जगलैन जे जखन दुनू गोरे काज करैक कममे उपस्थित भइये गेल छी, तखन जँ चुपचाप समयके ससकलए दइऐ सेहो नीक नहिये हएत। देविचरण बजला-

"बौआ, जखन दुनू गोरे काजक विचार करैले एकठाम बैस गेलौ तखन माइयो आ दाइयोके बजा लहुन।"

बाबाक आदेशमे बिना किछु जोड-घटाउ केने हरिचरण ऑगन जा दाइयो आ माइयोके कहलक। ओना, ओहो दुनू गोरे बिना किछु बजने-भुकने हरिचरणक संगे दरब् जापर पहुँचली। राधाचरण सेहो परिवारिक पमुखजनक सीढीपर छल तँए ओकरो रहब अनिवायिमहोइतै मुदा ऊहि नइ रहने परिवारिक गौण-पात बनि गेल अछि। होइतो अहिना छै जे जइ परिवारिमे जे जन जेहेन ऊहिगर रहल ओ अपन ऊहिक हिसाबसँ परिवारिक क्रियामे ओते संलग्न भइये जाइए।

तीनू गोरेके देख देविचरण बजला-

"बौआ, जइ परिवारिमे अपना सभ छी ओ परिवारिर एके गोरेक नहि, सबहक छी। तँए सभके अपना-अपना उत्तरदायित्व ऐ विचारके नीक जका मनमे रोपि अपना-अपनाके ओइमे संलग्न रखबाके चाही। जँ से नइ हएत तँ किछु गोरेके काजो आ जबिदेहियोमे उदासीनता औत आ किछु गोरे जे अपन परिवारिके अपन बुझि सेवा करत ओ दोसरसँ अपनाके महत्पूर्णम बुझबे करत। तँए सबहक बीच सबहक काजक जानकारी रहब जरूरी अछि।"

ओना, हरिचरण अछि तेरहे-चौदह बरखक, मुदा देविचरणक विचारके नीक जका बुझि गेल। बाजल-

"बाबा, ई तँ भेल विचारक केतक बात, मुदा बेविहारक केत

तँ ऐसँ अलगो भऽ सकैए कने?''

हरूचरणक विचार सुनि अपन सहमत जतबैत देविचरण मुडी मोलबैत बजला-

''बेस बात बौआ कहलह। परिवार तँ काजक धुरी बना कऽ ने चलैए। तेही सबहक विचार करैले ने कहने छेलियह जे सभ कियो एकठाम बैस एक मतक रस्तासँ परिवारके आगू डेग बढाएब।''

देविचरणक विचार सुनि हुनक पती बसाँहैसरी बजली-

''हम दुनू सासु-पुतोहु स्त्रीगणे भेलौ, केतबो हएब तँ अपन घरे-अँगना आ खेते-पथार धरि हएब। तहिना हरूचरण सेहो बाले-बोध भेल। राधाचरणक कोनो ठेकाने ने अछि जे ओ की अछि आ की करत।''

पतीक विचार सुनि देविचरण मुस्की भरैत मुडी मोला-मोला मने-मन विचारए लगला। पतीक विचार सेलोअना सत् अछि, मुदा सत् रहितो सोलोअना उचित केना कहल जाएत? हँ, जइ परिवारिमे पुरुख जीवित रहला, माने पुरुख पधान परिवारिमे एहेन विचार सम्भव भइयो सकैए, मुदा जइ परिवारिमे पुरुख नइ रहला तइ परिवारिमे तँ महिलेक ने पधानता हएत। तैठाम हिनक विचार केना सम्भव भऽ सकत। मुदा अखन तँ गाम-समाजक विचार करए नहि बैसल छी, अखन तँ मात अपन परिवारिक विचार करए बैसल छी, तँए अखन तँ पुरुखे पधान परिवार भेल। नीक हएत जे पहिने अपन परिवारिक भूतक जानकारी संक्षेपमे सभके दिऐ। जहिना कोनो धारक उदगम स्थलसँ बीचक पनिहित होइत धाराक धार अन्तम कोनो अगम धारे वा समुरेमे समाहित होइए तहिना ने परिवारोक अछि। ओना, पहाडक दोसर रूप अछि। ओ धरतीपर उठल रहैए, जेकरा चोटीपर चढैमे बहुत अधिक

भीरो होइए, मुदा ओइठामसँ पुन: नीच्चा उतरैमे, माने धरतीपर अबैमे, चढाइ काल जेहेन मेहनत भेल रहत तेहेन ढलानपर ढलकैत उतरैमे भीर नहियें होइए। जखन कि रस्ता दुनूक चढैयो आ उतरैयोक एके रहैए। मुदा ऐठाम तँ पारिवारिक विचार करैक अछि। पारिवारिक रस्ता धारो आ पहाडोसँ भिन्न अछिए। किए तँ धारे-पहाड जकाँ परिवारोक गति-विधि तँ अछि नहि। ऐठाम मनुखक बीचक रस्ता अछि। जइमे समाजिक परिस्थितिक संग शासकीय परिस्थिति सेहो अछि। शासन तंत्रक अनुकूल पारिवारिक परिस्थिति बनैए। जँ शासन-तंत्र परिवार पक्षी रहल तँ सुगम रहल आ जँ शासन-तंत्र प्रतिकूल रहल तँ विपरीत परिस्थिति बनिते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहह। ऐठाम तँ अपन बाप-दादाक निरमौल परिवार अछि, जेकर अपन इतिहास अछि। मुस्कियाइत देवचिरण पतीक दिस देखैत बजला-

"अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखक्षिक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोडे हएत।"

बजैक कममे देवचिरण बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठए लगलैन जे अनेरे कोन विचार दिस भँसि गेलौं। अखन तँ हरिचरणके पारिवारिक प्रमुख कर्ताक रूपमे ठाढ करैक अछि...।

बीचेमे हरिचरण बाजल-

"बाबा, अखन जइ विचारे सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने ओकर विचार करू, पछाइत समय रहलापर आरो-आरो बात-विचार करब। ने कियो आन छी आ ने आइये भरि समयो अछि।"

ओना, हरिचरणक विचारसँ दादीक मनमे कनी कुण्ठित जरूर भेलैन। कुण्ठिक कारण छेलैन अपन विचारपर सँ नजैर हटिएब, मुदा बाल-बोध हरिचरणके बुझि मुँह बने रखली। जे बात देवचिरण बुझि

गेला। मुदा ओइ विचारके पुन: जागृत नहि करैत अपन पारिवारिक विचार उठबैत बजला-

“बौआ हरि, साठि बखक पारिवािरकेो वजनगीक आ शासनोक चढाि-उतारक अनुभि अछि, जे तोरा नइ छह। तँए, सम्प्रेपमे पहने ओ विचार भूमिका र पमे जाकि लेब बेसी नीक हेतह।”

जहिना असथिर भेल पोखैरक पानिमे आ पिर्वहत होइत धारक पानिमे हेलैक अलग-अलग लूरिक जर रत होइ छै, माने पोखैरक हेलब जका धारमे हेलब तँ मुकिये जाएब। कारण एक तँ पिर्वहत होइत धारक धारामे हेल कऽ पार करैमे दोहरी साधिानीक जर रत होइ छइ। पहिल, धारक धारेमे ने भँसि जाए, आ दोसर पार करब तँ अछिए। जे पोखैरमे नइ होइए। पोखैरमे मात एकिा साधिानीक खगता रहैए, एक महारसँ दोसर महारपर जाएब। हरिचरण बाजल-

“बाबा, पारिवािरक जे पैछला धारा रहल माने इतिहास, ओ तँ आब भूत बनि चुकल अछि, ओकरा तँ ितिमानक नजैरसँ नहिये देखल जा सकैए, मुदा जहिना ितिमान भूतपर ठाढ अछि आ भविस दिस बढैले क्रियाशील रहल अछि, तहिना ने ओकरा मजगूतीक सँग पकडैयोक अछिए।”

ओना, पारिवािरमे हरिचरण बाले-बोधक शेणीमे अछि मुदा यएह बाल-बोध ने भविसमे पारिवािरक मेह र पमे ठाढ हएत। जहिना वाभनसुरका सुर ज देख लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत तहिना हरिचरणक बातके सीमाकित करैत देचिरण बजला-

“बौआ हरि, पारिवािरमे दू रंगाक सदस्य होइए, पहिल पुर ख आ दोसर महिला। अखन तक जे अपना सबहक पारिवािरक धारा रहल, ओइमे जहिना पुर खक लेल घर-बहार जाइ-अबैले, करै-धडैले सगतैर

खुजल रहैए तहिना महिलाक लेल सगतैर तँ बन्धन लगले अछि। पुरखक अछैत जँ महिला परिवारसँ बाहरकैल पारिवारिक क्रिया-कलाप करैयो चाहती तँ पारिवारिक सँगे समाजोक लोक आँगुर बतेबे करतैन।"

बीचहिमे हरिचरण बाजल-

"एकरा के काटि! एहेन तँ सभ दिन होइते आबि रहल अछि!"

पैछला विचारके देविचरण सोलोअना कबुल लेलैन, मुदा भूतक कबुल कएल विचारके भविसमे केना कबुलनामा बनौल जाए, ऐठाम आबि अँटकि गेला। देविचरण एक दिस जखन पाछू दिस घुरिया कS देखए लगैथ तँ साफ देखा पडैन जे पारिवारिक जे पैतृक सम्पैत अछि ओ तँ नष्ट भS गेल छल, मुदा परिशि एहेन बनल जे ओ पैछला पीढ़ीक अरजल सम्पैत पुन: परिवारिमे जुड़ि गेल। तहिना आइ धरिक जे समाजिक राज-सता रहल ओ गुलामीक रहल, माने विदेशी शासनक, जे मटियामेटि भS पुन: सतित्त रूपमे जीवित भS गेल। मुदा अपन जे जिनगी रहल तइमे आ आगूक जे हरिचरणक जिनगी हएत ऐमे विपरीत सम्बन्ध अछिए। तँए, पैछला जिनगीके इतिहासक रूपमे समैटि ऐगला जिनगीक ने दिशा बोध करब जरूरी अछि...।

देविचरण बजला-

"बौआ हरि, अखन धरिक जे पारिवारिक इतिहास रहल ओ पौराणिक रूपमे रहल। माने जेहेन जिनगीमे लोक स्वच्छन्द सास लैत बीचडैए से तँ नहिये रहल। तैयो अपन साठि सालक जिनगी कटि गेल। मुदा आब जखन अपना दिस तकै छी तँ बुझि पडैए जे देहमे ओहन शक्ति नहि अछि जेकर उपयोग करैत पारिवारिक गाडीके आगू मुहे ससारब, तँए जाबे जीबै छी ताबे जहा धरि सम्भव हएत से तँ करबे करब, मुदा...।"

'मुदा' कहि देचिरणके चुप होइत देख हरिचरण उत्सुक होइत बाजल-

"तखन?"

देचिरण बजला-

"तखन यएह जे परिवारिक जे पाँगुपन रहल ओकरा पूर्ण समाप्त करैत, ओइ पाँगुपनके मेटबैत जहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीनिक सास लैत उडैए तहिना परिवारोके बनाएब छह।"

देचिरणक विचार सुनि जेना सभकेँ बुझि पड़लै जे पाँगुपनक गम्भीरताकेँ बुझि गेल तहिना सभ सभ दिस नजैर दौडबैत, गम्भीर होइत चुपचाप उठि-उठि अपन-अपन जीनि-बाटक दिस बढ़ए लगल।

तारीख : ३० मई २०१८

जारी....

७.

देश स्वतंत्र भेला पछाइत, जमीनक लडाइ सौसे देशमे पसैर गेल। १९४७ इस्वीसँ पूर्वहि जखन एकमुरही लडाइ अंग्रेजी शासनक खिलाफ उठल छल तखन स्वतंत्र भेला पछाइत देशमे जमीनक लडाइ पसैर गेल। लडाइ केना ने पसरैत, आखिर कृषि पधान देशो तँ छीहे किने। बिनोवा भावेक नेतृत्वमे भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। आन्दोलनक नारा छल- जमीनबला अपन कुल जमीनक छठम हिस्सा स्वेच्छासँ दान करैथ। ओ जमीन खेतीपर जीवि बसर करैबला भूमिहीनक बीच देल जाए।

ओना, जमीनक लडाइ दू रूपमे चलल। पहिल, जमीनबलासँ बकास्त जमीन खेती करैबला बँटेदारके देल जाए, आ दोसर भूदानमे पाप्त जमीनक बँटबारा सेहो हुअए। भूदानके यज्ञ रूपमे स्थापित कएल गेल।

खेत ओहन सम्पैत छी, जइमे एक धुर-आध-धुर लेल खून-खराबी, मारि-पीट गामे-गाम होइते आबि रहल छल। हजारो मुकदमा जहिना कोटमे फँसल छल तहिना हजारो भूमिहीन सेहो कानूनी दाँव-पेंचमे फँसि जहल जाइत-अबैत रहला।

ओना, गाम-गामक संग जिला आ राज्य स्तरपर सेहो भूदान कमिटी बनल छल, तैसंग सरकारी कायालय सेहो बनल, मुदा जइ ढंगसँ भूदानी नारा छल तेकर ठीक विपरीत ओकर कायान्वयन हुअ लगल। लेन-देनक अडमा सरकारियो कायालय आ भूदानियो कमिटी बनि गेल। जेकर परिणाम हुअ लगल जे एक-एक जमीनक सबूत तीन-तीन, चारि-चारि आदमीके भेटए लगल। एक दिस जमीन देनिहार दाता अपन जमीन छोडए नहि चाहै छल, तँ दोसर दिस पाप्तकताक

बीच सबूत लऽ कऽ तेहेन ओझरी लावा गेल जे गामे-गाम लडाइ फँक्स गेल।

भूदान कर्मािक जे सदस्य लोकैन छला ओहो आवामे घी दइक काज करबे केलैन। ओना, गामे-गाम किछु एहेन दाता सेहो छेलाहे जे अपन देल जमीन, अपना विचारसँ भूमिहीनके सुपुदो केलैन आ अपने हाथे दखल-कब्जा सेहो करबा देलखिन। मुदा एहेन लोक एकी-दुकी भेला। गाम-समाजक जेहेन समस्या जमीनक छल ओइ अनुपातमे पाँच-दस प्रतिशत एहेन भेल।

छठम क्लसा, जमीनदान करैमे सेहो एकर पता नहि रहल। हथ-उठाइ भीख जका छठम क्लसाक जगह मात किछु जमीनक नाम-पता ि दऽ देलखिन। सेहो ओहन जमीन देलखिन जे उपजाउ भूमि नहि छल। चौर-चाचर, परती-परात जमीन छल। ओना, गाम-गाममे गरीबके मात जमीन उपजबैयेक समस्या नहि, बसो-बासक समस्या सेहो छल। गामक चौथाइ आिदी ओहन छल, जेकरा घर बन्हैक अपन घराड़ियो ने छेलइ।

गामे-गाम तँ नहि, मुदा किछु गाम कला-कला खादी भण्डार सेहो बनल। गाम-गामक समाजक किछु जाति विशेर ओहन छल जे खादी कपडा बुनै छल। खादी भण्डार ओकरा कच्चा माल दइ छेलै आ ओकरासँ बुनल कपडा कीनै छल। ओना, कपडा बुनैक लूिर मात किछु जाति-विशेरके छल, एकर समाजीकरण नइ भेल छल, जइसँ किछु जाति-विशेरक बीच उदोग सीमित भऽ गेल। कपडा बनबैक जे कच्चा माल छेलै ओ जातिक बन्धन तोड़ि अधिकाश जातिक बेसिाय जर र बनल छल, मुदा िएह बेसिाय आगू बढ़ैत कपडा बुनब समाजिक बन्धनमे फँक्स गेल छल। तहूमे खास कऽ मुस्लिम जातिक बीच 'जोलहा आ धुनिया'क बेसिाय बुझए जाए लगल। हिन्दू-मुसलमानक

बीच समाज बनले अछि। हिन्दू ऐ बेसिायके नहि अपनौलक। मुसलमानोक बीच सैयो जाति अछि। ओइ सैयो जातिमे मात दू जाति- जोलहा-धुनियाक रोजगार मात बनि कऽ रहि गेल। जोलहा-धुनिया सभ गाममे अछि सेहो बात नहिये अछि। किछु-किछु खास गाममे अछि। तहूमे परिरिक सँख्याक हिसाबसँ सेहो ठेकान नहिये अछि। जइसँ सभ गामक जोलहा-धुनियाक बेसिायो नहिये बनल। जइ-जइ गामक जोलहा-धुनियाक रोजगार कपडा बुनब नहि छल, ओ सभ अपन-अपन आन-आन रोजगार जीकिोपाजम लेल करबे करै छल।

गाम-गामक खादी भण्डार भूदानी सबहक अडमा बनि गेल। माने ई जे भूदान कर्मािक जे सदस्य सभ छला, ओ सभ खादिये भण्डारमे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ अपन मेरा रखै छला आ खादिये भण्डारक स्ति सेहो पाप्त करै छला। जइसँ एकाएकी खादी भण्डार िए लगल, अन्तो-अन्त सभ िव गेल। गाम-गामक एकिा बेसिाय मरि गेल। खादी भण्डारके िनि जहिना कपडा बुनकरक रोजगार गेल तहिना सूत कििहारक रोजगार सेहो मरबे कएल। एक तँ ओहिना गाम-गाममे बेरोजगारी पसरल छल, तैपर एकिा आरो बढि गेल। ओना, मिथलाचलमे अनेको साधन कल-कारखानाक लेल मौजूद अछि मुदा साधन रहितो कल-कारखानाक अभाि रहबे कएल। ठाम-ठीम चीनीक मिल आ धानसँ चाउर बनबैक मिलि मात छल। ओना, लघु उदोगक रपमे सेरसो-तोरीसँ तेल बनबैक सॉा कुसियारसँ गुड बनबैक हथकघा रपमे सेहो छल, मुदा ओहो ृहित् रपमे नहि छल। चीनी मिल सेहो सालो भरि नहिये चलै छल, सालक मात छह मास चलै छल। छह मास बन रहै छल, जइसँ मिलमे काज करैबला शमिक सबहक बीच ईहो समस्या छेलैहे। ओना, कहैले बैसारीक समय शमिकके आधा ितन देल जाइ छेलै, मुदा ओहूमे अनेको

र काबि छेलइ। ओहो क्रयक्रत र पसँ नक्कये चलै छल।

गाम-गाममे नगदी खेतीक र पमे कुश्शयारक फक्सल छल, मुदा कुक्शयारो तँ सभ खेतमे नक्कये उपजैए। नीचरस खेत, जइमे पाक्त बसैए तइमे कुक्शयारक खेती नक्कये होइए। कुक्शयारक खेती-ले ऊँचरस जमीन चाही। जे सभ गाममे नक्कये अक्छ। ओना, जैठाम-जैठाम चीनी क्तल बैसौल गेल ओ कुक्शयार उपजैबला जमीन देख-देख बैसौल गेल, मुदा क्तलसँ दूर-दूर हलो गाम सबहक क्कसान, नगदी खेती बुक्झ कुक्शयारक खेती थोड-थाड करबे करै छला। गामक खेतसँ क्तल तक कुक्शयार पहुँचबैक साधन रेलोक माल गाडी छल आ बैल गाडी सेहो छल। रेलक स्शिने-स्शिन क्तलक रानि बनल छेलइ। जैठाम इलाकाक क्कसान बैलगाडीसँ कुक्शयार पहुँचबै छला। ओना, कुक्शयारक रे क्तलक जेते रहै छल तइमे ढुलाइ खचम सेहो ओही मूल्यमे कीती होइ छेलै, जइसँ स्थानीय क्कसान आ दूरक क्कसानक दरमे अन्तार होइते छल। तहूमे नगद कारोबार सेहो नक्कये होइत छल।

कुक्शयारोक खेती करैमे क्कसानके अनेको समस्या छेलैन्हे। एक तँ सीजनल फक्सल रहने एकेबेर सभ क्कसानक कुक्शयार तैयार होइ छेलैन, जे समयपर नक्क कने जिनमे कमी अबै छल, तैसाँ क्तलक जेतेक क्मता, कुक्शयार पेरैक छल तेही अनुकूल कुक्शयारक पुजा भे छेलै जइसँ क्कसानके अबै-जाइक समस्या छेलैन्हे। तेकर पछाक्तयो नगदा-नगदी कारोबार नक्कये छल। मासक-मास, सालक-साल क्कसानक कुक्शयारक दाम पछुआइत छल, जइसँ कुक्शयार उपजौला पछाक्तयो समयपर क्कसान अपन पाइसँ काज नक्क कऽ पबै छला। ओना, जइ क्तलके जेतेक कुक्शयारसँ चीनी बनबैक क्मता छल, ओ ओतबे ने पेरत। जँ क्कसान बेसी खेती केलैन तँ ओक्कना

खेतमे रक्ह जाइ छेलैन, जइसँ खेती अनक्सासबासू बनैत गेल आ क्मलो बन हुअ लगल।

क्वथ : ३० मई २०१८

जारी....

८.

बीसम शदीक छठम दशकक अन्तम समयमे, माने करीब १९५८ इर्स्वीमे कोसी नदीमे फारिबला पुल नेपालक सीमामे भारत सरकार बनौलक। कोसीक दुनू कात, माने उतरे-दक्छिने कोसी बहैए, पूबो आ पच्छिमो बान्ह सेहो बनल। कोसी पुलक सॉंग-सॉंग, पच्छिमी आ पूर्वी मुख्य नहर बनबैमे सेहो हाथ लगौल गेल। तैबीच १९५८ इर्स्वीमे कोसीमे बाढ़ि आएल। ओना, बरखो बेसी भेल छेलै जइसँ कोसीक बान्ह कतेकोठाम टुटि गेल। इलाकाक फसल जे दहाएल से तँ दहेबे कएल जे गाम-गामक घरो-दुआर खसल आ इनार-पोखैर सेहो भराएल-भोथाएल। तेतबे नहि, धारो जैठाम बहै छल तइसँ थोडेक पच्छिम घुसकल। केते गाम ओहन छल जइमे कोसीक बाढ़ि नइ अबै छल, तोहू सभ गाममे बाढ़ि आबए लगल। तैसॉं ईहो भेल जे ओ बान्ह साले-साल केतौ-ने-केतौ टुटि लगल आ ओ इलाका दहाइत रहल। कोसीक जे पूर्वी आ पच्छिमी मुख्य नहर छल, जइसँ शाखा नहर सभ बनैक योजना छेलै, ओइ सभ जमीनक सर्वेक काज सेहो हुअ लगल। माने नहर बनैक, नापी-जोखी शुरु भेल। मुदा ने अखन तक मुख्य नहरे पूणमर पेण बनि सकल छल आ ने शाखा नहर सभमे हाथे लावा सकल।

बीसमी शदीक सातम दशक चढ़ते, माने १९६२इर्स्वीमे चीनक सॉं भारतक सीमा-विवादि लऽ कऽ लडाइ भऽ गेल। जे देशक अथम बेवस्थाके आरो चरमरा देलक। तैसॉं गाम-गाममे अफवाहि पसरल जे अनेको गह एकठाम भऽ गेल, जइसँ जबरदस हाक मनुखो आ मालो-जालके हएत। गाम-गामक देवालियमे अष याम, कीतर्न, नवाहक सॉं सबा मास, अढाइ मासक कीतर्नक सॉं यज-जाप सेहो हुअ लगल। सीतापुरमे सेहो सबा मासक कीतर्न ठकुरबाडीमे भेल। मुदा समय

बीतैत गेल कोनो तरहक दैवि पकोप तेहेन नहि भऽ सकल भेल।

१९६७ इस्वीमे जबरदस्त रौदी भेल। अखन तक देश अनक मामलामे आत्म-निर्भर नहि बनल छल। आन-आन देशसँ अनक आयात होइत रहइ। १९६७ इस्वीक रौदी चारि सालक भेल। जइसँ केतेको पोखैरक संग इनारोक पानि सुखि गेल। जइसँ खेतीक संग पीबैक पानिक समस्या सेहो उपस्थित भऽ गेल। सीतापुरमे एकटा बडकी पोखैर अछि, जेकर पक्का झाउसँ लऽ कऽ भिण्डा सहित बाबन बीघाक अछि। कहि दिअ जे ओ पोखैर दैतक खुनल छी। गामक जे आन पोखैर आ इनार छल, ओ तँ सुखिये गेल जे ओइ बडकी पोखैरक पानि सेहो सटि कि कऽ पाच कटापर चलि गेल, जइमे मात भरि ठेहुन पानि बँचल। तहूमे तेतेक गाद छल जे पानि तक पहुँचब कठिन छेलइ। अन-पानिक बेतरे केतेको मालो-जाल मरल आ लोको मरबे कएल। गाम-गामक जमीन ओहिना परती-परात बनि गेल। उपजा-बाडीक कोनो ठेकान नहि रहल। अन्तमे गामक लोक ओइ बडकी पोखैरसँ अखाढ खुनि-खुनि आनि-आनि उसैन-उसैन खा-खा कऽ पाण बँचौलक।

सरकारक दोसर पाँचबरिसीय योजनामे दरभंगा-लहेरियासरायमे अस्पताल बनल। जइसँ दुनू तरहक लाभ आमजनकेँ भेल। जहिना बिमारीक इलाजक सुविधा भेल तहिना मेडिकल पढाइ भेने नि-नि मेडिकल निर्माण सेहो हुअ लगल। ओना, जइ हिसाबसँ दुनूक जरूरत छल, माने मेडिकलो आ बिमारीक इलाजोक, तेतेक पूर्णमतँ नहिये भेल मुदा किछु तँ भेबे कएल।

१९४२इस्वीमे जे देशक जन-आन्दोलन अंगरेजी शासनक खिलाफ उठल ओ अपन चरम सीमापर पहुँच गेल। अंगरेजी शासनक

खिलाफक सॉ-सॉ अॉरेजी स्तुिक सेहो बहिष्कार भेल। ओइ समय इॅालैमक मेनचेष्टरक कपडा उद्योग दुनियामे बहुत आगू छल। भारत सन विशाल देशक विरोध भेने इॅालैमक कपडा उद्योगके जबरदस धक्का लगल। ठीक ओकर विपरीत देशक हथकघाके असिर भेलि, जइसँ गाम-गाममे सूत काटि सॉ-सॉ कपडा बुनैक रोजगारके नीक मौका भेलि।

जमीन्दारी उन्मूलनसँ खेतक मालगुजारी जमीन्दारक हाथसँ ससकैल बिहार सरकारक हाथ आएल। अपन-अपन जमीन्दारीक चाजम दइमे जमीन्दार सभ सेहो रॉ-रॉक अरॉ लगा-लगा देरी करबे केलैन। मुदा जे भेल से भेल, जमीनक मालगुजारी बिहार सरकारक हाथ एबे कएल। ओना, गाम-गामक सभ जमीनक मालगुजारी एकरॉ नहि ये छल, मुदा कम कि बेसी तँ छेलैहे। कम-बेसीक माने भेल जे जे जमीन बहातर, बसितर िअन्य कोनो कारणे मालगुजारीसँ मुक्त छल, ओहू जमीनक मालगुजारी िस रपमे तँ नहि मुदा 'शेर' रपमे लागए लगल। ओना, 'शेर' नाम-माते रपमे छल। िसक अक्तक् त जे िस लगैत रहै, शेर मात ओतबे छल।

बिहार सरकारक कर्मचारीक माध्यमसँ मालगुजारी असुलल जाए लगल। गामक किसान सभ जमीनक सलामीसँ बँचैक नमहर सास लेलक।

ओना, अॉरेजक समयमे १८८८ इसवीसँ १९०३ इसवीक बीच जमीनक सर्वे भेल छल, जइ आधारपर अखन तक जमीनक हिसाब-किताब चलैत आबि रहल छल, ओइमे अनेको रॉक ओझरी लगले जा रहल छल। माने ई जे किछु ओझरी सर्वे पछिनेसँ आबिये रहल छल तेकर अक्तक् तो अनेको रॉक नि-नि ओझरी उक्त-उक्त ठाढ भेल। तँए, सर्वे जररत भेल।

बीसम शदीक सातम दशकमे जमीनक सर्वेक काज शुरु भेल। गाम-गाममे सर्वेक पहिल सीढ़ीक काज किस्तवारि रूपमे शुरु भेल। मुदा किस्तवारि करैबला कर्मचारी जे आएल ओ भीतरे-भीतर तेहेन हवा बनौलक जे गामक लोक, जमीनबला सभ आँखि मुइन कऽ अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बैले ओकरा घूस दिअ लगल। जइसँ सर्वेकी हएत जे पैसाक खेल शुरु भेल, जइसँ गाम-गाममे आरो विवाद फँसि गेल।

१९६७ इस्वीक रौदी आमजनसँ लऽ कऽ सरकारोके कृषिक लेल पानिक की जरूरत अछि, तइ दिस ध्यान खिंचलक। ओना, अखन धरिक किसानक संस्कारमे सिंचाइक कृतिम बेवस्थाक पक्ष ओ आकर्षण नहि आएल छल, जेकर जरूरत छेलइ। मुदा रौदी से अनलक। ओना, कोसी नहरक चर्चा किसानक कान तक जरूर पहुँच गेल छेलै मुदा ओइ रूपमे नहि, जइ रूपक खगता छेलइ। कोसीक पच्छिमी मुख्य नहर जे छल, ओकर खुनाइयो समुचित ढंगसँ नइ भेने, अखनो धरि ओहिना लटकिले छल।

तैबीच विदेशी सहायतासँ सिंचाइ बोरिंग गाड़ैक योजना बनल। ओइ बोरिंगक ओहन पाइप आ इंजिन अछि जे हजारो बीघा खेतक सिंचाइ कइये सकैए। ओना, बोरिंग तेहेन इंजिनसँ गाड़ल जाइ छेलै जे एके दिनमे माने आठसँ दस घन्टामे बोरिंग गड़ा जाइत रहइ। मुदा जइ इंजिनसँ पानि निकालल जाइत ओ बिजली चालित छल। जे बिजली केतौ छेलैहे नहि, आ कनी-मनी जँ छेलैहो, से बहुत कम मातामे छल, जइसँ बोरिंगक इंजिन चलब कठिन छेलइ। तेकर अतिरिक्त बोरिंगक पानिक लेल नाला चाहै छल, से केतौ बनबे ने कएल। जँ केतौ-केतौ कनी-मनी बनबो कएल तँ तेहेन घटिया काज भेल जे ढहि-ढुहि गेल। एक तँ ओहुना लोक बुझैए जे सरकारी काज

आ जेठुआ गरेक कोनो भरोस नक्ह। से भेबो कएल। दजमो बोक्ॉग गामे-गाम गडाएल मुदा क्सॉचाइ केतौ ने भेल।

सरकारोक नजैर जखन रौदीपर पडल तँ ओहो बोक्ॉग गडबैक योजना बनौलक। बैकक माध्ययमसँ एक-क्ताहाइ, एक-चौथाइ सक्सिमीपर बोक्ॉगक पाइपो आ पाक्त क्तकालैबला पम्पसेिक बेस्थिा करौलक। केतौ-केतौ गोर्व-पॉगरा गडेबो कएल, मुदा जेते जर रत छल से नक्हये भेल।

१९६७ इर्सीमे आम चुनाि भेल। ई चाक्रम आम चुनाि छल। पक्हल १९५२इर्सीमे, दोसर १९५७ इर्सीमे, तेसर १९६२इर्सीमे भेल छेलै आ चाक्रम १९६७ इर्सीमे। कमश: केन्द्रमे सरकार बनल पक्हल पधानमॉत्री पक्ण्ित जिरलाल नेहर, दोसर- लाल बहादुर शास्त्री, ओना, क्कछु क्दनक लेल गुलजारीलाल नन्दा सेहो पधानमॉत्री बनला, आ तेकर बादक पधानमॉत्री पदपर आक्सन भेली इक्न्दरा गाधी।

चाक्रम आम चुनािमे क्बहारक शासन बदलल। ओना, केन्द्रमे कागेसी शासन रहबे कएल मुदा क्बहारमे कागेस िवराधी सरकार बनल। ओना, कएि आनो-आनो रा्यमे कागेसी सरकार बदलबे कएल। कागेस छोक्ड सभ पािी क्मक्ल क्बहारो सरकार बनौलक। नि सरकार बक्नते क्बहार सरकारक ३३ सूती कायक्रम बनल। मैक्टकमे ऑगरेजी िवरयके उठौल गेल। मैक्टक तकक क्शक्ा सेहो फी कएल गेल। तेकर अक्ताक्् तो कायक्रम सभ छल मुदा सरकारमे जक्हना एक क्दस िमपॉथी शाक्मल छल तक्हना दोसर क्दस दक्क्छणपॉथी सेहो रहबे कएल। दुनूक बीच तेना िविाद फँसल जे अठारह मास बीतैत-बीतैत सरकार ि्व मध्यािक्ध चुनाि भेल।

१९७१ इर्सीमे पाक्कस्तानमे सेहो चुनाि भेल। ओइ चुनािमे पूिीयो आ पक्क्छमयो पाक्कस्तानक बीच लडाइ फँसल। पक्क्छमी

पाकिस्तान कश्मीर, पॅजाब आ राजस्थान कवि कऽ बनल छल, आ बॅगालसँ कवि कऽ पूर्वी पाकिस्तान बनल रहइ। ओना, अजादीसँ पूर्वमि १९४७ इर्स्वी तक भारत देश जेतेटा छल तइमे पाकिस्तान कनि कमी एबे कएल। जे एकटा देश छल ओ दूटा बक्त तीन टुकिडी भऽ गेल। ओना, १९३१ इर्स्वीमे, अॅगरेजीए शासनमे बमा सेहो अलग भेल, जे भारतेक पूर्वी भाग छल। पछाइत क्रमक्रम जे कि एकटा छोटि देश छल ओ भारतमे मिलबो केबे कएल।

इन्दिराजीक नेतृत्वमि केन्द्र सरकार छल, ओ पूर्वी पाकिस्तानके सॅग देलैन। ओना, चारि सालसँ जे रौदी आबि रहल छल ओ १९७१ इर्स्वीमे सालो भरि बरखा भेने समाप्त सेहो भेल। जखना भारत पूर्वी पाकिस्तानके मदैत केलक तखना अमेरिका पश्चिमी पाकिस्तानके केलक। अमेरिका शक्तिशाली देश छेलैहे। जेकरासँ मुकाबला करब कठिन छेलइ। सोवियत सॅघ सेहो शैन्य-शक्तिमे शक्तिशाली भइये गेल छल। इन्दिराजी सोवियत सॅघसँ शैन्य-सम्बन्ध केलैन। सोवियत सॅघक सहायतासँ लडाइ जमगर भेल। अन्तो-अन्त बॅगला देश स्वतन्त्र देशक रूपमे जन्म लेलक। पाकिस्तान दू टुकिडीमे विभाजित भऽ पाकिस्तान, बॅगलादेशक नाओंसँ दू देश बनि गेल।

अखन तक, माने १९७१ इर्स्वी तक भारत जे अमेरिकासँ अनक आयात करैत आबि रहल छल, तेकरा अमेरिका रोकि देलक। जइसँ पेटक समस्या अपना देशमे उठबे कएल। जइ सभ देशमे अमेरिका अनक निर्यात करै छल ओ सभ देश अमेरिकाक प्रभावमि रहै, तँए ऐगला मुँहरा बनि कोनो देशसँ अनक आयात करब कठिन छेलैहे। सोवियत सॅघ सेहो अनक उपजमे ओतेक सशक्त नहिये छल जेते आन-आन शक्तिमे छल। ओना, सोवियत सॅघ ठण्ढा देश अछि, तहू कारणे ओइठाम अनक उपज कम होइ छल। खास कऽ

साइबेरियाक जे भाग सोवियित संघमे छल ओइ भागमे तीन माससँ नअ मास तक जमीन बर्फमे मुमल रहै छल, जइसँ ओइठाम कृषि कायमे बाधा छेलैहे।

भारतमे अनेको राज्य अछि आ सभ राज्यक अपन-अपन समस्या अछि। किछु राज्य एहेन अछि जइमे बरखो कम होइ छै आ माटियो उपजाउ नहि अछि। तहिना किछु राज्य एहनो अछि जैठाम अधिक बरखो भेने ओइठामक पैदावािर सीमित भऽ गेल अछि। तैसँ किछु राज्यमे खाइबला अनक उपज तँ कम होइए मुदा तेलहन, कपास इत्यादिक उपज अधिक होइए। सभ किछु होइतो किछु राज्य एहनो तँ छेलैहे जे अपन भरण-पोरण करैत आनो-आन राज्यके अन दइ छल। पंजाब राज्य, जैठाम माटियो ओहन उर्वर शक्तिबला नहि अछि आ बरखो कम होइ छै, मुदा ओइठाम एहेन कृत्रिम बेवस्था केने छल जइसँ अपेक्षाकृत नीक पैदावािर छेलइ।

आजुक बिहारक नक्शा तँ बदैल गेल अछि मुदा जखन उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार छल, माने बिहार आ झारखण्ड मिला कऽ जखन एक राज्य छल तखन उत्तर बिहार जहिना धार-धुरसँ भरल छल, जइसँ दाहियो होइते अछि, तहिना दक्षिण बिहार पहाड, खानसँ सेहो भरल छल जइसँ कृषि क्षेत्र कम रहने कृषिक पैदावािर कम रहबे करए।

मिथिलाचल सहित उत्तर बिहारमे धार-धुर तँ अछिए मुदा कृत्रिम बेवस्था नहर, बोरिंग कल तँ अभाव अछिए, जइसँ ऐठामक कृषि-कायम अनिवासितिसू बनले अछि। रौदी-दाहीक खेल साले-साल चलिते अछि। जइसँ अपना ऐठाम कृषि कायमपंगु बनल अछि। अखन धरिक जे कृषि बेवस्था अपना ऐठाम रहल ओ पाचीन पद्धतिक अनुकूल रहल। जइसँ उपजक मात्रा क्रमसँ क्रमतर स्तरमे रहल।

देशक सोझा जखन अनक समस्या उबड़ कऽ ठाढ़ भेल तखन केन्द्रो सरकार आ राज्यो सरकारक नजैर कृषि दिस उठल। ओना, अनेको रॉाक अनक खेती-बाडीक लेल अनुकूल क्षेत्र बिहार छीहे मुदा उपजाक जे रेक्शायो हेबा चाही से नहिये छल। सरकारक नजैर उठने किसानके रॉा-रॉाक सहायताक सुविधा भेलि। पूसा, ढोली, सबौर इत्यादि जगहमे कृषि फाममसेहो बनल, जैठाम कृषिक पढाइक सॉा-सॉा अनुसन्धान सेहो हुअ लगल। जइसँ अनक नीक-नीक बीजक अनुसन्धान भेल, जे परम्परासँ अबैत पैदाविरमे धका मारलक। माने मेड़िया-दोबर-तेबर उपजाक बढोतरी भेल। जइ खेतमे कच्ची मन कटा उपजै छल, तइमे तीन-तीन, चारि-चारि पकी मनक उपज हुअ लगल।

तैसॉा कोसी नहरक लाभिमे आनो-आन नहरक खुनाइ हुअ लगल जइसँ खेतक सिॉचाइ होइत। बैकक माध्यमसँ एक-तिहाइ, चौथाइ अनुदानित रपमे बोरिॉा-पम्पसेिलनक माध्यमसँ किसानके भेिए लगल। जइसँ गाम-गाममे किछु बोरिॉा भेने उपजमे किछु-ने-किछु बढोतरी सेहो भेबे कएल। अखन धरि जइ खेतमे मात छाउर-गोबर देल जाइत छल, रसायनिक खादक पयोग नहि भेल छल, तइ सभ खेतमे रसायनिक खादक सॉा-सॉा गोबर-घास-पातसँ बनाओल जैविकि खाद सेहो पडए लगल। तेतबे नहि, किसानके जैविकि खाद बनाएबो सिखौल गेल।

अखन धरि जे सरकारी विभागमे कृषि विभाग मृतपाय छल ओइमे जान फूकल गेल। ब्लकमे कृषि विभागक अलग कायालय बनल। गाम-गाममे कृषि विभागक कमचारीक बहाली भेल, जेकरा माध्यमसँ गामक किसानके नितकनीकक जानकारी देल जाए लगल। ब्लक स्तरपर सरकारी कृषि फाममसेहो स्थापित भेल।

सरकारी माध्यमसँ किसानके खाद-बीज, कृषि-यंत्र अनुदानित दरपर कजम रपमे सेहो भेटिए लगल। पूसा, ढोली, सबौर फार्मक माध्यमसँ अनेक साग तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक बीजक संग गाछ सेहो उपलब्ध करौल जाए लगल।

'जय-जवान, जय किसान'क नारा देशमे बहल। अखन धरिक जड़ किसानक शकल-सूरत बदलि गेल छल ओइ किसानमे नव उत्साह जगल, कृषि पैदाबारि बढ़ल, देश अनेक मामलामे आत्म-निर्भर भेल। आत्म-निर्भर भोजनक मामलामे जरूर भेल मुदा कृषि पैदाबारिमे पाँगुपन बनले रहल। जैठाम कृषि आधारित माने कृषि पैदाबारिसँ पैंतालीस प्रतिशतसँ अधिक कच्चा माल कारखानाके भेटै छै, ओ उपज ठमकले रहि गेल। जइसँ कल-कारखानाक विकास बिहारमे नइ भेल।

ओना, जहिना एक दिस प्रगतिक दिशामे देशक शक्ति बढ़ल तहिना समाजक किछु लोक ओकर विरोध नहि केलैन सेहो बात नहि कहल जा सकैए। अन्ध-विश्वास आ रूढ़ि‍वादी विचार सेहो जमि कऽ विरोध करबे केलक।

तिथि : ४जून २०१८
जारी....

९.

उमेरक चलैत अपन वारैत दैक्हक शव्तके अँकैत देचिरण हक्रचरणक क्वआह करब अक्तायिम बुझलैन। अक्तायिक दू कारण भेलैन, पक्हल- अपन आगू बढैत पक्रिरके अपना आँक्खये देखब, जइसँ मनमे तृक्प्त जगैत अक्छ। दोसर कारण मनमे ईहो भेलैन जे ओना हक्रचरणके पढाएब-क्लखाएबसँ लऽ कऽ ओकर क्वआह-दान करब धक्रक काज राधाचरणक कतर्व्यक सीमामे अक्छ मुदा ऊक्हगर बेिके नक्ह रहने आ तैसाँ हक्रचरणक जीनिचयाके देख देचिरणक मनमे ईहो भेलैन जे जेहेन पोता क्कयाशील अक्छ, ओहने क्कयाशील लडकीक साँ जँ क्वआह कए देबै तँ ऐगला पीढीक जीनि-यापन सक्तोरपद हेबे करत। यएह इच्छा ने सभ पक्रिरमे िदजनक होइ छैन जे अखुनका जे पक्रिक्रक क्जनगी अक्छ ओ क्दनानुक्दन अगुआइत चलए।

ओना, क्मक्थलाचलो तँ क्मक्थलाचले ने छी। जक्हना कुशाग बुक्धक लोक अनुकूल पक्रक्स्थक्त भेनि नीक-सँ-नीक विता, नीक-सँ-नीक कलाकाक्रता, नीक-सँ-नीक िकनोलजी आ नीक-सँ-नीक क्जनगीक पारखी बनैए तक्हना ने नीक-सँ-नीक भोगिक्दयो आ नीक-सँ-नीक जोगिक्दयो बक्नते अक्छ। अपना सबहक क्मक्थला िएह ने छी जे जइ पतीके सहयोगी-साँी बुझै छी ओइ पतीके पक्रिक्रक कोनो क्कया-कलापक भार नइ पडैन, तँए भानस करैले भनक्सया, पाक्न भरैले पक्नभरनी, कपडा-लतासँ लऽ कऽ घरक क्पाइ-पोताइ तक अनके क्सरे-हाथे होइ। मुदा से नक्ह, ओहनो क्मक्थलाचल तँ अक्छए जैठाम बेि-पुतोहु अपन पाछूसँ अबैत खनदानी पक्रिरमे क्पताक अनुसरण करैत सहयोगी बक्न क्ाल-क्ाल, कण-कणक अनुभिक अभ्यास करैत क्ाले-क्ाल, कणे-कण अबैबला कालुक अनुकूल बनबैत अपन भवसिके

अनुकूलतामे पीअबैत, क्ममाण करैत आगू बढैए।

क्मथलाचलक ओइ क्हस्सामे देचिरण हवरचरणक क्बआह करब मनमे रोक्प लेलैन जेतए अपने सन सीमान्त क्कसान पक्रिर हुअए। जइ पक्रिरक जन-जन अपन भक्सिक पाछू लवा शम-सॉस्कृक्तके आॅगीकार करैत शमशील-क्शालाक कमगक्तसँ क्ममाण-कायमे लागल हुअए। ओना, ई इच्छा तँ अपन मनक भेल, मुदा जैठाम बरपक छी तैठाम अपने उपकैर कऽ केना कन्यागतके कहब जे अहा अपन कन्याक क्बआह हमरा पक्रिरमे कर । एक तँ अनेरे लोकक मनमे उठत जे जाबे लडका खोमाह नइ छै ताबे एहेन चचमक्कए करै छैथ। तैसॉ ईहो तँ अक्छए जे मनोनुकूल कन्या नइ रहने एकि-दूि कन्यागतके तँ बहक्रि सकै छी, मुदा जँ तइसँ बेसीके बहिरए चाहब तँ अनेरे ने सभ कहबे करत जे फलल्ला लडकाक क्सरे तेहेन बौगली क्सया कऽ रखने छैथ जे कन्यागत जँ अपन मीहो-माबर बेच कऽ लगा देत तैयो ने भरतैन...!

सॉजोग बनल, हवरचणक क्बआह समस्तीपुर क्जलाक ओहन गामक क्कसान पक्रिरमे भेल, जे पक्रिर अपन कृक्र केक्तके ओहन क्बसािसू रपमे बना कऽ ठाढ केने अक्छ, जइसँ इॉजीक्नयर, म्ििरि तकक समाक्शि पक्रिरमे होइक सम्भानि बनल अक्छ। जेहने देचिरण खेक्तहर पुतोहु चाहै छला तेहने पुतोहु भेिने अपन सोलह सालक पोताक क्बआह सोलह सालक कन्या- परमेसरीक सॉग केलैन। भुखाएल-दहेक्जयाएल मन देचिरणके रहबे ने करैन, तँए हवरचरणक क्बआहसँ सोलोअना तृक्प्त देचिरणके भेलैन।

समयक अनुकूल तँ राधाचरणक सुधार नक्हये भेलैन मुदा बेहिाक्रक रपमे दूि महीक्सक सेिि करैक भार क्सरचढ भेने धीरे-धीरे सुधरए लगलैन। सुधार देख देचिरण समयक अनुकूल महीक्सक

सेहि क सॉग आरो-आरो काज करैले राधाचरणके चक्करया-चक्करया चरैबेक्त बना लेलैन। ओना, उमेर पाक्ब सेहो राधाचरणक मनमे पक्रिरिक पक्त पेम जागल, जइसँ बकलेल-ढहलेल जका जे िआइत रहै छल तइमे सुधार भेल। ओना, पक्रिरिमे पक्रिरिजनक बीच जे सम्बान्धसूत अक्छ, माने पैछला पीढीक बेि-भातीज, नाइत-पोतासँ लऽ कऽ ितिमान पीढीक भाए-भौजाइ आ तक्हना ऐगला पीढीक काका, क्ाता, बाबा-नाना इत्याक्द, सेहो अक्छए। जक्हना भ् त आ भगािनक बीच अभ् त र प अक्छ तक्हना जान आ कमक्क बीच सेहो अक्छए। जखने दुनूक बीचक अभ् त र प मेिि भ् त र पमे पक्रणत होइए तखने क्जनगीक साथक्कता सफल हुअ लगै छइ। जे हक्रचरण आ देिचिरणक बीच भेल। ओना, देिचिरण क्कसानी क्जनगीक ममक्भेदी रहनौ अपन क्जनगीमे पॉ्गु बनल रहला, मुदा अपन पॉ्गुपनक कारणके बुक्झ देिचिरण अपनाके ओही क्जनगीमे समािशि करैत पक्रिरिक गाडीक जुआके कन्हेठ आगू मुहे क्खॉचते रहला, जइसँ अभाििके कुभाि नक्ह बुक्झ सुभाि बना जीिन-बसर करबे केला, जे अपन सभ गुण-शील हक्रचरणके दान-दैछनामे दैत ऐ दुक्नयासँ िदा भेला।

देिचिरणके चौदह बखममृत्यु भेना भऽ गेलैन। हक्रचरण बतीस-तैतीस बखक्क भऽ गेल। तीनिि सन्तानो भेलइ। राधारचरण सेहो चाक्रमपनमे पहुँच गेला। देशमे हक्रत काक्न्तक र पमे नि जागरण भेल। परम्परासँ अबैत कृक्र-कायमे बदलाउ आएल। जेतए क्सॉचाइक करीन छल ओ बदैल पम्पसेि आएल। खेत जोतैक जे जनकजीक समैयक तीनक्ाता हर छल ओइक जगह ट् िरि आएल। तेतबे नक्ह, धान कुिक ढेकी बदलल, चुडा कुिक उ् खैर बदलल, पाथरक जताि बदलल, तेल पेडैक कौलु बदलल इत्याक्द-इत्याक्द क्कसान पक्रिरिसँ लोप भेल आ नि-नि तकनीकसँ क्सरजल लोहाक इॉक्जन

लोकक हाथमे आएल, जेकर रफ्तार दसगुणासँ लऽ कऽ हजारगुणा धरक अछि। ओना, जइ गतिये किसानी तकनीक आगूसँ उतरल तइ हिसाबे किसान नहि उतैर सकल मुदा साफे नहिये उतरल सेहो नहिये कहल जा सकैए। कियो उतरल कि नहि उतरल, चढल कि नहि चढल मुदा हरिचरण, जे बतीस-तैतीस बखक जिनगि किसानक रूपमे उतरबे कएल। से ओइ भावि-रूपमे उतरल जहिना एक जिनगि हाथमे बन्दूक उठा अपन मातृभूमिक रक्षार्थ सीमापर माघक शीतलहरीक पाला, जेठक रौद आ भादिक बखाक अटा-बज्जर सहैत अपन दायित्व निमाहि करै छैथ, तहिना ने जिनगि किसान सेहो अपन मातृभूमिक सेवार्थ भूख-पियास मेटबैले माघक पाला, जेठक रौद आ भादिक गजर्न-तजर्नके अडेजैत अपन दायित्व निमाहि करै छैथ।

हरिचरण अपन तीनू बीघा जमीनके समाजिक रूपमे अदैल-बदैल, रकबाक हिसाबसँ दस कटा घाटि उठबैत अढाइ बीघा खेत एकठाम केलक। अपन जिनगीक सूतके पकैड चारि इंचबला बोरिंग आ पाच हर्सपावरबला इंजिनक साधन बना अपन फसल सिंचाइक बेवस्था सेहो केलक। तैसंग अढाइयो बीघा खेतमे ओतेक काज ठाढ केलक जइमे भरि दिन दुनू परानी अपन दुनिया बुझि अपनाके सोलहोअना समर्पित केलक। तेतबे नहि, अस्पतालक मेट्रिक आ कृषि फार्मक कुशल किसान जका अपन बाल-बच्चाके सेहो देखा-सुनी कराइये रहल अछि। तैसंग सालो भरिक खेतीपर दैत सुअन, सुफल आ सुसाग-सब्जीक केतेक जरूरत मनुखके अछि, तहूक उपार्जन कइये रहल अछि।

मिथिलाचलक बीच अपन मिथिला बना फलक नाओंपर खाली आमेक गाछी-कलम नहि, सालो भरिक जे फलक कम अछि तइ हिसाबक फल, तहिना ओइ हिसाबक तीमन-तरकारीक संग अनो

उपजाइये रहल अछि।

अपन साधक जे किया अछि तइमे तँ हरिचरण अपन सफल सिरिप देख रहल अछि, मुदा आगूक जिनगीके देखैत हरिचरण जखन अपन हिद् सिरिप देखए लगैए तखन पॉगुपन आगूमे नचैते छइ। ओना, केतबो पॉगुपन हरिचरणक आगूमे किए ने नाच करए, मुदा किसानक समाजमे किसान हिन्दि कहेबाक अधिकारी तँ अछिए।

तिथि : ६ जून २०१८

पद खण्ड

आशीर अनमनहार

बाल गजल

केहन काहन ढुलढुल्लया बच्चा
फेकल फाकल फुलफुल्लया बच्चा

ढुनिन ढुनिन गुलगुल्लया बच्चा
हुलबुल हुलबुल हुलबुल्लया बच्चा

छन छन कूदै थुलथुल्लया बच्चा
सम्दखन बूलै बुलबुल्लया बच्चा

छै इम्हर उम्हर मकम्हर मकम्हर
चुलबुल चुलबुल चुलबुल्लया बच्चा

की नवका आ की पुरना पुरना
चीन्है सभके भुलभुल्लया बच्चा

सभ पाम्तिमे 222-222-222 मात्राक्रम अछि। सुझाव सादर आमन्त्रित अछि।

गजल

ाि न पिलै
नोर खसलै

अथषम्द्दक्याग
शब्द्द टहलै

बात बम्जते
जीह कटलै

देह छुम्बाते
देह गललै

लोक अत्पान
आन लगलै

सभ पाम्तािि 2122 िताािि अम्छ। दोसर शेरक पम्हल पाम्ताक अंम्ताि लघु छूटक तौरपर लेल गेल अम्छ।

गजल

एकै आदमी चोर फकीरक सरदार
बनि हरीफ लागैए शरीफक सरदार

बाहर टूटल फूटल भीतर चकमकि छै
बनि अमीर लागैए गरीबक सरदार

एना पसरल हेतै गुप्त बात सौसे
कनपातर लागैए बहीरक सरदार

मोती केर आसमे गहलहु धार उमदा
बनि उत्थर लागैए गहीरक सरदार

रमेश जेतै ई आसन बासन सिंहासन
आ चुप्पे उमरि जेतै शरीरक सरदार

सभ पाँतिमे 222-222-222-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग अलग लघुके दीर्घ मानल गेल अछि

गजल

हुनका लेल सिंदुर एलै हरि लेल जहर
देखू नेह कोना भेलै हरि लेल जहर

अम्रित एकरा हि कोना ने िनू कहू से
अपने हाथे देने गेलै हरि लेल जहर

जीवन धारने छै जहरक कजा तइ त सखी
बहुते देर धम्र घुम्रएलै हरि लेल जहर

म्खस्सा सुम्न कऽ म्किछु ने बजलै चुत्पे रहलै तखन
बहुते कनलै आ पछतेलै हरि लेल जहर

िनक बात कहने रम्हयै अपना लोकस आ
अनम्चन्हार सेहो लेलै हरि लेल जहर

सभ पाम्तर् 2221-22-22-2221-12 िताि ि अम्छ। दोसर आ चाम्रि शेरक दूनू पाम्तर् एक-एकटा दीघर्के लघु िनबाक छूट लेल गेल अम्छ।

गजल

ािन सभहक अचंम्भत छलै
चोर ऐठा िम्हत छलै

काज हुनकर म्बलंम्बत ुदा
साज त रुतम्बलंम्बत छलै

हाथ जोिल बहुत भेम्ट गेल
ािन सभहक म्बखंम्डत छलै

ठोर केनाहुतो चुप रहल
तथ्य रखबास वंम्चत छलै

दुख बला पाम्ता देम्ख म्लअ
सुख बहुत रास टंम्कत छलै

ददषबाटब सहज नै बंधु
ददषािनक अखंम्डत छलै

सभ पाम्ता 2122-122-12 िताि अम्छ। तेसर शेरक पम्हल पाम्ताक अंम्ता लघु छूटक तौरपर अम्छ।

गजल

चुपचाप देखब कपारि
चुपचाप चाहब कपारि

ओ जे जे कहम्थन सएह सभ
चुपचाप िनब कपारि

सपना अपन आम्ख के बहुत
चुपचाप डाहब कपारि

ई नोर हुनके हसी सनक
चुपचाप कानब कपारि

देखा कऽ म्लखलहु ई पाम्त आ
चुपचाप िटब कपारि

सभ पाम्ता 2212-212-12 िताि िअम्छ। दोसर आ चाम्रि शेरक पम्हल पाम्ता एकटा दीघके लघु िम्म लेबाक छूट लेल गेल छै।

गजल

हुनके म्बकास
जनता उदास

संसद बनलै
चोटा म्नवास

अपने अथी
अपने लहास

जेबी जानै
हाटक हुलास

बूि ल देशक
दशक्ष झकास

सभ पाम्ता ि 22-22 िताि ि अम्छ। दू टा अलग-अलग लघुके दीघष िनबाक छूट लेल गेल अम्छ।

गजल

म्कछु काज भगवान भरोसे
म्कछु काज शैतान भरोसे

म्कछु लोक नोरेस भरल अम्छ
म्कछु लोक ि स्कान भरोसे

म्कछु आम्ख सोनास सजल छै
म्कछु आम्ख दुम्मधान भरोसे

बहुते िजा आम्ब रहल छै
म्कछु बात अनुिन भरोसे

लाभक कथा के क' रहल अम्छ
म्कछु लाभ नुकसान भरोसे

सभ पाम्ता 2212-21122 िताि अम्छ।

राजेश ि‍हन झा "गुंजन"

नवदुगा

ि‍संह पीठ असवाि‍र लगै छी अहॉ बऽर विढ़याॅ ।
अि‍त सुनि‍र सुकुि‍मि‍र लगै छी अहॉ वऽर बिढ़या ।
हस्‍त ि‍तशूल चि‍ अि‍त चकि‍क,
रक्‍त ि‍पपािसत खत्‍पि‍ भक् भक्,
अिखल लोक अवाक् सभ ठकि‍क,
चललहु बनि‍ल ि‍वहािर लगै छी अहॉ बऽर बिढ़याॅ ।
गत गत पर रक्‍तक िछटका,
असुरक पीजु चरण तर टटका,
ि‍ुद नयन कर सॉपक सटका,
ठािढ़ ि‍शिर के ि‍ि‍र लगै छी अहॉ वऽर विढ़याॅ ।
भऽरल सभटा राक्‍स सेना,
तीतल ऑचर बहल पसेना,
आऊ हौिक दी वॉसक बेना,
बैसू ि‍सकी ि‍ि‍र लगै छी अहॉ वऽर विढ़याॅ ।
हे दुगे जगदिम्‍ब व्‍यथा हर ,
अपना कोर ि‍ि‍य हि‍रा कर ,
राि‍क भिक्‍त सुधा ि‍ुख ि‍ भर ,
हे पयिस्‍वनी नाि‍र लगै छी अहॉ वऽर बिढ़याॅ ।

गाछक गोहारि- (विश्व पर्यावरण दिवस पर)

पाण वायु संग ितिाक आंचर
छाह रप ि दै छी
कहू हे िनुकख अहा स,
बदला ि किछु िगैत छी?
हरि हाथ काटि चूमि जरबैत छी
पात काटि क' चार छारैत छी
एतबहु पर संतोर नहि जे
चमढ़ कऽ शीर काटैत छी।
देखू धरती केर रप बदलि गेल
सजल सरोवर सूखि रहल
जीवन रस हाट दोकान िबकाय
"शुद जल" कीिन पीबैत छी।
बाबा िसनेह स रोपि गेला
सूखल काया वृद भेलहुं
अहाक नेना केर िसक देखि
िमर िमर हि जीबैत छी।
आबहु सुधरि जाऊ हे िनव!
गाछ रोपल जाऊ हे िनव!
िबलोपात वोन बरखा नहि होयत
एते तऽ अहूं बूझैत छी।
हे सुनू एतबहि हि चाहैत छी।।

<u>बिनकर विकास? (पूंजीवाद कि सर्वहारा) (यातीजी "बाबा नागार्जुन" के जन्म दिन पर)</u>

सभ किछु बिकाय त'
चाने के कीनि लेल
चकित धरा केर
इजोरिया के छीनि लेल।
सोती के सोख ओ
पानि बेचै छथि
बटुआ रहै भरल
एतबहि बूझै छथि
अपन दिन हिहि क'
दोसर के दुर्दिन देल।
रस हुनक हिस्सा हि
आंठी चूसै छी
भाग विधि स भेटय
जानै सूनै छी
हे विधना तोहूं बिकैलह
तोरो हि चीन्हि लेल।
सर्वहारा तोरा ढौआ केर
चिन्हाकि जान नहि
तंत बंदूक कान्ह पिल
छूटय से भान नहि
लोकतंती फसील कि
तो भूस्से छे बूझि ले।

भूस्सा! हा भूस्सा!
ि शीन वा डाग स
कूटतौ ओसयतौ
चैतक सूखल पछबा ि
तोरा उि यतौ
ढ़ेम्र भ' खम्रहान ि
कोनो आश ि रहबे त
अपन ि र ख बरदक भूख
तोरे स ि टियतौ
घूर ि जरयतौ
सवष्ठारा छे तोरा पर
पदूरण-कलंक लगैतौ।

पीतांि कुिर मारााद

यातीक स्मृक्त

हे साकेती जनकवि बाबा
यातीजी क्लयऽ स्नेह सुमन।
मोन पडल अक्छ अपनेक पक्ताभा
तै अनुरागी भेल सुजन।।
हे साकेती जनकवि बाबा...।।

सॉंत कबीरक अ् खरता लऽ
फकर भऽ घुमलौ सगरो
कमव्थलासँ क्सॉहल लॉक्ाधक्र
याती भेलौ काशीनगरो
साम्ययािद काक्तक ािणीसँ
काव्यकथा कए देल सृजन
मोन पडल अक्छ अपनेक...
हे साकेती जन कवि बाबा...।।

गाम-कुरीत औ घर-चुली सॉंग
विधाि-विलापक दरद कहल
सताक सनकीसँ कभय्य भऽ
अपनेक लेखनी मरद रहल

तै काव्याथी पीतम अचस्

क्तासिू यौ बाबा अन्तमन।

मोन पडल अव्छ अपनेक...

हे साकेती जनकवि बाबा...।।

अमर शहीदक श्रद्धांजली

भारत मिथिलाक राष्ट्रपूतसँ
मर्यादित माऽए मैथिली...
अमर शहीद विकास मिश्रके
अछि अर्पित श्रद्धांजली।।
रईमा गाम समाजक गर्भमा
गौरसिँ किछु सीखली...
अमर शहीद विकास मिश्रके
अर्पित अछि श्रद्धांजली।। 0।।

एहने सन शत सापूत सैनिक
मिथिलाक धरती दैत रहल
इतिहास भूगोल मैथिल पूतसँ
घनिष्ठ कहैत रहल
कर्णाट तुरक मोगलिया युद्धक
मिथिला योद्धाक रीत ली...
अमर शहीद विकास मिश्रके
कए अर्पित श्रद्धांजली।। 1।।

हजारो बरिससँ मिथिलाक आभा
असलान ओइनवार रण पसरल

कामेशर िशज कीत्तम्सहँ
औ क्शाकिसहँ धवर यश पसरल
कन्दपीघाि युदक गाथा
मैथ्थल शहीदक सीखली
अमर शहीद विकास क्मशके
अवागत कर शदाजली।।2।।

तक्हना नियुग काल सँगोरए
क्मथ्थला िीर सपूतन के
राष्ट धममऔ जन्मभूक्म धवर
सहजल सैक्नक कममाके
मातृ कुक्कके नमनए पीतम
शहीद कीत्तम्म्यश क्लखली
अमर शहीद विकास क्मशके
दैत रहब शदाजली...।। 3।।

सार बहनोई (हँस्सी-चौल)

सार : सुसुसुसु... सुक्मयौ पाहुन...

दीदीक कहब सॉंगे जाहुन

पडलहुँ अपनेक पाला, ऑगरेजीक बदर इनल छी

दुनू जीजा-साला...।। 0।।

बहनोई : स-स-स-सडबे... हेहरई करब...

अहाक दीदी सँ हम लडब...

अहा छी गडबड झाला... ऑगरेजीक बादर इन ल छी...

दुनू जीजा-साला...।। 1।।

चाइल-कुचाइल कयऽएदेखबै छी,

अलड असाइिलमे,

हेल्लो िल्लो ओके थै् यू

कहै छी मोबाइलमे...।।

बुझलौ अपने छी बड काबेल

कम्प्यूटिर क्सिमछी।

हम्मर लाइफके बेस क्रकसिर

केर अपने कसिम छी।।

सार : तै एक्ह सारकनामे हे पाहुन
बक्हन कर केिला...
ऑारेजीक बदर इन ल छी
दुनू जीजा-साला।।2।।

बहनोई : शहर-बजारक नेना छी मुदा
भऽ गेलहुँ बुरहाठी।
ििी-िबलेि-लैपिप फेसबुक
सँ बनलौ कर्व-काठी।।

सार : धऽतुक्र केहन बुडबक छी अहा
माऽए-बाप शान वानएलौ
नामी-गामीक सन्तान भऽ कऽ
पुरखोके नाम क्मनएलौ।।

बहनोई : पुरखा-माऽए-बाप केर जुक्त ऊकिू
मुँहपर लगबू ताला
ऑारेजीक बदरइन ल छी
दुनू जीजा साला...।। 3।।
सार : हँसी-मजाक केर अक्छ क्रािज तै
पाहुन हम हुत्थै छी।
सरहोइज-साइरक बत गडहीमे,
अहा सक्दखन कुत्थै छी।।

बहनोई : लाजे हम सकदम्म भऽ सभके
देल-फजहैतो सुनै छी।
सासुरक मौजक मत्था-पच्ची
गुण-अगिुणके गुनै छी।।

सार : चक्लयौ-भोजन करए पाहुन
गमकए क्चकेन मसाला
ऑगरेजीक बदरइन ल छी
दुनू जीजा साला...।। 4।।

आहत अगस्त

भारत देशक धरती करवा गात
शहीदा ली दऽ पणमए हस्त।
धुजाकारॉगा दुलरैत बाजए
अव्छ एखनो आहत अगस्त।।

चहुँदवश गूँजए पन्रह अगस्त
नेना-भुकिा सॉ-लोक व्यस्त
आजाद वहन्द भए रहल तस्त
सरिथ सह-सह देखैछ मस्त
तै अव्छ आहत पन्रहअगस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

अव्छ जन पवाकवध मौका परस्त।
भारत वमथ्यला अव्छ अस्त-व्यस्त।।
सता सेकि खुशहाल मस्त।
कोन भष पवाक अव्छ रिद हस्त।।
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

कछु सवॅधान सुख अव्छ वारस्त
मयावदत अव्छ-वफरका परस्त
कए, आतॉकी वदन-वदन पशस्त
राष्टीयताके देिए वशाकस्त...।। 0।।

आशाक क्षरॉगा कोर्वि हस्त
झण्मोतोलन भए रहल सस्त
औ, समिधममसमभाि पस्त
हाय, राष्ट पमिकेर उदय-अस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

हाय भूकम्प

माऽए गै बाप रौ सुनैत देखलौ
मचैत छल हडकम्प
थड थड गूँजैत धरती क्षलल
कचकरल जन भूकम्प
तन मन थड थड हमरो कापल
मँरल क्दल क्दमाग।
नेना भुकिा जक्त पुरखके
देखल भागम-भाग।।

हमहूँ थकमक करैत सोची
हेहक्र कत जाऊ।
जाघो कापैत क्थर नक्ह होअए
कोन सहारा पाऊ।।

क्कछु क्मनपिर लोक हकक्मते
सकपकी सॉग बाजल
केकर घर बाडलै बाजै ने
कालचक छल साजल।।

केओ कहक्थ जे हम्मर औरदा
नक्हॉ छल ए् खन पूरल।

मृत्युकालके मुँहसँ जेना
देह पाण अछि धूडल।।

आइ शनिचरा गह खेलैछल
देश विदेशमे सगरो।
अपने हाल व्यथामे हकमैत
सुइध कहा छल केकरो।।

बेरा-बेरी देखैत रहलौ
सभ मोबाइलमे भीडल।
घर-कुटुमैताक वजजासामे
अपस्यात हिलल फडल।।

केओ बाजए सन चौतीस ईसवीसँ
भूकम्प छल बडका।
कहए केओ फेर हिललै धरती
लगतै कतहुँ दडका।।

बूढ पुरान कहथि हे बौआ
भावा कऽ कतऽ जएबह।
सभतरि एहने हाल बनल छै
नहि बुइध कोन लएबह।।

क्दन भक्र गुनधुन भय आशक्ा
जनमन भेल हेहर ।
कक्छु नक्हॉ फूरए अल्लाह ईशर
हे दैबा कक्छु कर ।।

िभी रेक्सयोक समाचार सॉग
जनजीिन भऽ गेल बेहाल।
अखबारोक सुखीमे दार ण
तहस-नहस देखल नेपाल।।

क्हलल क्समालय केर क्हम खण्सो
काठमाण्सूके फूिल कपार।
क्साब्सत चीन भूिन औ यूपी
कापल रक्ह-रक्ह बॉग-क्सहार।।

एिरेस्सिक पिसा आरोही
बेस कैम्समे क्सकक्र मरल।
क्हम खण्सक चटान क्सघक्लते
पैघ पलयसँ रहय अडल।।

धरहारा मीनार नौ मॉक्सजला
काठमाण्सूके कुतुब मीनार।

वारल धडाम ओ जमीन्दोज भऽ
झहुडा होइते लागल कनार।।

मन्दर-मण्डप कोठा-सोफा
दरकैत वारैत मलि भेल।
मलि सँ सैकडो मुदा
पलय कालके बलि भेल।।

एक घिना केर हाल बखानै
नासा केर विज्ञानकगण।
सात दशमलि नौ क्ट्रि सँ
घिना चकसँ क्सकए मन।।

भेल चौकना विश्व क्षतजन
भारत अमरीका चीन सकल
रैस्यू ऑपरेशन रत भारत
देखा देलक सहयोग अकल।।

भू-विज्ञानक आँकडा बतौलक
विमुख पकृतिके देखल कोप।
मानि अपनेक पलय पुकारल
तै धमकए भूकम्प पकोप।।

पीतम गोहरए विशिमान्थरि

ग्लोबल विमॉम हडपैए।

आपदा-विपदा धरती कोइखसँ

भू-तापीय रि तडपैए।।

विकासक दम्भ

हम विकास कऽ रहल छी
मुदा हास भऽ रहल अछि।
ई, विसॉगतिके मानय के
यश-अपयश के लऽ रहल अछि।
की..! हम अखना विकास कऽ रहल छी?
सभ देखैछ कालचक
युग चापक पभासिँ
पाकृतिक पराभि औ पभाि सेहो
आजुक वापछलगू जका
सदिखन चपिाएल, धडफडाएल...
कखनो अलसाएल, तँ कखनो महुराएल...
हम्मर सथिक बलैया लऽ रहल अछि।
ई, विसॉगतिके जानय के..?
यश-अपयश के? लऽ रहल अछि
की..? अखना हम विकास कऽ रहल छी?

हम, उसास कऽ रहल छी
मुदा खिास भऽ रहल अछि।
ई, विसॉगतिके मानय के?
उपकार-जनसेिा क्सनेह आ ममता जानए के

आई-माई, भैयाक सासुक, सम्मत मानए के
गोतनी सौतिन ननदिक नविनया
देख पडोसिन जरए मकनिया
गौरि आन्हर गृहिणी कनिया
उकि पैची सभ कऽ रहल अछि
की..? एहने हम विकास कऽ रहल छी..?
हम, उसास कऽ रहल छी
मुदा खगास भऽ रहल अछि..!
जहिना, चान-सुरजक गहणसँ
पसरल अन्हार
तहिना, अन्धविशासक चौपाइरमे
कहाली बनल पछरि
सरकारी सॉहणक पॉजीमे अछि दजम
ढोंति, रोंति रहए लोग जिनगी भरि कजम.
जाहिसँ फलय-फूलय...
छल-पपॉचक राजनीति...
फूइस, पेच, गलबैहिया धेने
गाम-घरमे रीत-कुरीति
जानक मन्दिर इसकुल जजमे
दसगरजा घर सभि गडबर
जतय अन्हरा कठरा बमकै
चतुर चलाको चुगला चमकै
दाि-पेच दोगलई के दलाली

औनी पथारी सभ दऽ रहल अछि
तैँ ने हम विकासक पयास कऽ रहल छी
मुदा सभ्मास भऽ रहल अछि
ई विसॉगक्त के मानए के?
ई विसगक्तके जानए के?
कीऽऽऽ एहने हम विकास कऽ रहल छी?
जे सभ्मास औ हास भऽ रहल अछि?

हँसनी-खेलनी

हँसनी-खेलनी आगु आऊ
कननी-खिजनी पाछु जाऊ।
मिथिलाक चिन्ता त्यागैत मैथिल
नि आशा केर दीप जराऊ।। हँसनी खेलनी...।

घर-आँगन दुअरा सुत्थिड कए
गौआँ-गोवियाक मीत बनू
नेना-भुकाक नि जिनगी लेल
करम योगी शमजीत बनू
जानी गुणी सपूत जनक भऽ
गामे गाम उपदेश सुनाऊ।।
हँसनी-खेलनी...।

शिक्षा औ सँस्कारक रक्षण
दायित्त्व कि सँग कर्तव्य कर ।
दारु नशा दहेज कुरीतिके
त्यागि लोक दुर्भाग्य हर ।।
तिल्हना बाल-विवाहि कुगह केर
कालगाससँ गाम बचाऊ।।
हँसनी-खेलनी...।

राजनीतिक धरम-करम सँ
विशि देश औ पान्त चलए
मुदा दुष पक्षके कनीक
नतुरके सौभाग्य छलए
ताहिसँ ईष्या रि औ लालचसँ
भकिल नि पीढीके बँचाऊ
हँसनी-खेलनी...।

एखनुक धरम धकेलू सन्तक
अजब-गजब लीला चमकल
यज समारोह उत्सि मॅचसँ
भजन पचिनमे छल छमकल
वजनगी लोक कायमरत पीतम
ढोगसँ घर-कुम्भि बचाऊ
हँसनी-खेलनी...।

<u>क्हस्सा-बखडा</u>

अजब-गजब भेल क्हस्सा-बखडा
सुख लपकए सभ दु:ख दए ककरा
बुझनुकहो सभ देखबए नखरा
साच नै मानत बूझत फकरा...।। 0।।

क्जनगीक हँसी-खुशी भेल हम्मर
शम-दु:ख भोगक्थ माऽए बाप बम्मर
शौक-सेहन्ताक सेज आमम्बर
मरम-दरद सभ जानै क्दगम्बर
दु:ख जोगक्थ जे शम पूजक छक्थ- 2
तेकरे सेज क्बछाओन अखरा...।। 1।।

लोक-समाजोक रीक्तअजब भेल
जान धरम विपरीत तरफ गेल
करमयोगी सन्तान अपयश लेल
कलह कुचाइल गाम-घर भक्र गेल
गाइर गरवै ल माइर मरवै ल- 2
छाडलकपिीक जल्ला-मकडा...।। 2।।

करमचारी-हाकिम आओर नेता

चोरनुकी कए घूस कमेता

कोर्ट-कचहरी-थाना-सॅडेता

बेबस जनके कष्ट बढेता

छल-बल देखैत पीतम कलपए- 2

नेता-पशासन सेति ककरा...।। 3।।

<u>हम नारी छी..!</u>

हम नारी छी..! सुकुमारी छी, सुखकारी छी...।
मातृशक्ति जगसृष्टि सम्मानी
लोक-पुरुष-शम पण प्यारी छी...। हम नारी...।। 0।।

वेद-पुराण-उपनिषद ग्रंथ सभ
आदि शक्ति अकानैए
ऋषि-मुनी-कवि-साहित्य सापूत
हमरो सुयश बखानैए
सावित्री-अनुसूया-अहल्या
सीता सन दुखियारी छी...। हम नारी...।। 1।।

इतिहास औ भूगोल कृति संग
जननी जन्मभूमि हम छी
अर्धनारीशरके हम अर्धांशनी
ममत करुणीक संगम छी
पणय पतिसंग प्रिमा उर्वशी
जका दैवि मनोहारी छी...। हम नारी...।। 2।।

युग परिवेश समाज बदलिते
हमरो निर्निरूप देलक

लक्ष्मीाई-पदाािती के
आभा कीर्त्तमकुर प केलक
सावितीीाइफूले रजया-
बेगम इक्दरा प्यारी छी...। हम नारी...।। 3।।

जान-विजानसँ हमहूँ सजलहुँ
गागी-मैतेयी भारती भऽ एलौ
नभ साकेतीक-कल्पना पण लऽ
सफल सुनीताविलियम्स भेलौ
कारपमापाण्मेय एरिर्स याक्तणी
केर पण पालनहारी छी...। हम नारी...।। 4।।

एखनुक युग केर केहन सराप अछ
गामे-गाम सनकी बमकए
काशाखोर दार लए उमकए
दहेजक दैत्य सेहो रमकए
तै माऽए केर गभक्हमे बेीिक
भूण पलैत लाचारी छी...
हम नारी...।। 5।।

एक्ह युगमे स्त्री-अस्तित्तक

मयादा अव्छ व्यना रहल

चकरचाइल छव्लया धनपव्त जन

विजापन तन बना रहल

पीतम कलम बखानए नारीक

पण शम दुक्तयादारी छी...

हम नारी...।। 6।।

हमरा के मारलक गै?

माऽए गै..! हमरा के मारलक गै??
तोहर कोइखक भूण सरिपे
विधिना जे अनलक गै...
माऽए गै हमरा के मारलक...
कएले शौक-सेहन्ताक खेला
बनलौ पापक हमही झमेला
दुनू पराणीक दुमता कोप सँ
गरभ जँचा हमरे सँ मेरेला
सुन क्षुर दम्पत्त सम्भोगी
दुरमु कोन पापी जँचलक गै...
माऽए गै हमरा के मारलक गै...।। 1।।

तो जेना अएले हमहूँ अबतौ
तोरे जका एहि लोकके देखतौ
बहाण्मके सृष्क साधन भऽ
हमहूँ जुग-जग गुण यश पबतौ
बेटी-बुझ उपचार बहने
पाण के छनलक गैऽऽ
माऽए गै... हमरा के मारलक गै...।। 2।।

देख क्दन-क्दन हम घिल जाइ छी

दहेज तराजूपर जोखाइ छी।

चतुर बक्धक बाजहु नक्ह दैए

अच्छैक्त औरदे हम जक्र जाइ छी

काचे उमेरमे दण्म समाने

कोना कऽ क्बयाहलक गै

माऽए गै हमरा के मालक गै...।। 3।।

समझ-क्सखाािए देश-सुशासन

लोक पूत शुभक्चन्तक भारण

कहै पीतम सम्हर जगािसी

कन्याक अक्स्तत्त् अक्छ मरणासन

ठोक्ह पारैए गभक्क बेिी

विधना पठौलक गै

माऽए गै हमरा के...।। 4।।

ओ, के छथिन्ह?

ओ, के छथिन्ह
कने हमरो कहिन्हऽ तँ कनियऽ
ओ, किछु कहि रहल छथि
से हमरो सुनऽ तँ दियऽ
हुनकर गप्प दू पिपी
शान्तिचितसँ गुनऽ तँ दियऽ
ओ के छथिन्ह...।। 0।।

हुनक मोनमे किछु भडास छन्हि
एहि लोकक सँस्कारसँ
जे, गौआँ-समाज, घर-परिवार
िरिश्तेदार सौं
सदिखन धमसम्प्रदाय
सीथमईष्या रि आओर
विरिकुम्भी कलश लऽ जीनि यजके
विषाह बनाबऽमे अगुआ बनैए
तै- हुनक भडास अनुचित नहि
तै हुनक सहयोगमे
अलच्छा लोक सभके
काढनी-कासकापरी जका

हमरो कने बीन्हऽ क्दयऽ

ओ, के छक्थन्ह

हमरो क्यन्ह क्दयऽ...

ओ, के छक्थन्ह...।। 1।।

लागैए जेना, हुनका मोनमे

बहुतो सॉफ्कल्प अक्छ

जे, आगत भविष्यक

साथक्क विकल्प अक्छ

हुनकर योजनामे

सेिा.... स्नेह... सहयोग...

ि सक्हष्णुताक... कमोन्मुखी....

समपमा भाि अक्छ

आिऽ िला पीढीक लेल

पागैक्तहाक्सक अयनामे

गुणात्मक कायमकौशलक

पक्तकाम्म अक्छ

तै, फुसराहैि जुक्त कर

आ एकाग होऊ

हुनकर दूिष्टीपर

हे यौ, देखू ने

हमरो मोन उमकैत अक्छ

जे, च्योटक्हॉ हुनकर

अनुगामी बक्न जाइ

हुनके जका... एक्ह देश समाजक

सँदिना औ तृरा हेतु

सॉजीनी रस तत्तकि

रोवायाहा शासक पशासक

ि चुप्पा लोकक लेल

तासदीक तृरा रसके

कलजुगहा-कौलहापर वरन्हऽ क्दयऽ

ओ, के छव्थन्ह

कने हमरो क्चन्हऽ क्दयऽ...।।

ओ, के छव्थन्ह...।। 2।।

<u>सुत्थि साजि</u>

पुरखा धरि िऽए-बापक पुन यौ
सुत्थर साजि देल आम्शार सगुन यौ
पुरजन-पम्रजन चेतबए त्यागु अवगुन यौ
पुरखा धरि...।। 0।।

बहा म्बधाता केर रचना-म्बधान सभ
सृम्ष्ट -पकृम्त संग युगचि काल नभ
हरि जका आओर जीव जन्तु जनलि
बहाण्डक घटनास तारा-गह हलचल
धरती-आकाश देलक रीत-गीत धुन यौ
सुत्थि साजि देल आम्शार सगुन यौ
पुरखा धरि...।। 1।।

जेहन साजि भेटल तहने हि बनलौ
म्पातृज अगज गुण करि के छनलौ
टोम्लया-पम्सियास लुइर-बुइध जनलौ
गौआ-संगम्तया संग धार-बाध फनलौ
गुर जानी म्हत लग बनौलक म्नपुण यौ
सुत्थि साजि देल आम्शार सगुन यौ
पुरखा धरि...।। 2।।

आजुक युग सनकी स म्चन्ता बढ़बैए
सुख-शौक नवतुर नि दुम्बधा चढ़बैए

दानव दहेज केर बेटी घटवैए
दार -तम्बाकू ीित-रोग पटवैए
तै पीतिि बेकल भऽ करए गुनधुन यौ
सुतथि सिाजि देल आम्शर सगुन यौ
पुरखा धरि...।। 3।।

<u>सुनबै-गुनबै</u>

कहु शीनि की पढ़बै-सुनबै
नीक बेजायके कतेक गुनबै
देश-राज-गृह लोक लेल केहन
नेता-मुखिया सरपंच चुनबै
कहु शीनि की पढ़बै-सुनबै...।। 0।।

गाम-शहर-नर-नारीक मनसा
एखन अजब-गजब भऽ गेल
अच्छे दिन औ सुशासन नारा
जीएसटीक कोनटा धऽ लेल
इसकुलिया या हाकिम-मिस्टर सभ
बम्बयौटी ऑफिस रमि गेल
शिक्षा-समिति संगवे संगे
सहमसा बखरा कए जमि गेल
कतेक दिन धर्म शिक्षाक अंगनया
शशिानक घाटहु मि खुनबै
कहु शीनि की पढ़बै-सुनबै।। 1।।

जनपदमाध्यम भऽ अजगुत लीला, बलात्कार कए नाि करय
मिडिया-कमी कलि दूतके, गम्भीर्यैबाते बदनाि करय
संगमहि गजब करै नव तुम्रिया
बूढ़ पुरानके दुत्कारए
नव स्टाइलस छौमि-छौमि

कलजुग-कपटस फुफकारए
मिबाइल-इयर फोनक चलती
बकैत जीजे-म्डस्को सुनबै
कहु शी नि की पढ़बै-सुनबै...।। 2।।

एक्खन जान-म्बाजान लिए
थ्योरीक चोर बढ़ए म्दिन-म्दिन
पैरवी-पाइस पैम्कटकल हसए
देखू परीक्ष केर दुम्दशा
कम्प्यूटर-इन्टरनेट उकिए
म्सकलइम्णडयाक भ्यू-दुरम्बान
अलक्भे नवतुर चौकैए
पूब-पम्च्छ-उतर दम्कण
तै सम्हरैत-सम्हार युगके
पलय काल आइखेटा िनबै
कहु शीनि की पढ़बै-सुनबै...।। 3।।

आब सुनू बुम्धयार शी म्थिल, लोकके बढ़ल-चढ़ल अम्दन्ता
मम्थिलाक शीलहरण भेल म्दिन-म्दिन, कानए युगक म्भयन्ता
पुरखौती-संस्कृम्त-न्हिुआएल, सनकल शौख-सेहन्ता
मम्थिला राज्यक सपना म्सासकए
ठोम्ह पारैए बेगरता
आश अगोिने पीति हकिए
बज्जर खेति की सभ बुनबै
कहु शीनि की पढ़बै-सुनबै...।। 4।।

बुझवाक चाही

एक्खन देखल गाि-गाि
शहर-बजारो सभठाि
िनुक्ख सभ
अपन ऐशर्य देखबक फेरि
भेल जा रहल अछि ूर उदाि...
ओकरा सभके सनकल संकल्प अछि,
संगे, बहुत रास विकल्प अछि,
तामे लेल किछु सोचवाक चाही,
बुझनुकके त ई, बेसी बुझवाक चाही...
से.., हरिो सभके बुझवाक चाही...
बुझनुकके त...।

सहटुल सुपातर सभके
सोहनगर बैसार चाही
बैसारक जगाहपर
जान औ इिनक पैसार चाही
एहने सोचके अगने दुअरे पोसवाक चाही
बुझनुकजन के त ई भाव पोसवाक चाही।
से हरिो सभके सोचवाक चाही।।

बूढ़क अनुभव गुमि नहि होअए
नवतुरिया बेदमि नहिं होअए
नारी-सशक्त वृद्ध वहने...

पुरखौती संस्कार नञि रोअए...
नव घर उठ्ठए त मोकए खसए...
पुरना घर देखि नवतुर हसए...
तै जुग-जुगके बाट-घाटपर...
सम्हरि-सम्हरि कऽ चलबाक चाही...
से हरिो सभके ई बुझवाक चाही...
बहुजन हिताय वा सुखाय संग
सुख-शान्तिके उपाय चाही...
छोटका-बिका भावके त्यागैत
सुच्चा मिथिल स्दािय चाही...
कहए 'पीति' कन्हियो मोकए!
गाि-घारि आइ! चाही...
से हरिा सभके ई बुझवाक चाही।।

कतऽ तकै छी?

धाकर सन-सन मिथिल बाबू
ढहैक सुमते हुमरि ढकै छी
जुगक कलि अपिेना दैछ ते
दुलकैत-दौरि बैम्स थकै छी
गाि छोमि परदेशी बमते
अपनेम्हं रिजी खूब अकै छी
ते मिथिला आब सोर पारिए
एतहु देखू ने कतऽ तकै छी।।
एतहु देखू ने... कतऽ तकै छी।। 0।।

जानल-िनिल-पुरखा-म्पहानी
कहए गरोसैत दादी-नानी
ि़ित-िहिर-जूित बपहर
खेलैत-कुदैत हसल जुआनी
ि़दा बथाएल-मिथिला-म्हिा
भूत खेम्ल सभ झूठ बकै छी
ते मिथिला..! सोर पारिए...।। 1।।

वैह देम्सल बयना अवहटा
बनल मिथिली भारा-मिटा
साम्हत्य व्याकरणअदौस पढ़ैत
भेल िनीरी जानक पटा
देव भारा संस्कृतो थुिएल

मिथिलीश बाजैत खूब ठकै छी
ते मिथिला 'आब सोर पाैए' ...।। 2।।

एकखन बुझनुकहो हकैए
अन्चोरक बम्म कच्छ कटैए
अत्तान मिथिली टूअर भेल अम्छ
जाम्ह लेल मकए नै िइल फटैए
कहैछ पीति सुनू मिथिल जन
कोन सेहन्ताक घूर पकै छी
ते मिथिला...। आब सोर पाैए...।। 3।।

आदाचषा

नवरात जगल, धूप-दीप सजल
िँ जगदम्बे सुर गीत भजल
म्बाजया दशािक दशदार खुजल
नर-नारीक म्हयहरम्रात म्बाहुसल।
नवरात जगल धूप-दीप सजल....।

जुग धाषिअधाषिक दन्दृ डगर
जगवासी डरय सन्तान नगर।
कबुला-पाती िनसा रोपल
जगताम्रणी दर भगतन कुहसल
म्बाजया दशािक दशदार खुजल
नवरात जगल...।

सम्दखन कृपाम्शार दैत रहू
जीवन सदगम्नाके सम्हाम्र अहू
सृम्षा क सन्तान पुकाम्र रहल
असरा केर पोटरी खोम्ल कहल
म्बाजयादशािक दशदार खुजल
नवरात जगल...।

देवसास्तराचषा

अम्बाक आभा पसरल सगरो
भगत शी ज्योम्ल जलाम्ब रहए..।
तैयो कुमिलजन अम्छ अन्हराएल
कलम्प सुता-सुत गाम्ब कहए..।
अम्बाक आभा पसरल सगरो...।

मास्श मदन सुरगण मिहि बखानए
शूलेशरी िSए करए भणि
असुरमाकमदनी कात्याम्यनीके
यश गाथा करए जगत शणि
शुम्भ-माशुम्भ मिहरासुर मिदषी
जया मबजया िSए भाम्ब रहए...।
अम्बाकआभा पसरल सगरो...।

छन्दोम्बत : नव दुगा िSए नाि जेकर अम्छ,
पार कहा केओ पाओल
पाप मबनाम्शनी िSए जगताम्रणी,
अदुत् र प रचाओल
शैलसुता ओ स्कन्द िता,
िSए चन्द्र घण्टा कहओली
बह चाम्रणी, कुष िण्डा औ मसम्द दाती यश पओली
कात्याम्यनी कालराम्त्र भS िया, िहागौरी जग भावए

म्बाश धाम्रणी आम्द शम्कनी,तीनहु लोक बचावए
म्संहवाम्हनी-वैष्णोदेवी सन्तम्त हृदय धएली
बम्रख-बम्रख कृपा आम्शर संग म्बजयादशमी लऽ अएली

धृत-वाती-कपूर्र म्नराजन
सुनि सपिषा भगत करए
कंचन थाल सजल म्धुव्यंजन
भोग लगा वत्ती म्थि धरए
लोक शोक संग कुहुसए पीतम्
करणालाप सुनाम्ब रहए
अम्बाक आभा पसरल सगरो...।

साध्याचषा

दोहालाप :
अनेक अनाथ सनाथहु होवए
भगवती जागरण भक्तस..।
शोक िटाएब अम्बे शरणि
म्बनती करए ि शम्भक्तस..।।
केओ पूजए केओ भोग लगावए
केओ संकल्पके दोहरावए..।
केओ पुष्पाजली िधुिवा दए
केओ सुदीपस गोहरावए..।।

कोरस (गुंजन) : शी ितु शरणि्.., शी अम्बे शरणि्...।।
िऽए केर िमन्दरि ज्योम्त जराएब...।
साँझ दऽ िगल दीप सजाएब...।
िऽए केर....।

अिहुल.. संझा.. चम्पा.. चिली
जगदम्बा पग फूल चढ़ाएब..।
िऽए केर...।

िनोकािना सन्तान हृदयि
रम्हयौ सहाय िऽए कोप पलयि..।
धरि-करि कम्लयुग छम्लया संग
तिस-तािस केर युद म्बजयि...

पमरऽिरित.. वसी नर-नारी
सभ मिमल-मिवजया ध्वज फहराएब..।
िऽए केर िमन्दरिं.. ज्योत जराएब...।

छन्दालाप : कूदए कमवत छन्द.. सनकए सवैया..।
जय अम्बे.. सुर-भगत.. जय हो गवैया।।

आऽऽऽ लाली लाले लालक ि्खस..
िगन अम्छ िऽएक लाल..।
भूरण-कम्व मवदापमत-वर संग..
लखए-मवहारी लाल..।।

छन्छ : जय अम्बे जय हो लाल.. िऽए केर चुनर लाल
भक्तक ि्दंग-झाल सुरताल झिके..।
बहाणी जान लाल, वैष्णोवरदान लाल
गौरी-गणेश लाल बाल-चान बिके..।।
म्दशा-म्दगपाल लाल.. अम्बर भूचाल लाल
िम्हरासुर रम्भ लाल, काल भाल धिके..।
दानव गुिन लाल, िगला-ि्सकान लाल
कात्याम्यनी कता लाल, रक्त लाल टपके..।।
म्संहक नाखून लाल, राक्स केर खून लाल
श्यािकाली ि्ह लाल,लाल जीभ लपके..।
म्शा-शिशान लाल, ताम्सक िशान लाल
भैरव-शान जीभ लाल, भूंक काल झपके..।
पूजा केर फूल लाल, संझा अिहूल लाल

गेन्दा-गुलाब लाल, धुजा लाल च किे..।।
दुगाक म्त्राशूल लाल.. कम्लयुग कबूल लाल
पीतति बातुल लाल सुर-ताल रकिे..।।

अन्तरा : िऽए गिला.. दरसन म्दयऽ अनुखन
असरा लगौने रहलौ सम्दखन..।
अम्बोक आगि म्दव्य ज्योत संग
म्संहवाम्हनी-गोहरावै भक्तन..।।
िऽए आम्शर लऽ.. कहए सुत पीति
संकम्ल्पत म्संह संग खेलाएब..।
िऽए केर म्न्दरि.. ज्योत जराएब...।।

<u>म्हशाचषा</u>

दोहालाप :
शुभनवरातक म्बजयादशाी..
पवषानोरि् जग म्बहुसल।
जगताम्हरणी ािऽएक लीला म्हिाि
गाािगाि त्योहार सजल।।

कोरस : आऽऽऽ... ऊ दौ.. दुगे ािऽए काली..।
अहाक लीला अजब.. अम्बे शेरावाली..।।
ऊ दौ... दुगे ािऽए काली...।।
हे ािऽए खप्पावाली जय-जय जोतावाली..।
ऊ दौ...।

अन्तरा : दानव कोपस देवता कानल इन्र डरल-घबराएल।
असुर रम्भ म्हिहरासुर बल के कोपस सुर थराएल..।।
तप कए म्हिहरासुर बहािस 'अिरत्वक' वर िाँगल।
'एविस्तु'वर देबऽए स पम्हिले, बहािक ािनस जागल।।
बेटा सृम्ष्ट क म्हायिस ई कोना हेतै..?
जे केओ जिन लेतै.. ओ त िरबे करतै..।
तम्खने अम्बरस देव-म्कनर.. ािरए लागल ताली..।। 1।।
ऊ दौ...।।

अन्तरा : बहाा वचन सुम्नते म्हिहरासुर..
म्हाजिन सोच बढ़ौलक।

‘कन्याकुमारी’ मिरए हरि..
छल नि बुइध बतौलक।।
तब चतुरानन कहल ‘तथास्तु’
गगन पुष्प बरसौलक।
सुरगण-आम्द शक्तिन सटिैत
शवषशक्तिन मारमिलक
दरसए सुरलोक सीमि-योगमिया छाया।
मदव्य-शक्तिन दरसए.. जगदम्बेशी मिया।।
दैव दुन्दुमि ध्वमन गुंजन, संग-पगटल शेरावाली...।
ऊ दौ...।। 2।।

छव्यालाप : मशव शक्तिन ‘मुिह’मवरणु शक्तिन ‘कर’
बहमाशक्तिनस बनल चरण।
धमिराज केर शक्तिन केश भेल
चन्रमिक शक्तिन दै स्तन।।
पृथ्वीक शक्तिन रचै मनतम्ब दै
जंघा रचलमन शक्तिन वरमण।।
वसुकै शक्तिन हस्तागुली औ
पादागुली देल शामक्तिन अरमण।।
संध्याक शक्तिन देल दुनु भौ
वायुदेव दै रचल शवण।
दात बनल पजापमतक शक्तिनस
अमगन-शक्तिन-मत्रनेतनयन..।।

आयुधालाप : बहमा देलमन कमण्डल मिडए केर

विष्णु चि पदान केलन्हि।
शंकर देलन्हि त्रिशूल पिनाकी
अग्नि शक्तिवाण देलन्हि।।
शंख औ पाश वरणजी देलन्हि
इन्द्रहु वज दऽ ध्यान केलन्हि।
काल दण्ड यिराजो देलन्हि
पवन शृंखला सिंह देलन्हि।।
रम्भ, रम्भि दए रोि कूपि
ज्योत्स्ना शक्तिनी िऽए दरसल।
िगिरक मिणािला पजापति दऽ
भक्त आजुर िऽए वर परसल।।
अम्बुज-रत शी कुडल-कंगन
हसुली नुपूरस िऽए सजल।
पृथ्वीक अंऊठी-हार पहिर िऽए
'रण-चण्डी' हुकार भरल।।

अन्तरा : रणि राक्स सबल िऽएस युदो पबल
महिरासुर जे िरल, िऽए केर जयगान बढ़ल।।
रणि राक्स महिल िऽएस युदो पबल
महिरासुर जे िरल, िऽए केर जयगान बढ़ल।।
िऽए विजयाक यश गावए पीति
जय-जय शेरावाली...।
ऊ धै...।। 3।।

<u>म्वदापम्त स्मृति</u>

म्वदापम्त पवागत शीनि
दएलहु दशषा त कुशल कहू...।
मिथिला आम्शर दए हुकम्र रहल
जुम्त स्वारथ कोपि घुसल रहू...।।
दएलहु दशषास त...।। 0।।

म्तरहुत मिथिलाचल अपनेम्हके
बाटो जोहए न्हिुआएल जका...।
संस्कार मारल-लोक-लाज रिल
डाही देखए कन्हुआएल जका...।।
कुटनी-लुटनी सभ दुइस रहल
बुम्धयार छी तै सभ दुसल रहू...।
मिथिला आम्शर दए हुकम्र रहल...।। 0।।

गौआरी मितौरीक खटपटी
बाबाक म्खस्सा म्खम्सआएल छै।
बेसुध अम्छ पंचो-परसिर
जम्ह-तम्ह लेरहल म्घम्सयाएल छै,
रसना म्वाधना देल कोप करि
अम्मशाम्पत भऽ म्कए रसल रहू...।
मिथिला आम्शर दए हुकम्र रहल...।। 0।।

हथटुटा कुरसी हकै कहए

अम्बियौ कम्मा गाि अहा बौआ
हेहर घर दरबज्जा हुचकए
शहरी सुख नाचए झिकौआ
सुख रोगी पूत सेहन्तोस
बिबेस नगरि हुस्सल रहू
मिथिला आस्शार दए हुकम्र रहल...।। 0।।

डीह-डाबर िम्टस नेह कर
कम्हयो-कम्हयो बनु घरिहा
पोखैर गाछी देव थान कहए
पावैन लाथे सेहो आऊ अहा
पीति कर जोिए सुनू िमथल
शुभकाल अम्छ तै नम्ह हुस्सल रहू
मिथिला आस्शार दए हुकम्र रहल...।। 0।।

<u>वरद वसन्त</u>

वरद वसन्त सुन्ति सुहावन
स्वागत ृदुकोमकल स्वरके
मावहुसल कुसुि सरस ऋृतु भावन
िुमदित कएल भू अम्बरके
वरद वसन्त, सुन्ति सुहावन...।। 0।।

धन्य वसन्त अनन्त मदगन्तक
व्यग बुलन्त िहन्थक रपे
सुिनक सौरभ, लम्लत पलाशक
िधुकर िधुप जयन्त सर पे
शुम्त सुर सरगि राग मावरागमहं
मपाक पंचि सुर मपाऊमपाऊ गावए
गीत-संगीत औ थाटक बाटमहं
काफी वसन्त बहार सुहावए
सुन्दमर छिकावए पग पैजमन
फागुन सुमिरए ईशर के
मावहुसल कुसुि... वरद वसन्त...।। 1।।

िदनोत्सव ृदंग िजीरन
डमफक संग नचए रंगरमसया
रम्त पम्त िदनक पंचवाण संग
काििन्चोरी टेरय बम्सया
युगशी कम्वाजन जेम्ह वसन्ताक

काव्याधार स स्नात भएल

विद्यापति ज्योतिरीशर संगहि

कालिदास ऋतु रीत धएल

आजु अहमिषा पीति अरचए

मिथिला मैथिली सुर गहवरके

विहुसल कुसुमि...। वरद वसन्त...।। 2।।

सरस वसन्त

बौरए वसन्त कन्त करय बरजोरी
फनकैत फागुन धुन-गावैए होरी।।
रंग-ब्बिरंग अंग-ओढ़नी-आँचर संग
उ किए उ िग तंग-भावैए गोरी।।
बौरए....।

युगबोध स्नेहक संगम्तया संगोरए
स्वारथ मितौरीके सदाव तोिए
उत्सव उम्हि लोक-लाज देह ओिए
डम्फा-जोगीरो आब जनिन झकोरए
सनकए िजीर-ढोल करए सीना-जोरी
फनकैत फागुन धुन...
बौरए वसन्त कन्त...।। 1।।

कवित : ऋतुराज वसन्त और सित पवन

फागुन धिधु सिक रंग रलि
कामिनी-भामिनी-दिनोत्सव रत
होलीक हुदिंग केर संग जलि
तरणीक जौवन तरके पल्लव
नव लम्लत शुभ रमन्ति-हमरयर
कलशल बैगनी अलसी-अहिर
तोरी-समरसो पीयर-उज्जर
गहुमि केर शीर आशीर भरल
सुखदा-वरदा धरती महुसल
सतरंगी छटा जम्ह-तम्ह हलचल
खग दल कलरव जगती महुछल
पमहाक पंचि सुरतान सजल
संगीत थाट मय 'काफी' हसल
दुिराग 'वसन्त-बहार' नवल
सुरमत गायन मय गिध बसल
आऽऽऽ... रंग-मरंग अंग, ओढ़नी आचर संग...।
बौरए वसन्त कन्त...।

आहत अबीर कएल बे रंग-कुरंग स
सीखल पहुनाई पवन रमतपमत अनंगस
परसल पकवान रस पूछए पसंगस
दुबकए पीतर मकए, होलीक हुदिंगस
बेसुर निुकखोके रंग संग...।

गीतल मिथिला

उगना-महादेवक नहिसि
सरस सजाएल अछि मिथिला।
गीत गोसाओनिक चढ़ए चढ़ौना
सुरम्य सजिएल समाज मिथिला।।
मिथिलपूत ज छी संकल्पित
आऊ सजाऊ पुनः मिथिला।
मिथिलागन भू लोक न्योतैए
रहत मकयए िSए मिथिला-मिथिला।।
जेकर ऐतिहासिक यश पसरल
हजार बरखस उकिैत मिथिला।
तेकर सन्तान मिथिलीश भाखए
तए अछि हुचकैत-ठुनकैत मिथिला।।
कहैयऽ ई मिथिला... गहैयऽ ई मिथिला...
जुगक भार सम्हखन सहैयऽ ई मिथिला...
कुडाहीके डाहे,   डहैयऽ ई मिथिला...
कतेक नारी करणा- कहैयऽ ई मिथिला...
िनुक्ख वेदना संग- बहैयऽ ई मिथिला...
नसिक नोरे-झोरे- दहैयऽ ई मिथिला...
तैयो दैत आशार- रहैयऽ ई मिथिला...
पोखैर थान गाछी- छहैयऽ ई मिथिला...
कोइली कागा सुगा-चहैयऽ ई मिथिला...
नदी-खेत शीरो- लहैयऽ ई मिथिला...
पीति आश गीतल- गवैयऽ िहैयऽ ई मिथिला...।

गीतल

आब अपनो िन दैए
उपराग कम्हयो-कम्हयो।
इहलोक हाक पारए
कर त्याग कम्हयो-कम्हयो।
म्बारधर औ अजगरो सभ
दुबकल छै गाि घरि। 2।
म्तसबद सूइत कएलौ
रम्तजाग कम्हयो-कम्हयो।।

म्तकहा म्बचार एकखन
सुनए कहा केओ चाहए- 2
बूढ़ो-पुरान सुनबए
खटराग कम्हयो-कम्हयो।।
नवतुर कुसंगम्तस
बेरथे बि़क बौिए- 2
आगत भम्बष्य आंकए
दुरभाग कम्हयो-कम्हयो।।
बुम्धयारो गत्म गढ़ए
गोषी सभाि अगबे- 2
स्पारथ सेहन्तो सिटए
म्सरपाग कम्हयो-कम्हयो।।

मिथिला सपूत सम्हर
एखनो सुहरदे भावे- 2
तखने सुनाओत पीति
अनुराग कम्हयो-कम्हयो।

गौआ-गीतल

गौआ सजि बाजए कलजुग बेकार एलै।
पुरखा सभहक कहबी सभटा देखार भेलै।।
गौआ-सजि... सजि...

देवता बनैत सभ केओ निकुखोस होइए ऊपर।
पूजा नजि देखबए मनकहा मचार गेलै।
पुरखा... गौआ...।

जम्ह-तम्ह देखै छी सनकी, मिति मसनेह कानए
मान बातो-के बतंगर अगना-दुआर खेलै
पुरखा... गौआ...।

नेतघटू नेता बम्न कऽ जनताके दैए धोखा
करबए ठकुरसोहाती सतबात उचार गेलै
पुरखा... गौआ...।

सरकारो भऽ बेतिर दरखासो नम्ह पढ़ैए
घुसहा नदीि उबडुब पीतिि पुकार हेलै...।
पुरखा... गौआ...।

हाय हौ म्हतलग

सौसे गाि म्हतारे तैयो खेत अफारे
बेर-कुबेरक म्हत लग िता सभटा भेल देखारे
सौसे गाि म्हतारे...।।
तम्हना मिथ्लाक बुझनुक बाबू...।
ऐंठैत जुग दुत्कारे...।
सौसे गाि म्हतारे...।। 0।।

एक त धरती म्दन-म्दन र सए
दोसर दैबो करए कािल
ताहुस बम्ढ़ कऽ नीम्न-धरि सभ
िनुक्खक म्जनगी कएल बेहाल
भूकम्प रौदी दाही संगे, बेढ़ब थाल म्खचाि...।
सौसे गाि म्हतारे...।।
तम्हना मिथ्लाक...।। 1।।

टोला-टपाि भेल झंझम्टया, जेना िरघम्टया लागैए
गाि उजमिते शहर पिाइए, पढुओ गािस भागैए
बचल-खुचल म्हतलगाुओ सम्दखन, उपनेम्ह जूइत सुतारे...।
सौसे गाि म्हतारे...।
तम्हना मिथ्लाक...।। 2।।

जान-म्बजानक अजबे सनकी
नव उपाि संग ऐंठैए

िशीनक िजर-िनुकखस बेसी
लुइर-बुइध सभ बैठैए
सोगे-म्पाते-सोचए पीति
आलसी जनि बेकारे...।
सौसे गाि म्हतारे...।
तम्हना मिम्थलाक...।। 3।।

सीखऽ तऽ मदयऽ

सुकीम्ताषक हकारस हकति अएलहु
म्सनेह पसादोके चीखऽ तऽ मदयऽ
सदम्तास जनल अम्छ अहा कीम्ताषयशके
वैहेए आचरण हरिो सीखऽ तऽ मदयऽ
कनेक ठाढ़ होइयौ औ छल छद संगे
करि-जान-गुण कम्मायो म्लखऽ तऽ मदयऽ
अपन आचरण हरिो सीखऽ तऽ मदयऽ...।। 0।।

अहाक सुख सम्दखन म्सहौलक-म्सखौलक
ताही लेल हिहू तऽ पाछू लागल छी
अहा दपषगौरव स खाहे केओ जरए
ि दा हि सेहन्ता केर संगे जागल छी
कोना दपषऐशयषएतेक जल्दी भेटल
तेकर पेच-बुइधोके ठीकऽ तऽ दीयऽ
सदम्तास जानल अम्छ अहा कीम्ताषयशके
वैहेए आचरण हरिो सीखऽ तऽ मदयऽ...।। 1।।

अहा सभ तरहे स सुम्बधा भोगै छी
हरि कछछिीके अहू म्कम्छयो बूझू
अहाक बाल-बच्चा सनक हरिो नेनाक
भवतव िित स्नेह आम्शर दऽ जूझू।।
नगर गाि बाजय अहू होइ छी म्बाकरी
तै हरिो खुशादि लऽ म्बाकऽ त मदयऽ

सदम्तास जनल अम्छ अहा कीम्तषयशके
वैहेए आचरण हरिो म्सखऽ त म्दयऽ...।। 2।।

ईर घाट, वीर घाट

आजुक समाजि केर अजबे अछि ठाठ बाट
कखनो केओ ईर घाट कखनो केओ वीर घाट
कालि बवाल करै लोकतंत राज-पाट
कखनो केओ...।। 0।।

शिक्षा-संस्कार सदति लट-पट करैए
गोबर गणेश सभ अट-पट करैए
जनी पुरुख सेहो गुन-धुन करैए
नवतुर बाऊर होइते परिजन डटैए
इरखे आन्हर लोक फिरैए हाट-बाट
कखनो केओ...।। 0।।

गणतंतक नारा लऽ सनकैए सता
संसद विधानक बखान अलबता
शासन बिचौलियाउ हिैए खता
सामाजिक सिनेहभेल मदन-मदन मापता
हाकि-हुकि सेहो फिरए धोबिया पाट
कखनो केओ...।। 0।।

हसनी-खेलनी अगना घरस हेराएल
सहठुल सुपातर सभ दु:खस घेराएल
अगतीक ढीठपनस बुड्धो पिाएल

हेतै की..? जुग-जगि जनमित डेराएल
सभतम्र देखए पीति दुरकलह ारि-काट
कखनो केओ...।। 0।।

<u>खगता-बेगरता</u>

जीबै छी! तै सुख-शान्तिके, गाि-घरि खगता अछि।
िऽए-बाप संगे, नेना-भुटकाक, सुख सौभाग्य सेहन्ता अछि।
दुयोगे दु:ख दूर करऽि, बहुतो रास बेगरता अछि।
हिरेटा नहिं हिरे जका, सभके एहन बेगरता अछि।।
पहिलुक गाि साजि सम्पदखन
लोक लेहाज औ िित रहल
धरि-करि सभटा छल सुत्थि
कुटुि सम्बन्धीक स्नेह सजल
िुदा एखन त अजबे हाल अछि
अपस्याँत करता-धरता अछि।।
दुयोगे दु:ख...। हिरेटा नहिं...।। 0।।

पैच उधार पहिलुका जका
कहा कतहु आब भेटैए
गौरबे-आन्हर िीत-पिसी
दु:ख-दुबधा कहा िटैए
तै कलजुगहा हाल स कलपैत
टूटल िनिक छगुन्ता अछि।
दुयोगे दु:ख...।
हिरेटा नहिं...।। 0।।

आजुक बूढ़-पुरान अवाके
नवतुरियाक सनकी देखए

ओकर िऽए बाप सेहो गुर्मि
पुरखौती पण फेकैए
केहुना म्जनगी खेपए पीति
दैबेटा दु:खहता अम्छ
दुयोगे दु:ख...।
हि रिटा नम्हं...।। 0।।

<u>नीक-बेजाय</u>

जोिल हाथ अगोरल आशा, शी िन आगत ध्यान देबै..।
एखनुक युगवासी करतब स, शोता-पाठक जान लेबै...।।
हि कलजुगहा गत्प कहै छी
सुम्नयौ बुझनुक लोक
सम्दखन दात म्चयारैत कलजुग
बाटए लोक ि शोक
बुइधक बम्धया लोके करैए
दैए दैवक दोख
बुझू त की नीक भेलैए
कहू त की ठीक भेलैए
हि कलजुगहा...।। 0।।

म्दन-म्दन अजगुत लीला एक्खन
गाि-गाि ि म्बहुसैए
पोथी-पतरा वेद-गंथ सभ
बूढ़-पुरान संग कुहुसैए
िहिर-बपहर सभतम्र देखल
जनीपुर ख सभ बहसैए
नव घर उठए- पुरनका खस्सए
संग सेहन्ता रबसैए
नेकी धरि-करि-िरणासन
बकुआएल सुर लोक
बुझू त की...।

हि कलजुगहा...।। 1।।

एकटा खन दार दहेजक चचा
जन-निर्माण अछि पसरल रहल
वाह-वाह नीतिश कहैत नारी
आन्दोलन स्त्री सशक्त रहल
खिरा बढ़नी लैत बहुत्रयो
कहै दरपीबा रत्नहयौ हटल
सम्हरत धिया-पूता जिनगी घर
सुख-शान्ति लेल रहू अटल
नशा मुक्ति अभियानि सभकेयो
दौमि यौ पीव्छयाठोक...।
बुझू त की...।
हि कलजुगहा...।। 2।।

शासन-तिन्त्रयो खूब कराबए
कलिदूत स ठकुर सोहाती
नेता कम्बलकाठी माछलगू
छपबए अत्यान दम्भक पाती
कलिकार पीति रचना अछि
साच संवद्दया बम्म उत्पाती
अम्हना लेखनी चल्लते रहतै
चाहे केकरो फाटौ छाती
गाि-घर जनिचि स साचक
गत्पा कहब म्हदोख

बुझू त की...।
हि कलजुगहा...।। 3।।

हि के? और की?

हि के? की छलहु आओर की की भेलहु
आब की होयब म्कम्छयो सुझाइए कहा।
कोप धरती गगन, चान सुर जो म्करण
पाथषा औ भजन, म्कछु बुझाइए कहा।।
आब की होयब म्कम्छयो सुझाइए कहा...।। 0।।

इष वा म्शष म्वम्शष के फेरि, राम्त-म्दन सभ अपम्शष होइते गेलौ
जान-म्वजान संजानस घूमि ते, ि र कालके गाल पम्वष भेलौ
सभ अपने बेगरतेस अन्हराय के
दोर दोसराके दए कहम्थ जानए जहा
कोप धरती गगन.., पाथषा औ भजन...।। 1।।

लोक सुधरल म्क म्वगि ल से कम्ह नमि सकी
म्दनो-म्दन गाि उजि ल मारल सन लगल
काम्त कहए जनि डीह सापूत कत य?
स्वाथषसेजक शयनस ओ नम्हए जगल
सभ तरहे पदूम्रत धरागन एखन
ई करण भाव पीतकि बुझाबू अहा
कोप धरती गगन.., पाथषा औ भजन...।। 2।।

केकरो केकरो

िSए केर मिति दूधक कजा
िन रहैए केकरो-केकरो
मिथिला-मिहि भारा बोली
िन रहैए केकरो-केकरो
जनक जागवल्क्य कपिल कणादक
पिभा जोहए केकरो-केकरो
सीता अहिल्या गागी िैतेयीक
अिधा िहए केकरो-केकरो
उगना िहादेव िवदापितके
कृपा िहए केकरो-केकरो
भगवती कालीदास सुवनके

िवदा जोहए केकरो-केकरो
भारती-भािती-लिखिरानीक
पजा टोहए केकरो-केकरो
िण्डन-वाचस्पित-अयाची
पुरखा सोहए केकरो-केकरो
कॉिरेड भोगेन्र-चतुराननके
सपना जोहए केकरो-केकरो
ताराकान्त-चुनचुन-बैजू सन
िमत्र सोहए केकरो-केकरो
िहिर-बपहर संगतुिरयास
पेि रहैए केकरो-केकरो

नवतुर-ीताक िनि कुशल
केि रहैए केकरो-केकरो
तम्हना िनुकखोक जनिडीहस
नेह रहैए केकरो-केकरो
ओम्ह िम्ट केर भाव गेह संग
देह रहैए केकरो-केकरो
मिम्थला-िम्थली खाम्तर सुच्चा
किषरहैए केकरो-केकरो
िम्थल शीिन यश कीम्तषकेर
धिषरहैए केकरो-केकरो

देम्सल बयना सभजन मिठाक
िषिरहैए केकरो-केकरो
िम्थलीश बजैत पीति संगे
शिषरहैए केकरो-केकरो।

जय गंगाजल

स्वर्गक सम्हलला शिवजटास आ,
भारत भू सहेजल गंगाजल..।
कहबैथ भगीरथ गंगा जुग-जुग,
पुण्या स्नाता वैह गंगाजल..।।
हिमालय गंगोती वन उपवन,
सुखदा शीतलपावनी गंगाजल..।
जलचर-थलचर-खेचर जीवन,
केर पूत पयस्विनी गंगाजल..।
पाणी केर अमृत धार बनल,
खाद्यान्नो उगावैथ गंगाजल..।
आस्था केर आशा घट भरि-भरि,
आस्तिको जोगावैथ गंगाजल।।
धार्मिक नर-नारी भक्तजन
केर पूजन साधन गंगाजल।।
पतितोद्धारिणी जगतारिणी बनल
वसुधागन सुमिरन गंगाजल।।
युग सदी बितावैत निति लूटा
आब हुचैक रहल अछि गंगाजल।।
युगपति केर सुबुधा सनकी स
आब हिचैक रहल अछि गंगाजल।।
हर-हर गंगे शुभ जापन स
अछि गम्भीर सम्पीड़न गंगाजल।।
जिदा नारि गंगेक नारास

भेल भमित बेकल ई गंगाजल।।
आब गाम्द स उत्थर-बदतर भेल
तै सभ कर म्मारिषा गंगाजल।।
गोहराबए पीतति भारतके
देखू ने गन्हाएल गंगाजल।।

<u>दीप पज्ज्वलन</u>

हे आगत शी दीप जराबू
कर आशाक इजोत यौ...
अपने सबहक जानाम्शर अम्छ
म्तारलोकी युगशोत यौ...। हे आगत शी...।

अहाक पम्तभा पेरणा सम्बल
स ई उत्सव चिलैए
तै शुभ दीप म्शखा संग अपनेक
हाथक आगुर उछलैए
तसि हरण हेतु घृतबाती
म्बचरै नभ खदोत यौ...। हे आगत शी...।

सृम्ष्ट म्तकाल पकृम्त गगनस
जग सुख आभा पसरैए...
जान धरि साधना सुकषि
उपदेश वाणी ससरैए
वैह पावन जानाृति जलस
लोक पीति नि धोत यौ...। हे आगत शी...।

अहो अभिनन्दन

हे परिागित शी शवणाथी
सुनू शीवर मिथिला सन्तान।
अपनेक बहु पतिभा यश सुनलौ
तै अपना अछ स्वागत गान।।

अहाक स्वागत स्वर प तान पुष्प अनूप..।
गीत िला सत्कृत होइछ अभिनन्दन..।।
मिथिला िमन्दर भिण लोक सेवा निन..।
जान कुंकुि ललाटे करब चन्दन..।। गीतािला सत्कृत।।

किदूत अहा.. किवीर सबल..
शान्तिदूत जका यशवली छी सफल।।2।।
स्वागति् गान र पे अहाक वन्दन...।। गीतािला सत्कृत।।

नामकहयेटा स अहाक तपस्या सबल
नवािमत्त संिमत्त नव कीत्तिषनवल। 2 ।
अहाक पतिभा अटल देख जीवन पटल..। 2।
िगिध पीति कहल- धन्य राषि नन्दन..। गीतािला सत्कृत।।

<u>सीताचर्चा</u>

जगदम्बा शी जानकी कृपाकर ...
मिथिलेशरी बम्म जग छाएल छी...।।
अपनेम्ह केर आम्शार अति लए...
हि नतस्तिक भऽ आएल छी...।।
जगदम्बा शी जानकी कृपा कर ..।।

ज सुत सुर भम्मतके स्वीकारब
लवकुश जका जानक वीर बनब..।
यिादा पुररोतकिे लऽ छटा
सम्दखन हि सीता राि जपब...।
एतबेम्ह शुभ आशाक पोटरी लऽ
हे ािऽए थाकल-न्हिुआएल छी..
जगदम्बा शी जानकी कृपा कर ...।। 1।।

म्सखबैत रहल पूवषा-अगज
म्पांजरा केर सुगनो सीम्ख रहल...।
सीता राकि रटना रम्टते
म्दन-राम्त हरि ािन म्लम्ख रहल...।
रावणवध कारण तत्त्य अहा, शदा भम्मतक धुन लाएल छी
अपनेम्ह केर आम्शार अति लए...।। 2।।

म्दयर लकिण कहै ातिेशरी
भारतो-शतुघ शी ाितु कहल

कौशल्या-सुनयनाक भिति लऽ
बहु-बेटीक सभटा स्नेह सजल
वैदेही-मादेहक दुम्हता सुनू- 2
सुत पीति काव्य साएिल छी...
अपनेम्ह केर आम्शर अृति लए...।। 3।।

उमेश पासवान

ई की होइ छै

थानापर रही हमि
सुखल रहए मिन
शम्भू मन्दिनक बात अम्छ
पाच बजे साम्हित्य अकादेमीस
आएल हमिरा फोन

घर जाइ मिइक
पएर छुइब
हमि कहम्लऐ-
भेटल साम्हित्य अकादेमी पुरस्कार
मिए कहलकै-
ई की होइ छइ
अइमि पाइ लगै छइ
आम्क पाइ दइ छइ
सभके भेटै छइ
ढौआ-कौरी
तोरा भेटलौ पुरस्कार!

जो रे कपर-जर आ
तोहर कामि रहै छौ बेकार
केता सालस म्डम्बायाक

सभटा तेल जरौले
हरिा िान छैल जे तू डाक्टर बम्मते
रौदि जरल देहक सौख-सेहन्ता पुरा कम्रते
बन्हकी लागल खेत छोंबिते
ाुह-पेट बाम्ह तोरा पढ़ेम्लयौ
बम्न गेले चौकीदार
आब हि ई की सुम्न रहल छी
ई की होइ छै साम्हत्यकार
साम्हत्य अकादेिी पुरस्कर..?

<u>बताह वादल</u>

ऐ दुम्नयास
म्रश्ता तोमि देलौ अहा
दुखस म्रश्ता
जोमि देलौ अहा
बताह वादल जका
घुलि म्फर्ि छी हि
नम्ह जाम्त एना म्कए
केलौ अहा
की कर्ी छल हरिाि
अन्हारि छोमि कऽ हरिा
दोसराक घरके
इजोत केलौ अहा
कम्हयो म्कछु केलौ नइ
वस अपना जका ानै छेलौ
तैयो स्रिक नोर
आम्खस बहा देलौ अहा
खेललौ हरि म्जनगी
आ खुनस होली
जखन तेरह अक्टुबरके
हरि जनि म्दन छल
खुशीक सयिपर
सनेसि कफन भेट देलौ अहा
म्जनगीक ऐ युदि

ओही कफनके ओम्ढ़ कऽ
जीम्बत छी
आस अखनो बाकी अम्छ
ाुदा अहाक बेबफाइस
लजाइ छी हि
ऐ दुम्नयास म्रश्ता...।

घा

फुलोपर नइ अछि भरोस
सभ भौरा कतेको रंग बदलैए ओ।

सावनके अबैस पहिने
केतेको रंग बदलैए ओ।

सभ भौरास दोस्ती अछि हुनक
सभ सकयोस मिलैए ओ
दिा
अपन बना कऽ काटस
घाइल कऽ दैत अछि ओ
सभ भौरा शिकाइत करैत अछि हुनक
सकए एहेन बेवफाइ चालि चलैए ओ
हुअए केतौ और घा त बरदास कऽ लेब
दिा दिलि काट जका गिए ओ
दवाइ करब दिा दवाइ मिलैए कहा
सकयो खुदास दुआ करैत अछि
सकयो बिसरए चाहैत अछि
सकयो पाबए चाहैत अछि
केकरा कहबै
के पतियाएत
सकयो सुनौ ने चाहैए
सकएक त कोलि ितिलाएल लगैए ओ
फुलोपर नइ अछि भरोस।

ज़िद

ई दुनियाबला
बेर-बेर देखौलक
पेटी सभके अपन तागत
मुदा अपना दुनियाबलाके
पेटी सभके मदल दुखबैक आदत
हम लैला-मजनू नइ छी
जे हुनका छोड़ि देब
हम त पेकि आगि जरै छी
पत्थरक देवालोके तोड़ि देब
मुदा हुनका सझ्झा मदयौ
दुगो पेटि केमहारक बीचमि नहि आबए
नै त हम हुनको
दुनियाँ आगि लगा देब
शायद हुनका ई मालूम नै
हम माथपर कफन बान्हि कऽ चलै छी
अप्पन पेकि लेल जीबै-मरै छी
जखन हम ज़िद कऽ देब
प्यारक ई दुश्मनिके दुनियास उठा देब
ई दुनियाबला
बेर-बेर देखौलक...।

सकि

हि सकि छी
मकछु बाम्ज नइ सकै छी
िदा मकए लोक हिरा
बदनाि करैए
मकयो खुनक इलजाि लगबैए
जखन मक अपने चलबैए
गाि ी-घोि ि रेसि
आि लोकके कुचलैए।

हि सकि छी
मकछु बाम्ज नइ सकै छी
िदा मकए लोक हिरा
बदनाि करैए।

रखैत अम्छ बान्म्ह कऽ
बोडर-सीि ि-सरहदस
तखनो नै अम्छ हिरा
िदा
डर त ऐठाकि नेता-ठीकेदारक
ओ घोटाला कऽ लैत अम्छ
हिरा ऊपर खचषहोइबला खरचा
जे दैत अम्छ ई देशक जनता।

हमि सभि छी

मकछु बाम्ज नै सकै छी

ििदा मकए लोक हमरा बदनामि करैए

सभ मकयो अछि अप्पन स्वार्थमे लीन

सहि-गलल फेकैत अछि

अपने संग सेहत हमरो मगाबैत अछि

कामट-छामट कऽ हमरा

आइर-खुमिपेम्रया बनबैत अछि

हमि सभि... ।_

ि म्थली

ि म्थलक पहचान अम्छ
ि म्थली
स्वर-लहरी भारा
म्वाश्व भम्रि ि धुस ि ीठ अम्छ
ि म्थली
जे भारा भगवान शीराकिे नीक लागल
हरि ि इक बोली
ि हान अम्छ ि म्थली
जेतुका संस्कृम्त देखैले
देवो ललाइए
ओ मम्थला ि हान अम्छ
ि म्थली
म्वादापम्त ि ण्डिन आयाची रहैथ
ओतैक शान छी
ि म्थली।

म्बासैर जाउ

जे भेल ओकरा म्बासैर जाउ
नसीबि जे नइ छल अहाक
ओकरा आब नइ बोलाउ
पाछू घुमि कऽ नइ ताकू
जे भेल ओकरा म्बासैर जाउ।

कम्हयो काल एना होइत अम्छ
अगर पमि गेल म्कनको पेकि नशा
त छाहो हुनका बोलबैत अम्छ
जे भेल ओकरा म्बासैर जाउ।

म्कनको भेटैत अम्छ
म्कनको हेराइत अम्छ
दू क्नक म्जनगी अम्छ
फेरो ओकर याम्द अबैत अम्छ।
पाछू घूमि कऽ नइ ताकू
जे भेल ओकरा म्बासैर जाउ।
ई जे देख रहल छी
ि रदास पटल असिसान
सभ म्कछु छोमि आएल
अम्छ ई सभ इंसान
पाछू घूमि कऽ नै ताकू
जे भेल ओकरा म्बासैर जाउ।

<u>खिस्सा</u>

दुखि डुमि कऽ भेटल हरि
एगो किनार बेवफाइक
जैपर बैस कऽ कनै छी हि
कोसै छी हि अपने-अपनाके
खोजै छी हि ओइ बातलाहा दिनके
जे बितेने छेलौ सहज भावस
शिकाइत नइ अछि हरि
बेवफा केर बेवफाइस
नि प्रति अछि हरि
लिखल ओइ चिटीक पना
जइ लिखने छलि ओ हरि नाओं
अप्पन लहूस
बिसैर गेलौ रातिक जगनाइ
इजोरिया राति
चान देखैक बहने
हुनकास मिलैले
हुनक पाइजलक खनक सुनि कऽ
जमा-जमा जागल रही
पुरान भऽ गेल ओ सभ खिस्सा
अप्पन पेकि
जइ रहै छेलौ दुनू गोरे
ओ रसनाइ ओ निनाइ
चुपचाप चिटी लिखनाइ

आब सम्दका, म्ातलाहा म्दन
म्दलिं छूरी बम्म कऽ भोकैए
की भेटल हि रा?
दुखे-दुख?

फासी

काल्म्ह हरि फासी भेटतै
की अहाके ई बुझल अछि
अहा एगो बेवफा छी
तइ खामतर अहाके बजौने छी
हरि नाओंस जे हिदी
लगौने छी अपन हाथि
ओकरा आइ हरि खूनस
धोइक म्दन आएल अछि
की अहाके ई बुझल अछि
अही दुनयाि
सभ पेि बहुत नीक होइत अछि
दा अहाके िलून नइए
आइ हि अहीक प्यारि
ितके गला लगौने छी
की अहाके बुझल अछि
हि म्जन्दा लहाश बनल छी
अहाक बेवफाइस
सास हरि कखन चम्ल गेल
नोर आ लहू
एके संगे बोहेने छी
ई अहाके नि अछि
हि और अहा मिलल छेलौ
फुलक बमायाि?

ि दाआइ हरि रा सुलीपर
चढ़ेने छी
नीकस देखू अहा अप्पन सूरत
जे अहाके वफास बेवफा बनौने अछ।

<u>गलती</u>

कखनो लग अबै छी अहा
कखनो दूर चल्ल जाइ छी
की गलती भेल हरिास
मकए एहेन जुलुि अहा करै छी
नीन हरि, चैन हरि
सभ छीन लेलौ अहा
आमख-स-आमख मिला कऽ
आब आमख मकए चोरबै छी
बेचैन भऽ जाइए ई मदल हरि
जखन नाओं हि अप्पन
अहाक िहस सुनै छी
िनि करैए आइए अप्पन बना लू
जीवन भमरक लेल
िदा सपना केकरो औरक
अहा देखै छी।

रोग

चम्हल जाउ अहा
हिरा अहास
नफरत अम्छ
पेि ित लोक हसैत अम्छ
ुिदा अहा कनै छी
चम्हल जाउ अहा
िसि जका अहा
बदैल गेलौ
अप्पन जवानीक आ जानिर ख चाम्हलस
जेकर कोनो इलाज नइ अम्छ
ऊ रोग अहा दऽ गेलौ
चम्हल जाउ अहा
अहाक ई बेवफाइक
गि हि, सम्ह नै सकलौ
जहरक कोन जर रत
हि त ओम्हना िम्र गेलौ
िन पाि ओ म्दन
जे म्बातेने छेलौ संग-संग
तैयो आइ हि नोरक जगह
आम्खस लहू बहेने छी
चम्हल जाउ अहा
हिरा अहास नफरत अम्छ।

बटोही

अपने शहरि हेरा गेल छी हि
खोजैले मनकलल छी स्वयं अपनाके
लऽ कऽ हाथि मडमनया
ुदा मटिमटिाइत इजोतक गरीिस
जरल जा रहल छी हि
बेखबर भऽ गेल छी ऐ शहरस
बटोही सन लगै छी हि
मकयो बता मदअ हिर घरक पता-ठेकान
नमह जामन केतएस केतए
चमल कऽ, चमल एलौ हि
मबना कोनो ितलबक
ऐ अन्हार रामनि
अइि दोख अहाक नै
दोख हिर अमछ
पमरस्मथमतये एहेन चमल आएल अमछ हिर।

हवा

ि नि ाजी अम्छ ई हवा
स्हिैर कऽ कहा चलैए
ठोकर िरैए पहाि
नम्ह जाम्म केतएस आएल ई हवा
सनसनाइत-ऐंठैत ई हवा
गरदा उिबैत म्माडर भेल चलैए
लाज-शिम्क परदा
चेहरास हटा कऽ
चलैए ई हवा
ने कोनो दुख
आ ने कोनो म्चन्ता छै
जेि्हरे बहिाइए तेि्हरे
हल-चल िचबैए
डाम्र-डाम्रके म्हलबैए ई हवा।

<u>दोख</u>

िभ्जल लगस
घूमि आएल छी हि
अपने म्जनगीि आमा
लगा आएल छी हि
जरै छी अही आमाि
अपनोपर दया नै अम्छ हिरा
केहेन परीक्ा अम्छ हिर म्जनगीक
कोन दोख अम्छ हिर
ओ हसैए
हिर ई हाल देख कऽ
म्कयो हुनकास पुम्छयौ
बेवफा हि छी आम्क छैथ ओ?

गुिन

दुखक नदीि
डूब लगबए लगलौ
चाम्हयो कऽ पार नै कम्र सकब
ई ददषभरल याद
सभ बेवफा यादक
चीता सजबए लगलौ
अधूरा रम्ह गेल ओ कहानी
जे म्लखनै छेलौ
दुनू गोरे मिम्ल कऽ
म्गाश्छल पेिक
आब ई ऐना
साच बाजए लगल
गुिनक पेिक धुलि
मिलए लगल
जे देने छल, म्गाशानी पीतक
सभ म्चटीक पना
आमाि जराबए लगल
लूम्ट कऽ हिर म्जनगी
खुशी ओ िनबए लगल
याम्द सभ म्चन्ताक, चादैर बम्ना कऽ रम्ह गेल
म्जनगीक सभ आशा
दुखक नदीि
डुबए लगल।

लिकी

िसुि सूरत हुनक
कनैल, गुलाब जका
हसी जेकरा चेहरापर झलकै छल
ओ लिकी म्कए उदास रहैए
साउन िसिि
सुनसान राम्ति
चान जखन वादलक संग
लूका-म्छम्पा करैत रहै छल
नट-खट पम्र सन
चुपचाप नंगे पएरे
हिरास मिलैले अबै छल
ओ लिकी म्कए उदास रहैए
हुनक आम्खि भरल नोर
म्कछु कहैए
आब नजैर झूकल-झूकल हुनक रहैए
जेना म्कछु तेहेन हेराएल होइ
सभ दुख डुबल ददषपीब कऽ
नोरि डुबल रहैए
ओ लिकी म्कए उदास रहैए
कखनो ई हि सोचने नइ छेलौ
म्कयो केकरो संग एते पेि करैए
सिए म्बात गेलाक बादो
फेर वएह म्दन अबैक इन्तजार करैए

जनु तए
ओ लिकी उदास रहैए।

<u>आदत</u>

जीयब केना
हसी त कोसो दूर
चम्लल गेल
आब नोर पीऐक आदत भऽ गेल
भरोस केकरापर करी
म्दलि रहम्नहार काम्नल बम्न गेल
केकरास म्दल लगाबी
सुनरकी गेल म्दल तोमि
भम्र दैत अम्छ म्दलि जख्ि ओ
दोसरेक खुशी देख-देख
हिरो जीबैक आदत भऽ गेल
सिच्चा राम्त ओनाम्हते
चानके देख-देख जगैक आदत भऽ गेल।_

अनजान

म्हकयो हिरा बजा रहल अम्छ
अही अनजान जगहपर
अखन आधा राम्त म्बात चुकल अम्छ
फेर केकरो कनैक अवाज
सुना रहल अम्छ
ई केहेन सनसनाहट अम्छ
उज्जर कपि ओढ़ने म्हकयो
परी जका लगैए
िदा ओकर चेहरा
ठीकस हि देखलौ नम्ह
ि नि होइए लगस जा कऽ देखू
िदा हिर म्हदल काम्प रहल अम्छ
बस एगो शकल हिर नि आम्ब रहल अम्छ
ई के भऽ सकैए
एहेन दृश्य, नै देखलौ कम्हयो
की केकरो िम्र गेला बाद
आत्ि फेरस जीम्बत लोक जका
हल्ला कऽ सकैए
फेर हसैक अवाज
आब कनी धुआ जका उठल
हि देखैत रम्ह गेलौ
म्हकयो ओही जगहस उठल आ चलए लगल
बस एके बात बजैत जा रहल अम्छ

अहा चम्पल आउ, अहा चम्पल आउ...
आम्खिर ओ भऽ के सकैए?

<u>लोभ</u>

कनी कनी कऽ
सभ अलग-अलग रहैए
सभपर जेना कोनो आरोप रहैए
ई देख
फुलैए दि, िहगरहा सभके
दुतकारैत-फ्कि‍त नजैर आम्बि रहल अम्छि सभ
घिण्ड अम्छि केकरो
अप्पन दादा-पुरखाक
घरि‍ दुबकल रहैए सभ
चुप-चाप बैसल रहैए
गुज-गुज अनहम्रिया राम्ति‍
दौ‍ि‍त-भागैत रहैए- अनेरे
सुखक तलाशि‍
िहनतस कोसो दूर रहैत अम्छि
िदा लोभ भरल नजैरस।

<u>स्वाथी</u>

कोनो पुरान याद
फेरस म्दलि उतैर आएत
ई कम्हयो सोचनै नइ छेलौ
ओ म्दन अखनो याद अम्छ
जे देखै छेलौ
फुलक म्कयारीि भवरा फुलक संग
अटखेल करैत रहै छल
ओ म्दन आ आइक म्दनि
काफी फरक अम्छ
फुलक गाछि फूल आब फूल नम्ह रहल
ओकर कोिलता काटि बदैल गेल
बस गाछ कनी पुरान भऽ गेल
आब कोनो भवरा
ओही गाछ लग नइ जाइए
बुझना जाइए औझका िनुखे जका ओहो
स्वाथी भऽ गेल।

कम्रछौन

केतए हेरा गेल ओ याद
ओ सभ आब राम्ति
सपनो देखब भुम्ल गेलौ
दूर चम्ल गेल
जेना छोमि कऽ अप्पन छाँहो हिरास
आशाक म्नाकलल म्कारण डुम्ब गेल
म्पायासल हि रम्ह गेलौ
िनक सि्र सुम्ख गेल
घरक कोणि दुबकल रहै छी
कैदी जका
अपनो नइ म्चन्ह रहल छी
सियक ऐना बदैल गेल
ओ नीक सिए कम्रछौन भऽ गेल
पत्थल भऽ गेल ओ छाती
जइि रहै छल ओ कम्हयो।

एकबेर

जंगलगे-जंगले
जा रहल छेलौ हि
अहाके खोजै-ले
बदहबास बताह जका
गाछो सभ र सल छल जे हिरास
खबैर नम्ह छल
जे अहा केतौ और छी
गाछक र सनाइ
भीतरे-भीतरे हिरा म्हला रहल छल
जेना ओ कम्ह रहल जे
यएह िनुख सभ त
सावनक हिरास कोसो दूर केने अम्छ
शकल-सूरत त देखू
आजुक दुश्िन बम्ना कऽ बैठल अम्छ
दोख दऽ रहल अम्छ हिरा
आ म्नाकलल अम्छ खोजैले ओकरा।

<u>साच</u>

झगिम्महारके की पता
हरि चुप्पी कम्हयो रंग लाएत।
म्बना तिलबे उलैझ कऽ
म्बतौने अम्छ अप्पन सिए
हि त एक-एक पल म्बतबै छी
काजि, नीक काजि
जे सँझि लेत ऐ रहस्यके
सिए-सुतके
ओ सभ दुख पार कऽ गेल
ने दुश्िनी केकरो संग भेल
ने कम्हयो दुखि केकरो आगू झुकए पलि
कोलि-बेवहार हुनक म्माशानी रहल
सभस अम्छ पेि
दोसर देख-देख कऽ जरैत-जरैत रिैत रहैए
झूठ-झूठे रहत आ साच-साच रहत।

यादि

अखनो डुम्बि जाइ छी
हिनि पामि कऽ ओइ म्दनके
जे हि म्कयो सोचने नै छेलौ
की अहा हिरास केते दूर चम्ल जाएब
पेकि धागामि गुथल
ई पेकि िती टूम्ट जाएत
हिर जगैत आम्ख
अहाके सपनामि देखैले तरैस जाएत
म्पाजािके खुम्लते देरी
म्चामि जका उमि जाएत
अहाक यादि ई िहल।

जिना

यादक दीप मिझा देलौ अहा
हिभटकैत रहलौ, पागल जका
डुम्बा गेलौ म्बायोगि
अहाक पेरि
मिलल नै म्बाच्छो
छुलौ अहा खाली हाथ
भेटल तोफाि बेवफाइ आ जखि
िदा देखाएब ई केना
आब त जिनापर भरोस नम्है अम्छ
बस भेटैए मशानीि धोखा
बेवफाइक दुख जे सम्है कऽ जीबैए आम्शाक
जे सिहैर जाए ओ जिना।

<u>पछताएब</u>

आइखो आब थाम्कि चुकल अम्छ
कब सेहो
ि रिना सन भऽ गेल
यादो हुनक दफन भऽ जाएत
अन्म्ता ि घि ीि
कफन भऽ जाएत
िटा जाएत सभ म्ताशानी
हि कहा
फेर भेट सकब
दर-दर ठोकर खाएब
पछताएब आ नोर बहाएब
फेर भेटत नइ ई सि ए
के कहलक आइ हि छी
त काल्म्ह अहा नइ।

म्चटीक पना

यादि डुबल रहैए ओ
नजैर झुका कऽ चुप-चाप
नोर बहबैए ओ
डेग ािनू र म्क गेल अम्छ
देखल बम्रखो म्बत गेल
कम्हयो काल भेट-ुलाकात होइए
म्चटीक पनाि, आ सपनाि
खुजल आम्खस
नजैर कहा अबैत अम्छ ओ
सभ सपना टूम्ट गेल
बरखो म्बत गेल
म्दलक हसब आ खुशी
म्दलेि दफन भऽ गेल
नइ जाम्न हिरास
मिलैस डरैए म्कए ओ।

<u>कम्बता</u>

जखकि देबालस

अनहत िनस

म्सकलैए एगो अनजान शब्द

जेकरा अप्पन भावनास

जोम्त-कोम्र कऽ

बनबै छी कम्बता

म्कछु अप्पन रहैत अम्छ

म्कछु दोसराक शब्द जे

सािजक सच्चाइके देखबैत अम्छ

म्कछु शब्द तलवार सन

धारदार रहैत अम्छ

म्कछु ािध सन ाठ

कोनो शब्द भावनास दलम्लत रहैत अम्छ

जे पम्ढ़ कऽ म्खस्सा जका कनबैत अम्छ

सभ शब्दस

अप्पन म्दलके होइए भेट

तए कोनो शब्द म्दलके झकझौरैए

आ म्कछु सा जाइए सीनाि

सादा कागत, कलि आ जखसि

भऽ गेल दोस्ती

तइ दुआरे म्लखै छी कम्बता।

<u>गासि</u>

मकयो लकिी चुप-चुप
हरि घरक मखिकीस
मचटी मलख कऽ फेकने अमछ
के छल ओ लकिी
मकयो नइ देखने अमछ
जखन खोललौ ओइ मचटीके
मचटीक ऊपरि हरि नाओं मलखने अमछ
एगो सुन्दर सन गुलाबक फूल
बना कऽ
फुरसति
पेकि पैगाि मलखने अमछ
घर केतए अमछ ओकर
िलुि नइ।
ुदा अही गासि मलखने अमछ
अप्पन कोलि हाथस
पेकि ढ़ाइ आखर भमर इतिीनानस
मलखने अमछ
अन्ति हरि पसंसो केने अमछ
नइ जामन कोन मरश्ताअमछ
हरि गजलके
ओ अप्पन नोर मलखने अमछ
मकयो लकिी चुप-चाप
हरि घरक मखिकीस
मचटी मलख कऽ फेकने अमछ।

<u>तरहत्थी</u>

खुदास गिने छेलौ अहाके
मकए हरिा अलग कऽ देलक
जीए देत कनी मजनगी हरिो
कनैए कनी हरिा दया कऽ देने रहैत
देख कऽ अहा हथेली
ओहीपर हरि नाओं मलख देने रहैत
खुदास गिने छेलौ अहाके
मकए हरिा अलग कऽ देलक,
जइ मदन उठल अहाक मबआहक डोली
ओही मदन हरिो जनाजा उठा देने रहैत
हहिू जैतौ संग-संग
अहा अप्पन सासुर जैतौ
आ हि भगवानक लग चम्ल गेल रम्हतौ
मकए हरिा आइ अलग कऽ देलक
पुम्छतौ हि ओइ भगवानस
मकए परीक्ष लइए
पेिीके प्यारि
मदल लगबैस पम्हने
काम्ट देने रहैत
खुदास गिने छेलौ अहाके
मकए हरिा अलग कऽ देलक।

<u>डुबैत</u>

जे िगने छेलौ हि
भगवानस
से नइ भेटल हिरा
डुबैत गेलौ हि
गि केर गहराइि
चीर कऽ सीना राम्ख देलौ
म्द्दल, अप्पन वएह पैरपर
जरैत रहलौ हि
बेवफाइक रौदि
गली आ चौराहापर
म्बातल म्द्दन आएल फेर
तुफान जका
तोमि हिर म्जनगीके फेक देलक
लबाम्रस लाश जका भऽ गेलौ हि
जखन फेर िन पिल
पुरना पेिके
तब खोजने म्फि छी
ताज-िहल आ कम्बस्तानि
हि त बस पेि छी।

<u>तागत</u>

प्यारक दुश्मनि छी ई दुनियाबला
हमरा मिटेनका लऽ जाए चाहैयौ
कन-कनमे बसल अछि प्यार अहाक
तखने हम जिन्दा छी
तइ दुआरे एकरा हमरा जराबए चाहैयौ
प्यारक दुश्मनि छी ई दुनियाबला
हमर आखिरस जे मार रहल अछि नोर
अहा अपना-ले हमरा
छोटिम कऽ जाए चाहैअ
हमर तागत अछि पेमि अहा
असर एकरा देखबए चाहैयौ
प्यारक दुश्मनि छी ई दुनियाबला
सुनै छी मखिस्सा हम
लैला-मजिनू-सिरी फरीहादक
हसि-हसि कऽ मरिए चाहैअ
गमि आ प्यारमि
तागत हमहू देख लइ छी
कखिख्त ई तलवारमि
पेमिक फेर अजमिने अछि
हसैत आइ सुलीपर चढ़ए चाहैअ
प्यारक दुश्मनि अछि ई दुनियाबला
सभ जखमिपर अहाक नाओं होएत
सभ खूनक बुनपर अहीक नाओं होएत
सभ पेमिक लेल प्यारक पैगामि होएत।

<u>हालत</u>

हेरा जाएब हि एक म्दिन
छोमि कऽ जाए म्दिअ म्नाशानी अप्पन
फेर के जनलक
कम्हियो आएब मिलैले हि
ई वादा अम्छि जवानीक
दौित रग-रगि रवानीक
िदा तखनो भुम्ला जाइ छी हि
जखन लग अबै छी अहा
र म्कि जाइए नजैर अहाके देखते
की कर हि
केकरा सुनावी ई म्दिलक म्खिस्सा
एतए लोक सभ ितलबी अम्छि
जखि म्दिलक केकरा देखाबी हि
कनै छी सम्दिखन हि, पागल जका
लोक हसैए हिरापर
हि त कनै छी एतुका हालत देख कऽ।

<u>जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'</u>

<u>गीत</u>

छागर कटैत रहलै
कनैत कलपैत रहलै
भगवती पसन भ गेलीह
लोक सभ बुझैत रहलै.

परम्पराक चिपर हत्याक खेल
बाघकेर बलि कहियो ने देल गेल

ढोल-पिपही बजैत रहलै
आ नटुआ नचैत रहलै
भगवती पसन भ' गेलीह
लोक सभ बुझैत रहलै.

सत्य आ अहिंसाक ग्यान िन भेल
भम्र गा तिशा देखैछ ठाढ भेल

म्लधुर जे बहैत रहलै
बखरा लगैत रहलै
भगवती पसन भ गेलीह
लोक सभ बुझैत रहलै.

कहलन्हि जे बुद्धिावीर आम्बाक'
सुतलोंि सम्दखन रहू जामाक'

म्हंसा जे होइत रहलै
म्बापदा अनैत रहलै
भगवतीक आम्खकेर नोर
क्यो नम्ह देखैत रहलै.

िउसके पसाद िम्म लेल
हरषि म्बाराद साम्म देल

धररती फटैत रहलै
गदषआसिनि भेलै
दुम्मयाि क्यात्त चीत्कार
िेत बम्म अबैत रहलै.

गजल

बथान हरि नै छी, दलान हरि नै छी
ई दस कोठलीके किान हरि नै छी

पदबी हरि ओगरबाह एम्ह गाछीक
खेत खोपि और िचान हरि नै छी

लोकक लहासपर फुनगीपर चढ़बाले'
लुती लगबैत ई परान हरि नै छी

बलतकार हत्या तलाक आ िकम्दि
ई म्बाम्ध हरि नै छी म्बाधान हरि नै छी

पुत म्बाना िक्के कहैत हो असंभव
त शास्त्र हरि नै छी, पुराण हरि नै छी

िता-िि : 2222 2222 222
दू टा लघु के एक दीघषिनल गेल अम्छ |

रजनी छाबिा (िहन्दी किवता संगह 'िपघलते िहिखण्ड' स िैथली अनुवाद- अनुवादक डॉ. िशवकुिार पसाद)

सासक सॉग

खनकै कॉगना

छनकै पायल

ओझरल केश

वछतरल काजर।

ििल-फुिल

सासक हलचल

धरतीक वपयास

मेघक तरपब।

रौद सोहनगर

कुनमुनाइत सन

ओकर छुअब।

एक आँचमे

पघलए तन-मन।

सपना बक्स गेल

सपनौती जीनि।

सास-सास सँ बहब

कानु कहने सभ कहब।

<u>चचा</u>

ओ सॅसार हमर नञि भऽ सकैत अछि

जेतए अहाक गमक नञि हो

अहाक स्मृक्त नञि हो,

चचा नञि हो जेतए अहाके

ओ सभा हमरा अनसोहात लगैए।

<u>क्षितिजक नजीक</u>

क्षितिजक नजीक

करै छी

हमर उमेद

जेतए दू संसार

भेटियो कऽ

नहि भेटै छइ।

अपूर्णताक आस

अपूर्णताक मिलन केर आग्रह

आब तँ फूल फुलाइयो कऽ

नहि फुलैत छै

फुलाएलो-फुलाएल नहि लगैए।

केहेन उपराग

लाल जागल आँखि

पैछला रातिक

करोि

रातिक जागरण

कहियो खतम नहि होमए बला

सतैर।

वियोगिक

यएह

अमाबसक

भाग्य छै

कनकासँ बेशाकाइत

केहेन उपराग..!

<u>सुख-दुख</u>

समय केर अन्हारसँ
जुझत मेराउ हे मन।

मेघक अक्तम छोरपर
चमकैत बिजुरीक
अहा अन्दाज कऽ कर
अपन नाप-जोख।

जखन झकसै छै
गुनगुनाइत रौद
ठरल बसातक पछाइत
ओकर मृदुल-मृदुल स्पर्शसँ
फुलवारीक कोण-कोण
अबाद भऽ जाइ छइ।

सुख आ दुखके

साँ-साँ सहैमे

जीनिक सहजता छै।

काकि नमहर बाि

पारे कऽ के ने

गुलाब शानसँ

महकै छइ।

आन

जाहि आँखिमे
हिलैत रहै छल सपना
आब ओहू आँखिमे
बस विराने-बीरान नजैर अबैए।

देखै छी जखन
पूर्णकालिक छवि
हमरा अपनहिमे
आन देखैत अछि।

<u>कारण</u>

ओ पुछै छथि
चुप रहै छी कए
ठोर गुम्मे रहल
नोर छलैक जाइए।

की कहए हम जाबि
सबाल दुनियाक सुनि
जखन जिनगीए हमर
सबाल बनि कऽ
रहि गेल-ए।

<u>सतरंगा आनन्द</u>

सभ ऋतुमे
फुटपाथपर ठाढ
ओ काच उमेरक नेना
बेचैत अछि सतरंगा बेलुन
आ छिछियाबैत अछि
आनन्द केर रंग।

नन्हकिरबा सभ कुदैत अछि
नाचि हाथमे पकडने बेलुन।

बेलुन ओकरो ललचाबै छै
मुदा ओ कहियो
अपनो लेल कीनि पौत?

गरीबी अभिशाप छै
सतरंगा सपनाके

चुरमचूर करए-बला।

ओकरा बचेबाक छै
एक-एक गोि कैचा
आनए लेल
बेराम माइयक दबाइ।

छोि भाइयक लेल
एक कपी दूध
सभ दिन पुडेबाक छै
अपनाके तँ बस
काममे खिबाक छै।

एक्ह सोचमे मुमल
ओकरासँ कछु कीक्स कऽ बेलुन
पकडा दइ कछऐ
ओकर नाक्हि हाथमे
ई छोि-छीन उपहार।

ओकर कोमल मुँहपर

चमकलै आनन्द

हमरो दैत अछि ओ

सतरंगा आनन्दक अभास।

<u>अहाक थाती</u>

हम जोगा कऽ राखब

अपन देशक खातिर

पैर खक थाती

अहा जे हमरा नाम कऽ गेलौ।

मुस्किया कऽ सहब

सभ समय केर धाह

देशभक्त तक मनसूबा

ने कहियो हएत कम।

बलिदानक फूल

देलौ जे अहा आँचरमे

ओकर गमकसँ

गमकतै हमर बतन।

हमही जीजाबाई

हमही अमर सिंह राठौडक छी माए
लोरी केर बदला
कहबै बेकिके हम
बलिदानक कथा।

जँ फेर कोनो आफत
एतै देशक माथपर
आ माँगतै जँ बलिदान
देशक माथ लेल
कऽ देबै हँसैत-हँसैत
अपन दुलर आ
बलिदान।

जे जान दइ छथि
देशक लेल
ओ छोड़ि जाइ छथि
बलिदानक कहानी
जइपर चलि कऽ

अकुण्ण रखै छव्थ नितुकरया

मु त राष्ट, मु त सॅसार।

<u>कासबासक मूकताम</u>

सभ शहरक

सभ गलीमे

किछ पाथमा-घर आ

मकमल होइत छै

जेतए लोक

अपन-अपन

कासबासक मूकताम

बना दैत छथि,

अपन-अपन

बेहिार आ चलैनसँ

ओकरा सजा लइ छथि।

शेर सॅंसारक

धरम-करमसँ

फेर ओ अजान भऽ जाइ छथि।

नहुँ-नहुँ ओ

एना हेरा लइ छथि

सतही पाथमामे,

अपन धरमके ओ

अपन इमानसँ

पर्िबाक बदला

रंगा दइ छथि

हुनक लेहुसँ

जे हुनक धरमसँ

इतर छैन।

वासबासक मूकाम

बनबैत-बनबैत

हुनका पतो ने चलै छैन

कि ओ अपनहि

कखन मूकामबका जाइ छथि।

ई केहेन नाता

ई केहेन नाता अछि

खुशी अहाके भेँटि अछि

खोइछ हमर भरि जाइत अछि।

करोटि जखन अहा घुमै छी

हमर सुख हेरा जाइत अछि।

चोटि अहाके लगए

नोर हमर आँखिमे

मबमबा जाइत अछि।

अहाक आँखिमे

नोर छल-छलाइसँ पहिनहि

अपन आपनीमे समेटि बाक

मन होइत अछि।

अटखेल करैत

लहैरमे कएक
अहाक छवि
अभरऽ लगैत अछि।

चुपे-चाप मौसम
गुनगुनाए लगैत अछि
अहाक स्मृति
हमरामे बसि जाइत अछि।

कानमे कठगर
घन्टी सन बाजए लगैत अछि
जखन अहाक बोलक
जादू पसरैत अछि।

जिनगीक आधा खाली जाम
आधा भरल नजैर अबैत अछि।

अनाम सम्बन्धके

नाम देबए-मे

शब्दो भण्डार खाली भऽ जाइत अछि।

अही कहू ने

अहासँ ई

केहेन नाता अछि?

मनक पखेरू

आकुल नैन

व्याकुल बाट

अलोपित होइत

आस-धूर,

कल्पनाजके

छुबाक आस

अतृप्त प्रयास।

तबधल रेगिस्तानमे

सौनक बात

नेहक मेघके बरसब

वजनगीक भीजब,

छद सपना

फुजल आँक्खक छल।

मनक पखेर केर

पाक्ख कतरब

यएह अछ

यथाथमकेर धरातल।

<u>कचोटि</u>

अधखड्डु जिनगीक चोटि

एना जिनगीमे

सक्कहया रहल अछि,

जेना कजरया रातिक

गाढ रोशनाइ

नोरोसँ नहि

धुआ रहल हो।

<u>स्मृक्त</u>

अहाक गुम्मी

अहाक आँखिक कजहासँ

अनकहलो बात

कथा बिन जाइत अछि।

नहुसँ छुबि कऽ

बात

फुला जाइत अछि

अधफुलल कलिकाके

ओ छुअब

जिनगीक मस्ती

बनि जाइ छै।

अहाक गमक लऽ कऽ

अबैत अछि गीत

ओ कण बनि जाइ छै

जिनगीक स्मृक्त।

आसक कचडै

मन तँ आसक कचडै छै

एकरा कहए बान्है छी

कैदी बनैले

मनुरक देह

की कम अछ?

केहेन भकिब

सगर धरणीक

सभ कोण

आइ ने काल्ह

फुलेबे करतै

तखन काबिला बासिँ

कहएक भकिब?

सुनै छी

कामिे छै

फूल फुलेबाक चलैन।

<u>बेमन जिनगी</u>

अचानक जखन लागए लगए

बेमन जिनगी,

ठमैक जाय

एकाएक उल्लास,

तँ बुझि ली

हम बिनैत रहल छी कथा।

बीतल कथा बनैसँ

नीक अछि

इन्द्रधनुषक अभिराम कोरसँ

लाल रंग लऽ

जिनगीके पुनि

आसक रंगमे रंगा

आयास आ बिसबासक

दीप बारि ली।

<u>झिमिझाम</u>

पघलै छै बरफक पहाड

कठुरलो सिनेहके,

मधुआएल

बासबासक

रौद तँ

दऽ कऽ देखियौ!

ई केहन सतैर

कखनहुँ तऽ नेहक दू बुन

दऽ जाएत छै क्सिन्धु सन तोर।

कखनहुँ समुरो

क्मयास नक्ह मेाि पबैत छै।

नै जाक्न क्मयासक ई केहन

सतैर आ नाता छै!

<u>बन ठोर</u>

बनो ठोरक

सेहो अपन कजहा होइत छै

गोि-गोि क्खस्सा

आँक्खये कक्ह दैत छै।

ई बुक्झ सकैत अक्छ

एसगरे नेहसँ भरल हृदय

सगर सॅसार

एक्ह बातसँ अनक्भज

रहैत छै।

केना बिसरैर सकै छी?

हम बिसरैर सकै छी हुनका

जे हमरा सॅंग

हमर सुखमे

साझी भऽ ठहका लगौने छथि।

मुदा हम कहनहुँ बिसरैर सकै छी हुनका

जे हमर दुखक सॅंग

कानु कहने नोर

बहेने छथि?

घरक पाग

ृदिजन छथ्थ

घरक पाग

के नकारत

एक्ह सत्यके

कोनो ि सभ्य समाज।

ओ छथ्थ घर-आँगनक बरक गाछ,

सुकुमार लतासन भविरक खारही

हुनकेसँ लपिाइत

पाबा सकैत अछ अधार

बढौने रक्ह सकैत छथ्थ ललसा।

अनुभकि बोझ अक्तभारी

तहूसँ दोहरी भेल छैन मार।

कछु कडू कछु खगिर कठगर अनुभि

दोहराबैत चुप भऽ

सोनसन रौदमे लैत खुमारी।

अनुभकि ओ खान सॉजोगने
किकिी लगा ताकक रहल छथ्थ
अपन कहस्सा केर विरानी।

पुतोहु बेिा केर सभ ककछु भेिन
घर-बाहर सॉग ककटी-पािी
बच्चा पढैले जाइ छैन
पाठशाला िा होस्िलमे
तैयो मर एकान्त बासमे
कबगाडड देतैन ई दादा-दादी।

घरक अन्हकरया कोणमे
समेि लि खाि-पलॉग सन
आकुल-व्याकुल मनक
ककनका सुनेता बेथा।

संस्कार नहि घरक बात ई
केना वकालता बाहर
दिाशमसँ बाचल छथि ओ
बँचबैत घरक लाज।

अपनहि घर अहिलेत
आइ अछि
घरक ऊँचका पाग।

जेठ नागरक कदसिपर
बेटी-पुतोहुक सँग
पाबि मान केर मँच
कण भरक खुशी पाबि,
पुरुष सक्षहया जाइ छथि
अपन हृदयसाक कोणमे
बकि बातलाहा काकल।

बातलाहा काकल आ आजुक आइ

जँ कमल सकए एकसॉंग

विकासक बापिर

बढ़ सकैत अछि अपन समाज।

<u>खेलौना सन</u>

हे भगिनि!

सभ घरमे

खेलौना सन

बच्चा छियौ

आ बच्चे सन खेलौना।

सुखक नीन

आ बिछौना सेहो छियौ

नेहक छाह

तैसँ सुनर सपना छियौ।

कल-कलाइत रहए

खिल-खिलाइत रहए

आँखिमे ने कहियो

नोर भरए छियौ।

घर आओर मकान

जाहि नगरमे

हमर घर

हमरा जतए तेज आ दाना भेलि

एिह हमरा लेल

संगिमसन

असरा अछि।

जाहि शहरमे

हमर मकान

आ जीबाक समान

ओतहि जीबाक सुख

आ एसगरआ जिनगीक ठेकान अछि।

<u>एहेन कोन जीयब</u>

एहेन कोन जीयब

कि जीयब

एकटा लचारी लगए।

किएक ने करी एहेन

किछु काज

कि हमरा मुइला पछाइत

ई सँसार

हमरा कानु

अधखड्डू लगए।

बहए दियौ जिनगीके

दशमिक फेरमे

जुनि ओझराउ विचारके

शब्दक मकडजालमे

जुनि ओझराउ चालिके।

बहए दियौ जिनगीके

विमल अबाध धार सन

कहए दियौ मनके भाि

सोझ सहज कविता सन।

कुहेस

उदासक पडल पपडी-पर-पपडी

कोनो कुहेस नहि

जे छैि जेतए

कोनो उ् जर मनसरसँ।

ओ तँ एना घोसयाएल अछि

हमर करेजमे

जे जएत

हमरे सँग।

साचक धरातल

सपनाक सँसारमे जीबैत छेलौ हम

नञि छल कोनो साचक धरातल अपन।

जिनगीक दहकैत दुपहरियामे

नञि छल माथपर सिनेहक आँचर।

सरापल तबधल मन लेने

सौनक बात लेल तरसै छल मन

बातोमे छण छण भीजल छल नैन

फूलो गरैत छल काँट समान,

दुनियाक मेलामे

एसगर हकासल छल मन।

अहाक फेन घुमि आयब एतए

सुनसान जिनगीमे हमर

सणिमकिरण किकसैत
जेना छँटि गेल कुहेस
गमकए लगल जिनगीमे
चाननक सुगंिस।

हमरा सँग आब अछि
हमर खुशीक आँगन
पाँखि हम पसारी कए
पबैले असमान।

साचक धरातल अछि
आब हमर पहिचान।

एक्ह पकारे

समय केर सागरक बालुसँ

मुटीमे बिरिल

किछु बालुक कण

जे सलि अछि

हमर तरहत्थीक मध्य

ओही कणसँ

सागरक अनुभूति

सॉजोवा लइ छी।

एक्ह पकारे जीबा लइ छी

छण-छण केर जिनगी।

नेनपनक घुमब

ठहकाक अहा झरना जे

देलौ हमर आँगनमे,

कलकारीक कुँजनसँ

मुक्दत कएल घर-आँगन।

आभारी छी हे परमेसर

एक्ह नन्हकी देदूतक लेल।

नाक्हि ई क्वारबा जे

लहलहैत अक्छ घर आँगनमे

हमर बेि केर नेन्हपन

घुक्म आएल आँगनमे।

<u>मेलामे एसगर</u>

दृश्य क अक्तम छोरा धैर

जखन हमर आकुल आँख

अहाके व्हयाबैत अछि

आ अहा जखन लगीचमे

केतौ नहि अभरै छी

तँ आरो भीरण भऽ जाइत अछि

मेलामे एसगर

भीडोमे भुतएल

हेबाक भान!

<u>हमहुँ जीबि रहल छी</u>

यै बसात यौ सिन्त

हमरो हेबाक कने

भान तँ कराऊ।

सास लऽ रहल छी हम

मुदा जीबित रहबाक

बिसबास नहि।

जिनगीक विरोधमे

ई जघन्य अपराध नहि?

छणेमे जीबि लेब

भरि जनम,

हरेक सासमे

सरगमक सरि

हरेक कम्पनमे

पायलकेर झनक

रेशमी आँचरके
नहुसँ सरसराएब,
आँखिसँ आँखिमे
सभ किछु कहि देब,
बे पाँखिए
अकासके नापि लेब,

पूर्णताक अभास तँ
सपने भऽ गेल।
खाली पल पल, खाली जिनगी,
जिनगी तँ बनबासे भऽ गेल।

सोन्हगर स्मृतिक फुलझरी
कने फेनसँ महकाऊ
यै बसात यौ सिन्नत
हमरो हेबाक
कने भान त कराऊ।

<u>लहैर</u>

साझक सघन धुइनमे

सागर केर लहैर आ

धका खाइत हमर देह आ मन।

अहाक सॉग रहैत, मन अभासैत छल

सागरमे सागर सन विस्तृत,

अनन्त सुख, भरल पुरल नेह।

समय केर क्षुर बापिर अहा

आब छी जनगीक सीमाकेर ओव्हपार।

साझक तरेगनमे, अहाक छबि देखै छी।

एिह सागर तँ आइयो छै

ओव्हने साझक कुहेसो सघन

लहैरमे ने हलचल

सतहो अचॉचले सन।

स्थिर समुर सन मनकेर गहनता

खान अछि अशक्तिक

चिारक सघनता।

मनक बजार

ुवि कऽ जुव्डयो जाइ

तैयो दराइर देखाइत छै

मनक बजारमे

फेन नव्ह

ओ बौस

क्षकाइ छै!

<u>वजनगीसँ की चाहै छी</u>

हम वजनगीसँ की चाहै छी

हम अपनो कक्छु नक्ह जनै छी

कक्छु करबाक लेने क्ललसा मनमे

अधखरए क्ललसे जीबै छी।

हम वजनगीसँ...।

होइए जखन मनमे क्ललसा

बासिँ हर्व कक्छु काम करी

सँस्कार नेह केर लोरीसँ

ओक्ह क्ललसोके सुतबैत जाइ छी।

हम वजनगीसँ...।

सोन सन रौदसँ भरल अकास

सोझहेमे अक्छ

मनक बन अन्हकरया कोठलीमे

तैयो हम सुकिल जाइ छी।

हम जिनगीसँ...।

चाहै छी विस्तार सिन्धु केर जिनगीमे
सरिपहुँ कुँइयाक बेग सन जीने जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

चाहै छी नदी सन बेग हम जिनगीमे
नोरोके आँखिसँ नहि घिरए दइ छी।
हम जिनगीसँ...।
लिलसा अछि जीती जिनगीक खेल
किठीक मदैतसँ चलैत जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

किछु नीक करबाक लिलसा लेने
किछु नहि कऽ पेबाक कचोट लेने
एहि अजब निनि केर हालैतमे
ओहिना जिनगी जीने जाइ छी।

हम क्जनगीसँ की चाहै छी

हम अपनो क्कछु नक्ह जनै छी।

<u>आजुक नारी</u>

आजुक जनानी
अबला नहि
जे मोनपैत पिलापर
टुटलाहा लिा जका
मर्छमिया जाइ छै।

आजुक जनानी सबला अछि
जकरा टुम्टयो कऽ
जुबि आ जोबिाक
कला बूझल छै।

<u>हि केतए छेलौ</u>

हि जखन ओम्हठाि रही
तखनो
ओतए नम्ह रही।

अपनम्ह संसारक िलाि
हि हेरागेल रही
नम्ह जाम्त केतए रही।

पैघक गुणक
नकल करैत छल
हरि व्यम्क्तत्वक अपहरण,
हरि म्ताजत्व
पपाि दर पपाि
कब्बरि झपाएत रहए
आ हि अपन छीण होइत
स्वास म्फरसान रही।

काच उिि
कनहाक
बेगरता रहै छै।

अपन पैरपर
ठाढ़ भेला पछाइत

कनहा धऽ चलब
अपन बेकूफी छैक।

सोनजूही सन
पुनकब
अपन कविता रम्हतहु
दोसराक बले चलब
म्कए िम्म लेने छल
भाग्य हरि।

म्नःशब्द बेथा
आ नोरस
धैरज रखम्नहार जगतीक
छाती पटा कऽ
बरखो-बखक्क पछाइत
हि अकुरलौ अम्छ आब
निि संजोगने
पुनकबाक इच्छा ।

झौखरा जका नम्ह,
हि चाहै छी
नीर-म्नम्ध सन पसार।

नम्ह जीबए चाहै छी
गुडडीक म्जनगी,

लेने अकासक पसार,
जुर्मि कऽ साचक धरास
बनए चाहै छी
अपन ंजनगीक अपनम्हि अधार।

<u>विसबास</u>

अहा अपनापर विसबास राखू
संसार अहापर विसबास करत
पकिने रहू आसाक डोरि
अहाक आस निरास नहि करत।

रौदस सुनगैत होए जे आगन
कहियो ने कहियो इसरक विकरपाक घि,
छाह बनि एबे करतै।

कारी सियाह रातिके
छाती चिरबाक तागैत
जइ वियारी छै
ओइ वियारीके अन्हरो
निरास नहिए करतै।

अन्हरके तिकैबला
जे कऽ लइ छै लिाह
हुनका जिबाक ढंग
अपने आबि जाइ छै।

आस, विसबास आ
हिम्मतिक जखन
होइए छै मिलान

त दुम्नयाक कोनो कलेस
नम्ह रहै छै कलेस।

म्बसरा जाइ छै पैछला
झंझैटक सयि।

बैस जाइ छै फेनस
खुशीक घर।

म्जनगी गाबए लगै छै
राग आ ि लार।

िनक कनकौआ

कनकौआ सन सौखीन िन
लेने चुलबुलीक पहाि
छूबए चाहैत अम्छ
सौसे अकासक म्बस्तार।

पहाि, स्ि, अटाम्रक म्बस्तार सन
सभ झंझैटके
अम्छयाबैत
आगुए आगू पएर बढ़बैत अम्छ।

म्जनगीक थकाबैटके
िटेबा लेल चाही
िनक कनकौआ आ
सपनाक अकास
जाम्हि िन भम्र सकै
म्नाधोख सतरंगा उिान।

िदा म्कए दी दोसराक हाथि
अपन डोइर?
छण छण लागल रहत शंकाक परेत
कखन हि कम्ट जाय
कखन हि लुम्ट जाय?

चुलबुलाहैट, चपलता
नेने देखए नि
कल्पनाक एना,
साचक जमीनपर
मटकल पएरे ने
दइ छै म्जनगीक अथष

घर

स्नेह आ आत्मीयता
जखन देबालक चार
बन्न जाइ छै।

वएह घर
घर कहाइ छै।

<u>सुनसान</u>

जे छुम्ट जाइ छम्थ
एम्ह म्जनगीक जेहलस
पाम्ब जाइ छम्थ
एकटा नब म्जनगी।

बेजान त ओ रहै छम्थ
जे ओकर बादो म्जबैत छम्थ।

ने रहै छै कोनो उत्साह
ने उिग
रम्ह जाइ छै
बस सुनसान,
हरेक खुशीक छण
सेहो कऽ जाइ छै उदास।

<u>अकास भरल छै</u>

अकास भरल छै
दहो-म्दस बेकल छै
नम्हि जाम्न आइ पाकृत
कोन लीला करतै!

<u>बेसुध</u>

बेसुम्धक हालैति
अपनाके हि
ओम्हना बजबै छी
जेना अही बजाबैत होय हिरा।

नम्ह जाम्न कम्हया
जएत ई पगलपन
होश हएत
कम्हया।

<u>नारी</u>

जनानीके ाित जनानी
मकए नम्ह बुझल जाइ छै!

साजि सथामात
कऽ देलकै
ओकरा लेल
मजनगीक मकछु आदशष
मकछु शतष
ओकरा जे मााभौती
ओ देबी कहौती।

अपेक्षाक मसंघासनस
उतमरते
भऽ जेती पमताता।

कखनो त देबी सन पूजलक
कखनो पाएरक पनही बनौलक
कखनो कठपुतरी सन
नि ाीमफक नचौलक
अपेक्षा एतेक ऊच भऽ गेलइ
जे जनानीक मजनगी ओछ भऽ गेलइ।

मकए नम्ह ानै छी सभ
ओ ाित जनानी छी!

सहज सरस सरलित
सम्वेदनाक जननी आ
सृष्टि क सृजनहारि।

अपना निजबाक
ओकरो अन्धकार छै
जनानी बस जनानी अछि।

एकटा हेराएल जनानी

म्शकाइत की अनकास
अपने सभ छीम्न लेलक
हरिास हरि पम्हचान।

बेटी पुतौह कम्नया िए
ि ओझराएल
िटा लेल
हि अपनेस
अपन पम्हचान।

बाटपर जाइत कामि
सोर पालिक संगी
नेन्हपनि राखल छल
जे हरि नाओं।

खुजए लागल तखन हरि
सृम्तिक झरोखा
रौदक चालैनि
म्कम्रणस म्नकसल
धुआएल-धुआएल नाओं।

हहिु कम्हयो हि छेलौ
िए-बापक फुदकी म्चि

हास म्बलासस भरल
उ ित रही अगना-घर
गा कि गलीस गा कि म्सा िन धम्र।

ह रि अजादीक म्खस्सा पसैर गेल
काचक म्कम्रच सन गरए लगलैन
अ ि◌स प ि◌स संग
सर-सम्बन्धीके
ह रि पसरल पाम्खक अजादी।

नोचैले पाम्ख अजाम्दक ह रि
सुनर सुनर बहनास
करौल गेल म्बआह
नेनपने ि ह रि।

पढ़ब-म्लखब सपना भेल
ह रा पो िाएल गेल
घरेक सेवा ि िवा भेटै छै,
जाबत सुतल छल
अपन पम्हचानक इच्छा
ताबत म्कछु बखषधम्र
रहलौ मारहस्थी ि लीन।

बच्चा अपन म्जनगी आ
पुर र अपन काज संग

पलखैत ने हुनका
हरिा लेल एको छण।

पाकैत बाउल सन
तपैए नि।

धधकैत रि भूमि
ढन-ढनाइत घैल सन
नि हरि खाली अछि
मजनमाक रीमचकाि तकै छी
अपन पहिचान।

फल्लाक बेटी हि फल्लाक बहुरिया
फल्लाक कनिया आ फल्लाक िए बनि
हि गेलौ हेराए।

मशकाइत की अनकास
अपने सभ छीनि लेलक
हरिास हरि पहिचान।

राजभारा

भुगतानक बेर बैकि
कहल गेलइ नाओं

राजभारा नाओं देखि
भेटल निके अराि।

अहास त देशोके
बढ़ल अछि शान
अहा मानु रहने की
होएत हिन्दुस्तानक पहिचान।

भुगतान लेबए काल जखन
लगौलमि ओ औंठा निशान
झानि भऽ खसल नि
भेलौ ृयिानि।

नाओं आ गुणक
केतौ ने कोनो लि
विधाता की केला
केहन केला खेल।

निि लेने ओकर
पढ़ेबाक अभिलारा

ाए-बाप रखने हेतए
नाओं राष्भारा।

पम्रम्स्थम्नायो राजभारास केलकै ाजाक
अक्रोक बोधस ओकरा केलकै फराक।

स्कूलक बाट

गबरा, धापू, मलछिया आ रानी
पैघ पैघ डेग बढ़बैत
पाठशालाक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

आइ बभनजी सँ सिखेती हासिल-जोखि
जेकरा सिखला बुझला पछाइत
बनियाक चलाकी
नहि चलतै।

आखर जानस
फैदे-फैदा
बनियाक जोर
नहि चलतैन जादा।

गबरा, धापू, मलछिया आ रानी
आब तोरा सभस निक बात कहियौ
कहबौ किए ने
गाकि सभ जनानी पढ़ए चाहै छै
हमहीं किए अनपढ़ रहब?

चुलही पजारैत, दालि भात रान्हैत
माजलोका जका निर्लौकैत अछि
धधकैत आमाके सहारैत

सुनगैत िनि नेने
चुमिस कचका कोयला मािकामि
देबालेपर 'क' 'ख' 'ग' 'घ' िलखने जाइ छी।

सेन्टरपर नाि जा पबैछ त की
अपन बेिटये सभके गुर बनबैत
धापली िबादाक बाटपर बि़ रहल अिछ।

छौिर सुनगैत िचनगी
आहूत करैत िशकाक िहायजक
हिरा गािक सभ जनाना
िहान यजि आहूिन दैत
िबादाक ठेकान पािब
सुखद जीबनक बाटपर बि़ रहल अिछ।

बन्हकी

हाथ जोिने

िथ

झुकौने

मुसकुिल सटिल सन

ठाढ़ छल ओ

मुखिकीस

झरैत

मकरण लग

अपन कलाकीमतक आगू

मचतपट देखबैत छेलइ

मकताज छुवाक आसि

पेग भरैत

उनुक्ति पाखी

आर सोझाि मानु पामखक

मचाि ए सन

आहैत

भाव नेने

ओ मचतकार

बन्हक रामख चुकल छल

अपन अनुभूमतके

कलमना

सम्वेदना

अपन कलाके

संरक्क लग।

<u>की जाम्न</u>

मछतराएल छै अकासि

ऊन सन

िघक गोला

की जाम्न आइ परतिी

कोन गुण धुनि लागल छम्थ!

पमरचय

अन्हारके
अपन छातीि सिटने
जेना दीप बनबै छै
अपन दीप्मत पमरचय।

ओम्हना अन्तरि
अपन नोर नुकेने
संसारके देिए पित
ित अपन हसी ।

अपन बेनाओं म्जनगीके
देिए पित अम्हना
नव पमरचय।

<u>हरि मदारी</u>

सेहन्ताक बातीस
जरेलहु
एकटा मदारी
अहाक नाओं।

लाखक लाख मदारी
अहाक स्नेहक
अपनामे
झलमिला गेलइ।

िनक बन केबाि

एम्हस पम्हने की
अपन अधखर आ कचोट
अहाके चकनाचूर कऽ म्हदए
सगर म्हजनगी हसबास
कऽ म्हदए नचार
फोम्हल म्हदयौ
िनकेर केवाि
आ म्हकाम्हल म्हदयौ
अपन िनक म्हबराद।

दरद त सभके हृदयि रम्हते छै
दरदके पुरबे पुर रास
सभके सम्हबन्ध छै
म्हकछु अपनो कहू म्हकछु हिरो सुनू
दरदके मिल जुम्हल सहू।

एम्हस पम्हने म्हक ओ
बहैत बहैत बम्हन जाए भोकनर
म्हसनेहक िलहिस
कर ओकरा फराक
म्हसनेहक अिृत पटा
सुख दुख म्हलअ बाम्हट
िनक संग जीवन

म्सनेहस कर पूर
फोम्ल म्दयौ निक बन केबार
आ म्बराद कर दूर।

घा

िन आ आम्रवक
बीच
बि गहीर
नाता छै
िनक घा
आम्रवक
नोरे बम्म ने
बहै छै।

<u>बहुत अम्छ</u>

एक गोट सपना
मास्तोज आम्खक लेल।

एकटा म्ससकी
म्नःशब्द ठोरक लेल।

एकटा म्चत्पी
फाटल छातीके
म्सबाक लेल।

बहुत छै
एतेक सानि
हरिा जीबा लेल।

<u>बौआइत नि</u>

बौआइत निके
जखन मजनगीक कोनो
अनभुआर रस्तापर
अपन निक संगी
मिल जाइ छै,

त ओकर चाह रहै छै
कम्हियो नम्हि र कै
ओ रस्ता
एक एक कण बम्न जाए
जुग सन
याता अम्हिना चलैत रहए चलैत रहए
जुग जुगान्तार धमर।

अहा म्बानु

अहा म्बानु
म्हरदे एना
बेकल रहैत अम्छ
जे म्दन उमाते
साझ म्बातबाक
बाट ताकए लगै छी।

केकरा चिन्ता रहै छै

केकरा चिन्ता रहै छै बिहामकि
बिका अन्हरक पछाइत।

सभटा दुख छोट भऽ जाइ छै
कोनो बिका बिपैत एलाक पछाइत।

सन्तोरि ओ सुआद केतऽ!

सन्तोरि ओ केतऽ पाबी
जे बेकलतामे सुआद छै
सनकल बेकलतेस
भेटए सदैत सफलता छै।

सन्तोर ज ठेकान त
रस्ता बेकलता छै।

ि धुबन

बुन बुन
नेहक अमियस
म्जनगीक घैल
भरै छै।

सृमिाक
बसात आ
नेहक फुहारस
बनै छै
म्जनगीक ि धुबन।

बन्दगी

भावना कखनो
रिैत नहि छै
भाव जीवित अछि
त जिनगी अछि।

सयिक आचरि सहेजल
छिन-छिन केर भाव
ईशरक अरधना छै।

उन्‍िक्त

झरनाक कलकल
म्‍चिय केर चहकब
उन्‍िक्त उ बि
चानन सुवाम्‍सत बसात
सौनक झीसी
यएह त अम्‍छ
अहाक हसबाक
म्‍चन्‍हास।

िती जमित घर केर
दुआर त खोलू
ओढ़ल िस्‍कीके
आबो त छोिू।

ई सेहन्ता

ई सेहन्ता अहाके हरि
घर ओ हसैत सपना अछि
नीन हरि खुलए ने कहियो
ज ई बात साच अछि
नीन कखनो ने आबए।

<u>खाली अत्पान</u>

खुशीपर सदैत
जुगक पहरा रहै छै
दुखेटा ाित अपन होइ छै
जौ बहुत गहीर हो।

डॉ. म्शवकुार पसाद

मैक्थल

नक्ह आबैत छक्त शॅख बजाब
घडी घर्न ासँ भेि नै छक्त
पूजा पाठ शास्त्र जान आओर
पू य अपु यक ध्यान नक्ह छक्त।
मैक्थल ओ क्मक्थला केर क्जनका
रक्तायो भक्र पराि ह ने छक्त
क्मक्थला केर मैक्थल ओ कहाि थ
अपनो कूलक मान नक्ह छक्त।

छोकिी-बडकी

छोकिी जँ बम अगराए
बूझू बाबू छथि पौगराएत।
बडकी सभ दिन चुलही लिपए
छोकिी पान तमाखू खाय
हर बरदके करए चाकरी
पनपियाए लऽ खेतो जाय
जो गए बडकी नेना कानउ
छोकिी कतय सिनेमा जाए
मायक ममता देल हेराए।

आइ जेठकी केर बेिा बनि कऽ
सबरपहुँ लालसा देलक पुराए
अपन माय बेमातर भेलए
बेमातर भेलए अपन माय
जनम जे देलकए गाम ओगरने
बडकी बेिा पाबि मुस्काय।

घाघस

अथलि सोच चलय गुडकुक्या
देखनहुँ देखए ने देह
झूठक्ह मेघ देखाए घाघस
ओक्हना करए ओ खेल।
बात करममे मेल कतहु नक्ह
करए क्यनौना मेल
सथिक्क पाछू अक्छ बताह ओ
कोना रहत कहु मेल।

परम्परा

क्ताम्मराच्छाव्दत सकल शुभ क्वॉत्तन
मेग मेग गक्त रोधक
घाािप क् जल क्वाच कखनहु
कोना क्मलत शुभ शोधक
बाि घाि सभ अक्छ सकबेधल
परम्पराके बोधक
हमहूँ परम्पराके गछारल
ऊँच नीच क्वाच गोलक।
सभ क्दन अक्हना क्मव्थला रहलै
अपन बीच विर घोलक
अपन अपन सभ
पीठ ठोकैत जाऊ
भविर ने क्कनको छोडत।

राग

सुर बनु राग रूप बनु रचना
सकल पदारथ अछि कुरचना।
यामिनी गाछा फुलएल भकरार
गमगम गमकय बाटक अँगना।
चम्पा गुलाब फुलल फुलबारी
नाचए तितिपर पाखि सुरचना।
मैथिल भाराक सरस सुभाषि
ते सँसारक बनल अछि गहना।
रागमे बान्हल सोहर समदाऊन
सुख दुख विभास मैथिल बयना।

बौआइत

मनुज हृदयक गहन गहिरमे
आतमकन्दनक सरि भरल अछि
मनुज मनुजके दुतकारैए सदिखन
दस्युके अभिनन्दन करैत अछि।
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।

अगम अछि ई सृष्टिक रचना
दिनकर तँ उवाते रहतइ
किन्तु ई कवित हुनका सँगे
राति अन्हारो सँगे रहैत अछि।
मनुआँ...।

जँ इजोरियाक सँग पुर्णिमा
तँ अन्हरिया सँग अमावस्या
जनमसँ जिनगी जौ जुडल तँ
मृत्यु कहा फराक रहैत अछि।
मनुआँ...।

जग सँगे जन-जन अछि जुडल
नेहक भूखल जग बौआइत अछि
अपन आन आ जाति-पाति सँग
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।

<u>झूठ</u>

झूठक ओढना झूठेक बिछौना
खेनाए पीनए झुठे,
झूठक सभतैर हाि लागल छै
ऑंखियो भऽ गेल झुठे।

हम छी झूठ झूठ अछि दुनिया
काज बेपार अछि झुठे,
किनको नहि छैन महल अिारी
आँखि मुनैत सभ झुठे।।

झुठे सभ उपछै छथि पोखैर
अपस्यात छथि झुठे,
झूठक हाि साचो भेल झुठे
गुर गोसाइ सभ झुठे।।

सत्य करम आ सत्य विचार बिनु
जिनगी सबहक झुठे,
अपन करम अपने सभ भोगब
नहि हमर बात ई झुठे।

भातक थारी

गमकै रहल गामक फुलवारी
मेघक कृपा रहल शुभकारी।

चननचूर तुलसीफूल गमकए
धानक एकबेर भरल बखारी।

रोम रोम सुख पाबि रहल छै
भूख सुतत एकबेर गोरथारी।

गाम दलान सुहानि शुभकर
सबहक आगू भातक थारी।

उसना भात साग बथुआ केर
अल्लुक चोखा अछि सुखकारी।

लाल चनिनी धनिया केर पता
खाइत रहू भरि भरि सभ थारी।

मधुर पात

जागू हे मधुर पात।
पुष्पके पराग धएल
मधुकरके करैत याद
फुलैत छए पातक किरण
सुरज दऽ रहल धाह
कण कण स्पन्दित छै
पातक अवहॉक राग।
जागू हे मधुर पात।

जुग-पुरुष

जुग पुरुष
बाते नहि
करमे होइत छैक।

गाए चरबऽ बला सभ
कसुनमे नहि भऽ
जाएत छैक
ताहि लेल
गोबरधन सेहो उठबऽ
पडैत छैक।

राखऽ परैत छै
गीताक ज्ञान
लडऽ पडैत छै
गाण्डीवधारी सँग
रथहि बनि
भीष्म द्रोण कृपाचार्यआ अश्वत्थामा सँग
आ शिशि बचेबा लेल
जेष्ठ भ्राता कर्णसँग।

मारए पडै छै सखिके
एकहि दोसर शिशिके बचेबा लेल

नि राष्ट केर क्तमाण
आर नि धमर्क स्थापना लेल।
शकुनी सन चक्रतके
कुतो नक्ह पुछै छै।

दीप

दीप नेसलहुँ बुच्चीी
दीपे सन तँ अहूँ छी
अपनाके जरा कऽ
एक्ह आँगनमे इजोत कऽ
ओक्ह आँगन तक
अपनाके जारैत
तन मन ् योक्तत करैत रहलहुँ
एक्ह कुलसँ ओक्ह कुल तक
आइसँ नक्ह
अदौ कालसँ..!

भोग

हम जे भोगा रहल छी
ओकरे भाखा रहल छी
फाग कियारी ओ अगहन केर
काकक सन हम काबि रहल छी
वजनगीक सभ मनोरथ
नोरक तरे आँकि रहल छी।

जाड

सौसे दिन अवायाक्सये बीतल रातिक कोन कठकाना
कम्मर तोसकसँ तँ नीक छल नारे-पुआर बिछाना
कहुना कऽ जारसँ बाची िपीसँ नीक छल गाती।

मनक मन जरना कात जडए तैयो जाड नहि मानए
कतबो देहपर कपडा लादी तैयो जाड नहि भागए
कोना क जाडसँ बाची िपीसँ नीक छल गाती।

गाए महीस थैरपर कापय गुदरा कम्मर ओढने
गाछपर चिडए विकालक मारल देऽह लोल सिने
सबहक चिन्ता भारी िपीसँ नीक छल गाती।

<u>कनकनी</u>

छुि छै बोखार सबहक
किछ नहि फुरैत छै
दिनोमे छै राति जका
कन कनी बढले जै छै।
छुि छै...।

बूढ बच्चा खेन्हरामे
तैयो कँप कँपैत छै
मालजालक कोना के कहत
केहेन ओकर हाल छै।
छुि छै...।

घरसँ बाहर सगरे
तन मन कँपैत छै
हेतए अनथमएहि बेर
तेहने आब बुझैत छै।

छुि छै बोखार सबहक
किछु नै फुरैत छै।

<u>वजल</u>

नाच गान आ शान सपक्हि
बाबू सभ मशगूल
पढ़ै लिखैमे लालबुझकर
छोडलक सभ इस्कूल।

छोडलक सभ इस्कूल
ने जानै पोथियोकेर ओ नाम
तीन तीन बेर परीक्षा देलक
भेयि ने वजलमे नाम।

भेयि ने वजलमे नाम
मसरिबा सभ एके छै
कोनो विषयमे नम्बर
दस से ऊपर नै छै।

जिनगीक झमेला

जिनगीक मेला आब खेला लगैत अछि
आवा कि पाकि हो झमेला लगैत अछि।
किनका की कही किनका लग बैठी
काम निष्काम बेकामे लगैत अछि
जिनगीक....।

जडैत छै पुआर तँ लपकै छै धधरा
मन जखन जडै तँ देह जाएछै पझहा
नोरक ठेकान कोन कखन पघैल जाए
देह मन दुनु आब बेकाबू लगैत अछि।
जिनगीक....।

पढलहुँ जे गुनलहुँ अछि एखनहुँ सहोदर
भाइये बहिन सन नेहगर आ पोरगर
ओकरे बदोलैत जिनगी खेपाइत अछि
ऊँच नीच ढि -मेढ एके लगैत अछि
जिनगीक....।

गाम छूिल

फेर आइ गाम छूिल।
नैत छल नाक्तन छल
सुगाा सन मेना सन
बेिी छल बेिा छल
आँगन बनल कचबक्कया मचान छल
आइ ओ बथान छुिल
फेर आइ गाम छूिल।

नार पुआर सॉग
गोरहा गोरहनी
मोि पातर ठाक्ढसँ
घूरा बना कऽ
हँसैत खेलाइत छलहुँ
सभ क्कछ आइ छूिल
फेर आइ गाम छूिल।

जाड सॉग ठाहो छलै
रोिी सॉग सागो छलै
मारा सॉग मर आ रोिी
दूध सॉग छाली छलै
चलैत खन नैत नाक्तन सॉग
नोरक िधार छूिल
फेर आइ गाम छूिल।

छित्तर-बित्तर

कन कन मन सँग
घुमलहुँ सगरो
कन कनाइत छल देह
मन नहि मानय तैयो
घुमि घुमि
आबी पुरने गेह
मन अपचॉक रहै अछि सदिखन
केतए हेराएल नेह।

सभ दिन सभ केर
मन पुरेलहुँ
बिन-बिन अदराक मेघ
अन्ति समय आब
आसिनक मेघ सन
छित्तर-बित्तर भेल गेह।

जाक्तक छाऊर

छौरक ढेरीमे
तकैत रहलहुँ
अपन आदर
सनमान
ई जनैत कहा छेक्लाऐ
छाऊर छाऊरे रहैत छै।
पाक्त सुक्खते उडए लगै छै।
कतबो जल क्कएक ने क्छलि जाय।

आक्खर ई जाक्तक छाउर
कतेक क्दन
अक्हना उक्डया-उक्डया
सभ क्कछु झ प्तैत रहतइ!

ईहो तँ जिनगीए छै

जखन देखैत छी
जिनगीक ओल झोल
मोल तोल ऊँच नीच
अपनके आन सन
आनके समाग सन
अपनेमे ढि
लाख दू लाखपर
छाति बडप्पन
तँ देख देख कखनो
हँसैत समाज बीच
कहुना जीबा लैत छी
अपनेमे सक्कयाइत
ईहो तँ जीनगीए छै।

गामक बात

ई मौसम अछि कतेक नीक
धाती फरल बैगन फरल
आलू उखरब अछि नजीक
कुरथी दालिक पुछू ने बात
अपना गामक राखी आश
की कहू अपन गामक बात।

बथुआ सॉग खेसारी साग
मरि पालक भेल भकरार
धनिया आ धाती केर चनिी
नबका चौरक मीठगर भात
की कहूँ अपन गामक बात।

दिल्ली बम्बई बडका नगर
अपना गामक सुकिल मगर
बडका नगर आब धरऽ दौडए
अपने गामक राखब आश
की कहूँ अपन गामक बात

कोबी-मूड-मरि केर छिम्मी
खेत-खेतमे हँसैत गुम्मी

कन-कन सागक सॉग सोहनगर
लागए केहन सुनर गात
की कहूँ अपन गामक बात।

मनोरथ

सभ दिन बीतल जनिका संग
ओ सभ कोसो दूर बसैथ
मन रहितो हम पहुँच ने पाबी
मनमे बलू नजीक रहैथ।

ओ दिन आब फेर घूमि ने औतै
नेहक फास अछि कूकि रहल
जे जतए छी चाहैत छी औखना
्यो कतबो बलु दूर रहथि।

लिेनिाईनक बात

जेहने तो छे तेहने सेए छौ
दुनू छे बुडबक,
सभ कोइ लिेनिाईन मनेलकै
तो रहले अलबट।

एकिा कोढही तोक्ड कऽ लऽ आन
साएक दक्हन हाथ,
कक्हैन हेफ्पी लिेनिाईनजी
बुझलक्हन खहकट।

बसन्त

आबए बसन्त गाबए बसन्त
मन मधुकरके फुसलाबए बसन्त
अलिकुल उडैत गाबैत बसन्त
विकुलक पाँखपर उडैत बसन्त
आबए बसन्त...।

आमक पल्लवि लागल बसन्त
मधुमाछिक मन उडबैत बसन्त
सभसबक हँसैत चारयर चारयर
फूलोक संग खिलसैत बसन्त
आबए बसन्त...।

हर्षित बसन्त पुलकित बसन्त
पल्लवि पल्लवि मंजरित बसन्त
हरियर-चारयर धरणी जननी
सबके मनमे विहसैत बसन्त
आबए बसन्त गाबए बसन्त।

बसन्ती भोर

बसन्ती भोर
सिहकैत ठोर
गाबैत अछि
नाचैत अछि
ता धिना
ता धिना
धिन धिना
मनक मोर।

<u>कमक्क बाि</u>

चल रे मनुआँ कमक्क बाि
कममकाना कछु कालए ने जगमे
कमे काकतए जगकेर हाि।

सुरजो चान कातहुँ उगए
बाि बाोही तक्हना
हमहूँ कएक ने पकडी बाि।
चल रे मनुआॅ..।

रोग कायाक्द कात लगले रहतए
झगडो-झाॅझि लगले रहतै
हम कएक बैठब कान काज।
चल रे मनुआॅ..।

कमेसँ साॅसार चलै छै
चुटी कापरी जीाि-जन्तू
सभ चलै छै करमे बाि
चल रे मनुआॅ कमक्क बाि...।

कासबास

शरम भरमसँ जीका ली
कलयुग अछि अकाकाल

काना केने किछु
कालत की
केने भेंटि ततकाल।

खूब गुलछडा उडा लेलहुँ
जा छल तनमे शक्त,
तीन पनक आब
अन्त अछि
करबाक अछि आब भक्त।

हम छी पेमी पेम केर
पेम काना सभ सून
कि कैचा की करब
आँखि लेब जब मुइन।

करजा लऽ कऽ नकि मरी
मनमे अछि अकलार।
पाच लोक कान्ह जाकर देत
अछि एतबा कासाि।

थकाि

रतुका जागल नीनक मातल
एखनहु भासैत देह
नि रिमे नि-नि क्यन्तान
नि-नि देखल भेर।

राजनीक्त केर कपि कोरमे
ॅयो नक्ह रहता चैन
के अक्छ गुर के अक्छ चेला
क्कनको अक्छ नक्ह माक्त।

बहुत कक्छन अक्छ लॉगर झॉगर
झुझुआएल अक्छ मऽन
बात करब आब नक्ह अक्छ सम्भि
थाक्क गेल सभ तन।

गुलाब

लाल-चायर देह सॅग मनमे उमॅग छौ
गिह रे गुलाब तोहर केहन सुगॅध छौ।

कासिँ देह भरल तैयो हँसैत छे
केहन छौ मन सुनर सभ ककयो चाहैत छौ।
गिह रे...।

हाकिक सॅग सॅग झूमैत रह अकहना
शीत रौद गित घाम तोरा लेल एक छौ।
गिह रे...।

तोरा सन मन धन केकरा कलैत छै
तोरा तँ देख देख दुकमया ललैत छौ।
गिह रे...।

अकहना तँ मनुरोक कजनगी कलैत छै
सुख दुखक पागिमे सभ ओझराएल छौ
गिह रे गुलाब तोहर केहन सुगॅध छौ।

अपन

क्यन्हल रेह
अप्पन गेह
क्सनेहक मेह
घुप अन्हक्रयोमे
भेवि ये जाइत छैक।

अगहन पूर

कखनहुँ अगहन कखनहु पूर
भेल नेनि फेर भेल पुरौठ
कखनहुँ चूडा गूड विशेर
कखनहूँ बवाया लाई सनेस
मन हुए तँ पकबतो जाउ
नक्ह तँ क्दनक क्दन
जलखै खाउ।

जुआक्क बोखार

साझ भेल ओझल भेल
जहादोक मस्तूल
सॉक्ह छै मुमए लेल
सुरजो अन्हारमे,
सभ किछ मुक्त जेतै
साझक विलासमे
जेना जाइ छै मुक्त सभ किछु
जुआक्क बोखारमे।

आशविहीन हासविहीन

अगबक्तत काज,एसगर कता
वानसरसँ साझ
भूत बनल वारल छी
बेटी टयूशन जेती चलू बुच्ची।

बेटीके बस छुवि रहल छै, एलहुँ
जल्दी नहऊ, नहाए छी।

जल्दी आएब,
छः बजे मीता ओक्हठाम।

हम छी वाता
हकासल वायासल
अपन सॉत्काक लेल
नि बनल नाका रहल छी
आश हीन हास विहीन!

कुदीन

हमर नगरमे पेम रोग केर
सभसँ नीक कदान
झि-दे दुनुके बाव्ह कऽ कूि
कसै जाति पाण।

साझमे आरती भोर पराती
गाबए छल अनुरागी,
दुनु कहुना जान छोडा कऽ
भागल सॉव्ह काशी।

रजनी-सजनी केर गेलै जमाना
राग-विराग गरासी
अथयुग हाबी भेलए सुव्दनपर
कुव्दन भेलए अविनासी।

जनमलके नक्ह समलि

नेहक धार सुखायल मनसँ
कमक्क बाि नक्ह परखल
आन्हर भेल पक्रिर समाज बीच
जनमलके नक्ह समलि।

कामुक बनल क्कशोर मूखमजन
कमम्कुकममनक्ह परखल
सभसँ दोरी हम अक्मभाकि
धनक गमिे भकिल।
जनमलके...।

एखनहु चेतु आँक्खक काजर
बक्ह ने जाए जे अकिल
अन्त्त एकर नीक नक्ह होएत
मन हमर कहै परखल।
जनमलके नक्ह समलि।

ठनकल फेर ठनका

ठनकल फेर ठनका
हाथ धर माथपर
बचाउ जुक्ष अनका।

पथलक चोि खाए
अपने चोिलहुँ
बरखाक पाक्षके
आक्ष काि बहेलहुँ
पाक्षमे मूबल लगए
अहु बेरक लगता
हाथ धर माथपर
ठनकल फेर ठनका।

अपनेसँ सभ छै
अपनाके गछाडू
अनका मुबए क्षयौ
अपनाके सम्हार ,
अपनापर क्षयान क्षयौ
छोडू ने हुनका
हाथ धर माथपर
ठनकल फेर ठनका।

विरान

कियो अपन ने आन
हएत सँसारो विरान
सभसँ कल कऽ रही
अपन मनके कही
सभ किछु रहत एतए
भऽ कऽ जाएब विरान।

मन नहि लगैत अछि

मन नहि लगैत अछि
हल्ला धुम धराक बीच
अपान कि आन बीच
शीत ि ति ताप बीच।

स्नेह हीन स िथमबीच
ि ित सपना आ
देखा ि ि हुलास बीच।

चतुर्दिक कलमर
आ अपनहुँ विरान बीच
जोगल स्नेहक
मरैत थकान बीच।

तीत मीठ कि कोमल
राग ओ विराग बीच
पाणो कण्ठगत अछि
मर्मक कचोट बीच।

<u>सुमीता</u>

भोरे उठती बारहक्नए हाथे
बाल बोध केर क्चन्ता
गेएली चुलही पोछैए तँ
दूधक एलक्न सुरता।

बौआके स्कूल जेबाक छै
अपनो आक्वास जेता
हाए हाए कऽ चाय बनौली
बतक्न राखल क्छटा।

क्नत क्दन क्हनकर य्एह अक्छ जीबन
अपना लेल नक्ह क्चन्ता
पक्त पुत केर सेक्ा धमे
जीली हमर सुमीता।

अनसोहात

देखा देखी जुकत करी बेकच लोक अर लाज
होलि मोलि जहा तहा आँकच कूठ भेल भाग।

जगतमे जानी हम छलहुँ कहैत अछ इतहास
आजुक पीढी देखब कऽ कनकासँ राखी आश।

सएमे पाच दस भेवि रहल जकका अछ कछु कधयान
गाम गाममे जाकच कलअ कनका घर बाचल मान।

कलखब बाजब बहस करब कान बाती कान तेल
वमि वमि कािकाया कक्ह रहल नक्ह अछ सॉगी कोइ।

पुत-कपता पकरिरमे कैचा भेल अकमशाप
भाए भाएके गीड रहल अपनक्हसँ अछ तास।

फगुआ

सख सेहन्तो एक्ल कक्नया
फगुआ रँग खेलाएब
भौरेसँ भावा पीका ओ
पविया पर ओँघराएल।

कहू तँ नीक केला ओ
हमरो विर केला ओ।

घरमे पाबैन नक्ह छैन मतलब
भँगबतहासँ साँग
एके िगे नाचल दुनू
फेर भागे भकुआएल।

कहू तँ नीक केला ओ
हमरो विर केला ओ।

फागुन

रस बरसए हो रस बरसए हो रस बरसए
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए।

सॉंझमे लौलक्ह नब नब साडी
लाल कायर कांच झलकै कनारी
नब नब रीत रचै बालम रस बरसए
फगुआमे बलम...।

सरूपहुँ फाग मन भानि लागए
आइ भनि मनभानि लागए
मनक मनोरथ पूरल हो
रस बरसए।
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए।

देख एलौ हि पटना

हलसल-फुलसल बसि बैस कऽ
पहुँच गेलौ हि पटना देख एलौ हि पटना।
भमर रस्ता हि उमिते गेलौ रामतक नीन भेल सपना केतबो गुहामर
देव-गोसाओनके
नि पति छल फेकना देख एलौ हि पटना।
बाप जनि नै देखने छलौ एहेन निुक्खक जंगल भोजे बेरि पहुँच
गेल ओ पममाआहा घर-घुसना देख एलौ हि पटना।
चोर-उचक्का डेग-डेगपर भीि देमख कऽ जी उिति छल बाहर-भीतर
जाएब कम्छन छल बेथाक नाओं अम्छ पटना देख एलौ हि पटना।
हुनकर बात कामट हि एलौ बाल-बोधके छोमि कऽ एलौ नेताजी की
बात बनौता िनि रहत ई घटना देख एलौ हि पटना।
िनि होइत अम्छ उमि कखन हि पहुची
अपन सोहागक अगना
िटा रहल अम्छ झपा रहल अम्छ अपन हुलासक सपना देख एलौ
हि पटना।

नेह

भोरे भोर ज आमा उठैत छै कोना ि टित म्बानु पाम्नाक ि ह
कोना कतहु पेि उपजतै म्कनका लग भेटत ओ नेह।

म्जनगी भम्र म्सनेहक आसे गाछे गाछ घुमि एलहु
एक-आधके छोमि ज पूछी बाझे बाझ बौएलहु।

म्नाि षा ि निके म्नाि षा एना ओम्हि र प सलोना
ओम्ह र पके पागल सुगना ताकए कोना कोना।

मोनको कयो नहि भेल

िया-िह िताि फाँसल
मजनगी रहल हेराएल
नीत-अनीत ने िनल कमहयो
ताहुस तोर नहि भेल।
जगति मोनको मकयो नहि भेल।

मजनमाक जोक सदैत लेहु पीलक
मदन मदन िटगर भेल
देह सुखाएल पएर माह तागैत
मोनको कहल नहि गेल
जगत ि मोनको...।

नैन रहैत देखल नहि मोछुओ
शुमपथ करए ने काि
चिषरमधर करए िनििनी
कि बैरी भेल
जगति मोनको मकयो नहि भेल।

<u>म्प्रायास</u>

अपनम्ह िने
धार उपछै छी
कखनहु उिी अकाश
ताल तलैया
जंगल पवत्त
उिी पवनके लाथ
सगर जनि औनाएते म्बत गेल
तैयो ने िइल म्प्रायास।

अति केर छोम्लका

म्छलैत अम्छ सभ म्दन
अति केर छोम्लका
राजनीम्त कूटनीम्त
भेल जेना ओम्रका।

सभटा िलाय खाएत
म्नतौ ि‍टाइत अम्छ
खुरचन आ छोलनीस
म्छलाएत कोना सभटा
म्छलैत अम्छ...।

बकरी दुहैत छै
पाठी िमियाइ छै
अपन अपन पठर लेल
औना रहल सभटा
म्छलैत अम्छ...।

िइयेक पेटस सभ
सीख एलै राजनीम्त
राजनीम्त पढ़ुआ सभ
धेने अम्छ कोन्टा
म्छलैत अम्छ सभ म्दन...।

हे जगत गुर जन
खोम्ट कऽ एको टुक
हरिो ज दैम्नाऐ
पढ़ल म्लखल राजनीम्त
घुमि अम्बतै सभटा।
म्छलैत अम्छ सभ म्दन
अति केर छोम्लका।

ओझराहैट

करम्मक ओझराहैट सन
ज्नमाक अम्छ झंझैट
एकटास छुटैत दोसरा
ओझराइत छी।

देह गेह नेह संग
डूि त आ थाहैत
कखनहु अकाश
खन बसाते उम जाइत छी।
एकटास छूटैत दोसरा...।

लोभ िह सोग केर
म्हि िके जानैत
िया केर फास
तैयो बन्हाइत छी
एकटास छूटैत दोसरा...।

ज्नगी उम रहल
बम्न कऽ ककोहा
तैयो नव खिही बम्न
जीबैले छटपटाइत छी
एकटास छुटैत दोसरा
ओझराइत छी।

भुकि

चाम्र म्दवस ओ सगर यामिनी
नीनक ितल भेल हताश
म्कनकहु कतहु तास भेटए नम्ह
भुकि भेल गरदम्नक फास।

कोना जीयब?
की करत म्बधाता?
जान-म्बजान सभ भेल अथाह
दरकल भीत म्मयौन लगैत अम्छ
घरो बाचक नम्ह अम्छ आश
भुकि भेल...।

म्कनको छुटल पाण
क्यो बाचल
क्यो-क्यो दुखे भेल बताह
िनक बेथा म्कनकास बाटी
घरक-घर भऽ गेलै नाश
भुकि भेल...।
धरतीक संग थरथर कापइ
गाछ-म्बरीछ संग िनव जाम्त
की हि केलहु की हि पेलहु
म्कनको नम्ह बुझबाक अवकाश

भुकि भेल...।

दू-चारिक बात रहल नहि
हजारक-हजारके लऽ गेल काल
केतबो कियो कलोल कए थाकल
बैठला थाकि-हारि-कऽ आश
भुकि भेल...।

पाथरक नव जंगल बनाओल
जानक गाहक ओ बनि गेल
सर-सम्मैत संग छीनि कए लऽ गेल
जीवनक सभटा हास-विलास
भुकि भेल गरदनिक फास।

<u>दीप</u>

सगर राम्ता हि दीप जरेलौ
तैयो घर अन्हारे अम्छ
राम्ता-राम्ता भम्र म्दनक आशि
नि हरि ओझाएले अम्छ
तैयो घर अन्हारे अम्छ।

तिसो ि ज्योम्तषि यि केर
पाठ सभ म्तय दोहराबैत अम्छ
तैयो म्तय इजोतक चाहि
एखनो सभ अन्हाराएल अम्छ
तैयो घर अन्हारे अम्छ।

म्िथली संगे मम्िथला जीतल
देशक भारि नाि जुिल
भारा केर सम िनो बढ़ने
सबहक ऑम्ख म्कए िनल अम्छ
तैयो घर अन्हारे अम्छ।

भारा ओ साम्हत्यके जे जन
आगू आइ बढ़ाबै छम्थ
हिरा बुझने वएह छम्थ म्िथल
हुनके नाि आइ गाबक अम्छ

रास्ता-रास्ता भमर मदनक आशा
नि हरि ओझाएल अछि
सगर रास्ता हि मदन जरेलौ
तैयो घर अन्हारे अछि।

ि न पछताय

कन-कन िम्ट कन-कन देह
कन-कन पाम्म कनकन छै खेत
अगली-बगली खेत पाम्ट गेल
ऊचका पाटी भेल बलाय
की करी नै करी ि न पछताय।

हाथ-पएर केर आँगुर म्छठुरल
म्छपली ि नए नम्ह आँगुरक बात
खेतक आमि पर राखल जलखै
कौआ अलगे खेल-खेलाय
की करी नै करी ि न पछताय।

धानक बुटी जम्र गेल भोरे
आमा-छय केर कोन उपाय
म्बनु पटौने खेत छोमि कऽ
आमाक भाँजि कतए जाय
की करी नै करी ि न पछताय।

बि झंझम्टया खेती-बाि ी
गहुि क खेती बि दुखदाय
जाि -जनि ए जाि बाढ़य
जाि ि ओ फरए-फुलाए
की करी नै करी ि न पछताय।

जाि-जिलहु खेत भेल हमरयर
धरती भेली परि सहाय
पछबास ज बाम्ह गेल त
सभटा िहनत जाएत भुलाय
की करी नै करी िनि पछताय।

सभ झूठ-फूसि बाझल छी

सभ झूठ-फूसि बाझल छी
म्कयो अपन डीह नम्ह ताकै छी।

अपन चास-बास छोमि सभ
अनकर चास सम्हारै छी
अपन गाि सुनसान लगैत अम्छ
अनकर गाि बसाबै छी
सभ झूठ-फूसि...।

अपन सहोदर दुआरपर अटकल
दोसर सहोदर ताकै छी
गाि-गाि केर एके म्खस्सा
दुआरो दीप नम्ह बारै छी
सभ झूठ-फूसि...।

भारा भेर बदैल रहल छै
म्नत-म्नत नूतन मिम्थला केर
अपन भारा म्बसैर रहल छी
आने भारापर आम्शत छी
सभ झूठ-फूसि...।

हाम्कि, अिला िील िजूर बम्न
जीबू जेतए जे काज मिलिए

अपन भूमि-भारा नम्हि मासरी
मिथिले केर अहा बेटा छी
सभ झूठ-फूसि बाझल छी।
शहर ओ गेल

शहर ओ गेल निुक्ख बनए लेल
गामि रम्हि बन-निुख छल
शहरक_पाथर केर जंगलि
ऊहो आम्ब आइ पथरा गेल।
शहरक पाथर केर...।
गामि छल भाए-बम्हन सभ
मकयो बाबू मकयो काका छल
भैया-भौजी बेटी-भतीजी
नै मकयो मानु नाता छल।
शहरि जाइते मरश्ता-नाता
सभटा मिटया-िटि भऽ गेल
शहरक पाथर केर....।
पथराएल शहरी पाथरि
कम्नाको निवता नै बाचल
चाम्र बखष्म चालीस बखषकेर बुच्ची,
जननी बम्ल चम्ढ़ गेल शहरक पाथर केर...।
बाट-बटोही देखतो आन्हर सुम्नतो
रदन बम्हर भऽ गेल
पशुतो एहेन कुकषिसुम्न-सुम्न
चुिक पाम्नि डुमि मिर गेल

शहरक पाथर केर जंगलमे

सभके सभ आइ पथरा गेल।

साझ

साझक संगे भामा रहल अम्छ
म्चर्िं-चुनि्न बासपर
बरद-गाए केर जेबर तम्हना
दौमि रहल अम्छ बाटपर।

गौधूम्लस पाम्ट रहल छै
नभ-ऑंगन घर-गाकि
बछा-बाछी म्चकम्र रहल छै
टोलक-टोल बथानपर।

सुरज म्सनुम्रया अलोम्पात भेल
धूरा केर एम्ह िघि
बेटी-बहुम्रया दीप नेसने
साझ देम्थ ऑंगन-दुआरपर।

बाट-बटोम्हक डेग भेल नहिर
गाछी-म्बरछी भेलै म्मयौन
नेना-भुटकाक दीम्छ उतारम्थ
दाइ-िइ ओसारपर।

आ गइ म्माम्मया बाट तकैत छौ
हरि बौआ ओछैनपर
कथा-म्पहानी घुमि रहल छै
बौआ केर म्ललारपर।

ढोलक बोखार

सुनलक ढोम्लया म्टक भेल ठाढ़
गुणान्ती भेल गाकि भार
गाा-गाार्ि गुणान्तीके
छुम्ट रहल अम्छ आब बोखार
सुनलक ढोम्लया...।

अगाा-म्पाछाा फेटा-फेट
बाप-दइयास होइ छै भेट
पाँच बखक्ष नीनक ाितल
घुमि रहल कुरयाबैत पेट
कोना हएत आब नैया पार
सुनलक ढोम्लया...।

दूरक ढोल सोहनगर छेलै
लगक ढोल छेलै भेल बेकार
दंगलक डगर सुम्नते ाितर
गुणान्तीके चढ़ल बोखार
सुनलक ढोम्लया म्टक भेल ठाढ़।

<u>खेबैया</u>

सबहक नाहके भेटल खेबैया मुदा नु खेबैया हरि नाह अछि
देखू पार आब केना लगैत अछि मुदा नु खेबैया हरि नाह अछि।
ककरो नको टाका पार लगौतन्हि
ककरो नको नेता पार लगौतन्हि
अपन-अपन बास मुदा रौने बहुतो पार उतरलौ जाइ छथि मुदा नु खेबैया हरि नाह अछि।
दूर-दूर धरि नजरि खरौने ताकि क रहल छी आबि क रहल छी ककरो नका पछुऔने पार लगत आव ककरो यो संगी नै भेटि रहल अछि मुदा नु खेबैया हरि नाह अछि।
ककरो नको बकिा पैघ हबेली ककरो नको बकिा पागक डौिही
ककरो नको सार ककरो नको छमि सादू धोती मुजनक अकास सुखाइत अछि मुदा नु खेबैया हरि नाह अछि।

ाियि हरि नव-कुिभ नहेली
ाियि हरि नव कुिभ नहेली नै हुनका नि पापक गेठरी नै हुनका नि बाझक धोकरी नेना-भुटुकाक सास हास संग मुजनगी भरि ओ खूब नहेली ाियि हरि नव कुिभ नहेली।
नै कहियो ओ चानन केली नै कहियो संन्यासि सन भेली
मारहस्थीके स्वगषबूझि ओ कषि क संग पभु के गुण गेली ाियि हरि नव कुिभ नहेली।
नै ओ मुदादुरी नै ओ सुनरि नै आडिवरी नै कनसोही
बाट-बटोही सभ जन मुहनका िनुक्ख र पिि भेटल मुसनेही ाियि हरि नव कुिभ नहेली।

िनक पयागि मसम्बध तापके कषिक हुलासि अपन गवषके
अपन िनोरथ परक सुख लेल आजीवन ओ डुिने रहली िय हरि
नव कुि्भ नहेली।

छम्ठ पाबैन

सबहक केरा सबहक नाम्रयल
सबहक ठकुआ एकेरंग
सबहक नि ि भम्क्त-भावना
ठकुए सन छै एकेरंग
सबहक ठकुआ एकेरंग।

बासक पम्थया बासक कोम्नया
ि म्टक म्द्दया एकेरंग
ि ट हौउ वा हौउ ओ पातर
सबहक ि ि एकेरंग
सबहक ठकुआ...।

अ ि ुआ-सुथनी, हरदी-आदी
सेब-सि तोला एकेरंग
नवका साि ी नवका धोती
भुवन भाष्कर एकेरंग
सबहक ठकुआ...।

पोखम्र हो म्क कछेर धार केर
आगनक पोखम्र एकेरंग
सभठाि पाम्नि ठाढ पबनैम्तन
सबहक वस्त्र छम्नह एकेरंग
सबहक ठकुआ...।

सबहक अगना गोबरे नीपल
नेना-भुटका एकेरंग
सभके छम्ह परिशिरी देम्थन
अम्मलाम्रत वर एकेरंग
सबहक ठकुआ एकेरंग।

पाकथन

काट आ फूल हरि मजनगीक सहोदर अछ।
उपेक्ष-अपेक्ष अछ सहचर
सत्य मदस आकरषा
असत्यस मआकरषा
निर्
सदैत बनल रहैत अछ।

मबाध कला आ सौन्दयष
हरि आकरषा केर केन्र मान्दु अछ।
हि स्वीकार करैत छी।

मिथिला धाम

अपन गाछक छाहरि
अपन मिथिला धाम
अपनहि खाटपर बैठल छी
अपन ससुरा गाम।

धिधुर लगए अछि अझुका रौद
पछबा बहै झहरि झहरि
लुक्खी नी कचबचिया सभ
संगहि अछि आई गाम।

पौरकी सेहो देखल आइ
बहुत दिनपर सीसो तर
काज करै छी कैव करै छी
सोनागाछ सुनर गाम।
अपन मिथिला धाम।

तए म्कछु ने म्कछु म्लखैत जाउ

म्लखैत-म्लखैत म्कछु म्लम्खये देबै म्मिथलीक उपकारी हेबै तै म्कछु-ने-म्कछु म्लखैत जउ।
छपैत-छपैत छैम्पाये जेबै एकम्दन लेखक बम्नाए जेबै म्चि आर इनाम्
भेटत तै म्कछु-ने-म्कछु म्लखते जाउ।

म्मलकता केकरा कहैत छी म्कनकाम् म्मलकता छम्न सभ म्कयो एके बात म्लखै छम्थ सबहक नीयत साफ देखाइत अम्छ तै म्कछु-ने-म्कछु म्लखते जाउ।
नीर-क्षीर म्ववेक म्कनका छन्म्ह म्लखम्नहारम् हंसत्व म्कनका छम्न पूजा-पूजी जोम्-तोम् कऽ
म्कछु-ने-म्कछु घसैत जाउ तै म्कछु-ने-म्कछु म्लखैत जाउ।

म्ना िष्टीक म्ना िष्टतार्ि

म्ना िष्टीक म्ना िष्टतार्ि
िनक िलाल सभ िटा रहल अम्छ
म्शकाक ऐ िहापंकर्ि गािक म्जनगी लेटा रहल अम्छ।
कैचा-पैसा जोम्र-जोम्र कऽ
िए-बाप सभ पठा रहल अम्छ
कोम्चंग, म्बदालय, कौलेजर्ि एक-एक जन लुटा रहल अम्छ। म्शकाक एम्ह िहापंक...।
के पठौतइ केकरा लग जा कऽ
नेना भुटका पम्ढ़ रहल अम्छ
नै सुम्ध बुम्ध ई केकरो छम्न अपने झंझट ओझराएल अम्छ। म्शकाक एम्ह िहापंक...।
चम्टया सभ चम्टसारक लाथे
गुरजी पायबटोरक बाटे अपन-अपन भॉजर्ि सभकोइ
डरीर छुबए लेल अपम्नसयात अम्छ।
म्शकाक एम्ह िहापंकर्ि
गािक म्जनगी लेटा रहल अम्छ।
गािक म्जगनी लेटा रहल अम्छ।

बौआक उबटन

कजरौटी केर काजर संगे बौआ केर उबटन म्बला गेल।
सोइरी केर अशौचक संगे मिथिलाक संस्कार हेरा गेल। कजरौटी केर...।
नव युगक नव संस्कारि जॉनसन बेबीक पाउडर मिम्ल गेल
िइक स्तन छोमि कऽ नेना बोतल संगे िए भुला गेल। कजरौटी केर...।
म्सनेहक डोम्र तोमि कऽ िता सुन्दरता केर िल म्बका गेल दाइ नौम्रनक संग पाम्ब कऽ
नेना िइक नेह भुला गेल कजरौटी केर...।
अपन आन सभ पाइपर म्बक गेल सिबन्धक सभ आच बुता गेल
धन लर्क्ीक चकाचौधि तन नि रागक रंग िटा गेल
कजरौटी केर...।

सोहर जन्ि बधैया संगे
िूनि उपनैनक हित िटा गेल
लकदक गाि वस्ताभूरण संग
बरआ केर आचायषभुला गेल
कजरौटी केर काजर संगे
बौआ केर उबटन म्बला गेल।

राहुल कुमार चौधरी, रिरपुर, मधुबनी

हेलैत पाण

शोणितक पोखेर मे
हम हेल रहल छी
आ अहा,
बारिदक महार पर बैस
माछ मावर रहल छी ।

बॅसी के त' बाते छोड़ु
अहा त
महाजाल फेक
रेहूँ, भाकुर जेना
मावर रहल छी
मनु खक पाण
दुनू विशिष्ट केर बीच
हमर ऑगना,
बेन गेल ऐछ
सझुया खेत आ,
कबड्डा के मैदान ।

धू-धू कऽ
जरि रहल य'
हमर इतिहास आ,
सभ्यता ।
लागल अछि अहा के
आँखि पर अन्हारजालि,
मुहँ पर जाबी,
कान पर पदा।

नाक सेहो बन्द
ऐछ की
दुर्गन्ध ने
लागेत य'।
मनु खक माउसक जे
चाहुँदिश पसरल अछि
हमर माइयक शोणित जे
पाछला दस दिनसँ,
जमल अछि माटि पर
इराक, लीबिया आ
अफगानिस्तान के बाद
हमर आँगना बनल
अहा के,
युद मैदान ।

भरिआएल जिनगी मे,

जे किछु शेर अछि
सब छी मात,
अशिेर
जरल इतिहासक आ
सभ्यता के ।

मुदा परती ने रहत
शोणित सँ,
भीजल माटि पर,
निकोपर निकलत ।

शोणितक पोखेर हेलैत-हेलैत
हम घाट पर पहुँचब
आ तखन लेब
बचल अशिेर आ
शोणितक एक-एक ठोपक
सुइद जोड़ि हिसाब ।

बृरेश चन्र लाल

ठंढाउ, म्हिला लगाउ !

जाउ ठंढाउ !
पोखमरके भीपिर
म्हिला लगाउ !!
१.
बौआ आओत
म्दन ताम्ककए
संगे लाओत केक,
घुट्टुघुट्टुकए
िह खुआओत
करब फेसबुक चेक !
जाउ ठंढाउ !
पोखमरके भीपिर
म्हिला लगाउ !!
२.
चन्द्रा िि दूरस
पूआ पकाबम्थ गुंसि
ओम्हना पकाउ,
गाकि दलानस
थपी बजाउ ।
असगर हसू
लाइव चलाउ,

म्बचकू कूदू
गाल फुलाउ !!
जाउ ठंढाउ !
पोखम्रके भीपिर
म्हिला लगाउ !!

३.
आ आ रे
खंजन म्चिया
नेटबाके अवतारि,
कुहुर काटे बाबु िया
घर बारीके झारि ।
रंग सजल बजारि ।
आ आ रे
नेट म्चिया
धरैत अन्हार भगा,
देखा देखाकए
सुस्त लालसा
झुरी आम्ख सुता !!!

जाउ ठंढ़ाउ !
पोखम्रके भीपिर
म्हिला लगाउ !!

रादिव पसाद ण्डिल 'झार दार'

झार

देख-देख दुमाया केमर रीमत
असगर दुख हि करब केतेक।
मशाक्त त असानि छुबैत अमछ
पुरी पाताल धमस गेल मावेक।।
गीत-
िए-बाप भऽ गेल नीि करैला
कमाया त वर िठ छइ।-2
देखू यौ बाबू आमा गेल आगू
केहेन जिाना ढीठ छइ।-2

इलि छै नमह कािकाजके
बुझै नमह मकछु लोक लाजके।-2
जौ बुमढ़या बेवहार बुझबै
टुटै-ले ओकर पीठ छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

जबस गेलै मदल्ली दुल्हा
फेर नमह फुकलक घुमर ओ चुल्हा।-2
बुमढ़यास सभ हटल करबै
अपना धेने सीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

लक्सक खुशबू तन गकै छै
साि सीतारा सोन चकै छइ।-2
फाटल-पुराण बुम्ढ़या जीबै
कम्नाया झा जीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

हरद ककही हाथ रहै छै
िथस आवला तेल बहै छइ।-2
अलता-म्टकुली-रीबन चोटी
ठोरक म्लपीम्स्टक हीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

झार

बेवहारे पम्हचान कराबै
बेकती और इंसान केर।-2
म्कयो देखाबै र प दानवी
केकरो गुण भगवान केर।-2
पाती-
उठू जागू बेटोही म्मनुसर भेल
छुम्प गेल म्पाशा आब जागू ने।
बम्ह रहल पवन अ्ति धारा
म्पाज तर्नि एकरा लगाबू ने।।

आलस म्बसतर खम्टया छोि
म्पात मि यािं तनके जोि।-2
म्दशा दर्तिनक राखू याद
स्नान कर तेल िलला बाद।-2
िम्ल तन पोछू म्पाज गिछास
कपिा कालादेशक पाबू ने।-2
उठू जागू...।

िने-िन हम्रक म्धयान धर
िए-बाबूके पणािं कर ।-2
आम्शर म्लअ सत सेवा केर
बोलीि बाटू िबा केर।-2
म्पाजस जानू पर पीिके

दुख्याके गला लगाबू ने।-2
उठू जागू...।

झार

साधुवाद हे देशक धरती
साधुवाद हे सभ जनता।
साधुवाद हे ताज देशक
साधुवाद हे सम्प्रभुता।।
गीत-
हरिा देशक धरती हिान छै गइ बम्हना।
तए सोनास भरल भण्डार छै की ओम्हना।।
केतौ लोहा केतौ ताम्बा भरल छइ।-2
केतौ चानी केतौ हीरा गलि छइ।-2
केतौ कोयलाक भण्डार छै गइ बम्हना
तए सोनास भरल भण्डार छै की ओम्हना।-2

जेतए छै म्कृिती आम्न जानस।
झूकै नम्ह ई बस टुटै शानस।-2
राषि म्हत लऽ सेफ छै पाण गइ बम्हना
तए सोनास भरल भण्डार छै की ओम्हना।

सेवा केर जेतए परम्परा छइ।
सभ निव लेने हाथ खिा छइ।-2
घर आएल हििन लगै भगवान गइ बम्हना।
तए सोनासभरल भण्डार छै की ओम्हना।-2

झार

जीयो और जीने दो निरन्तर
ज जपतै ई जग संसार।।
जग अनिके जर्मि जुएतै
हम्मरएतै निव अन्धकार।।
गीत-
जीयो और जीने दो निरन्तर
राखू हरदि याद यौ।-2
म्मकए केकरोस झगिा हेतै
हेतै म्मकए म्मावाद यौ।-2
म्मकए...।

आसनि छी सबहक म्माता
भू ण्डिल छी सबहक िता।-2
तए भैयारी सभ जग वासी
निर्ि कर सुआद यौ।-2
म्मकए...।

बढ़बू जन-जनि सभ पीत
हेतै निवता केर जीत।-2
एक बम्मा जीबै सभ जग वासी
घर-घर म्मदयौ सादि यौ।-2
म्मकए...।

म्द्यौ जग अ िनपर जोर

चलू म्ाश शाम्त केर ओर।-2

केकरो नै म्कयो करै गुला ी

सभ जीबतै अजाद यौ।

म्कए...।

झार

ानि नै केकर नि ानै छै
केकर नि ानै अपानि।।
अपनाबू सभ जीव जगतके
पूरत अहूके ई अरानि।।
गीत-
म्शक्तक बौछार लागल छै
घर-घर पढ़ाइ-म्लखाइ छै।-2
बाी सरि केर बात आबो
लोकस लोक छुबाइ छै।।-2

केकर लहु केकरास कि छै
सभ लहुि एके दि छै।-2
शदा और म्सनेहि सबहक
बिबैर हक देखाइ छै।।-2
बाी...।

जेकरा नै जीवनक आधार
की बुझतै ानिव अम्धकार।-2
ऊच नीचक हम्थयार उठा कऽ
जगस लिै लाइ छै।।-2
बाी...।
ानिवताक शासन ानू
सभ ानिवके बिबैर जानु।-2

जीबैक हक छै सभके बिबैर
अन्धोके ई देखाइ छै।-2
बि...।

झार

कामिनीके के देखलकै बाबू
कामिनीक कमरशि बि ि हिान।।
कामिनी हाथि हेतै खप्पर
आ की करब अहा कंचन दान।।
गीत-
आब की क ि हि
साि ने ख ि सवाल छै।-2
जीनगी भेल दबाल छै ना।।-2

ज फंस जाइ छै ई िशिला
की करबै होइ नै फैसला।-2
ऐ स वंचित नै भकयो
राजा रंक कंगाल छै।
जी...।

भेटल स ियस नै जवाब
कलक्टर बन जाइ छै नबाब।-2
या खोज गलत हल
जीनगी करै हलाल छै।
जी...।

हल लालच केलक सवाल
जिनगी फंस गेल ओझरि ि जाल।-2

आब के छोितै
केकरो कहा िजाल छै।-2
जी...।

उतर सयि चाहै छै कि
जीयब या की घेरत जि
रक्त कर म्बधाता
ित म्जनगी के सवाल छै।
जी...।

खोजै सयि रहैत सच उतर
म्बरला छै जगि ई पुतर।
दुख से पाबै,
म्जनगी तेकर बबाल छै।
जी...।

झार

जागू बाबू देश बचाबू
लबका खुनक बोलीस।।
जे निर्वि फुट कराबै
तेकरा िर गोलीस।।
गीत-
आधा रोटी खेबै यौ
देशके बचेबै यौ।-2
जान-माजानक डोर पकैि हि
दुनियाके नचेबै यौ।-2

देशि पसरल भष्टाचारी
गनि घोटाला अत्याचारी।-2
एकता के तलवार बना हि
सबहक घेट कटेबै यौ।-2
आधा...।

सत् अहिंसा गाधीस लेबै
हिंसाके नै बढ़ए देबै।-2
सुख शान्तिक हिल बना हि
दुनियाके बसेबै यौ।-2
आधा...।

सेवाके जन-जन बुनबै

िनवताक न्तिार गुनबै।-2
जग अिन केर िला लऽ कऽ
घर-घर धूि िचेबै यौ।-2
आधा...।

झार

झार म्बानु नम्ह घरक शोभा
झार म्बानु नम्ह होएत हवण।।
हरिा म्बानु नम्ह मिन्दर-मिशजद
आर ने देशक संसद भवन।।
गीत-
झार स जुम्न घृणा कर
ई त अनुम्चत बात छी। -2
जइस मिलै छै जगि शाम्त्त
तेकर हि शुर आत छी।। -2

जइ घर नम्ह छै हि्रि आदर
तइ घर घुसतै दुक्खक बादर। -2
पएर पसारत रोग बेिरी
ओघर भूतक जाित छी। -2
जइस मिलै...।

की हरिा म्बानु तनक शोभा
फुटतै की िन ऐ म्बानु आभा। - 2
के कहौत हरिा म्बानु िनव
केकर ई औकात छी। - 2
जइस मिलै...।

के नम्ह लइ छइ हरि सेवा

राजा रंक दानव आ देवा। -2
के गीन सकतै रप-रंग हि्रि
सोचैवाली बात छी। - 2
जइस मिलै...।

झार

रम्ह नै गेल आजुक म्शक्ति
जानकिषक िहान उदेस।
भष ाचारस धनाजषा कS
जिीया बम्च गेल बाकी शेर।।
गीत-
म्शक्त भS नै जाउ बदनाि
गै बेटी भार तोरापर छौ- 2
भैया बाबूक ठोरक लालीके
शृगार तोरापर छौ- 2

म्शकत्स ले जान सुकिषक
राख परख िनवता धिषक। 2
म्माष्ठा नीम्त इिनक
िलार तोरापर छौ। 2
म्शक्त...।

शील शुम्शलता गढ़ा-ले गहना
िनवता केर पहीम्रले कंगना। -2
म्सनेह त्मार सभ छोट पैघक
बेवहार तोरापर छौ। -2
म्शक्त...।

जगि पसरल दहेज बेिरी

वैद बनै केर कर तैयारी।-2
कुष साम्जिक दहेजक
तलवार तोरापर छौ। 2
मशाक...।

झार

भूल करै ज वनक पंछी
पशु करै त औ छै बात।
ऐस वंम्चत जीव जगत केर
ित छोमि कऽ िनव जात।।
गीत-
दुइए फूलस घर सजाबू
सुखी रहत संसार यौ।-2
कर म्नायोम्जत सभ म्कयो बाबू
अपन-अपन पम्रवार यौ।-2

दू गोटे हि हिरा दूटा
लर्की बेटी आ भोलबा बेटा।-2
नीकस मिलतै म्शक्ष म्दक्ष
रोटी कपिा दुलार यौ।-2
कर म्नायोम्जत...।

कान धर म्बजानक हल्ला
भरल जोगार छै एकरा झोला।-2
नम्हं त होएत ककोिबा वाणी
खोम्ध कऽ खाएत कपार यौ।-2
कर म्नायोम्जत...।

जनसंख्या केर बोझ भेल भारी

नाकोदि केलक बेकारी।-2
आबो नै चेतब नर नारी
फेल कऽ जाएत सरकार यौ।-2
कर म्मायोम्जत...।

झार

सुमत उमष्ठ लागू भोरे बाबू
ाए-बाबूके गोि यौ।
एकि सन जगि नै मकयो
सेवापर मदयौ जोर यौ।
गीत- ाए गइ बोल तोहर छौ,
बाइमबल वेद कुरान गइ।
शामतके बरदान गइ ना-2
तू त जगि अनुपि, केकर उपि देबै हि।
सौसे दुमयाि नै, मकयो तोरा साि न गइ।
शामत...।
आगू तू पाछू भगवान,
जगि तुही एक िहान।
तोरे नाओंस पुमजत ममदरक भगवान गइ।
शामत...।
तू त िािा केर अकास।
पमहल गुर केर पकाश।
तुही जगि देखेलही,
जीबै केर साि न गइ।
शामत...।
तू त अलला, ईरू, िहेश,
कामतक गणपमत और गणेश।
ाए गइ चरण तोहर छौ, गंगाि सनान गइ।
शामत...।

झार

गरीब भूखल कि रहै छै
भूखल बेसी रहै धनवान।
गरीब भूख बस सुखल रोटी
अिर भूखल हीराक खान।

गीत- तू लोग केना कऽ जीबतै ओतए
आपलोग जतए बेिर छै।
असंतोरि िथ दुखाइ छै
स्नाथक चढ़ल बोखार छै।
अहा बाबू बनू बर आर
हि छी सेवा-ले तैयार।
िन-समिनि सभके बरोबैर
जीबैक अम्धकार छै।
असंतोरि......।
आप उर िटर गाि
साइम्कल हिरो रहए तैयारी।
एक दोसरक घाट उतारनाइ
दुम्नयाक बेवहार छै।
असंतोरि......।
अहा पाबू पुआ-खीर
चुि बुझै ने हिरो भीि
इज्जतस दू वक्तक रोटी
हिरो त दरकार छै।

असंतोरि......।

अहा पम्हर सूट-सफारी

फाटए हिरो ने पम्ढ़या साि

तन झाम्पा कऽ हिहू जीबी

हिरो त सरोकार छै।

असंतोरि......।

अहा शोभा िहल अटारी

झोपि हिरो रहै तैयारी।

सीर छुपबैले छत होइ ऊपर

हिरो त दरकार छै।

असंतोरि...।

झार

की करी अपनेक सेवा
घर खाली मकछु छै नै धन।
बैसू मबछा दी अहा नीचा
शदा रंजीत अप्पन नि।।
सुआगत गान-
अपषा करै छी चरण-कलि
कर सुआगत स्वीकार यौ।
हि अदना सन धुल घरा कऽ
अहा छी देव अवतार यौ।-2

दशष देलौ हरिा हुजुर
नाम्य उठल नि िजूर।-2
िनसा पुरलैन हरि मबधाता
सुनलैन हरि पुकार यौ।-2
हि अदना...।

अहा चरणके धुऐत धुल
िनि सिा रहल नै फूल।-2
पावन भेल हरि घर-अगना
हि भेलौ साकार यौ।-2
हि अदना...।

घर हरिा नै पकवान

सुखल रोटी छै नीदान।-2

पाम्ब म्बसारब देव अम्ताम्थ

हि छी गरीब अपार यौ।-2

हि अदना...।

झार

सफल करब ज म्जनगी बाबू
कम्स पकि्ू ई दू आधार।
पम्हला जानू सादा म्जनगी
दोसर जानू उच्चम्वचार।।
गीत-
चाम्ल चली सादा म्ाहि बाप-दादा-2
कम्ह गेला बुढ़ पुरम्ाया अहीि छै फायदा-2

देखती नै खाउ पीबू देखती नै पीनहु-2
रहू औकात धम्र अपनाके म्चन्हु-2
म्जनगी आनन्द हाएत हि करै छी वादा।-2
चाम्ल चली...।

दोसरके नीक देख म्कनौ नै जर -2
अपनो आनन्द रहू दोसरो-ले रि -2
जानी पुररक यएह छी कायदा।-2
चाम्ल चली...।

फाटलके लाज कोन िले लजाबु।-2
झूठक वेपार छोमि सच गाल बजाबू।-2
बात कर कि-सि कािे कर ज्यादा-2
चाम्ल चली...।

परक उपकार कर , कर नम्हि मान्दा।-2
जीमुतेि रि नम्हि भिर कऽ रहू मजन्दा।-2
मजनगी शीतल कर मकनू नम्हि रौदा।-2
चाम्ल चली...।

कुमुद रंजन चौधरी, गाम- मधुबगर, प्रखंड- पंडौल, जिला - मधुबनी

उठु मिथिल चलु मिथिल

उठु मिथिल चलु मिथिल
पाञ्चजन्य के प्रयोग कर
हुंकार भर शंखनाद स
अपना लेल अपने किछ काज कर
मिथिला के गौरब गाथा
जूनी खाली बखान कर
इतिहास बैन गेला मिथिल
कनी अपन इतिहास पढ़ू
जनक बाबा कैन रहल छैथ
देख मिथिला के दूरदाशा
कोना मिथिल बिसरैर रहल छैथ
अपन बोली अपन मिठगर भारा
उठु मिथिल चलु मिथिल ......
....
मिथिला लेल ज मिथिल नई बजता
अर्जुन बैन ज गाण्डीव नई धरता
कलजुग छी ई सुइन लिय यौ मिथिल
अहा के लेल फिर कोनो कृष्ण ओता

संघ ि शक्तकलयुग के गुण छै
ई बुझबै लेल मक अहा के गौति ओता
उठु िमथल चलु िमथल
.....

गाि घर सब खाली भ गेल
खेत खम्लहान सब गाछी भ गेल
टुकुर टुकुर बाट तकैत छैथ
बिकी काकी बुिबा काका
गप करै लेल लोग तकैत छैथ
मात्य एके चचषकरइ छैथ
सब स पुछम्थन कम्हया ओता
बिका बौवा आर नुनु बच्च्या

उठु िमथल चलु िमथल .....
माि◌ी के मिमथला मिमथ के मिमथला
नेतागण एकरा नोइच खेला
जेकरे देखु बुम्धयारे बढ़ छैथ
चैर गोटे नई कखनो एक संग रहै छैथ
माज स्ाथषि सब डूइब जीबैत छैथ
अपने स अपने सब लैर िरै छैथ
उठु िमथल चलु िमथल ....
....
जाही ठाि पगट भेली सीता िया

हिहू सब त छी जनिाटी वैदेहीया
पेट रोटी लेल बौख रहल छी
बैन क सब परदेश्याया भैया
गाकि आि काकी बला गाछी
बढ़ िनि होइ अइछ जै हाटक गाछी
गाि स दूर म्का कोनो जीब रहल छी
िनि िरि क बुझु त कैन रहल छी
उठु िमथिल चलु िमथिल

पभार अमकंचन

िहाकम्बा लाल दास

िहाकम्बा पंम्डत लाल दास
वीरे-तारालाही खडौआ-वास
िम्थली-साम्हत्यक आकाश-दीप
आइओ फहराईत उच्चाकाश

जनि-काल अठारह सौ छत्पान
िम्थली-िाम्तक पडल अम्रपन
कुशाग-बुम्द्ध क अगदशी सपूत
म्खलल आंगन दास बचकन

संस्कृत फारसी िम्थलीक जानकार
िहाराज दरभंगाक म्पाय पेशकार
पशासम्नक कौशल ि पवीणति
जान पम्तभाक अदुत अवतार

साम्हत्य-सृजनक' कएल भंडारण
रिशिर-चम्रत जानकी-रािायिण
चण्डी-चम्रत साम्बती-सत्यवान
स्त्री-म्शक्ष सि अतुल काव्यायन

उनैस सौ एकैस ि िहापयाण

ओम्ह हाानिव के कोम्ट-पणाा
अम्कंचन कलसि' उच्चभावयुक्त
कायस्थ-ऋम्रक शत-शत समाानि

राकेश कणष

सृजन

अपन लेखनीक संग
एकसम्र संवेदना साझी करैत
अहा म्बासम्र जाइत छी सभटा
कटु वृम्ष आ लोक-बेद
राकेश कर्‌ण

अंम्ताि अध्याय धम्र पहुचबा लेल
म्लखैत छी अहा म्चर अदतन भूमिका

म्बासम्र जाइत छी
म्बाडम्बनाक अनुि
म्कएक म्क अहा अशुक स्याही स
रंग भर' चाहै छी
सिग वेदना-पसंग आ पात ि

अहा ईहो त' नै म्बासम्र सकैत छी जे
म्चर पुरातन कथा स फराक होइते
सगरो होइछ जजष परंपराक
वि दृम्ष

ि दा ज अहा रच' चाहै छी

धवल परिवेश
त ताम्हि लेल
एकटा पारदर्शी
आरेख खीच' पति
ओझरायल रेखाक सिनातर ...

अरुण लाल

६ टा क्षणिका आ ६ टा कविता

क्षणिका

१. हास

ठमिक गेल छी
तखनिये स' हरिानि
अहाक उनमुक्त हसी छल
वा परिहास
थाह कहा लागल
हमि तं सूरदास , निि
अंटबैत रहलौ
सुनैत रहलौ अहा केर हास .

२. खास

लोक तं सकिो पर
ि रैत अम्छ वा
स्वाभाम्वक ि ात सेहो
ुदा ककरो िन ि
पइस क’ जे ि रैत अम्छ
ओ ि ात ओकरा
बनबैत छैक खास .

३. बात

शब्द बह होइत छै
ज म्नकम्ल गेल ि ह स’
अनायास
ज सोम्च -म्बचाम्र क’
संधाम्न- ताम्न क’ बजलौ
तं तीर जका चुभैत छैक
भ’ जाइत छैक बात

४. तेसर नयन

क्यौ नमि अपन
बम्ढ़ रहल सबतम्र
अश्लीलताक पदशन
म्दन दूगुना राम्त चौगुना
असहज सब घटना
हे म्तलोचन !
खोलू अपन तेसर नयन .

५. उफाइंट

म्जनगी ज भेल उफाइंट
भाजब कतबो गोटी
नर्मि हएब लाल
लागत पवनी
ि न पर स हटाउ गदा
नर्मि त कोरैत रहू ि इट

<u>६. शूल</u>

ककरो म्जनगी
ि शूलम्ह शूल
ककरो जीवन कते सितूल
ककरो ब म्हस्से बराबर
ककरो म्हस्से बराबर

कम्बुता

१.घर

घर त' सबम्हुन
जाइत छलौ
हि ,
बस स उतम्र
राम्त के बारहो बजे
माभीक भेल झटम्क क'
एक पेम्रया
खुरपेम्रया
बाट पकरने, पकरने
थाल कीच म्पाछछि ि
बरखा पाम्न बुनी के
सानिा करैत
टह टह रौद ि
घाि पसीने नहाइत
पूस ािघक राम्त ि
सदीआयल म्हठुरैत
कनकनाइत
अन्हम्रया वा होइ
इजोम्रया
िदा एक राम्त
ठकिम्रया लामा गेल

थकि का गेलौ ,
आब कत' जाऊ
म्क बाजू
ककरा शोर कर
के सूनत
नदी के बेग ि
म्बलीन भ' गेल   घर
हि रा स कते दूर
भ' गेल घर,,,,,.

२. जीब लए छी हि

(ई रचना अपन छोटकी बेटी आभाके समिपत केलहुं।)

हंसैत हंसैत कले बले
जीब लए छी हि

जीवन जं एक जहर छै
तं पीब लए छी हि

अहाक सतरंगी दुनाया
अहा के िबारक बहुत

हरि फाटल जं चादमर
अपन सीब लए छी हि

खसा क' देखलौ बहुत
कोनो छोिलौ नै दाव

िकाम्बला केर शअख
एखनो रखने छी हि

पेि स्वगहु स' कि नै
करै छी अगर साच ि

कम्हयो सोचब ई बात
आई कहैत छी हि

हि हंसी वा कानी
ितलव की अम्छ

अरैज लए छी ओतबा
जतेक चाहैत छी हि

दोख हिरे मानाबी
से कोनो बात ने

अहाक लचरल हंसी
पर हंसैत छी हि

३. पेकि बाट

पेि एकात भेल
चुपचाप गबदी िरने
अपलक म्महारैत िगन भेल कात
मम्लिन्द िली के आहट ि ,
घुम्रया घुम्रया
तकैत रहल बाट
काट ि ओझरायल
गुलाबक कली
िने िन पसफुम्टत
होयबाक उिग ि नाम्च रहल
उझम्क उझम्क उठा
रहल गरदम्न
म्महाम्र रहल अपन
सौसे शुभ देह
लोबान केर खूशबू
जेना पसम्र गेल
कली सब गम्कि उठल
अम्मसारक आतुरता ि
िली स' लगा रहल गुहाम्र ,
िदा, बसंत एखन कहा आयल .

४.अही तं पाण छी...

हमरयर काच कली
र प रमचर िम्हनी

हे सुंदर सुकुिारी !
अहाक मनशछल हसी

मचर पमरमचत ्रिा ि
्स्की दय ्हिथमर पर

एना मकए ठाढ छी
के छी अहा !
मकए ने बजैत छी

डामर डामर पात पात
पीत वस्त्र मवभूमरत

मसहराबय तन नि
ठुकिय नाचय उिग

कन्हैयाक बासुरीक
िधुर सुिधुर तान छी

मक राधाक आमख केर

म्बरह मलिन गान छी

जे छी अहा ! से भेद
आब फोम्ल म्दअह

कही अहा बसंतक
सुकोलि तं ने पाण छी

आउ आउ घर आउ
कोनटा म्कए धयने छी

अही हरि म्पायता
अही त पाण छी .

५. खेलब चैन स होली

फेर स अहाक देह
बसंती बयार लामा
गम्कि उठल हैत सोन्हगर
िम्टक खुशबू जका
उिठ्त हैत आचर
हवा ि लहराइत हैत
हारैत हारैत जीत जाइलए
आकुल हैत

सब बात बुझै छी
लामा गेल अम्छ
अहाक आचर के फगुनहम्ट
टुह टुह लाल होइलए
आतुर अम्छ

फुसम्ा कहा अम्छ
सीिा पर बहुत गोलीबारी
पटकि पटका उठापटक
छै जारी
जवान सब टेसूक फूल
जका टेसुआएल
लाल भेल अम्छ

एिकी होली मफच मफच छै
मपचकारी ि रंगक बदला
बार दी धिक आओर गोली छै
िर काट ,कटिम्र ि
होली गीत कहा िन परैए
डमफाक थाप रडार सऽ बाहर
िन मसनुमरया आि
जामकत रंगैए
अहा बला होली कहा सजैए

एिरीदा सीिा के साजब
बार दी गुलाल सऽ
अपन लहू के गिषकरब
दुशिन के गाजब
चुमा चुमा िरब गोली
अमाला साल हि फेर
खेलब चैन स होली

६. गरि गरि गोनमर

गुम्कि गेलै गुफिका
अनन्त काल लए
गोनमर ि

मसिी मसिी
दुनू अमालका दात
बाहर केने
कनी हसैत
कनी सकुचाइत
हसै केर अनवरत
कोशिश करैत
सरम्कि गेल नुआ के
ाथि पर लैत
उघार भेल देह के
फेर फेर झंपैत
गुफिका केर गाबिाली
उनटाबैए पुनटाबैए
ािने ािन बसियाबैए
झामि झामि गोनमर के
उलम्टि पुलम्टि ,
सैत सैत सुखाबैए

बरख तेसरे जाि ि

बहुत हिनमा स'
केने छलै तैयार
बहुत सोच क'
जे आब भामा जेतै
ओकर दूनू पाणीक जाि
चाहे होइ घिक कनकनी
या होइ पूसक ठाि

एकहिले लागल छै
भूख प्यास
सागल छै
जाकि मठुरन ि
मठुरले हाथे
तीन दिन स
गोनर बनाबै छै
सब काि बरदएलै
िल जाल
खुटा पर सरदएलै
बतकही ि गाबिाली
र मस क' भेलै उदास
ओइ रात टुक टुक
तकैत रहलै गुिका
गरि गरि मान लै
काछर कटैत रहलै
नै भेटलै ओकरा गाबिालक

नरि नरि एहसास
गुरैक गेलै गुिका
अनन्त काल लै गोनम्र ि

एम्खन्तो ओकर बनाओल
गोनम्र ि गिी बाचल छै
ओकर गाि बाली
सुखा सुखा सैतय छै
डबडबायल आम्खये
ि नि के पम्तयबए छै
ई गोनम्र एम्खनतो
ओकरा म्छठुरैत जाि ि
गरि गरि एहसास
म्दयबै छै

इन्द्रकान्त लाल

ककार तोर अंगना

ककार तोर अंगना,
िछ गि गि करौ 2 तोर अंगना।

रेहु बुआर म्छयह आ की भूना 2
खुएबह पम्सिया के 2 फल दुना
ककार तोर अंगना...................

दुनू बापूत म्मिल बैसल िझ अंगना 2
हरि तािी हौ 2 तोहर म्घखना...
ककार तोर अंगना.............

खेने म्पाने स्िता रहऽ बनल भोकना 2
औम्थन काकी तं 2 खइयह बेलना...
ककार तोर अंगना... िछ गि गि करौ तोर अंगना।

सृजन शेखर 'अजेय'

ककरा अम्बते जादू भऽ जाय रे

कोन हसय फूल झरय
कोन बाजय ि ती मारय

ककरा अम्बते जादू भऽ जाय रे
ककरा जाइते सब हेराय रे

म्कओ ओकरा चीन्है छै म्क रे
म्कओ ओकरा बुझय म्क रे
कोना ि न बेइ ि न कऽ देलकै रे
कोना धरि जान सब छीन लेलकै रे

म्कए गि गि सौसे गम्कि गेलै रे
म्कए चि चि चि चमकि गेलै रे
म्क बंद घरक ताला तोमि देलकै रे
म्क म्संगरहार चंदा गुलाब उम्झम्ल देलकै रे

संतोर कुमािर राय 'बटोही', एि.ए.म्हन्दी(JAMIA MILLIA ISLAMIA,New Delhi),UGC-Net qualified, दूटा म्ाशम्ाद ालयी पमत्राकाक, संपादन,अन्यान्य पमत्रका ि रचना पकाम्शत, शोधरत। गाि-िगरौना,थाना-अंधराठाढी, अनुि डिल-झंझारपुर, म्जला-ि धुबनी, म्ाहार-847401

गहि ि- गहिि

राफेलक फाइल चोरी भेला पर
संसद स चाह दोकान धम्र बवाल भेल छै
रक्ा-ितालयक दस्तावेज गुि हेनै ितिलब
सतासीन सरकार के म्ायमत पर सुभान-अल्लाह ।

सता लेल अतेक गहि ि-गहिि
चोर-चोर िम्सयौत भाई भs रहल छै
इ राजा हम्र्िरक िलुक म्छयैय,
परञ्च इम्तहास-पुराण सभ चूिि ि जम्र रहल छै ।

अमाया बताल नेता सभ भेल छै
लति-जूति के खेल भ रहल छै
म्हनू-म्हनू,मि या-मि या केर हो-हल्ला
िलुक के शिशान बनेवाक काज भs रहल छै ।

आउ मीत, ाति ि नाउ
आब इ ुलुक िमर गेल अम्छ
ठठरी बान्हु, ुखि ि आमा लगाउ
शाद कर, म्पाण्ड-दान देल जाउ !

सुनर कम्नया

नम्ह आब ओ कहार रहलै
नम्ह आब ओ डोम्लया रहलै
रसन-चौकी आओर घोाकि नाच आब नम्ह
डफला-वंशी आओर नेगाि नाच आब नम्ह ।

गाि ि ठुम्स-ठुम्स कऽ बम्रयाती जाउ
ठुम्स-ठुम्स के खाउ, राम्तए ि फेर गाि पराउ
िरजाद के आब उठान भेलै
आब सभ म्कछु म्बम्ध पुरौवा भेलै ।

छुम्प-छुम्प के चोर-नुकबा देल जाउ
गाय-िहीस नम्ह,नम्ह साइम्कल-रेम्डयो
घिी के कुतो नम्ह पूछैत छै
आब चाम्र चका स कि नम्ह चाही ।

हाट-बाजार गरिाएल छै
जोि-घटाव-गुणा भऽ रहल छै
बाप के बोरा भम्र कऽ रपया चाही
ओझा के हौ बाउ सुनर कम्नया चाही ।

गाल पर थत्पाि

अन्याय के मखलाफ बाजला पर
गाल पर पि ल थत्पाि
ि रबाक धि की भेटल
इएह मछयैय दुमनया ।

सि ाजक दुःख-ददषके
दूर करबा ि पाछा रहमनहार
ि ुह पर पुर ख बनवाक लेल मफमरशान छमथ
नीक लोकमन के बदनाि करैत छमथ ।

एकटा नव चुनौती अमछ आब
जीनगी लेल की कर -
छुतहर घैल हि थोि छी ?
हि दमलत बनाउल गेल छी ।

साम्हत्य ि म्मनम्मनौज

चुप रहला स आओर गबि होएत
अकादी स लऽकऽ गा-घर तक
इ हल्ला भऽ रहल छै
पुरस्कार ि घोटाला भेल छै।

साम्हत्य ि गोम्धयामारी भ रहल छै
जीन-जायदाद जका बाट-बखरा
गुहा-माजजर भऽ रहल छै
भऽ रहल छै साम्हत्य ि म्मनम्मनौज ।

इ नीक नम्ह कहल जा सकैए
'बेटखौकी' झगा-झंझट म्बदापम्म सारोह ि
ूल्यहीन राजनीम्त के छकरबाजी
साम्हत्यक धरोहर लेल सबको कुछ करबाक अम्छ।

ीठगर गप हरा म्फम्रशान केने अम्छ
चचामारी स देश म्बकायल
आबो जान करबाक चाही
फेर नम्ह त गुहा-माजजर म्लखले अम्छ।

लोकतंतक पहरी

कुरसी स चिपकल लोकनि
भूलि गेलथिन्ह अपन इतिहास
ठिक इ सभक मिछयैए
बपौती इ सभक मिछयैए ।

सभ किछु पर सभहक अधिकार छन्हि
बेर-बेर ठगा रहल छथि
सता मिलिलाक बाद
परञ्च आब हिटलरमारि नहि चलतन्हि ।

जाति-धरम बाटि कS लोक के
संविधान स खेलवाड़
मिन्दर-मिस्जद केर राजनीति
नहि चलतन्हि तानाशाही ।

पढ़ल-लिखल भटैक रहल अछि
नागरिक सेवा मे घुन लगलै
जनताक टाका चोरी केनिहार
शासन के सीना पर मूंग दररैत छथि ।

घुसखोर आफिसर फौदैत छथि
लूटि स भS रहल छै सरकारी खजाना
लोक सभ चिचियैत छथि जंतर-मंतर पर

अखबार िमलखल गेल छै ढेर रास ।

गरीबक मकयो नमह होएत छै
रोटी, कपिा,िकान,दवाई आओर मशक्त
सभ मकछु मबकाउ छै
टाका नमह अमछ त िमर जाउ ।

सरकारी अस्पताल दि तोमि रहल छै
िनरेगा ि आमा लगलै
गािकि ुमखया आओर वाडषिबर सभ घुसखोर
पधानिंती आवास योजना ि घुसखोरी ।

मकसान,िजदूर तबाह भेल छमथ
अहा सता मिलिला पर िलफै उिाउ
संवैधामनक संस्था के तोिू-फोिू
पुमलस के बल पर खूब कुदू ।

इ लोकतंत मछयैए से जुमन भूमलयौ
जनता ुिलकक पहरी होएत छै
ओ जखन चोट करताह त मिाूिा भS जायब
सावधान हे कुरसी बाबू !

बम्हि रहल अम्छि फगुआक बयार
कुहुकी-कुहुकी कs म्हिया ि दरद उठैए
घर जाइत छी बाहर अबैत छी
ि नि परैत छम्थि स्मािि आजु थोि
गे ि इ कखन हेतै भोर ।

हि रा नम्हि टाका चाही
हि रा नम्हि गहना चाही
म्बानु स्माि ि डायन भेल चहु ओर
आम्खि स बम्हि रहल अम्छि म्दिन-राम्ि नोर।

अइ बेर के खेलताह हि रा संग होरी
रंग-अबीर के लगौम्ताम्हिन हि रा
म्फनका लेल बनौबै अइ बेर भागक घोर
गे ि इ टुम्टि रहल अम्छि परेि कि डोर ।

फूलेलै बाग-बगीचा
म्हिलै छै आि कि-जाि ुनिक पता
म्पािया आबो पकि ू परेि कि एकटा छोर
पुम्लिस अहा हि रि हि अहाक चोर ।

बम्हि रहल अम्छि फगुआक बयार
गुदगुम्दि भेल सभतम्रि देह ि
टुम्टि रहल अम्छि पोर-पोर
हे कम्हिया धम्रि एबै यौ हि रि म्चित-चोर ।

दम्लत छी हि

बेवस्था के ारल
सभ म्दन स दुत्कारल
अखनो अछूत बनौने छम्थ-
दम्लत छी हि ।

डोि कहावम्त छी।
सूप-डगरी-कोम्नया-चंगेरा,
डाला,िघंबर आम्द बनावम्त छी।
म्शक्ा ि अखनो म्ाछि ल छी।

चिम्कार छी हि।
ि रलाहा ि ल-जाल के उठावम्त छी।
चाि क कारोवार हि र
बम्न गएल अम्छ म्जनगी नरक।

रजक छी हि।
कपि ा धोनै हि र काज
हगनी-ि ूतनी के बास स
नाक फाम्ट रहल अम्छ।

पहरी हि सभक
सभ र पे म्ाछि ल
दुसाध छी हि।
दम्लत छी हि।

कानून स की हेतै ?
किछु हरि दोख
किछु बेवस्था के
किछु हरि लोकनि के।

कतेक दिन धर्म चलतै-
एना सुतला स
रास्ता देल जाउ
नीक स हरिो जीबअ दिअ ।

<u>अबोध नेना</u>

हम्स रहल अम्छ
खम्स रहल अम्छ
कोलि काया छम्न्ह
छम्थ भाराम्बहीन अबोध नेना ।

मारैत-परैत चलैत छम्थ
हाथक इशारा स सभ म्कछु कहैत छम्थ
इ लेब,ओ लेब,सभ म्कछु लेब
सभ म्कछु हुनका चाम्हयैन्ह।

पी-पी लेताह
ि ि लेताह
सुगा,कौवा,म्पालला आम्द चाम्हयैन्ह
खाय लेल हुनका पम्हने चाम्हयैन्ह ।

दूध-मिसरी हुनका चाम्हयैन्ह
ओ नम्ह खायब,इ खायब
घुमि-घुमि क' खेताह
खाय स बेसी म्छमियेताह ।

नोर बम्ह रहल छम्न्ह
म्जद केने छम्थ ओम्हर जायब
’पा,हुनकर जेम्हर गेलम्थन्ह
इ नेना के नम्ह पता ’पा’ आब नम्ह औतैन्ह।

कनफुस्सी म्बागालिक घर

िन होइए की कर
की बनाउ की धर
देह कपैए थरषथरष
कनफुस्सी म्बागालिक घर

िए गै कोना बसब सासुर
तरकाई भेलै िहग
िहग भेलै एस्नो-पाउडर
कनफुस्सी म्बागालिक घर

खाता खोला क कोनहु फैदा नम्ह भेल
जे टका आयल से गेल
सासु ल ैित अम्छ साझ-म्बहंसर
कनफुस्सी म्बागालिक घर

ननम्द ुहि फूलौने रहैत अम्छ
नीक म्नाकुत सभ अपने खैए
िरै लेल छुटैए देवर
कनफुस्सी म्बागालिक घर

अतेक पढ़ौलैह आई ए-बी ए
आब चुि ी म्नापबैत अम्छ
पथाबैए गोबर

कनफुस्सी म्बगालिक घर

म्पाया कऍ परदेश
इ जबानी ि आमा लगलै
के बुझतै दरम्दया हरि
कनफुस्सी म्बगालिक घर

<u>नौकरी</u>

िन नम्ह होइए नौकरी कर
हि कित छी दोसर खाइए
एको टा टाका नम्ह बचैए
घरवाली एतेक रास कहैए

देवता-म्पातर पूजलहु
बाबाधा ि कावम्रया बम्न गेलहु
म्दन दूना राम्त चौगुना
सरकारी अफसर करैत अम्छ जोि-घटाव-गुणा

नम्ह पढ़लहु तकर साफल भोगैत छै
म्दल्ली, ुिबई, पंजाब खटैत छी
हि कित छी तै हि नौकर
उ हीरो कहाबैत अम्छ हि जोकर

कारखाना ि काज कके टी बी भेल
गुटखा खाके कैसर भेल
दोसर के नौकरी कके खून पाम्न भेल
की कहू, की की नम्ह भेल

इ बि का िकान ि हिरो म्हस्सा छै
इ बैकक टाका ि हिरो म्हस्सा छै
इ कारखाना ि हिरो म्हस्सा छै

इ गामि ि हरिो म्हस्सा छै

यौ उदोगपम्त जिदूरी नम्ह,
हरिा म्हस्सा चाही
बमि हि सहलहु अहा केर ि मर-गामर
बमि भेलै नौकर-िम्लक केर खेल

गाकि दुगा मिन्दर
गाकि लोकमिन के सोच पर
हसी आमिब रहल अमिछ आइ
की उमिचत आओर की अनुमिचत हेतै
मिकयो नमिह कहमिनहार आब रहलै
समिरपहु सभ मिकयो दि पीने छमिथ
गाकि मिाया गेल छै

सभ मिकछु ि राजनीमित
नीक नमिह होएत छै
शदा स पैघ
मिकछु नमिह होएत छै
पूजा के पूजा रहअ मिदयौ
फुमिसयौह ि गाकि बटवारा
जुमित कर
गाकि इज़्ज़त मिमट ि
नमिह मलिमबयौ बाबू-भैय्या

गाकि संस्कृमित के बटनै
गाकि आतमा के हरण करनै जका छै
इ ज़मीन मिकनकर मिछयैन्ह
जखन सभ मिकयो के मिटकट कटले छमिन्ह
फसाद करनै कोनहु नीक गप नमिह मिछयैए
सभ मिकयो इएह मिएक संतान छी
मिएक मिन्दर जुमित बमिटयौ।

गाि-घरआ

गाकि तीसी सेहो अमिरत लगैत छै
नवका धानक म्चउरा आओर गुि
िनगा आओर बरहरक फूलक तरकारी
पोठी िछक संग िरआक रोटी

बथुआ साग आओर िूरही
तुलसी-फूलक खीरक जवाब नम्हि
आउ भाई,मिल-बाम्ट क' खाउ
म्जनगी केर कोन म्ठकान

सभ म्कछु सोहनगर छै
अपन म्हिंरक दूध आओर घी
पोखम्रक िखान
आि,जािन,कटहर,गुल्लैर

सभ म्कछु अपन छी
जीभ स पाम्न टपकैत अम्छ
करब-त-करब की परदेश ओगरने छी
परञ्च हि सम्रपहु गाि-घरआ छी।

किसानी

पानि बिनु खेत सुखल
नहरक पानि चोरनुकबा भएल
खेत ि बिबाय फाटल
किसानी भएल कठिन.

फसलक उचित दाम नहि भेटैत अछि,
खादक कोनहु बेवस्था नहि
अन घर ि सम ि रहल अछि
सरकारक कान बहिर भएल.

के हरवाही करत आब?
के उपजाउत अन
देशक अराजकता बीच
किसानी भएल कठिन

म्बान ब्याहले रहम्त म्सया

बमि दुःख होएत अम्छ पम्ढ़ क’ इ ख़बर,
म्क दहेज के लेल फला के हत्या भ गेलै,
बम्हन-बेटी केर कोनहु ि ल नम्ह अइ स ि ज ि,
टाका स बम्ढ़ क’ म्कछु नम्ह बुझना जैत अम्छ।

म्सया के भूमि बम्हन-बेटीक खून स रंगा रहल अम्छ,
ि गा बम्त क’ घूमि रहल छम्थ म्ता ि म्छया सभ,
पुर ख नम्ह रहलाह मि म्थला ि आब म्कयो,
सभ म्कयो ि म्टक ि ूरती बम्त गेल छम्थ।

एहेन सुनर बुच्ची के ब्याह नम्ह कर आब म्कयो,
म्बान ब्याहले रहम्त म्सया जग रा ि म्बनु म्बहीन भेल,
भूतहा भेल गा ि क-गा ि,
बौरा गेल छै ि रद सभ।

बाप रौ बाप इ की भेलै सभ म्कयो के,
आम्ख म्कएक नम्ह आनहर भेलम्ह हुनकर,
म्जनका म्हया ि दोसरक बेटी लेल दरद नम्ह छम्म्ह,
ओ ि ुनख नम्ह राकस छम्थ।

<u>नन्द म्बलास राय</u>

<u>हरि होली</u>

फगुआक उिग
सभपर चढ़ल रंग
म्बकयो पीबै दार
म्बकयो पीबै भंग
ि◌नसाके की कही
ि◌गी सभके
रंग खेलाइत देख हरि
रम्बह गेलौ दंग।

चार कात ि◌चल छल हूरदंग
म्बकयो पीटैत डम्बफा
म्बकयो पीटैत ि◌ृदंग
सभ अपनेि ि◌तंग
लोक सभके होली खेलाइत देख
हरिो ि◌निि उठल तरंग
ि◌निि आएल
हरिू खेम्बलतौ होली
अपन संगी सबहक संग
ि◌दा आब केतए पाबी
सभ संगी गाि छोमि शहर जा
लगेने अम्बछ अपन-अपन डाली

छी बुिबक तए गार्ि रम्ह
ताकए चाहै छी होली आ म्हदवाली
अपन बचपनक यारी... ।

केना खेलब होली
म्हकनका लगाएब रंग
म्हकयो कम्ह ने म्हदअए
एना म्हकए भऽ
गेल छी उदंड
रंगक खाम्तर भऽ नै जाए
केकरोस जंग।

िनि आएल
होली खेलब
अपन पम्तयेक संग
ओकरे रंगब
अंग-अंग।

यएह सोचैत हि
अगना गेलौ
पतीके लगि बजेलौ
ओ बजली-
की यौ
अहाँक रंग लगैए
आइ बि बेढ़ग

दार पीलौ हेन
आम्कि पीलौ अम्छि भंग?

कहलयैन-
आइ होली खेलब
अहीक संग
अहीके लगाएब रंग।

पती बजली-
टोला-परिसाक
छौ।सिभ
हरि। कऽ देने छल
अपचंग
आब अहाँ हरि।
जुम्न कर तंग।
हरि राखले रम्हि गेल
लाल-हम्ररयर
सभटा रंग।
फेर निर्ि आएल
म्किएक ने बाबाके
पैरि अबीर लगा
हुनकास आशीर पाबी।

हि दलानपर गेलौ
बाबाके पैरि

अबीर लगेलौ
हुनक दुनू पैर छुम्ब
अपन दुनू हाथस
केलौ पणाि
ओ बजला-
जीबह
नीके रहअ
रोशन करह
अपन ितृभूमिक नाि।

दहेज

दहेज पाप छी
दहेज अभिशाप छी
दहेज छी
बड़ पैघ कलंक
सभ मिलि कऽ
ऐ समस्याके अन्त।

दहेज समाजक लेल
भऽ गेल अछि कोढ़
दहेज अछि एडसोस
पैघ रोग
दहेजसँ बढ़ि कऽ
नै अछि कोनो रोग
जे भोगने अछि
एकर भोग
ओकरा अखनो तक
अछि तेकर सोग।

दहेजक कारण बेटी मरैए
दहेजक कारण बेटी जरैए
फसरी लगाकऽ जान गमबैए
धार-पोखैरिमे
सेहो डुबैए

दहेजेक कारण
कन्या-भ्रूण
हत्या होइए
आउ, सभ मिलिकऽ
ऐ सिस्टापर प्रहार
दहेजके अपना
सजिस रचैंधार
जे मँगयो दहेजक
मांग करए
ओकरा खिहाड़ि-बाढ़ैन
आ झार स निकाल भगाउ।

<u>हरि चार धाि</u>

एक म्दन एला हरि दोस
जेकर नाओं म्छऐन हरेराि
हि आदरस बैसौम्लऐन
नेबोबला चाह म्पायौलयैन
स्पेशल पती आ जदाक संग
म्खयौलयैन पान।
हरि दोस बजला
चलू ीत एिकी
कावर लऽ कऽ बाबाधाि
बाबाधाि गेलास
नम्ह हएत म्कछो हाम्म
यौ भोलाबाबा छैथ
बिका औधरदानी
सभ िनोकािना पूर करता
हरिा बातक कर म्बसवास
जे-जे िगबै सभ देता
पूरा करता सब आश।

हि म्बचर्चेि बजलौ
यौ दोस हरि िाए छम्थन
साक्षत पावत्ती
आओर बाबू छैथ शंकर भगवान
हुनका सभक सेवाके धिषिबुझै छी

कथी-ले जाएब हि बाबाधाि।
सुम्त उम्छ सभ म्द्दन करै म्छऐन
िए-बाबूके पणाि
ऐ काजस पैघ नम्ह
बुझै छी हि गंगा स्नान
जाबे धम्र िए-बाबू
जीबै छैथ
नै जाएब तीथषस्थान
िए-बाबू जेतए बसै छैथ
वएह छी हरि चार धाि।

सभसँ पैघ माए-बाप
सुनू यौ बाबू, सुनू यौ भैया
सुनू लगा कऽ ध्यान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछ्छ कयो
तीनू लोकमे आन यौ।

माएके बुझू माता पारबती
ताता शंकर भगिन यौ
पएर छुबा दुनूके करयौ
सुक्त-उक्छ कऽ पणाम यौ।

नअ मास धर अपन पेिमे
माए अहाके रखलैन यौ

अहा खातिर, अपन सुख-सुविधा छोड़ि कऽ
घुमयो कऽ ने तकलैन यौ
माताक कोरामे केलौ पैखाना
तेकर ने कोनो ठेकान यौ
माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

कन्हपर लऽ कऽ पिता अहाके
समूचा गाम घुमबए यौ
माए अहाके गोदीमे लऽ कऽ
लोरी गाबि सुनबए यौ
अहाके नीक भोजन भेटिए से
हरदम रखलैन धियान यौ
अहाक जिनगी नीक बनए
केलैन नइ कहियो आराम यौ
माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

गरीब रहितो माए-बाप अहाक
कर्मिमे नाओँ लिखौलैन यौ
अपन माथपर चाउर-दालि सभ
होसिलमे पहुँचेलैन यौ

माए अहाक गहना बेचलैन
बाता बेचलैन जमीन यौ
बेटा हमर हाकिम बनतै
हेतै हमर सुदिन यौ
जिनगीमे कहियो यौ बाबू
करब नइ एहेन काज यौ
माए-पाक माथ झूकत
आओर भऽ जाए अपमान यौ
हुनका सभके आशा बड छैन
आओर पूरा क काज करब सभ
करब समाजक विकास यौ
करबैन रौशननाम हुनक अहा
आओर बढेबैन शान यौ
अहूँके भेटित सम्मान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

दस लाख टाकाक दहेज बुडौलाऐ
अपने पसिनक कनिया अनलाऐ
तैयो केलैन कबूल यौ
केतबो बडका गलती करैथ ओ सभ
देबैन नइ कहियो तूल यौ

माएके बुझब माता जानकी
पिताके भगिनि राम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

माए-बाप जखन
अथबल भऽ जाइथ
भऽ जाइथ
जखन लाचार यौ
हुनका सबहक भार उठेबैन
बच्चा कऽ श्रवण कुमार यौ
पुरा करबैन हुनक मनोरथ
देखेबैन चार धाम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

सेहिसँ बढ़ि कऽ नइ कोनो तीर्थ अछि
आ ने धार्मिक अनुष्ठान यौ
तीनू लोकमे सभसँ पैघ माए-बाप
आओर छथिन बड महान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

इक्कैसम आसिस

एक दिन मुखियाजीक चमचा एलैथ
ओ हमरासँ हाथ मिलौलैथ
हम हुनका कुर्सीपर बेसौलयैन
फ्योर दुधक चाह पियौलयैन
खैनीमे चुन मिलेलौ
अपनो खेलौ हुनको खियेलौ
खैनी खा कऽ ओ बजला
अपना अबैक भेद खोललाह।

बड मोसक्कलसँ मुखियाके मनेलौ हेन
अहाँके नाओं हुनका मायरीमे लिखेलौ हेन
ओ कहाँ मानै छला
अहाँके कहाँ जानै छला
जँ करेबाक हुअए काम
तँ जल्दी कर इन्तजाम
जुनि कर सोच-विचार
लाउ किछ पाँच हजार
नहि तँ दोसरो अछि तैयार
मुदा अहाँ अपन छी खास
अहाँपर अछि पूरा बिसास

दियाएब अहाँके इच्छिदरा आसि
की यौ अहाँके नहि लागल
हमर बात रास।
ऐ बकलेल बनि जाएत
मोफतमे अहाँके मकान
भऽ जाएत धिया-पुताक कल्याण
समाजमे बढ़ि जाएत अहाँक मान
अहाँ बुझब एकरा अपन शान
जँ हमर गप्प अहाँके कनीको पसन अछि
तँ जल्दी करू भैया किएत समय चन्द अछि।
नहि तँ बादमे बड पचताएब
आ हमर दिमाग खाएब
मुदा हम की किछु कऽ सकब
अहाँके की किछु दऽ सकब।

आखिर हम चमचाजीक बातमे एलौ
महाजन लक्ष्मी भैयाक ओइठाम गेलौ
हम केलिऐन हुनकासँ अजम
यौ महाजन दिअ हमरा पाँच हजार टाका कजम
लऽ लिअ कागजपर औँठा निशान
मुदा टाका करू जल्दी भुगतान।

ई क्लअ र पैआ कर अपन काम
समयेपर आपस करब
नक्ह तँ भऽ जाएत अह क्रि महीस नीलाम।

हम देक्लऐन चमचाजीके िका प ाँच हजार
ओ मुस्की दैत भऽ गेला फ फिवियापर स िर
हम केतेको बेर ब्ल कक चकर लगेलौ
मुदा आइ धक्र इक्दरा आ िसक राक्श नक्ह पौलौ।

ब्लक दौडैत-दौडैत हमर चप्पल क्यसल
ओमहर महाजनक िका आपस करबाक समय बीतल
हम चमचाजीसँ कहलयैन
अपना बोलीमे साए मन क्मशी घोरलयैन
यौ नेताजी अनतादा, बडका बौआ
कृपाकय आपस कऽ क्दअ हमर प ाँच हजार ढौआ
मुदा ओ करए लगला िल-म िल
क्कएक तँ हुनकर नेक्त छेलैन, करब प ाँच हजार िका गोल
हम सोचलौ जे हमरा ठकलक
आ हमर महीस नीलाम करौलक
ओकरो क्वगाक्ड क्दऐन खेल
आ चमचाजीके पहुँचए क्दऐन जेल

मुदा हम ई काज नहि कऽ सकलौ
चमचाजीसँ लड़ाइ नहि लड़ि पेलौ
किएक तँ आजादीक 72म बखमे बादो हमरा
जकाँ गरीब असहाय अनाथ छै
जखनिक चमचाजीके माथपर
एम.एल.ए; एम.पी.क हाथ छै
आखिर हमर महीस भऽ गेल नीलाम
नहि बचि सकल हमर मकान
बिगड़ल हमर सभ काम
दुख बेचि कऽ करै छेलौ गुजर
आब जीरी रोपैले
करै छी पॅजाब पस्थान।

अछैत पुत कपुत

पेि पीठमे सिल
कपडा ठाम-ठाम फिल
केश-दाढी बढल
मॅर सेहो झुकल
गाल पचकल
ऑखि धँसल
कानु ठेग
नइ होइत रहैन चलल
छातीक हार
झक-झक देखाइत
देह कँपैत
दमाक रोगी जकॉ हँफैत
अँगने-अँगने भीख मॉगैत
मुहसँ कहैत
मक्लकाइन कछ दअ
दयौ कपुतराहाके
मास-दू मासपर अबैत
आ यएह बात बजैत...।

हम जलखै खा, खेलौ पान

आ जाइत रही दलान
तखने ओ देवढ़ियापर आएल
आ देलक अजि
मक्लकाइन कछु दअ ददयौ
कपुतराहाके।

तैपर हमर पती बजली
ऐ वभखमॉगाके ककाको
नहि होइ छै लाज
से नहि होइ छै
जे करतै केकरो कोनो काज।

पतीक बात सुकि
हम वभखमॉगा ददस ताकक
देखलौ ओकर काया
ओकर देह-दशा देख
लागल हमरा बड माया।

हमरा मनमे भेल
ककए नहि सुकएे
वभखमॉगाक बेथा
अपनाके कपुतराहा

क्कए कहैत अक्छ
की छै ओकर जीि नक कथा।

की िस्तिमे नै छै ओकरा बेिा
आक्क छै ऐमे कोनो राज?

हम ओकरा दलानपर लऽ गेलौ
बड आदरसँ जलखै करेलौ
पछाइत ओकरासँ पुछक्लऐ
‘बाबा, अहाँ अपनाके क्कए
कहै छी क्नपुतराहा
की नइ अक्छ अहाँक्के बेिा?

हमर बात सुक्न
ओकरा आँक्खसँ
वारए लगल दहो-बहो नोर।

बाबा जुक्न कानू
कनलासँ नक्ह हएत
समस्याक क्नदान
ई कहैत आरो
देक्लऐ बोल-भरोर

हमरा बातसँ भेलै
ओकरा बड सॅंतोर।

बौआ चारि बेटा रामके
एको नहि काम-के
बौआ रहमर नाम
छी राम परसाद
आ घर अछि लदकिया ऑ
जहिये पती मरल हमर
तहिये अन्हार भऽ गेल
हमर सौसे दुनिया ऑ
बौआ हमरो छल
चारिटा
जमीन-जत्था बेच
सभके पढेलौ
पढा-लिखा कऽ
मनुख बनेलौ
चार बेटा नौकरी करैए
सभ अपन परिवारिक सॅंग
बाहरे रहैए
मुदा हमरा कियो ने देखैए
मान दिन पहिने ओ

भगिनिक घर चल गेली
मुदा हमरा भीख मागऽ
लेल छोड़ि गेली।

बौआ, जेठका बेटा
अपन सासुक मृत्युपर
केलक रसगुल्ला-लालमोहनक भोज
मुदा माए-बापक नहि
कहियो केलक खोज।

दोसर बेटा सासुरक कहाओहमे
लाख टाका खर्चकऽ
केलक कन्यादान
मुदा ओहो नहि कहियो देलक
हमरा सभपर ध्यान
तेसर बेटा अपना सारके
पूनामे एमबीए पढ़बैत छै
सुनैत छिऐ दस हजार टाका
मासे-मास पठबैत छै
सभसँ छोटका बेटा अछि
पतीक बड़का भक्त
हमरा जे कहियो कहैत

सेहो ने भेलै ि‍त।
सासु-ससुरके सॉंगे राखि
करैत अछि पक्षपाल
एम्हर बाप भीख मॉंगै छै
तेकर नहि छै ककरो ख्याल।

हम पुछलिऐ
की अहॉंके नै अछि बेटी
तैपर ओ बाजल
बेटी अछि
ि‍एह तँ केलक
माइक करया-करम
भगवान नीक करथुन ओकरा
ओकरे भेलै सभसँ
पैघ धरम

फेर पुछलिऐ-
बेटीए ओइठाम किए
चलि जा रहै छी
गामे-गाम भीख किए
िहैल-िहैल मॉंगै छी?

तैपर ओ बाजल-

बेंीक दुआक्पर रहबके

हम कखनो नै बुझै छी नीक

तइसँ बव्छ्य ॉ गुजर करै छी

मावा-च ॅा़ा भीख।

डॉ. शशिधर कुमर "विदेह"

।।स्व. अटल बिहारी वाजपेयीजी - एकटा मिथिलक सादर, विनम्र श्रद्धाञ्जलि ।।

छलाह नीति- पधान, बात अपना जगह ।
राजसम्मान - मान - दान, अपना जगह ।
हिनकहि छी मिथिल, हिनकहि निमि हुनकर स्थान,
राजनीतिसँ अलग, थीक अपना जगह ।।

दल - खेमा - बिपक्ष- पक्ष, अपना जगह ।
छाप छोड़ि स्पष्ट नीक, अपना जगह ।
हिनकहि छी मिथिली अष्टम अनुसूचीमे, हिनकहि नोरपर,
ध्यान देलन्हि, से बात दीव, अपना जगह ।।

भेलै सौसे बिकास साच, अपना जगह ।
तकनीकीक बताह नाच, अपना जगह ।
हिनकहि छी मिथिला, आचरक फाटल नुआ,
सीमि देलन्हि ओ, भाव से, अपना जगह ।।

रामविलास साहु

किछु हाइकू/ शैनर्यू

अमृत वाणी
छानि कऽ पीबू पानि
नै कोनो हानि

गरीबक छी
रिआ खान-पान
बचबे पाण

रोटी, कपड़ा
मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य
सभके चाही

निक त्यास
बुझे ने जिबुरी
आदत बुरी

एक त चोरी
दोसर सीना जोरी
की छै जरूरी?

जानक खान

वेद पुराण अम्छ
जानी िहान

कि चलैए
म्जनगीक सवारी
नै त म्मखारी

जीबाक इच्छा
सभके छै दीघायु
कि छै आयु

नाचे बानर
िल खाए िदारी
की छै लचारी?

तुलसी एक
साए गुण भरल
पूज्य बनल

ऑवला फल
अमृत फल अम्छ
गुण भरल

आकि फल
अम्छि फलक राजा

खाइतो ािजा

जान दानस
पैघ नै कोनो दान
कषिाहिान

धैम्लक पाम्त
जानी संतक वाणी
नै कोनो हाम्त

िघ बरसै
वादल गरजैत
बेग बजैत

हवा बहैत
म्द्दन-राम्त चलैत
जीवन दैत?

रोगस रोगी
तिप िरैए त
पाण के देत

राि नािके
बदनाि करैए
सभ भजैए

साँझ सयि
सुरज डुबि‍त-ए
दीप जरैए

अनक संगे
घुनो पि‍साइत-ए
तन संगे नि

पुरान पोथी
इति‍हास, साहि‍त्य
बचा कऽ राखू

नशा करैए
वि‍नाशकारी काज
लइए पाण

नशा सेवन
शरीर आ आतिके
हानि‍ करैए

रंग नै कच्चा
ओहेन रंग रंगु
जे होइ पका

जनि रिण
ममि त होइत-ए
नाशार मकए?

देशक राजा
पजा मिल चुनैए
दिा, आन्हर

दूतीया चान
बढ़ैत ऊपर चढ़ै
पूणमा घटै

िघ बरसै
धनरोपनी करै
अन उपजै

फसल पकै
कटनी दौनी करै
कोठी भरैए

अनक दान
सभके बचै पाण
कर कल्याण

सभक ि न
रखै छइ म्कसान
धानस ि न

धान ि खान
ि छक खान पान
पानस ि न

हवा दोि त
इजोम्रया जरैत
पेि ी तरसै

दुम्खत ि न
अन्हम्रया छै राम्ता
म्दल धि कै

ि या नगरी
पहुना हेराएल
केना खोजब?

फलि केरा
सभक राखे ि न
सस्ता सि ि न

नारियलक
फल बि कठोर
बीचि जल

हाटक चौर
बाटक पामास, नै
कटत म्दन

ऑंखिक नोर
आ ओश चटनेस
नै मिटै त्यास

म्दलक बात
कहै भौरा फूलस
पेि अरि

म्चिं चहकै
एकताक पाठ छै
उतिं गुण

संकल्प नेने
चीटी चढ़ै उतरै
लक्क ओर

नेता, नायक
झूठे करै वमणाज
िूखषबनबै

बालुक म्मत
शीतस पटौनी नै
होइत अम्छ

जीवन ृित्यु
मार्मित होइत छै
तै अरि के

बाट चलैत
िुमर-िुमर देखैत
संगी नै कोइ

लाठी ठेगैत
ठोकरस बचैत
आगू बढ़ैत

ऑंम्ख नै सुझै
म्बनु सहयोगीके
बाट चलैत

पेकि भूख
भोजनस नै मिटै
आति भटकै

जीवन नैया
िजधार फसल
धिषखेबैया

गाए-िइक
सेवास मिलैए
उति िवा

सुखक खान
कषिअम्छ पधान
सभक िन

जानस कर
जगतक कल्याण
भेटत िन

जानक खान
गीता, वेद, पुराण
पढु िनस

आि लताि
सभक राखै ि‍नि
गुणक खान

खान पानि‍
दूध, दही, फलस
शान बढ़ैए

िए-बापके
भोरे कर दशर्न
हमर दशर्न

गीत संगीत
ि‍नि हमरा करै
दुख हरए

नदी कातक
चास-बासके नम्हि
कोनो आश

कागजपर
ि‍लखलाहा नाि‍ त
अि‍रि नम्हि

वन पवत्स
नै मिलै भगवान
निर्विरा

बुढ़ पुरान
अनुभवी होइए
कर सर्मान

मिथिलाक छै
पाबैन माहारक
बेसी चलैन

लेखक, कब
दुनियाके बनबे
जनके जानी

रोटी कपिा
किान मेशक स्वास्थ
जरूरी अछ

मद्दवाली संगे
अबैत अछ जाि
होलीक जाए

कषि िन
दुम्नयाि होइ छै
कुकषि नै

गाछक फल
खाए जुराए
गाछ नै खाए

जीबाक इच्छा
सभके छै दीघायु
कषि पाछू

म्हंसा नै कर
अम्हंसास कल्याण
कषिहिान

िन समिन
सबहक कम्पयौ
सभ सीखतै

वृक्ष रोपन
सवषम्हतक काज
जीव जन्तु ले

नेत दानस
नै कोनो पैघ काज
जग देखैले

अंग दानस
दोसरके कल्याण
उत ि काज

रक्त दानस
दोसरके बचैए
म्जनगी पाण

जानी, सज्जन
स ाजिक अ ृति
बढ़बे जान

ि ीठ वचन
अकुर काज करे
नै कोनो हाम्म

दोस्त करैए
दुखि म्हतकाज
नै बदना ि

लालची मति
कुकुर सानि-ए
हाम्म करैए

तन बदैल
र प देखबैत-ए
आतंा एक-ए

साजि नै
बुजुगक ानि छै
कर समान

नीकि गाछ
रोगक मकटाणुके
ामिर भगाबे

ािमटक ूमिाष
फूल फल ने खाए
बम्ल पिए

अनरनेबा
म्पात वायु नाशक
पैघ पाचक

ऑंखि रहितो
जे आन्हर होइए
त की कहबै?

खजूरक छै
राजस्थानमे िन
शब्दकोवदक अछि

तािर गाछस
तािरी चुबबैत छै
नशा खाएतर

पानस राखे
िहािनक िन
मिथिला जन

फूलक सेज
नीन चैन नै होइ
िरणासन

कुकिषअछि
नरकक सािन
छे बदनाि

शदिानक
छै दुखयाि ाि
होइ कल्याण

फूलक शोभा
गंध उि अकास
स्वागक वास

शमकि बले
देश भेल िहान
िदा गरीब

खेत उपजै
छै अन, फल, साग
सभक लेल

झूठ वचन
बोम्ल ज म्हत हुए
नै कोनो हाम्न

फलक राजा
आि जे खाइए से
पहलवान

बाम्स भोजन
नै खाउ जाम्त पाम्ण
हएत हाम्न

पाम्न दूध छै
दुनू अृति सन
बचाबे पाण

खीरा छी हीरा
भोर खाउ नोनस
नम्ह त पीि

राम्त जगैए
म्दन सुतै म्तय
केतए बास

देश कंगाल
दलाल केने अम्छ
िल हरैप

घासि दुम्न
धनि गाए अम्छ
कल्याणकारी

ाघिक जाि
दीनके सतबैए
म्हलबे हाि

जाकि रौद
सभके िन भाबे
जाि भगाबे

िम्लक चोर
िुशी कोतबाल-ए
संत भण्डारी

भोज भारी
दाम्ल अम्छ खेसारी
खाए भैयारी

अन्हरा राजा
बम्हरा अम्छ िती
बौक छै पजा

रोगीके भावे
से वैद फरािबै
जान गिबै

घिी चलै छै
म्द्दन-राम्स सानि
लोक कीए ने?

दुखस भारी
निरोग होइ छै
लाइलाज छै

जानक सुख
असल सुख अम्छि
धन सुखस

कषिक फल
सभ भोगैत अम्छि
कषीर के?

धन खचास
कषिक खचा नीक
जेना बरखा

फुटल भाग्म
कषिम बनैत-ए
ज धिी होइ

खेलस बढ़ै
म्भया-पूताि लि
नै कोनो भेद

भजन करै
साधु, संत, पुजारी
खाए िहंथ

फल खाइक
सभके इच्छा अम्छ
रोपे ने गाछ

अन्हरा नाचे
बम्हरा सुम्न हसे
डीठरा सुते

सोना चानीस
अीर िलोिल
देश कंगाल

भोजनि छै
साग पातक िन
केकरा लेल?

गाइक दूध
दही, घी, गोत अम्छ
दबाइ सन

नीकि छाल
पता, फि दबाइ
राखे म्नरोग

लाजक खान
लजैनी छै िहान
अनेको काज

म्वादानक छै
मिम्थलाि खान ते
जगि नाि

मिम्थला नाि
बि पैघ पुरान
छी कषिस्थल

म्वावेकी जानी
बुम्झस करै काज
अनका लेल

जल सभक
जिनगी बचबैए
भूमि सीच कऽ

बहु विवाह
गरिल जोिी त
अभिशाप छी

यौन शिकार
देहक बेपार त
देशक दुिदा

स्त्री उत्पीिनि
साजिक शोरण
अपराध छी

संघरषील
गतिशील होइए
जिगनी लेल

सुविदा अछि
गुणवता घटल
िहग भेल

स्तनपानस
बच्चा मारोग छै
कोनो नै हाम्म

युगक जुआ
कम्म लेखक खीचे
मितोदि

खेतीक काज
दुम्मयाक राखैए
सभक लाज

पाम्म छुबाइ
दूध नै छुबाइए
कारण की छी?

अन जलस
पोसाइत-ए काया
लोभस िया

कुकिहाके
नरको जाइत नै
लाज होइ छै

अनुभवस
मिलैए रोजी रोटी
पोथीस जान

सभ चाहैए
अनकर हरैप
धर्मक बनी

इनसाफ नै
मिलैए अदालतमे
न्याय बिकै छै

खुदा जनैए
इनसाफक बात
इनसान नै

राम खाइ छै
मदन लेल झखै छै
नेक ि रै छै

िसि जका
बदैल खेलु खेल
शरीर लेल

रोगी रोगस
पीिीत रहैत छै
भोगीके दूना

भाग्य नै बाटै
नम्ह चोराबै कोइ
जाने ने कोइ?

भाग्यक खेल
चितकारी होइ
जाने मवधाता

म्हन भावना
मवकासक बाधा छी
कुकिषसन

जलक िान
सभस छै िहान
बचाबे पाण

खेल-खेलि
सभस राखू िल
नै कोनो झेल

शैतान करे
जाम्म कऽ परेशान
िरए जान

िइक गोद
धरतीक म्बछौना
नै छै तुलना

दीप जम्रते
फतीगा जम्र िरे
कोन गलती?

म्बदा धन त
खचास बढ़ैत-ए
संगे कल्याण

खान-पानि
सचेत रहु जाम्म
नै हुए हाम्म

पैघ चुनौती
दऽ रहल कुरीम्त
तोिंत नीम्त

सतीत्वक लेल
सीता देली परीक्षा
म्बानु धोखेस

जीव जन्तुक
म्जनगी गम्नशील
ि रणशील

खेल कूद छै
बच्चा लेल जर री
म्बाकास लेल

का िअरा ि
भोजन दुनू साँझ
नैए स ानि

सुख दुख छै
सभके जन ि स
ि रने म टै

म्सयार भालू
पैघ होइए चालु
नै ए क ाउ

कलि मलखे
तकदीरक खेल
खुदा हुकसि

सेवा संस्थान
करैए काज
कल्याण लेल

फाँसीक फंदा
गदर्मा पर्मा ते
देख रैिए

बाहर ानि
घरि बदनाि
करैए हाम्म

म्हतक काज
अपन हुए हाम्म
बढ़बे ानि

पेकि ागिष
स्मगषसा ानि अम्छ
शाम्सक ागिष

जेहने खाए
अन तेहने होइ
छै तन िन

पोथी पुराण
पढ़े जानी िहान
जानक खान

जानीक िन
िहाजानी करैए
राजा शलाि

सौनक राम्स
मजुरी चकिैत
िघ बरसै

भादोि कादो
धान रोपे मकसान
बाम्ढ़स हाम्स

आम्सन िस
हम्थया झाँट बहै
घर खसबै

कात्तिक ािस
म्िकसान देखे चास
िन उल्लास

धानक खेत
लहलहात्त देख
सजै खम्हार

धान पकए
कटनी दौनी कम्र
कोठी भरए

अगहनि
चोरो साधु बम्न कऽ
अन सटिे

पुसक ािस
म्दन रात्त पिंए
ओस कुहेस

ाघिक रात्त
कनकनी जािस
म्हलैए हाि

फागुन ािस
वसंत करै राज
गिकै बाग

चैत ािसि
चना गहुि पकै
गाछ कलशै

बैशाख ािस
धरती जरैत-ए
तबा सािन

जेठक ािस
धरतीके बुझबै
िघ म्पयास

अराढ़ ािस
धानक बीआ मारा
खेत गजारे

सौनक बून
िती बम्म मारैए
धरा सजैए

सोना म्बकैए
तौल-तौल ि हग
ि म्ट अ ि ुलय

इ ि न घम्ट
बे ि न त बनैए
पेट खाम्नर

आ ि लता ि
दीनक राखे ि न
बढ़बे शान

धान ि खान
म ि म्थलाक छी शान
पानस ि न

गुलाब फूल
काँटक संग रम्ह
ि न लुभाबे

दुख सुखक
बीच गुलाब रम्ह
सुगंध बाटे

मैथिली बोली
मधुर जनभारा
सभक आश

आमा पाम्मके
जरबैए, पाम्म त
बुझबे आमा

कुकुर कही
आमा पकैए ठग
कही उपास

एक ि गषए
सुि गषि नुखक
सत्य अम्हिंसा

सुखक फल
म्हत सेवा कल्याण
मिलत ताण

कोइली कूक
सुम्मा ि नि हुलसै
नैन बरसै

धनी बनब
सभक इच्छा अछि
दीन किए ने?

जेल जुिना
सुधारे ने जिना
नहि इंसान

हाथ आएल
शिकार छुटि गेल
छगुन्ता भेल

नहि भेटल
िए-बापक पेि
छी भाग्यहीन

संघर्षशील
कििशील जिनगी
शेष होइए

फटीचरक
पहिचान बेढंगा
बुझू लफंगा

अशु पीब कऽ
जेना शोकाकुल छी
रिले बुझू

सस्यिा भारी
बेरिरी फौजदारी
छी कष कारी

अनरनेबा
फल गुणकारी
औरध भारी

पेटक दुख
हरै अनरनेबा
खाइि िबा

अनरनेबा
उपजै बािी झािी
हरे बेरिरी

अनरनेबा
पेट भर आ फल
छी म्हतकारी

सुखले सौन
कारी ि घ र सल
कृम्रषिरल

सुखल खेत
देख म्किसान काने
भूखे म्पायासे

दराम्र देख
िथा ठोके म्किसान
तेजए पाण

अन अम्बार
जे खेत उपजाबे
सुख नै पाबे

भूखले पेट
िजदुर िरैए
देखैबला के?

िन िम्हया
िह िया ि फम्स
लोभी िरैए

ि गित भीख
केना जीअत दीन
की उम्चत छै?

शोक संताप
गरीबके भेटल
वरदानि

गरीबस त
भगवान बेिख
सुखस दूर

केना जीबत
गरीबक संतान
नै छी इंसान

नै छै मखलौना
खाइले नै छै खाना
पृथ्वी मबछौना

दुख भोगैले
गरीब जनि लि
मबारके पीतै?

सभ इंसान
हैवान बनल-ए
सुधारत के?

िह-ियाि
फम्स लोक िरैए
बचाएत के?

लोभ-िह त
िनुखक दुश्िन
म्नयागत के?

िध आमास
ज्वलनशील अम्छ
बम्च कऽ रहू

दुख भरल
लोकक म्जनगीए
खोजैए सुख

सुख दुखक
म्जनगी िधुर छै
िध्यि िगष

जे दुख सम्है
जीबैए शुद सोना
सन होइए

जे नै सहैए
भूख ओ की बुझत
आनक दुख

खुआ खाए कऽ
जे चैनस सुतैए
दुख के लेत

फुटहा खाए
दुख काम्ट जे जीलै
केकरा लेल

सभक म्हस्सा
ि म्र जे खेलक
दोरी के हेतै?

कहै लेल त
सभ संतोरी अम्छ
अधकी के छी?

रोग ममदान
संयसि होइए
भोगी सृजैए

पोि, बथुआ
गरीबक साग छी
सेहत लेल

पोम्ष क साग
पोि, बथुआ खाए
मारहतुआ

साग पतार
देहक रक्त कम्र
र म्च बढ़ाबे

सागक गुण
सभ नम्ह बुझैए
सस्ता भेटैए

सुखक बाट
भोगी पकिए त
दुख के लेत?

कहिीन नै
पुरुषार्थ होइए
नर्क भोगैए

माँ-बाप सम्हार
इज्जति बचबैए
स्वर्ग पाबैए

मैथिलीके
साहित्य सुधारै छै
ढोंगी छोड़ि कऽ

अपन हित
दोसरके अहित
स्वार्थी करैए

पेट लागल
देश समाज सम्हार
आगू बढ़ैए

पेटकि बाट
पकड़ि जे चलैए
सुख पाबैए

ई म्जनगी नै
नम्ह जीबै रै छी
अधरि छी

सत्य बात आ
अतिवाम्ण बाजु
नै हेतै हाम्म

जीवन त्थु
सभक सत्य अम्छ
िया घेरैए

दुख सुखके
सरि प भोगैत
जीबैत चलु

निक शुम्द
साम्हत्य करैत-ए
सुख दइए

<u>किछु टनका</u>

जानक खान
सामाजिक दर्पण
साहित्य अछि
अमृतिक खजाना
पढ़ू बनू विद्वान

शेष साहित्य
सागरस गहीर
गोता लगाऊ
जिनगी बदलत
भेटत आति जान

भारा जानक
जननी कर्मभूमि
देशक मान
जनगण कल्याण
विकासक निर्माण

मधुर भारा
सभक मन जीत
उच्च आसन
सम्मान दियाबैए
दुखस बचबैए

िनक ैल
म्बचार बदलैए
सिज देश
दुनूके म्बगा िए
िन रोग बढ़ा कऽ

िनक ैल
छम्बके म्बगा िए
जनम्हत नै
स्पाथी बनबैए
कुबाट चलबैए

अमृत वाणी
जनम्हत करैए
नदीक पाम्न
शीतल, नम्ह हाम्न
पोखैर राखै िन

जनिदातास
पालनकता पैघ
िरैबलास
बचबैबला शेष
जनिभूमिस के छी?

िता कुिता
कम्हयो ने होइए
म्पाता पुतक
हत्यारा नै होइए
कहै छैथ म्बादान

कियोगीके
भोगी म्नावस्ता कम्ह
जोक बम्न कऽ
हकिरी करैए
उन्टे नकषभेजैए

शशीलके
लोक हीन बुझैए
म्हसा लूम्ट कऽ
भोगी जोगी खाइए
स्वाथषम्सद करैए

पम्रशकि
िल अनिल छै
नै म्बाकै तौल
जे जानैए ई िल
से जन जानी होय

दुख सहैले
गरीब जनिऐ
सुख भोगैले
भोगी ठग हिंथ
त्यागी संत अछि

असल सन्त
जनहित करैए
सुर, तुलसी
कबीर, रैयदास
चार युगक दास

सत्यक वाणी
नै होइए उवाणी
हेतै कुवाणी
धर्षिके हेतै हानि
बुद्ध जेतै अजान

बाट बटोही
संग मिलि चलैए
एक थकैए
दोसर अछि थीर
के होइए अधीर

चोर कम्हयो
इजोत नै सहैए
भोगी कम्हयो
दुख नम्ह सकैए
के भोगत ई दुख?

िनक शािन्त
साम्हत्यस भेटैए
राषि्मािण
सिाज कल्याण-ले
जानी बाटैए जान

असल पेि
साम्हत्यस कम्रयौ
जान बढ़त
सिाज सुधरत
सुख शािन्त भेटत

म्बनु बजने
लोक बुझत केना
ज बाजै छी त
होइए नकीहाम्न
उन्टे जाइए जान

बरसु ि घ
एम्हि बाग-बोनि
पाम्नक तास
बेसी बम्न गेल-ए
खेत सुम्ख जरैए

र सल ि घ
ि नि नम्हि ि निए
ि नित केना
जखैन बरसत
तखने ने म्बशास

ि धि देख
ि नि हम्रया गेल
जे गरजत
से बरसत नम्हि
केना बचत पाण

जे गरजैए
से नम्हि बरसैए
चुम्प रहने
खेत बाग जरैए
त्मासे लोक ि रैए

लोक कहैए
इंसान पत्थरस
कि नै अछि
अखनो त विवेक
बुझू किरले अछि

कहै लेल त
विवेक किरल-ए
िदा कठोर
इंसान जगलास
आतंक त बढ़ैए

किछु इंसान
लूट हत्या करैए
रावण कंस
बनि खून पीबैए
इिन की कहैए?

एते िकछु र
िनुख किछु भेल
दुश्नि बनि
िनुखे िनुखक
हत्यारा बनि गेल

धरती डोमल
कामना-कामना कहैए
सभ डरल
सान्तिक जमीनि
आतंक जनलि

जवाब देतै
सहए त दोरी छै
चुप्पी सधने
िह सीने रहै छै
दीन दुख सहै छै

जे जनलि
एक मदन िरत
मकए होइए
लोभी स्वार्थे अधीर
जगत अपना धीर

सोच बदैल
नेक इंसान बनु
मधनौना काज
छोमि कल्याण कर
हेतै नव माणि

सत्यक बाट
चलए ज इंसान
आगू बढ़ैत
आमा नम्हे पकत
नम्हे पाम्न सति

कषिके छोमि
लोक धषिखोजैए
भवलोकि
भगवान खोजैए
नकषभोग भोगैए

हारल मदल
थाकल तन नि
अकैर गेल
मजनगी अगहए
जगत छुमट गेल

निक लि
नै छुटल तीथम
स्मगषखोजैि
रिणासन भेल
कतषयक खेलि

िहि बन्धन
फम्स वौआए गेलौ
बाट भुम्ल कऽ
लक्ष्यहीन बनलौ
आडम्बर देख कऽ

ठगक िला
पाखण्डीक दोकान
सज्जन जन
पाप कीनै-बेचैए
पुण्य-पापक खान

अपन बात
लोक दाम्ब रखैए
अपन दुख
अपनेस म्सरैज
ओझरा कऽ िरैए

स्वागषकम्ह कऽ
गािके लजबैए
नम्ह सुम्बधा
सिक म्बजलीक
खेती पछार अम्छ

गाि छोमि कऽ
परदेशया बम्न
खटैए लोक
गाि नै उदोग
पेटक सिस्या-ए

सभक पेट
भरैबला िरैए
भुखले पेट
धया-पुता बलैट
अनाथ बनल-ए

कहै लेल त
रीढ़ अछ किसान
दा जीवन
देखू बेवस्था खेल
खेती चौपट भेल

उतिखेती
कहैबला नै कियो
साधनहीन
खेतीक काज भारी
िथ पीटै किसान

भरि जीवन कऽ
किसान खेती करै
खा गेल रौदी
धिया-पुता कनैए
भुखै साँझ-बिहान

केना बचत
इज्जत आ आबर
नहि सुरक्षा
दिन अपहरण
राति हत्या होइए

देश अजाद
ुदा खेती उदोग
नै सुधरल
नै भेटल सुविधा
की करत विधाता

गाछि गाछि
खाए सुते बलान
बालुक ढेर
उबै आसानि
केना बचत पाण

कोसी बलान
कि लाि उफान
एलै तूफान
भम्सया गेल गाि
ि रल स्नाम्भाि न

म्भकराल छै
कोसीक बाम्ढ़-पाम्न
पेटे सि लै
गाि-घर-दलान
लाखक गेल जान

कोसी तासदी
म्भकराल म्माि षि
ताडव नृत्य
िहाकाल बनल
धोइ पोम्छ खेलक

लूटेरा सभ
मम्मल िलि खेलक
शोरण हत्या
नारीजनके भेल
बच्चा दहए गेल

धनक कम्त
जनक िम्त गेल
देखैबला नै
डुमि िरल बच्च्या
गाि भेल म्मपता

पकृम्त कम्ह
चेतबैए लोकके
अचरज नै
पदूम्रत धरती
जहर उगलैए

देख पकृम्त
चेतावनी दइए
धरती पाम्त
हवा पदूम्रत भऽ
संकट छै जीवक

पावस रीतु
अिबस राम्त छी
िघ बरसै
बाम्ढ़ि डुिित छी
के बचेतै हिरा

ठेस

बाि चलैत लगल ठेस
फुर्वि गेल पएर
ठेगा ठेगहैत
बाि चलै छी देख-देख
केना पहुँचब एतेक दूर
गाम-घर अछ दूर
पेभि एगो दाना नह
पयाससँ सुख गेल
कण्ठ, मुँह-ठोर
ऊपरसँ चैतक रौद
गरम हाि लू चलैए
तबधल धरती फूलि पएर
बापिर चलब केना
कोसक-कोस दूर
मन घबडाइत रहए
देह दइए जाबि
मुदा हमर कोन कसूर
ई तँ ठेसक छी दोर
मुदा हम छी लचार
ई बाि बनल अछ
दुगम अगम अपार
ठेगासँ ठेगहैत चलै छी

तैयो लगैए बेर-बेर ठेस
गीरैत पडैत भेलौ बेजान
बीच बापिर तेजलौ पाण।

आजुक दिन

आजुक दिन मनुख
कतव्यसँ चुकल अछि
अपनाके बीरान आ
बीरानके अपना बुझैए
तइसँ नीक तँ
जानवरि अछि जे
जीवित आ मुइलोपर
सभक उपकार करैए
मुदा मनुख
एक दोसरके
जानक दुश्मन बनल-ए
उचित अनुचित नै बुझि
आफदे-आफद कीनैए
आजुक दिन...।

आइसँ पहिने नीक
काल्हि की हएत
से के जनैए
अखनो विचार कर
तिमान कए कागडल-ए
विजानेति नहि
इतिहासोके देखयौ
दुनू मिला कऽ

अमृत बना कऽ
दुनिया लेल बाविृयौ
जरूरत अछि मानिके सुधारियौ
देश समाज लेल
आजुक दिन...।

धनक खातिर

धन कमेबाक लेल
सभक मनसा अछि
मुदा, जान कमेबाक
नहि जनैए कियो
माए-बाप परिवार छोड़ि
दिन-राति एक बनौने
परदेशमे खटैए
धनक खातिर।

जानक महत् जेना भूलि गेल
की उचित की अनुचित
नइ रहल कोनो ठेकान
धिया-पुताक जिनगी
बिगैड़ चौपट भेल
परिवार-समाज सेहो छुटलि
नइ रहल सामाजिकक पहचान
सभ बिसरि बिछड़याए गेल
धनक खातिर।।

<u>क्षाकि नचारी</u>

भोला अहाँ छी बड र सना
कोठा महलमे मनो ने लगैए
िनि-जॉंगल छी अहॉंक अँगना
बाघ बघम्बर ओढना-बाछौना
मृगछल्ला छी अहॉंक पक्हरना
भोला अहाँ छी बड र सना।

दूध-मलाइ अहॉंके मनहु ने भाबैए
मेि मठाइ छोक्ड कऽ घरसँ भागै छी
भक्र क्दन घोिबै छी भॉंग घोिना
फूलक सुगन्धसँ दूरे रहै छी
आक-धूथूर भाग छी चखना
भोला अहाँ छी बड र सना।

भक्र क्दन रहै छी धुनी रमौने
नाग सापसँ भरल घर-अँगना
देह बनौने रहै छी भूतना
भक्र क्दन खाइ छी भागक गोला
केना रहब हम एक्ह घर अँगना
भोला अहाँ छी बड र सना।

सखी-सहेली क्मक्ल हमरा लजबैए
क्माया छौ तोहर केहेन भूतना

तोडासँ घोबिै छौ भॉंग घोिना
केना क्तदन कािब हे भोलेनाथ
केतेक दुख सहब तोरे सॉंगे-ना
भोला अहॉं छी बड रसना।

दिनक दोख

दिनक कोन दोख?
दोख तँ लोकक छी
जे हरदम बदलैत रहैए
रीति-रिवाज विचारसँ
मौसम बदलैए
हिम-पानि-रौदसँ
ऋतु बदलैए समयसँ
ऐमे दिनक कोन दोख?
चान-सुरज धरती नै बदलैए
कीए बदलैए लोकक इमान-धमम
जँ दिनक दोख होइए
तँ पानि, दूध, खून
किए ने बदलैए
माए-बाप छोड़ि कऽ
जाति-धममबदलैए
ऐमे दिनक कोन दोख?
हँ, दिनक नाओँ बदलैए
दिन-राति कातलापर
भोर-साझ सभ दिन होइए
जे हेबाक छै होइत रहैए
ऐ अदुत पकृतिमे
सभ दिन एक समान
सत्य छी की झूठ
ऐमे दिनक कोन दोख?

हमरा मोन पडैए

बच्चामे बादशाह जका घुमै छेलौ
चौरी-चाचरमे कडहड खुक्त
भैँि तोव्ड खाइ छेलौ
बाडी-झाडी घुक्त-घुक्त कऽ
पकल क्तालकोर भुिका
तोव्ड-तोव्ड खाए झुमै छेलौ
आम-लताम बरहर कििहर
बैर तोव्ड हम खाइ छेलौ
क्तानु धक्त-क्तककीरक रहै छेलौ
सभ क्तकछु हमरा मोन पडैए।

नाच देखै आ महराइ सुनैले
जाइ छेलौ हम कोसो दूर
सलहेश, हलािर दल, क्तािहला
गोपीचन, राजा कुॅंक्तिर-िृजिािन
क्तभखारी ठाकुरक क्तिदेक्तशाया नाच
राक्ता-राक्ता जवा देखै छेलौ
धमक्तिाज, दीनाभदरी, लोक्तरक-मक्तकयारक
महराय सॉंगी सेगे सुनैत छेलौ
नाचैत-गबैत घर अबै छेलौ
ओक्तहना सभिा हमरा मोन पडैए।

मुदा अखैन कौलुक बरद जका

दिन-राति परिश्रम करैत रहै छी
जिनगीक गाडी कोन-कोन
आगू कहुना बढबैत चलै छी
परिवारिक बोझ पहाडसँ भारी
माथपर लऽ मरितो सहै छी
कखनो नइए दम मारैक पलखैत
जे घुरि देखब दुनियाँ-दारी
ई बनल अछि सदिखन लचारी
तैयो ने भेल अखनो समझदारी
हराएल हमरा बेहिार पुश्तैनी
मिथिलाक रीति-रिवाज संस्कृति
अखनो ओ दिन रहि-रहि कऽ
सभिा हमरा मोन पडैए।

अनजनुआँ

भोरक पहर उक्ठ कऽ
जखने गेलौ पोखक्रक कात
करीनसँ पाक्त भक्र-भक्र
गहुम पबि छेलौ एकान्त
माघक कुहेस केने अन्हार
कछु दूरेक अबाज कान पाक्थ
जनमौि बच्चाक सुनलौ
करीनक पाक्त करीनेमे छोक्ड
अबाज अकानैत खोजैत बढैत
पहुँचलौ पोखक्रक दोसर महार
झाडी-झॉखारमे घास-पातपर
राखल लहुआएल जनमौि लाल
जननी छोक्ड भेल रहए क्तपाता
जे बुझना गेल छी अनजनुऑ
केहेन क्तष्ुर छल ओ माता
माइक धमम्कममछोक्ड ओ
केलक कुकममजाक्त ऑजाक्त
मुदा बच्चा देखते हमरा मोनमे
उपजल दया धमक्क भाि
बच्चा उठा कऽ कोरामे लेलौ
झसिँ लेलौ हृदय सािए
ओढनासँ झॉप्म जाडसँ बँचबैत
हक्रस्त मनसँ अनलौ अपना घर

अबाज देलौ घरिलिी पहुँचल
दरब् जापर आबि कहए लगली
गहुमक पनिी छोड़ि अहाँ
किएक एलौ घर जाक-पाबि
कहलौ हम छेलौ अः:साँतान
सभ कहै छेलए कुपुतराहा
मुदा भगािन बनला दयािन
आब बनलौ हम पुतािन
पालि पोसि कऽ बनाउ महान
इहए करत शिक कल्याण
अनजनुआँ बच्चा नै कहतै एकरा
धमक माए बाप छै जेकरा।

धरतीक बोझ

देश पेम, मातृ-पितृ भक्त
जे नर नहि कऽ सकल
ओ मानि नै दानि छी
धरतीक बोझ समान छी।

जे करैए जन-जनसँ पेम
से नर देवि समान छी
जे दुखियाके दुख हरैए
ओ साक्षात भगवानि छी।

जे दोसरके दुख दइए
ओहि नर राक्षिणि-कंस छी
जे दुख सहि सुख बाँटैए
ओ मानि नै महामानि छी।

जे अपने सुखमे बेहाल रहैए
ओहि नरकक भोग भोगैए
जे भुखलके रोटी नै दइए
से मानि केना कहा सकैए।

जे मातृ, मातृभूमि, मातृभाराक
सेवा जीवनिमे नहि कऽ सकैए
से इंसान नहि, शैतान कहाइए

तेकरा केना सगिमक सुख भेटि सकैए।

जे सभ व्यक्ति देशके लूटि खेलक
तेकरा धरती केना समाए सकत
गरीबक हक जे मारि खेलक
एिह धरतीपर मलेछ बनल।

जे सभ व्यक्ति अनके खेलक
अपन कमाइयो दोसरके नै देलक
ओकर जिनगी अकारथ भेल
धरतीक बोझ बढ़बैत गेल। ।

हरबाहाक जनगी

जाडक समय ठीठुरैत खापिर
दुबकल पडल रहए फालि चदैरमे
सोचैत रहए कखन हएत भोर
गाए बरदके खुआ जाएब खेत
मुदा जाडसँ कपैत रहए सौसे देह
ओस-कुहेससँ झापल छल धरती
सँतोख बाक्ह सोचलक जाएब खेत
जाडक ठढ़सँ देह झुलैत देख
थोकरा बुिी ओक्ल धुरा जरा कऽ
देह सेकलक जखन भेल गरम
फुरफुरा उक्ठ हर जोतए लगल
खेत जोतबाक तँ बहुत रहए
मुदा उघारे देह ठक भऽ गेल शरद
माक्लकक मरसँ केना खोलत बरद
कन्ता रहै घरक, की खाएत कधया-पुता
हूबा बाक्ह खेत जोतैत रहल
भूखसँ लूती कछि्क अन्हार लगैत रहए
एक तँ जाडक मारल देहक हारल
भूखसँ लगैए आब ककलत पाण
भोरसँ दुपहर भेल, बेर खसल तखन
जलखै लऽ माक्लक पहुँचला खेत
बजला- एतबे खेत भोरसँ जोतले
जलखै खाए सभ खेत जोइत कदहक

हरबाहा दुखीत मने कुहरैत बाजल
भूखे मरब जखन सगिमपहुँचब
तखने जोइत देब सभ‍ि खेत।

माछ

हम छी जाक्तक माछ
नै क्वगाडै छी क्कनको
तैयो तडपा मारै छी
पोखैर-नदीक कात
सभ क्मक्ल कऽ हमरा जाक्तके
करै छी जाक्त विनाश
हम क्मशछल जीि छी
सभक करै छी उपकार
मुदा क्मष्ुर भऽ मावर खाइ छी
केतेक क्मदयी बक्म कऽ
हमर क्जनगी उजावर रहल छी
हम पाक्मक जीि छी
धरतीक अक्धकारी अही छी
की मजबूरी अक्छ अहॉ सभके
हमर िंशि उजारै छी

केना बुझब दयानि छी
की जीि जीकि हत्यारा छी
विकिशील छी मुदा
क्मदोरक सॉघारा छी
अखनो चेतु सीखू
अपनो जीब आ आनोके
जीबैक अक्धकार क्दयौ

हमरो जाक्तापर उपकार करयौ
दया धमक्क मान रक्खयौ
आब हम क्कछु नै कहब
अपने विकिसँ क्लअ काज
हम छी जाक्तक माछ।

ि नक ि म्ल

तन-ि नके केतबो धोलौ
छुटल नम्ह कम्हयो ि नक ि म्ल
तीथक पूण्य बहुत कि लौ
नदी, कुण्डि स्नानो भेल
तन रंगेलौ ि न रि लौ
तैयो ने छुटल ि नक ि म्ल
तन-ि नक ि म्ल रहए खरकटल
कुम्पत ि न जे छेलाए बेकल
तखने एकटा युम्कत भेटल
गोता लगा साम्हत्य पढ़लौ
जान र पी गंगाि डुि की लगेलौ
ि म्थला धाि कि तीरपेखन केलौ
गाि -गाि भरल छला म्बदान
जे करै छला जगतके जानवान
दूर कऽ देलैन ि नक कलेश
म्बनु जप-तप केनम्ह हि रा
तन-ि न म्ाि षिा भऽ गेल
तखने छुम्ट गेल ि नक ि म्ल।

तृष्णा

तृष्णाक तृप्ति जलस होइए
अनस मिटैए पेटक भूख
दूध फल िवा काया पोसैए
औरमध्र करैए दुख दूर
हीरा-िती छी धनक भूख
िनक तृष्णा कम्हयो ने मिटैए
िरने जाइए संगे मिया-कलाप
सत्यक सौम्र पतालि होइए
यश स्वगषधम्र पसरैए
सभ म्कछु छोमि सुरधाि जाइए
ििदा कषिकुकषिदुनू संगे रहैए
नम्ह बाटैए अपनो म्कयो
अधिी फलहीन वृक्र सन
सुकिी अिृत सभ म्दन पीबैए
अजान अन्हमरया राम्त होइए
जान पूनकि चान कहबैए
लोभ पापक असली खान छी
सत्य जीवनक पाण होइए
धनक तृष्णा जंजाल बनैए
तृष्णा िृगतृष्णा बम्न कऽ
लोभीके लइए क्गि पाण
तृष्णाक तृप्ति स्वगोि नै होइए
भटैक जीव नरक भोगैए
संतोखस परिनन्दक सुख भेटैए।

बेटी

बेटी देख मकए झखै छी
नै छी बेटी अभशाप यौ
मदन बहुिलै सभ बेटीके
घरि हेतै लर्की सािन यौ
िइयो बापक िम सुधरलै
सरकारो दइ छै मधयान यौ
बेटा-बेटीि फकषनै रहतै
अमधकार लेतै सािन यौ
मशक्ष पाम दहेज मिटतै
बढ़तै सािजक िान यौ
बेटी बचाउ केर नारा लगै छै
हेतै सरस्वतीक घरि बास यौ
जनक नन्दनी सीता बम कऽ
देशक रखती िान यौ
एकैसि सदी बेटीक युग एलै
बनतै देशक नव इमतहास यौ
देशक बेटी देवी स्वरपा
जगत केर करत कल्याण यौ
उपेमक्त भऽ बेटी जान गिती
केना हेतै सृमक मािण यौ
दुमखत भऽ कम कहै छैथ
बचाउ बेटीक जान-िान यौ
बेटी देख मकए झखै छी
नै छी बेटी अभशाप यौ।

वसंतक गीत

आएल वसन्त कोइली कुहकैए
ि धु बरसैए चहुओर हे
ि ह-ि ह ि हुआ रस टपकैए
आि कि ि जरस ि धु बरसैए हे
पूरबा-पि छया ि स्ती ि रैए
गुंजैत भि रा ि न भरि बैए हे
खग कलख वसन्त गीत गाबए
तोि ीक फूलस खेत करैए सृंगार हे
आएल वसन्त कोइली कुहकैए
ि धु बरसैए चहुओर हे...।

सखी-सहेली बमाया घुि ए
कली ि खल करैए सृंगार हे
ि तिल ि धुकर ताडव करैए
ि रतुराज बाटैए पुष्प पराग हे
ि नक ि यासस करेज जरैए
ि या ि नु ि न तरसैए हे
वसन्त बनल अि छ ि चत चोर जखन
केकरापर करब सृंगार हे
आएल वसन्त कोइली कुहकैए
ि धु बरसैए चहुओर हे।

केकरा लेल

ि हगी घूसखोरीस चैन उि ल
दहेजस सि ाज दबल टुटल
भेद-भावक बीच म्फजनगी ि रल
लूट हत्या अपहरण होइत रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

धि षक नाि पर कटरपंथी लि ल
जाम्त-पाम्त िसि ाज बटल
धनीक-गरीबक बीच खाम्ध बढ़ल
काज म्बनु ि जदुर ि मर रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

देशक ि ाम्लक नेता, अम्धकारी बनल
काला धनि बेहाल नेहाल रहल
खान खजाना कारखाना हुनके सटल
गरीबक बेटा शहीद होइत रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

पाम्न म्बनु खेत परती पि ल
घर छोम्ि म्कसान परदेश खटल
सुखले नहर टुटले पि ल
सुभार, भगत, चन्रशेखर, गाधी
केकरा ले बम्लदान पि ल।

गरीबक नाओंपर योजना बनल
शिक्षाक स्वास्थ्यमे घुन लगल
मिट्टि-पानिमे दवाइ जहर घोरल
धरास अम्बर धर्म इंसान बदलल
ई देश केकरा लेल बनल।

धर्मक उपदेश की भेल

जेतए इंसानक काम्हल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए
विवेक अविवेकक दन्दमे फसल-ए
सूर तुलसी कबीर मीराके बिसैर गेल
नीतिक उपदेश वेद पुराण शास्त्र
जेना कलियुगमे तर पड़ि गेल-ए
जेतए इंसानक काम्हल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए।

सज्जन संत महिंथ तपसी बन्ह कऽ
वन पर्वतमे नुकाएल फिरैए
रावण राजपाल, गुरमित सिंह राज रहीम
नारी संग अत्याचारक रास नचैए
चार युगमे कलियुग भारी पडल-ए
धर्मक आरमे कि पाछू इंसानो शैतान
जेतए इंसानक काम्हल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए।

जेतए माय पितृभारा पछुआएल-ए
दहेजक खातिर बेटी जीबिते जरैए
अपन कलंक लोक गंगामे धोइए
देवी देवताक पूजा सभ दिन करैए
बल धन जानक वरदान मंगैए

तेतए इंसानक इंसान फकए रिल-ए
जेतए इंसानक इानि इंसाने होइए
तेतए धषिक उपदेश की भेल-ए।

जीम्बते जी ि रै छी

की कहू सखी
म्पायाक म्वयोगि
जुआनी जरबै छी
जीम्बते जी ि रै छी।

चढ़ल यौवन
ढरल जाइए
जेना सौन भादोि
िघो ने देखाइए।

नम्ह पि ल बून
म्झम्सयो ने पिएि
धरती म्पयासे
धधैक जरैए।

बून-बून लेल बेकल
पाण म्तयागने जाइए
तम्हना हि रि ि नि म्पयासे
म्पाया म्बनु जरैए।

आशक बाट तकै छी
आम्ख ताम्क म्तराम्र
म्हया हाम्र बैसल छी

आम्खस नोर झरैए।

उिरल यौवन
िनि लहैर िरैए
तन िनक आमा
सहजे सहल नै जाइए।

दुम्नयाक नजैर
बदलल लगैए
लोक देख-देख कऽ
नजैर-ि-नजैर लिबैए।

िजधारि म्जनगी
दलदलि फसल-ए
भम्बष्यक बाट
अन्हाराएले सन लगैए।

म्नयाक सनेस
बाटे हेराएल-ए
केना कटत म्दन-राम्त
सौसे देह आमा लगल-ए।

केकरा देख जीअब
दुम्नया अन्हार लगैए
की कहू सखी

कहल नम्हि जाइए
जुआनी जरबै छी
जीम्बते जी रिै छी।।

ि घिक जाि

बाप रौ बाप
ि घिक जाि
गलेलक हाि
छुबैए पाण
लेत जान
ओस-कुहेसि
धरती डुि लि
म्चि चुनि नि
खोताि सुटकल
कहुना बचबैए
अपन जान
म्बलस म्नकैल
फणधारी सभ
ि हि पटैक-पटैक
तेजैए पाण
जीब जन्तु सभ
म्छठुर रहल-ए
सुटकल पि लि-ए
अवगहि अम्छ
सभक जान
कनकनी चलैए
काल सि नि
सुर ज-चानक

दशष्मो ने होइए
म्दन-राम्त अम्छ
एके सि नि
पाम्त छुबै छी
देह म्सहरैए
कान ठम्र
गम्ल कटैए
देहक र ईयाँ
काटो-काट होइए
संकटि अम्छ जान
केना बचाएब पाण
एहेन जाि
म्जनगीि देखलौ
बुढ़ो-पुरान सभ
अदुते कहैए
केतेकोके लेलक
कणोि पाण
कलपैत ि हे
सभ म्कयो कहैए
भगवानो दुख दइए
बाप रौ बाप
ि घक जाि ।

किसानक मजबुरी

बाप रौ बाप, केना जीअब आब
रौदे बसाते खेत खटै छी
अदहे पेट खाए सुतै छी
दुखे पकैड़ लेलौ खाट
रौदी-दाहीस लड़ैत
महगीक मार सहैत
शोगमे कुहरैत
माथ ठोकैत रहै छी
कर्जामे डुबल छी
दुखे-दुख सहै छी
जिनगी ढहैत
कोसीक धारमे बहै छी
चौपट भेल खेती
धिया-पुता बिलैट गेल
जीवन तबाह भेल
मजदुरियो ने भेटैए
मजबुरीमे परदेश खटै छी
पढ़लो-लिखल बिदेश रहैए
गाम-समाजके के देखत
केना बचत गामकि इज्जत
किसानी जिनगी दुखदायी भेल
के सुधारत किसानक समस्या
सौगरपर सरकार चलैए

कमिशनपर योजना बनैए
पूजीपतिक खेल होइए
कृषि काज नै सुधरल आइ धरि
ओकरे बेगारि सभ भमि-ए
उपजास लगता बेसी
नै उचित बजार मिलैए
अधरि जीवन जीबै छी
आत्महत्या करैले सोचै छी
केतेक दुख सहब जिनगी धरि
की दुखे सहैले जनमि छी
आब आगूक जीवन हारि चुकल छी
डुमि रैले जिबूर छी।

बैशाखक भ्बार

चैत भ्बातल बैशाख चढ़ल
िरझल फूल सुखल पात
बासक पात सेहो झिल
घास सुभ्ख िरल पिल
चौर-चाँचर सुभ्ख फटल
खता-डबरा िरता पिल
धार नदी सेहो सुखल
खेत िदराभ्र दरकल
चढ़ल गर्मी दुख बढ़ल
तबधल धरती तबा सिन
भ्चर्मि-चुनिन पाभ्न खोजैले
वौआए रहल-ए कोसक कोस
पोखैर-इनार पभ्हने सुखल
पतालक पाभ्न तर पिल
पाभ्न भ्बानु जीवन केना चलत
तासस सभक िन तरसैए
बैशाखक भ्बार चढ़ले जाइए
केना बचत जीवक जान
सभ खोजैए पाभ्नए-पाभ्न
पदूभ्रत धरती अपने दुखी अभ्छ
बैशाखक रौद उगलैए भ्बार
सभके लेत अखने पाण।

कोसीक कहर

आएल कोसीक कहर
पसैर गेल बाढ़िक पानि
शमशान भऽ गेल गाम-घर
नहि बचल नाम-निशान
मात्र रहल कोसीक कोहराम
देखते भाँसि गेल बच्चा-बेदर
गाए-महीसक गेल जान
अपन जान बचबै खातिर
लपैक पकड़लौं िटका गाछ
तैपर लपटल फणधारी
फुफकार काटैत करैए पहरेदारी
देखते हरि पाण उड़ि गेल
िदा दयावान बनेलक शरणधारी
िनवस ओ साप क्षतकारी
पाण नै लऽ रक्षा केलक
संगे केतेक दिन-राति बीतल
नीचाँ अथाह बाढ़िक पानि
ऊपर बहै छल बखाक झाँट
जािक िरल भूखक हारल
ितक िहि फसल रहू
भूखले पाण टगै छेलौ
केतेक दिनक भूखल कोसी
लाखक लाख जान खाए गेल

हरिो हाथ छुम्इट गेल गाछस
धब दए गीरलौ बाम्ढ़क पाम्न
सभ म्द्दनक लेल कोसीि सिाए गेलौ।

केकरापर करब शृंगार

अपन घर छोमि म्पाया
म्कए गेलौ जाम्न परदेश
िनि बढ़ेलौ कतेक कलेश
ुदा नै देलौ बोल भरोर
ि नि हरि अपचंग होइए
रम्ह-रम्ह करेज डोलैए
म्सनेह म्बनु देह हहरैए
म्जनगी बनल-ए दुखक पहाि
की वैरणी केलक अहाँक म्शकार
म्बनु अहाँ
केकरापर करब हि शृंगार।

पात जका तन-िनि डोलैए
धीर िनि अधीर होइए
सबूरक बान्ह ढम्ह गीरैए
पेि म्बरहि जरै-रि ै छी
अबगरहि अम्छ हरि जान
जगति देखै छी शैताने शैतान
आशक बाट लगैए सुनशान
म्जनगी बनल अम्छ बीरान
आब केते करब आओर इंतजार
म्बनु अहाँ
केकरापर करब हि शृंगार।

अछैते और दे दुख सहै छी
चढ़ल उिर ढहल जाइए
केतेक करब अहाँस परहेज
केकरा लगाएब हि करेज
म्ना:सन्तान छी नि वौआइए
बाट देखैत भेल छी म्नाराश
जेना फूलस तूम्ब गेल पराग
दोसर देख कऽ अबलट जोिए
पेि रोगक हि छी म्शाकार
म्बानु अहा
केकरापर करब हि शृंगार।

करकि खेल

देखू भाइ करकि खेल
मकयो बेचए नून तेल
अिर करैए कठखेल
गरीबस नै रहल िल
केकरो रोमटयोपर ने तेल
अखनो बेवस्था अमछ गरिल
मकयो खेलैए होरी खेल
देखू भाइ करकि खेल।

अखनो धमर खेती नै सुधरल
िजदूर सभटा पलायन भेल
राि भरोसे जनता जीबैए
मंसक करैए मंसाक खेल
नीमत-कुनीमतक बीचमबचौआि
गरीब जनता मपसाए गेल
सािजस सरकार बेिुख भेल
देखू भाइ करकि खेल।

मशकाक नाओंपर ठगी होइए
मशकालयि होटल खुमज गेल
पढ़ै बेरि खेलैए गदहाक खेल
मधया-पुताक करि फुमट गेल
स्वास्थ्य सेवा अमछ नाओं लेल

अस्पतालस भरोस उठि गेल
देखू भाइ करकि खेल।

देखयौ देशक नोटक खेल
एकरे बलपर भोट कीनैए
गदहाक माथपर ताज शोभैए
विदतजनके राखैए कात
सिंघासन धृतराष्ट सुतल रहैए
जनताक खून चूसिका रहल-ए
जनतंतक पक्षधारा बदैल गेल
देखू भाइ करकि खेल।

खेत सुखि फाटल पड़ल-ए
पानि बिनु खेतक फसल जरैए
पेट खातिर पेटबोनिया करैए
गरीबक संख्या बढ़ले जाइए
समाजिक लोक मूकदर्शिया रहल-ए
सरकारी तंत जेना फेल भेल-ए
देशक विकास अधूरे रहि गेल
देखू भाइ करकि खेल।।

भीखमिगनी

भीखमिगनीके देख कऽ
छगुन्तामे पड़ि गेलौ
फाटल चेथरीमे सुटकल
अंग झलकैत देखलौ
हाड़-पाजर सुखल
फुरकल केश आँखि धसल
ठिहपर फुफरी पड़ल
ठिदा बतीसी चमकैत
ठेगास कुकुर भगबैत
भूख पियासस तड़पैत
कुहरैत पथपर बढ़ैत
हाथमे पचकल टीनही बाटी
आशमे हाथ आगू केने
खाइले किछु भीख मंगैत
डेम्हियापर ठाढ़ भऽ
बेर-बेर जोर-स बजैत
कने खाइले किछु दीअ
हम्हर बेटी बेचनी
रोटी-चटनी दैत बजली
बैस खा कऽ पानि पीब लीअ
दलानमे हम बैसले-बैसल
देखलौ नयन भरि
भीखमिगनी रहए लचार

बुझ्झ पलि नीके घर-खनदानक
पुछलाऐ मकयेक भेल ई हाल
भीखिगनी डबकल आखके
ऑचारस पोछैत बजली-
नह छी कुलक्णी, छी कसितनी
िदा दहेजक खातर पीट-पीट
हिरा केलक ई हाल
माषुर पसके दया-धिषनइ-ए
सासु-ससुरके नै अछ लाज
सभ मदन िरैए घूसा-लात
के पोछत हिरा नोरके
कखनो मपुती-कुलक्णी कहैए
लाठी िमरस देह तोिए
घरस भगबैए साझ-भहान
बि गंजन सहैत रहलौ
िदा िरब त नइए असान
जाधैर अछ घटि पाण
मखो िमा राखै छी िन
सुरजके हाथ जोिम कहै छी
केकरो नइ मदहक एहेन जान
सासु-ससुर पसदेवके
दीहक सुिम-सदजान
हिरो बचाबह इज्जत पाण।

राहुल झा "आर.जे."

बटगवनी

कदि पर बैसल िधिव रे
देखत बृज के नारी
िदि िदि बंसी फुकत रे
नाचत गुणिम्न नारी

लाज भाव त्यागल रे
म्बसरल नव साि ी
फसल कदि पर आचर रे
फाटल नव साि ी

हरी िदि ि सिकाबय रे
देम्ख फाटल नव साि ी
रोकल कन्हैया जखन बंसी रे
साि ी देखल सब नारी

साि ी देख सब म्बगरल रे
घर जायत कोना सब नारी
कहल गोम्बन्द जुइन डर रे
हे बृज के नारी

आज अि िवस म्दन ि रे

तोहे नय रहब उघारी
एहन अविस होयत रे
दामिनी गिरत अन्हारी

लिखत राहुल दूय पद रे
सुनु गुणमति नारी
हरी संग किछु डर नही रे
इहे गोवर्धन गिरधारी

राकेश पेचिन्र 'पीसी', पूरा नाि:राकेश पसाद चौधरी, जलेशर नगरपामलका ६, पतकार एवं अनुसन्धानकता, पकाम्शतः म्खचडी कम्बता संगह एवं फुटकर कथा, कम्बता, लेख ।

अपकाम्शतः फुलगाछ कम्बता संगह

पी.सी.क पाच हाइकु

सासुर घर
सञीवनक गाछ
अनूना पाम्न

अंगेजी बैध
छागर भोग म्नलला
घरैया रोग

पेकि िह
म्शवजी बि भोला
उलट फेर

जय शी रािि
संसार लेनदेन
भोजन गृह

हारक भोज
जीत म्पत लडाई
जन म्बधान

मिम्सदा [मिम्थलेश म्सन्हा "दाथवासी" (मिम्सदा), (मिम्थलेश कुिर म्सन्हा), अम्धवक्ता, िहल्ला/पोस्ट : लर्कीसागर, म्जला : दर्भंगा, म्पन : 846009]

सृम्त शेर

बुढ़बा पाकम्र,
एखनो ठाढ़ अम्ह,
गाकि सीिन पर,
उमा गेलैए आब,
बोन-झार....
सपक्ष केचुआ फम्हरा रहल,
पाकम्रक ठाम्ढ़ पर !
नम्ह अबैए आब एत',
म्कनको पन-म्पयाय,
नम्ह िचैए एत',
नेना-भुटका केर म्कलोल,
नम्ह करैए म्बशाि,
आब कोनो पम्थक,
एम्ह पाकम्र'क छाह तर !!

िरर पोखम्र पर,
अम्ह एखनो,
म्पपम्र गाछ झिटगर,
जाम्ह त'र बनल छल,

नीक सन चबूतरा,
जेठ िसक दुपहर ि,
खेलै छलयै ताश !
एखन टूट-फुट गेलैए,
बनल ओ चबूतरा,
जत' होइत छल,
साझ खन बैसार,
गाकि पुरोधा,
जानल ािनल पंच,
होइत छलाह खास !!

घरक कमाया-िमाया,
माकसैत छलीह,
लाब' ल' पाम,
लेकिन,
बुढ़-पुरान लेल,
ाथ पर राख आंचर,
दैत छलीह समािन !
आधुमकता केर,
पवेश आब,
ओढ़ लेलक अह गाि,
बाबू जी,डैडी बनलाह,
ाय बम गेलीह ीिं,
देसी के कफन ओढ़ा क',
करै छथ अमािन !!

रसगर िठगर,
मायरगर,
िमथिल बोली,
सोनगर लागै छल कान,
कोयली केर िधुर स्वर सं,
गुंजत होइत छल,
सगर सकान !!
अंगरेजी केर,
लोभ ि
त्यजल आब,
देशज भारा,
िमथली भारी,
कहब' ि,
मकयैक बुझै छथ,
अत्मान अपिन ?

बेर-बेर,
नजमरक आगू,
घूि' लगैछ,
गाि परहक,
पाकमरक पेि,
पीपमर तर'क,
बनल चबूतरा !
रम्ह गेल,
आब "सृमित-शेर" !!

<u>रश्मि भूषण पाठक</u>

<u>छौि अजगुत कंप्यूटर छै</u>

लौत उदास

परखैत पासंग

वौआ कणेकण

साइड बदलै छै !

कत्ते वाह !

आ कत्ते कि िल कहू

बस तीन मिनट पहिले बीचोबीच रहै

एक मिनट पहिले वाि भेलै

मिनिटे पंचर जाि भेलै

दहिने छौि गाि गेलै

ितलब पूरा कलाकारी बीचोबीचक

कते जल्दी गुट बदलै छै !

कोना के गुटफाट ?

गुट तोि छै

छौि अजगुत

कंप्यूटर छै

गुरओ संग

नोच्चा-नोच्ची

कोना-तीती

म्संघीपताली

खनेखन छौि

गुर बदलै छै !

<u>िहाकम्बा म्बादापम्ता-१</u>

युवाकम्बा म्बादापम्ताक पुररपरीक्ता
कम्बा स बेशी ओइ जुगक िग
पुरराथषआ ओइ पौररक पशंसा
ओइ दरबार आ बूढ़रम्सक सिँ केर छन्द
तैयो ओइ कम्बा के शतु साओन म्बाढ़नी के छत्ता
केओ म्कताब चोराबै ,केओ पािुम्लम्पा पोखम्रर ि फेम्कक दै
कतेको चेतावनी ,रस्तारोकी ,छीनाछोरी
म्बादापम्ता जानैत रहम्थन
म्क पुरनका पोथी म्बासरले स नवपोथीक आगिन
पुररपरीक्ता म्लखै काल हुनकर बैठकी भरल रहै
वेद-पुराण ,व्याकरण ,न्याय-सृम्ताक गंथ स
जयदेव ,वात्स्यायन आ भािहक भार स दाबल
पाम्णनी आ म्पंगलक बान्ह स म्पासाइत कलौत युवाकम्बा
सबस पम्हले फेकलम्खन पुराण आ सृम्ता
तखने पकट भेलम्खन कीम्ताषाता आ कीम्ताषताका
िुदा एखनो संतोर नइ
ऐ कीम्ताषके तुच्छ बूझैत बम्ढ गेलम्खन आगू कम्बा म्बादापम्ता
फेर फेकलम्खन छंद-काव्य आ दशषाक शताम्धक पोथी
फेकैतो काल पणाि करैत ओइ पोथी सभ के
िहल आ बैठकी के त्यामा
आम्बा गेलम्खन जन आ जनपदक िध्य
जनपदक संगे-साथ म्चन्ह’ लागलम्खन जनिन
तखने त’ दुम्खह जनि भेल ,दुम्खह गिाओल

ऐ दुख के गमिते उम्दत भेलम्खन िहाकम्ब
िहाकम्बक कम्बता राजा जनकक नइ
आरम्कत बस जनजनक लेल
जइ कम्बताक छाती ि धुकधुकाइत रहै मिम्थलाक श्वास
ई अरिम्कवता तुरकक कागज पर म्लखाइ स बेशी अरि भ' गेलै
कोम्टजनक हदय ि, रक्त ि, िम्ट ि

<u>िहाकम्ब म्बदापम्त</u>-२
हयौ साहेब
अहा के एखनो एहनेसन लागै म्क म्बदापम्त बाभनक कम्ब
आ म्बदापम्त के म्जयेने रहलेन बाभन सब
अपनेने आ िथि पर चरहेने रहलेन बाभन सभ
हयौ िहराज
म्बदापम्त त' भ' गेलम्खन चार लोक स बाहर
िहराजक दरबार स
पंम्डतक चुटपाम्त स
शास्त्राथक झूठ-अखाि स
अहाँ नीक-हिहूं नीक स
ुदा िहाकम्बक कम्बता जीयत रहलै
िथि पर सम्हरल बोझक हुंकारी स
काशी आ नेपालक व्यापारी स
जम्हना म्ाय असोि आ बंग ि
तम्हना अराकान आ अंग ि
िहाकम्ब बरहैत गेलम्खन
िहफा उठेने कहारक पदचाप संग

िखान तोिँत िलाहक अलाप संग
िहाकमबा आमा भ' गेलमखन
अगहन-पूसक घूर ि
िहाकमबा पाथर भ' गेलमखन
दुसाधक दुख संग
िहाकमबा गािबदर
डोि-हलखोरक टोल-टापमर ि
अधिर िहाकमबा के आशय भेटलेन नारीजनक कंठ ि
दुख आ कष्टबोधक जाता-गीत बमन
िदु पमनाशोधक उकखमड-सािठ छंद ि
िहादुख पर लेपैत सोहरक लेप ि
िहाकमबा जी गेलमखन मबारि-मबवाहक व्यंग्य ि
िहाकमबा जी गेलमखन बूढ़-मछनारक ललैठी धरबा लेल
सभ पोथी-पतरा फेकैत
पुनषीमवत िहाकमबा
बस रमक गेलमखन िमथलानीक लोर संग
यैह लोर शामलगािी ,बागिती के भरैत
कोशी ,गंडक के तोिँत
सभ साल दहबै-दहाबै छै मिमथला के

<u>नीलमाधव चौधरी</u>

<u>की ई प्रकृति क नियति अछि ?</u>

गाछ, र गमतास
नग्नता
धारण करैत अछि
एक प्रकृति केर
ईश्वर नियति के
पालन करैत अछि
यश नहि ओकरे
साहि दाहि ओकरे
जे सीख गेल
धूर्तइ अछि
फोड़ित रहू कपार
जपैत रहू
शिक्षा संस्कार
जे चलि गेल से
कहा घुरैत अछि
मरैत अछि लोक
अभावस
भुखमरीस
बीमारीस
मरैत अछि लोक
जानस

म्बवेकस

लाचारीस

अत्मान की आनक

उम्चत अम्धकार लेल

कत'के ि रैत अम्छ

लोक सब म्दन

एम्हना अपना लेल

जीवैत छल

लोक आइयो ओम्हना

अपना लेल जीवैत अम्छ।

ुह भरे खसब

कहा एतेक ुश्कल छै
सीधा चलब
म्कएक होएय ड’र जे
ुह भरे खसब
कर अपनापर म्वशास
ई चीज बडड खास
खखार बुम्झ खूनके
एना जे फेकब
खखरीके चाउर बुम्झ
एना जे सटिब
बेटाक आसि
बेटीक हत्या
केहन भम्वष्य होयत
की आशा करब
पढेबम्न्ह जे पाठ
बौआ वएह पढताह
देखेबम्न्ह जे बाट
बौआ ओहीपर चलता
जतबे जर री
स्कूलक पोथी सम्हारब
ततबे आवश्यक
घर आगन बहारब
म्नाज़ भारा संस्कृम्नके ज

नम्हर राखब जान

पायब कतहु कोना समाधान

यथाथषअ ाविस्याक डर

छोट-छोट बात

कते पैघ-पैघ

खुशी दैत अम्छ

पैघ बात ािन ि अम्बाते

ािन एना म्कएक

व्यम्थत भ जाइत अम्छ

नम्ह इ नीक

नम्ह ओ नीक

ाुहि क स्यादे जेना

अम्छ भेल तीत

कोन मषि ान

कोन पकवान

कहा म्कछ लगैत रम्चगर

घर आगन म्क

बहरी दलान

कहा कतहू म्कछ म्पायगर

रोज बनैत,

रोज टुटैत

बीतल जा रहल

व्यथषजीवन

दुःख ि म्क सुख ि

लोक-साजि त

जुम्टते अम्छ

शुभकामिना ि
सदावना क
जेना अभाव सन
बुझाइत अछि ।
हाल बदलत
जेना पहिने स
बदलल अछि ,
आटा-दालि क
अकाली
ि बाइल लैपटोप
पसरल अछि
म्हक्य पुण्णाषि क
ईजोरिया रात्ति क
स्नाप जुआनी पर
यथाथषअि विस्याक डर
ि ुदा छनो भमर लय
ि ान स कहा जाइत अछि

<u>छाह जका</u>

अन्हार घरि
छाह जका
हेरा गेल छी
अपने घरि
हि अपने
मोला गेल छी
गाव टोल पोखमर
नम्ह जाम्स
कम्हया छुटल
नीदि एखनो
बिबि गेल छी

भष्टाचार

म्नारंगा जे पतीक
स्वाधीनताक
ओकर हम्मरयर आ
केसम्मरया रंग त
ओम्हिना गाढ़ अम्छि
िदा उज्जर रंगक आगू
जेना म्किलयो ठाढ़ अम्छि
कनी गौर कम्मरयो
वएह भष्टाचार अम्छि

सताक स्वाद

झटकट त भेमट गेल
पश आब एतबे
लोकमान्यता कोना भेटत ?
सयि बडड कि
रातो राम्त
पमसमद्ध कोना भेटत ?
मोना सटंट
मोना पमकलमसटीके
कोना भेटत
सताक स्वाद
मोना नव नव आवरणके
कोना भेटत मजंदाबाद
फेर वएह पुरनका खेल
तू चोर तू भष
तू अराजक तू बैानि
तू आतंकी तू सापदामयक
तू पागल तू नपुंसक
परोक्स बजैत सुनैत
आब खुल्ला खिुल्ला
एक दोसरापर ढेला फेकैत
नेपथ्यि झाकबाक जररत
बुझायल कहा कमहयो
राजनीम्त मक राजनेता

जानबाकक फुसला
भेल कहा कहियो
एम्हर कादो कोयलास
सभ्य लोक बचते रहल
मजर्मिदार बना देश लेल
सब कष उठाते रहल
ि दा एम्हर बेर
आि स खास धर्म
भरल अछ उनिद
नपुंसक लोकतंतक पदशर्
छद ि दानगीक पाटीवाद

म्जनगीक ानि

गत्प जखन करब
हि अत्पन करब
बुझैत छी
हरि गत्प
अहा बुम्झ नम्ह सकब
सहस्त्रो भि अम्छ
कोम्ट-कोम्ट अहि अम्छ
अहाक ागिर्प
कहा कतहु शि अम्छ
उपलम्ब्धक खजानास
भरल अम्छ अहाक घर
हरि म्हस्सा
बस ओकरा म्नहारैत रहब
हि बुझब कोना
अहाक तगािक हित्प
म्जनगीक ानि
हि बुझलहु
बस त्यागैत रहब

हेरैत पशक उतर

पकृ्मत क खोहि
बौआइत म्दन राम्त
तकैत छी अपने सन कोनो बताह पाणी
जे हरिा असगर छोम्ड नम्ह चम्ल जाय
जेना संग छोम्ड दैत अम्छ सूयषचाद तारा
तकैत छी कोनो जानक डाम्र
पकृ्मताक झुरिट कोनि
तकैत छी कोनो अपसरा
कोनो सुंदरीक नग्न िम्तष
जकरा म्बना बुझाइत अम्छ
सम्पूणषवन अपूणष
तकैत छी कोनो भावपूणषयुम्क्त
तकैत छी
हदयि उठल पीाकि कारण
करैत नव नव कम्बताक शृजन
म्कएक नव नव कोलि पल्लव
रौदि जरैत जरैत झम्र जाइत अम्छ
ई देम्ख म्बना बादल ई आकाश
म्कएक नम्ह बरम्स जाइत अम्छ

म्नकि ि आ परा ि

हरि अम्धकार की
हरि अम्धकारपर त
पम्हनेस कब्ज़ा कएने छी अहा
हि सहैत छी
म्जवैत छी
बनल अहाक म्शकार
अपन शोम्णतके बनौने अहाक आहार
म्नत्य बढैत अम्छ
अहाक अत्याचार
म्बना कोनो म्वरोध पम्तकार
करैत छी स्वीकार
जेठक दुपहम्रया हो
वा ािघक भोरम्रया हो
म्बतैत अम्छ
कम्छन शकि संग जीवन
स्वीकारैत छी िूरस िूर संताप
म्बना केने देहक कोनो परवाह
म्दन रम्त साझ भोर खटैत छी
खटैत रहल छी
आ अहा वातानुकूम्लत बंद कोठरीि
करैत छी हरि िजुरीक म्हसाब
खुशीस म्पबैत शराब
म्बलायती धुनपर अलापैत गान

म्बाना रखने सभ्यता संस्कृत्त केर ानि
जेना जेना बढैत अम्छ हरि सहनशीलता
दुना वेगस बढैत अम्छ अहाक लुटबाक कीता
हरिे रम्भरक काइस करैत छी
हारिे संग व्यापार
दस टका दैत छी लैत छी हज़ार
ादा हा बुम्झयो क’ करैत अयलहु स्वीकार
अहाक छल पपंचस भरल व्यवहार
जखन म्क हरिो अम्छ जात
अहाक गुत्त बात
कोना बनलहु अहा फेखनास फेकू बाबू
म्कएक अहाक बेटी करैत छम्थ फस्टष
पम्हरने म्बना ब्लाउजके स्कटष
अहा करैत छी ओबाा, म्जनम्गं केर बात
भारणा करैत छी ाक्सिषलेम्नके ाति
करैत छी ाजूर कृरक नेता संग गठबंधन
जे नम्ह बुझैत अम्छ अहाक म्तकाा आ
जखन वो फम्स जाइए अहाक म्तकााबाजीा
ओकरे हम्थयारस करैत छी ओकर संहार
वाह वाह कम्ह उठय जग अपने धन्य छी सरकार
बाढ़ भूकंप अकालस पीमाित हा
जखन करैत छी ांदन
अहा करैत छी म्बाान सवेक्ण
आकाशस खसबैत छी रोटीक टुकाा
तम्हयो लेल एतय होइत अम्छ झगाा

आम्ह रौ बाप भेटल कहा हिरा
भेटल कहा हिरा
एतय त सभ म्कछि ि हिजोगिरक जीत
जकरे कैचा छै तकरे जीत छैक

गोधूमल बेला

ज ानि ताकब
त ािजा छुम्टि जाएत
जीवनक अदुत
कथा छुम्टि जायत
हेतै आब
की एम्हस खराब
बात ानिर्ािअम्बते
अम्छ खतािसब जबाब
जे बचल अम्छ नेह
सेहो टूम्टि जाएत
ज ानि ताकब त
ािजा छुम्टि जाएत
जे होइ छै से सब
बुझले पभुक अम्छ ािया
हुनक देल धािकन
हुनक देल काया
जे म्लखल अम्छ करािि
कहू के मािटायत
ज ानि ताकब त
ािजा छुम्टि जाएत

अतृप्त प्यास

चारु शान्ति पसरल छल
शिनस पटलपर
जाहिमे नहि छल
कोनो कथा कहबाक मनक व्यथा
जेना कोनो शात सरिता
नहि कोनो तूफानक तरंग छल
नहि धाराक गति
नहि उल्लास, नहि हरष
नहि चिंता,नहि भविष्य
जिनगी चलल जा रहल छल
नाव बढल जा रहल छल
अथाह सागरिक सि पटलपर
शनैः शनैः अनंत दिस
नहि जान आदिक नहि अंतक परिचय
नहि जीबाक ध्यान नहि मरणक भय
अकारण अनिश्चित दिशामे बढल जा रहल छल
छोट छीन जिनगीक नाव
अथाह सागरिक सि पटलपर
कतहुस उठि आयल कोनो पीडा
सोहिया गेल जिनगीक पोर पोरमे
हरियरस भेल शिन पीयर
गरि गेल सीसा शिनक कोर कोरमे
कतहुस उठल बसंती बयार

खसल समुरताक मानश्छल पटलपर
जोरस शोर भेल
घोर गजबाक संग रामुास भोर भेल
सूयषक पमुहलुक मुकरण
समुरताक ठोरक जल चुमुबात करबाक लेल
व्यग्र भ' गेल छल
बात चलैत बटोहीक अबोधता
स्वीकार नमुह क' सकल एहन पेि पमुरणयके
िधामुास भरल ुखिस दुवासाक शाप मुकलल
जा समुरते सूयषक तापस भमुर मुजनगी जरैत रहब'
आशा मुत्य मुदन रहत
सूयषक पमुहल मुकरणक संग
ढमुह जाएत तोहर स्वपक िहल
आ ओमुह मुदनस जमि रहल अमुछ
समुरताक अतृप्त िन
मुदवाकरक पमुबत पेि पमुरणयके लेल
कमुणाक दैमुहक पणयके लेल
जरैत छल जरैत अमुछ जरैत रहत सनातन
समुरताक पेिि डूबल हृदय
मुजनगी जे सुतल चल मुच ि शामुति
बमुन गेल कल्लोल कोलाहलक रंगभूमि
कल कल मुनाद समुरताक शात स्वर
तूफानी तरंगि हेरा गेल
पामुनक तीवर मुहलकोरि
डगिगा गेल

जीवनक छोट छीन नाव

म्घर शान्त पसरल छल

ि निस पटलपर

जाम्हि कोनो कथा कम्बता म्कम्बा व्यथा

नम्ह छल

भम्र गेल अम्छ करणा दया सपनास

संकल्प

संकल्पित छी
जिनगीक बाटपर चलबाक लेल
बुझल अछि आगा खाधि हेतैक
अछि बुझले नहि हि तडमा सकब
िनिक ज्वालाक शान्त लेल
बढ़ि रहल छी अतस्यात भेल
कएक बेर लागल ठेस ि दा
नहि संतुष भेल हरि क्षुधा
उठल बेदनाक तृष्णा लेल
बढ़ि रहल छी अतस्यात भेल
जगह नहि छै चुम्टयो ससरबाक
तैयो चाहैत छी घोसिया रही
पगमा केर आसि भमित हि
बढ़ि रहल छी अतस्यात भेल
ई आसा एहन अछि बढ़बाक
सुख शान्तके जे जरा देलक
गामि-घर, सर-संबन्धी सब छोमि
बढ़ि रहल छी अतस्यात भेल
जिनगीक छै नइ ओर छोर
सब रातुक बाद होइछ भोर
रातुक मामरि डूबल हि
बढ़ि रहल छी अतस्यात भेल
की चाही ओ कोना भेटत

ई त कम्हियो सोचलहु नम्हि

अत्मान पणके अम्पास हि

बम्हि़ रहल छी अपस्यात भेल

म्बाशास

ि हान वएह जे अपन जीवनस
दसक उपकार करैत अम्छ
ओजस्वी वाणीस ि दा ि
शम्कत संचार करैत अम्छ
अपना लेल त सब करैया
ओरदा रहैत के ि रैया
दुःख म्कयो अपनाइए क’
ककरो उदार करैत अम्छ
परि सत्य जे म्लखल म्बधाता
सैह टा होयत
कतबो पीटब कपार
म्बम्धक म्बधान नम्ह बदलत
तै म्क ि निव कतष्य छोमि
भाग्य लेल दौरय
अपन कि कि फल त
सब म्कयो अपने भोगय
ि म्दर आ ि सिम्जद के त
लागल अम्छ अंबार एतय

भक्त लोकक त देखू
लागल अम्छ बाज़ार एतय
नम्ह बुझाइत भगवान केर वास हेतैम्ह
पुजाम्रयो के रम्ह गेल म्बशास हेतैम्ह

जनतंत?

पौधस गाछ भेल

गाछस जारम्नि

झरकल पजरल

आब धुधुआ रहल अम्छ।

<u>जीवन-सार</u>

पम्हले डेगपर भरि गुंजन
यौवनक अंम्ति छोर तक
खुशीस भरल जीवन
छौडैत यौवनक संग
धिुप करम्थ दूर म्बचरण
इएह जीवन गाथा
इएह जीवन दशष्ठ
ओ सोच’ लागल
सम्पूणषजीवनक सार की
यौवन जकर बीत गेल
ओकरा लेल संसार की
कोन म्बम्धये यौवन
कतेक म्दन संग देत
संग ज छोिबे करत
तखन एकर म्संगार की ?
पकृम्तक म्नयि
एतेक िूर म्कएक छैक
साझस भोर
एतेक दूर म्कएक छैक
एम्ह संसारस भेटत म्कछ नम्ह
तखन एतेक िाह म्कएक
कम्णक सुखक लेल
लोक एतेक व्यम्थत म्कएक छैक

संसार के रचनिहार की
एहि बातस अनभिज छथि
नहि कथमपि नहि
इएह त जीवन क सार थिक
जतहि पगति रहिक जाय
ओतहि जीवनक संहार थिक

<u>जररत बढैत गेल</u>

अहा म्लखैत रहलहु
पाथरपर फुल उगेबाक म्खस्सा
हि गहुकि पटौनी हेतु
पाम्म लेल लिंत रहलहु
खेत-खम्रहान त म्सिटैत गेल
आ अनक जररत बढैत गेल

ि झधार म्थक

सुख दुख त
म्जनगी क शृंगार म्थक
म्जनगी ज म्कछ
त ि झधार म्थक
म्कएक हि बैम्स जाय
म्कछ बेसी बुम्झ क'
म्जनगी बुझबाक नम्ह
अनबुझ रफ्तार म्थक
कतेक कोस कतेक ि ील
तकर ककरा कोन ठेकान
की भेटल की छुटल
कतेक राखब एकर ध्यान
चानीक थारीि परसल
ि हुअक खीर ज
त जेठक रौदि जिेत
खेत पथार म्थक

की ई आधुनिकता अछि?

पेट के दुख देब देह के सुख देब
देह के दुख देब पेट के सुख देब
बच्चे ि इ बात ओकरा
ियि कंठस्थ करा देने रहइ
बहुत दिन तक ई बात
तकसंगत सेहो बुझेलैय
िदा शीघे भि टूटि गेलै
किछ दिन स' वो देखि रहल छल
जतैक बेसी देह के दुख दैत अछि
पेटो ततबिह दुख दैत छैक
जे देह के दुःख देतैय
ओकरा एतैक पैघ पेट कोना हेतैक ?
त' की हि सभ आधुनिक
भ' रहल छी ?
की ईएह आधुनिकता अछि ?
आर कतैक दूर
भ' सकैत अछि
बाहर क हवा किछ
दूरित होयि
किछ लोक अति
स्वाथषलेल व्यथित होयि
िदा मान पयासे की
किछुओ भेटत

जे अम्छ म्क सेहो
बाचल रहत
ऐना जे म्खि की म्कबाड
बंद केने रहब
हवा आ रोशनी पर
पैबन्द लगेने रहब
कहू कतैक म्दन
हि सब सही सकैत म्छ
आर कतैक दूर तक
रही सकैत म्छ ?
इकीस फरवरी : ितृभारा म्दवस
कोना हेतै एक रंग
भोर आ साझ क म्करण
मान तोम्ड दुमाया
लागल जकर पतीका ि
की होइत छय ितृत के
सपूत जखन छोम्ड जाइत छय
आन ककरो रक ि
अशुपूणषभ जाइछ लोचन
होइछ आहत अंतषि
िषिदा जागल रहैत छय
िन उम्हरे टागल रहैत छय
कहैत छम्थ राहुल देव
ितृभारा, भारा के जीवंतता
पदान करैत अम्छ

कोनो ितृभारा के
कतेक पमाशत लोक बजैत अमछ
बजबे टा नमह, मलखैत-पढैत अमछ
आधुमनक मक पगमत क
ितृभारा ि कतेक सािवेश अमछ
भारा के बचेबा के अमछ
त एकर ध्यान कर' पडत
तीन सौ भारा लुप्त भ चुकल अमछ
नौ सौ दामर पर
जखन डा. रिशि चन्र िहता कहैत छमथ
दू शब्द इंमलश बामज दीयो
इज़्ज़त ि इजोमरया आमब जाइत छय
िनि पमड जाइत अमछ
कान दूनू ऐंठ ली
जावत ई िनिमसकता रहत
ितृभारा के बचनाय कमठन अमछ
िदा हि सब मववश मछ
सामिमजकता पर आमथक आघात
तेहेन बजघात साममत भेल जे
भारा आ संस्कृमत
हि सब
अपने नष-भष क रहल अमछ |

उम्चते व्यवहार कर

झडकल ुहि नम्ह झापल नीक
आबहू ओकरा उघार कर
एक स एक डाक्टर बैद
एक स एक दवाई चलल अम्छ
बोक बहीर बाजैत ,सुनैत अम्छ
नागर लूि आसािन उडैत अम्छ
की नम्ह आब संभव
बस उम्चत व्यवहार कर
ज कतहू ग़लत देखैत सुनैत छी
आबहू ओकर पम्तकार कर
म्बना आचरण नम्ह संभव
खति होयत आतंक , भष ाचार
ई पगम्त -सम्पम्त , आति घाती
म्बना उम्चत म्शक्ष संस्कार
बीतल बात म्बसर
लाऊ ािन ि नव नवीन म्बचार
जग के सम्भ्टयो ने
म्दयो एकरा पूणषम्बस्तार
म्बश के म्बकास के
फेर के रोम्क सकत
छइ ककर िजाल जे
फेर म्कयो टोम्क सकत
ािन के म्स्थर कर

आति के सत्कार कर
झडकल िह नम्हे झापल नीक
आबहू ओकरा उघार कर

कारी कारी केश के बीच

ई सिनुरक लाल रेख
बेचैन क देलक िीन के
सखी कि कहू विधाता क लेख
जनमा क सुंदर सपना
रही गेल कल्पित कल्पना
अपने काज ि नाकाम्ल
अपने हि िीन िख
सखी की कहू विधाता क लेख

चलू दीअय एक धका आर

एम्ह पार म्क ओम्ह पार
चलू नाव उतार धार
एम्ह पार म्क ओम्ह पार
तखन ने झुम्रि खेलायब
ढेका बान्हु फाड ि
तखन ने म्हमति जुटाएब
अहा बढ़ू त' आगु
संगी सभ बहुत भेटत
एक पीहकारी पर पूरा देश जुटत
ि ह नही म्लन कर
म्पाछला सभ सोम्च क'
आब ज' म्कयो बाजत त'
खा जेबे नोम्च क'
मम्थिला क' सपूत
नइ आब रकी सकत
रणभेरी बाजी गेल
आब नही झुकी सकत

मालेबा लेपैत छी

आई ज मिथिला
मैथिली क
ई हाल अछि
कि बिसरि हरि रे अहाक
कलि अछि
भौतिक सुखक लेल
छी भेल व्यग
आन्तरिक आनंद के
कहा कनेको
खयाल अछि
जखन सयि छल
भूर ि निबाके
तखन त दुनिया क
उदार बनि बैसलहू
आब खाली कोठी ि
मालेबा लेपैत छी
ि मटियो भमर अन नम्ह
सयि विकराल अछि
अतान आन क बात की
लोक दुनिया स ाजि की
माया पुता क भविष्य क
चिन्ता त सबके
ायि बाप ि दा

बनल सवाल अछि
काज सब स्वीकायष अछि
कहू कोना पेट भिनत
निनि जे
उठल अछि प्यारो
कहू एकर के लेत जानित
बच्चा आ बुढक की
जुआनी बेहाल अछि
आई ज मिथिला
मैथिली क
ई हाल अछि
कविबेम्स हरि अहाक
कालि अछि

जीवन-धारा

नही छल पेबिाट
चलबाक पूणषजान
हृदय सम्पूणषताक बोध
अबोधता दौतक बनल छल ,
अपूवषअनुपि ुिखडा स
कोम्कल स्वर सुम्न
हृदय डुम्ब गेल छल .
सौन्दयषक पेि पचीसी ि
नव आकुलता क संग
म्बाकम्सत भेल छल
पेि पम्रचय
म्जनमा जीबाक म्ाि य
साझ खन तुलसी चौडा लग
दीप जडाय
गवैत छली ओ गीत
स्वर स अिृत
झहम्र रहल छल.
उदास िन डुम्ब गेल
हुनकर स्वर सजावट ि
िनक भाव म्बहल छल
पेि कि नवशृगार करबा लेल
जीवन वाम्टका ि बहार अनबा लेल .
थाकल त्यासल उपेम्क्षत िन के

जीबाक पम्बात साधन भेटलै
ादिकताक संग सलजताक सािवेश छल
म्जनमा क लेल त ई सबस पैघ आवेश छल
म्ना:शब्द , म्ना:स्वार , म्नाश्छल भ स्वीकार कयलहु
एम्हि तरहे ई दम्रया पार.कयलहु

तीक्ष्ण ि म्मत्त स

बुझैत छी भाय
अहा जीब चाहैत छी
सुख शान्ति स
होइत अम्छि डर
हल्ला गूल्ला
तीक्ष्ण ि म्मत्त स
ि दा ई बुम्झ लीअय
आब नम्हि
ई शान्ति बरकरार रहत
पैघ भ गेल खाइम्धि
म्बाना भरने
नम्हि काज चलत
जाम्त रहल दूइये टा
धम्नाक की गरीब
बडका क पैघ कपार
छोटका क छोट नसीब
आब नम्हि फकष
कौआ आ कोईली ि
दूनू क ि न ि बस
धन केर चाह अम्छि
पकृम्त क देल
रंग र प भाग्य पवृम्त
आब कहा म म्सियो भम्र

तकर परवाह अम्छ
कषिजे करतय
वएह आगु बढतय
ित क छद बोल पर
आब नम्ह थाप चलतय
ित पर अम्छ म्वशास त
म्बल ि अपने हाथ दीअय
साप के खीचू म्बल स
पूणषयश ाथि लीअय |

<u>मन ि बबिाइत</u>

हि सब
टूम्ट नम्ह रहल छी
टूम्ट चुकल छी
वैह टा करैत छी
जे सरकार चाहैत अम्छ
गाि घर दुम्नाया सिाजि
पेि-घृणा, लोक-लाज
लोक वेद टोल पम्रवार
रीम्त म्रवाज पवषम्तहार
सब छूम्ट चुकल अम्छ
सतı वगषबुझैत अम्छ
हि सब म्कछ
एहेन बन्हन ि
बम्ह जाइत छी
जे तोम्ड नम्ह सकइत छी
िाह-िाया म्हत-अम्हत
लोक-परलोक वाय-म्पात
छोम्ड नही सकैत छी
एहेन ई शासन सतı क
गुत्ता रियंत म्क
हि सब आलासी , स्वाथी
नपुंसक भेल जा रहल छी
कतहु कोनो

पत्रिरोध के आवज नहि
ज अइछो त सविेत नहि
हजारो ,लाखो , करोडो क भीि ि
सब एसकर
आ एसकर त वृहस्पतियो झूठ |

पैघ पैघ लक्ष्य

जे कष छल
अछि
से त रम्हये गेल
झूटे फुसलेबा
कोशिश करैत अछि
कखनहू एहिर
त कखनहू ओहिर
टहलेने अछि
अनेरे अजबिा क
कोशिश करैत अछि
जंग लागल छय सता
जजर छय भेल तन्त्र
चाही पारदर्शिता
डेगे डेग भरल रडयंत
सब चोर संसद ि
ि लुर-ि लुर तकैत अछि
शाह क शाह जोडी मक
मकयो आने फसैत अछि
पैघ लक्ष्य छय
कने कष बरदाश्त कर
ऊच-नीच छोडू
एकता क बात कर
ि ािला गंभीर छय

स्मातय बुझेबा के
कोशिश करैत अछि

<u>पयोजन</u>

स िर क लहर
के की पयोजन
मकएक बुझत
मक, की मसथर
कूल ि अमछ ?
अंत (ि त्यु) त यथावत
ओमहना के ओमहना रहत
पमरवतमष त' मजनगीक
ि ूल ि अमछ ?
पेि क आतुर ि ि न
वीणाक झंकार सा झकृत हि र जीवन
अहाक यौवन ि डूबल रहय समदखन
ि ीडा कौतुक स भि ल रहय उपवन
अमछ पयास तइयो नमह बहकय हि र ि ि न
आसकत भेल अमहांक र प पर हि र चंचल यौवन
जीवन सागर ि बरसा गेल पेि क सावन
मायय पात ि मह छमथ हि र हदय अहाक मकंचन
हि ि दहोश ि धुप छी अहा गंधयुकत कंचन
ि न ि मदरा लय आनय ि धुगंध ि धु बयार
अहा बसंत क सार नही बुझल बुझलहु बस संसार
हि अबोध नही बुझल पेि बानल वयपार
नमह अमछ अंत पेि के की अई पार की ओय पार..

<u>बेतुकक सवाल</u>

थम्हिक जाइत छी
देख क अपने अपन हाल
कहू कोना
म्धया पुता स करी
बेतुकक सवाल
नम्हि म्कताब नम्हि टयूशन
नम्हि आधुम्नकता क फैशन
स्कूल दूर
जाएब सम्स्या म्बकट
ि दा आनैत अम्छ
शत पम्तशत म्रजल्ट
कोना क कम्हयो
बाऊ गे , नम्हि तोरा पढेबाक इच्छा
नम्हि जाम्न भगवती म्कएक
लैत छैथ बेर बेर परीक्षा
कोम्शश कि नम्हि जे
हिहू पोम्जम्टव होय ,
बनल रहय म्धया पूता क अबोधता
बुम्द्ध जान म्नक होय
ि दा छनम्हि म्चकन चेहरा
म्बकृत भ जाइत अम्छ
नम्हि कोनो स्पष , पत्यक
कारण बुझाइत अम्छ |

र ग्मता स नग्मता

गाछ, र ग्मता स
नग्मता
धारण करैत अम्छ
म्क पकृम्त केर
म्चर म्नयि के
पालन करैत अम्छ
यश नाि ओकरे
साि दाि ओकरे
जे सीख गेल
धूतइ अम्छ
फोडइत रहू कपार
जपैत रहू
म्शक्त संस्कार
जे चम्ल गेल से
कहा घुरैत अम्छ
ि रैत अम्छ लोक
अभाव स
भुखिरी स
बीिरी स
ि रैत अम्छ लोक
जान स
म्बवेक स
लाचारी स

अत्मान की आनक
उन्नत अन्धकार लेल
कत' के रैत अछि
लोक सब मद्दन
एम्हना अपना लेल
जीवैत छल
लोक आइयो ओम्हना
अपना लेल जीवैत अछि ।

लालटेन क ईजोत ि

र स ि ास अिमरका

कम्हया स लागल अम्छ

बगदादी क भाग्य जे

एखनो ओ बाचल अम्छ

शकील ,खुशीद , अय्यर

पाम्कस्तान

म्दस देखैत छम्थ

भारत क छोम्ड

पाम्कस्तान ि

शाम्त तकैत छम्थ

नीतीश संग तेजस्वी

की तेज पकाश

एम्ह लालटेन क ईजोत ि

नम्ह जाम्न कोना

होयत म्वकास

हे भगवान उठू

युग के आशस्त कर

आतंक क गाढ अन्हार ि

हेरायल अम्छ दुम्नया

पकाश पूंज बम्न

शाम्त क ि ािगषदूर स्त कर ।

<u>लोके बदलय</u>

साल बदलल
हाल बदलत
सोचैत त
सब साल छी
हि म्मक बदलब
लोके बदलय
ततबे लेल
बेहाल छी
मायि म्मात्य
धम्स रहल छी
डेग डेग पर
फम्स रहल छी
बढल अम्छ क्लेर
भेटैत अम्छ उपदेश
सब कहैत अम्छ
हि की करबै
अपने ओझराएल
िहाजाल छी
राि के पढलहू
कृषण के पढलहू
गीता बाइम्बल
कुरान उलटलहू
सबतम्र लीखल

एके भारा
जीवन मक पकृम
ईशर के देल
अमूल्य धन
नष करबा लेल
हि सब स्वयं
बनल हिाकाल छी ।.

बालापक बखान

कतेक रास झुठ
फेर पसरल
फेर कतेक पुत क
करेज ि
ितृ-पेि उडिल
ुदा सत्य बहुत दूर
बहुत चिंतनीय अछि
इतिहास कहत
एहि काल खंड ि
पुत क पकोप
बहुत निंदनीय अछि
िनिल देश भरल अछि
जुआनी स
नाि करै अछि दुनिया ि
रहैत अछि
फुटानी स
ुदा वो संस्कार कि
सयि कहा जे
ि-बाप क समिन करय
देवता होइत छल कि
होइत हेताह कहियो
आब त दूरे स देख
बालापक बखान करय |

की पायब समािन ?

हि सभ एखनहु
मकएक पाछु ?
नमह कोनो रियंत
नमह कोनो मादेर क
पमरणाि अमछ
ई ाित आलस अकिषयता
आ अजान अमछ
आन के अमछ ?
शतु त' देश के
अपनमह संतान अमछ
स्वाथषके वशीभूत
ाितल आ मशमथल
पैघ-पैघ तोद
तीवरमारा स वयमथत
लागल छी ाित अतान
ािरण के ओमरयान ि
ाित अतान तृषणा के
सिमपाश समािन ि

सम्रपहू बचल रहत

पहिने लोक टूटैत अछि
तखन घर टूटैत अछि
तखन समाज टूटैत अछि
आ फेर देश भारा संस्कृति
सभ सुड्डाह भ जाइत अछि ।
तै हे बंधु
ज चाहैत छी
देश भारा संस्कृति
बचल रहए
त चलू करी पयास
लोक के बचेबाक
लोक
जे अपने उपजाएल
समस्या स
पार नहि पबैत अछि
समस्या क अम्बार क
पहाड क बीच
झुलैत अछि
कोनो ना कोनो तरहे
जीवन यापन त
सुरक्षित होय
ओहि नहि सरकार
नहि अनुकम्पा के

जररी होय

लोक क आतम्विशास

ज बनल रहत

देश भारा संस्कृमत

सम्रपहू बचल रहत ।

हि की गाि खराब ?

बदम्लल गेल गाि
म्कक बदम्लल गेलहू हिसिब
रास्ता बदम्लल गेल
म्कक गाकि लोकसब
ुदा भगवती ताराक स्थान त'
वेएह अम्छ
िडिन व राजकिल क' गाि त'
वेएह अम्छ
की अत्मन दोर की कारण कहू
कोना अपना के
नून रोटी क सतायल कहू
गाि ि घर नम्ह
की कहू की वजह
दजर्नो बीघा खेतक िम्लक
ुदा पैर रखबाक नम्ह जगह
की भ गेल
म्कएक नम्ह गाि हमिर गाि रहल
बाबा-म्पता क नाि संग
म्कएक नम्ह हमिर नाि रहल
बाबा बनौने छलाह
सब स' पाम्हल दुिहलला
जे आब खण्डहर बनल
खसबाक' लेल बेताब

नही बुम्झ सकैत छी
हि की गािि खराब ?